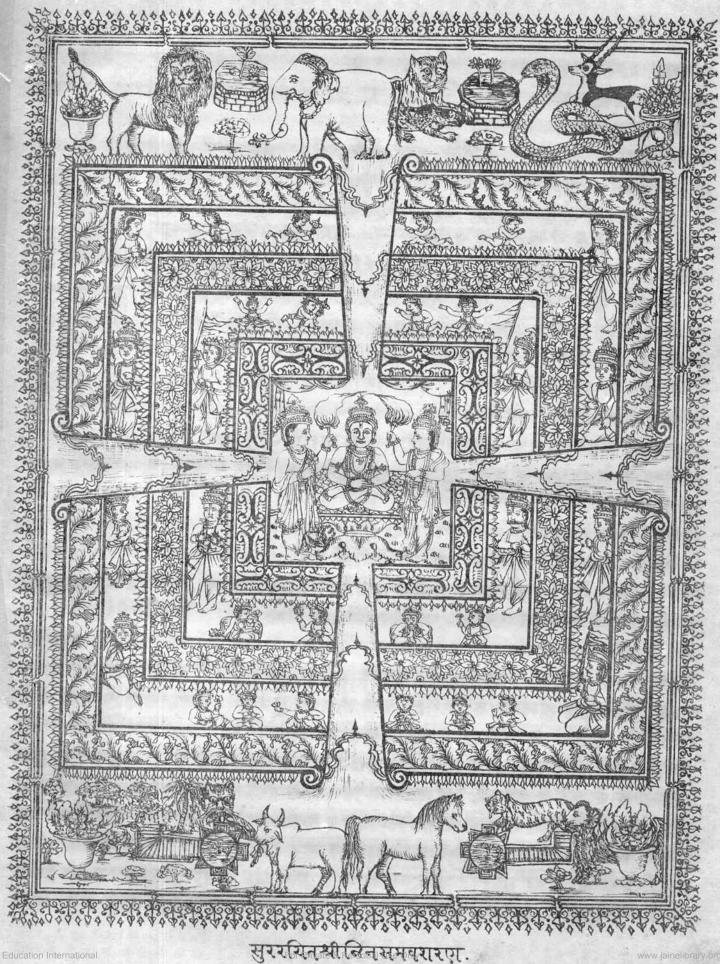
जिनवचना निहोदधिजन्य जिनवचना महोदधिजन्य पुरंधर सुविदित ग न्द्रा पूर्वाचार्य वचन तरंग बिंडरूप पुरंधर सुविदित ग न्द्रा ग्रंथोनो यर्रिकचित् संग्रह करीने विविध विषयक श्री सुंबापुरीमध्ये

সাগঃ

शा० नीमसिंह माएक नामाख्य आवके स्वामित्व विरहित ज्ञान रुद्यथे

आ पुस्तक उपावी प्रसिद्ध कखुं जे.

शके १७९८ संवत् १९३३ पीष शुद्ध ३ सोमवार ता १८ दिजमवर सने १८७६ " निर्णयसागर" मुद्रायंत्रमां रा० रा० जावजी दादानीये छाप्युं छे. आ पुस्तकनो सर्वप्रकारे सरकारना धाराप्रमाणे हक्क माल्लके स्वाधीन राख्योछे.



प्रस्तावना.

आ पंचमकाल समाप्तिना अवसरे बेला दूप्पसहनामा आचार्य थरो, तेमना नि र्वाणसुधी जिनधर्मरूप मानससरोवरना साधु, साध्वी, आवक तथा आविका ए चतु र्विध संघरूप चार आरा खुला रहेवा जोयेबे. एवुं परमेश्वरतु वचन बे. कदाचित काल ना प्रबल प्रनावथी कोई समये कोई आरो न्यूनता पाम्या जेवुं थाय तोपण बाकीना चालु रहेला बीजा आराने प्रनावे समय पाम्याथी ते आरो पण सुधरी जाय बे.

श्वला बाजा आराम मगाव रागव गांव रागव करता घणी न्यूनता थई गएली दीगमां आवेजे. च आ समयमां पूर्वना समयना करतां घणी न्यूनता थई गएली दीगमां आवेजे. च तुर्विधसंघमां साधु तथा साध्वी तो कचितज दीगमां आवेजे अने आवक तथा आविकाओ नुं पण अव्प अस्तित्व जे. तेओनी कपरज धर्मवृद्धि आधार राखे जे. धर्म वृद्धि झाननी वृ दिथी थायजे. माटे झान वृद्धि अवश्य करवी जोयेजे. झाननी वृद्धि झानना साधनोनी विद्यी थायजे. माटे झान वृद्धि अवश्य करवी जोयेजे. झाननी वृद्धि झानना साधनोनी वृद्धि कपर आधार राखेजे. झाननां साधनो पूर्वाचार्य छत यंथोनो जीर्णोद्धार तथा अ वलोकन, विद्याज्यास, उत्सुकता, धर्मप्रीति, अनिरुचि, तथा उद्योग प्रसुख जे.

पूर्वाचार्योकत मंथोनो जीर्णोदार कर्खाथी ते समयना पंकितोनुं पांकिस जाएगा मां आवेडे ; मनुष्योनी धर्मजपर केवी रुचि इती ते जणायडे. जूत कालयी ते आ वर्त्तमान कालसुधी वचगालामां धर्म तथा विदत्ता प्रसुखनी केटली अधिक न्यूनता थई ने ते दीगमां आवेने. पूर्वाचार्यों अति श्रम वेनी विद्याऱ्यास करी मोटा मोटा मंथोनी रचना करता इता तेनों हेतु मात्र धर्मवृदि अथवा ज्ञानवृदि विना बीजो कांई द तो के छं ते वात स्पष्ट देखाई आवेजे. यंथनी रचना कखामां केवल परोपकार विना बीजो कांई पण स्वार्थ होयने के छुं? ते कलाय ने. पूर्व कालना करतां हालना वखतमां विद्यान्यासनो उद्योग केटजो अधिक अथवा न्यून थयोडे ? ते जणाई आवेडे. इत्यादि क बीजा पण घणा देतुउं दीतामां आवेते. माटे आवश्य प्राचीन मंथोनो सीणेंदिार करवो जोयेने. केमके, ए ज्ञानवृद्धितुं मुख्य साधन ने. जो पुरातन मंचोनो जीर्णोदा र नदी थाय, तो कालांतरे विह्वेद थई जवानो संनव के अने तेवुं थएलुं हाल दीवामां आवेडे, जुवों के हरिनइस्र्रिए चौद जो ने चुमालीश यंथों कखा हे, ते बधानों जीर्णोदा र नही थयाची तेर्डमांना केटलाएक अंथोनो हाल पत्तो पण मलतो नथी, एवा बी जा पण अनेक सुविदित आचार्यांना करेला प्रंथोनो शोध मली शकतो नथी तेनुं कारण पण एज हे. ते केटलुं लखियें! यद्यपि मारुं एम कहेवुं नथी के आज दिवससुधी को ईए मंथोनो जीर्णोदार कस्रोज नथी, मोटा राजाउ तथा सद्धकारो वगैरे घणा झान

जंमारा करी गयाने ते अद्यापि विद्यमान ने; अने तेथीज हाल केटलाएक पुरातन मंथोनुं आपएने दर्शन थायने. तथापि मात्र दर्शन करवाथीज कांई वलवानुं नथी, प ए योग्यरीते उपयोग कखाथी कार्यसिदि थवानो संनवने. जेम पूर्व धर्माजिमानी रा जा वगैराइए ज्ञान जंमारा कखाने तेम पानल थयुं नथी. ए मोटी दिलगीरीनी वात ने. जो एवो चालज पडी गयो होत तो एके मंथ विष्ठेद गयो न होत अने आटली ज्ञाननी न्यूनता पए धई न होत. जुवोके, देरासरनो जीएगेंदार करवानो चाल पडी गयोने तो तेनी संतति विज्ञेद गएली देखाती नथी. तेमज मंथोविषे चाल पडवो जोयेने. केमके मंथोनो जीएगेंदार तो ज्ञाननी वृद्धिनुं एक मुख्य कारए ने.

हालना समयमां ग्रंथोनो जीर्णोद्धार करवाना जेवां साधनो मली आवेछे तेवां आग ल कोई वखते पण नहोतां. पहेलां प्रथम ग्रंथोनो जीर्णोद्धार तालपत्र जपर थएलो देखायडे, ने त्यार पडी कागल जपर थयो डे ते अद्यापि सिद्ध डे. परंतु ते हत्तकिया विना पंत्रादिकनी सहायताथी थएलो नथी. ने हाल तो मुझापंत्रनी अति उत्छष्ट स हायता मली आवेडे, तेनो उपयोग करवानुं मूकी दईने आलस करी बेशी रहेशुं तो ग्रंथो केम कायम रहेशे ? हाल विद्याच्यास करीने नवा नवा ग्रंथोनी रचना करवी तो एक कोरे रही, पण डतीशक्तिये पुरातन ग्रंथोनी रह्ता करवानो यत्न नही करशुं तो आपऐज ज्ञानना विरोधी ठरशुं. केमके जे जेनी रह्ता करे नही ते तेनो विरोधी अथवा आहितकर होयडे. ए साधारण नियम आपणी जपर लाग्र पडशे.

आवक नाईयो, पुरातन यंथोनो जीर्णोदार कखाथी ते यंथोनुं अवलोकन थरो, प्रयाशविना केटलोएक विद्याच्यास थरो, रस उत्पन्न थर्डने झान संपादन करवानी अंतःकरणमां उत्कंता थरो. छुद धर्म ऊपर प्रीति वधरो, अनिरुचि एट ले पुनःपुनः झान मेलववानी इज्ञा थरो, अने उद्योग प्रमुख सर्व झाननां साधनोनो सहज प्राप्त थरो. उद्योग ए सर्व पदार्थ मेलववानुं अथवा रुदि करवानुं मुख्य साधन हे; परंतु अमस्ता उद्यमयीज कांई धर्ई शकतुं नथी. तेनी साथे इव्यनी पण सहायता जोयेहे. इव्य जे हे ते सर्वोपयोगी पदार्थ हे. माटे इव्यवान पुरुषोए अव रय ए काम ऊपर लक्त देवो जोयेहे. केमके, तेर्डनी ए फरज हे के, जेम बने तेम झाननी रुदि करवी जोयेहे. ते आप्रमाणेः- सारा सारा पंमितोनी मारफते प्राचीन यंथो सुधारी लखावी अथवा हपावीने प्रसिद्ध करवा. तेनो जाविक लोकोने अज्या स कराववो. इत्यादिक शास्त्रोमां कह्या प्रमाणे सर्व प्रकारे झाननी रुदि करवी. एवा हेतुथीज में आ यंथो हपाववानुं काम हाथमां लीधुं हे, परंतु कोईनी सहायता विना स्तंत्र मारी मरजी प्रमाणे दुं यंथो हपावी शक्कं एवी मारीपारो इव्यनी शक्ति नही होवाने लीधे आ 'प्रकरण रत्नाकर' नामनुं मोटुं पुंस्तक कहामवानी आगमज मारा ख धर्मों जाइयोनी मने मदत लेवी पडीडे. सारा जाग्यजोगे योग्य रोते मदत पण मली आवी, तेथी आ पुस्तकनो प्रथम जाग समाप्त करी ते गया जेष्ट मासमां प्रसिद्ध कथो अने आ बीजो जाग पण हमणा पूर्ण थयो डे तेथी हुं मने कृतकुख समज्जं डुं.

ऱ्या यंथ प्रसिद्ध करवाने मुख्य मदत करनार होठ. केहावजी नायकंडे.

हरेक पदार्थने सम योग्यतावान वा अधिक योग्यतावान रहण करी शकेने एवुं बहुधा दीगमां आवेजे. जेम अध्म क्तुना तापथी तप्त यएला पर्वतने मेघज रक्त्ण करेंगे, तेम ज्ञाननुं रक्त्ण ते उत्तम योग्यतावान पुरुषचीज चई शकेगे. यद्यपि सकल चतुर्विध संघने ज्ञाननी रहा करवानो अधिकार हे, तथापि सर्वने तेवुं सामर्थ्य होतुं नथी. माटे योग्यतावानज रक्त्ण करी शके हे. तेवी योग्यता कोई विरलानेज होय **डे**, केमके. बाह्य सर्व लद्रम्यादि समृदि डतां छंतरनेविषे जिन वचन श्रदानरूप समु दि पण जोये वे. तेमांनी बाह्य समृदि तो घणान्त्रोने होयवे तेम वतां जिनवचन अदान होतुं नयी तो तेनायी कोई पण एवुं छुन रूख यई शकतुं नयी. तेथी बाह्य संपत्ति सहित प्रवचनश्रदान पए जोये हे. बाह्य उत्तम संपदा छने छंतर खधम निष्ठा ए उत्कष्ठ पुत्पानुबंधीपुत्पनुं फल हे. तेवुं कोईएकनेज होय हे. एनुं प्रस्वक्त उ वाहरण आ वर्त्तमान दिशतकरूप कालनेविषे श्रेष्ट केशवजी नायक हे. केमके, एवी योग्यतावान बीजो कोई पुरुष हाल दीठामां आवतो नची. एओ बाह्य लद्दम्यादि सं पनियुक्त बतां आंतर धर्म सम्यक्ल अदानरूप अत्युत्तम संपत्तिए करीने पण युक्त हे. जेनेविषे पंच प्ररुतिरूप अंतराय कर्मनो ऋयोपशम आधुनिक सर्व संघ जनोना कर्त्तीख धिक दीवामां आवेबे; एमना जेवुं आतप नाम कर्म तो कोई नूपने पण कचित् उदय थयलुं दृष्टि गोचर थरो ! तेमज आदेय नामकर्म, अंगोपांग नाम कर्म, यशः कीत्तिनाम कर्म, प्रमुख राज प्रकतित्रोतुं एमएो एवो तो उत्कष्ठबंध कस्रोठे के, तेवो हाल दक्ष्णजरत्ता र्दमां कोई बीजानेविषे कचित् दीतामां आवसे एवा पुरुषने ग्रुं अशक्य होय? अने कीयुं कार्य करवाने समर्थ न याय ! अर्थात् सर्व कार्य करवाने शक्तिमान हे. पूर्वे अईगएला सं प्रति राजा तथा वस्तुपाल तेजपाल अने कुमारपाल प्रमुख महत् प्रजाविक पुरुषोनी पते एम एो पण वर्त्तमान कालानुसार धर्म दीपनार्थ तथा खश्रदान दर्शनार्थ श्री अर्ह्देवा लयो तथा अंजन शलाका प्रमुख उत्तम धर्म रुत्यो कचा हे; ते बधा आये पण अ

त्युत्तम ज्ञानवृदिनी उत्कंता पूर्वक तड़युक्त पुरुषोने अतिशय आश्रय दियेते; माटे नि श्रये करी एमने पूर्वजूत धर्म श्रदावान कुमारपाल राजा प्रमुखनी पंक्तिमां शासारुं न गणाय. किंतु तेमनी तुलना करे तेवाज ते. आ लखाणमां कोईए अतिशयोक्ति स मजवी नही, पण निर्पद्वपात बुदिथी विचार करो जोवुं के, ज्ञोत केशवजी नायक ए सर्व उपमाने योग्य ते के नही! जुवो के अमे अंकित करवाने आरंज करेला आ ए क लद्द संख्याक महत् चतुर्जागात्मक पुस्तकना अंकनीय खर्चनेविषे एवी युक्तियो आश्रय आप्योते के जेयकी केटलाएक समयोद्धरित पूर्व गीतार्थोए करी रचित प्रकर णोतुं सुखरूप पुनः जीर्णोद्धार धई शकहो. माटे एमने जेटली उपमादेये तेटली थोडीते.

राठबहादूर बाबुसाहेव लह्मीपति सिंहजी बत्रपति सिंहजी.

रोठ केशवजी नायकविषे लखतां आ प्रसंगे श्रीमक्शुदावाद निवासी स्वप्नांत जूप समान, लद्दम्यादि बाह्य अमित समृदि युक्त, उत्तम यशःकीर्त्ति नाम कर्मादयवान, झान वृद्युत्कंठावान अतिशय, प्रतापी स्वधर्म दीपक पूर्वोक्त पंक्ति अनिराजनीय, सर्व संघ तिलक जूत तथा श्रावक गुएा सहित्यादि अपूर्व रुत्यालंकार जूषित राज्वहाडर जूपतिदत्त पदक धारक बाबुसाहेब लक्षीपति सिंहजी बत्रपति सिंहजी पोताना नाम प्रमारोज योग्यतावान होवाथी अधुना अनुपमेयज बे

जस्टिस् आँव् धि पीसाख्य नूपतिदत्त पदक धारक शेव केशवजी नायक तथा रा ठबहाइराख्य नूपतिदत्त पदक धारक शेव लक्षीपतिसिंहजी वत्रपतिसिंहजी जेवा प्रजा विक धर्म दीपक पुरुषो आवक मंमलनेविषे इमेश ठत्पन्नथता रहो; अने आवा ज्ञान वृद्धिरूप धर्मकत्यो कर्त्ता रहो एवो अमारो अंतःकरण पूर्वक आशिर्वाद वे.

आ ज्ञानवृद्धिक उत्तम रूखने सारो आश्रय आपनार प्रनाविक पुरुषोनी पंक्तिमां शोनित, अपेक्ता तथा उपेक्ता रदित, सारासार यादक, परम रदस्यज्ञ, परोपकार म तिमान, करुणा, दया, रूपा तथा शीलादि छन्युण युक्त, श्री वीतरागपद कमल मक रंद लालसाय च्रमरायमान्, महात्मा सदृश मुनी महिमा सागरजी तथा सुमति सागर जी; एमनो अत्यंत प्रार्थना पूर्वक अल्युपकार युक्त नाम स्मरण अत्र ग्रंथित करुं ढुं.

श्री मुंबईना आवक मंमलमांना श्रेष्ठ दरजम नरसिंह ; श्रेष्ठ पेला जाई पदमसी, श्रेष्ठ वर्डमान पुनसी, श्रेष्ठ जोजराज देसल, एमणे ज्ञान तृदि विषयक पोतानी सारी उदारता दर्शावी ने माटे तेमना उपकार पूर्वक हुं नाम ग्रंथित करुं नुं. श्रीमक्ंग्रुदाबाद निवासी परम ज्ञान प्रसारोद्युक्त मतिमान खज्येष्ठ चाता तुब्य ल क्वी तथा गुएा युक्त जूप दत्तक रायबाहादूर पद धारक बाबुसाहेब धनपति सिंहजी बत्रपति सिंहजी एमने पएा पोतानी उत्ऊष्ट ज्ञान वृद्धिक रूखने सारी उदारता दर्शांवी बे तेथी तथा बीजो पएा ज्ञान वृद्धिने अर्थे पुस्तक अंकित करवानो हमेश उद्योग चालुं राखेबे तेथी छति सत्कार पूर्वक तथा मान्यता युक्त नामस्मरएा ग्रंघित करुंडुं.

श्री मुंबईना श्रावक मंडलमांना होत परबत लधा, होत मूलजी देवजी, होत जादव जी परबत, सा. नोजराज नरपाल, तथा होत कीकानाई फूलचंद तथा शा. ताकरसी देवजी एछोए पण पथाश्रदान प्रमाणे छा ज्ञानतृदिना रुत्यने छाश्रय छाप्योते तेथी तेछोतुं उपकार सदित नामस्मरण ग्रंथित करुं डुं.

श्री छहमदावादना आवक मंमल माहेला होत दलपत नाई नगुनाई, तथा होत मयानाई प्रेमानाई, एउनी ज्ञाननी प्रहास्ति थवानेविषे छति उत्कंता जोईने मोटा छानार सहित नामस्मरण गुंथित करुं हुं ;

श्री साणदवाला शेव साकलचंद डुकमचंद तथा श्री नरूचवाला शेव अनूपचंद मलु कचंद, एओए पोतानी धर्मप्रनावना अधिक दर्शाववाने अर्थे ज्ञाननी वृदि यवा सारु जे उत्सुकता बतावी ढे ते जोईने मोटा उपकार साथे नामस्मरण गुंथित करुं ढुं.

श्री कत्त मुदराना रहेवाशी ज्ञोठ कस्तुरचंद सिंघजी पारेख एमनी अझुत धर्म प्री ति, वैराग्यता तथा ज्ञानवृद्तिनी अतिशय चाहना जोईने मोटा आदर पूर्वक आ पु स्तकनी साथे नाम ग्रंथित करुं ज़ुं.

साधुमंमल मार्गमार्गित संवेगी साधु वर्य, आति विवेकी, ज्ञान पीयूष बुजुत्सुक जिनप्रवचन अवण अदावान आवक जन मन कर्णने परमामृत रदस्य पान कराव नार; साधु ग्रण नूषणालंकत; ज्ञानवृद्धि कत्ती पुरुषरूप वृद्दोने मेघवृष्टि समान अद्यु त्रुष्ठ साधन जूत, महाराज श्री मूलचंइजी तथा जवेर सागरजीना, नामस्मरण प्रेम पूर्वक ग्रंथित करुं ढुं.

साधु मंमलमां साधु गुण संपन्न, ज्ञानरूप सूर्यना प्रकाशने आवरण करनारा जे नाना प्रकारना संशयो, कुतर्कों, देष, मान, ईर्षा तथा कुसंग प्रमुख वादल समूदरूप धनघटानो सम्यक् प्रकारे विध्वंश करवाने बलवान पवन समान ; धर्म तथा धर्मांग ज्ञानादिकनो वृदि करवाने पूर्वना अत्युत्तम सुविद्तित शास्त्रपारग्र, आचार्यादि आर्थ जन तुल स्यादाद सैलीना जाण बहुधा पंजाबाख्य देश निवाशी संवेगी साधु श्री आत्माराम समान आत्मारामजी एमतुं अति जाबपूर्वक नामस्मरण गुंथित करुं हुं. संवेगी साधु श्री नितीविजयजी महाराज एउनो ज्ञान वृदि अर्थे सारो उद्योग होवाथी प्रथम जागनी पते नामस्मरण ग्रंथित करुं डुं:

संवेगी साधु साध्य वस्तु साधनोयुक्त युक्त मतिमानः जिनवचन समुइमांथी जलद वत ग्रहीत धर्माकाशस्थित जलवृष्टि वत् ज्ञान वृदि कर्त्ता; संवेगी साधु ग्रुद सम्यक्ल पदारथ, परम सुविहित सुसाधु मंमल माल प्रोहीत, ज्ञानादि ग्रुद जिनधर्मांगवृदि प्रयत्नवान श्रीशांति सागरजी महाराजनुं नामस्मरण गुंथित करुंगुं;

जन हंद वंद्य अचल गञ्चाचार्य जहारक श्रीविवेक सांगर सूरि, एमतुं पूर्वजागनी पते नाम स्मरण गुंथित करुं हुं;

मनुष्य पुंज प्रूज्य तप गडायिंपति जद्वारक श्री धरऐोंइस्र्रि, एमनुं नाम स्मरण गुंथित करुं डुं;

श्री हुकमचंइजी महाराजनुं में प्रथम जागमां नाम स्मरण ग्रंथन कखुं ने तेमज अत्रे पण गुंथित करुं डूं.

प्रवचन रहस्य ज्ञाता, कोविद मतिमान, अङ्गत चपल वत्ततृलशक्तियुक्त, खरूपसा गरवित् श्रीरूपसागरजीनुं नाम स्मरण गुंचित करुं हुं;

शुद्ध वीतराग परुपित, जिनधर्म विनूति युक्त श्रीश्चइमदावाद नगर निवाज्ञी सर्व आवक मंमल जन नूप समान छत्यंत लक्ति संपत्तिवान पूर्वज परंपरा श्रेणि छागत श्रीमान उत्तम श्रदान सहवर्त्तमान तथा धर्मदीपक श्रेष्ठ मयानाई प्रे मानाईनुं नामस्मरण पुनः गुंथित करुं जुं.

बीजा पण जे जे सहुदिमान पुरुषोए धर्म प्रजावना दर्शाववा निमित्ते स्वसामर्थ्या नुसार ज्ञानवृदि देतुथी जे ज्दारता दर्शावो ने तेओना नामस्मरणार्थ पुस्तकना छंत नेविषे गुंथित थज्ञे.

क्तमापना.

प्रथम जाग मध्ये मतिदोषची तत्वानुबोध नामनो ग्रंच जे एष ३३१ ची ३५६ सुधीमां नाखवामां आव्युं जे ते स्थानकवासी रतनचंदनो करेलो जतां लखेली प्रतमां तेवुं न जणायाची जूलची जपाई गयो जे. एटला माटे ढुं सर्व सुबुध्विवान वाचको पाशे थी इत्मा मांग्र ढुं के खंकित ग्रंचना मुख एष्टमां. सुविहित गीताची रचित ग्रंचो ज नाखवानी मे प्रतिज्ञा करेली जे तेने कोई दूषण आपशो नही. केम के, हरेक काम जूलवी थाय. ते रूमा करवा योग्य ने ढुंढिया यद्यपि जिनधर्मा नामधरावना रा तो ने पण जाते मूर्खज होय ने तेथी तेउं जिनोक्त मार्गनी विपरीत परुपण कर ता दरता नथी एवात सर्व सुङ्ग जनोने सम्मत ने माटे ते मूर्ख होवाथी गोतार्थ कहेवा य नही तेथी ए ग्रंथ द्यवरय जैन सैलीथी विपरीतजने एवं जाणी त्याग करवा यो ग्य ने; कोईए सुविहित गीतार्थरुत जाणीने वांचवो जणवो नही ए वात हुं श्री जा वनगरमां साधु श्री आत्मारामजी महाराजने मलवा गयो हतो त्यारे तेमणे मारी पारो कही ए रतनचंद यानकवासी साथे आत्मारामजी महाराजनो मलाप वयलो हतो इत्यादिक बहुवातो मे एमना सुखथी सांजलीने तेथी में घणो पश्चात्ताप कस्वो पण पत्नी याय ग्रुं? माटे मूलथी मारी प्रतिज्ञामां में जूल कीधी तेनी सुनि श्री आत्माराम जी महाराजना उपकार सहित सर्व सक्तनो पारोथी क्लमापना माग्रं हुं.

शा. नीमसिंह माणक.

विनतीः

समस्त जैन धर्म रागी, नाना प्रंथ विचार बुच्चस्तुक, जिनवचन पीयूषपान कर्चा, श रल चित्तवाला जनोने अति प्रार्थना पूर्वक विनति करुं हुं के, जेम जननी अथवा जनक खपुत्रना दोषविषे रंचमात्र विचार न करतां मात्र गुणनुंज यहण करेते. तेम आ अंकित पुस्तकनेविषे कोईने काई दोष दृष्टिगोचर थाय तो मफ ऊपर रंचमात्र रोष कर वो नही. केमके, सर्व प्रकारे निर्दोषता एक केवलीविना बीजा कोईनेविषे पण संजवे नही. एटला माटेज पूर्वे धई गयला महत् आचार्य प्रमुख श्रुतज्ञान पारग अत्युत्क ष्ट पंक्तितो पण स्वरचित प्रंथोमां बुद्धि दोषनेविषे क्तमा मागी गयला दीतामां आवते; त्यारे आधुनिक साधारण जननी वात शुं कहेवी? आ पुस्तकनुं शोधन करतां मति दोष अथवा दृष्टिदोष अवदय दीतामां आवशे; ते जोईने रोष न करतां क्तमा करवी. केमके, वांचता अथवा लखतां जूल थायज ते एवो नियम ते. एविषे जे गर्व करे ते मूर्ख कहेवाय. माटे ए विषे हुं सर्व सत्पुरुषोनो विनय करुंतुं के, आपनी हंसना चंचू जेवी मतियी सारासार विचार पूर्वक जलरूप दोषनुं निवारण कराने पयरूप ग्रुणनुं यहण करतुं. अने असत् पुरुषोनो पण अधिक विनय करुं हुं के, आपनी काकना चंचू जेवी मतिवहे ग्रुण तजीने दोषनुं प्रहण करीने ते सुखेथा प्रसिद्ध करवो; तेथी हुं मोटो उपकार मानीश ? केमके, जो दोष दर्शावनार नही मले तो दोष दीतामां केम आवे? गुणग्राहकनी क्रमारूप अमृत धाराषी यद्यपि गुणनी पुष्टी थायते, तथापि दोष याहकनी कुमतिरूप कुतार धाराषी बुद्धि तिन्न जिन्न थइने तेने अदोषता करवाविषे धणा प्रयत्नमां प्रवृत्ति थायते, तेथी तेनो पण उपकार मानवा योग्य ते. माटे सर्व सज्ज न तथा इष्ट पुरुषोनी विनति करुं हुं के, यथा खमति अनुसार गुणदोष विचार करीने कमादिक करवुं.

शा० जीमसिंद माएक.

प्रार्थना.

∞≫०≪∞

आ पुस्तक वांचनारा अने नएनारा प्रमुख सर्व ज्ञानना रागी अने विवेकी सुज्ञ जनोने अति नचतापूर्वक ढुं याचना करुंतुं के, आ प्रकरए रत्नाकरमांना कोई प्रकर एमां अंतरवृत्तिजन्य दोषषी, बाह्यदृष्टि दोषथी अथवा अज्ञान प्रक्रियाने लीधे कांई जननी सैलीथी विपरीतता अथवा सांशयिक दीठामां आवे तो तेविषे कोप न करतां सर्व जखी लईने ते मने मोकलावी देवुं, के जेथी ते सुधारीने कोई प्रसंगे विरोधनो परिहार करवामां आवे. जेम के, प्रथम जागमां नाखेला उपमितिजवप्रपंचनी कथा मां अनुसुंदरने अवधिज्ञान उत्पन्न थया पठी अनंत काल निगोदमां रही आव्यो ठ तां ते सर्व वात स्मरएामां आवी ठे. ए सांशयिक उक्ति ठे; इत्यादिकनी पठे ज्यां ज्यां दीठामां आवे खां त्यांथी जखी लईने जो बने तो तेना विवेचनसुदां अथवा एमज मने सूचना करवी एवी हुं तेमनी प्रार्थना करुंतुं, अने एम कखाथी मोटो उपका र मान्यामां आवशे.

शा० जीमसिंह माणक.

	•		
	अधिकार.	पद्य	एष.
3	साम्योपदेशाख्यःप्रथमोधिकार	₹8	22
হ	स्त्रीममत्वमोचनोनामदितीयोधिकार	5	१ए
₹	पुत्रममत्वमोचनाख्यस्तृतीयोधिकार	В	२ १
В	धनममत्व मोचनोनामचतुर्थोंधिकार	8	হহ
य	देहममलमोचनाख्यः पंचमोधिकार	U	इ प्
ष्	विषयावशतोपदेश नामाख्यःषष्टोधिकार	Q	হ ও
9	विषयकषायद्यवशताख्यः सप्तमोधिकार	₹ ?	₹₽
ច	शास्त्राग्रणाधिकारोऽष्टम तदंतरगत चतुर्गत्याश्रितोधिकार	१ ६	₹६
Q	चित्तदमनानिधानो नामनवमोधिकार	<u>, a</u>	ЯŚ
ζ σ	वैराग्योपदेशाख्योदशमोधिकार	२६——	ষদ্
11	धर्मग्रुद्धि उपदेशाख्य एकादशोधिकार	в 5	५ इ
१२	देवगुरुधर्मग्रुदिनामाख्यो दादशोधिकार	<u> 1 9</u>	হ্ ত
? ą	यतिशिक्तानिधानोनाम त्रयोदशोधिकार	ų ֎	६ ६
ξB	मिथ्यात्वादिसंवरोपदेशाख्यश्चतुर्दशोधिकार	হ হ—–	ঢ হ
रुष	ग्रनप्रवृतिशिक्तोपदेशाख्यः पंचदशोधिकार	<u>τ</u> σ γ	ወወ
15	साम्यसर्वस्वनामा षोडशोधिकार	U	৫৯
	ર		

- ३ श्रीमुनिसुंदरसूरिकृत अध्यालकल्पद्रुमनामाग्रंथनी अनुक्रमणिका. ए
- १ श्री रत्नरोखरसूरिकत श्रीक्रषज स्तुति गर्जित महिम्नस्तोत्र. १ २ श्री क्तमाकव्याणजीकत विविधकाव्यचातुर्य युक्त चतुर्विंशतिजिनस्तुति ४

स्यूल विषयानुक्रमणिका प्रारंजः

×><>

यंथोतुं नाम-

12

ਦੁਦੁ-

प्रकरणरत्नाकर नामाख्य पुस्तकना बीजाजाग माहेला ग्रंथोनी

ञ्जनुक्रमणिका.

Я	श्री शीतलनाथाष्टक इतविलंबिताख्य वृत्त चतुर्पादावृत्ति युक्त मलूकचंइ रचित •• •• •• •• •• •• •• •• •
	श्री जिनस्तेत्र संग्रह, श्री कल्याणसागर सूरिकृत.
	श्री माणिक्य खामि स्तोत्र विविध पद्यरचनात्मक १० ए७
ह	सूर्यपुरीय श्रीसंजव जिनस्तोत्र वसंत तिलकाख्य ठून गुंधित च
	तुर्थों विचत्तयंत पद बद
9	श्री सुविधि जिनस्तवन डुतविलंबित वृत्तबद्ध प्रत्येक पद सुविधि
	नाम युक्त ६ एए
ច	श्री शांतिनाथ स्तोत्र जुतविलंबितवृत्तब६ हितीया विजन्तयंत पद युक्त १ २
ম	श्री शांतिजिनस्तोत्र विविध पद्यबद्ध संबोधन पर्यंत अष्टविनक्ति दर्जीकः १ए एए
•	
ξ σ	अ। अंतरिक्त पार्श्वस्तोत्र इंड्वज्ता वृत्त बद्ध चतुर्थ पादावृत्ति युक्त.
\$ \$	
• •	वृत्ति युक्त १११०१ श्री गौडि पार्श्वनाथस्तोत्र नानाख्यवृत्त बद्ध छड्डत् चमत्रुतियुक्त. १११०१
	श्री गाडि पश्विनायस्तात्र नानास्ववृत्त बद्ध अमुत पन्तरकृति युक्त ए१०२
₹₹ ₹8	श्री कलिकुंम पार्श्वाष्ट्रक हत्त बद चतुर्थ पादा हत्ति युक्त ·· ए१ण्ध
у а У П	श्री रावण पार्श्वाष्टक इंड्वजावृत्त बद चतुर्थ पादावृत्ति युक्त.
ेर १६	श्री गोहिपुर पार्श्व जिनस्तोत्र गायन पद्य बद रमणीय राग युक्त. १९१०५
\$3	श्री पार्श्व जिन स्तोत्र तोटक वृत्तब ६ दितीया विनत्तयंत पदयुक्त १०१०५
	श्री महुर पार्श्वस्तोत्र डुतविलंबित वृत्तबद चतुर्थ पादावृत्ति युक्तः १०१०६
<u>१</u> ए	श्री सत्यपुरीय महावीर स्तोत्र इतविलंबित वृत्त बद युष्महूब्द
	प्रथमैक वचन दितीय पुरुष अस् धातु वर्त्तमान काल दर्शक. १५१०६
হ চ	,, ,, ,, ,, तृत्तबद युष्मज्ञ शब्द चतुर्थे
	क वचन हीतीय पुरुष नम् धातु एक वचन वर्त्तमान काल दर्शेक
₹ १	श्री लोडण पार्श्वनाथ स्तोत्र अनुष्टुप्ठत्त बद्ध दितीय विचक्तिदर्शक. १३१०७
হ হ	श्री सेरीश पार्श्वनाथ स्तोत्र उपजाति वृत्तबद्ध चतुर्थ पादावृत्ति युक्त. 🤍 🦇 🕬

20

<mark>अनुक्रम</mark>णिका.

হর গ্র	श्री संजवनाथ स्तोत्र उपजाति वृत्त बद्ध चतुर्थ पादावृत्ति युक्तः ए१०ए श्री सुक्तू मुकावली केशरविमलकत मालिनी प्रनृति वृत्त बद्ध
	१ धर्म पदार्थ वर्ग
	२ अर्थ पदार्थ वर्ग २ २ ५ ११६
	र काम पदार्थ वर्ग २३ ११७
	ध मोक्त पदार्थ वर्ग १२ ४ ४३ १२१
२ ध्	श्री शांतसुधारस मंघ श्रीविनय विजय उपाध्यायजीकृत विविध
	गायनीयराग रचित पद्य बद्ध अनित्यादि हादश जावना
	तथा मैत्रादिचार नावना मली शोल नावना विषय
	काव्यचमत्रुति युक्तः
१६	
23	चतुर्वशात जनस्तात्र जनप्रनस्तारकत वृत्तबद काव्य चमत्कति युक्त १९५ १ ९५ श्रास्तिक तथा नास्तिक मति संवाद कर्त्ता नाम ज़ुप्त विविध प्र
•	श्वीस्य सन्द्र मन्द्र नगत जन्म ह
51.17	श्रोत्तर युक्त गुर्जर नाषा गद्यबद्ध
२७	सम्यक्लना सडसव बोलनी सन्नाय श्रीयशो विजयजी उपाध्या
	यकत गुर्जर नाषा गायनीय विविध ढालरूप पद्यबर्द ६ए२१२
ঽ৻৻	शृंगार वैराग्य तरंगिणी, सोमप्रजाचार्य विरचित नूतन काव्य च
	मत्कति उपजात्यादि अनेक विध वृत्ताख्य पद्यबद स्त्री
	शृंगार वर्णन मिज्ञे वैराग्य दर्ज्ञक

विविधविषयिकस्तोत्र, जिनप्रजाचार्यकृत.

₹u	श्री वीरजिनस्तोत्र आर्यावृत्तबद्ध पंच वर्ग परिहारक काव्य चातुर्ययुक्त	75
₹?	श्री गौतम स्तोत्र उपजात्यादि तृत्तबद्ध पांभित्य युक्त	२५ २ व२ प्र. प्रमू
₹२	श्री नामजिनस्तात्र आयो प्रजुति विविध जातीय वृत्तुबुढ श्रमि	~(
	त चतिय क्रियालुप्त \cdots \cdots 💀 💀 💀 🗤 🗤 🗤 🗤	80
퀵쿠	श्रीवर्धमान जिनसोत्र इंडवजा प्रमुख विविध तत्त नाम श्लेषा	,
	र्थ गानत काव्य पांकिस सचक	₹ų —- ₹8 ų
₹४	त्रा चतुंविशात जिनस्तात्र इतविलंबित वृत्तं चतेर्थ पाढांतरगत	·~ · ~ ·
	सदृश वर्णावृत्तिरूप यमक नामक शब्दालंकार श्लेषादि गर्नित	१ ७ २४ ३

22

ञ्जनुक्रमणिका.

३५ श्री पंचकव्याणिकमय महावीरजिनस्तोत्र वृत्त बद लाटानुप्रासा	
	१६१४७
३६ श्रीमंत्र सोत्र अनुष्टुप्ठन बद परम रहस्यार्थ गर्भित मंत्ररूप	ų —— ર પ ?
३ ७ श्रीवर्डमानजिनस्तोत्र उपजातिवृत्तब ६ विविधालंकत राब्द लालिखयुक्त	ए १५१
३० श्री पार्श्वजिनस्तोत्र उपजाति वृत्त बद्ध प्रतिपद पंचाक्तर पुनरा	
वृत्ति रूप सिंहावलोकन युक्त	ए१५१
३७ श्री पार्श्वजिनस्तोत्र उपजाति वृत्त बद्ध पादांत समचतुरझर पुन	
रावृत्तिरूप यमकालंकार युक्त	ए २५२
	8 5 24 5
४१ श्री शारदास्तोत्र उपजातिवृत्त बद्ध कचित् समपाद पुनरावृत्ति	
कचित् विषमपाद पुनरावृत्तिरूप एक चतुर्पादरूप यम	
	१३—–२५४
४२ श्री जिनसिंहसूरिस्तोत्र उपजाति वृत्त बद कचित् समपाद	
पुनरावृत्ति कचित् विषम पाद पुनरावृत्ति एक चतुर्पादरूप	
यमकालंकार युक्त	१३—–३५५
	३३——१५६
४४ श्री वीरस्तोत्र छनुष्टुप् ठृत्त ब र्ड प्रत्येक पद्ये सम समपाद पुनरावृत्ति	
	१३२५३
४५ श्री आदि जिनादि स्तोत्र अनुष्टुप् वृत्त बद प्रत्येक पये सम स	
मपाद पुनरावृत्तिरूप यमकालंकार युक्त 💡 😷 😳 😳	१०२५०
४६ श्री पार्श्वप्रातिहार्य स्तोत्र खागता ठुत्त बेह प्रत्येक पद्ये समसम	
	१०२५७
8 9 श्री कल्याण पंचक स्तोत्र वंशस्य ठृत्त बद साधारण काव्य रचना युक्त	৫ १६ ০
४० श्रीवीर जिनस्तोत्र लक्ष्ण प्रयोगमय उपजाति वृत्त बड व्याकर	
	१९——२६०
४७ श्री वीतराग स्तोत्र उपजाति उत्त बर्फ कचित् पादांतगत कचित्	
	१६——१६१
५० श्रीचंइप्रनखामि स्तोत्र अनुषुप् वृत्त बद सम समपाद पुनराव	
त्तिरूप यमकालंकार युक्त 😳 😳 😳 😳 😳 😳	४१६२
५१ श्रीक्षनदेव स्तोत्र आयोदि उत्त बद विविध नाषा रचना चम	

য্য্

www.jainelibrary.org

٠.

	ल्ठति युक्त तथा संस्कृत, प्राकृत, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची, शौरसेनी, समसंस्कृत ने अपन्नंश निन्न जिन्न अने	
	्रमिश्र कविनाम गर्ने चक्त युक्त	४०२६३
ય્ર	श्री महावीरस्तोत्र विविध वृत्तबक् अत्युत्तम चित्रादि काव्य चम	
	त्रुति युक्त यथा प्रतिलोमानुलोमपाद, खनुलोम प्रतिलोम,	
	अर्६ प्रतिलोमानु लोम, अर्दचम, मुरजबंध, गोमूत्रिका, सर्व	
	तो नइ, रथपद, ६घक्ररपाद, एकाक्ररपाद, एकांक्ररश्लोक,	
	श्वसंयोग, दाऱ्यां खड्ग संदानितकं, मुसल, त्रिज्ञूल, दल, धनु ष्प, शर, शक्ति, श्रष्टदल कमल, षोडशदल कमल, स्तुत्यना	
	भगर्भ बीजपूर. हर, कविकाव्य नामक चक्र, तथा चामरबंध.	S Kauna S K H
មង	श्री जीरापहितपश्चित्तांत्र स्वागतावृत्तबद्ध विषम पदांत समपदाद्य	२६२६ ध्
14	त्र्यक्तर पुनरावृत्तिरूप सिंहावलोक काव्ययुक्त	1 u 2 t u
u a	श्री फलवर्दि जिनस्तोत्र श्रायावृत्तबद्ध प्रत्येक पद्याई चतुरक्रा	
`	रमक त्रयावृत्तिरूप यमकालंकारयुक्त	1 1 220
५ ५	श्री चंइप्रन खामिस्तोत्र मौक्तिक दामादिवृत्तबद षट्नाषा रच	
	ना चमत्रुति युक्त यथा संस्कृत, प्राकृत, शोरसेनी, मागधी,	
	पैशाचिक, चूलिका पैशाचिक, अपचंश	१३——१६ ए
ध्द	श्री वर्दमान निर्वाण कल्याणक स्तोत्र खागतावृत्तवद सर्वोत्रुछ	
	वर्णन युक्त	i6≤8i
ń a	श्री श्वरनाथस्तोत्र पंचदश केवलाझर पद्यबद्ध श्रृत रचना युक्त	\$ 8 8 9 9
UG	ञ्चाध्यात्म मतपरिक्तानाम ग्रंथनी स्थूलविषयानुक्रमणिका	. হ্বয়
	आध्यात्मना चार प्रकार देखाडीने तेमां मात्र नाम अध्यात्मिजे	
	बिगम्बर लोकने तेमना मतनुं निवारण करतां जावाध्यात्मनुं	
	स्वरूप दर्शावतां तथा साधुने वस्त पात्र उपधिप्रमुख ते सिद	
	ताना हेतुने एवुं अनेक दृष्टांतो सहीत प्रश्नोत्तररूपे सिदांतसै	
	लियें प्रतिपाद्युं तेने प्रसंगे ध्याननुं स्वरूप स्थविरकल्प	
	जिनकल्प तथा अपवाद उत्सर्ग इत्यादि	2 9 3

र३

www.jainelibrary.org

ञ्जनुक्रमणिकाः

उत्रुष्ट खध्यात्मनी प्राप्ति चवानां कारणो निश्चय व्यवहार न	
यना वाद सहित मध्यस्थपणे प्रमाण वादीनं मत लावी	
वत्रुष्ट अध्यात्मनी प्राप्ति दर्शावीने	হ ৫ ০
केवली कवलाहार अवरय करे एवी स्यापना यक्तिपूर्वक सि	• •
र्झात सैलियें बतावी हे	3 o X
केवली कवलाहार करता उता उत्तरुखज जे	३२१
षट्कारकनुं स्वरूप	३३ २
सिद्धना पन्नर चंद्र	হ হ হ
स्रोलिंगें सिंधता दिगम्बरीउं नथी मानता तेने टुबुए	 इ.इ.इ
मंघनुं परम रहस्य	म् इस्
	• •

ध्रेश्व समयसार नाटक नामाख्य ग्रंथनी स्थूल विषयानुक्रमणिका. ३४८

श्री पार्श्वनाय, सिद जगवान, साधु, अने सम्यक्दष्टीनी स्तुति, मिथ्यादृष्टि वर्णन, मंगलाचरण, आत्मइव्य वर्णन, यंचगो रवता, कवीनुं साम्यर्थ, यंच महिमा, अनुजव लक्त्ण, तथा महिमा, षड्ड्व्य नव तत्व वर्षन, नाम माला, आ यंचमां क हेवा लायक हादश हारनां नाम; यंचारंजनो मंगलाचरणरूप		
नमस्कार, आत्म वर्णन, जगवाननी वाणीने नमस्कार 👘 ३४५		
१ जीवधार वर्णन ए६३६३		
२ अजीव दार अधिकार १४ ३ ७ १४ ३ ७		
३ करता किया कमैनो ६ार इए ३ ७४		
४ पुन्य पाप एकत्वी कथन चतुर्थ ६ार १६४००		
थ अध्यात्मना अधिकार सहित आश्रव हार १६४०७		
६ संवर धार ११		
७ निर्क्तरा दार ६१४१६		
ण बंध तलना हारना प्रबंधनो अधिकार ६ ए ४ ३ ए		
ए मोइन्दार		
१० सर्व विद्यदिदार		
११ स्यादादनामा दारनी अंतर्गत मंथमहिमा तथा नवरस		

Jain Education International

www.jainelibrary.org

रध

वर्णन अने चतुर्देश नय इत्यादिक अनेक विषययुक्त	81413
१ श साध्य वस्तु अने साधक वस्तुना स्वरूपनो ६ार	u=
कवी अमूतचंद आचार्यनी आँलोचना तथा बनारसी दासें जिन	
प्रतिमानी सुति करी तथा वणारसीदासनी पोतानी कथनी	кв и
च उद गुएास्थानक स्वरूप तेमां चोथा गुएास्थानकमां द्वा	
यिकांदि सम्यक्लनो खरूप तथा पांचमा गुएस्थानकमा	
श्रावकनी एकादश प्रतिमानुं लक्त्एा	ए थ्४ द्
६० सम्यक्लस्वरूप स्तवग्रंथनी स्थूलविषयानुऋमणिका.	K 22
१ सूत्रकारनी गाथा तथा सम्यक्लप्रांसिनी अगाज जेवी जी	
वनी छवस्था होय तेनो विवरो	นุลอ
श् सम्यक्तव प्राप्तिनो उपाय 🗤 गाणा गाणा गाणा	មចម
र मंथि चेदवानी रीत	עסס
8 छनिवृत्ति करणे गयो थको जीव जे कर्त्तव्य करे ते कर्त्तव्य	५ ९०
५ सम्यक्त्वना चेदनो विवरो	૫ૡર
६ कारकादि सम्यक्त्वनां लद्दण	પણદ્
७ कर्म्भ ग्रंथनी सैलिये उपराम सम्यक्ल प्राप्तिनो उपाय	ቼ ሀ ፻
ण्पांच सम्यक्त्वनो काल	ፍዐዊ
७ दश प्रकारनी रुचिरूप सम्यक्त्व	६१ २
१० सम्यक्तवना सडसव जेद विद्युद्ध व्यवहारथी	इ रु छ
६१ पष्टीशतक नामक यंथ नेमीचंइ जंमारीरुत ए यंथ ग्रुद मार्गानु	
सारीओने जएवा वांचवा तथा सांजलवा लायक विचित्र उ	
पदेशे करी युक्त जे	६ হ্ ६
६२ संयमश्रेणीनुं स्तवन पंमित उत्तम विजयजीकत	६ एए
६३ लोकनाल हात्रिंशिका	350
६४ सम्यक्त विचारगर्जित महावीरजिन स्तवन.	
नाराचारिक समायल्या थेर सतिस्पाननों द्वजा समायल नामना	

उपशमादिक सम्यक्त्वना जेद सविस्तरपर्ण तथा सम्यक्त्व पामवा नो उपाय छने यथा प्रवृत्यादिक त्रण करणतुं स्वरूप इत्यादि. **७३**७

ञ्जनुक्रमणिकाः

पांचसम्यक्लना स्थितिकालमानादिक तथा गुएगाएग	<u> </u>
उपशम श्रेणी तथा क्तपकश्रेणीवुं स्वरूप	<u> </u>
आत नेदे पुजल परावर्त्त	2 3 8
काय स्थितिविचार	333
सप्तजंगीनुं खरूप	<u>ទ ប ខ្</u>

ह्य षड्डव्य विचार नामाग्रंघ चर्च्चकरूपे.

۰.

<u> 3</u>60

सिद्धना पन्नर जेद तेमां दिगम्बरीओना मत खंमन पूर्वक स्त्री	·
लिंगनी सिर्द्रता बतावीळे छजीव इव्य विचार तेमां दिगम्बरोनी चर्चा पूर्वक पुझ्ल	3Q0
इव्यनो विचार सिद्ध कखुंते	<u> </u>
चार प्रकारना छनाव	៤០ ១
नय निकेष स्वरूप	បុរេ
मोक् प्राप्तिनुं कम	5 2 2
ञ्चात्म प्राप्ति विधि	उ १ २
सम्यक्त्वीना आवगुण	ច វ
सम्यक्ली सोहं बीजध्यावे तेनो अर्थ	ए १ ए

.

॥ अय श्री महिम्नस्तोत्रप्रारंनः ॥

महिन्नः पारं ते परमलनमाना अपि विनो नवंति स्तोतारः समवसृतिनूमो समु दिताः ॥ यदिंड्ायास्लां तक्तिनवृषजनतया स्तवयतो ममाप्येष स्तोत्रे इरनिरप वादः परिकरः ॥ १ ॥ स्वरूपं चिडूपं किमपि तदरूपं नगवत श्वतूरूपा ब्राह्मी यदि गदितुमीछे न जवतः ॥ ततः कस्य स्तुत्यं किमुपममिदं कस्य विषयः पदे खर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ शा यदा ॥ पदं शैवं केचित्परमम नपेकाक्त्यसुखं स्तुवंति लां राज्यादिकपदकते मंदमतयः ॥ जवेदा तलार्थे रतिर तितरों नैव जवतः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ ३ ॥ गुणाना मानंखादविषयतया वाङ्मनसयो न शक्या तलकौ रपि तव विधातुं सुतिरियम्॥ जवन्नामोच्चारात्पुनरपि ममैतां निजगिरं पुनामीखर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यव सिता ॥ ४ ॥ यदा ॥ जटालंकारालंकतमय वृषांकं च जगवन् पुनानं विश्वं लां प्रथमजिन मला किस ततः ॥ जटां धुला श्रिला वृषमहमपि ज्ञातलमिदं पु नामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमचनबुद्धिर्व्यवसिता ॥ ५ ॥ न कोपस्याटोपः स्वरिपुषु न च से ष्वपि तथा प्रशांतिनों कांतादिकपरिकरः कश्चिदिति ते ॥ त्रिलोक्यामालोक्याप्यह इ परमां प्रारनरमां विदंतुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ६ ॥ धुवं कश्चि त्कत्ती निखिलज्जवनस्यापि स पुन विंग्रेनित्यश्चेकः सतनुरतनुर्वा स्ववशतः ॥ स्वयं सिदेन्यस्मिस्तव मतमनाप्तान् इतधियः कुतर्कोयं कश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ७ ॥ विगुप्तैरागाद्यैरपि जवति किं सर्वविदहो विना वा सर्वइंग ननु जिन किमाप्तो पि स च किम् ॥ त्वदन्योपि कापि त्रिजगति बताप्तस्वविषये यतोमंदास्त्वां प्रत्यमर वर संशेरत इमे ॥ ७॥ लमेवाईन् बुद्दो जगति परमेछी च पुरुषो तमोलद्दम्या जा स्वान्विबुधगुरुरादीश्वर इति ॥ विनो नानाक्वानिः समविषममार्गेषु चरतां नृणामे कोगम्यरत्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ए॥ प्रसादाने पुत्रा विषयसुखसाम्राज्यमजजन् न के वा सेवातस्तव नवनवामू दिमगमन् ॥ दृणे स्त्रेणे खर्णे दृषदि च सहद्रः पु नरहो न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृसा चमयति ॥ १०॥ जवन्तत्ताहद्दातिशय महिमेक्वावशसमुद्रवद्रकिव्यक्त्यां रणरणकितांतःकरणतः ॥ अधीरप्युयुक्तोखिलजग दशक्यं स्तवमपि स्तुवन् जिन्हेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ११ ॥ न श स्यौ कस्यास्तां नमिविनमिपत्ती जिनपते लदेकस्वामिलाक्रमकमलसेवासु रसिकौ ॥ प्रसादाचे विद्याधरपतितति येत्सविनयं स्वयं तस्ये ताऱ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फल ति ॥ १२ ॥ तदा विद्याः प्राप्य ध्रुवमखिलविद्याधरमहा स्वयं प्राइनीव्य प्रथमम

महिम्नस्तोत्र.

थ वैताढ्यविचुताम् ॥ यदेतो इस्ताथ्यौ सुरनरवराणामजजतां स्थिरायास्लद्रकेस्नि पुर्हर विस्फूर्कितमिदम् ॥ १३ ॥ अयावासैश्वर्थं मदनमदविध्वंति च महाव्रतिलं सर्वज्ञलमसमविनूतिश्व परितः ॥ शिवासंगश्चंगः सततमिति नो कस्य रुतिनः स्थि रायास्त्वज्ञकेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ १४ ॥ विवाहादौ नेतुर्भुद्धुरुपरुतो विप्र तिनवं त्वया पारंपर्यागतपरिचयान्मोइचरटः ॥ तथा दूरं नष्टः क्वचिदपि यथाकेव लकजाप्रतिष्ठा लच्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१ ५॥ निजर्द्या स्पर्धाजुर्नरत विच्चरासीन्मधवता यदाऽपत्तस्याईसिनमथ सुखं केवलरमाम् ॥ तदेतस्मिन्सर्वे तव पदविनम्ने समुचितं न कस्याप्युन्नत्ये नवति शिरसस्लय्यवनतिः ॥ १६ ॥ निनंसा यां पूर्व क्रणमजगणत्त्वां जरतराट् समं चक्रेणाहो तदिह विषयाणां विषमता ॥ यदे तस्याचीत्र प्रमितफलदेवाशिवसुखं न कस्याप्युन्नत्यै जवति शिरसरत्वय्यवनतिः ॥ १९॥ प्रनो लटपुत्रस्यातुलबलवतो बाहुबलिनस्तपस्तीवं ताहरू शरदवधिमानाद पि रुतं ॥ निदानं ज्ञानस्य धुवमजवदाश्चर्यमथवा विकारोपि श्लाघ्यो छवनजयजंग व्यसनिनः ॥ १७ ॥ न सुत्रामा यत्र प्रजवति विधातापि न विच्चः स वैक्तंवः क्तंवः किमपि न नवश्वानवदलम् ॥ जिगीषुः स त्वामप्यपरसुरमहुम्मेतिरनूत् स्मरः स्म र्त्तव्यात्मा न हि वशिषु पय्यः परिनवः ॥ १ ए ॥ प्रयुंजानः खामिन्खयमखिलशि ल्पान्यसुमतां कलाः पुंसां स्त्रीणामपि च सकलाः झ्यापतिरपि ॥ कुलालादींस्तांस्ता न् क्लामपि नयन् शिक्लाविधौ जगड्कायै लं नटसि ननु वामैव विछता ॥ १०॥ प्रजो तैस्तैः सारैरणुनिरखिलेश्वामरवरैः कतं रूपं सर्वोत्तमसुखगमंग्रष्ठकमितम् ॥ लदंगुष्टस्याये ग्रुनति किल नांगारकइवेत्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वषुः ॥ १४॥ प्रजाः प्राज्यं राज्यं स्थविरजननी खस्य तनुजांस्तपस्यन्नालनावपि च विहरन्वा हुबलिनः ॥ उपेक्तिष्ठा आत्तव्रतनृपसदस्वाश्च चतुरो विधेयैः क्रीडंखो न खलु परतंत्राः प्रचुधियः ॥ ११॥ यदा नो रत्नानां त्रयमखिलदौर्गत्यहरणं निदानं संपत्तेस्विचुवनज नानामनुदिनम् ॥ जवान् योगक्वेमावपि विरचयन्मन्मथजये त्रयाणां रक्तायै त्रिपुर हर जागर्ति जगताम् ॥ १३ ॥ यथा पूर्वे सुग्धास्तवसङपदेशायुगलिनः सदा खामि न्नीशाजनिषित सदाचारचतुराः ॥ तथां कस्कः संप्रत्यपि न विशदेषु लडदितश्रुतौ श्र दां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २४ ॥ तपस्तीव्रं ब्रह्मव्रतनियमनिष्ठा बहुवि थाः क्रियाकष्ठास्प्रष्ठा अपि जिनप डुष्ठाशयतया ॥ त्वदाकावज्ञायां नियतमहिताये व नविनां धुवं कर्तुः श्रदाविधुरमनिचाराय हि मखाः ॥ १५ ॥ इमानृन्मुख्याः के नियतमधिमात्रानपि सदा खर्यस्थान् शास्त्रीधान्नद्धतितरां यस्य इतये ॥ अविन्नं तं

Ś

युगादिदेवस्तुति.

निन्नन्नसमसमयस्तामसमृगं त्रसंतं ते ऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरजसः ॥ १६ ॥ परिचाम्य क्वेशार्जितमपि सहस्रेण शरदा मदाश्चिइाजलं सपदि मरुदेव्ये तदपि चेत्॥ प्रनो निस्नेहं सा व्रतसमयसर्वावगणनादवैति त्वामदा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ ३९ ॥ महानंदे यद्यप्यसि जिन दवीयस्यपि पदे न रुष्टसुष्टश्च त्रिज्जवनजनेषु क चिदपि ॥ जवन्नाम स्वामिन्स्वमनसि महामंत्रमनिशं तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमति ॥ २० ॥ प्रनो प्राणायामान्यसनरसिकलान्निजमनः समाधावाधाया खिलविषयतोक्ताणि युगपत् ॥ इतं प्रत्याहत्य स्थिरनिहितनासायनयना दधत्यंत स्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किल नवान् ॥ १९॥ सुरडुः खः कुंनस्विदशसुरनिस्त्वं सुरम णिः पिता माता चाता विचरपि सुहृत्त्वं च सुग्रुरुः ॥ परात्मा ब्रह्मापि लमति पर मं दैवतमतो न विद्यसत्तत्तलं ६यमिहहि यत्त्वं न जवसि ॥ ३० ॥ अकारायैवर्णे स्तवि परिणतान् पंच परमेष्टिनः स्पष्टं पंचाद्वररचनया नामिनिगदन् ॥ कलाना दव्यक्तं किमपि परमब्रह्मविषयं समस्तं व्यस्तं लां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥३१॥ न रागाचैर्भस्तो न पुनरनुकंप्यो मदपरः रूपाजु रखत्तोन्यो न जगति न तेन्यः पुनरजम्॥ खयं तैरत्यार्चैः किमितरसुरैश्रेति विमृशन् प्रियायारमेधान्ने प्रविहतनमस्योस्मि जवते ॥ ३ श नमो नासकाय कचिदपि विरकाय च नमो नमः संबुद्धाय प्रशमद मरुद्धाय च नमः ॥ नमः सर्वज्ञाय स्मरणपरतद्राय च नमोनमः सर्वस्मै ते तदि दमितिशर्वाय च नमः ॥ ३२॥ दलितरजसे शत्रवद्विश्वाचिताय नमोनमः प्रहततम से श्रीसर्वज्ञाधिपाय नमोनमः॥ जनहितरुते तुन्यं सत्वाधिकाय नमोनमः प्रमहसि पदे निस्त्रेगुत्ये शिवाय नमोनमः ॥३४॥ कुसुमबटुरिवाई तष्ठ्रतो किंचनाई कतिनि रुरसि कंते वा गुणलादधार्यम्॥ जिनवर जिनहर्षोत्कर्षतोकार्षमेवं वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारं ॥ ३५ ॥ प्रांग्रश्रीसोमवंदोऽजनिषत मुनयोमौक्तिकानीव ग्रुदास्ते ष्वप्येकावली च प्रगुणगुणवती श्रीमदाचार्यपंक्तिः ॥ जीयाड्राज्यं यदूनामिव गुरुज यचंडाव्हयश्रीमुनीं इस्तस्यामप्येष चिंतामणिरुचिररुचिर्नायकः रूष्णदेवः ॥ ३६ ॥ निह्तिचरमपादं श्रीमहिस्रः सावस्य त्रिच्चवनमहितस्य श्रीयुगादीश्वरस्य ॥ च्रमरइव सदा तत्पादपद्मोपजीवी रुचिरमलघुठुत्तैः स्तोत्रमेत ६घधत्त ॥ ३९ ॥ एवं शारदसो मसुंदरयशःस्तोमं युगादीश्वरं चेतोनूजयचंइमोलिनिरनिष्ठुत्यान्वदं योगिनिः॥ ज्ञानं प्राप्य विशालराजलदृशब्हादं समाश्रीयते मुक्तयै मूर्धनि रत्नशेखररमा ब्रह्मैकतेजो मयी ॥ ३ ७ ॥ इतिश्रीयुगादिदेवमहिसः स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

www.jainelibrary.org

Z.

॥ अथ क्तमाकल्याणजीकृत चतुर्विंशतिजिनस्तुतिप्रारंजः॥

शार्रूल विक्रीडितढंदः ॥ अथ रूषजस्तुति प्रारंजः॥ सङ्गत्या नतमौलिनिर्जरवरचाजि मुमौलिप्रना संमिश्रारुणदीप्तिशोनिचरणांनोज ६यःसर्वदा॥ सर्वक्रः पुरुषोत्तमः सुच रितो धर्मार्थिन्ां प्राणिनां जूयाङ्ग्रिविजूतये मुनिपतिः श्रीनाजिस्तुर्जिनः॥१॥सदो धोपचिताः सदैव दधताप्रौढप्रतापश्रियो येनाङ्गानतमोवितानमखिलं विद्विप्तमंतः क्रणं॥ श्रीशत्रुंजयपूर्वशैलशिखरं नाखानिवोझासयन् जव्यांनोजहितः स एष जयतु श्रीमारुदेवप्रचः॥ शां योविज्ञानमयो जगत्रयगुरुर्यं सर्वलोकाश्रिताः सिदिर्येन वृता स मस्तजनता यस्मै नतिंतन्वते॥ यस्मान्मोह्रमतिर्गता मतिनृतांयस्यैव सेव्यं वचो यस्मि न्विश्वरुणास्तमेव सुतरां वंदे युगादीश्वरं॥३॥अथ अजितस्तुतिः प्रारंजः॥मालिनीत्वंदः॥ सकलसुखसमृद्धिर्यस्य पादारविंदे विलसति ग्रेणरका नकराजीव नित्यं॥ त्रिच्चवनज नमान्यः शांतसुङाजिरम्यः स जयति जिनराजस्तुंगतारंगतीर्थे॥ र ॥ प्रजवति किल जव्यो यस्यनिर्व र्शनेन व्यपगतङरितौधः प्राप्तमोदप्रपंचः ॥ निजबलजितरागदेषविदेषिवर्ग तमजितवरगोत्रं तीर्थनाथं नमामि ॥ २ ॥ नरपतिजितशत्रोर्वेशरत्नाकरेंडुः सुरप्तिय तिमु ख्यैर्नकिद कैः समर्चयः॥ दिनपतिरिव लोकेऽपास्तमोहांधकारो जिनपतिरजितेज्ञः पातुमां पुख्यमूर्तिः ॥३॥ अथ संजवस्तुतिः ॥ स्रग्धराढंदः ॥ यज्ञत्तया सक्तचित्ताः प्रचु रतरनव ज्रांतिमुक्ता मनुष्याः संजाताः साधुनावोल्लसितनिजगुणान्वेषिणः सद्यएव॥स श्रीमान्संजवेशः प्रशमरसमयोविश्व विश्वोपकत्ती सद्वत्ती दिव्यदीप्तिः परमपदकते से व्यतां जव्यलोकाः ॥ १ ॥ ग्रुक्वध्यानीदकेनोज्वलमतिशयितस्वज्ञजावाङ्गतेन स्वस्मादा हत्य वृत्तं शिवपदनिगमं कर्मपंकप्रपंचं॥ नीरंधं दूर्यित्वा प्रकतिमुप्गतोनिर्विकल्पस्वरू पः सेव्यस्ताइर्यध्वजोसो जगति जिनपतिर्वीतरागः सदैव॥ शा वाद्वी विद्योतिरत्नप्रकर इव परिचाजते सर्वकाले यस्मिन्निः रोषदोषव्यपगमविशदे श्रीजितारेस्तनूजे ॥ इन्ना पो डप्टललैः स्फुटगुणनिकरः ग्रुद्बुदिक्तमादिः कल्याणश्रीनिवासः स जवतिवद ताऽन्यर्चनीयो न केषां ॥३॥ अथ अनिनंदनस्तुतिप्रारंनः ॥ डुतविलंबितढंदः ॥ विश दशारदसोमसमाननः कमलकोमलचारुविलोचनः ॥ ग्रुचिग्रणः सुतरामनिनंदन ज य सुनिर्मलतांचितनूधन ॥ १ ॥ जगति कांतहरीश्वरलांग्नितकमसरोरुह कामरूपा निधे॥ मम समोहितसिदिविधायकं खदपरं किमपीह न तर्कये॥ २॥ प्रवरसंवर सं वरजूपतेस्तनय नीतिविचक्त् ए ते पदं ॥ शरएमसु जिनेश निरंतरं रुचिरजक्तिसुयुक्तिजू तो मम ॥ ३ ॥ अथ सुमतिसुति प्रारंनः ॥ उपेंड्वज्तार्गदः ॥ सुवर्णवर्णी इरिणालव

B

चतुर्विंदातिजिनस्तुति.

र्णो मनोवनं मे सुमतिर्बलीयान् ॥गतस्ततो इष्टकुदृष्टिरागदिपेंड् नैव स्थितिरत्र कार्या ॥ १॥जिनेश्वरो मेघनरेंड्सुनुर्घनोपमो गर्जति मानसे मे॥ छहो गुरुदेषडुताज्ञन त्वा म सो शमं नेष्यति सद्यएव ॥ १ ॥इतः सुदूरं व्रज इष्टबुदे समं इरात्मीयपरिष्ठदेन ॥ सु बुद्धिनत्ती सुमतिर्जिनेशो मनोरमः खांतमितो मदीयं ॥ ३ ॥ अथ पद्मसुतिप्रारंनः छंजंगप्रयातग्रंदः ॥ जदारप्रनामंडलैर्नासमानः कतात्यंतडदंतिदोषापमानः ॥ सुसी मांगजश्रीपतिर्देवदेव स्तदा मे सुदान्यर्श्वनीयस्लमेव ॥ १ ॥ यदीर्य मनःपंकजंनित्य मेव लयालंकतं थ्येयरूपेण देव ॥ प्रधानस्वरूपं तमेवातिपुखं जगन्नाथ जानामि लो के सुधन्यं ॥ २ ॥ छतो धीशपद्मप्रजानंदधाम स्मरामि प्रकामं तवैवांग नाम ॥ मनो वांत्रितार्थप्रदं योगिगम्यं यथा चक्रवाको रवे ६ीम रम्यं ॥ ३॥ अथ सुपार्श्वजिनस्तुतिप्रा रंजः तोटकढंदः ॥ जयवंतमनंतगुर्णैर्निजृतं । ष्टिंथिवीसुतमञ्जुतरूपजृतं ॥ निजवीर्य सुरकोटिसमाश्रितपत्कमलं ॥ १ ॥ निरुपाधिकनिर्मलसौख्यनि विनिर्जितकर्मबलं धिं परिवर्जितविश्वछरंतविधिं जववारिनिधेः परपारमिमं परमोज्वलचेतनयोन्मिलितं शाकलधौतसुवर्णशरीरधरं ग्रुनपाइर्वसुपाइर्वजिनप्रवरम् ॥ विनयावनतः प्रणमामि सदा हृदयोभवजूरितरप्रसुदा ॥ ३ ॥ अथ चंइप्रजाजिनस्तुतिप्रारंजः ॥ वंशस्थर्वदः॥ अनंतकांतिप्रकरेण चारुणा कलाधिपेनाश्रितमात्मसाम्यतः॥ जिनेंड् चंड्प्रज देवसुत्त मं नवंतमेवात्महितं विनावरे॥ १ ॥ छदारचारित्रनिधे जगत्प्रनो तवाननां जोजविलोक नेन में॥ व्यथा समस्तास्तमितोदितं सुखं यथा तमिस्रादिवमर्कतेजसा ॥ १॥ सदैव संसे वनतत्परे जने जवंति सर्वेपि सुराः सुदृष्टयः॥समग्रलोके समचित्तवृत्तिना खयैव संजा तमनोनमोस्तु ते ॥ ३॥श्रय सुविधिजिनस्तुतिप्रारंजः ॥ वसंततिलकार्वदः ॥ विश्वाजिवं यमकरांकितपादपद्म सुग्रीवजात जिनपुंगव शांतिसद्म "जव्यात्मतारणपरोत्तमपानपा त्र मां तारयस्व नववाटिनिधेर्विरूपात् ॥ १ ॥ निःशेषदोषविगमोझवमोक्तमार्गे न व्याः श्रयंति नवदाश्रयतो मुनींइ ॥ संसेवितः सुरमणिर्बद्धधा जनानां किंनाम नोनव ति कामितसिदिकारी ॥ १ ॥ विकुं रुपारसनिधिं सुविधे स्वयंजूमीला जवंतमिति विकृप यामि तावत्॥ देवाधिदेव तव दर्शनवझनोहं शश्वज्ञवामि चुवनेश तथा विधेहि॥ ३॥ **श्रथ शीतलजिनस्तुतिप्रारंजः॥शार्रूलविक्रीडित**ढंदः॥कल्याणांकुरवर्दने जलधरं सवीं गिसंपत्करं विश्वव्यापियशःकलापकलितं कैवव्यलीलाश्रितं ॥ नंदाकुहित्तमुझवं दृ ढरथकोणीपतेर्नेदनं श्रीमत्सूरतबिंदरे जिनवरं वंदे प्रछं शीतलं॥ १॥ विश्वाज्ञानविश्व इतिदिपदवीहेतुप्रबोधं दधझव्यानां वरजकिरक्तमनसां चेतः सुमुझासयन् नित्यानं दमयप्रसिद्धसमयः सङ्गतसौख्याश्रयो डप्टानिष्टतमःप्रणाशतरणिर्जीयाक्तिनः शीत

स्तोत्र.

लः ॥ २॥ सङ्ग्रस्या त्रिददोश्वरैः रुतनुतिर्नाखजुणालंरुतिः स्त्कव्याणसमयुतिः ग्रुन मतिः कब्याणकृत्संगतिः ॥ श्रीवत्सांकसमन्वितस्त्रि खवनत्राणे गृहीतव्रतो जूयाङ्गक्ति जतां सदेष्ठवरदः श्रीशीतलस्तीर्थकत् ॥ ३ ॥ अथ श्रेयांसजिनस्तुतिप्रारंजः ॥ इरिणी वंदः॥ चिरपरिचितागाढव्याप्ता सुबुदिपराङ्मुखी निजबलपरिस्फूर्त्योदया समयतया ममाव्यपगतवती दूरं छष्टा खनिष्ठकुदृष्टिता अपचितसहा सद्योजूत्वा यदीयसुदृष्टितः १ निरुपमसुखश्रेणीहेतुर्निराकतुईदेशा ग्रुचितरगुणयामावासो निसर्गमहोज्वला।हृदय कमले प्राइर्नूता सुतलरुचिर्मम विदलितनवचांतिर्यस्याप्यजस्त्रमनुस्मृतेः॥ शाउपक तिमतिदाने दको निरस्तजग ६ यथः समुचितकतिर्विज्ञानांग्रुप्रकाशितसत्पथः॥नृपगण गुरोर्विक्षोर्वेज्ञे प्रजाकरसन्निज्ञः स जवतुं मम श्रेयांसेनःप्रबोधसमृद्ये॥३॥अयं वासुपू ज्यसुतिप्रारंजः ॥ रथो ६ताढंदः ॥ पूर्णचंड्कमनीयदीधिति जाजमानसुखमङ्गतश्चि यां॥शांतदृष्टिमनिरामचेष्टितं शिष्टजंतुपरिवेष्टितं परं॥ १॥नष्टड्पमतिनिर्थमीश्वरं संस्मर द्रिरिहनूरिजिर्नृजिःशद्वीणमोहत्तमयादनंतरा प्रापि सत्यपरमात्मरूपता ॥शा पार्थिवे शवसुप्रज्यवेरमनि प्राप्तपुष्यजनुषं जगत्प्रचं ॥वासुप्रज्यपरमेष्टिनं विशः के स्मरंति नहि तं विपश्चितः ॥३॥ अथ विमलजिनस्तुतिप्रारंजः॥मंदाकांताढंदः॥संसारेस्मिन्मइतिम हिमामेयमानंदिरूपं लां सर्वइं सकलसुरुतिश्रेणिसंसेव्यमानं ॥ दृष्ट्वा सम्यग्विमलसद सज्ज्ञानधाम प्रधानं संप्राप्तोहं प्रशमसुखदां संजृतानंदवीचिं॥ १॥ येतु खामिन् कुमति पिहितस्फारसद्वोधमूढाः सौम्याकारां प्रतिकृतिमपि प्रद्यते विश्वपूर्ज्यां॥देषोडूतेः कजु षितमनोवृत्तयः स्युः प्रकामं मन्ये तेषां गतगुजहशां का गतिर्जाविनीति ॥ शाँ श्यामा स्नो प्रतिदिनमनुरम्ख विज्ञानिवाक्यं हित्वानार्यं कुमतिवचनं ये छवि प्राणनाजः॥पू र्णानंदोझसितहृदयांस्लां समाराधयंति श्लाघ्याचाराः प्रकृतिसुजगाः संति धन्या साए वः। ३॥ अथ अनंतस्तुतिप्रारंनः ॥ स्रग्विणी ईदः॥ यस्य जव्यात्मनो दिव्यचेतोगृ हे सर्वदा ऽनंतन्चिंतामणियौंतते॥यांति दूरेखतस्तस्य छष्ठापुदो विश्वविज्ञानवित्तं नवेदद्व्यं॥र यसु सर्वक्ररूपं स्वरूपस्थितं वीद्येयसङ्गावतः सिंद्सेनात्मजं।। अज्जतामोदसंदोद्दसंपूरि तोमन्यतेधन्यमात्मीयनेत्र ६यं ॥ शा सोपवर्गानुगामिस्वनावोज्ज्वलां व्यूहमिष्यात्ववि ड्विणे तत्परां बंधुरात्माऽनुनूतिप्रकाशोद्यतां शुद्सम्यक्तसंपत्तिमालंबते ॥ ३ ॥ यु ग्मं॥ अथ धर्मसुतिप्रारंनः ॥ कामकीडाढंदः ॥ जासकानं इदित्मानं धर्मेशानं स द्यानं शत्त्यायुक्तं दोषोन्मुक्तं तत्वासक्तं सञ्जक्तं॥शश्वज्ञांतं कीत्यी कांतं ध्वस्तध्वातं वि आमं क्तिपावेशं सत्यादेशं श्रीधर्मेशं वंदध्वं॥ १॥निःशेषार्थप्राडष्कर्त्ता सिदेर्नर्ता संसन्ती डर्नीवानां दूरेइत्ती दीनोदती संस्मत्ती॥सङ्ग्लेज्योमुक्तेर्दाता विश्वत्राता निर्वातां सुत्यो

Ę

www.jainelibrary.org

नक्या वाचोयुक्या चेतोवृत्त्या थ्येयात्मा॥ शालम्यग्टग्निः साद्धात्टष्टोमो हास्प्रष्टो ना **रुष्टः स्रोतोयामैः संपज्ज्येष्टः साधु**श्रेष्टः सत्प्रेष्टः॥श्रदायुक्तस्वांतैर्जुष्टो नित्यंतुष्टो निर्धु स्याज्यो नैवश्रीवज्ञांको नष्टातंको निःशंकः॥३॥ युग्मं ॥ अथ शांतिजिनस्तुतिप्रारंजः॥ डुतविलंबितढंदः ॥ विपुलनिर्मलकीर्त्तिनरान्वितो जयति निर्जरनाथनमस्कृतः ॥ लघु विनिर्जितमोह्रधराधिपो जगति यः प्रचुशांतिजिनाधिपः॥ १॥ विहितशांतसुधारसमऊ नं निखिलर्ड्जयदोषविवर्जितं ॥परमपुख्यवतां नजनीयतां गतमनंतगुणैः सहितं सतां ॥शातमचिरात्मजमीशमनीश्वरं जविकपद्मविबोधदिनेश्वरं॥ महिमधाम जजामि जग त्रये वरमनुत्तरसिदिसमृद्ये॥ ३॥ त्रिनिर्विज्ञेषकं ॥ अथ कुंधुजिनस्तुतिप्रारंजः॥गी तपद्तिमाद् ॥ जयजय कुंधुजिनोत्तमसत्तम तत्वनिधान धर्मजनोज्वलमानसमानस हंसलमान ॥ ज्ञानाचादकमुख्यमहोद्धतकमैविमुक्त विषमविषयपरिजोगविरक्त ग्रुजाश <mark>ययुक्तारा जयजय विश्वजनीन सुनिव्रजमान्य विग्रुद् चेतन चारुचरित्रपवित्रितलोक</mark> विद्युद्ध निरुपममेरुमद्दीधरधीर निरंतरमेव गर्वविवर्जितसर्वसुपर्वविनिर्भितसेव ॥ १॥ जयजय सुरनरेश्वर नंदनचंदनकल्प वासक विश्वविज्ञावविनाशक वीतविकल्प॥ नि र्मलकेवलबोधविलोकितलोकालोक प्राइर्नूतमहोदयनिर्वृतिनित्यविशोक ॥ ३ ॥ अ थारजिनस्तुतिप्रारंजः ॥ रामगिरिरागेण गौयते ॥ दिव्यगुणधारकं जव्यजनतारकं इरितमतिवारकं सुरुतिकांतं ॥ जिनविषमसायकं सर्वसुखदायकं जगति जिननायकं परमशांतं दि०॥१॥स्वगुणपर्यायसंमीलतं व्याहतं विगतपरनावपरिणतिमखंडं॥सर्व संयोगविस्तारपारंगतं प्राप्तपरमात्मरूपं प्रचंडं॥ १॥ दि०॥ साधुदर्शनवृतं जाविकै प्रस्तुतं ॥ प्रातिहार्याष्टकोज्ञासमानं ॥ सततमुक्तिप्रदं सर्वदा पूजितं॥शिवमपरसार्वनौ मत्रधानं ॥ ३ ॥ अथ मलिस्तुतिप्रारंजः ॥ कुंजसमुझव संमदाकेर सगुणवरहेमलिजि नोत्तम देव जयजय विश्वपते र कत्याकत्यविवेकिता जिनसमुचिता हे त्वयि जागर्ति जि नेश जणाशानित्यानंदप्रकाशिका चमनाशिका हे तव ग्रुजदष्टिरनीश जणाशाग्रीदिनि बंधनसन्निधे सजुरानिधे हे वर्जितसर्वविकार ज०॥ ४॥ निजनिरुपाधिकसंपदा शो नित सदा हे निर्मलधर्मधुरीए ॥ ५ ॥१९ ॥अथ मुनिसुव्रतस्तुति प्रारंनः ॥अथान्या गेयपड्तिः॥ उत्तमचेतनधर्मसमृड्जगत्पते॥ नित्यानित्यपदार्थनिचयविजसन्मते॥नि जविक्रमजितमोइमहोझटनूपते ॥ श्रीपद्मातनुजात सुजातहरियुते ॥१ ॥ श्रीमुनिसु त सुव्रतदेशक सज्जनाः कतसंजुरुग्रजवाक्यसुधारसमज्जनाः हे प्रणमंति जवंतमनंतसु खाश्रितं ॥ केवलमुज्वलजावमखंडमनिंदितं ॥ १॥ तेनिःसंशयमेव जगत्रयवंदिताः ॥ सङ्गावेन जवंति सुदृष्ठयानंदिताः॥रूखं खोचितमेव यतः किल कारणं॥जनयति नात्म

विरुद्धमिहासाधारणं ॥ ३ ॥ अथ नमिजिनस्तुतिप्रारंनः ॥ पंचचामरढंदः ॥ नमीश निर्मलात्मजूप सत्यरूप शाश्वतं पराद्यसिदिसोधमूर्ध्विसत्स्वजावतः स्थितं ॥ विधा य मानसाब्जकोशदेशमध्यवर्त्तिनं स्मरामि सर्वदा जवंतमेव सर्वदर्शिनं॥ १॥ प्रफुझकौव लांबन प्रनूततेजसो य ते दिवाकरस्य वा महेश्वरानिदर्शनेन मे॥प्रमादवर्द्धिनी सुडुमे तिर्निज्ञेव इर्जगा गता प्रणाशमाद्य हत्कजे विनिड्तिा चवत् ॥ २ ॥ निरस्तदोषड्छ कष्टकार्यमर्खसंस्तवो नवे नवे नवत्पदांबुजैकसेवकः प्रनो ॥ नवेयमीहरां जुशं म दीयचित्तचितितं तव प्रसादतोजवलवंध्यमेव सलरं॥३॥ छाथ नेमिजिनस्तुतिप्रारंजः॥ उपजातिग्रंदः ॥ विद्यद्विज्ञानजृतां वरेण शिवात्मजेन प्रशमाकरेण ॥ येन प्रयासे न विनेव कामं विजित्य विक्रांतवरं प्रकामं ॥१॥ विह्राय राज्यं चपजस्वनावं राजीम ति राजकुमारिकां च॥ गला सलीलं गिरिनारशैलं जेजे व्रतं केवलमुक्तियुक्तं ॥ शा निः रोषयोगीश्वरमैं लिरतं जिनेंडियलं विदितप्रयत्नं॥ तमुत्तमानंदनिधानमेकं नमामि ने मिं विलसदिवेकं ॥३॥ अथ पार्झ्वजिनस्तुतिप्रारंजः॥ पंचचामरढंदः॥ श्रयाम तं जि नं सदा मुदा प्रमादवर्जितं स्वकीयवाग्विजासतोजितोरुमेवगर्जितम् ॥ जगटप्रकामका मितप्रदानदद्वमद्वतं पदं दधानमुचकैरकैतवोपलद्वितं ॥ १ ॥ सतामवद्यचेदकं प्र जूतसंपदां पदं वलक्पक्त्दक्तापतीक्त्एक्एप्रदं ॥ सं दैव यस्य दर्शनं विशांविमीदि तैनसां॥निहंखशातजातमात्मनकिरकचेतसां ॥ १॥ युग्मं॥ञ्चवाप्य यत्प्रसादमादितः पुरुश्रियो नरा जवंति मुक्तिंगामिनस्ततः प्रजाप्रजाखराः॥ जजेयमाश्वसेनिदेवदेवमेवस त्पदं तमुचमानसेन ग्रद्वोधवृद्जिानदं ॥ ३ ॥ अथ वीरजिनस्तुतिप्रारंनः ॥ पृथ्वी ॥ वरेखगुणवारिधिः परमनिर्वृतः सर्वदा समस्तकमजानिधिः सुरनरेंड् तंद: कोटिश्रितः ॥ तथापि गुणवर्जितो विंगतजावसौख्ये धनः सुम्रुक्तजनसंगमस्लम सि वर्डमान प्रजो ॥ १ ॥ जिर्नेइ जवतोन्नुतं मुखमुदाराबिंबस्थितं विकारपरिव र्जितं परमशांतमुङांकितं ॥ निरीद्वय मुदितेक्एाः क्एमितोस्मि यज्ञावनां सदैव जग दीश्वरोजवत सैव मे सर्वदा ॥ २ ॥ विवेकिजिनवल्लजं समछरात्मनां डर्लजं डरंतडरि तव्यथानरनिवारणे तत्परं ॥ तवांग पदपद्मयोर्धुगमनिंद्यवीरप्रजो प्रजूतसुंखसिद्धे मम चिराय संपद्यतां ॥३॥इत्थं चतुर्विंशतिसंख्ययैव प्रसिद्धिजाजां वरतीर्थराजां॥श्री जैनवाक्यानुसृतप्रबंधा वृत्तैरहीना प्रणुतिर्नवीना॥७५॥गणाधिपश्रीजिनलानस्ररिप्रच प्रसादेनविनिर्मितेयं ॥ जिनप्रणीतामृतधर्मसेविक्तमादिकव्याणबुधात्मबुथ्ये॥ अद्यायु ग्मं॥यस्याः प्रसादात्परिपूर्णनावं नूतः सुनिर्विघ्नतया स्तवोयं॥ जगत्रयीजंतुह्तिकनिष्टा वाग्देवता सा जयताद जस्तं ॥ ७७ ॥ इतिश्रीमद्मतुर्विंशतिजिनस्तुतिः समाप्ता ॥

G

॥ श्रीलर्वक्रायनमोनमः ॥ अधश्री मुनिसुंदरसूरिकृत अध्यालमकल्पद्रुमो बालावबोधसहितः प्रारज्यते ॥ प्रथम अर्थकर्तानुं मंगलाचरण ॥ श्रीशांखेश्वरपार्श्वेशं प्रणतानीष्टदायकं ॥ त्रणमामि परमत्रेम्णा सर्वात्तीप्सितसिश्वये॥ १ ॥ सर्वज्ञं सर्वजाषाजिः र्सवसंसत्प्रबोधकं ॥ सर्वसंबहितं वंदे वर्डमानजिनेश्वरं ॥ ए ॥ च्रथ्यालकल्पद्रुमसंज्ञकस्य शास्त्रस्य संविज्ञहितावहस्य ॥ वार्त्तानिरप्रौढमतिप्रतुष्टी बालावबोधां विदर्ध विदत्तिं ॥ ३ ॥ हवेयंथनेछादि यंथकार प्रथमस्थापनातुं सूत्रकहेने ग्रयायंश्रीमान् शांतनामा रसाधिराजः सकलागमादि सुराास्त्रार्णवोपनिष जूतसुधारसायमान ऐहिकामुष्मिका नंतानंदसंदेाहसाधनंतया पारमार्थिकोपदेवयतया सर्वरस सारजूतताज्ञ शांतरसजावनात्माध्यात्मकल्पद्रुमाजिधा नग्रंघांतरग्रंघननिपुणेन पद्यसंदर्नेण नाव्यते 11 खर्थ ॥ पूर्वेश्री मुनिसंदरस्ररियें त्रिदशतरंगिणी गुर्वावली प्रमुख मंथकीधा ते वारपढी आग्नेंथकीधों तेनणीइदां अथशबआत्यो तेमाटे अथकहेतां एटलाथकी छनंतर जेजेनशासननेविषे प्रत्यक्त शांतनामाजे रसाधिराज रसजे १ शृंगार २ हा स्य ३ करुणा ४ रौड ५ वीर ६ जयानक ७ बीजत्स ७ अझुत ए शांत एनवमध्ये अ धिराजके शिरोमणी तेढुं मुनिसुंदरसूरि पदके काव्यतेइनो संदर्जजेरचना तेऐकरी ने जाव्यतेके विचारुं एटसेपूर्वेमनमांधस्रोबे तेकाव्यवंधे प्रगटकरीकढुं कुं हेवोनेते रसाधिराज श्रीकेंण मोक्रेपिणीलक्सी तेने फलजेइनुं एहवो वलीकेहेवोने

आगमजे श्रीजिनेश्वरप्रणीत सिद्धांत तेआर्देदेइने सकलजे सुशास्वकहेतां धर्मशा स्व तेरूपीउ अर्णवजे समुइ तेहनुं उपनिषज्ञूतके० सारजूत एहवो सुधारसायमा नके० अमृतरसतुव्यने हवेअन्यशृंगारादिक रसतजीने केवलशांतरसनेज शावास्तेना वतुं तेहनोहेतुकहेने एकतोऐहिकामुष्मिकके० इहलोकसंबंधी अने आमुष्मिकके० परलोकसंबंधी जेअनंतआनंदनो संदोहके० समूह तेनुंसाधनने तेहेतुयेंकरीने वली बीजोहेतुकहेने परमार्थिकजे मोद्दार्थ तेहनाजेजाएनार तेहनेउपदेशदेवायोग्यनेए टलेमोद्दार्थनाउपदेशकजे तीर्थंकर गएधरादिक तेआशांतरसनोज उपदेशकरे तेऐकि रीने. वजीत्रीजोहेतुकहेने जेआशांतरसते सर्वरसनेविषे सारजूतने तेहेतुथकी. हवे पद्यसंदर्नकहेत्रुंग्ने तेकहेने शांतरसजावनास्वरूप अध्यात्मकल्पडुम एहवेनामेजेग्नंथ विशेष तेहनुं मंथनजेरचना तेहेनेविषे निपुएगने मनइन्नित अध्यात्मकल्पडुम जाएवुं.

जयश्रीरांतरारीणां लेने येन प्रज्ञांतितः॥

तं श्रीवीरजिनं नला रसः शांतो विजाव्यते॥१॥

अर्थ ॥ ह्वेयंथनेआर्दे यंथकर्त्ता मंगलाचरणकहेढे जेणेप्रशांतितके० उत्कष्टशां तरसथी कोध मान माया लोज राग देष ए ढए अंतरंगशत्रुढे तेओनेजीतीने जय लक्कीपामीढे एहवाते श्रीवीरजिनप्रतें हुंमुनिसुंदरसूरि नमस्कारकरीने शांतनामाजे रस तेने जावुंढुं एटले समुचितेष्टदेवताने नमस्कारलक्त्एा यंथारंजेमंगलिककखुं॥र॥

सर्वमंगलनिधौ हदि यस्मिन् संगते निरुपमं सुखमेति॥

मुक्तिरार्म च वरीजिवति आक् तं बुधा जजत राांतरसें ई॥ ॥ अर्थ ॥ इवेशांतरसतुं महात्म्यकहेठे बुधाके हिविवेकीजनो तमें आ सर्वमांग व्यतुं निधान एहवोजे शांतनामारसाधिराज तेप्रतेंजजो केमके एशांतरस जेनाक्त यमांआव्यो तेप्राणी अनुपम सर्वार्थसिथ्यादिकनाजेसुख तेप्रतेपामें वलीजे रूदयमां आवेथके जेमोक्सुखतेपण झाग्के तत्काल थोडाकालमांज वशयाय ॥ २ ॥

> समतैकलीनचित्तो ललनापत्यस्वदेहममतामुक् ॥ विष यकषायाद्यवद्याः द्यास्त्रगुणै र्दयितचेतस्कः ॥ ३ ॥ वैरा ग्यद्युद्धर्मा देवादिसतलविदिरतिधारी ॥ संवरवान् द्युज्जवत्तिः साम्यरहस्यं जज द्यिवार्थिन् ॥ ४ ॥

समताधिकार.

अर्थ ॥ हवे साम्योपदेशयोग पुरुषनाविशेषए दारेंकरीने ग्रंथकर्त्ता ग्रंथमध्येक हेवाना सोल दारकहेने हेमोझार्थिपुरुषतुं साम्यरहस्यजे समतानुंसार तेप्रतेंनज तेकहेवोथइनेजज जे एकतो समतासार्थे जीनचित्तकरीने एटजेएपहेल्लं धारपण कद्यं वली बीज़ं ललनाजे स्त्रीनीममतामोचन दार त्रीज़ं अपत्यजे पुत्रादिकसंततिनी ममतामोचन दार चोथुं खकेण धननीममतामोचन दार पांचमुं देह तेहनीममतायेंर हितयको एटलेपांचमुं देहममतामोचन हार ठतुं विषयजे शब्दादिकनोनियहकरवो सातमुं कषायजे जोधादिक तेनोनियहकरवो इहां आदिशब्दथी राग देष प्रमादादि क तेंदुने खवरयके० आधीननही एहवोथकोरहे तथा शास्त्रजे जैनागम तेहना गुएजे हेयोपादेयादिक तेऐकिरीने दम्युंजेचित्तजे एटलेशास्त्रगुएते आठमुं धार अनेचित्तदमननामे नवमुं ६ार वली वैरागेंकरीने ग्रु६निर्दोषढे धर्मजेह्तुं एमांदस मुं वैराग्य दार अने इग्यारमुं ग्रुदधर्मनामा दार तथा देवजेश्री अरिहंत एरुजेसु साधु अनेकेवजिप्रणीतधर्म एत्रण तत्वनो जाणययीने एटले ए देवादिकस्वरूपनाज्ञा ननुं बारमुं दार तथा विरतिजे पंचाश्रवनुंविरमण तेद्दनुंधारकथको एतेरमुंविरति धारी नामा ६ार वजी संवरजेसत्तावनजेदें आश्रवनिरोधरूप तेणेकरीसहित तेचछद मुं संवर दार अने ग्रुन उत्तम वृत्तिके० आचरणानेजेहनी एहवोथको तुंसाम्यरहस्य नेनज एटलेइहां ग्रुनवृत्तिनामापन्नरमुं धारययुं अनेसोलमुं साम्यरहस्यनामाधार एग्रंथमांकहेवानासोल दारना नामबेश्लोकेंकरीकह्या ॥ २१४ ॥ इति षोडशाधिकारे शास्त्रोपदेशपदसंग्रहो यथा

चित्तबालक मात्याक्ती रजस्त्रं जावनौषधीः ॥

यत्त्वां इर्थ्यानजूता न बलयंति बलान्विषः ॥ ५॥

छर्थ ॥ इवेप्रथम समताना अधिकारआश्री उपदेशकहेने हेचित्ररूपीयाबाज क तुं सदाय नावनाजे अनित्यादिकबार तथामैञ्यादिकचार तेरूपणी औषधीप्रतें नं मीलनही केमकेएनावनाने ननांमवाथी शोगुणथायने तेकहेने जेथकीताहरानजा जोनाराजे आर्नरौड्रादिडध्यान तेरूपीआ नृतपिशाचते तुजनेनजकरीशकरोनही॥य

यदिंडियार्थैः सकलैः सुखं स्यान्नरेंडचक्रित्रिदरााधिपानां ॥

तहिंदवत्येव पुरोहि साम्यसुधांबुधेस्तेन तमाडियस्व ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ हवेएग्रजनावना ते समताविना नहोय तेकदेवे सघला इंड्यार्थेजे शब्द रूप रस गंध अनेस्पर्श तेऐकरीने राजाचकवर्त्ती अनेत्रिवशाधिपकहेतां इंड्

22

तेइनेजेसुखहोय तेसर्वसुख समतारूपीयुंजे सुधांबुधिकहेतां अमृतसमुइने तेआ गल बिंडबराबरदेखाय एटजेसंसारिकसुख सघलुंमजीने बिंडतुव्यने अनेसमतानुं सुखनेते समुइतुव्यने तेमाटेमोक्टार्थिजीवते समतारूपीआ सुधासमुइनेआदरे॥६॥

अहष्टवैचित्र्यवद्याजगजने विचित्रकर्माद्यायवाग्विसंस्थुले ॥

उदासटत्तिस्थितचित्तटत्तयः सुखं जजंते यतयः क्ततार्त्तयः॥ ९॥

अर्थ ॥ इवेसमताआदखातुं फलकहेने जगतजे त्रिज्जवनतेमां जनजे देवमनु ष्यादि तेमध्येयतीजेनियंथ तेजसुखीयाने तेजगतजनकहेवाने तेकहेने अदृष्टजेपूर्वरु तकम तेइतुंविचित्रजे नानारूपपएं तेइनावशथकी नानाविधकर्मना विपाकथी सं सारीजीवना मननोअजिप्राय तथावचन अनेकायानीचेष्टापण नानाविधने तेपोकरी व्याकुलने. इवेयतीकहेवाने उदासन्त्तिजे लानालान सुखडुःख अने प्रियअप्रिय तेने विषेसमानन्त्तिने तथाजेनी चित्तन्ति स्थितरहीने वलीजेनीसर्वचिंता क्र्यपामीने ॥ s

विश्वजंतुषु यदि क्रणमेकं साम्यतो जजसि मानस मेंत्रीं॥

तत्सुखं परममत्र परत्राप्यश्नुषे न यदन्तूतव जातु॥ ७॥ अर्थे ॥ वलीसमतानुं विशेषफलकहेने हेचिन जोतुं समतायंकरीने सर्वजीवने विषे एकद्रणमात्रपण मैत्रिता चिन्तवेतो तुं पूर्वेंसंसारमांच्रमणकरतां कोइवखतपा म्योनथी एवा इदलोक अने परलोकमांपण परमठल्रुष्टसुखप्रतेंपामें ॥ ७॥

न यस्य मित्रं न च कोपि रात्रु निजः परो वापि न कश्चनास्ते॥

न चेंडियार्थेषु रमेत चेतः कषायमुक्तं परमः स योगी ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवेएसमताने योग्यजीवकोणहोय तेकहेठे जेहनेकोइमित्रनची तथा कोइशत्रुपणनथी तेमजजेहने पोतानुं तथापारकुंकांइनथी वजीजेहनुं चित्त कषाय रहितथको इंडि्यार्थजे शब्दादिविषय तेनेविषे रमेनही तेप्राणीपरमयोगवंतहोय एटझे ते समतावंतजाणवो ॥ ए ॥

जजस्व मैत्रीं जगदंगिराशिषु प्रमोदमासन् गुणिषु बरोषतः ॥ जवार्तिदीनेषु रूपारसं सदाऽप्युदासटत्ति खलु निर्गुणेष्वपि ॥१ ०॥ अर्थ ॥ इवेसमताआव्याना कारणजपदेशेढे देजीव जगतना अंगीके०जेजीवते इनीराशिकदेतां समूहनेविषे एटसेसामान्ययकीसर्वजीवनेविषे मैत्रिताप्रत्यं जजस्वके० आदरीने वलीसमस्तप्रकारें जेकोइ ज्ञानादिकगुणयुक्तहोय तेहनेविषे प्रमोदप्रत्येंजजि अनुमोदनाकर तथानवके ॰ संसारनी आर्त्तिजेपीडा तेऐकरीदीनके ॰ इःखितप्राणिने विषेक्रपारसप्रतेंनज वली निश्चेंनिर्गुण प्राणीनेविषेपण जदासवृत्तिप्रतेनज ॥ १ ॰ ॥

मैत्री परस्मिन् हितधीः समग्रे जवेत्त्रमोदो गुणपद्वपातः॥

कृपा जवार्त्ते प्रतिकर्तुमीहोपिक्ता च माध्यरथ्यमवार्यदोषे ॥११॥ अर्थ ॥ इवेएमैत्र्यादि चारेजावनानुं स्वरूपकहेने समस्तपोतायी व्यतिरिक्तजेबी जाजीव तेनेविषेजे दितचिंतववानीबुदि तेनेमैत्रीकहियें तथागुणीजे ज्ञानादिकगुण वंत तेहनोपक्तपातजे प्रशंसा तेहनेप्रमोदकहियें तथाजवार्थिजे जन्ममरणादिक सं सारनाइःख प्रतिकारकरवानीवांहा कोइछज्ञानीजीवने पापथकीनिवर्ज्ताववानेछर्थें प्र तिबोधदेवो तेनेरुपाकहियें जेमश्रीवीरस्वामीयें ग्रुलपाणीयक्त चंमकोशिकसर्पप्रतें छपराधउपरपण रुपाकीधी. वलोजेप्राणीछवार्यदोषकहेतां वारतांथकापण दोषनेन इकि तथावारवायोग्यपणनहोय एहवोदोषवंत जेपुरुष तेनेविषे मध्यमजावें रागदेष रहितपणे समजावेंरहेवुं तेवपेक्ताजावनाकहियें ॥ ११ ॥

तथाचोक्तं तुर्यषाडदाके॥परहितचिंता मैंत्री परछःखनिवारिणी तथा करुणा ॥ परसुखतुष्टिर्मुदिता परदोषोपेक्तणमुपेक्ता ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ तेमजवलीकद्युंढे ओहरिनइसूरियें चोथाषोडशकमध्ये जे परनेहितचिंत वतुंतेमैत्री तथापरनाङःखने निवारणकरवानीनावना तेकरुणा अनेपरवुंसुखजे सम तादिरूप तेदेखीने संतोषपामवो ते सुदिताके० प्रमोदनावना कहियें अने परनादोष देखी उवेखवुं उदास रहेवुं तेनेठपेक्तानावना कहियें ॥ १२ ॥

तथाच योगदाास्त्रे ॥माकार्षीत्कोपि पापानि मा चाजूत्कोपि इः

खितः ॥ मुच्यतां जगदण्येषां मतिर्मैत्री निगद्यते ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ वलीयोगशास्त्रमध्येपण श्रीहेमचंदस्ररियेंकसुंज्ञे के कोइपापमकरो कोइ इःखीषाञ्चोमां तथाजगतसर्व कर्मथीमुकाञ्चो एवीजेमतितेने मैत्रीकहियें ॥ १३॥ जाणाज्यानोप्यतेष्ठाणां जण्यान्यत्वावय्वोक्तियां ॥ गणा

ञ्पपास्ताद्रोषदोषाणां वस्तुतवावलोकिनां ॥ गुणे

षु पक्तपातो यः स प्रमोदः प्रकीर्तितः ॥ १४ ॥

्रत्रर्थ ॥ सकलदोषरहित तथा वस्तुतत्वजे स्वनाव छने परनाव तथा इव्य गुण पर्यायनाजाण एवाजेग्रणवंत तथाउपलक्त्णप्रकी सामान्यपणेपण जेग्रणवंतहोय तेहना ग्रणनेविषे जेपक्त्पात तेनेप्रमोदनावनाकहियें ॥ १४ ॥ **अध्यात्मकल्प**जुम.

दीनेष्वार्त्तेषु जीतेषु याचमानेषु जीवितं ॥ प्रती कारपरा बुद्धिः कारुष्यमजिधीयते ॥ १५ ॥

अर्थ॥ वलीदीन असमर्थ अनेआर्त्तपीडावंत तथा जयेंकरी आकुल अनेजी वितव्यनेयाचतां एवाप्राणिनेविषेजे प्रतिकारकहेतां इःख निवारवानीबुदि राखवी तेने कारुत्यके० करुणाजावना कहियें ॥ १५ ॥

> क्रूरकर्मसु निःशंकं देवतागुरुनिंदिषु ॥ आ लशंसिषु योपेक्ता तन्माध्यरुथ्यमुदीरितं ॥१६॥

अर्थ ॥ तथा शंकारहित क्रूरकमेनाकरनार अने देवगुरुनानिंदक पोतानीप्रशं सानाकरनार एवाञ्चधमपुरुषनेविषेजे उपेक्ता तेमध्यस्थजावनाकहियें ॥ १६ ॥

चेतनेतरगतेष्वखिलेषु स्पर्शरूपरवगंधरसेषु साम्यमे ॥

ति यदा तव चेतः पाणिगं शिवसुखं हि तदालन् ॥१९ ॥

अर्थ ॥ इवेवली मूलसूत्रकार समताञ्चादरवाथी मोक्तनी सुलनताकहेने हेआ त्मन् जेवारें ताहारुंचित्त अखिलके॰ समयचेतनजे अनुकर्में स्त्री देह स्त्रीकटाक्त् कोकिलनाद कस्तुरी पद्यमांसप्रमुख तथाइतरजे अचेतनपदार्थ अनुक्रमें शय्या आनरणघरेणादिक कर्पूर वीणा शर्कराप्रमुख तेसंबंधी जेस्पर्शी रूप रवके॰श द गंध रस तेहनेविषेतुं साम्यताके॰ इष्टानिष्टनेविषे समवृत्तिप्रतेंपामझे तेवारेंज नि ओकरीने मुक्तिसुखते ताहरेहस्तगतथाझे ॥ १९ ॥

के गुणास्तव यतः स्तुतिमिच्चस्य डुतं किमकट्या मदवान् यत् ॥ केंगता नरकनीः सुक्रतेस्ते किं जितः पितृपतिर्यदचितः ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेश्वात्माजे स्तुतिनेवांग्रेग्ने तेनोमदनिवारवाने कहेग्रे हेअत्माऔदार्य धै र्य गांजोर्य दान ज्ञील तप जावना उपशमादिक जेग्रुएाग्ने तेमांहेलाताहरामां श्याग्रुएा त्रे केजेहने माटेतुं स्तुतिकहेतां लोकनामुखें पोतानीप्रशंसा कराववावांग्नेने तथावली तेंग्रुंसाधुआश्रीने राज्यादिमहार्द्वकनेप्रतिबोध अथवासर्वशास्त्रप्रवीणता ज्यतप युगप्रधानपएं इत्यादिक अथवाश्रावकआश्रीने जीर्णोद्धार बिंबप्रतिष्ठा संघपतिपएं अमारपडह इत्यादिक अभ्रुतके० आश्रर्यकारी कार्यद्र्यांकीधा केजेनाथी तूं मद वंतथायने तथा कयासुरुतेंकरी ताहारीनरकनीबीकगइ अथवापितृपतिजे यम तेग्रं तेंजित्यो जेमाटेतुंछचिंतकहेतां निश्चिंतथकोरहेते. एटजे स्तुतिनीवांता मदकरवो अने निश्चितरहेतुं एतने युक्तनथी ॥ १ ए ॥

गुणस्तवैयों गुणिनां परेषा माकोदानिंदादिनिरालनश्च ॥

मनः समं शीलति मोदतेवा खिद्येत च व्यत्ययतः स वेता॥१ [७॥ अर्थ ॥ इवेजेवेत्तापणुंते शांतरसनुंकारणजे एमकहेजे जेप्राणी परके० अन्यजेगुण वंतपुरुषहोय तेनागुणस्तवजे गुणवर्णन अनेआत्मनःकहेतां पोतानाआक्रोशजे गा लप्रमुख तथानिंदादिक सांनजीने पोतानुंमन समपरिणामेराखे पण अमर्षधरेनही उलटो मोदतेकहेतां हर्षपामे अनेएमविचारेजे गुणवंतना गुणस्तववाजयटेजे तथा हेआत्मातुं निर्गुणजो माटे निंदानेजयोग्यजो एमप्रमोदधरे तथाव्यव्ययकहेतां उ परकद्याथीविपरीतजे बीजागुणवंतपुरुषना आक्रोशके० निंदासांजजीअनेपोतानी प्रशंसादिकसांजजीने खेदपामे जेएएवागुणवंतपुरुषनी निंदाकांकरेजे तथामाहारामां

तोगुणनथी तेमग्रतांएगुंकहेने एमचिंतवे तेहनेवेचाके॰ ज्ञानीकहियें ॥ १७ ॥

न वेल्सि राहून् सुहदश्य नैव हिताहिते स्वं न परं च ज्तोः॥ डः

खं दिपन् वांबसि इार्मचैत निदानमूढः कथमाप्स्यसीष्टं॥२०॥

अर्थ ॥हवेयथार्थने नहीजाणनारजीवनुं मूढपणुंकहेढे हेजीव तुंग्रत्नजेरागादिक तथामित्रजेउपग्रमादिक तेहनेनथीजाणतो तथाहितजेसंवरादिक अने छहितजेछा अवादिक तथावलीस्वजावजे ज्ञानदर्शनादिक अनेपरजावजे मिय्यात्वरागादिक तेहने नथीओलखतो वली इःखजेपरिसहादिक तेहथीठजग्योढे अनेगर्मजे इहलोकतथा परलोकादिकनुंसुख तेनेवांढेढे तेवारें तुं एसुखनुं निदानजे कारण तेहनुं तो मूढके० अजाणढो तेमढतां शीरीतेंवांढित पदार्थप्रतेंपामीश एटलेसुखनुंमूल निदानते सं यमढे तेविनाइष्टसुखनी प्राप्तिनयाय ॥ २०॥

कृती हि संव परिणामरम्यं विचार्य गृएहाति चिरस्थितीह ॥

जवांतरे ऽनंतसुखाप्तये तदात्मन्किमाचारमिमं जहासि ॥ ११॥ अर्थ ॥ इवेजाणपणानुं फलदेखाडीने उपदेशेढे रुतीजेमाद्योपुरुषहोय तेतोस र्ववस्तुमांजे वस्तुपरिणामेरम्य तथासुखदाइहोय अनेचिरस्थितिकहेतां घणोकालर हे एवुंविचारकरीने तेवस्तुनेतेयहणकरे तोहेआत्मा जवांतरेअनंतसुख आपवाने समर्थ एवाजेज्ञानादिक चारपदार्थ तेनेतुंकेमत्यजेढे एचारेंवस्तुपरिणामेरम्यढे अने चिरस्थितिढे एटक्षेघणाकालसुधी रहेएवीढे माटेतेतुजनेत्यजवीघटेनही ॥ २१ ॥

24

निजः परो वेति कृतो विजागो रागादिजिस्ते त्वरय स्तवात्मन् ॥ चतुर्गतिक्वेद्यविधानतस्त त्प्रमाणयन्नस्यरिनिर्मितः किं ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ हवेछात्मा रागादिकने वज्ञथको पोतानुंछने पारकुंझेखेढे तेछाश्रीउपदे रोगे देखात्मा निजकहेतां खजन कलत्र पुत्रादिक अथवा परजेशत्रुप्रमुख एवोवि नागजे जेदकरीजाणवों तेजेदसर्वरागादिकनुं करेलुंजे माटेताहरे जेप्राणीसाथें राग ने तेहनेतुं स्वजनकरीजाणेने अनेजेनाथीदेषने तेनेशत्रुकरीजाणेने पणतेरागादिक तो चार्गतिनाक्वेश कष्टनाकरनार ताराशत्रुठे तोखरिनिर्मितके० तेशत्रुतुंजनीपजा ञ्युं जेनेद तेने ग्रंप्रमाणकरेळे एटजेराग देवनावराथी निजपराविनागकर वुंतेजू ठोळे. च्यनादिरात्मा न निजः परो वा कस्यापि कश्चिन्न रिपुः सुह्रघा **॥** स्थिरा न देहाकृतयोणवश्च तथापि साम्यं किमुपेेषि नेषु ॥ १३॥ अर्थ ॥ हवेसर्ववस्तुनी अनिखतादेखामी आत्मानेसमतानी प्रेरणाकरेवे हेआ त्मा तुंखादिरहितवो खनेकोइनेकोइ पोतानुं तथापारकुंनथी वलोकोइनोकौइशञ्च अ नेमित्रपणनथी वलीहेआत्मन् देइजेपुरुष स्त्रीआदिकनुंशरीर तेआकारेंपरिश्याम्या एवाअणुकहेतां पुजल तेपणस्थिरनथी केमके क्लाक्लाप्रत्यें उपचयके॰ ग्रुन अग्र नादिक अवस्थापालटेढे तेमढतां हेन्प्रात्मा आदेहाकारजे पुजलतेनेविषे तुंकेम सा म्यताकहेतां रागदेषरहिततापणुं नथीपामतो हेञात्मा तुंतोञ्चनादीने अनेएदेहारुती तो अस्थिरने माटेलमतानेआदर ॥ १३ ॥

यथा विदां लेप्यमया न तला त्सुखाय मातापित्तपुत्रदाराः॥

जानंति कामात्रिखिलाः ससंज्ञा च्यर्थं नराः कर्म च केपि धर्म ॥ जेनं च केचिद् गुरुदेवद्युद्धं केचित् द्यिवं केपि च केपि साम्यं॥इथ॥

रह

समताधिकारः

अर्थ ॥ हवेसमताना धरनारप्राणियोडाहोय तेकहेने संसारमां समयसंज्ञाधार क जीवमात्र तेकामकहेतां शब्दादिकविपयजाणेने एटखे कामनाअर्थी सर्वजीवने तेसर्वमनुष्य अर्थकहेतां धनउपार्जन तथाकर्मकहेतांकाम एवेपदार्थजाणेने केमके मनुष्यना कामनोगते धननेआधीनने तेमांवलीकोइकमनुष्यते सामान्यथकी मिथ्या दृष्ट्यादिक धर्मनेजाणेने वलीतेमांपणकोइकज जैनधर्मनेजाणेने वलीतेमांपण को इकविरलाज छ-६ अष्टादशदोपरहितदेव तथाग्रुरु सुविहितसुसाधु एवोजैनधर्मजा णेने वलीतेमांपण शिवजेमोद्दार्थ तेहनेतोकोइकज जाणेने वलीतेमांपणसमताना जाणतो कोइकविरलाजने एटखे ए सर्वथीअधिक तेसमताना जाणनेकह्यो ॥ २५॥

स्निह्यंति तावदि निजानिजेषु पद्यंति यावनिजमर्थमेज्यः ॥ इमां जवेऽत्रापि समीद्य रीतिं स्वार्थे न कः प्रेत्य हिते यतेत ॥ १६॥ अर्थ ॥ इवेखजनना संबंधते केवलखार्थनिष्टितने तेदेखाडेने निश्चयची निजके पोतानास्त्रीपुत्रादिकतेसहु निजके पोताना पतितादिक स्वजननेविषेतिहां लगें स्नेह धरें जिहां लगें ते खजनची पोतानुंखर्थ जे नरण पोपणादिक चतुंदेखे तिहांलगें स्नेह धरें जिहां लगें ते खजनची पोतानुंखर्थ जे नरण पोपणादिक चतुंदेखे तिहांलगें स्नेह धरें जिहां लगें ते खजनची पोतानुंखर्थ जे नरण पोपणादिक चतुंदेखे तिहांलगें स्नेह धरेने एम प्रत्यद्वधानवनेविषेपण खजनादिकनी एरीतने तेजोइने प्रेत्यके परलोक नेविषे हितकारी एवोखार्थजे खत्मार्थ संयमादिक तेहनेविषे कोण ज्यमनकरे॥ २६॥

स्वप्नेंडजालादिपुय घदाप्ते रोपश्च तोपश्च मुदा पदार्थेः ॥ तथा जवेऽस्मिन् विषयेः समस्तेरेवं विज्ञाव्यात्मलयेऽवधेहि॥ १९॥ अर्थ ॥ हवेजेरागदेषधरवो तेफोगटने एमदेखाडेने जेमस्वप्न तथाइंडजालादिक विषे पाम्याजे अद्युज तथा द्युजपदार्थ तेषोकरीने रोषकहेतांदेष अने तोषकहेतां हर्षकरवो ते सुधाके० निरर्थकने एटले जेमस्वप्न इंडजालादिकना पदार्थांथी अर्थति हर्षकरवो ते सुधाके० निरर्थकने एटले जेमस्वप्न इंडजालादिकना पदार्थांथी अर्थति हिकांइनथी तेमजवमांपण अद्युजतथा द्युनविषयेंकरीने रोषखनेतोषकरवो तेसुधाने एमविचारीने हेआत्मातुं आत्मसमाधिनेविषे अवधेहिके० सावधानरहे ॥ १७ ॥ एष मे जनयिता जननीयं बंधवः पुनरिमे स्वजनाश्च ॥ डव्यमेतदिति जातमसत्वो नेव पद्यसि कृतांतवद्यात्वं॥ १७ ॥ रक्ततेऽत्र खलु कापि कृतांतान्नो विज्ञावयसि मूढ किमेव॥ २०॥

900

रोपिता छामाहरीमाता छाखजन छाइव्य एम ममत्वमां मग्नथयोथकोतुं खकहे तांपोतेज यमनेवशपडग्रुं नथीदेखतोग्रतो ॥ २०॥ तोहेमूढ एसंसारनेविषे निश्च येंकरीने धनतथापरिजन सेवकादिक तथा खजन पुत्र कलत्रादिक बलिदेवता त या परिचितकहेतां विधिषीठपार्ज्या जेमंत्रतेऐसर्वेंमलीनेपण कतांतजेमृत्यु तेथी कोइप्राणीरखायनही एवुंहेसूर्खतुं केमविचारतोनथी ॥ २७॥

तैर्जवेपि यदहो सुखमिइं स्तस्य साधनतया प्रतिजातैः ॥मुह्य

सि प्रतिकलं विषयेषु प्रीतिमेषि न तु साम्यसतवे ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ अहोआत्मा जेमाटेतुंसंसारमांपण तेपूर्वोक्तजेधनादिक तेणेकरीने स खवांग्रतो ग्रतो समयसमयविषे विषयमां मोहपामेन्ने पणतेधनादिक कहेवान्ने तेतुज नेसुख साधन तयाके० कारणपणे प्रतिजास्यांन्ने पणतेधनादिक तोसुखनाकार एनथी मात्रतने एमजास्यांन्ने जे ए सुखनासाधनन्ने तेथी तुं समताना सतत्वसरू पनेविषे प्रीतिनथीपामतुं ॥ ३० ॥

च्छर्धतोयुग्मं ॥ किं कषाय कलुवं कुरुपे स्वं केषु चिन्ननु मनोरिधि याऽत्मन् ॥ तेपि ते हि जनकादिकरूपेरिष्ठतां दधुरनंतजवेषु ॥३१॥

अर्थ ॥ इवेस्वजनादिकनुं अनेकांतिकपणुं देखामेने निश्चयथको हेआत्मा कोइ कप्राणीनेविषे अरिधियाकहेत एमाहाराशत्रुने एवीबु देंकरी पोतानुंमन कषायेंकरीक जुषितग्रुंकरेने केमके तेप्राणीपण ताहरा पिता मातादिकस्वरूपेंकरीने अनंता जवमां अनंतासगपणोने धरताहवा तेमाटेतेओने केवल शत्रुकरीजाणवुं तेमिथ्याने ॥३१॥

यांश्च शोचसि गताः किमिमेमे स्नेहला इति धिया विधुरात्मा॥

तेर्जवेषु निहतस्त्वमनंतेष्वेव तेपि निहता जवता च ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ इवे जे स्वजनबे तेजशत्रुबे एवुंदेखाडेबे देखात्मातुं एमाहारो स्नेहवंत स्वजन किहांगयो एवीबुदियें विधुरात्माके॰ डःखेंव्याकुलयको सुवागयाजेस्वज नादिक तेप्रत्येंशोचेबे एमजेहनो शोककरेबे तेजस्वजनादिकें तुजनेव्यनंताजवनेवि षेहत्योबे वलीतेंपण तेह्रनेव्यनंताजवनेविषे हत्याबे तेटलामाटे स्वजनबुदियेंजे से हराखवुं तेपणमिष्याबे. ॥ ३१ ॥

त्रातुं न राक्या जवडःखतो ये लया न ये लामपि पातुमीशाः ॥ ममलमेतेषु दधत् मुधात्मन् पदेपदे कि शुचमेषि मूढ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ हवेकोइकोइने राखवासमर्थनथी एवुंदेखाडेने जवके० संसारनाडःखय की जेत्राणीने तुं राखीशक्योनही अनेतेपण जवडुःखयीतुजने राखीशक्यानही तो जेजवडुःखथी राखवानेसमर्थनथी तेवारेंह्रेमूर्ख्यात्मा खजुनादिकनेविषे मुधाके०फो

कटममलकरतोथको पगेपगेंग्रंशोकपामेने माटेशोकतजीने समतानेजज ॥ ३३॥ सचेतनाः पुजलपिंडजीवा इप्रयाः परे चाणुमया घ्येपि ॥

द्धत्यनंतान् परिणामजावान् तत्तेषु करूलर्इति रागरोषो॥३४॥ अर्थ ॥ हवेजीवना पुज्जसाथें नानाविध परिणामने तेकहेने पुज्जपिंडके० पुज जनो समूहजेदेहजद्रुण तेहनेत्राश्रीनेरह्या एवाजे सचेतनके० चेतनाधारक सर्व जीव अथवा अणुमयाके० पुज्जमयजे बीजा अचेतन अर्थके० पदार्थ एटजेशरी रधारकजीव अने पुज्ज एवेपण अनंतागमे परिणामजावके० पर्यायप्रत्येंधरेने तोते जीवअनेपुज्जनेविषे रागअनेरोषकरवाने कोणयोग्य थाय निप्रंणपुरुषें तेठपर राग रोषकरवो युक्तनथी॥३४॥ इतिश्रीअध्यात्मकब्पूडुमे साम्योपदेशाख्यः प्रथमोधिकार;

अद्यस्तियः॥ मुह्यसि प्रणयचारुगिरासु प्रीतितः प्रणयिनीषु कृतिन् कि॥ किं न वेत्सि पततां जववार्ध्रौ तान्एणां खलु शिलागलवधाः॥१॥ चम्मांस्यिमजांत्रवसास्त्रमांसामेध्याद्यशुच्यस्थिरपुजलानां ॥ स्त्री देहएपिंडाकृतिसंस्थितेषु स्कंधपु किं पर्श्यसि रम्यमात्मन् ॥ २ ॥ अर्थ ॥ हवेबीजाञ्चधिकारमां स्त्रीत्रोनोममल त्यजवात्राश्री उपदेशञ्चापेढे देरु तिन् प्रणयचारुके० स्नेहेकरीमनोहरुठे गिराके० वाणीजेहनी एहवी प्रणयिनीके० स्वी ञ्रोनेविषें प्रेमेकरीने सुंमोहपामेढे पण एमकांनथीजाणतोजे जववाद्यौंके० सं सारसमुइमां पडतापुरुषनागलामां स्त्रीत्रोते शिलाउंबांधेठे ॥ १ ॥ हवेएस्त्रीत्रोना शरीरतुं व्यपवित्रपणुंकहेढे हेव्यात्मन् चामडी हाम चरबी व्यांत्रर्मा पांसली मेद रुधिर मांस विष्टा तथा ज्यादिशन्दश्री मूत्र कफ श्लेष्मादिक एहवाव्यपवित्र व्यने कश्विरके० क्तणविनाशिक जे पुजल तेहना स्कंधके० समूहथी बन्यो जेस्तीतुंशरी र तेहनी पिंमारुतिके० सांइ सुघटञ्याकार तेरूपेंसंस्थितरद्याढे तेमां सुंतुंमनोहर पणुंदेखेढे एटलेएसर्व व्यपवित्र व्यस्थिरपुजलनो पिंमठे तेमोकांइसारनच्धी ॥ १ ॥ विलोक्य दूरस्थममेध्यमर्थ्प जुगुप्ससे मोटितनासिकरस्तं ॥ जृतेषु तेनेव विमूढयोषावपुष्षु तरिंक कुरुषेऽजिलाषं ॥ ३ ॥ अध्यात्मकल्पजुम.

अर्थ ॥ वलीतेहिजकहेने हेआत्मन् अल्पके० चोमुकपण अमेध्यके० विष्ठादि कदेखीने मोटितनासिकाके० नाकमचकोडीनेतुं जुगुप्ससेके० डगंहाकरेने तोहे मूर्ख विष्टाद्किंजनम्बा एहवाजे सिओ्नाशरीर तेह्नेविषे सुं अनिजाषकरेने ॥ ३ ॥

अमेध्यमांसास्त्रवसात्मकानि नारी शरीराणि निषेवमाणाः॥

इहाण्यपत्यज्विणादिचिंतातापान् परंत्रेत्रतिर्ङ्गतीश्च॥ ४॥ अर्थ ॥ इवेएस्वीत्र्योनाशरीरते इहजोकें अने परलोकेंपण डःखदायीळे तेकहेळे अमेध्यजे विष्टादिक ते मांस रुधिर मेद तेथीजबनेला तन्मय एहवाजे स्वीत्र्योनाश रीर तेहने सेवनाराजेपुरुष तेइहलोकेंपण अपत्यके० संतानपुत्रादिक तथा इविण के० धनइत्यादिकनी चिंतानासंतापप्रतें पामेळे अने परलोकेंपण डर्गतिप्रतेंपामेळे४

> अंगेषु येषु परिमुह्यसि कामिनीनां चेतः त्रसीद विदा च क्रणमंतरेपां॥ सम्यक् समीह्य विरमाज्युचिपिंडके

न्यस्तेन्यश्च गुच्यगुचिवस्तुविचारमिज्ञत् ॥ ॥

अर्थ॥ वलीस्तीनादेइनी अपवित्रताकहेने चित्तनीप्रसन्नतायेंकरीनेजे स्त्रीओनात्रं गनेविषे मोइपामेने तेइनेकहियेंनैयें जे तुं तेमांएकद्रूणमात्र प्रवेशकरी एटलेस्क्राट ष्टीयेंकरी तेइनुंसम्यक्प्रकारें स्वरूपविचारीने पवित्र अने अपवित्र एवेवस्तुनावि चारने वांग्रतुंषको होयतो जेजे स्त्रीनार्अंगने तेतेसर्व अपवित्रतानाज पिमके० ढग लांगे तेइयीतुं विरमके० रागत्यजीने अलगोरहे ॥ ५ ॥

विमुह्यसि रमेरदृशः सुमुख्या मुखेकणादीन्यजिवीक्तमाणः॥

समीक्से नो नरकेषु तेषु मोहो जवा जाविकदर्थनास्ताः ॥ ६॥

अर्थ ॥ हवेस्त्रीनाञ्चंगनिरीक्त्ण तथानोगनुंफलकहेत्रे हेञ्चात्मातुं सुं मुखीके०चं इम्रुखी तथास्मेरके०विकसितत्रेनेत्रजेढुना एहवीस्त्रीत्रोनामुख तथाईक्त्णजेनेत्र आ दिशब्दथी स्तन जंघादिक तेहनाउपर सरागपऐोजोतोथको मोहपामेत्रे पएजे महाइःखमयनरक तेहुनेविषे तथाविध मोहथकी उपनीओ एहवी जाविके० आ गामिककदर्थनाजे महापीडाओ तेप्रतेंतुंकेमविचारतोनथी ॥ ६ ॥

च्प्रमेध्यजस्त्राबहुरंध्रनिर्यन्मलाविलोद्यत्कमिजालकीर्णा ॥ चापल्यमायान्टतवंचिकास्त्री संस्कारमोहान्नरकाय जुक्ता॥॥॥ अर्थ ॥ वलीतेहिजकहेढे विष्ठादिकेंजरीयकी जस्त्राके० धमणीलरिखी तथाघ णारंधजे बारेदार तेदयीनिकलता मलके० विष्टामूत्रश्लेष्मादिक तेणेकरी छावि लके० मलिन तथा उद्यतके० उपजता रूमिजे योनीमाहेला सूच्चजीव तेदना जालके० समूद तेणेकरी कीर्णके० व्याप्त वली चपलपणुं तथा कपटाइपणुं छने छन्तके० असखवचन तेणेकरी वंचिकाके० पुरुषनेवगनारी एद्दवीजेस्त्री तेसंस्कार जे जन्मांतरनोसंबंध तेद्दनावशयकी अथवा संस्कारजे स्नान तिलक छाजरणादिक तेद्दथी उपनोजेमोह तेद्दनावशेंकरी नोगवीथकी नरकायके०नरकनीदेवावालीथाय अ

निर्जूमिविंपकंदली गतदरी व्याघ्री निराव्हो महाव्या

धिर्मत्युरकारणश्च ललनाऽनश्चा च वजारानिः ॥ बंधू

सेहविघातसाहसम्पावादादिसंतापनूः प्रत्यक्तापि च

राक्सीति विरुदेः ख्याताऽऽगमे त्यज्यतां ॥ ७ ॥

श्चर्थ ॥ वलीपएस्रीनुंज राजवुंकहेरे श्रीसिद्धांतमां स्वीनेएहवे बिरुदेंकरीवखा णीरे तेमाटेस्वीनेत्यजवी तेकिहांकिहांबिरुदेत्यजवी तेबिरुदोनानामकहेरे एस्वीतेजू मिविना विषनी कंदलीके० नवाश्चंकुरनीसीखारे तथा कंदरीजेगुंफाधीरहितथकीपण वाषएसरिखीरे वलीकोइ नामविनापए महारोगरूपरे वली श्वकारएके० श्वपथ्य सेवन श्वजीर्णादिक कारणोविनाज मृत्युके० मरएातुखरे वली श्वज्वारलरहितते वज्जसरिखी वीजलीरे श्वने बंधुके० स्वजननो स्नेह तेहनो विधातके० नाशकरनारी रे तथा साहसके० श्वविचारितकार्यनुंकरवुं श्वसत्यबोलवुं वली श्वादिशन्दथी श्वदत्त वज्जसरिखी वीजलीरे श्वने बंधुके० स्वजननो स्नेह तेहनो विधातके० नाशकरनारी रे तथा साहसके० श्वविचारितकार्यनुंकरवुं श्वसत्यबोलवुं वली श्वादिशन्दथी श्वदत्त श्वद्धा परिग्रहादिक तेसंबंधी संतापनो जूके० जत्पतिनोस्थानकरे वली प्रत्यक्त् साहात् राह्सीपएजाएवी एरीतें एसर्वस्वीना एहवा श्वग्रुज बिरुदजाणीने विवेकी पुरुषने स्वीसंबंधी ममलत्यजवुं ॥ ७ ॥ इतिश्रीश्वध्यात्मकव्पकृमे स्वीममत्वमोचनो नाम दतीयो ऽधिकारःसंपूर्णः ॥

अप्रापत्याधिकारः॥ मानूरपत्यान्यवलोकमानो मुदाकुलो मोह्रन्पारि णा यत्॥चिकिप्सया नारकचारकेऽस्मिन् हढं निबधो निगडेरमीनिः॥१॥ अर्थ ॥ इवेत्रीजाञ्चधिकारें पुत्रादिकतुं ममत्वमुकवाञ्चाश्री उपदेशकहेढे तेमां प्रथम संतानउपरें मोह्रकरवुंनही तेकहेढे हेञ्चात्मातुं ञ्चपत्यजेपुत्रपुत्रीप्रमुख तेने जोतोषको मुदाके० हर्षञाकुलयाइस केमके मोह्राजारूप शत्रुयें नरकरूपजे चा रकके० बंदीखातुं तिहां चिह्तिप्साके० घालवानीइज्ञायें ञ्चपत्यरूप निगडके० बिमियें हढकरीने तुजने बांध्योढे ॥ १ ॥

इर

आजीवितं जीव जवांतरेपि वा शाख्यान्यपत्यानि न वेत्सि किं इदि॥ चलाचलेयौंविंविधार्तिदानतोऽनिशं निहन्येत समाधिरात्मनः ॥ २॥ अर्थ ॥ इवेउपमानंतरेंकरी संताननुं छखदाइपणुंदेखाडेने देखात्मा आजव मां जावजीवलगें तथा जवांतरे परजवेंपण अपत्यजे संतानते शक्षके० शलरूप ने एमतुंताहराक्तदयमां केमनथीजाणतो जेखव्पायुपवंत संतानादिक तेशोकरूप पींडाआपेने अने दीर्घायुपवंतजे अपत्यते लग्नादिकड्वव्यय्यप्रमुख विविधप्रकारनी पींडाआपेने तथा नरणपोषणादिकनी चिंता रूपजेआर्गि तेहनेउपजावेकरीने खह र्तिशके०निरंतर देआत्माताहरी समाधी सुस्थताने इत्येतके० इणीने ॥ १॥

कुक्तों युवत्याः कृमयों विचित्रा अप्यस्त्र शुक्रत्र जवा जवंति ॥ न तेषु तस्या न हि तत्पतेश्व रागस्ततोऽयं किमपत्यकेषु

॥ ३ ॥ त्राणाशकेरापदि संबंधानंत्यतोमिधों ऽगवतां ॥

संदेहाञ्चापकृतेर्माऽपत्येषु स्निहो जीव ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेहीजकहेढे स्त्रीनीकुंखनेविषे अस्रजेस्त्रीनीयोनीतुंरक्त अने ग्रेकजे पुरुषतुंवीर्थ तेहनासंयोगयीउपना एहवाक्रमीजे वेइंडियादिकजीव तेपणविचित्रप्र कारनाथायढे यडकं इज्ञीणजोणिमझे हवंतिबेंदियाउ जे जीवा ॥ इक्रोयदोवतिन्निव लस्तपहुत्तं च उक्कोसा ॥ १ ॥ तथासंमूर्श्विम अनेगर्नजपंचेंडीमनुष्पपणथायढे तो तेस्वी तथानर्नार बेहुने किंनिश्चये स्युंके० तेक्रमीजीवनेविषे केमरागस्नेहनथीहोतु अ नेश्वपत्यजेपुत्रपुत्रादिक तेहनाउपर रागकेमउपजेढे केमके एकजस्थानकनाउपना तेक्रमी अनेअपत्य तेबेहुबराबरढे ॥ १ ॥ हवे अपत्ययकी कांइपणस्वार्थसिदिनी आशाराखवी जूठीढेतेदेखाडेढे हेआत्मातुं अपत्यउपर स्नेहकरीसनही शाहेतुमाटेके आपदाजे मरणरोगादिक आवेथके जेअपत्यते त्राणके० राखवानेसमर्थनथी तथाव लीपरस्परेंप्राणीने संबंधनुं अनित्यढे कारणकेनानाप्रकारना संबंधढे माटे उपकारनो पणसंदेहढे केमकेजोपुत्रादिकसाथें वैरानुबंधी संबंधहोयतो तेथकी उपकारकेमया य श्रेणीकअने कोणीराजानीपरें तेमाटेस्नेहनुं धरवुंतेफोकटढे ॥ ४॥ इतिश्रीअप्या त्मकब्पडुमे पुत्रममत्वमोचनाख्यस्तृतीयोऽधिकारसमाप्तः ॥

ज्ययधनाधिकारः ॥ याः सुखोपकृतिकृबधिया बं मेलयन्नसि रमा ममताजाक् ॥ पाप्मनोधिकरणबत एता हेतवो ददति संसृतिपातं॥१॥ अर्थ ॥ हवेचोयाअधिकारें धननीममलमूकवाआश्री उपदेशआपेने तिहांपहेलुं धनथी सुखतयाउपकार नयाय तेकहेने हेजीवतुं ममलने जजतोथको एममानेने जे एलक्सी ते मने तथामहाराकुटुंबने सुखकारीथासे तथा दिनादिकनो उपकारकरवा ने कामआवशे एहवीबुदियेंजे रमाके० लक्सीनेमेलवेने तेएलक्सीतोकर्मादानादिक सावद्यव्यापारने करवेकरी अधिकरएपपणाथकी पाप्मनःके० पापनीजहेतुने तेमाटे संसृतिपातजे संसारमांच्रमणकरवुं तेप्रतेंजआपे एहवीने तेजणी लक्सीथकी सुख तथा उपकारनीवांनाते फोकटने ॥ १ ॥

यानि दिषामप्युपकारकाणि सप्पेंडि्रादिष्वपि यैर्गतिश्च ॥

राक्या च नापन्मरणामयाद्या हंतुं धनेष्वेषु क एव मोहः॥ २॥ अर्थ ॥ इवेधनयकी अनर्थनीपरंपराथाय तेकहेढे जेधनते दिषांके० इात्रुनेपण उपयोगीथाय एटलेधनना संचयकरनारने इणीनेज रात्रुबलवंतथाय अनेतेइना धननेज नोगवे वली जेधननेसंच्याथका उंदिरइत्यादिकनीगतिप्राप्तथाय केमके धन नोलोजीजीव धननीमूर्ज्ञायेंमरीने तेधनठपरें सर्ण्य तथा उंदिर इत्यादिकथयी अवत रे वलीजे धनेकरीमरण तथारोगइत्यादिक आपदाओतेपण सुज्रमचक्रवर्ति प्रमुखनी परें निवारी शकायनही तो एहवाधननेविषे मोइतेशीकरवी ॥ २ ॥

ममलमात्रेण मनःत्रसादः सुखं धनैरल्पकमल्पकालं ॥

ज्यारंजपांपैः सुचिरं तु इःखं स्याहुर्गतौ दारुणमित्यवेहि॥ ३॥

अर्थ ॥ इवेएधनचकीसुखयोहंढे अने इःखघणुंढे तेकहेढे केमके धनेकरी केव लममत्वना जन्मनोज प्रसादयाय कारणके महारापारोंधनढे एमचिंतवीचिंतवी ने धननोलोनिप्राणी हर्षपामेढे पणतेधनेकरी सुखतो अल्पकाल लेशमात्र योडा काललगेंजहोय पणतेहना अतिनिमित्तक आरंजनापापेकरीने दुर्गतिनेविषे दारु एके० कठिणडःखहोयज एहचुं नवनंदराजाने दृष्टांतें अवेहिके० जाए ॥ ३ ॥

डव्यस्तवात्मा धनसाधनो न धर्मोपि सारंजतया तिशुद्धः ॥ निःसंगतात्मा त्वतिशुद्धियोगा न्मुक्तिश्रियं यच्चति त झ्वेपि॥ ४॥ 'अर्थ ॥ इवेधनविना इव्यस्तवरूपधर्मनथाय तेमाटेधनउपार्जवुं एइवुंविचारपण

निश्चेंयकी जोता अयुक्तने तेदेखाडेने धननेसाधियें एह्त्वुंड्व्यस्तवात्माके॰ ड्व्य सलरूप जिनचुवन बिंबप्रतिष्ठा दानशालादिक जेंधमकरणीने तेपण सारंनके॰

ॻॖड़

इव्यारंनसदितपणेकरीने अतिनिर्मलनथी पणमात्रखर्गादिकगतिनाहेतुने माटेतेथ मनेपण मुक्तिनुंपरंपरा कारणजाणवुंनही अने निःसंगतारूपजे धर्मते अतिग्रदकेण निर्मलता निरवद्यतानायोगथी तेहिजनवमांपण मोक्रूप लक्षीने आपे॥ ४॥

केंत्रवास्तुधनधान्यगवाश्वेर्मेलितेः सनिधिजिस्तनुज्ञाजां॥ क्वेद्यापापनरकाज्यधिकः स्यात् को गुणो यदि न धर्मनियोगः॥॥ अर्थ ॥ इवेघणुंपरिग्रहते पापनुंमूलढे तेकहेढे केत्र क्यारडाप्रमुख तथावस्तुते घरत्रमुख धनधान्य गायो अश्वइत्यादिक तथानिधिजे जंमारतेणेसहित एहवोपरि यहमेलवेथकेपण जो एक धर्मनियोगके० जिनबिंबादिक ज्ञातकेत्रमां ववरायन ही तो तेवारें तेपरिग्रहथकी क्वेज्ञ पाप अने नरक एत्रणविना अज्यधिकके० व्यति रेकबीजोशोग्रणहोय एटले परिग्रहथकी अनुक्रमें कष्ट पाप अने नरक एत्रणवा नाजयाय पणबीजोग्रणकोइनथाय ॥ ॥

आरंजेर्जरतो निमजति यतः प्राणी जवाजोनिधावीहंते कुन्टपादय श्व पुरुषा येन बलादाधितुं॥ चिंताव्याकुलताकृतेश्व हरते यो धर्म

कर्मरुम्हतिं विज्ञा जूरि परिग्रहं त्यजत तं जोग्यं परैः प्रायदाः ॥ ६॥ अर्थ ॥ हवेपरिग्रह्थको इहलोकें तथा परलोकें इःखयायतेकहेने जेपरिग्रहमे लववाथकी प्राणी आरंजेके आरंजेनखुंथको संसारसमुइमांबुडेने वलीतेपरिग्रहेकरी इष्ठराजा तयाआदिशब्दथी मंत्रीप्रमुख अधिकारीओ अनेचोरादिक तेपुरुषने न्न करी बाधितुंके पडिवानेवांनेने केमकेबहुधनवंत उपरखोटोपण गुनाहनो आरोप करीनेदंमकरे वलीपरिग्रहनी चिंतायें व्याकुलताने करवेकरीने धर्मकर्मस्मृतिके० धर्मकार्यनुं संजालवुं तेहनोहरणकरीलिये माटेहेविवेकीजनो एधनते प्रायंबाहुल तायें परनाजनोगमां आवे एटले एकेंसंच्योहोय अनेबीजोनोगवे एहवोजेए नूस्कि० धर्णपरिग्रहतेहने त्यजो नांनो यडक्तं कीटिकासंचितवान्यं महिकासंचित्तमधु ॥ इप एैं: संचितंवित्तं परै रैवोपचुज्यते॥ रा जेमयोगियें घणाकटेकरी सिदिनारसनो संग्रह कखो अने वलनिपूरमां रांकाहोन्जानोगमां आव्यो तेमकोइनुंसंच्युंधन कोइकनोगवे ६ केन्नेयु नो वपसि यत्सदपि स्वमतयातासि तत्परज्ञवे किमिदं ग्रहीला ॥ तस्यार्जनादिजनिंताघचयार्जितात्ते जावी कथं नरकडःखनराच मोक्तः 9 अर्थ ॥ हवेअर्थांतरकहीने सातखेत्रें धनवावखानुं उपदेशकहेने हेधनवंत जे तुं न्रुतुंपोतानुंसके० धन तेहनेसातक्तेत्रनेविषे नथीवावरतुंतो एधननेतुंसुं परजवेंसा

Jain Education International

রপ

थेंजेइजनारने एटलेइमएातोतुं लोजनावशयकी धननेसुमार्गे खरचतोनथी पएते धन परजवेंताहरीसाथें नइजञ्चावे वलीतेधनना उपार्जनकरवाथी उपनुंजे अघ के॰ पापनो चयके॰ समूह तेथी अर्जितके॰ उपजाब्यो एहवोजे नरकसंबंधीडुःख तेहनो जरके॰ जारतेहथी मोक्तके॰ त्रूटनुंतेकेमथाशे॥ ७॥ इति श्रीअध्यात्मकल्प द्रुमे धनममलमोचनोनामचतुर्थाधिकारः समाप्तः॥

च्अय देहाधिकारः॥पुष्णासि यं देहमघान्यचिंतयं स्तवोपकारं कमयं विधा स्यति॥ कर्माणि कुर्वत्रितिचिंतयायतिं जगंत्ययं वंचयते हि धूर्त्तराट् ॥ १॥

अर्थ ॥ इवेपांचमें अधिकारें शरीरआश्रयी ममत्वमूकवो तेकहेने तेमांप्रयम पा पकरीने देइनुंपोषणकरनुंनही तेकहेने हेआत्मातुं अधके० पापने अणविचारतोथ कोदेहने पुष्तासिके० पोखेने ते आ देह तुजने सुंउपकारकरशे वजी आयतिके० आ वताकालनी चिंताचिंतवी हिंसादिककर्मकरतोथकोप्रवर्त्तनारो एहवोजेताहरोदेहते धूर्नोंनोराजाने सर्वजगतने वंचयतेके० नगेने तोतुंपापकरीनेदेहने पुष्टकरेनेपण एदे इतेआखरतुजनेनगसे नेहदेहीजाशे ॥ १ ॥

काराग्टहाइहुविधाद्युचितादिदुःखा त्रिर्गतुमिच्चति जडोपि हि तदिनिद्य॥ किप्तस्ततोधिकतरे वपुषि स्वरुमंत्रातेन तददयितुं यतसे किमात्मन्॥॥ अर्थ ॥ ह्वेएशरीरते काराग्रह्थीपण्छंमोडे तेदेखाडेडे हेव्यात्माजेप्राणी जड के॰ मूर्खहोय तेपण काराग्रहजे बंदीखातुं जेमां बहुविध अशुचिता अपवित्रता श्रादि शब्दथी कुधा तषा वध वंधनादिङःखहोय एहवाकाराग्रहने जेदी खात्रादिकपाडी ने नीकलवावांडेडे तोतुजने स्वरु॰ पोतानाकर्मने समूहें तेकाराग्रह्यीअधिकुंएह दुंजे वपुके॰ शरीररूपबंदीखातुं तेमांघाव्योडे तोएहवाकाराग्रह सरिखोजे ताहारो देहतेहने दढकरवानेज सुंज्यमकरेडे केमके काराग्रहतुं बंधनतायोर्छडे पणदेहनुं बंधनतो जावजीवसुधी तथापरलोकेंपणहोय तेमाटेदेहतुंबंधन अधिकजाणवुं ॥शा चेदांडसीदमवितुं परलोकङःखजीत्या ततो न कुरुषे किमु पुष्यमेव॥दाक्यं न रक्तितुमिदं हि न डःखर्जीतिः पुण्यं विना क्तयमुपैति च वज्जिणोपि॥३॥ अर्थ ॥ ह्वेपरजवनाइःखयी बीहीतोथको घणुजीववानेअर्थेंजे देहनेपोषेडे तेने कहेडे हेश्रात्माजोतुं आशरीरने परलोकसंबंधीइःखनाबीकेंकरी अवितुके॰राखवावां डेडे तोतुंपुण्वचर्पार्जन केमनथीकरतो केमकेपुल्येंकरी एशरीरइःखनाजयथकी रखा यनही एमतोकाइनयी एटलेशरात्ने इःखनाजयथी राखवानेपण पुल्जसमर्थडे

لا

अनेवलीपुर्खवनानु तो वज्निजेइंइ तेइनुंशरीरपण नाशपामेने तेमाटेजोपरलोकें इःखयीबीहेनेतो तुंपुर्खकर ॥ ३ ॥

देहे विमुह्य कुरुषे किमघं न वेदिस देहरुथ एव जजसे जवडःखजालं ॥ लोहाश्रितोहि सहते घनघातमग्नि बाधा न तेस्य च नजोवदनाश्रयते॥४

अर्थ ॥ हवेजेशरीरतुंजेतुंपोषणकरेठे तेशरीरमांरद्योथकोज तुंडःखपामेठे एइवुं देखाडेठे किंनवेत्सिके० हेआत्मातुं देहनेविषे मोहपामिने पापकरेठे अनेतेदेहमां रह्योथकोज नवडःखना समूहप्रतेंपामेठे तेकेमनथीजाणतो एतोनिश्वेंथकी लोह नेआश्रीत मब्युंजेआग्नि तेजेम घणा घणोना प्रहारोनेसहनकरेठे तेमतुजने तथा ए शरीररूप अग्निनेपण नजवत्के० आकाशनीपरें अनाश्रयत्वेके० निरालंबपणुंकरेतो बाधाके० पीडानहोय एटजेलोहाश्रित अग्नीनीपरें तुंपणदेहाश्रितथको डुःखपामेठे

ड्छः कर्मविपाकजूपतिवज्ञाः कायाव्हयः कर्मकृत् बध्वा कर्मगुणैईेषी कचषकैः पीतप्रमादासवं ॥ कृखा नारकचारकापडचितं लां प्राप्य चाज्ञु चलं गंतेति स्वहिताय संयमज्ञरं तं वाहयाल्पं ददत् ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेदेहकर्मकरतुं उपमानकहेने हेआत्मा एइष्ट निर्दय एहवोदेहनामे क र्मकरके ॰ राजसेवक तेतुजने कर्मरूप घणाबंधनेबांधीने नरकरूप बंदिखाना संबं धीआपदानो उचितयोगएहवोकरी पनेनजताकीने उतावजोजतोरहसे एकर्मकरक हेवुंनेके कर्मविपाकनामाजेराजा तेहनोवज्ञवर्त्तिने एटजेकर्मविपाकराजायें एहनेप्रे खोने माटेहेजीव तें रूषीकजे इंड्यितेरूप चषकजे मद्यपाननापात्र अणेकरी पां चविधप्रमादरूप आश्रवनामामद्य पीधुंने एहवोजाणीनेतुं पोतानाहितनेअर्थें तेकर्म करजे शरीरतेहने थोडुंपएछहार दोषरहितआपीने संयमरूपनारवहरावके जेय कीताहरा आत्मानी सिदियाय ॥ ५ ॥

यतः शुचीन्यप्यशुचीज्ञवंति कृम्याकुलात् काकशुनादिजद्वयात् ॥ ज्ञाग्जाविनो जरुमतया ततोंऽगात् मांसादिपिंडात्स्वहितं ग्रहाणााहा। अर्थ ॥ हवेएञ्चग्रुचिदेहथी बीजापदार्थपण अपवित्रयाय तेकहेने ग्रुचिके० प वित्रजेवस्तु एहवाखीरखांमप्रमुख तेपण एशरीरनासंगथी अपवित्रयाय तेमाटेएश रीरकहेवुंने तेकहेनेकमिजे ठदरप्रमुखनाजीव तेणेकरीञ्चाकुलके० व्याप्त तथा का गडा कुतरा इत्यादिकजीवने जद्त्वायोग्य अने प्राणगयापनि तत्काल जस्मथयी राखयनारने वली मांसादिकनुंपिंमने एहवाए असारशरीरयकीतो जे खहितकेण आत्मानेहितकारकएहवा संयमादिकतेप्रतेलेइने आत्मसाधनकर ॥ ६ ॥

परोपकारोस्ति तपो जपो वा विनश्वराद्यस्य फलं न देहात्॥

सजाटकादल्पदिनाप्तगेहम्टलिंपममूढः फलमश्नुतेकिं ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ वलीयुक्तिविशेषें देहतुं सफलकरवुंकहेबे जेपुरुषने एविनाशशील एहवुं जेदेह तेथकी परोपकार तथा तप जप प्रमुखनथाय तोतेपुरुष नाडेंराखेलुं थोडा दिवससुधिपाम्युं एहवुंजेघर तेसरिखो एमाटीनापिंमरूप देहउपरमूढवतो शोफ लपामें जेमनाडानुंघरते वापरियेंतोजशारुं नहिकांजेनाडुंखरचियेंते व्यर्थजाय अनेवली आखरपोतानुंपण तेघरथायनही तेमएदेहनेपण छहारादिकनाडुंआपीने पोष्युंथको तपजपादिकेंकरी वावरीयें तोजसफलुयाय नहिकांनिःफलजाणवुं ॥ ७॥

मृत्पिंडरूपेण विनश्वरेण जुगुप्सनीयेन गदालयेन ॥

देहेन चेदालहितं सुसाधं धर्मान्नकिं तद्यतसेऽत्रमुढ ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वजीतेहिजकहेढे जेमाटीनापिंमसरिखुं विनाशीआचारवंत तथाइगंहा करवायोग्य अनेरोगनुं आजयके० घर एहवोजेदेह ते ेकरीने धर्मकरवाथी आ त्महितसाधवुं तुजनेसुजनने तोहेमूर्ख अत्महितसाधवाने केमजयमकरतोनथी माटे असारजूतदेहथी सारजूतआत्मानो हितसाधवाने सर्वथाउद्यमकरवुं ॥ ७ ॥ इतिश्री अध्यात्मकल्पडुमेदेइ ममखमोचनानामें पांचमोअधिकारसंपूर्णथयो. ञ्जल्यल्पकल्पितसुखाय किंमिंडियार्थै रुबं मुह्यसि प्रतिपदं प्रचुरप्रमादः॥ एते क्तिपंति गहनें जवजीमकक्ते जंतून यत्र सुलजाशिवमार्गदृष्टिः ॥१॥ अर्थ॥पूर्वेकसुंजेदेदनियहकरतुंतेकांइ विषयनीममतामूकवासीवाय यतुंनची मा टेहवेढ हेञ्चधिकारें विषयप्रमार त्यजवा आश्रयी उपदेशेढे तिहां प्रथम इंडियार्थतुं मो हर्खजवुं तेकहेने हेञ्चात्मातुं घणुजप्रमादवंतथको पण चतिशयेंकरी छल्पकेव्यो हुंपणकल्पनामात्र जेसुखतेपण परमार्थथीतोडःखजने पणतेंसुखकरीमान्युं एहदुं जेसुख तेहनाइवर्ध प्रतिपदके० ठामेठामें इंडियार्थजे राब्द रूप रस गंध स्पर्श तेएक री सुंसुंजायने एइंड्यार्थते जंतुके० प्राणीने गहनके० खपार एहवोसंसाररूपजे जी मके० रौड् कक्तके० अटवीतेमां क्तिपंतीके० घालेने बलात्कारें तेमां प्रवेशकरावेने जिहां शिवके , मुक्तिमार्गनुं दृष्टिदर्शनतेजीवने सुलजनथी जेमकोइबीजोपण गह नवनहोयतोतेंमांहें शिवके० निरूपडव्यमार्गतुं जेद्रीनते डर्लनहोय तेनीपरेंजा

29

णवुं ॥ १ ॥ इदांप्रमादना पांचप्रकार तथा आठप्रकारनी गाथाकहेने. मर्झ विषय कषाया निद्दाविकद्दाय पंचमीचणिया ॥ एए पंच पमाया जिवं पाढंति संसारे ॥ १ ॥ तथाआठप्रकार कहेने. पमाठयमुणिंदीहीं चणिउ खठनेयउ ॥ अन्नाणं संसक चेव॥ मिह्वानाणं तहेवया १ ॥ रागो दोसो मइझंसो धम्मंमिय अणायरो॥ जोगाणं डप्पणि दाण ॥ अहहावक्तियवर्ड ॥ १ ॥

च्यापातरम्ये परिणामङःखे सुखे कथं वैषयिके रतोसि॥जमो

पि कार्यं रचयन् हितार्थीं करोति विद्वन् यछदर्कतर्कं ॥ २ ॥ अर्थ ॥ इवेसंसारिकसुखते प्रथमतोसुखदायीठे पण परिणामेंडःखदायीठे तेकहेठे हेचतुरत्यात्मातुं त्रापातके० तत्कालमात्रतो रम्यमनोहरठे पणपरिणाम के० विपाककार्ले महाडुःखदाइरूप एहवा विषयसंबंधी सुखमां सुंराच्योठो केमके पोतानाहितने वांठनार एहवोजे जडके० मूर्खप्राणीहोय तेपण कोइकार्यकरेतो उदर्कके० जेञ्यागामिककालनुंफल तेह्रनुं तर्कके० विचार करीने परिणामे छहितका रीहोयतेने त्यजेठे तोतुंचतुरठता परिणामें डुःखदायी एह्वाजे विषयादिक तेप्रतें केमछाचरेठे एछाचरवा तुजने योग्यनथी ॥ २ ॥

यदिं डियार्थैरिह रार्मबिंदवद्यदर्णवत्स्वः शिवगं परत्र च ॥ तयो

र्मियोस्ति प्रतिपक्तता कृतिन् विरोषदृष्ट्यान्यतर जृहाण तत् ॥३॥ अर्थ ॥ हवेसंसारिकसुखनी अल्पतादेखाडेडे हेचतुरआत्मा इहलोकनेविषे इं डियार्थजे शब्दादिक तेणेकरीने वेथ्युंजे तुज्वसुख अनेवलीजे परलोकें अर्णवके०स सुइसरिखुं खःशिवगंके० देवलोक अनेमुक्तिसंबंधीजेसुख तेसुखने मिथःके० मा होमांहें प्रतिपक्ता एटखेशत्रुनावडे केमके जिहांईडियार्थनुंसुखडे तिहांसुक्तिसुख नथी अनेजिहां मुक्तिसुखडेतिहां इंडि्यार्थसुखनथी तेमाटेविशेषदृष्टियेंकरी तेबेहुमां जेहनेतुंरुडोजाणे तेहने अहणकर ॥ ३ ॥

जुंके कयं नारकतिर्यगादि इःखानिदेहीत्यवधेहि रास्त्रिः ॥

निवर्त्तते ते विषयेषु तृष्णा बिजेषि पापप्रचयाच्च येन ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ हवेतेहिजविशेषें देखाडेठे हेट्यात्मा देहवंतप्राणी नरकतिर्येचगतीनाडुः ख केवाप्रकारेंजोगवेठे एटजुंतुं शास्त्रमांधी जोइने खवधेहिके० निश्वयकर तोतुजने निश्चेंथकी विषयनेविषे तृसानीनिवर्त्तिथासे खनेपापना संचवाथकीतुंबीहेतोरहिश. गर्जवासनरकादिवेदना परुयतोनवरतं श्रुतेक्रणैः ॥ नो कषायविषयेषु मानसं श्लिष्यते बुध विचिंतयेति ताः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीतेहीजकहेने हेपंमितप्राणी अनवरतंके० निरंतर श्रुतजे शास्त्रतेरू पी ईक्षणके० नेत्रेंकरीनेगर्जावास तथानरक आदिशब्दथी निगोद एकेंडियादिक तेसं बंधीवेदनाउंप्रतेंजोता चकां ताहरुं मानसके० चित्रते कषाय तथा विषयनेविषें नो श्विष्यतेके० छशक्तनथाय एहेतुमाटे पूर्वेंक्तिवेदनाउंने सम्यकरीतेंविचारीसतो ता हरुंचित्त विषयकषायथकी किंचितमात्र उद्यिनथाय ॥ ५ ॥

वधस्य चोरस्य यथा पर्शोर्वा संप्राप्यमाणस्य पदं वधस्य॥

रानैः रानैरेति मृतिः समीपं तथाखिलस्येति कथं प्रमादः॥ ६॥

अर्थ ॥ वलीमृखुनयदेखामी प्रमादत्यजवानुं प्रतिबोधकरेढे जेमवधकरवाने का ढ्या एहवाजे चोरतथा बोकडाप्रमुखजेपद्य तेहनेवधनास्थानकें लइजतां जेमजेमव धना स्थानकतरफ पगलाजरे तेमतेमथोडेथोडे मृखुपणनजीकञ्चावे तेहनीपरें स र्वप्राणीञ्चोने थोडेथोडे घडी पहोर दिवस मास वर्षादिकने जावेकरी मृखुढुकडो आवेढे तेकारणमाटे आत्मानाहितसाधननेविषे विलंबकेमकरियें अर्थात् प्रमादत्य जीने सर्वथाधर्मनेविषे तत्परयानुं ॥ ६ ॥

बिनेषि जंतो यदिङःखराशे स्तदिडिंयार्थेषु रतिं कृषा मा॥

तङ्भवं नरुयति रार्म यञ्कि नारो च तस्य ध्रुवमेव छःखं॥ उ॥ अर्थ ॥ द्वेसुखनो शीघ्रके जुरतनाशपणुंदेखाडीने जीवनेप्रतिबोधकरेडे हेजी वजोतु छःखनासमूद्दथकी बीहेडे तो इंड्यार्थजे शब्दादितेहनेविषे रतिके ज्रागकेमक रेडे केमकेइंड्यार्थयी उपनुंजे शमीके ज् सुखतेडाग्के ज्वतावजोज नाशपामेडे अनेते हनानाशपडि छःखतो ध्रुवके जिश्वल चिरकाललगे निश्चितडे जेमप्रकाशने अंते अंध कार निश्वेंचकी होय तेमसुखने अंते छःखपणनिश्वेंचकी जहोय ॥ ७ ॥

मृतः किमु प्रेतपतिर्ङरामया गताः क्तयं किं नरकाश्च मुडिताः ॥

धुवाः किमायुर्धनदेहबंधवः सकौतुको यघिषयौर्विमुह्रासि॥ ७॥

अर्थ ॥ वलीप्रकारांतरेजीवने सुखनाप्रतिबंधकदेखाडेने हेळात्मा प्रेतपतिजे यममृत्युलद्हण तेसुंमुत्रो के जतोरह्यो तथाइष्टकारी आमयके॰ रोग यड्कं रो गाणं कोडीउं हवंति पंचेव लक्तअडसही॥नवनवइसहस्साइं न्चसयाचेव पण्णयाली

Ωľ

१५६ ०७५७६४५ खासे सासे जरे दाहे कुठिसूले नगंदरे ॥ अरसा अर्जीर्ण दीहि मुहसूले अरोयए ॥ १ ॥ अठिवेयण कंछ अकणबाधाजलोयरे ॥ कुडे एमाइवा रो गा पीलयंति सरीरिणं ॥ १ ॥ एसोलरोग महोटाकह्याठे तेदेहनेआश्रयीजरह्याठे ते सुंक्रयपाम्या तथासातनरक तेहनाबारणातेसुं मुडिताके० ढंकाणा बंधथया तथा आयुष धन देह अनेस्वजनजे बंधुतेसुं धुवके० निश्चलशाश्वताठे जेमाटेतुं सकौतु कके० सहर्षवंतथको विषयनेविषे मोहपामेठे एटलेमूत्यु रोग अने नरक एत्रण नयतो विद्यमानठे अने आयु धन देह स्वजन एतोअस्थिरठे तोतुंसहर्षपणुंते श कारणथीधरेठे तेकांइसमजातुनथी॥ ० ॥

विमोह्यसे किं विषयप्रमादे र्श्वमात्सुखरुयायतिइःखराज्ञेः॥

तजर्धमुक्तस्य हि यव्सुखं ते गतोपमं चायतिमुक्तिदं तत् ॥ ए॥

अर्थ॥ इवेविषयसुखते निदानइःखरूपने तेकही जीवनेप्रतिबोधेने हेआत्मातुजने विषयनेप्रमादेंमिलीने निदान इःखराशीके ७ इःखनासमूह तेहने सुखनाच्रमयकी वि मोह्यसेके ॰ मोह्रपमाडेने एटलेइःखनासमूहनेविषे सुखनीच्रांतियें जेतुंमोह्रपामेने तेमात्र विषयप्रमादना वशयकीजपामेने एनावार्थने तेमाटे गर्दसुक्तके ॰ तृझारहि त एह्वोथकोतुजने उपशमलङ्क्षणरूप गतोपमके ॰ अनुपमसुखते आयतिके ॰ नि दानसुक्तिनुदातारने तेमाटे तृझारहित निरिह्तासुखनेआदर ७ इतिश्रीअध्यात्मकल्प इमे विषयावशतोपदेशः षष्ठोधिकारः ॥ ७ ॥

ञ्जय कषयाः॥ रे जीव सेहिय सहिष्यसि च व्ययास्ता स्वं नारकादि पु पराजवज्तूः कपायैः॥ मुग्धोदितैः कुवचनादि जिरप्य तः किं क्रोधान्निहंसि निजपुष्पधनं छरापं॥ १॥

अर्थ ॥ इवेसातमें अधिकारें कपायादिक त्यजवाआश्री उपदेशकरेने त्यांप्रथम कषायनुंफलकहेने हेजीवतुं कषायजे कोधादिकतेनाहेतुथी नरकादिकनेविषे पराजव जेपीडा तेहनो जाजन थको तें माहा इःसह वेदनाओ सहनकरी अनेवलीपण सहीश तेमाटेमुग्धजे अजाणलोकनाकहेला जे कुवचन गालप्रमुख इत्यादिकतुन्नकार णोनेवास्ते इर्लजएवुंजेपोतानुं पुल्यरूपीयुंधन तेनेक्रोधथी ग्रंह एोने एटले अल्पकारण माटे कषायकरीने इर्लजजेपुल्यरूप धनतेनेहरेने तेमाटेकषायनकरवुं ॥ १ ॥ पराजिजूता यदि मानमुक्ति स्ततस्तपोखंडमतः शिवं च॥

मानाहतिईर्वचनादिनिश्च तपःक्ष्यस्तन्नरकादिङःखं ॥ १ ॥

वैरादियात्रेति विचार्य लाजालाजोे कृतिन्नाजवसंजविन्यां ॥

तपोऽद्यवा मानमवाजिजूताविहास्ति नूनं हि गतिर्दिधेव॥३॥ युग्मं॥ अर्थ ॥ इवेमानमुकवातुं अनेराखवातुं फलकहेठे हेआत्मा परजेअन्यजनतेथी अनिनूतिके० अपमान आक्रोशादिकउपजेथके मानजेअहंकार तेनेमुकीआप जेणे करीअखंफतपथी मोक्तप्राप्तियाय अनेडरवचनादिकेंकरी जोमानआदरीशतो तपनो क्रयथाय तेतपक्त्यथके नरकादिकडुःखथाशे तथाआलोकेपण वैर धनहानि मरणा दिकडुःखथासे माटेहेनिपुणआत्मा एमपूर्वोक्तप्रकारें मानमुक्याधीलाजठे अनेमान आदखायीअलानठे एबेवातोविचारीने आनवके० एकजवसंबंधिनी अनिनूतिजेपरा नव तेउपजेठतेपण तपनेराख अथवामाननेराख केमकेएकार्थमां बेजउपायठे पण तेमांअनिन्तिनुंतो एकजनवनु इःखठे अनेमानकखाधीतो तपक्त्यथाशे तेवारें जवो

नवेंडःखने तेमाटेमानत्यजाने तपनेराख एबेकाव्यनोद्यर्थएकठोने ॥ २ ॥ ३ ॥

श्रुवा कोशान् यो मुदा पूरितः स्यात् लौष्टायैर्थश्चाहतो लोमहर्षी ॥

यः प्राणांतेप्यन्यदोषं न पर्यत्येष श्रेयो जाग् लत्नेतेव योगी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेकषायतज्यायी मुक्तिफलने तेकहेने जेयोगीसाधु आक्रोश गाल प्रमुख सांनलीने आनंदपामी विचारेंजे एगालिनुं अनिधेय मेंअनंतिवार अनुनव्युंने एमचिंत वी वलीजेलोह पाषाणादिकें हणायोथकोपणजेनुं रोमांचित हर्षितथाय अनेएम चिंतवेजे आजमाहरे विशेषनिर्जराथइ एमजाणी वलीजेसाधुप्राणांतेपण अन्यना दोष तथाअवग्रुणनदेखे पणपोतानोजदोषदेखे एहवोजेयोगीश्वर मन वचन अने का याथीग्रुनयोगवंत तेन्तावलोज श्रेयजेमोक तेनेपामे ॥ ४ ॥

कोगुएस्तव कदा च कषाये र्निर्ममे जजसि नित्यमिमान् यत्॥

किंन पर्यसि च दोषममीषां तापमत्र नरकं च परत्र ॥ ॥

अर्थ॥ हवेयुक्तियेंकरी कषायमां गुएनोछनाव देखाडेढे हेव्यात्मा कषायजेकोधा दिक तेऐोतुजनेकोइवारें कोइपएगगुएकस्त्रोढेके जेथकीतुंएकषायने नित्यप्रत्येंसेवेढे व लीथालोकेंसंताप छनेपरलोकें नरकनाइःखछापनार एवोजे कषायनोदोष तेनेतुंन थीदेखतोसुं जे तुंनिश्चितयको कषायनेसेवेढे॥ ५ ॥ यत्कषायजनितं तव सौख्यं यत्कषायपरिहाणि जवंति ॥ तिहरोषमयवैतङदर्कं संविजाव्य जज धीर विशिष्टं॥ इ॥

अर्थ॥वलीप्रकारांतरें कषायखजवुं उपदेशेने हेआत्मा तुजनेकषायथी उपतुंजेसु ख अनेकषायना परित्यागथी उपतुंजेसुख एवेनुविशेषजे अधिकपणुं तथा उदर्कके० निंदानो विपाकजेफल तेसम्यक प्रकारें विचारीने पने हेधीरपंफित एमांजेतुजने विशि एउत्तमजाणवामांआवे तेनेतुंआदरअंगीकारकर ॥ ६॥

> सुखेन साथ्या तपसां प्रदत्ति र्ययातया नैव तु मानमुक्तिः ॥ ड्याद्या न दत्तेपि शिवं परा तु निदर्शनाह्वाहुलबले प्रदत्ते॥७॥ सम्यग् विचार्येति विहाय मानं रक्तन् डरापाणि तपांसि यत्नात्॥ मुदा मनीषी सहतेऽजिजूतीः शूरः क्तमायामपिनीचजातिः॥७॥

अर्थ॥हवेतपकरवाथी मानत्यागनी इष्करता देखाडेठे हेआत्मा जेम तपनीत्रव नितेसुखेसाथ्यठे तेममानमुक्तिजे माननुत्यजवुं तेसुखेसाध्यनथी तो आद्याके० पहेली कहीजे तपप्रवृत्तितेसुक्तिआपवा समर्थनथी अने बीजोजेमानमुक्ति तेयद्यपिडःसाध्यठे तोपणते सुक्तिआपवाने समर्थठे बाहुबलनेदृष्टांतें जेमबाहुबलने मानमुक्तिविना मात्र तपथकीज केवलकान उपनुंनही अनेमानमुक्युं तेवारें तत्कालकानचपनुं एवुंसम्यग् विचारीने मानत्यजीनेयत्ने करीडर्जन एहवोजेतप तेनेराखतोचको क्तमानेविषे झूर एवोजे मनीषीके० पंक्ति ते नीच जननो करेलो अनिज्ति जेपराजव तेनेपण मुदा के० हर्षेकरीनेसहेठे ॥ ७॥ ७॥ एबकाव्यनोद्यर्थएकठोठे.

पराजिजूत्याल्पिकयापि कुप्यस्यचेरपीमां प्रतिकर्त्तुमिच्चन् ॥ न वेल्सि तिर्यङ्नरकादिकेषु तास्तेरनंतारलतुला जवित्रीः॥ए॥

अर्थ ॥ वलीएपरिसह सहेवाआश्रीज उपदेशेग्रे हेआत्मातुं थोडीपण परनीकरे लीजे अनिनूति पीडादिक तेणेकरी छनिनूतिना करनारजे पुरुषतेउपर कोपेग्रे अने बली पापकरीने तेहना प्रतिकारने वांग्रेग्रे एटले पूर्वजन्मांतरना पापविपाकथकी प राजवपामेग्रे अनेवलीतेहनो प्रतिकारपण पापेकरीनेज वांग्रेग्रे परंतुतेपापेकरीने तुं अनिनूतिजेपीडाओ तेतिर्थचनरकादिक गतिनेविषे अनंततथाअतुल मोहोटी एवि जवित्रीकहेतां पीडाथाशे एवुंकांनथीजाणतो ॥ ७ ॥ कषायत्यागाधिकार.

धत्से कृतिन् यद्यपकारकेषु क्रोधं ततो धेह्यरिषट्रूएव ॥ अप्रोपकारिष्वपि तभवातिकृत्कर्महन्मित्रबहिर्धिषत्सु ॥ १० ॥ अर्थ ॥इवेकोधकरवो तेवैरीनेज वियुक्तने तेकहेने हेपंफितआत्मा जोतुं अपकारक शत्रुनेविषे क्रोधधरेनेतो तेनेबदलेताहरा अंतरंगनाजे कोध मान माया लोन राग अनेदेप मलीन्शत्रुने तेहनेविषेज क्रोधधर केमकेएन्शत्रुथी बीजोकोइ तुफने वधारेडःखदाइनथी अथवा उपकारक मित्रनेविषे जोतुंकोधधरतोनथी तेवारेंतु सं सारमां अर्तिकारी एहवाझानावर्णादिक कर्म तेनोहरणकरनाराजे उपसर्गादिकना करनार शत्रु तेनाउपसर्गनेकरवेकरी बाह्यदृष्टियेंतोते ताहराशत्रूने पणकर्मद्रयकर वामां अनेपरलोकना अनंतसुखनीप्राप्तिकरवामां साह्यकारीथया माटे तत्वदृष्टियें जोतां अज्यंतरपण तेमित्रजावेज परिणम्या तेथी उपसर्गकारकशत्रुने तत्वदृष्टियें मित्रतुव्य जोइने तेमित्रनेविषे क्रोधनधरयो एजावार्थन्ने ॥ १० ॥

अधीखनुष्टानतपः शमाद्यान् धर्मान् विचित्रान् विद्धत्समायान् ॥

न लप्स्यसे तत्फलमात्मदेहकेशाधिकं तांश्च जवांतरेषु ॥ ११ ॥

छार्थ ॥ इवेमायात्यजवा आश्री उपदेशे हे देखत्मातुं अधीतिक ० ज एवुं तथा आ तुष्टानजे किया आव व स्वातप उप शमादिक नाना विधधर्म ते माया के ० कपटस दित करतो थको मात्रतुं पोताना देहने कष्टजआपे हे प एते थी व्यतिरिक के ० बीजूंफलकांइ जवांतरने विषे पामी सनही वली जवांतरने विषे तेधर्मने प एपामी सन ही के मके मायावीने बोधी पामवी इर्लजहो थ ॥ ११॥

सुखाय घत्से यदि लोजमात्मनो झानादिरत्नत्रितये विधेहि तत् ॥ डःखाय चेदत्र परत्र वा कृतिन् परिग्रहे तद्बहिरांतरेपि च ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ हवेलोजत्यजवाञ्चात्री उपदेशकरेठे हेत्रात्माजोतुं पोतानासुखनेञ्च र्थे लोजकरेठे तोझानादिक जे झानदर्शनञ्चनेचारित्र एत्रणरत्ननेविषे लोजकर बी जीधनधान्यादिक ञसारवस्तुयी कांहिसुखनयाय माटेहेचतुरज्ञात्मा तुंञ्चालोके डःखनेञ्चर्थे बाह्ययीधनधान्यादिक ञने ञंतरंगयी कोधमानादिक परिग्रहनेविषे लोज करिसनही ॥ १२ ॥

करोषि यत्त्रेत्य हिताय किंचित्कदाचिदएपं सुकृतं कर्यचित् ॥ माजीहरस्तन्मदमत्सराद्यैर्विना च तन्मा नरकातिथिर्जूः ॥ १३ ॥ अर्थ॥इवेजीवने सुकृतराखवाआश्रयी उपदेशेने देआत्मातुं कोइकाले कर्यचित् घ

ч

अध्यालकेल्पजुम.

र्ऐंकहेकरीने काइएक अल्पके० थोरुंपणसुरुत जेदानादिक तथातपसंयमादिकते प्रेत्यके० परलोकना हितनेअर्थेंकरेबे तेसुरुतने मद मत्सर कोध लोजादिकें करीने हारिसनही अनेवली तेसुरुतविना सातनरकनो अतिथिके० परोणो थइशनही एटले ें सुरुत खोयाथी नरकगतिथरो तेमाटे मदमत्सरादिकने निवारीनेसुरुतराखजे॥१३ पुरापि पापैः पतितोसि संसृतौ दधासि रे किं गुणिमत्सरं पुनः ॥ न वेत्सि किं घोरजले निपात्यसे नियंत्र्यसे शुंखलया च सर्वतः ॥१४॥ अर्थ॥वल्। मत्सरत्यजवाआश्री उपदेशेळे हेआत्मातुं पूर्वेपण पापेंकरीने संसारमां पडघोठे अनेवलीगुएवंतने विषे ग्रुंमत्सरधरेठे एमकांनथीजाएतोजे एमत्सरतोमु जने घोरके० अगाधडःखरूपियुं जेमां जलने एहवा संसाररूपीया समुड्मानांखेने अनेवली ताहरा सर्वागने निकांचित कर्मरूप सांकलेकरीबांधेले ॥ १४ ॥ कप्टेन धर्मो जवशो मिलत्ययं क्त्यं कषायैर्युगपत्प्रयाति च ॥ च्प्रतिप्रपन्नार्जितमर्जुनं ततः किमझ ही हारयसे नजस्वता॥ १५॥ अर्थ॥द्वेञ्चात्माने कप्टें उपर्जितधर्म राखवानो उपदेशकहेने हेञ्चात्मातुंधर्मनुं एकल वलेशमात्रपण कष्टेंकरीने संचयकर केजेथकीताहरो कषायेकरीने युगपतके ० समकाले घणाकालनो संचित करेलुंजेक्केशते एकवारेंज क्रयपामे तेमाटेहेमूर्ख घणाउद्यमे उपा ज्र्युएहवुं छर्जुनजे सुवर्ण ते वायुएकरीने हाइतिखेदे ग्रुंहारी जायने एटलेसुवर्णरस वायुर्ये हाखानीपरें कप्टेंउपार्ज्योजेंधर्म तेनेकपायरूपवायुर्यें हरावेनेतेयुक्तनथी ॥१ ५ दात्रू जवंति सुहृदः कलुषीजवंति धर्मा यशांसि नि चिता यशासीनवंति॥ स्निह्यंति नेव पितरोपि च बांध वाश्च लोकद्वयेपि विपदो जविनां कपायैः ॥ १६ ॥ ऋर्ष ॥हवेकषायथी इयाइयाछवगुएाथायुळे तेकहेळे संसारीजीवने कषायेंकरी ने मित्रतेशत्रू याय वलीधर्मजे तपदानादिक तेमेलायाय वलीचिरकालनोसंचेलोयश तेपण अपयरासरखोयाय वलीमातापिता तथा बीजाखजनादिक तेपणकोइ स्नेह नकरे तेमाटेप्राणीने कषायेंकरी आलोकें अनेपरलोकेंपण आपदायाय. ॥ १६ ॥ रूपलाजकुलविकमविद्या श्रीतपोवितरणप्रजुताद्यैः ॥ किं मदं वहसि वेत्सि न मूढानंतराः स्वजृरालाघवडःखं ॥१९॥ अर्थ ॥ हवेजीवने मदनिवारवाआश्री उपदेशकहेने हेआत्मातुं रूप लान कु

ल पराक्रम विद्या लक्सी तप दान ऐश्वर्य तथाआदिशब्दथी जाति परिवार स्त्री मं

दिर इस्यादिकें करीने मद छादंकार ग्रुंवहेबे? हेमूर्खछानंतिवार पोताना छातिशये लाघवपणानुजे इःख तेकेमनची विचारतो ? तुंपोतेंज छानंतिवार कुरूप जाजरहि त हीनकुल निर्वल मूर्ख दरिइी तपकरवानें छाशक रूपण दास किंकर एहवो छावतस्त्रो हतो त्यांपणसर्ववातें हीनपणुं छानुजच्युं तोछाजइहां ग्रुंमदकरेबे ॥ १ ९॥

विना कषायान्नजवार्त्तिराशि र्जवेमवे देव च तेषु सत्सु ॥ मूलं

हि संसारतरोः कषायास्ततान् विहायेव सुखी जवात्मन् ॥१ ७॥ अर्थ ॥ वजीफरीने कषायनुंत्यजवुंज इढेवे. देआत्मासंसारमां कषायविना संसार संबंधीनी आर्त्तिनोसमूह होयजनही अनेतेकषायेंकरी विद्यमानवते जवार्त्तिनीराशि दोयज केमके संसाररूपीया वृक्तुमूल तेकषायजवे. माटेतेकषायनेवांमीनेसुखीया. शांतिसुखनेपाम. ॥ १ ७ ॥

समीह्य तिर्यङ्नरकादिवेदनाः श्रुतेक्तणेईर्मडरापतां तथा॥

प्रमोदसे यधिपयैः सकौतुकै स्ततस्तवाल्मन् विफलेव चेतना॥१९॥ अर्थ ॥ हवेजेविषयने त्यजीशक्तोनथी तेप्राणीने शास्त्रजल्यो तेपणञ्चफलन्ने ते आश्रीकहेने हेञ्चात्मा श्रुतजेसिद्धांत तेनेजोवेकरीने तिर्यंच नरक प्रमुखनी वेदनाने तथासर्वज्ञजापित धर्मचुंडर्लजपणुंने एमतेंसम्यक्प्रकारेंजाणीने पणजोतुं कौतुकस हितथको विषयमांराचेने तेवारें ताहारो चेतनाजे ज्ञानदृष्टि तेनिस्फलने केमके तुंन रकादिकनाडुःखने जाणतोब्रतोषण डर्जजधर्मपामिने धर्मकरतोनथी ॥ १९ ॥

चौरेसतथा कर्मकरेर्ग्टहीते इष्टेः स्वमात्रेप्युपतप्यसे लं॥ पुष्टैः

प्रमादेसनुनिश्च पुण्यधनं न किंवेत्स्यसि लुठ्यमानं॥ २०॥

अर्थ॥ हवेधर्मरूपधन तेलुटातुंनयी तेआश्रीजीवने उपदेशकहेने हेआत्माचोर लोको तथा इष्टकुलक्रणकर्मकर जेदासादिकतेणे खमात्रके॰ मात्रबाह्यधनने अप इस्रान्तां तुंपरितापकरेने पणपोतानापोष्या एवाजेप्रमाद तथा तनुके॰ शरीर तेणेचो रनीपेनें जुटगुं एहवुंजे ताहरुं पुल्परूप धन तेसर्वजुंटाइजायने माटेतेहनी रक्ताकर केजेथीतुं जवांतरेंसुखीयाय ॥ १० ॥

मुत्योः कोपि न रक्तितो न जगतो दारिद्यमुत्रासितं रोगास्तेनन्पादि जा न च जियोनिर्णादािताः षोडरा॥ विध्वस्ता नरका न नापि सुखिता धर्मैस्त्रिलोकी सदा तत्कोनाम गुणोमदश्च विजुता का ते स्तुतीज्ञा च का ११ श्वर्थ ॥ वलीञ्चात्माने गुणरहितपणुंदेखाडी मदगंमवा उपदेशकरेग्रे हेश्चात्मा जोतें मूखुनामुखथी कोइप्राणीराख्योनथी तथा जगतजेविश्वतेतुं दारिइनाशपमा डग्रुंनथी वलीसोलेरोगजे कासादिक तथाराजाञ्चने चोरप्रमुखनाजय तेनाशपमाडधा नथी वलीसातजेनरक तेपणनिवाखानथी तथाधर्मंकरीने त्रिज्जवनने सदासुखीकीधुन थी इत्यादिकग्रुणमाहेलो एकग्रुणजोताहरामानथी तेवारेंताहारोग्रुणतेस्यो, त्र्यनेतेग्र णविना मदतेश्यो, तथा विज्उलाके० मोहोटाइतेशी, तथास्तुति प्रशंसानीवांग्रा तेप णशी, एटलेपूर्वोक्त तथाविध कोइग्रुणजोताहरामांहोयतो मदकरवोपणघटेग्रे पण तेविना तोजेमदकरयोतेसर्वे निर्थकग्रे तेमाटे मदमत्सरादिकत्यजवा ११ इतिश्री श्रात्मकल्पडुमेविषयकषायाद्यवशताधिकारः सप्तमः संपूर्णम्मः ॥

अथशास्त्राण्याजित्योपदेशः॥शिलातलाजे हदि ते वहंति विशंति सिश्रांत रसा न चांतः॥यदत्र नो जीवदयार्डता ते न जावनांकूरततिश्च लज्या॥१॥

श्चर्थ ॥ इवेद्यावमें अधिकारे शास्त्र गुणके हेने त्यांप्रथम उपमाने शिक्तांतरे चित्त जुक विणपणुं देखाडेने हे आत्माशिलाना तलियासरखा ताहराहृदयमां सिद्धांतरू पिया रसवहेने पणते थीतारो खंतः करण लिगारे जेदातोन थी केमके एहृदयमां जीवदया रूप णीको मलता तथा जावनाजे अनित्य लादिक तेरूपीया खंकूरनी श्रेणी देखाती न थी को मलप्टथ्वी जेम जलप्रवाहनेयोंगें आईतापामे तथात्यां अनेक खंकुरादि प्रगटे तेम आत्तनसिद्धिक जीवने सिद्धांतनायोग थी हृदयमां को मलता थाय तथा जावना प्र मुख ग्रुनपरिणामपण उपजे अने इरसिद्धिक जीवने तोए शिलातल उंदृष्टांतजाण दुं.

यस्यागमांजोदरसैर्न धौतः प्रमादपंकः स कथं शिवेच्डुः ॥

रसायनैर्थस्य गदाः क्तता नो सुर्डर्लजं जीवितमस्य नूनं ॥ २ ॥ अर्थ ॥ इवेठकिविज्ञेषेकरी सिद्धांतनुं माहात्म्यकहेने जेप्राणिने आगमजेसिदांत तेरूपीया मेधनेरसेंकरी प्रमादरूपीयो पंकजेकचरो तेधोवाणोनथी तेवाप्राणिमुक्ति शुंवांनेने एटले जेने सिद्धांतजाणवाथीपण प्रमादमटचोनही तेप्राणिपने इयाथीप्र मादरहितथइ मुक्तिपामज्ञो केमके सिद्धांतथीअधिक बीजोकोइ प्रमाद परिहारनो उपायनथी तेउपरदृष्टांतकहेने जेपुरुषने रसायनजेपारदादिक तेथीपण रोगक्त्यन पाम्यो तेनेजिवतव्य तेघणुजर्छर्जनने एमइहांपणजे सिद्धांतजाणीने प्रमादरहितन थाय तोतेनेमुक्तिपामवी धणीज इर्जनने ॥ २ ॥ छाधीतिनोर्चादिकृते जिनागमः प्रमादिनो ऊर्गतिपापतेर्मुधा॥ ज्योतिर्विमूढस्य हि दीपपातिनो गुणाय कस्मे राजजस्य चकुषी॥३॥ अर्थ ॥ हवेजेपुरुषसिद्धांतजणिनेपण प्रमादवंतने तोतेद्दुंजणवुं वृथानेते कहे ने जेपुरुषप्रमादवंत सर्वथा ऊर्गतिनोपडनार तेव्यर्चादिके० केवलपूजासत्कारादिक नेजव्यर्थे सिद्धांतजणे एवोहोयतेहनु जण्युं सुधाके० निष्फलजाणवुं तेचपर दृष्टां तकहेने ज्योतिके० प्रकारोंकरीनेज सुंजाणोधकोदीवामांजइपडे एवोजे शलजके० पत्तंग तेहनांच हूजेनेत्र तेकेवाग्रणनाव्यर्थेंहोय एतोउलटाव्यवग्रणकारीजयाय तेमप्र मादिजीवरूपजे पतंगते व्यर्चांसत्कारादिक ज्योतिमां सुंजाणोधको दुर्गतिरूप दीप ज्वालामांपडेने त्यांसिद्धांतरूपचकुतेकाईकामनव्यावे सामोमोह्कारीथाय ॥ ३ ॥

मोदंते बहुतर्कतर्कणचणाः केचिज्जयाधादिनां काव्यैः केचन कल्पि

तार्श्रघटनेस्तुष्टाः कविख्यातितः ॥ ज्योतिर्नाटकनीतिलक्त्णधनुर्वे दादिशास्त्रैःपरे ब्रूमः प्रेत्य हिते तु कर्मणि जडान कुक्तं जरीनेव तान्॥ध॥ अर्थ ॥ इवेतलकानविना घणुंजत्योपण व्यर्थने तेदेखाडेने केटलाएकपुरुष घ णातर्कजेप्रमाण प्रमेयादिन्याय तेहनातर्कविचारनेविषे चणके० प्रतिष्टित एवान्नतां प रवादिने जीपवाथकी हर्षपामेने तथावलीकेटलाक चिंतव्याअर्थनी रचनाएरच्यां एहवेकाव्येंकरीने कवीपणानीप्रसिद्धियकी संतोषपामेने वलीकेटलाएक ज्योतिष नाट क नीतिके० व्यवहार शास्त्र लक्ष्रणके० सामुड्कि तथाअश्व गजलक्रणादिक धनुर्वे दके०आयुध अन्यासनांशास्त्र आदिशब्दथी शकुन गारुनि इत्यादिक शास्त्रेंकरीने सं तोषपामेने पणपरलोकनेविषे हितकारीएवाजे संयमादिककर्मतेह्नेविषेजो जडके० अज्ञानन्नेतोतेसर्वेने अध्यात्मशास्त्रने अनुसारे अमेंपेटजरा कहियें नैयें एटजेअप्या त्मशास्तनेमूकीबीजासर्वजे पापश्रुतादिशास्त्र तेपेटजराइनाजने ॥ ४ ॥

किं मोदसे पंडितनाममात्रात् शास्त्रेष्वधीती जनरंजकेषु ॥ तत्कि

चनाधीष्व कुरुष्व चारा न ते जवेद्येन जवाब्धिपातः॥ ॥ अर्थ ॥ वलीतेहिजदृढेढे हेपंमिततुं जनके० लोकनेरंजनना करनार एहवाजे शृंगार नाटककाव्याविशास्त्र तेहनेविषेप्रवीणथको नाममात्रपंमितपणाथी द्यंहर्षपा मेढे एलोकरंजकशास्त्रथी कांझ्आत्मार्थनीसिदिनथी पणतुंशास्त्रनेजाणिने शीघपणे कांइकएहवीकरणीकर केजेणेकरीने तुजनेसंसार समुइमां बुमवुंनथाय एटलेजिनाग मजणिने तेहनेञ्चनुसारें संयमञ्चाराध ॥ ॥ धिगागमैर्मायसि रंजयन् जनान् नोय इसि प्रेत्य हिताय संयमे॥ दधासि कुद्धिंजरिमात्रतां मुने क ते कतत् केष च ते जवांतेर ॥इ॥ अर्थ ॥ हवेक्रियाविना केवल आगमवुंजणवुं तेपण अर्थसाधकनथी तेकहेने हेसुनितनेधिःकारने केमकेतुं आगमसिद्धांत तेणेकरीने लोकने रीजवेने पणपरलो कना हितनेमाटे संयमनविषेज्यमवंत नथीथातो तेमाटेतुंकेवल पेटजराइजकरेने पणताहरेयादराखवुंके जवांतरनेविषे तेजिनागमकिहां अनेलोकवुंरीजववुंपणकिहां तथासंयमपणकिहां एटले जवांतरेएवीगतिपामिश केजिहांएमाहेलोएकेतुजनेनहोय.

धन्याः केप्यनधीतिनोपि सदनुष्ठानेषु बद्दादरा इःसाध्येषु परोपदे राखवतः श्रद्दानज्ञाद्दायाः ॥ केचित्त्वागमपाठिनोपि द्धतस्तत्पु स्तकान् येऽलसा अत्रामुत्र हितेषु कर्मसु कयं ते जाविनः प्रत्यहाः॥९॥ अर्थ ॥ हवेषोडोनणावाथीपण किहांक क्रियानो उत्कर्षदेखामेठे केटलाकप्रा णी अब्पश्चतवंतठतांपण श्रद्धानजे सम्यक्ततेणेकरीने ग्रुद्दाशयके० निर्मलपरिणा मवंतहोयतेनेधन्यठे केमकेतेपारकाउपदेशना लेशमात्रयीपण इःखेंसाध्य एवांजे जलाअनुष्ठान तपसंयमादिकियाविशेष तेहनेविषे आदरवंतठे अनेहाइतिखेदेंकेट लाकतो आगमना जणनारठतां तथाआगमना पुस्तकधरतांठतांपण आलोक अने परलोकनेविषे हितकारीकर्म जेसंयमादिक तेहनेविषे निरादरकरेठे तेपुरुषनेपरजवने विषेग्रुंथाशे एटलेपरनवेतेनी शीगतीथाशे अर्थात् ते माहाइःखपामझे ॥ ९ ॥

धन्यः समुग्धमतिरप्युदिताईदाज्ञारागेण यः सृजति पुण्यमङविकल्पःपाठेन किं व्यसनतोस्य तु डविकल्पे यौं डस्थितोत्र सदनुष्ठितिषु प्रमादी॥ढा। इतिवापाठः ॥

अर्थ॥ वर्जी अर्थांतरें एहिजइढेढे जेअल्पश्रुतवंतथको पणकदाग्रहरहितहोय ते हने मुग्धमतिकहियें तेपणनलुंजाणवुं केमकेजे उदितके सिदांतोक एहवीजे अ रिहंतनी आज्ञातेना रागेकरीने रखेजिनाज्ञानोजंगथाय एवीबुदियें कुविकल्परहित थको पुत्यकरेढे अनेजेपवितथकोपण कदायहेंयस्तहोयतो तेनेघणुजत्पेपण शोगुण जेलोकनेविषे यूतादिव्यसनधी कुविकल्पेंकरी इषितढे एटलेकांइक पूजासत्कारादि कना लोजेंजत्युंथकुं पण व्यसनादिकें आसकपणेकरी कुविकल्पचिंतवे एटलेकेहेनेरी जबुं केहेनेमोहपमाहुं केमकरि परीयहमेलवुं एवीबुदियें रात्रदिवस इःखितथको रहे अनेनजाञ्चनुष्टान जेग्रुनक्रियातेनेविषे प्रमादवंतने तोतेइनुंनखुपण निष्फलने आ काव्यपेहेलाकाव्यनुं पानंतरने ॥ ए ॥

> च्छधीतिमात्रेण फलंति नागमाः समीहितेर्जीवसुखैर्जवांतरे ॥ स्वनुष्ठितैः किंनु तदीरितैः खरो न यत्सिताया वहनश्रमात्सुखी॥ए॥

अर्थ ॥ वर्जीतेजदृढकरेबे देश्रात्मा केवलनएयामात्रथकीज आगमसिद्धांतते नवांतरनेविषे वांबितसुखेकरी फलेनही इष्टफलदायकनहोय पणतेसिद्धांतनेविषे कह्यांजे खनुष्टितके० जलाआनुष्टान तपसंयमादिक तेनेआराध्येबते आगमफलदायक होय तेजपरदृष्टांतकहेबे जेमखरजेरासज तेसाकरनोजार जपाडवामात्रथी सुखीर्ज नहोय साकरनापरिजोगनुं सुखनपामे तेम आगमजणवामात्रयीज आगमोक्त किया जनित फलपामेनही॥ए॥इतिश्री अध्यात्मकब्पदुमे शास्त्रगुणाधिकारोऽष्ठमःसंपूर्णः ॥

ज्जयचतुर्गत्याश्रितोपदेवाः॥ डर्गंधतो यदणुतोपि पुरस्य मृत्युरायूं पिसागरमितान्यनुपक्रमाणि ॥ स्पर्शः खरः क्रकचतोतितमामित श्च डःखावनंतगुणितौ जृश्रोरोत्यतापौ ॥१॥ तीवा व्यघाः सुरकृता

विविधाश्य यत्रा कंदारवैः सततमश्रजृतोप्यमुण्मात् ॥ किं जाविनो न नरकान् कुमते बिजेषि यन्मोदसे क्तणसुखेविषयैः कषायी॥ शायुग्मं अर्थ॥हवे एपूर्वोक्तशास्त्रधारांतर्गत चतुर्गत्याश्रीत उपदेशकहेढे तेमांप्रयम शास्त्रोक नरकगतिनाङःखकहेढे निश्चेंकरी नरकना एकपरमाणुमात्रना दुर्गधयी पुरवासिस मस्तजोकनुं मृत्युयाय एहवामहार्ङ्गधमय नरकनापुजजढे वज्जीजिहां निरुपक्रमके० व्यपवर्तनरहित निकांचित् अने सागरोपमेप्रमित एकसागरोपमयी मांभीने तेत्रीस सागरोपम पर्यंत एहवाव्याकषाढे केमके देवतात्र्यने नारकीनाञ्चाठषा सदाइ निरु पठमहोय वज्जीजिहां स्पर्शतेपण करवतनीधाराथी कर्कशढे वज्जीइहांयकी अनंत युणडःखदायी महाशीत तथा महातापढे एमक्त्त्रवेदनाकहीने हवेपरमाधामीनी करेलविदनाकहेढे वज्जीजिहां देवताजे पन्नरजेदें परमाधामीतेहुनीकरेली व्यतितीव्र कठोरजे वेदना तेविविधप्रकारना ढेदन विदारणादिकहोय एप्रकारे निरंतर ज्याकंद स्दनने शब्देकरी जाकाशनेपुरतो एहवोजे जविष्यमाण नरक तेह्यकी हेकुमतिवं तत्रात्मातुं केमनयीबिहितो जेमाटे कषायसहितयको क्लणमात्रसुखनाकारक एह वाविषयजे शब्दादिक तेणेकरी हर्षनेपामेढे एबकाव्यनो अर्थएकठोढे ॥ १ ॥ २ ॥ बंधोऽनिशं वाहनताडनानि क्तुत्तट्डरामातपशीतवाताः ॥ निजान्यजातीयजयापमृत्यु डःखानि तिर्यंदिवति डःसहानि॥३॥

अर्थ ॥ इवेतिर्यचगतिआश्री इःखदेखाडेढे अनिज्ञके० नित्यबंधन तथा वाहन के० जारनुउपाडवुं तथापराणादिकना प्रहारेंकरी ताडन वली कुधा तथा इरामके० इष्टरोग आतप तडको तथाटाढ्य वायुइत्यादिक तथावलीखजातीनोजय जेम म हिषने महिपनोजय तथाइस्तिने हस्तिनोजय तथाअन्यजातीयजय ते जेम मृगादि कने व्याघादिकनोजय तथाअपमृत्युजे कुमरण खम्गप्रहारथी तथाआहेडीप्रमुख थी तथाजल दावानल विषमादिकयोगथी कुधातृषादिक गाढवेदना आक्रांतपणे

अकालमृखु इत्यादिकप्रकारें तिर्यचगतिमां नयंकरकठीन डःखहोयते ॥ ३ ॥

सुधान्यदास्याजिजवाज्यसूया जियोंतगर्जस्थितर्ड्गतीनां ॥

एवं सुरेष्वण्यसुखानि नित्यं किंतत्सुखेर्वा परिणामङःखेः॥४॥

अर्थ ॥ इवेदेवगतिआश्रीइःखकहेने नित्यप्रतें मुधाके० फोकट अन्यके० पारकी सेवा करवी केमकेमनुष्यतो धननालोजे तथाआजीविकादिक कारणथी परनीसेवा करे अनेदेवतानेतो तेवोकोइनिमित्तनथी तोपणसदाकालें इंडादिकनीसेवाकरवी त षात्रानवेंवजप्रदारादिकनी पीडा अने अनिस्याके० परस्परें ईर्षा देषादिकमां वलि श्रंतके० चवननुंजय केमके सरवार्थसिदिना देवतानेपण चवननुंजयने तथागर्जी वासनुजय वलीइर्गतिजे चांमालादिककुलें अथवातिर्यचनुंअवतारलेवुं तेसंबंधीजय इत्यादिक प्रकारें देवतानाजवमांपण घणाप्रकारें असुखने तेमाटेपरिणामें इःखकारी एद्दवाजे देवतासंबंधीसुख तो तेसुखेंसुंथाय माटेतेसुखनेपण असुखकरीजाणवा॥४॥

सत्नीत्यनिजवेष्टविछवानिष्टयोगगददुःसुतादिजिः ॥

स्याचिरं विरसता नृजन्मनः पुण्यतः सरसतां तदानय ॥ ॥

अर्थ ॥ इवेमनुष्यगतिआश्री इःखकहेर्र धुंवके० निश्चेंकरीने सातजीतिजे १ इह लोक २ परलोक ३ आदान ४ आकस्मिक ५ आजीविका ६ मरण ७ अपयश एसातजय तथा अजिजवके० राजा चोर इर्ज्जनादिकथी पराजव तथा इष्टजे वक्ष जजन स्त्री पुत्रादिकनोवियोग शत्रुप्रमुखनो योगके० संबंध तथा गदके० रोग वली इःस्ततके० कुपुत्र आदिशब्दथी कुनार्याप्रमुख इत्यादिकप्रकारेकरीने मनुष्यजन्मनु पण विरसपणुथाय तेकारणमाटे पुल्येकरीने मनुष्यजन्मनु सुरसपणुकरतुं ॥ ५ ॥ चित्तदमनाधिकार.

इति चतुर्गतिङःखततीः कृतिन्नतिज्ञयास्त्वमनंतमनेहसं ॥ इदि विजाव्य जिनोक्तकृतांततः कुरु तथा न यथास्युरिमास्तव ॥६॥ अर्थ ॥ इवेचपसंहारकहेढे हेपंमितञ्चात्मा एप्रकारें अनंतकालसुधी अतिशय जयनीकरनार एहवीचारगतिसंबंधीजे डःखनीश्रेणी तेप्रते जिनोक्त श्रीसर्वक्रप्रणि त कतांतजे सिद्धांत तेथकी त्टदयमां विचारीने जेम ए चारगतिना डःखनीश्रेणीओ तुजने कोइवारें प्राप्तनथाय तेवो उपाय कर ॥ ६ ॥ ज्यात्मन् परस्वमसि साहसिकः श्रुतार्केर्यज्ञाविनं चिरचतुर्गतिडःखरादिाः।

परयन्नपीह न बिजेषि ततो न तस्य विच्छित्तये च यतसे विपरीतकारी॥९॥ अर्थ॥ इवेञ्चात्मा चारगतीना इःखजाएतोयकोपए धर्मनेविषे तत्परथातुं नथी तेवास्तेपरमञ्चविचारीपणुं देखाडेने हेञ्चात्मातुं छविचारमांहेंमुख्यनो केमके आसंसारमां चिरकाललगें नावीएड्वोजे चारगतिनाडुःखनोसमूइतेहने अतसिदांत रूपनेत्रेंकरी देखतोग्रतोपण बीकपामतोनची वलीतेङःखना समूहनोविह्वेद करवा नेपण उजमालयातुंनयी माटेतुं उपराठांकर्मनुकरनारठो केमके इःखह्वेद कर्मकर वानेबदले डःखवृद्धिकारीकर्मकरेजे॥ ॥ इति शास्त्रोपदेशांतरगतचतुर्गत्याधिकारसमाप्त ञ्प्रथमनः ॥ कुकर्मजालैः कुविकल्पसूत्रजै निंबद्ध्य गाढं नरकान्निञ्चिरं॥ विसारवत्पचयति जीव हे मनः कैवर्त्तकरत्वामिति मारुय विश्वसीः ॥१॥ अर्थ॥ हवेचित्तदमन नामानवनमोदार कहेने तेमांप्रथम आत्माने मनरूपशत्रु नु विश्वासकरतुंनिषेधेने हेजीवतुजने मनरूपी धीवर तेकुविकृष्परूप सूत्रेंगुंच्या ए हवाजे कुकर्मरूपी जालो तेऐकरीगाढोबांधीने नरकरूप अग्नियेंकरी मत्सोनीपरें चि रकाललगें पचावसे जेमधीवरपण मत्सने सूत्रनीजाले गाढोबांधीनेपरे अग्नीमांप चावे तेमइहांपण एउपनयजाणवुं माटेतुंताहरामनरूप धीवरनोविश्वासकरीलनही जेम ते मनरूप धीवरनाबनावेला कुकर्मरूपजालमांपडेनही एवीरीतेंवर्त्तजे ॥ ₹ चेतोऽर्थंये मयि चिरत्नसख प्रसीद किं डॉर्वेकल्पनिकरेैः क्विपसे जवे मां॥ बईों जलिः कुरु कृपां जज सहिकल्पान् मैत्रीं कृतार्थय यतोनरकाहिजेमिए अर्थे ॥ हर्वेआत्माबीहितोषको मनरूपमित्रने विनंतीकरेने हेचिरकालनामित्रतुं चेतहैयामांहे हेवणाकालना सहचारीतुं महाराजपर प्रसादकरीने एमाता विकल्पने समूहेकरीने मुजने आसंसारमां सुंजमावेने तुजनेदुं हाथजोमीने कढुंनुं जेतुंमहारा

Ę

उपर रूपाकरीने ग्रजविकल्पजे धर्म थ्यानलक्त्एा तेहनी जजनाकरी त्यापणीमैत्री स फलकर केमकेहुं हवे नरकना डःखयी बीहुंडुं ॥ २ ॥

स्वर्गापवर्गौं नरकं तथांतर्मुढूर्त्तमात्रेण वशावशं यत् ॥

ददाति जंतोः सततं प्रयत्नाधदां तदंतःकरणं कुरुष्व ॥ ३ ॥

अर्थ॥ इवेआत्माने मनवशकरवाआश्री उपदेशआपेने हेआत्माजे अंतःकरण वशतथा अवशयको जीवने अंतरमुदूर्त्तमात्रमांज स्वर्गमोक्तादिकना सुखप्रतेआपे अनेनरकनी प्राप्तिपणकरावे एटलेमनवशयको जीर्णशेव तथाप्रश्नचंदराजार्षे इत्या दिकनीपरें स्वर्गमोक्तादिकआपे अने मनअवशयको तंडलमत्स्यादिकनीपरें अंतर मुदूर्त्तमात्रमां नरकप्रतेआपे तेमाटेतुंताहरा अंतःकरणनेज सर्वथाप्रकारेंवशकर ॥३॥

मुखाय इःखाय च नैव देवा न चापि कालः सुहदोरयो वा ॥

जवेत्परं मानसमेव जंतोः संसारचक्रश्रमण्णैकहेतु ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ हवेतेहिजकहेने जीवने देवता तथा वर्षा शीत यीष्मादिककाल तथा मित्र शत्रुतेकोइपण सुखदायी तथादुःखदाइनहोय पणएकमन तेहिजजीवने सुख दायी तथा इःखदायीहोय हवे तेमनकहेवुंने तेकहेने संसारसमुइमां च्रमणजे ज न्ममरणादिक तेहनुंएकहेतुने एवचन संझीपंचेंइी आश्रीजाणवुं अन्यया असंझीने मनना अजावें पण संसारमां च्रमण देखायने ॥ ४ ॥

वरां मनो यस्य समाहितं स्यात् किं तस्य कार्यं नियमेर्यमेश्र्य॥

हतं मनो यस्य च डविंकल्पैः किं तस्य कार्यं नियमैर्यमैश्च ॥५॥

अर्थ ॥ जेप्राणीनेपोतानुंमन समाधिवंतढतो वशवर्त्तिहोय तेहने नियमजे ? शोच १ संतोष ३ स्वाध्याय ४ तप ५ देवताप्रणिधानादिक लद्हण तथायमजे प्राणातिपात विरमणादिक पांचमहाव्रत तेह्रनुंसुंकार्यढे केमकेतेतोसर्वे मनवशकर वाना उपायढे अनेजेवारेंते मनवशययुं तेवारेतो ते सर्वग्रण प्रथमजञ्चाव्या अनेजे प्राणीनुं मन माठाविकल्पेंकरी हतप्रहतढे तोतेहने नियमयमें करीने पणसुंचवानुंढे जेमढालीना गलाना स्तनधाव्याची कांइ अर्थतिदि नचाय तेमज मनवश ययाविना यम नियमादिक पण व्यर्थ जाणवा ॥ ५ ॥

दानं श्रुतथ्यानतपोर्चनादि दृष्टा मनोनिग्रहमंतरेण ॥ कषाय चिंताकुलतोश्वितस्य परो हियोगो मनसोवदालं ॥ ६ ॥ चित्तदमनाधिकार.

अर्थ ॥ जीवनेएक मनवशययाविना दानतथा श्रुतसिद्धांतनुंजणनुं तथाथ्यान तथा अर्चनजे देवपूजा आदिशब्दथी प्रासाद देवप्रतिष्ठादिक किया तेसर्वतृथाजा णवी पण तेमोक्दफलनी देनारनथाय केमके कषायजेकोधादिक तेसंबंधीनीचिंता यकी उपनीजे आसाता तेऐकिरीरदित एइनुंजेमन तेइनुंवशवर्त्तिपणुं तेदिजपरम योगढे अने तेहिज अष्टांग योगनुं सर्वस्वढे ॥ ६ ॥

जपो न मुक्तें न तपोहिजेदं न संयमो नापि दमो न मोनं॥

न साधनाद्यं पवनादिकस्य किं लेकमंतःकरणं सुदांतं ॥ ७॥ अर्थ ॥ जीवने नवकारादिकनोजप तथा बाह्य अन्यंतर बेप्रकारनुंतप तयासंयम चारित्र तथा दमजे इंड्यिदमन तथामौनजे वचननुंसंवर तथा पवनादिकनुंसाधन आदिशब्दथी चोरासी योगासनप्रमुख तेकांइम्रुक्तिना देवावाला थायनही तेवारे तुजने किंतुके० मुक्तिप्राप्तिनो शोठपायने तेकहेने जेणेरुडीरीते पोतानुंअंतःकरणजे मनतेह्रने वशकखुं तोतेहिज एकमुक्तिनुं दातार होय ॥ ७ ॥

लब्ध्वापि धर्म सकलं जिनोदितं सुदुर्लजं पोतनिजं विहाय च॥ मनःपिशाचग्रहिलीकृतः पतन् जवांबुधो नायतिदृग्जमो जनः॥ अर्थ ॥ जडके० देश्वज्ञानीप्राणी श्वतिशयेंकरीपामवुंडर्जन प्रवहणसरिखो एइ वोएसर्वज्ञप्रणीत संपूर्णधर्म तेप्रतेपामिने वलीतेइनेग्रांमिने मनरूपिश्चो पिशाचके० नूततेणेघहेलोकखोथको संसारसमुड्मांपमता आयतिदृगके० उत्तरकालनो विचार करतानथी एटलेएमनथी विचारतोजे प्रवइणरूप धर्मनेग्रांमी संसारसमुड्मां जंपापा तखाउंडुं तेथी आगलें हवे महारी शीगति यासे ॥ ० ॥

सुदुर्जयं ही रिपवत्यदोमनो रिपूकरोत्येव च वाक्तननू छपि ॥ त्रिज्तिह्तस्ति िपुजिः करोतु किं पदीजवन् छविंपदा पदे पदे॥ ए॥ छर्थ ॥ हे आत्माछति शय छर्जयए ह वुंजे ताहरुंमन तेपोतें शत्रुपएं आचरे छे छ नेवली वचनतयाकायानेपए शत्रुकरे जे मनछ छथके वचनतया कायानाव्यापारपए छष्टयाय तेकारए माटे मन वचन तथाकाया एत्र ऐ शत्रुयें पराजव्यो ए ह वोतुं पगेंपगें छष्ट विपदा जे नरकादिक ते ह जुं जाजनथा तो थको तुं सुंकेरे एट छेता ह रोकां इचा छ तुं नथी ॥ ए रे चित्त वेरि तव किं नु मया ऽपराई यहुर्गती किएसि मां कुविक छपजा छो।जा नासि मामयमपास्य शिवेस्ति गंता तर्रिकन संति तव वासपदं ह्यसंख्याः १०

Яŝ

अर्थ ॥ हेचित्तरूपवैरी में ताहरोशो अपराधकीधोने केतुंमुजने विकल्परूपजालें बांधीने डर्गतिमांनाखेने जोतुंएमजाएतोहोयजे एजीवमुजनेपरिहरीने मुक्तिजनारने तोपएताहरे वशकरवानास्थानक वलीमहाराशिवाय बीजाअसंख्याता संसारीजी बसुंनथी एटले एकहुंजतोरह्यो तोपए ताहरेबीजानीशीखोटने ॥ १० ॥

पूतिश्रुतिःश्वेव रतोर्विंदूरे कुष्ठीव संपत्सुहज्ञामनर्हः ॥

श्वेपाकवत्सज्ञतिमंदिरेषु नार्हेत्प्रवेदां कुमनोहतोंगी ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ हवेमननाञ्चवशपणाथकी बहुप्रकारना ञ्चवग्रेणयायग्रेतेदेखाडेग्रे छष्ट मनेकरीसंतापपाम्यो एहवोजेप्राणी तेकुंद्याकाननां कुतरानीपरें रतिजेनिवृत्तितेह्थी वेगेलोहोय जेम कीमेंखाधो एहवोजे कुतरोते किहांपणक्रणमात्र रतिपामेनहीतेम कुविकब्पचित्तनोधणी तेपणरतिरहितहोय वलीकोढीञ्चानीपरें संपदारूपणीजे सुदृ शात्रोरूप उत्तमकन्याञ्चो तेहेनेवरवाञ्चयोग्यहोय जेमकोढीञ्चानेकोइपण उत्तमक न्याघरवावांग्रेनही तेमदुष्टचित्तवंतप्राणीने सौजाग्यादिक कोइपणसंपदाञ्चाश्वयेनही वलीसदूगतिरूपजेमंदिर तेहनेविषे श्वपाकके० चंडालनीपरें प्रवेशकरवानपामे॥ १

तपोजपाद्याः स्वफलाय धर्मा न डर्विकल्पेर्हतचेतसः स्युः ॥ तत्खाद्यपेयैः सुजृतेपि गेहे क्रुधातृषाज्यां प्रियते स्वदोषात्॥१ ॥ अर्थ ॥ माटेविकल्पेकरी जेहतुंचित्तपीडाएंजे एहवाप्राणीने तपजपप्रमुखजेधर्म तेपोतपोताना फलनुंदेवावालोनथाय अने कुविकल्पचित्तनोधणी धर्मक्रियाकरतोथ कोपण मोरूफलपामेनही तेवपरद्वष्ठांतकहेजे जेमकोइ अपुष्यवंतप्राणी खानपाना दिकें जरेलाधरमांपण पोताना रूपणताद्यादिकदोषथी छखतृष्णायेंपीडाय तेमइहां पण कुविकल्पचित्तवंतप्राणीते जतेधर्मेंपण परजवेंसीदाय ॥ १ ३ ॥

छाकुब्रसाथ्यं मनसो वद्दीकृतात् परं च पुष्यं न तु यस्य तध्दां ॥ स वंचितः पुण्यचयेस्तङक्रवेेः फलैश्च हीही इतकः करोतु किं॥ १ ३॥ अर्थ ॥ एकमनना वशकरवाथी बीखुंसर्वपुष्यते सुखेंसाथ्यढे अनेते मन जेहनेव शनथी तेप्राणी पुष्यनेसमूहें तथातेपुष्यजनितफलेंकरीने वांढितढे तेफोकटढे एट जेमनवशविना पुष्यनी तथापुष्यजन्यक फलनी फोकट आशाराखेढे तेमाटे हीही इतिखेरे एबापडो प्राणी सुंकरे पढे तेहने एके गतिनथी ॥ १३ ॥

चित्तदमनाधिकार.

उप्रकारणं यस्य सुर्छार्वेकर्टपेईतं मनः शास्त्रविदोपि नित्यं॥ घोरैरघेर्निश्चितनारकायुर्मृत्यो प्रयाता नरके स नूनं ॥ १४॥ अर्थ ॥ यद्यपिसिद्धांतनोत्त्रणनारत्ने तथापिजेइतुंमन अकारणके० उपसर्गादि ककारणविना पण नित्यें अतिशयेंकुविकब्पेंकरी पीमितने तेपुरुषमहारौड्पापेंकरीने दृढकीधुंने नरकायुजेणे एइवुंथकोते सर्वथा मुआपत्नी नरकमांजजज्ञो ॥ १४॥

योगस्य हेतुर्मनसः समाधिः परं निदानं तपसश्च योगः॥ तपश्च मूलं शिवरार्मवल्या मनःसमाधिं जज तत् कयंचित्॥१५॥ अर्थ ॥ मननीसमाधिजे एकायता तेहिज योगनुंहेतुने अनेवलीयोगजे अष्टांग लक्षण तेतपनुंपरम जत्रुष्टकारणने अनेतेतपतो मोक्सुखरूपणी वेलीनुंमूलने मा टेहेआत्मा जेतेजपाय करीने मननीसमाधिनेआदर केमके मननीसमाधिषी योग अने योगणी तप तथा तपथीमोक्सुख एमपरंपरायें सर्वसिद्धिपामे ॥ १५ ॥

स्वाध्याययोगैश्वरणक्रियासु व्यापारणैर्घादराजावनाजिः ॥

सुधीस्त्रियोगी सदसत्प्रदत्तिः फलोपयोगैश्च मनो निरुंध्यात् ॥१ ६॥ अर्थ ॥ इवेमनसमाधिना जपायकहेढे खाध्यायजे जिनागमतेहनायोगनुं वहेनुं आंबिलादिक तपविशेष तेणेकरीने तथाचारित्रसंबंधीनी क्रियानेविषे प्रवर्त्तवेकरी वलीअनित्यादिक बारजावनायेंकरीने वली त्रियोगीजे मन वचन कायानायोग ते होनी सदसद्प्रदृत्तिके० जलोअने जूंडोव्यापार तेहना फलनुं जपयोगजे विचारणा एटलेत्रियोगना ग्रजव्यापारनो शो फलढे एहवीविचारणा अने अग्रजव्यापारनोशो फलढे एहवाजे जपयोगदेवा इत्यादिक प्रकारेंकरी मननेवशकरनुं ॥ १६ ॥

> नावनापरिणामेषु सिंहेष्विव मनोवने ॥ सदा जाग्रत्सु दुर्ध्यानसूकरा न विदांव्यपि ॥१९॥

यर्थ ॥ इवेवली एसर्वप्रकारमां पण नावनापरिणामने विशेषदेखाडेढे मनरूपी आवननेविषे सिंहसरिखाजे नावनाना परिणाम तेमांसर्वदासावधानरहेचके डर्थ्या नजे आर्तरोइध्यान तेरूपजे स्वअरोते प्रवेशपणकरीशकेनही तोतिहां तेसूअरो वासकरवानेतो सर्वधानजपामे ॥ १९ ॥ इति श्रीअध्यात्मकल्पडुमे चित्तदमनानि धानो नाम नवमोअधिकार संपूर्ण थयो. ॥ ए॥ ख्य सामान्यतो वैराग्यधर्मीपदेशः ॥ किं जीव माद्यसि हसस्य यमीहसेऽर्थान् कामांश्च खेलसि तथा कुतुकैरशंकः ॥ चिह्ति प्सु घेारनरकावटकोटरे ला मञ्यापतद्ध्वघु विजावय मृत्युरद्वः॥१॥

अर्थ ॥ इवेसामान्यथी वैरागोपदेशनामा दसमोखधिकारकहेने तेमांप्रथमजीव ने मरणसंबंधीनयदेखाडेने हेजीवतुं मदशानोकरेने तथासुंहरोने वली अर्थजेसुव एरूपादिक तेहनेसुंवांनेने तथावली निःशंकन्नतो कौतुकेकरीने कामजे शब्दादिक विषय तेप्रतेसुंरमेने तुजनेतो जयंकर नरकरूपजे खाइ तेमांनाखवावांन्नतो एवो मू त्युरूपजे राक्ट्स तेउतावद्धुं तारेसन्मुखआवतुं सांजलीने निःशंकरहिशनही॥१॥

आलंबनं तव लवादिकुठारघाताश्विंदंति जीविततरुं न

हि यावदात्मन् ॥ तावद्यतस्व परिणामहिताय तस्मि

न् जिन्ने हि कः कच कयं जविता स्वतंत्रः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ हवेआण्डंवियमानगते जीवनेधर्मकरदुं उपदेशेग्रे हेआत्माताहरो आ लंबनआधारजूत एहवोजे जीवितव्यरूपत्वक्त तेप्रते जवादिकजे जव जेश क्रण घ डी मुद्दर्तप्रमुखकालमान तेरूपीया कुहामानाघाव जाहांलगेंग्रेदेनही तेहचीपहेलां ज परिणामहितजे निदानहितकारी तपसंयमादिक तेहनेआर्थें उद्यमकर जेय कीताहरो जीवतव्यरूप त्रक्तग्रेदापि फरीतेहने नवपझवकरवाने किहांक कोइकप्र कारें पण मंत्र प्रायथासे जेलेकरीतुं जीवतव्यरूपतरुने नवपझवकरीस एटजेक् णेक्रणे जीवतव्यरूप तृक्तग्रेदातुं जीवतव्यरूपतरुने नवपझवकरीस एटजेक् परिष्रणे जीवतव्यरूप तृक्तग्रेदातुं जीवतव्यरूपतरुने नवपझवकरी कोइकप्र कारें पण मंत्र प्रायथासे जेलेकरीतुं जीवतव्यरूपतरुने नवपझवकरी काइकप्र कारें पण मंत्र प्रायथासे जेलेकरीतुं जीवतव्यरूपतरुने नवपझवकरी काइकप्र कारें पण मंत्र वित्तव्यरूप तृक्तग्रेदातुं जायग्रे तेग्रेदाइगयापग्रि फरीसज्जकरवातु कोइत्रपा यनची तेमाटे आत्महितनेविषे तत्परचातुं एहिजश्रेष्ठ उपायग्रे ॥ २ ॥

· लमेव मोग्धा मतिमान् लमात्मन्नेष्टाप्यनेष्टा सुखदुःखयोरुलं ॥

दाता च जोका च तयोरूलमेव तच्चेष्टसे किं न ययाहिताति ॥३॥ अर्थ ॥ हवेसर्वकरणीते आत्मानेआधीनढे एहवुंकहिने विशेषेंप्रेरेढे हेआत्मातुं मोग्धाके० मूढतासहितढो अने मतिमान्के० झातापणतुंढो वलीसुखवुं वांढक अ नेडःखवुंअवांढकपणतुंढो तथासुखअनेडःखवुंदाता अनेजोक्तापणतुंजढो केमके सु खडःखते सकतकर्मचीजयायढे यडकं श्रीउत्तराध्ययने अप्पानईवेअरणि अप्पामे कूम्सामली अप्पाकामड्याधेणुं अप्पामेनंदणंवणं अप्पाकत्ताविकत्ताय इत्यादिक माटे जेरीतें ताहरीआत्माने हितनीपजे तेमजकांनथीकरतो ॥ ३ ॥ वेराग्योपदे**रा।धिकार**

कस्ते निरंजन चिरं जनरंजनेन धीमन् गणोस्ति परमार्थहरोति पर्य ॥ तं रंजयाद्य चरितैर्विदादैर्जवाब्धो यरुवां पतंतमबलं परिपातुमीष्टे॥४॥

अर्थ॥ हवेलोकनेरीजवतोयको आत्मापोतानुं हितकांइकरतोनथी तैआश्रयीज पदेशेढे हेनिरंजन हेनिरलेपआत्मा हेबुदिवंत हेहिताहितविवेकनाजाण चिरकाल जावजीवलगें लोकनुंरीजववुं एटलेमजीनवस्त्र धारणकरी बाह्यक्रिया देखामीने ज्ञू न्यचिन्तें वामेवामें जपदेशआपीने लोकनुंमनरीजववुं तेथीतुजने शोग्रएढे एटलुंत खदृष्टे विचारी परमार्थदृष्टीयेंजोतां लोकरीजव्याथी आत्माने अर्थसिदिकांइनथी तेमाटे लोकरंजनत्यजीने जतावलोथयी विशदके० निर्मलजे चारित्र तपसंयमादिक आचरण तेणेकरीने श्रीवीतराग तथातेमनाजाषेलाधर्मनेरीजव जेथकीतुजने आ बलंके० परजवें संबलेंरहित संसारसमुइमांपडताथकां राखवानेसमर्थयाय केमके

संसारमांपडता एकधर्मज्ञाधार आपरो पणलोककोइ आधारआपरोनही ॥४॥

विद्यानहं सकललब्धिरहं नृपोहं दाताहमजुतगुणोहमहं गरीयान्॥ इत्याद्यहंकृतिवद्यात् परितोषमेषि नो वेत्सि किं परजवे लघुतां जवित्री॥ अर्थ ॥ हवेअहंकारनिवारवा उपदेशेढे हेआत्मा ढुंपंभितढुं ढुंसर्वजक्कीये स हितढुं ढुंराजाडुं ढुंदातारढुं ढुंअडुतगुणवंतडुं तथाढुंमहोटोडुं इत्यादिकजे पोता नामनकब्पित अहंकार तेहनावशयकी तुं परितोषके० हर्षपामेढे पणजन्मांतरें जाविनी एहवीतेपदार्थानी लघुताप्रते कांविचारतोनथी जेजेपदार्थनेतुं आजवमां ढुंपदेकरेढे तेतेपदार्थनीतुं परजवेंहीनतापामिस इतिजावः॥यडकं योगशास्त्रे॥जाति लाजकुजैर्थ्य बलरूपतपःश्रुतैः ॥ कुर्वन् मदं पुनस्तानि हीनानि जज्यते जन इति॥५॥

वेल्सि स्वरूपफलसाधनबाधनानि धर्मस्य तं प्रज्ञवसि

रचवराश्च कर्त्तु॥तस्मिन् यतस्व मतिमन्नधुनेत्त्यमुत्र किंचित्त्वया हि नहि सेत्स्यति जोत्स्यते वा ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेश्चात्माने इहनवेंधर्मकरवानी प्रेरणाकरेजे हेबुदिवंतप्राणी तुंधर्मतुं स्वरूपजे क्तांत्यादिकदशविध लक्षण तथाधर्मतुंफलजे मोक्तादिक तथाधर्मतुंसाधन जे मनुष्यजन्म आर्यकेत्रादिक तथाधर्मना बाधकजे कुजन्म कुक्तेत्र प्रमाद मिष्या त्व इत्यादिकसर्वप्रकारने वेत्सिके० जाणेजे अनेवली स्ववशके० पोतानेवर्शेयको ध मेकरवाने समर्थपणजो पणतिर्थेच नारकीनीपरें परवश तथाधर्मकरवाने असमर्थ

89

नथी तेमाटे आजवमांज धर्मनेविषे जयमकर केमकेफरी परजवेंते कांइ सीजेनही तथा तुजने तेवा धर्मनुं फरीकांइ जाएपणुपण नहीथाज्ञें माटे ॥ ६ ॥ धर्मस्यावसरोस्ति पुजलपरावर्त्तैरनंतैस्तथा यातः संप्रति जीव हे प्रस हतो दुःखान्यनंतान्ययम् ॥ स्वटपाहः पुनरेष ऊर्लजतमश्चास्मिन् य तरवाईतो धर्म कर्तुमिमं विना हि नहि ते इःखद्तयः काईंचित् ॥ ९॥ खर्थ ॥ हवेखात्माने धर्मनुंखवसरजणावेने हेजीवखनंताइःख सहित तुजने अनंते पुजलपरावर्नें संसारमांजटकतां संप्रतिके ० हमणा आजवमां धर्म करवानुं अव सरञाव्योने अनंत उत्सर्षिणी अने अवसर्षिणी प्रमाण एकपुजलपरावर्त्त याय ते इनुंखरूप यंथांतरथीजाणवुं एधर्मनुंखवसरते थोडाजदिवसलगणढे फरीपामवुं घ एंडर्लनने तेमाटेएखवसरें श्रीजिनोक्तधर्म करवाने उद्यमकर केमके एजिनोक्तधर्म विना ताहरे किवारेंपण जन्ममरणादिकना डःखनो क्तयथवानुंनथी माटेजोडःख नुं अंतकरवाने वांग्रतोदोयतो एखवसर पामिने धर्मकरवाने तत्परथा ॥ ७ ॥ गुणस्तुतिर्वांग्सि निर्गुणोपि सुखप्रतिष्ठादि विनापि पुण्यं ॥ अष्टांगयोगं च विनापि सिदिर्वातृलता कापि न वा तवालन् ॥ तथा अर्थ ॥ हवेअयुक्तवांढकपणाथी जीवनुंबाहुजापणुंदेखाहेढे हेआत्मातुंज्ञानदर्शन चारित्रादिकगुणेरहितथकोपण गुणसुतिजे पौतानीप्रशंसा लोकनामुखयी कीर्त्तिना वरणनने वांग्रेग्ने तथापुख्यविनापण सुखने तथा प्रतिष्ठाके गौरवपणानेवांग्रेग्ने व ली अष्टांगजेयोग यम नियम आलन प्राणायाम प्रखाहार धारणा थ्यान लमाधि एञ्चावयोगविना पण सिदिछएकमेक्त्यलक्त्ण सिदनाञ्चावयुण अथवा सिदिते अष्टमहासिदि जविमा वशिता ईशिता प्राकाम्य महिमा अणिमा यलकामावसायि ता प्राप्ति तेप्रतेंतुंवांग्रेग्ने माटेहेञात्मा एताहरो बाहुलापणुंते कोइञ्चपूर्वन्वुंजदेखा यने केमके कारणनी सामग्रीविनाज कार्य नीपजाववानी अनिलाषाकरेने ॥ पदे पदे जीव पराजिजूतीः पर्ययन् किमीर्थ्यस्यधमः परेज्यः ॥ अपुण्यमाल्मानमवेषि किंन तनोषि किंवान हि पुण्यमेव ॥ण्ग अर्थ ॥ हवेबीजानाकरेला अपमानथी जीवईर्षाकरेने तेआश्रीउपदेशकरेने हे जीवतुं पुष्परहितपणायी अधमके० नीचअवस्थापाम्योयकोपण पगेंपगें बीजानी करेली जे अजिनूतिके० अपमान आकोशादिकते देखीने परेन्यःके० तेलोकउपरें सुं ईर्षांके० कोधकरेंजे पणपोताना आत्मानेज पुख्यहीन केमजाणतोनथी जेपुखर

हितहोय तेहनेतो पगेंपगें पराजवयाय तेमांसुं महोटीवातने एमकांविचारतोनथी अ अवानिश्चेंथी पुण्यजकेमकरतोन्थी केजेथकी कोइपराजवनथाय ॥ ए ॥

किमर्दयनिर्दयमंगिनो लघून् विचेष्टसे कर्मसु हि प्रमोदतः ॥

यदेकशोण्यन्यकृतार्दनः सहत्यनंतशोण्यंग्ययमर्दनं जवे ॥ १ ण ॥ अर्थ ॥ इवेआत्माप्रतें परनेपीडानुं फलकहेने हेआत्मातुं निर्दयपणेकरी ताहरा यकी लघुके० निर्वल एहवाजे अंगीके० प्राणी तेहनेपीडतोयको तुं प्रमोदतःके० हर्षेंकरी पापकमीविषें सुंप्रवर्त्तेने केमके एकवारपण जेप्राणियें अन्यजीवने पीडाज पजावीहोय तेप्राणीअनंतिवार संसारमांपीडासहे यडकं तिव्वयरेजपर्ठसे सयगुणि उसयसहरसकोडिग्रणा ॥ कोडाकोडिग्रणोवाहुझ विवागो बहुतरो वा इति ॥ १ ०॥ यथा सर्पमुखरूथोपि जेको जंतूनि जन्होयेत् ॥

तथा मृत्युमुखरथोपि किमात्मन्नाईसेंऽगिनः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ इवेते उपर दृष्टांतकहेने जेम जेकजे मेडको तेसर्पनामुखमां रह्यो अर्ध्वमति यको पण जंतुजेन्हाना कुइजीवतेप्रतेंखाय तेम हेआत्मा तुंपणमृत्युना मुखमां र ह्योथको पण अन्यप्राणीओने सुंपीडाआपेने ॥ ११ ॥

ञ्जात्मानमटपैरिह वंचयित्वा प्रकटिपतैर्वा तनुचित्तसौख्यैः॥ जवाधमे किं जन सागराणि सोढासि ही नारकङःखराइनि ॥ १९॥

अर्थ ॥ हवेश्हनवें हिंसाजनित अल्पमात्रसुखयी परनवें अनंताइःख सहेवा पडरो तेकहेने हेजन हेसंसारीप्राणी प्रकल्पितके॰ तेंताहरी कल्पनामात्रयी इःख नेज सुखकरीमान्या तेपणवली अल्प तुड्च रूण स्थायी एहवाजे मनवचनकाया संबंधीसुख तेणेकरी इहनवें तुंग्गाये। बतो हाहाइतिखेदे नवजे चारगतिरूपसंसार तेमां अधमजे नरकतेहनेविषें घणाक सागरोपमसुधी नारकीनाजेइःखसमूह तेसहे वाने संतत्परथायने ए विषय सुखते इःखजने पणकल्पनामात्रथी एनेजीवसुख करीमानेने ॥१ शा यदाह नर्नृहरिः ॥ तृषा द्युष्पत्यास्ये पिबति सलिजं साइ सुरनि कुधार्त. सन् शालीन् कवलयति मांसाज्यकवलान् ॥ प्रदीप्ते रागायौ सुदढतरमा श्रिष्थति वधूं प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः ॥ १ ॥ उरस्रकाकिण्युदबिंदुकाम्त्र वणिक्त्रयीद्याकटनिक्तुकाद्येः ॥

3

ञ्प्रध्यात्मकल्पड्म.

अर्थ ॥ वजीतेहिजअर्थ उत्तराध्ययनसूत्रना दृष्टांतेकरी इढकरेने हेआत्मातुं प्र मादजे मद्यादिकपांच तेनावशयकी मनुष्यञ्चवतारहारीने पर्वपरनवेंडःखीओयको उरच्रजेबोकडो कागिणी उदकबिंड आम्रवातकीराजा वणिकत्रयीजे त्रणव्यापारी शाकटजे गामावादक निक्नुकजेरांक इत्यादिकोनाहष्टांतेतुंपण घणुंशोचनाकरीस ॥१ ३ इहांसंद्रेपथी उरचादिकना दृष्टांतलिखेने तेमांप्रथम उरचनुंदृष्टांतकहेने जेम कोइगाममां कोइकनाघरमध्ये एकबोकडोहतो तेकोइक प्राहुणोद्यावसें तेवारें ए इनुंमांस काममांआवरो एमचिंतवीने तेयरनामाएलो तेबोकडाने अन्नादिकेंपोषेने अनुकमेंते बोकडो घणुपुष्टशारोययो इवेतेइनेतेइवोदेखीने एकवाढडो मनमांखेद पाम्योथको कोधधरीने दोहतांज्ञेषरद्युंजे पोतानीमातानुंड्य तेहनेधावेनही तेवारें मातायें कोधनुंकारणपुत्रेथके कहेवालागो हेमाताजूत्र्याने आबोकडो यथेष्ट अ न्नादिकखायने तेथीकहेवो पुष्टथइरह्योने एहनेपुत्रनीपरेंपालेने नानाप्रकारना आ लंकारपहेरावेडे अनेमुजनेतो पोतानीमातानुंड्ध तेपणकोइ पीवादेतोनथी तथासुका तृणतेपण वखतजपर पूरामलतानथी एइवुंसांनली मातायेंकह्यं आजरचिणाई पया जाइंचरसिनंदिउ॥सुक्रतिऐोइलांवेहि एयं दीहाउलर्सकणं ! १॥हेवत्स जेमरोगीउ मरवापडचोहोय तेहनेजेकांइ खावामांगे तेत्रापे तथाफुजनीमाला प्रमुखपहेरावे तेम एबोकडानेपण वध्यमंमननीपरें ग्रंगारादिककरेळे पोषेळे पणकोइप्राहुणाञ्चावसे तेवा रेपरीक्ताजणासे तेसांजली वत्सबानोरह्यो पर्वकोइकदिवर्शे तेइनेवरेंप्राहुणाखाव्या तेवारेंतेबोकडानेबांधी उंचूकरी घणुतडफडतो जीनकाढतो दीनखरे छारडतो मृत्युप माड्यो तेहनामांसने खंडोखंडकरी पचावीने प्राहुणासहितसकुटुंबें घरधणिये नक छकीधुं तेवृत्तांतदेखीने वाढडो जयपाम्योथको छख्योतरम्योथकोपण मातानुंडधपीये नही तेवारेंमातायें पुनेषके वत्सबोव्यो हेमातामें वोकडानीएहवी जूंमीअवस्थादीनी तेथीमुजने धाववानीपण वांग्राथातिनथी एमइहांपणएउपनय जोमवो जेमतेबोक डोजीवतव्यनीवांग्रायें निर्जयपणे यथेष्टपुष्टचातुंचको प्राहुणात्र्यावे मृत्युपाम्यो तेमहेश्वात्मातुंपण प्रमादेपुष्टथको यथाइह्वायेंविचरेने पणमृत्युत्वावेथके मनुष्य जन्मद्रारीनरकादिकना इःखपामि घणुशोचपामीस.

हवेबीज़ुंकांगणीनुंदृष्ठांतकहेने जेमकोइकरांक परदेशेजइ मज़ूरीकरीने एकहजार सोनैया कमायो पन्नेपोतानादेश तरफचाव्यो तेवारेरस्तामांखरचीसारुं एकरूपकवटा वी तेहनी (००) कागणीसाथेराखी बीजासर्वइव्यनी वांसलीनरी सीवीनेराखी एक दिवसें किहांकमार्गमां विश्रामस्यानकें एककांगणीवीसरी ते सथवारासाथें आगलें जातांसांजरी तेवारेंगंकेविचाखुंजे एककांगणीनीखोटे रखेनेबीछंरूपक वटावचुंपडे इमचिंतवी सथवारेामूकी इव्यनीवांसजी किद्दांकगोपवीने तेकांगणीखेवा पाढोव व्यो आवीनेजूएढेतो कांगणीकोइकलइगयुं अनेपाढेाफरीनेजूएतो वांसजीपण को इकखेइगयुं पढेनिराशययी अतोच्रष्ट ततोच्रष्टथको घणुशोच करवाजागो जेमतेरां इकखेइगयुं पढेनिराशययी अतोच्रष्ट ततोच्रष्टथको घणुशोच करवाजागो जेमतेरां कें एककांगणीनाजोजयी दजारसोनेयानीवांसजी अनेतेकांगणी बेन्हे खोइने घ णाशोचनुंजाजनययो तेमआत्मापणपूर्वे अप्राप्तकामजोगथको बद्धमूलचारित्रपा मिने वलतुंकांगणीतुब्य कामजोगनीलालसायें चारित्रत्यजीने कामजोगगवेषतोथको कामजोगपणनपामें अनेचारित्रपणनपामे एमजजयच्रष्टथयोथको तेरांकनीपरें घ णुशोचपांमे इदां कांगणी ते एक मासानुं चोथोजाग अथवावीसकोमी अथवा एकरूपेयानुं (७०) मुंजागजाणवो.

हवेत्रीईं उदकबिंडनुंदृष्टांतकहेबे कोइकवनमां कोइतृषातुरने कोइकदेवतायें क रुणाकरीने क्वीरसमुइनेकांठेजइमुक्यो तेमूर्खेंतिहांपाणीपीधुंनही अनेदेवतानेकहुुजे हेस्वामि महारागामनीसीममांकुउंबे तेहनेउपकांठे फाजनेअयेलंबमान एकजलबिं डुबे तेखरीपडरो माटेमुजनेतिहांमूकोतो बिंडुओपीउं तेसांजली तेहनेमूर्खनिर्जाग्य जाणी देवतायेंतिहांमूक्यो देवतापोताने स्थानकेंगयो पढेतेबिंडुओपण खरीपडयो तेदेखीतेमूर्ख उजयच्चष्ययो यको शोचकरवालागो तेमइहांतृषातुरतेजीवक्दीरसमु

इतेचारित्र देवतातेसकर जलविंड आरूप कामनोगनासुख एम उपनयजाएवुं. हवेचोष्ठुं आग्रदृष्टांतकहेने कोइकराजाने आंवानाफलघणुज वहनहता एकदिव हों घणाआग्रफलनाखावायकी अजीर्धविश्वचिकाययो पनेवैद्येखनेक आषधेंकरी ध णीकप्टेनिरोगीकीधो वलतुंवैद्येकद्युं हवेजोआध्रफलखासोतो मरणपामसो एमकही सर्वथाव खो राजायेंपणपोतानादेशमांथी आंवानासर्ववननेदावीनाख्या हवेकोइक दिवसेराजा आहेडेनिकव्यो तिहांडप्टअर्थे अपहखां एहवाप्रधान अनेराजाबेहुजण पणुदूरपंथें किहांकअटवीमांजइपहोता सैन्यसर्वपान्नलरद्युं राजाप्रधान बन्नेजण अ भयीजतरी आंवानीन्नायायेंबेठा तेत्रांवानीचेफलपम्घादेखी राजानेपणादिवसें आ जिलापथयो प्रधानेयणुवाखो तोराणतेफलखांधु एटजेतत्काल मृत्युअवस्थातुव्यथ योथको घणुशोचवालागो जेमतेराजा आचनास्वार्देजुव्थ्योयको प्रधानेवासोथकोप ए ते फलखाइ राजा जीव्यत्वनी आश्वातजीने मरतांमहाशोकपान्यो तेमझ्हांपण विषयजुब्धकजीव विषयने परवा श्वको जिनाझाअणमानतो कामनोगासक्तथयी संयम अने मनुष्यजन्म बेहुहारीने पन्ने पश्चात्ताप करहो. हवेपांचमुंवणिकतुं दृष्टांतकहेग्रे एकवणिकनेत्रणपुत्रहता तेत्रणेनेहजार हजार सौनैया थापणञ्चापीनेकसुंजे एटलाइव्येंतमेव्यापारकरीने उप्रविधि उपरेंञ्यावतुं हवे तेत्रणेजण नीमे नीमे मूलसेइने जूरेज़ूरेनगरेंचाव्या तेमांपहेलोज्ञाइसर्वव्यसनरहित उपल्पव्ययकरतो थको व्यापारकरवालागोतेमां घणोकमाणुं उपनेबीजो हजारसौने याकायमराखीने लाजञ्चावेतेवावरे एरीतेंते मूलइव्यनेराखीरसुं उपनेत्रीजेव्यापारकी धुंनही ठ्यनेवेश्यादिकनाव्यसनमां सर्वमूलइव्यवावरीनाख्युं ठ्यनुकमेंतेत्रणेजण पो तानाधरेंज्याव्या तेहोनुंव्यतिकरजाणीने त्रीजापुत्रनें मूलनीमेंपणनराख्योमाटे फि तायें घरथीबारकामीमूक्यो लोकमांनिंदनिकथयो दासपणुंपाम्यो जेमतेत्रीजोपुत्र नीमेंमूलनेहारीने निंदाञ्चवस्थापाम्यो तेमञ्चात्माविषयझुब्धथको पूर्वजन्मपुल्यरूप मूल नीमेंहारीने जन्मांतरेंडर्गतिना डःखपाम्योयको घणुंशोचपामेग्ने.

द्वेवहो शाकटंचुं दृष्टांतकदेवे जेमकोइक गामानुवाहक सम विषम मार्गजाएतो थको पए विषममार्गे गामानेलेइगयो पत्नेधुलरूजांगेथके शोचकरवामांमधुं तेमइ हांपए जीवपुख्यपापादिक मार्गनेजाएतोथको पए प्रमादना परवशपएाथकी कु मार्गे चालतो कुगतीमांपमसे तेवारेंशोच पामसे.

हवेसातमुं निक्ठुकनुं दृष्टांतकहेने कोइकगामडीञ्चानो रहेवासी पुरुषदालिईंपरा जव्योथको देशांतरेंजइ जिद्धामांगे पणपुप्परहितपणायकी जिद्धानपाम्यो तेवारे फरीपोतानां घरतरफचालवानिकव्यो मार्गमांकोइकगामे पाण पाटकपाझे एकदेवलने तेमां रात्रेजइसुतो तेदेवलमांची एकसिद्धचित्रेलुंकामकुंजदाथमांलेइ निकव्यो पनेएक बाजुयें उन्नेरिही घडानेकहेवालागो हेकुंनइहांमंदिरकर एटलेतिहां मंदिरथयुं एम तिहांशव्यादिक नोगसामग्रीसर्वकीधी पन्नेस्वीसहित रात्रेनोगनोगवी प्रजातेंसर्व सं हर्षुं तेदेखीने जिट्ठुकेचिंतव्युं जेद्याजलगणाढुं फोकट प्रथ्वीमांजस्था हवेजोढुंएसि इत्युं तेदेखीने जिट्ठुकेचिंतव्युं जेद्याजलगणाढुं फोकट प्रथ्वीमांजस्था हवेजोढुंएसि इत्युं तेदेखीने जिट्ठुकेचिंतव्युं जेद्याजलगणाढुं फोकट प्रथ्वीमांजस्था हवेजोढुंएसि इनसेत्रेवुतो माहरीसर्वत्रारयाफले एमचिंतवीते पाणनीसेवाकरी एकदिवझेते पाणप्र सन्नथइबोल्यो जेतुंसुंमागेने तेवारेजिट्ठंबोव्युं जेताहरापशायधीढुंपण एहवोनोगणासुं पाणेकद्युंतुजने गमेतो एकुंजलेइजा व्यनेगमेतो एकुंजप्रतिष्टानी विद्यालेइजा ते वारे जिङ्गुकबोल्यो जेहेस्वामीविद्यातो कष्टकरीसाधुं तेवारेफले तेमाटेविद्यासिद्धकुं जने तेहिजमने व्यापो तोकष्टकिधाविनाज नोगसिदिपासु पन्नेतेपाणेघनोत्राप्यो द् वेतेगामडीत्रोघटलेइने घरेंजाव्यो घटनेप्रतापें उज्वलघरनीपजावी विविधनोगसामग्री मेलवी पोतानासर्वकुटुंबसहित मनोवांग्रित विलास जोगववालागो पोताना सज्ज नादिकने खेतीप्रमुख द्याजीविकाना उपाय सर्वमूकाव्या ढोरप्रमुखचतुष्पद सर्वजे

डोमूक्या एकदिवज्ञे ते यामीणमद्यपाने ढाकटोषड्ने मनमांहर्षधरतो तेविद्याकुंन खांनाउपरखेइने नाचवालागो मद्यपानना परवज्ञपणाषकी घटपडीने नांगीगयो तेथी विद्यायें करेलुं वैनव सर्वमटीगयो पढेयामीणकुटुंबसहित छाजीविकायें इःखीथयोषको शोचकरवालागोके हाहाइतिखेदे जोमेघटसिदिनी विद्यालीधीहती तोसुखीथात एरीते जेमतेयामिकजिक्तु परिछटनकरतां देववज्ञात् कामकुंनपामिने वलीमद्यपाननी परवज्ञतापकी कुंननागीनाखीने विद्यानुज्ञोचपाम्यु तेमएजीवपण इर्जन जिनधर्म पामिने प्रमादपरवज्ञताथी धर्महारीने कुगतीयेंगयोषको धर्मसा मयीविना शोचपामे एसातदृष्टांतना संबंधजाणवा तेमांपहेलापांचदृष्ठांततो श्रीष्ठ तराध्ययनना सातमां छध्ययनथी तथाढठोदृष्टांत पांचमांछध्ययनथी छने सा तमोदृष्टांत ढठाछध्ययनथी लख्युंढे श्लोकमां छाद्यशब्दकह्योढे तेथीबीजापण द रिडि्कुटुंबादिक एहवादृष्टांत घणाढे तेयंथांतरथी जाणवा.

पतंगर्जुंगेणखगाहिमीनदिपदिपारित्रमुखाः त्रमादैः ॥ शोच्या

यथा स्युर्मृतिबंधङः खेश्चिरायजावी लमपीति जंतो ॥ १४॥

अथी।हवेवली मंथकार प्रमादीजीवने दृष्टांतेकरी जावीइःखदेखाडेठे हेआत्मा जेम पतंगीयो तथा जमरो मृग तथा खगके० पारेवाप्रमुखपद्दी तथासर्पअने माठलो तथा हस्तिव्याघ्रड्खादिक सर्वजीवते प्रमादजे शब्दादिकविषय तेहनावशयकी मरणसंबं धीइःखेकरीने शोचनीयथायठे तेमांपतंगते नेत्रनाविषयथी दोपशिखायेंमोद्योयको मृत्युपामेठे अने जमरोघाणेंडियनाविषयथठी कमलमध्येम्रुझाइमरेठे मृगशब्दविष यथी नादनुमोद्यो पाराधीथकी मरणपामेठे पद्तीशालप्रमुखकणनेलोजें रसनेंडियना वशयकी जालमांपमेठे सर्पकाननाविषयथी महुअरनानादनोमोद्यो बंधनपामेठे अने मत्स बडिशनामांसनीलालचें रसनेंडियना वशयीमरेठे हस्तिहस्तणीनामोहथी स्प इनिंडयिनावशे बंधनमरणादिपामेठे व्याघपिंजरामांरहेला बोकडानामांसनीला लचें रसनेंडियनावशेमृत्यु बंधनादिकपामेठे इत्यादिकबीजापण चित्राप्रमुखना दृ ष्टांतजाणवा तेमाटेहेआत्मा तुंपणतेपतंगादिकनीपरें प्रमादनावशयकी चिरकालल गें शोचनीय थाइस. ॥ १४॥

पुरापि पांपैः पतितोसि इःखरारोौ पुनर्मूढ करोषि तानि॥ मज न्महापंकिलवारिपूरे शिला निजे मूर्भि गले च धत्से ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ हवेप्रमादनुं पापरूपपणुंदेखाडी तेहनोपरिहारकरेजे हेमूर्खतुंपूर्वेपण पा अध्यात्मकल्पडुम,

पेकरीनेजडःखसमूहमांपडघोडे अनेफरीपण तेहिजपापनेकरेडे तेथीतुंघणाकदिवस हितजलनापूरमां बुड्तोथको पोतानामस्तकनेविषे अने गलानेविषे शिलाधरेडे॥१५

पुनःपुनर्जीव तवोपदिइयते बिजेषि इःखात् सुखमीहसे चेत् ॥ कुरुष्व तत्किंचन येन वांग्रितं जवेत्तवास्तेऽवसरायमेव यत् ॥१६॥ अर्थ ॥ इवेजीवने प्रमादपरिहारनुएह्जिखवसरग्ने तेकहेग्रे हेजीवतुजने फरीफ रीने जपदेशकढुंढुं केजोतुंइःखयीबीहेग्रे खनेसुखनेवांग्रेग्रे तोतुं एवुंकांश्क सुरुत करके जेथकीताहरुं वांग्रेजुंसुख तुजनेमिले खनेतेसुरुतकरवानो खवसर एह्जिग्रे इ हांफरीनेजपदेशदीधो माटेपुनरुक्तदोषनही यडकं सझायजाणतवर्ज सहेसुजवएस युईपयाषोसु ॥ संतर्धणकित्तणेसु न हुंति पुणरुत्तदोसाउ ॥ १६ ॥

धनांगसोएव्यस्वजनानसूनपि त्यंज त्यजेकं न च धर्ममाईतं ॥

जवंति धर्मादि जवे जवे थिता न्यमून्यमीजिः पुनरेष ऊर्लजः॥१९॥ श्वर्षे॥इवेधर्मनीर्फ्रलंगतेदेखाडीने धर्मावसरनेज दढकरेठे देजीवतुं धनतथाशरीर श्वनेसुख तथासजनकुटुंब तथाप्राएजे जीवितव्यपणुं तेसर्वनोत्यागकर पएएकश्रीस वेइप्रणीतजे धर्म तेइनेकोइवारेंपए व्यजीशनही केमकेएधनादिक सर्ववस्तृतेधर्मथकी जतुजनेनवनवनेविषे वांग्रितमलशे पएधनादिकेकरी जिनोक्तधर्ममलवुं ऊर्छनग्रे १ दुःखं यथा बढुविधं सहसेप्यऽकामः कामं तथा सहसि चेत्करुएादिजावे १ दुःखं यथा बढुविधं सहसेप्यऽकामः कामं तथा सहसि चेत्करुएादिजावे ॥ उप्रणीयसापि तव तेन जवांतरेस्या दात्यंतिकी सकलर्दुःखनिरुत्तिरेव १ श्वर्था।इवेश्वात्माने श्वकामछःखनासहेवाने बदले सकामछःखसहेवुंते नलुंएमकहे त्रे देश्वात्मातुंजेम श्वकामछःखनासहेवाने बदले सकामछःखसहेवुंते नलुंएमकहे त्रे देश्वात्मातुंजेम श्वकामके ० इज्ञारहित परवश्यको बढुविध उख तृष्ठा वध बंधनादि कछःखप्रतेसहेन्ने तेमज जोकरुएादिक जेमैत्री प्रमोद कारुत्य माध्यस्य एपरिणामेकरी ने सकामके ० निर्क्तरानीबुदियें तुंछःखसहनकरे तो तेवायोडापण्डःखने सहवेकरीने नवांतरनेविषे श्वात्यंतिकीके ० पुनःप्राफ्रीवेंरहित एहवी समस्तछःखनी निर्हात्ति नि श्वर्थाय एटले मोक्त्पद पामे ॥ १ ७ ॥

प्रगल्जसे कर्मसु पापकेष्वरे यदाशाया शर्म न तविनानितं॥ विजावयंस्तच विनश्वरं कृतं बिजेपि किं दुर्गतिदुःखतो न हि॥१७॥ अर्थ ॥ इवेधर्मखजीने आत्मापापकर्ममां निपुणताकरेंगे तेखाश्रीकहेंगे अरेमू र्खजीवतुं सुखनीआत्यायेंकरी पापनाजत्पादकजेकर्म तेहनेविषे प्रगल्नसेके० माहा पणकरेंगे पण ते धनखजनादिकनासुख तो प्राणितके० जीवतव्यविना जोगवामनही अने ताहरो जीवतव्यतो शीघ्रकेण्डतावलुं विनाशशीलने एवीरीतेजाएतोथकोपण तुं डर्गतीनाडःखथी केमबीहितोनथी ॥ १९॥

कर्माणि रे जीव करोषि तानि येस्ते जवित्र्यो विपदो ह्यनंताः ॥ ताज्यो जिया तद्दधसे ऽधुना किं संजाविताज्योपि जृत्राकुलत्वं॥ १०॥ अर्थ॥वलीप्रकारांतरेतेदिजकहेने हेजीवजोतुं तेहवाज हिंसा मृषावादादिककर्म करेने जेकमेंकरीतुजने अनंतिआपदाओथाहो तेवारेंहमणाजते आपदाओसंजारेयके पण अतिहों नयेंकरीने आकुलताकेमपामेने जोपापनाफलजाणतोथकोपण तुंपापक मंकरवानेप्रवर्त्तेने तेवारेंवली नरकादिकनाडुःखसांजलीनेसावास्ते जयपामेने निश्वेंतु जनेतेडुःखजोगवाजपडहो एमांसंशयसुंने एजावार्थने ॥ १० ॥

ये पालिता छदिमिताः सहेव स्निग्धा जृत्रास्नेहपदं च ये ते ॥ यमेन तानण्यदयं ग्रहीतान् झालापि किं न लरसे हिताय ॥ ११॥ अर्थ ॥ वलीजीवने हीतार्थनेविषेत्रेरेठे हेजीवजेखजन मित्रादिक तथापुत्रादिक तेपाव्यापोष्या तथाजे तुजसायेंठ्दिपाम्या महोटाथया वलीतेताहरा अतिशयस्नेह पात्रथया तेहुनेपण यमराजायें निर्दयपणेत्रस्या तेजाणीनेपणतुं आत्महितकरवानेके मजजम्बालयतुंनथी केमके तेहुनेजो यमेंत्रस्यतो तुंशीरीतेस्थिररहिस एजा्वार्थ ॥ ११॥

यैः क्विर्यसे तं धनबंध्वपत्य यद्याः प्रजुतादिजिराद्यायरुयैः ॥

कियानिह प्रेत्य च तैर्गुणस्ते साध्यः किमायुश्च विचारयैवं ॥२२॥

अर्थ ॥ हवेजेतुक्वेशसहेबे तहथीतुजने काइग्रणनथी तेकहेबे हेआत्मन्तुं आ शयस्यके॰ केवलकल्पितमात्र एहवाजेधन बंधु खजन अपत्यके॰ संतान तथा य श कीर्ति अने प्रचल खामिपणुं इत्यादिकनिमित्तेंकरी क्विश्यसेके॰ कष्टनोगवेबे ते धनखजनादिकेंरी तुजनेइहनवें तथा परनवें केटलुंक ग्रणसाधवुंबेएटले ते तुजने सुंग्रणकरसे अनेआजजोते केटलुंकबे एमविचारी धनादिकनुं ममत्व करतां करतांज आयुष पुरोयइजासे अने ज्वांतरेंकोइपण ताहूरेकामेआवसेन्ही ॥ ११ ॥

किमु मुह्यसि गलरैः पृथक् रुपणेर्बधुवपुःपरियहैः॥ विमृश

स्व हिंतोपयोगिनो ऽवसरेऽस्मिन् परलोकपांध रे ॥ 9३ ॥ अर्थ॥ हेपरलोकेंजनार पंथीजीव तुं रुपण दीन सरणदेवाने असमर्थ एहवा अ ने प्रथगत्वरके० जूदाजूदावेराइजासे एहवाजे बंधु स्वजन तथा वयुजेशरीर तथा ध नधान्यादिक परिग्रह तेणेकरी सुंमुंजायने एकोइपण ताहरासार्थे आवेनही एनावा र्थने माटेएधर्मकरवायोग अवसरनेविषे पोतानाहितोपयोगी परलोकना सहायजूत एहवाजे ज्ञानादिकगुए तेहोने चित्तमांराख ॥ १३ ॥

सुखमास्से सुखं रोपे जुंहों पिवसि खेलसि ॥ न

रीतितातापात्मक्तिकाकतृणादि स्पर्शायुत्यात्कष्ठतो छ्पाहिनेषि ॥ ता स्ताश्चेनिः कर्मनिः स्वीकरोपि श्वश्चादीनां वेदना धिग् धियं ते॥ १५॥ अर्थे ॥ हवेथोडाकष्टथी बीहतोथको घणुकष्ठत्रंगीकारकरेत्ने तेकहेत्ने हेत्रात्मातुं ताढथी तापथी तथामांखीप्रमुख तृण मानप्रमुखना स्पर्शादिकथी उपनुंजे अब्प मात्रकष्ट तेथीबीहेत्ने कायरथायत्ने अनेएवापापकर्मेंकरीने श्वन्नके० नरकादिकना प्र कारनीजे महावेदुनाओ तेप्रतेअंगीकारकरेत्ने तोताहरीबुद्धिने धिःकारत्ने ॥ १५॥

कचित्कपायैः कचन प्रमादैः कदाग्रहैः कापि च मत्सराद्यैः ॥ ज्या

लानमात्मन कलुषीकरोषि बिन्नेषि धिङ्नो नरकादधर्मा ॥ १६॥ अर्थ ॥ वलीतेहिजकहेने हेआत्मातुं किह्नांक परीषह्नादिकमां कषायेंकरीने वली किह्नांक क्रियानुष्टानादिकनेविषे प्रमादेकरीने वलीकिह्नांक उपदेशादिकमां कदायहेंक रीने किह्नांकग्रणवंतनी अनुमोदनानेविषे मत्सरादिकेंकरीने पोतानीआत्माने मलीन करेने पणतुंधर्मरहितयको नरकथीबीहितोनथी माटेतुजने धिःकारने ॥ २६ ॥ इति श्रीअध्यात्मकब्पूडुमे सामान्यतो वेराग्योपदेशाख्यो दशमोधिकार समाप्त.

अयधर्मशुध्युपदेशः॥ जवेभवापायविनाशानाय तमझधर्मं कलुषीकरोषि किं ॥ त्रमा दमानोपधिमत्सरादिजिर्न मिश्रितं ह्योषधमामयापहं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हवेधर्मशुदिउपवेशनामें इग्यारमो अधिकारकहेढे तिहांत्रथम धर्मनीशु दताज थापेढे जेधर्मते जवके० संसारसंबंधी अपायजे जन्ममरणादिक तेहनो वि नाशकरवाने समर्थथाय एहवाधर्मने हेमूर्खआत्मा प्रमादजे मद्यादिक तथामान अहंकार उपधि कपट तथामत्सर इत्यादिकेंकरीने सुं मलीमकरेढे हवेतेउपर दृष्टां तकहेढे हियस्मात्के० मिश्रितऔषध आमयापहंनस्यात् एटले विरुद्ध इव्येंमिश्रित जे औषध तेकांइरोगनिवारकनहोय अनेतेमजतेऔषधनीपरें धर्मपणजोप्रमादादि कें मिश्रितहोयतो संसारना अपायजे इःखतेनो निवारकनहोय ॥ १ ॥

यतः॥ शौथिल्यमात्सर्यकदाग्रहकुधोनुतापदं नाविधिगौरवाणि च ॥ प्रमादमानौ कुगुरुः कुसंगतिः श्लाघार्थिता वा सुकृते मला इमे ॥२॥ अर्थ ॥ हवेधर्मनेविषे मलसरिखाजेटलादोषन्ने तेटलापूर्वाचार्यना वचनथीदेखाडे ने सुरुतजेधर्मकायतेमां शैथिव्यके० धर्मनेविषे अनादरता मात्सर्यके० ग्रणवंतनेविषे देषतुंधरवुं तथाकदायहके० ज्ञावचनतुंहत क्रुधके० कोध वली अनुतापके० सुरु तकरीनेपने हाइतिखेदेमें फोकटदानदीधुं फोकटतपस्याकीधी इत्यादिकपश्चात्तापतुं कर वुं तथादं नके० कपट अने अविधिके० शास्त्रोक्तविधियें रहित क्रियानुंकरवुं तथागौर वके० हुंमहाधर्मिष्ट इत्यादिक महोटाइनुंचिंतववुं वलीप्रमादजे धर्ममां असावधा नपणुं अने मानजे ्रहंकार वलीकुग्ररुजे लोहशिलातुव्य अने कुसंगतिजे जल्सूत्र नाषी एहवामिष्यात्वी प्रमुखनोसंग तथा श्लाघार्थिताके० लोकनामुखथी पोतानी

कीर्तिनुंवांबनुं एटलाप्रकारेंकरी धर्ममलीनथाय धर्मनुंयथोक्तफलनथाय ॥ १ ॥

यथा तवेष्टा स्वगुणप्रशांसा तथा परेषामिति मत्सरोश्री॥

तेषामिमां संतनु यत्नुनेयास्तां नेष्टदानादिविनेष्टलाजः ॥३॥

अर्थ ॥ द्वेद्यात्मापोतानागुणनी प्रशंसावांत्रेत्रे तेआश्रीउपदेशेत्रे देखात्माजेम तुजने पोतानागुणनी प्रशंसावझनत्रे तेमपरजे अन्यजन तेह्रनेपणपोताना गुणनीप्र शंसावझनत्रे एद्दवुंजाणीने मत्सररद्तित्यको तेअन्यजननी इमांके० गुणनीप्रशंसाप्र तें विस्तारीनेकहे जेमतुंपणतेप्रशंसाप्रतेंपामें केमके कोइने वांत्रितदानदीधाविनापोता नेपण वांत्रितलाजनत्राय एटलेपारकागुणनी प्रशंसाकरीयेंतो पोतेंपण प्रशंसनीयश्रीयें

जनेषु गृक्तत्सु गुणान् प्रमोदसे ततो जवित्री गुणरिक्तता तवाग्यक्तत्सु दोषान् परितप्यसे चरे झ्वंतु दोषारत्वयि सुस्थिरास्ततः ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ हवेकेटलाक काव्यनेविषे गुणप्रशंसानीवांग्रायकी अवग्रणदेखामेग्रे हे छात्माजोताहराग्रण लोकेंग्रहणकखाथकां तुंहर्षपामेग्रे तोतेहर्षपामवाथी ताहरे गुणनी रिक्तताथासे अनेजोलोकें अवग्रणवोलतेग्रते तुं परितापके० खेदपामेग्रे तो तेखेदपामवाथी ताहराविषे अवग्रणते निश्वलथइरहेसे तेमाटे ग्रणकह्याथी हर्ष अ नेदोषकह्याथी खेद एवेहुवाना तुंकरीसनही ॥ ४ ॥ प्रमोदसे स्वस्य यथाऽन्यनिर्मिते स्तेवेस्तथा चेत्प्रतिपंथिनामपि ॥ विगईणैः स्वस्य यथोपतप्यसे तथा रिपूणामपि चेत्ततोसि वित्॥॥ अर्थ ॥ हेञ्चात्मातुं जेमलोकनामुखें पोतानायुण स्तवसांजलीने प्रमोदपामेळे तेम रात्रुनापण युणस्तवसांजलीने जोप्रमोदपामें अने पोताने विगईणैः के० अवर्णवादें करीने जेमपरीतापकरेळे तेमजजो रात्रुनापण अवर्णवाद सांजलीने तुंपरीताप करे तेवारें एम जाणियेंजे तुंझाताळो ॥ ५ ॥

अयवा॥ स्तवेर्थया स्वस्य विगर्हणैश्च प्रमोदतापो जजसे तथा चेत्॥ इमो परेषामपि तेश्चतुर्ण्वप्युदासतो वासि ततोऽर्धवेदी॥इ॥ इतिवापाठः अर्थ ॥ वली पाठांतरेकरी एह्जिअर्थकहेठे हेखात्मातुंजेम पोतानीसुतियेंकरी ने तथापोतानेविगर्हणेंकरीने प्रमोदतापौके० हर्षखनेशोकप्रतेनजेठे तेमज पोतानी स्तवना तथा निंदा छने परनीस्तवना तथा परनीनिंदा एचारेनेविषेजो जदास ताके० मध्यस्थनावनेनजे तेवारेंतुं अर्थवेदीके० परमार्थनुंजाणठो एमजाणियें एकाव्य पहेलाकाव्यनुं पाठांतरजाणवुं ॥ ६ ॥

जवेन्न कोपि स्तुतिमात्रतो गुणी ख्यात्या न बव्ह्यापि हितं परत्र च ॥ तदि बुरीर्ष्यादिजिरायति ततो मुग्धाजिमानयहिलो निहंसि कि ॥ 9 ॥ अर्थ ॥ देखात्माकेवल एकजीस्तुतिमात्रयीज कोइग्रणवंतनयाय अनेवली जग तमां ख्यातिकोर्तिजोधणीहोय तोपण तेथी कांइपरजवनुं हितनयाय तेमाटेपरलो कें हितनुंवांबक एहवुंजेतुंते सुधाकेब फोकट अनिमानेकरी घहेलोथयो यको ईर्षा दिकेंकरीने आयतिजे उत्तरकाल तेहने सावास्ते बगाडेबे एटलेईर्षा करवाथी ताहरो परजवनुंहित विणसीजायबे इतिजाव ॥ ७ ॥

सृजंति के के न बहिर्मुखा जनाः प्रमादमाःसर्यकुवोधविछुताः ॥ दानादिधर्माणि मलीममास्यम् स्यानेकवादं सकतं जगावति ॥ त

दानादिधर्माणि मलीमसान्यमू न्युपेकरा ई सुकृतं चराएवपि॥ त॥ अर्थ ॥ हवेदानादिककर्मने जे मलीनकरें तेहनेकहेर्ड हेआत्मा प्रमादजे मया दिक पांचप्रकारें तथामात्सर्थ एटजे पारकीसंपदानी अदेखाइ तथाकुबोधजे मि य्यादर्शनतुं दृष्टिराग तेणेकरी विष्ठुतके॰ पराजव्या एइवा बहिरमुखजे स्वचित्तक लिपत मार्गनास्थापक कुतीर्थकलोकते मलीमसके॰ महास्त्रारंजादिकें दूःपत एइ वादानप्रमुख ते धर्मकार्यमां कोणकोणनथीकरता अर्थात्मिष्यात्वीलोकपण सर्वपो तपोताना मननीरुचियें दानप्रमुख धर्मकार्यकरेने पण तेप्रमादादिकें दूषितथका य योकफलदायकनथाय तेमाटेतेमलीन धर्मकार्य उवेषीने थोर्छपण छदधर्मकर ॥ ण

ञ्पाच्बादितानि सुकृतानि यथा दधंते सैानाग्यमत्र न तथा प्रकटीकृतानि ॥ व्रीडानताननसरोजसरोजनेत्रा

वक्तःस्थालानि कलितानि यथा छकूलैः ॥ ए ॥ अर्थ ॥ इवेत्रशंसारहितधर्मनुं विशेषफलदेखाहेन्ने इहांश्रीजिनशासननेविषे आ इादितके० प्रशंसानेढाक्यायका एटलेजेप्राणी प्रशंसायेरहित यका एह्वाजे सुरुत के० धर्मकार्य तेथीजेहवी सुनगतानेपामे तेहवी प्रकटितके० जेसुरुतकरीने लोक आगर्जे प्रशंसाकरावे ते सुनगतानेपामे तेह्नुंदृष्टांतकहेन्ने जेम व्रीडाजेलज्जा ते ऐकरीने नतके० नमने आननसरोजके० सुखकमलजेहनुं एहवीजे सरोजनेत्राके० कमलनयना एटले उत्तमस्त्री तेहना वक्तःस्थलजे स्तनमंडलते छकूलजे वस्त्रतेणेकरी सहितयका जेहवी सुनगताप्रतें पामे तेहवा उघाडायका सुनगताप्रतेंनपामे ॥ए॥

स्तुतेः श्रुतेर्वाप्यपरैर्निरीक्ति गुणस्तवालन् सुकंतैर्न कश्च न ॥

फलंति नैव प्रकटीकतेर्जवो द्रुमा हि मूलेर्निपतंत्यपि लध ॥१०॥

अर्थ ॥ हेश्रात्मा ताहरासुरुतजे धर्मकार्य ते अन्यलोकें स्तुतके० वखाणेषके तथा अन्यलोकें सांजलेंयके तथा अन्यलोकेंदेखेयके तेथीतुजने कोइग्रणनथी तेज परदृष्टांतकहेने जेमजूमीमांहेंथी मूलप्रगटकरेनते डुमजेवृक्ततेफलेनहीपण जलटाहे नापडे तेम सुरुतपण जघाडाकखाथका फलदायक न थाय ॥ १०॥

तपःक्रियावइयकदानपूजनेैः शिवं न गंता गुणमत्सरी जनः ॥

अपथ्यजोजी न निरामयो जवे इसाय नैरप्यतु लैर्यदातुरः ॥११॥ अर्थ ॥ हवेग्रणवंतनुं मत्सरकरवुंनिषेधेढे ग्रणजेपारका तपसंयमदानादिक तेह नेविषे मत्सरनुंकरनार एहवोजे मनुष्यते तपतथाक्रिया जे खावश्यक दान तथाप्रजन जे जिनबिंब पुस्तकप्रमुखनीपूजा इत्यादिक सर्वप्रकारेंकरोपण मोद्रुपामेनही ते उपर दृष्टांतकहेढे जेम खातुरजे रोगीपुरुषते खपण्यजोजन करतोथको खनोपम महामू ला एहवाजे रसायन पारदादिक औषध तेणेकरी रोगरहितनथाय इहां रोगीतेखा त्मा खने तपप्रमुखते रसायण खनेग्रणवंत उपर मत्सरते खपण्यजोजन तथा मुक्ति ते निरोगता जाणवी एउपनयकद्युं ॥ ११ ॥ मंत्रप्रज्ञारत्न्रसायनादि निदर्शनाद एपमपीहि शुई ॥ दाना र्चनाव इयकपो षधादि महाफलं पुण्यमितोन्य याऽन्यत् ॥१ २॥ अर्थ ॥ वलीप्रकारांतरे तेहिजकहेने इहांश्रीजिनशासनमां दान देवपूजा आवश्य क पोसहप्रमुखजे पुष्य तेथोर्छ पण ग्रु६ दोषरहितकीधोहोयतो मंत्रजे जांगुलीप्र मुख तथा रत्नजे सूर्यकांत चंड्कांतादिक तथा रसायनजे पारादिक तेहनीपरें म हाफलकारीथाय जेममंत्रयोडा आद्वरुरंतुहोय तोपण विषप्रहारादिकनेहरी महाग्रणक रे तथासूर्यकांतादिक रत्नन्हानुंहोयतोपण महाप्रकाशकरे आने रसायणथोर्छ्रपण म होटारोगहरे तेमदोषरहितपुष्यजो थोर्छ्रहोयतोपण महाप्रकाशकरे आने रसायणथोर्छ्रपण म होटारोगहरे तेमदोषरहितपुष्यजो थोर्छ्रहोयतोपण महाप्रकाशकर्याय अनेतेहथी विपरीतजे आग्र ६ प्रुप्यकार्य तेअन्यथाके व्यय्ते विप्रहाय कार्याय कार्याय त्न या राग्र

दीपो यद्याल्पोपि तमांसि इंति लवोपि रोगान् हरते सुधायाः॥

त्रणं दहत्याद्यु कणोपि चाम्नेर्धर्मस्य लेगोप्यमलस्तयांहः ॥१३॥ अर्थ ॥ जेमदीपक अल्पके० न्हानोहोयतोपण अंधकारटालेने वलीजेम अमृ तनो एकबिंडमात्रतेपण सर्वरोगनेहरे वलीजेम अम्रीतुंएककणीयुंमात्रतेपण तृणा नेबालीनाखे तेमनिर्मलदोषरहित एहवोधर्मनुं लेगमात्रतेपण पापनेटाले ॥ १३॥ जावोपयोगद्यून्याः कुर्वन्नावद्यकीः क्रियाः सर्वाः ॥

देइक्वेशं जनसे फलमाप्स्यसि नैव पुनरासां ॥ १४॥

अर्थ ॥ हवेसर्वक्रियानी सफलताते नावसहितकरवायोजहोय तेकहेने हेछा त्मातुं नावजे अहा तेहनाउपयोगेंकरी ग्रून्यके० रहित एहवासर्वए खवइयकरवा योग्य जे पडिकमणुं पडिलेहणप्रमुखक्रिया तेप्रते करतोथको पणतेथीकेवल शरीरने क्रेशमात्रउपजाववुं तेहिजफलपामेने पणतेक्रियानुं मुख्यफलजे मोक्तुलक्षण तेसर्व यानहीजपामे केमके नावयकी ग्रून्यक्रियाजो घणीकरीतोपण निःफलयाय ॥ १४ इतिश्रीखध्यात्मकल्पहुमे धर्मग्रुध्युपदेशाख्य एकादशोद्यधिकार समाप्त ॥ ११ ॥

अय श्रीदेवगुरुधर्मद्युद्रिमधिकृत्य किंचिदुपदेदाः ॥

तलेषु सर्वेषु गुरुः त्रधानं हितार्थधर्मा हि तडकिसाध्याः॥

श्रयंस्तमेवेत्यपरीह्य मूढ धर्मप्रयासान् कुरुषे रुप्यैव॥१॥ अर्थ ॥ इवेबारमेंखधिकारें देव गुरु धर्म एत्रएतत्वनीग्रुदिकहेसे तिहांप्रयमतो जो ग्रुद्धुरुमजे तोज ग्रुददेव तपाग्रुद्धर्मपामियें तेमाटेप्रथम गुरुतत्वनी ग्रुदि कहेते हेखात्मासर्वतत्वमां मुख्यतत्वते गुरुते केमके हितार्थके० मोक्त्नेखर्थें धर्म साथवोहोयतो ते गुरुनावचनथकी सधाय तेमाटेतुं मूढथको परीक्षाकस्ताविनाज गु रुने आश्रयतोथको धर्मनेनिमित्तेंजे प्रयासकरेढे तेव्हथाके० फोकटढे ॥ १ ॥

नवी न धर्मैरविधित्रयुक्ते र्गमी शिवं येषु गुरुर्न शुद्धः ॥

रोगी हि कल्पो न रसायनैस्ते येंषां प्रयोक्ता जिषगेव मूढा। १॥ अर्थ ॥ इवेग्रुरु छ इहोयतोधर्मपण अद्य द्याय तेकहेने नवीजे संसारीजीव तेषो अविधियेंकीधाएहवाजे दानादिकधर्म तेहवीजीव मोक्त्गामीनयाय केमकेजे धर्मनेविषे छ इके विदेषपणुं नयी तेधर्मवृथाने तेउपरदृष्टांत कहेने जेमरसायनतुं करनार वैद्यते गुणागुणतुं अजाणमूर्खहोूयतो रोगीपुरुष ते रसायनेकरी निरोगीन

थाय तेमइहांरोगी तेञात्मा औषधतेधर्म मूर्खवैद्य ते कुग्रुरु जाणवो ॥ २ ॥ समाश्रितस्तारकबुद्धितो यो यस्यारुलहो मङ्गयिता स एव ॥

छोघं तरीता विषमं कयं स तयैव जंतुः कुगुरोर्जवाब्धिं ॥ ३ ॥ श्वर्ष ॥ हवेकुगुरुञ्चने कुतारकतुंदृष्टांतकहेन्ने जेप्राणियें तारकबुद्धियेंकरीने तार कनेञ्चाश्रयोन्ने ञ्चनतेतारकज आश्रीतप्राणीने बुमाडनारहोय तोतेप्राणी विषमड स्तर एहवो उंघजे समुइनापाणीनो प्रवाह तेशीरीतेंतरसे तेमज जेथकी तरवानीत्या शाराखियें तेहिज जेवारें बोडे तिवारें समुइनुं पारते केमपामियें तेमज कुगुरुषी जवसमुइपण जाणवुं केमके जेगुरुप्रतें तारकजाणीने संसारसमुइ तरवानी आशा यें तेहने आश्रयियें ञ्चनेतेगुरुतो उन्मार्गने देखाडवेकरी आश्रीतप्राणीने संसारसमु इमां बोडे तेवारें ते प्राणी संसारसमुइनो पारकेमपामे एजावार्थने ॥ ३ ॥

गजाश्वपोतोक्तरथान् यथेष्ठपदातये जड निजान् परान् वा॥

जजंति विज्ञाः सुगुणान् जजैवं शिवाय शुद्धान् गुरुदेवधर्मान् ॥४॥ अर्थ ॥ तेमाटेग्रुददेवगुरुधर्मने आदरवुंतेकहेने जेमविइजे निपुणपुरुष तेवा नितस्थानकें पहोचवानेअर्थं पोताना अथवापारका हाथी घोडा तथा वाह्रण ठठ ब लद रथ तेआपआपणेगुणेसहितसुलद्रणाजोइने आदरे केमकेजो निर्लद्रण वाह्रन होयतो तेह्यीवांन्ति स्थानकेंपहोचायनही माटेहेसरलप्राणी एरीतेंतुंपण मोद्दस्था नक पामवानेअर्थे ग्रुद्युणोपेत एवाजे देव गुरु धर्मत्रेप्रतेंजूज जेथकीमोद्दपद्रपामे

फलाहृया स्युः कुगुरूपदेशतः कृताहि धर्मार्थमपीह सूचमाः ॥ तदॄष्टिरागं परिमुच्य जड हे गुरुं विशुईं जज चेडितार्थ्यसि ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ द्वेकुग्रुरुनावपदेश्याधर्म फलदायकनद्योय तेकहेने इह्रांश्रीजिनशासनने विषे कुग्रुरुनाचपदेशथकी धर्मनेऋर्थंपणजे जलाउद्यमकरेलाहोय तेफलदायकनुषाय माटेहेनइकजोतुं मोह्रफलनोऋर्थींगे तोदृष्टिरागगांभीने ग्रुद्धपरुपकग्रुरुनेजजाए॥

न्यस्ता मुक्तिपयस्य वाहकतया श्रीवीर ये प्राक् लयालुं

टाकारलटतेऽजवन् बहुतरारलज्जासनं ते कलों॥ बिश्रा

णा यतिनाम तत्तनुधियां मुष्णंति पुण्यश्रियः फूत्कुर्मः

किमराजके ह्यपि तलारद्धा न किं दस्यवः ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ हवेद्वष्ट्रांतेकरी ऊगुरुनीइष्टताकहेने हेश्रीमहावीर पूर्वेतुमेजे सुधर्माखा

मित्रमुख मोरूमार्गना चलावनारामूक्याहता तेपंचे कलियुगमां तुजविना ताहराशा सननेविषे पट्टपरंपरा सुविहिताचार्यथी अजगाथइने पोतानाकुमतने प्रवर्चाववेकरी ने खंटाकके॰ खंटाराथया हवेतेइतुं खंटारापणुंकहेंचे जेनणी तेयतिनामधरावताथ का खल्पबुदिलोक जेकुगुरुनीपरिक्ताकरीलकतानथी तेहोनी पुल्परूपजे लक्षातेप्रतें खंटेंचे एहवाते उत्सत्रजापनार कुगुरुनीवाततो अर्थिजीव किहांजइपोकारे केमकेवि होषज्ञानीविना पोकारकह्यानुं कोइगमनथी एटखे अराजकके॰ राजानेअनावे त लारक्कजे कोटवाल तेपणचोरनथायसुं एटखेराजानहोय तेवारेजे रखवालाहोय तेहिजचोरीकरे तेमइहांराजाते श्रीवीरपरमात्मा तेनोमार्ग प्रवर्त्तकतेसुधर्मादिकगण धर अराजकतेकलिकाल खूंटाकते कुमतना प्रवर्त्तक इत्यादिक उपनयजाणवुं ॥६॥

दमाखस्य गुद्धिर्गुरुदेवधर्मै धिंग् दृष्टिरागेण गुणानपेक्तः ॥

अमुत्र शोचिष्यसि तत्फले तु कुपटय जोजीव महामयार्त्तः॥॥॥ अर्थ ॥ इवेश्रग्रद्वेवग्ररुधर्मपामिने हर्षधरेनहीतेकहेने हेआत्मातुं अग्रद्वेव गुरुधर्मप्रतेंपामवाथकी गुणनीअपेह्तारहितथयोथको दृष्टिरागेंकरी हर्षपामेने तेमा टेतुजने धिःकारने पण जेवारें तेहनुंफल उदयआवशे तेवारेंतुंनरकादिकनेविषे घणो शोचपामिस तेहनुंदृष्टांत कहेने जेम महारोगीओ पुरुष स्वादना वग्रथकी कुपथ्य जोजन करीने पनेरोगवधेतिवारें घणु शोचकरे तेमतुंपण दृष्टिरागें करी कुगुरुकुदेव कुधर्म सेवीने पने जुगीति पामेथके घणुसोचपामिस ॥ ९ ॥

नाम्नं सुसिकोपि ददाति निंबकः पुष्टा रसैर्वथ्यगवी पयो न च ॥ इःस्योन्टपो नैव सुसेवितः श्रियं धर्म त्रिावं वा कुगुरुर्न संश्रितः ॥८॥ अर्थ॥ इवेक्रुगुरुनीसेवा ग्रुनफलनीदेनारीनथाय तेकदेढे जेमलिबडोजलीपरें सी च्योथकोपण आंबातुंफलनञ्चापे तथारसजे घीतेलप्रमुख पुष्टकारीवस्तुथकीपणवांज

एगिगायकांइ डधआपेनही वलीदेशच्रष्टविषमञ्चवस्थानेपाम्यो जेराजातेने जलीपरेंसे व्योथकोपण लक्तीनञ्चापे तेमकुगुरुनेपण सेव्योथको धर्म अथवा मोइूप्रतेनञ्चापेण कुलं न जातिः पितरो गणोवा विद्या च बंधुश्च गुरुर्धनं वा ॥ हिताय जंतोर्न परं न किंचित् किंबाहताः संजुरुदेयधर्माः ॥ए॥ अर्थ ॥ दवेसर्वपदार्थथी देवगुरुधर्मअधिकनेते कहेने जंतुके० जीवने कुलजेइ द्वगंगकुलप्रमुख तथाजातिजे मातानुंपद्द पितरके० पितामहप्रमुख तथागणजे स रखासरेखामित्रनीटोली तथाविद्याते पर्मगीप्रमुख तथाबंधुजे स्वजन वलीगुरुजे कु लविद्यानुंअध्यापक अने धनतेसुवर्णादिक तथाबीजाजेकांइ देश याम मंदिरप्रमुख तेसर्व हितायके० परलोकना हितनेऋर्थेंकोइथायनदीपण सत्के० ग्रुद्धएहवा देव गुरुञ्चनेथर्म एत्रणनेञ्चादखाथकां परलोकनाहितने अर्थंथाय ॥ ए ॥ माता पिता त्वः सुगुरुश्च ततात् प्रबोध्य यो योजति शुइधर्मे ॥ न तत्समोरिः क्रिपतें जवाब्धों यो धर्मविन्नादिकतेश्व जीवं॥ १०॥ अर्थ ॥हवेजेग्रद्धधर्ममांजोमे तेपुरुषनीप्रशंसाकरेने जेपुरुषजेहने तत्वदेखाडी प्र तीबोधपमाडी अनेग्रु६धर्ममांजोडे तेहनेतेहिजपुरुष माता तेहिजपिता तेहिजस्वज न अनेतेहिज गुरुजाणवुं अनेजेजीव हरेकप्राणिने धर्मवुं अंतरायादिक करीने संसा रसमुइमांनाखेता तेसरिखोतेनेकोइ बीजो शत्रुनथी ॥ १० ॥ दांकिण्यलजे गुरुदेवपूजा पित्रादिजकिः सुक्राजिलाषः॥ परोपकारी व्यवंहारशुँ दि र्नणामिहामुत्र च संपदे स्युः॥११॥ अर्थ ॥ हवेपुरुषने संपदानाकारण केटलाने तेकहेने दाहिणताजे अनुकूलता तथालुझा अनेदेवगुरुनीपूजा तथापितामाता काकोकाकी महोटानाई इत्यादिकजे कोइ गुरुस्थानकियाहोय तेहनीनकि तथापरनेउपकारनुं करवुं तथाव्यवहारग्रुइते लहेणादेवामां साचापणुंराखवुं एटलाप्रकार तेपुरुषने इहलोके अथवापरलोके प ण संपदादेवाना कारणजूतथाय ॥ ११ ॥ जिनेष्वञक्तिर्यमनामवङ्गा कर्मस्वनौचित्यमधर्मसंगः॥ पित्रायुपेका परवंचनं च सृजंति पुंसां विपदः समंतात्॥१ १॥ अर्थ ॥ हवेपूर्वीक्तप्रकारेथी विपरीतपणे प्रवर्त्ततां प्राणीने आपदाहोय तेकहेने जिननकिरहितपणुं तथासाधुनीअवगणना अने कमेजे साधुअने आवकनीकिया तेंइनेबिषें अनुचितपणुं तथा अधर्मजे धर्मरहित एहवानद्दविद्व नास्तिकप्रमुख अ

ĘĘ

थवाविरु ६थमिते मिय्याली कुमतिप्रमुख तेइनीमित्राइते विवाहव्यापार प्रमुखेंकरी परिचयकरतुं तथापिताप्रमुखनी अवगणना अनेपरने कुमालेख कुमानामा कुढा माप कुडातोलप्रमुखेंकरोने वगवुं एटलासर्वप्रकारेंकरी पुरुषनेआपदाउपजे ॥ १ ॥ मत्म्यैव नार्चसि जिनं सुगुरोश्र्य धर्म नाकर्णयस्यविरतं विरतिर्न धत्से ॥ सार्थ निरर्धमपि च प्रचिनोष्यघानि मूल्येन केन तदमुत्र समीहसे दां १ ३ अर्थ॥ वलीप्रकारांतरेकहेने हेआत्मातुं नक्तियेंकरी जिनपूजाकरतोनथी अने कदा पिरूजेनेतोपण कुलकर्मादिक परवशपणायकी पूजेने पणनक्तिथीपूजतोनथी तयास द्युरुपासेथी धर्मसांजलतोनथी तथानिरंतर अढारपापस्थानक पन्नरकर्मादान प्रमु खथीसंवरतुंकरवुं इत्यादिकविरतीपणुं तेपणनथीआदरतो तथासार्थकके०पोताने अ यवाकुटुंबादिकनेश्चर्थे अनेनिरर्थकहे०सार्थविनापण अपष्य अनाचरित पापोपदेश दिसाप्रदान प्रमादाचरित एपांचप्रकारेंकरी कारणविना पापनेमेलवेने तोपरलोके तुं शामूर्खेकरी सुखनी वांग्रकरेने इहां मूलरूपते पुत्यजाणत्रुं ॥ १३ ॥

ेचतुष्पदैः सिंहइव स्वजात्येमिल त्रिमांस्तारयतीहि कश्चित्॥

सेंहेंव तैर्मजति कोपि डर्गे शृगालवचेत्यमिलन् वरं सः॥१४॥

श्वर्थ ॥ हवेसुग्रुरुनेसिंहनी उपमा अनेकुगुरुने सीयालनी उपमाकहीने उपदेशेवे पोतानी जातीनाजे चतुःपदमृगत्रमुख तेसाथें मव्या सिंहनीपरें एसंसारमांजे सद्गुरु तेपोतानी जातीना जव्यपं चेंडियसं की मनुष्य इत्यादिक साथें मव्यो यको आश्रीतजीव नेतारे जेमसिंहनिजाश्रितचतुःपदने क्रूपगत्तादिक थीतारे तेमसुग्रुरुपण निजाश्रितज व्यजीवने संसारसमु इधीतारे अनेकुग्रुरुतेसी यालनीपरें सजातीयजे मनुष्यादिक श्व नेविजातीयजे चतुःपद तेहने साथें केइजइने इर्गजेनरक प्रमुख वली हर्गजे क्रूपादिकते मांबुमाडे तेमाटेजेकुग्रुरुतेन मव्यो यको जसारो जेमपंचाख्यानमां को इकवन्नमां बीजा वाधसिंहादिक नुजयटालवाने अर्थे सर्वचतुःपदें मली एकबलवंतसिंहने राजाकरी याप्यो अनेसर्वचतुःपद तेहनी सेवाकरवालागा एकदिवसे तेवन्नमां आश्रित्वत्ती तेवारें तेसर्वचतुःपद सिंहने सरणेगया तेसर्वने सिंहेपोताने पुंबडेवलगामी एकफा केकरी को इकमहानदी उत्तरीप हेलेपार पहोचाडचा वली केटलाक ही नसल्या दा पह वाते सिंहनोप राक्रमदेखी को इकड्बु दिसीया लेपण केटलाक ही नसल्य विजा पह तेवा रे ते सिंहनोप राक्रमदेखी को इकड्बु दिसीया लेपण केटलाक ही नसल्य निजाश्वित सर्वचतुःपदने पोताना सेवककी था वली कालां तरें दवलागो तेवारे सीया के निजाश्वित सर्वचतुःपदने पुंबडेवलगामी फालनरीनदी उतरवा लागो तेवारे सर्वजीवसहित पोतेंपण अ गाथजलमांबुमो इहांसिंहते सुग्रुरु अनेसीयालते कुग्रुरु महानदीते ड्रगेति अने आश्रितजीवते धर्मार्थी मनुष्य एमडपनयलेवो ॥ १४ ॥

पूर्णे तटाके तृषितः सदैव जृतेपि गेहे कुधितः स मूढः ॥ क लपदुमे सत्यपि हीदरिजो गुर्वादियोगेपि हियः प्रमादी ॥१५॥

अर्थ ॥ इवेग्रवीदिकतुं योगढतेप्रमाद करतुंनही तेद्दष्टांतदेइनेकहेढे निश्चेंकरीजे प्राणी देवग्ररुधर्मतुं योगढतेपण प्रमादवंतथायढे तो हाहाइतिखेदेतेप्राणी नखातजा वेंपण सदाइतरस्योढे वली ते पुरुष सुखडी प्रमुखे नखाथका घरमां पण जुख्योढे वली घरमांढते कब्पहद्दें पण दरिइढि तेमाटे ग्रवीदिकनो योगढते प्रमादत्यजीने धर्मसाधनकरतुं तेहिजसार्थकढे ॥ १५ ॥

न धर्मचिंता गुरुदेवजकि येंषां न वैराग्यलवोपि चित्ते ॥ तेषां

प्रसूक्वेराफलः पशूना मिवोकवः स्याइदरंजरीणां ॥ १६॥

अर्थ ॥इवेप्रकारांतरेंतेहिजकहेळे आजमेंगुं धर्मकीधो अनेहवे नित्य प्रत्येंगोधर्म करवानुंजे एहवीजेने विचारणानथी यडकं उत्थायोत्थाय चिंतेयं किमद्य सुरुतं रुतं॥ आयुषः खंममादाय रविरस्तमयं गतः ॥१॥ तथा जेने गुरुअने देवनीजक्तिनथी वजी वैरागनुंलेशमात्रपणनथी एहवाजेपेटजराप्राणी तेहोनुंजन्मते पद्य जंम कुतराप्रसु खनीपरें केवल माताने गर्नधारणादिकक्केश करवामात्रज फलहोय ॥ १६ ॥

न देवकायें न च संघकार्ये येषां धनं नश्वरमात्रा तेषां॥ तदर्ज

नाद्यैर्टजिनेर्नवांधो पतिष्यतां किं लवलंबनं स्यात् ॥ १९॥

अर्थ ॥ हवेप्रकारांतरें सुपात्रेंधनवावरवानी सफलतादेखाडेने जेधनवंतप्राणीनुं धन देवकार्यजे प्रासादकराववा अयवाजीणोंदार बिंबप्रतिष्टा इत्यादिकनेविषे तथा संघकार्यजे चतुर्विधसंघनुंपोषवुं तथासाधर्मिनीवत्सलताते हीन अने दीनजे साधर्मि कहोयतेनीचिंताकरवी तथा पुस्तकलखववा इत्यादिक कार्योमांउपयोगीनहोय तेप्रा णीनुं विनाशशील एहवुंजेधन तेउपार्जनादिकनापापेकरी संसारकूपमांपडताने तेधन सुंकांइ आधारनूतयाय अर्थातकांइनधाय एटलेसुपात्रेंव्ययविना अन्ययाकोइकामेना वे॥र ७इ॥ति श्रीअध्यात्मकल्पडुमेदेवगुरुधर्मज्ञुद्दीनामा द्वादशोधिकारः समाप्तार ७॥

ĘŲ

ते तीर्णा जववारिधिं मुनिवरास्तेज्यो नमस्कुर्महे येषां नो विषयेषु निग्ध ध्यति मनो नो वा कषायेः छुतं॥ रागदेषविमुग् प्रज्ञांतक जुषं साम्याप्त दार्मा ह्यं नित्यं खेलति चाप्तसंयमगुणाक्रीफे जजजावनाः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ह्वेयतिशिक्षोपदेशनामा तेरमोअधिकारकहेढे तेमांप्रथमयतिन्तं सरूपक हेढे जेमुनीनुंमन विषयमां आसक्तपामतुंनथी तथाक्रोधादिककषायमां व्याप्तुं नथी एह्वाजेमहानुनाव संसारसमुद्धीतथा तेहनेनमस्कारकरियेंढैयें जेमुनिराज रागदेषेंरहित थइने कञ्जुषताजे पापाचरणतेहने शांतपमाड्योढे वर्जीसमतायेंकरी अ नुपमसुखपाम्योढे एह्वुंथइने पांचमहाव्रतनी पचवीसजावना तथा अनित्यादिक बारजावनानेनजेढे वर्जीजिनप्रणीतजे संयमनाग्रुण क्रमादिकरूप उद्याननेविषे खेजेढे एह्वुंजेहनुंमनहोय तेहनेज तत्वथकी मुनिकहियें एजावार्थढे ॥ १ ॥ स्वाध्यायमादित्ससि नो प्रमादेः ज्ञुद्दा न गुन्तीः समितीश्च धत्से॥ त

पोर्डिधा नार्जसि देहमोहा दल्पे हि हेतो द्धसे कषायान् ॥१॥ प रीसहन्नो सहसे न चोप सर्गान्न शीलांगधरापि वाऽसि॥तन्मोद्धमा

णोपि जवादि पारं मुने कयं यास्यविरोषमात्रात् ॥३॥ युग्मं ॥ अर्भ ॥ इवेसाधुनावेषमात्रवकीज अर्थसिदिनयाय तेकहेग्रे हेमुनितुंप्रमादेंक रीसिझायथ्यानकरवा वांग्रतोनयी तथाग्रुद्धनिर्मेल मनादिकत्रणग्रप्ति अने ईर्यादि कपांचसुमतीने धारणकरतोनयी वलीशरीरनामोहयी बाह्यअन्यंतर बेप्रकारेंतपप ए करतोनयी तथायोमोपए कषायनुंकारणजपनाथी कषायधरेग्रे ॥ २ ॥ तथाक्तुधा दिक बावीसपरिसह अने देवता प्रमुखनाकरेला जपसर्ग तेप्रतेंनयीसहेतो तथा अ ढारसहस्ररूप शीलांगरथने पणधरतोनथी अनेकेवल वेषमात्रयीज मोक्तनेवांग्रेग्रे प

णएरीतेंतोतुं संसारसमुइनोपारकेमपामीस ॥ ३ ॥ एबेकाव्यनोखर्थ एकठोढे आजीविकार्धमिह यद्यतिवेषमेव धत्से चरित्रममलं न तु कष्टजीरुः॥ तदे तिस कि न न बिजेति जगजिघृक्रुर्मृत्युः कुतोपि नरकश्च न वेषमात्रात् ४ खर्थ॥वलीतेहिजकहेढे हेसाधुतुंखासंसारमां खाजीविकानेखर्थं जे यतिनोवेषथ रेढे खनेकष्टकरवायी बीहितोषको निर्मलनिरतिचार जेचारित्रतेप्रते धरतोनयी तो तेवारें तुं एमकांनयीजाएतो जे जगतनुंग्रासकरनार एहवोजेमृत्युते कोइपीबीहतोन यी वलीसाधुनोवेषमात्र धस्यांथकी तो नरकपएाबीहितोनथी एटले मृत्यु खने नरक एबेवाना सर्वथा तुजनेखावज्ञेज पए ताहाराथी डरसेनही इतिजाव ॥ ४ ॥ वेषेण माद्यसि यते चरणं विनात्मन् पूजां च वांग्रेसि जनाह्वहुधोपधिं च॥ मुग्धप्रतारणजवे नरके ऽसि गंता न्यायं विज्ञर्षि तदजागलकर्तरीयं॥॥॥ अर्थ ॥ देखत्मातुंचारित्रविना यतिनेवेषेकरीहर्षपामेग्रे अनेलोकथकी बढुप्रकार नीपूजा वंदन सत्कारप्रमुख तथाउपधिजे वस्त्रपात्र पुस्तकादिकप्रतेंवांग्रेग्रे पणपग्रेतुं एमुग्धलोकने प्रतारणके० कपटक्रियायें गगइकरी तेदथीउपार्ज्योजेनरकतिदांज रहीश तेमाटेतुं अजागले कर्त्तरीना न्यायप्रतेंधरेग्रे जेमकोइ खाटकियें एकवकरीदण वानेखर्थं वधकरवानेस्थानकेंखाणी कातीयेंधारचडावी सज्जकरी तेवकरीनेपासेका तिमूकी एटलामांकोइकामनेखर्थें पोतेवरमांगयो पग्रवाडेवकरीयें पोतानापगेंकरीज्ञ् मीखोदितेमांकातिदाटी नेविचाखुंजे रखेखाटकीखावेतिवारेंदेखे एमजाणीतेदनाउ परस्तुती दैवयोगवी कंवतलेकातीनीधारखावी तेथीगल्चंदबाइगयुं अनेमृत्युपामि तेमहे खात्मातुंपण तेवकरीनीपरें छज्ञानीधइने कातीरूपनरकने ढांकिराखेग्रे पणतेखवदय जाविपणाची उदयखाव्याविना रहेसेजनही तेमाटेप्रयमयीज खज्ञानत्यजीने साव धानरहेजे एन्याययंथातरें बीजेप्रकारेंपण जर्ख्युंग्रे ॥ ५ ॥

जानेऽस्ति संयमतपोजिरमीजिरात्मन्नस्य प्रतिग्रहजरस्य न निष्कियोपि ॥ किंर्ड्रगतेो निपततः द्रारणं तवास्ते सोख्यं च दास्यति परत्र किमिस्यवेहि॥इ अर्थ ॥ देश्चात्माएलोकरंजन निमित्तेंजे संयमतयातप तेणेकरीने गृहस्योपा संथी छहार औषध वस्त्रपात्रादिकवुंखेवुं ते तो संयमतयादिकना समूहवुं वक्रयके० मूलपणनथयुं तेवारेंतुजने ड्रगतिमांपम्रतां शरणतेसुंढे अनेपरलोकें सुखतें कोणज्या पसे तेविचारीजो एतोलोकोनाप्रतिग्रहवुं मूलमात्रपण ताहरुंसुरुतनथी माटेतुजने नरकेपडतां उदार अनेपरलोकनेविषे सुखतेशाथकीथासे एनावार्थवे ॥ ६ ॥ किं लोकसत्कृतिनमस्करणार्चनाद्ये रे मुग्ध तुष्यसि विनापि विद्युद्वयोगान् कृतन् जवांधुपतने तव यत्त्रमादो बोधिद्रुमाश्रयमिमानि करोति पर्शून् ॥9 अर्थ ॥ हवेलोकसत्कारादिकदेखी राचवुंनहीतेकदेवे हेमूढव्यात्मा शुरुनिर्मल दोषरहित एहवाजे मनवचनकायानायोग तेविनालोकोनो सत्कारजे अज्युत्थाना दिक तथानमस्कारवंदना अर्चना जेनवांगपूजा विखेपनादिक तेणेकरीने सुंहर्षपामे वे केमकेएप्रमादते ताहरेत्तंसारकूपमां पडतांबोधरूप वक्त्नाव्यालंबनने वेदवाने ए लोकसत्कारते क्रुहाडारूपवे एटस्रेताहरोप्रमादरूपवैरीते तुजने संसाररूपक्ठवामा

ξg

नाखवासारुं बोधयालंबनरूपवृक्तने लोकसत्काररूप छहाडेकरीबेदेबे एटलेहमणा तो सत्कारपामिमनमां हर्षधरेबे पण्टागले बोधपामवो डर्लनयासे ॥ ७ ॥ गुणांस्तवाश्रित्य नमंत्यमी जना ददत्युपध्यालयजेव्हचिष्ट्यकान् ॥ विना गुणान् वेषम्धेर्विर्जार्षे चेत् त तष्ठकानां तव जाविनी गतिः॥ढा॥ विना गुणान् वेषम्धेर्विर्जार्षे चेत् त तष्ठकानां तव जाविनी गतिः॥ढा॥ यर्थ॥हेसाधो धर्मार्थिलोकतो तहाराग्रुणत्राश्रीने तुजनेनमेबे तथा उपधि वस्त पात्रादिक छालय वस्ति नैषज छन्नपानादिक छनेशिष्य तुजनेत्रापेबे छनेतुंजोग्रुण विनाज मात्र वेषधरेबे तेवारे ताहरीधूर्चनी गति थाशे जेमवगारा रुत्रिम नवानवा वेष करीलोकना धनवगीलिये पबेकोइकदिवसें तेहनाविपाकची वध बंधनादिक पा मे तेम ताहरा हवालपण तेहनीपरे थासे ॥ ७ ॥

नाजीविकाप्रणयिनी तनयादिचिंता नो राजजीश्च जगवत्समयं च वे तिसा। नो राजजीर्धरसि वाऽऽ गमपुस्तकानिइत्यपि पाठः॥जुदितद्या

पि चरणे यतसे न जिन्हों तत्ते प्रतिग्रहजरोा नरकार्धमेव ॥ए॥ अर्थ ॥ इवेसाधुपणानुं सुखदेखाडेने हेजिकुकतेंघरबारपरिग्रहतोमूक्या माटे आजीविका तथापुत्रादिकनी चिंतानथी तेमराजासंबंधीनयपणनथी वलीजिनप्रणी त सिद्धांतपणजाणेने अथवाजैनसिद्धांतना पुस्तकधरेने तोपणज्जद्यारित्रनेविषे उद्यमकरतोनथी तेवारेताहरुं वस्त्रपात्रादिकनुंखेवुं तेहनुंनारते नरकनेअर्थेजने ॥ए

शास्त्रज्ञोपि दृढवतोपि गृहिणीपुत्रादिबंधोज्ऊितोप्यंगी यद्यतते प्रमादवद्यागो न प्रेत्य सौख्यश्रिये॥तन्मोहदिषतस्त्रिलोकजयिनः काचित् परा छष्टता बद्धायुष्कतया स वा नरपद्युर्नूनं गमी छर्गतौ॥१० अर्थ ॥ ह्रवेढतेयोगेपणजीव धर्मकरतोनथी तेहनाबेकारणदेखाडेढे लौकिकअ ने लोकोत्तरज्ञास्तने जाणतोथको तथा पंचमहाव्रतधारीथको तथास्त्रीपुत्रादिकना प्रतिबंधेरहितथको पण जेप्राणीप्रमादवद्ये पम्घोथको परलोकनासुखनी संपदारूप ध मेकार्थनेविषेज्यम करतोनथी तोहिहां त्रणलोकर्त्य जीपनारजे मोहरूपद्यन्न तेहनी

ज कोइक अलद्स्यमहाइष्टताजाणवी अथवाते नररूपपशुवापडो पूर्वेनरकादिकना आशुषाना बांधवायकी इगीतिमांज जनारने एमजाणीयेंनैयें ॥ १० ॥ जबारयस्यनुदिनं न करोमि सर्वे सावद्यमित्यसकदेतदधो करोषि ॥ नित्यं म्ह्योक्तिजिनवंचनजारिता तत्सावद्यतो नरकमेव विजावये ते १ १

अर्थ ॥ ह्वेयतिनावेषमां नित्येंमृषावादिपणुं देखाडेने जेयतिबीजा लोकोने नगवा सारुं दुंसर्वथासावयकरुंनही एह्वुंकहीनेपने वारंवार सावयकर्म सचितछारंनप्रमु खकरेने तेमाटेनिस्येंमुषावार्देकरी जारीथयुं एहवुंजे सावयञ्चारंजादिककर्म तेहची तुजने नरकेंजवुंजसंजवेळे छुतुंबोलीने सावद्यकरवाथी निश्वेंनरकगतिथाय ॥ ११॥ वेषोपदेशाद्यपधित्रतारिता ददत्यजीष्टान्टजवो धूना जनाः॥ जुंदे च रोषे च सुखं विचेष्टसे जवांतरे ज्ञास्यसि तत्फलं पुनः॥१२॥ अर्थ ॥ वलीतेदिजकहेने हेसाधुहमणाञ्चानवमातुं कालामेलाकपमाप्रमुखना वेषे तथालोकरंजवात्रमुखनेऋर्थें उपदेशछापी कपटवैरागपोषीने धर्मकथाकहेते इ त्यादिककपटेंकरी जेजोलालोकते तुजने वांढित छन्न पान वस्त्र पात्र वसति सिक्श दिकञ्चापेने तेथीसुखेखायने सुखेसुएने सुखेरमतोफिरेने पणते सुखनोगव्यानुं फल परनवें नरकादिकनाडुःखविना बीजोकांइजाणीसनदी ॥ १२ ॥ ञ्जाजीविकादिविविधात्तिजृशानिशात्ताः क्रेषेण केपि महतैव सृजंति धर्मान् तेज्योपि निर्दयजिघुक्तसि सर्वमिष्टं नो संयमे च यतसे जविता कथं ही र ३ अर्थ ॥ वलीप्रकारांतरे तेहिजकहेने केटलाकश्रावको छाजीविकाजे. उदरवृत्ति आदिशब्दथी वस्त्र आजरण राजदंम पुत्रादिकविवाह इत्यादिकचिंतायेकरी सदा कालआकुलथका घणीकप्टेंकरीने धर्मजेदानप्रमुख तेकरेने अने हेनिर्दयवेषनाधरना र तुंतेवापाज्ञेथीपण अन्नपानादिक सर्ववांढितवस्तु लेवानेवांढेढे अनेसंयममां उ यमकरतोनथी माटे हाइतिखेदेताहरी तेसीगतीयासे ॥ १३ ॥ ञ्जाराधितो वा गुणवान् स्वयं तरन् जवाब्धिमस्मानपि तारयिष्यति॥ श्रयंति ये लामिति जूरिजक्तिजिः फलं तवेषां च किमस्ति निर्गुण ॥१४॥ अर्थ ॥ एगुएवंतने एसंयमगुऐसहितने एमहानुजावने एनेआराध्योयको पोतेसं सारसमुइतरेने तेम आपणनेपण तारसे एह्वीबुद्धियें घणीनक्तियेंकरी तेत्राणियें त जनेश्चाश्रयोगे अनेतुंतोपोतेनिर्गु एगा माटेतुजने अथवाते आश्रयकरनारने एमांशो फलने एटलेतुंबुमतोयको तेप्राणीनेपण बोडेने एनावार्थ ॥ १४ ॥ स्वयं त्रमादैर्निपतन् जवांबुधौ कथंखनकानपि तारयिष्यसि ॥ त्र तारयन्स्वार्थमजून् शिवार्थिनः स्वतोन्यतश्चेव विखुप्यसेंऽहसा॥१५॥ अर्थ ॥ देमुनितुंपोतें प्रमादेंकरीने बुमतोडतो पोतानानकजे सेवकलोक तेने शीरीतेंतारीश केमके पोताने अन्नपानादिकमले तेनेअर्थें सरजजे मोद्वार्थिलोक ते

हुए

इनेवंचतोषको तुंफरेंचे एटलेपोताना प्रमादाचरणथी अनेबीजोलोकने वगवाथी एबन्नेप्रकारना पापेकरीने तुंलोपायचे ॥ १५ ॥

ग्रह्लासि शय्याहतिपुस्तकोपधीन् सूदा परेन्यस्तपसस्तियं स्थितिः॥

तत्ते प्रमादाइश्तिातप्रतिग्रहे ईणार्णमग्नस्य परत्र का गतिः ॥ १६॥ अर्थ ॥ हे वेपना धरनारयति तुं लोकोपासेथी शय्या वस्ति छहार तथापुस्तक इानोपकरण तथाउपधि वस्त्रपात्रादिकजे नित्यलियेने तेतो तपसीलोकनी स्थिति ने परंतु तुंतो प्रत्यक्त्प्रमादमां मग्नथको कांइपणतपस्यादिक करतोनथी तेमाटे प्र तिग्रहने निग्रवेकरी नारीथयुं एह्रवुंजेप्रमाद तेथकीठपार्ज्युजे लेणो ते लेणानेविषे मग्नथको खुतोनोएह्रवुंन्नतो ताह्ररीपरनवें सीछवस्थायासे एटलेप्रयमतुं चारित्रले इने प्रमादसेवेने तेलेणोकरेने तेवारपने तपसंयमादिकविना लोकोपासेथीशय्यादि क प्रतेलीयेने तेलीजोलेणो एमएबेप्रकारना लेणामांखूतोथको ताह्ररीसी छव स्थाथासे छर्थात इष्टछ्यवस्थाज पामीस इतिनाव ॥ १६ ॥

न कापि सिदिने च तेतिशायि मुने कियायोगतपःश्रुतादि ॥ तथा

प्यहंकारकदर्धितरूलं ख्यातीच्छया ताम्यसि धिङ् मुधा किं॥१९॥ अर्थे ॥ इवेतथाविधगुणविना कीर्त्तिनेसुंवांठेठे हेम्रुनिताइरेविषेकोइ विद्यामंत्रा दिक सिदिनयी वलीवांदणा खमासमणाप्रमुख उत्छष्ठकियानथी तथामनवचन कायाना योगनी ग्रुनप्रवृत्तिनथी तथाबाह्यान्यंतरतपनथीकरतो तथाश्रुतज्ञान आ दिशब्दथी प्रचाविकपणुं राजाप्रमुखनुं प्रतिबोधवुं इत्यादिकगुणतेपणनथी तोपणतुं आहंकारे कदर्थितथको ख्यातिजे प्रसिदितेहनी वांठायेकरीने फोकटशोपरीतापकरे ठे माटेतुजने धिःकारथाउंताहरामां जो कोइ अतिशयगुणहोय तेवारेंतो ख्यातिनी वांठापणयुक्तठे अनेतेविनाज प्रख्यातीनेवांठेठे माटेतुं धिकारवायोग्यठो ॥ १९॥

हीनोप्यरे जाग्यगुणेर्मुधात्मन् वांबंस्तवाचौद्यनवामुवंश्च ॥

ईर्ष्यन् परेन्यो लजरोऽतितापमिहापि यातो कुर्गातं परंत्र॥१ त॥ अर्थ ॥ फरोतेहिजकहेढे अरेनिर्जाग्य निःपुत्यकआत्मातुं गुणरहितयको फो कटस्तवनापूजाप्रमुखने वांढतो जोपूजास्तवनानयायतो वलीलोकोउपरकोधकरतो कटस्तवनापूजाप्रमुखने वांढतो जोपूजास्तवनानयायतो वलीलोकोउपरकोधकरतो यको इह्लोकेपण अतिशय तापसंतापपामेढे अनेपरलोकेपणडर्गतियेंजइशा १ ण गुणोर्विहीनोपि जनानतिस्तुति प्रतिग्रहान् यन्मुदितः प्रतीच्चसि ॥ जुलायगोश्वोष्ट्रखरादिजन्यजि र्विना ततस्ते जविता न निष्क्रयः॥१ ण अर्थ ॥ इवेकुगतिमांपडवाविषे उपदेशकरीने प्रतिबोधेने हेयतिवेषनाधारक तुं गुएारहितथको पएहर्षवंतथयीने लोकथी नमस्कारादिक स्तवना वस्त्रपात्रछन्नादि कलेवावांनेने तेहथीतुजने जुलायजे पामोपाएीवहेवायोग्य अथवागोजेबलदीओ इल गाडा यंत्र कोल प्रमुख वहेवायोग्य अथवाअश्वते अस्वारीकरवायोग्य तथा उंट खररासज अनेकविधजारवहेवायोग्य इत्यादिकअवतार पाम्याविना तेप्रतियहादि कतुं मूलनथाय केमकेग्रुएविनापए लोकोपासेथी प्रतियहादिक कल्पेने तेहतुं छेएो पामाप्रमुखना अवतारपामि जारवहीनेहूटवुंने एजावार्थ ॥ १९ ॥

गुणेषु नोयच्छसि चेन्मुने ततः प्रगीयसे येरपि वंधसेऽर्च्यसे॥जु गुप्सितां प्रेत्य गतिं गतो ऽपि तैईसिष्यसे चाऽजिजविष्यसेऽपि वा॥्णा दानमाननुतिवंदनापरे मोंदसे निकृतिरंजितैर्जनेः ॥

नलवैषि सुकृतस्य चेद्धवः कोपि सोपि तव लुंठ चते हितैः॥ ११॥ अर्थ ॥ वलीतेहिजप्रकारांतरेकहेठे हेम्रुनिजोतुंग्रुएगनेविषे जद्यमकरतोनथी ते वारेइइनवेंजे तुजने आवकादिक गीतनासप्रमुखेकरीगायठे तथावली दादशावर्त्त वां दएायेंकरीवांदेठे सुगंधलेपनादिकेंकरीपूजेठे तेतुंपरनवें निंदनीक कुरूप दरिइतादि क पाम्याथका तेहिजताहराजपर इससे तथानानाप्रकारनीपीमा जपजावसे एटले ते खामिपणे अवतरसे अनेतुंदासपणेषाइस तिहां जातो जाठीप्रमुखना प्रहारेंकरी तुजनेपीडसे ॥ २० ॥ हेम्रुनितुं कपटक्रियायेंकरी जोकरीजवीने तेहोने दानसन्मान स्तवन वंदनानेविषे तत्परदेखीने हर्षपामेठे पण एम नथाजाएतो जे ताहरो लेश मात्रसुरुतठे तेहनेएलोकजुंटेठे ॥ २४ ॥

जवेजुणी मुग्धकतेर्नहि स्तेवे र्न ख्यातिदानार्चनवंदनादिजिः ॥ वि ना गुणान्नो जवडःखसंक्तय स्ततो गुणानर्जय कि स्तवादिजिः॥ ११ अर्थ॥ इवेस्तवनादिकनी वांढामूकीने गुणतुंपोषकरवुंतेकहेढे हेमुनितुं विशेषाविशे पनाञ्चजाण एहवामुग्धलोकनी करेली जे स्तुतितथाख्याति प्रशंसादिक तेणे करी गुणवं तनथाय वली गुणजे ज्ञानादिक तेह्दनी शाप्तिविना संसारनो विनाश अनेमुक्तिनी प्राप्ति तनथाय वली गुणजे ज्ञानादिक तेह्दनी शाप्तिविना संसारनो विनाश अनेमुक्तिनी प्राप्ति याय तेमाटेके वल गुणने ज ज्यार्जनकर पणस्तुतिकराववाथी कांइ अर्थसिदिनथी १ श अध्येषि शास्त्रं सदसदिचित्रा लापादिजिस्ताम्यसि वा समा यैः॥ येषां जनानामिह रंजनाय जवांतरे ते क मुने क च लं॥ १३॥ अर्थ ॥ हवे जो करी जवामाटेतुं शास्त्रजणे हे पण जवांतरे ते कि मुने का च लंग १३

50

ककिदां तेवेखाडेबे देमुनितुंजे लोकरीजववानिमित्तें सत्के० जलोजिनागम तथा असत्के० विरुधवौधादिकतुंशास्त्रते प्रतेंजणेबे अनेवली कपटसहित नानाप्रकार नाआलापसंलापादिक तेणेकरीने घणुंप्रयासकरेबे पणजवांतरें तेलोककिह्तागतिमां जशे अनेतुं केइगतियेंजइश एटलेआनवें जावजीवग्रुधीजे जीव तें रीजव्याहशे तेपरजवेंकोइपण ताहरे कामेआवेसेनही ॥ १३ ॥

परिग्रहं तं व्यजहाजृहादे स्ततिंक न धर्मोपकृतिज्ञलात्तं ॥

करोषि शय्योपधिपुरुतकादे गरोपि नामांतरतोपि हंता॥ १४॥ अर्थ ॥ हवेपरिव्रहत्यजवा आश्री उपदेशेढे हेमुनितेंपूर्वे धरप्रमुख उंपरिव्रहढां ड्युं अनेवली धर्मापकर एने मीसेंकरीने शय्या वस्ति उपधि वस्त्र पात्रादिक पुस्त क आदिशब्दथी पाठा चाबखी पोथी बांधएा जपमाला प्रमुख उपकर एजो परिव्रह सुंकरेढे धर्मांपकर एजेकांइ बहुमूलो ममतानाव शयकी वधारेराखियेंते परिव्रहजजा एवो केमके० गरके० विष तेहनेंनामांतरक खाथकी एट जेनाम फेरवीना खाथीप ए हंताके० मृत्युकारक होयज जोविषने साकर अमृत इत्यादिकक हियेंतो पण खांधु यकुं प्राणहर एकरे तेमपरिव्रहने धर्मी पकरएा निमित्ते राख्योथको पण इग्तिआपे

परिग्रहात्स्वीकृतधर्मसाधनाजिधानमात्रात्किमु मूढ तुष्यसि ॥

न वेत्सि हेम्नाप्यतिजारिता तरी निमजयत्यंगिनमंबुधौ दुतं ॥ १५॥

अर्थ ॥वलीतेहिजकहेने हेमूर्खसाधोतुं सीकृतके० प्रमाणकिधुंने धर्मसाधनके० धर्मोंपकरण एहवुंनाममात्रजेहनुं एहवोपरियह पाम्याथी सुंहर्षपामेने हेमूर्खतुंन थीजाणतोजे अतिशयजारी एहवोजेसुवर्ण तेणेकरीजरी एहवीतरीजे होडी तेजेम अंगीनंके० वेशनारमनुष्यने बोडेने तेमनुजनेपण धर्मोंपकरणनेमीसें मव्योएहवो जे अतिपरियहतेजवसमुड्मां बोडज्ञे इतिजावः ॥ १५ ॥

येंहःकषायकलिकर्मनिबंधजाजनं स्युः पुस्तकादिजिरपीहितधर्मसाधनेः॥ तेषां रसायनवरैरपि सर्पदामये रात्तात्मनां गदत्दतेः सुखकृतु किं जवेत् र अर्थ ॥ जेमुनियें हितके० वांढ्युंढे धर्मवुंसाधनजेथकी एहवाजे पुस्तकादिकते ऐकरीनेपण अंहजेपाप तथाकषायजे कोधादिक तथा कलिजेकलहतेना करवा पकी कर्मजे ज्ञानावरणियादिक तेनानिकांचित्बंधवुंजाजनथाय तेहनेबीजोकोइ सुखकार्थ निवृत्तिवुंकरनारनथाय एटलेजेहनेधर्मोपकरणतेहिज ममल्वनावराथकी परिग्रह्रपणे परिणम्याढे तोतेहनेद्यर्थे क्वेशकषायादिकने करवेकरीकर्मवृद्धिकरेडे तोतेंइनेसंतोषते पर्व फरीबीजाशाथकीथासे एजावार्थ तेइनुंदर्षातकहेवे जेम रसा यनजे मृगांगपारादिक तेइनोसेवनकरवाथीज उलटोमांदापड्यो एटलेरसायनथ कीपण जेइनेरोगवथ्यो तोपवेतेइनारोगनुं निवारकबीजोसुखकारी कोइनथी ॥१६॥ रह्यार्थ खलु संयमस्य गदिता येऽधा यतीनां जिने वासःपुस्तकपात्र

स्ट्राज (द्यु समगरम गाद्सा पठजापतागा पासा पुरापगान कप्रजृतयो धर्मोपकत्यात्मकाः ॥ मूर्वन्मोहवद्यात्त एव कुधिया संसा रपाताय धिक स्वं स्वस्यैव वधाय द्यास्त्रमधियां यहुःप्रयुक्तं जवेत्॥ १७ अर्थ ॥ निश्चेंकरीनेजे वस्त्रपुक्तकप्रमुख पदार्थतेश्रीजिनेश्वरं साधुनेसंयमनी रक्ता नेअर्थ धर्मोपकरण सरूपेकद्याने तोहाहा इतिखेदे तेहिजपदार्थ कुबुद्धिनाधणीने अतिशय मोहनावशयकी उलटासंसारमांबूडावनारनाकारण थइपडेने तेहनुंद्रष्टां त जेम बुद्धिहीनपुरुषतुं पोतातुं अस्त्रजेखड्गादिक तेविपरीतपणे राख्युंहोय तोपो तानेजवधकारीयाय तेहनीपरे जाणवुं ॥ २९॥

संयमोपकरणज्ञलात्परान् जारयन् यदसि पुस्तकादिजिः ॥

गोखरोष्ट्रमहिषादिरूपजृत्तचिरं लमपि जारयिष्यसे॥ १०॥

छर्थ॥ हेमुनितुं जे परप्राणीनारवाँहक पोढी बलद उंटप्रमुखने संयमनाउपकरण नेमीसेकरी पुस्तकादिकनुं नारवहेवरावेडे तेमाटेतेप्राणीतुजनेपण बलद उंट रास ज पामाप्रमुखना अवतारपाम्याथका चिरकाललगें जारवहेवरावज्ञे ॥ २० ॥

> वस्त्रपात्रतनुपुस्तकादिनः शोजया न खलु संयमस्य सा ॥ आदिमा च ददते जवं परा मुक्तिमाश्रय तदिच्चयैकिका॥१७॥

अर्थ ॥ हवेवस्त्रपात्रादिकथी संयमनीशोनानथीतेकहेठे हेमुनि वस्त्रपात्रतथाश रीर पुस्तकइत्यादिकनी शोनाकीधेयके निश्वेकरी संयमनीशोनानथाय एटडेवस्तादि कनीशोनाते संयमने अशोनाकारणीठे तेमांपणवली आदिमके० पहेलीजे वस्तादि कनीशोनाते नवच्चमणजञ्जापे अने परके० बीजीजे संयमनीशोनाते मोइजआपे ते माटेजोसंसारनी वांढाहोयतो वस्तादिकनी शोनाआदर अनेजो मुक्तिनीवांढा तुजने होय तो संयमनीशोनाआदर ॥ १९ ॥

वस्त्रपात्रतनुपुस्कादिनः शोजया न खलु संयमस्य सा॥ तां तदत्र प रिहाय संयमे किं यते न यतसे शिवार्थ्यपि ॥ इतिचोत्तराईपाठः ॥३०॥ अर्थ ॥ वस्त्रपात्रेति एपागंतर एश्लोकनुंपूर्वाद पूर्वनीपरेजाएवुं अनेज्तराईनी

93

व्याख्याकहेने तस्मात्कारणात् तेकारणमाटेहेसाधो ते वस्त्रादिकनी शोजानांमीने जोग्रात्रांमीने जोग्रात्रांमीने जोग्रात्रांमीने जोग्रात्रांमीने केमड्यमकरतोनथी ॥ ३०॥

रीतितपाद्यान्नमनागपीह परीषहाश्चेत्क्तमसे विसोढुं॥

कष्यं ततोनारकगर्जवास छःखानिसोढासि जवांतरे लं ॥३१॥ अर्थ॥ हवेपरीषह सहेवाआश्री उपदेशआपेठे हेम्रुनिजोतुं संयमनेविषे टाहाड तापप्रमुख थोडापणपरीषह सहेवानेसमर्थनथी अनेकायरथायठे तोजवांतरेनेविषे नरकतथा गर्जवासनाइःख केम सहीस एटजे नरकादिकना इःखसहेवाथीतो परीष हनाइःखनुं सहेवुंजजुंठे एमजाण ॥ ३१ ॥

मुने न किं नश्वरमस्वदेह मृप्तिंडमेनं सुतपोव्रतायेः ॥ निपी

डँच जीतीर्जवदुखराशे हिंत्वात्मसांचैवसुखं करोषि ॥ ३ ए॥

अर्थ ॥ हवेसाधुने तपप्रमुखनुं उद्यमकरनुंकहेने हेसाधु एविनाशशील तथा आ खरपोतानुंनही एहवोजेदेहरूप माटिनुंपिंम तेहने जलाजिनाझासहित तपव्रतप्रमुखे करी दमीने संसारनाडुःखसंबंधी सर्वजयनांनिने मुक्तिसंबंधी सुखतें पोतानेवश केमनथीकरतो ॥ ३ १ ॥

यदत्र कष्टं चरणस्य पालने परत्र तिर्यङ्नरकेषु यत्पुनशतयोर्मि

धः सप्रतिपक्त्ता स्थिता विशेषदृष्ट्यान्यतरं जर्हीहि तत् ॥३३॥ अर्थ ॥ देसाधुजेइहां श्रीजिनशासनेविषें चारित्रपालवानीकष्टढे अनेपरनवे ति यैचनरकादिकनेविषेजे कष्टढे तेबेद्रुकष्टने परस्परें प्रतिपक्तपणुंरदेढे एटलेजिहां चा रित्रकष्टढे तिहांतियैचनरकनुं कष्टनथी अनेजिहां तिर्यचनरकादिकना कष्टढे तिहां चारित्र कष्टनथी तेमाटेविशेषदृष्टियें विचारी तेबेमांथी एककष्टनेमूक ॥ ३३ ॥

रामत्र यहिइरिव प्रमादजं परत्र यच्चाब्धिरिव युमुक्तिगं ॥ तयोर्मि यः सप्रतिपक्तता स्थिता विशेषदृष्टचान्यतरद्रुहाण तत् ॥३४॥ अर्थ ॥ हवेसुखनुंग्रह्युंकहेने हेसाधोश्हां चारित्रमांप्रमादकरवाथीजे सुख ते बिंडजेटलुंने अनेसंयमना पालवाथकीजे देवलोकमुक्तिनासुख तेसमुझ्सरखाने तेबन्हेसुखने परस्परप्रतिपक्त्पणुंने जिहांप्रमादसुखतिहां मुक्सिसुखनथी अने जिहां मुक्तिसुख तिह्दांप्रमादसुखनची माटेविशेषेविचारी बेमांची सारजाणेतेने आदर॥३४॥ अथवा॥नियंत्रणायाचरणेऽत्र तिर्यक् स्त्रीगर्जकुंजीनरकेषु या च ॥ तयोर्मियः सत्रतिपक्तजावा िद्रोषदृष्ट्याऽन्यतरां ग्रहाण ॥३॥ अर्थ ॥ ह्वेगुरुपारतंत्रआश्रयीकहेठे हेसाधुइहांजिनज्ञासनमां चारित्रनेविषेजे गुरुपारतंत्र्यादिकत्रणप्रकारनो परवशपणुंठे अने तिर्यंचनाआवतारमां तथास्त्रीनागर्ज मां तथा कुंजीतेयणोजसांकप्रामुखनुंनारकीने उपजवानुंस्थानकतेमां उपनाजेनार कीते खंडोखंडथयी बाहेरनिकले तेहनेविषेजे परवशतापणुंठे तेबेहुने परस्परेंप्रति पद्दीपणुठे एटजे जिहांचारित्रनी नियंत्रणाहोय तिहांतिर्यंच स्त्रीअने नरकादिकनी नियंत्रणानहोय अनेजिहां तिर्यंचस्त्रीनरकादिकनी नियंत्रणाहोय तिहां चारित्रनी नियंत्रणानहोय माटेविज्ञेषदृष्टियेंविचारीने तेबेमांथी एकनियंत्रणानेआदर ॥३॥

> सहतपोयमसंयमयंत्रणां स्ववद्यातासहने हि गुणो महान्॥द्यिवं गुण इति वा पाठः ॥ परवद्यास्वतिजूरि स

हिष्यसे न च गुणं बहुमाप्स्यसि कं च न ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ इवेपरवशेङःखसहेवाकरता पोतानावशेंडःखसहेवुंनजुंठे तेकहेठे हेसा धुतुं चोथप्रमुखतप तथा नियमअनियहादिक ते यम तथासत्तरनेदें संयमसंबंधी एत्रण नियंत्रणाउंठेतेवुंसहनकर केमके एत्रण नियंत्रणाओते पोताने स्वाधीनपणे सहनकरवीठेते महोटो गुणठे तथापाठांतरे एथकी शिवंग्रणके॰ मुक्तिरूपीओगुण होय अने जे अतिपरवशपणे एकेंडियादिकमां पराधीनथको घणीजनियंत्रणाओ सहीस तिहां अकामनिर्क्तरात्तिवाय अधिकुंगुणमात्र कांइपणपामीसनही ॥ ३६ ॥ अणीयसासाम्यनियंत्रणाजुवा मुनेऽत्र कप्टेन चरित्रजेन च ॥ यदि क्रयो डर्गतिगर्ज्तवासगा सुखावलेस्तत्किमवापि नार्धितं ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ वलीप्रकांतरेतेहिजकहेठे हेसाधो आजन्ममां समतारूपनियंत्रणातेसं बंधीकष्ट तथाचारित्रसंबंधीजे अल्पमात्रकप्ट तेणेकरी डर्गति अने गर्जावाससंबंधी अमुखनासमूह इत्ययायठे तोतेथी सुवांठितपणुंतुंनपाम्यो अर्थात्पाम्योज ॥३ ॥ त्यज स्पृहां स्वः शिवदार्मजाज स्वीकृत्य तिर्येङ्नरकादि इःखं ॥

सुखाणुजिश्चेदिषयादिजातेः संतोष्यते संयमकष्टचीरुः ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ इवेप्रमादवंतने रीसेकरीकहेडे हेसाधुतुं जो विषयादिकथीउपनोजे सुख नोलेश तेणेकरी संतोषपामेडे अने संयमनाकष्टथीबीहेडे एरीतेंतो तें तिर्यंच तथा नरकनुंडःखकबुजकरीने स्वर्गमोक्त्नासुखपामवानी वांडामूकीदीधी एटलेअणुमात्र सुख उपर राच्योधको स्वर्गमोक्त्नुं अतुव्यसुखहारेडे एनावार्थडे ॥ ३० ॥

समग्रचिंतार्तिंहतेरिहापि यस्मिन् सुखं स्यात्परमं रतानां ॥

परत्र चेंजादिमहोदयश्रीः प्रमाधसीहापि कथं चरित्रे॥३७॥

श्वर्थ ॥ इवेचारित्रणी इहजोकेंतथा परलोकेंसेखंबे तेकहेबे चारित्रमांरकथयला एहवाजेनावसाधु तेहने सर्वचिंताना निवारवाथकी इहलोकेपण परमञ्चनुपमसुख होय छनेपरलोकेंपण ईडादिकनीसंपदा तथा मोक्तनीसंपदाहोय तोहेसाधो एहवुंजे चारित्रतेनेविषे रह्योथकोतुं सुंप्रमादकरेबे यतः देवलोकसमाणोछ परियाउंमहेसि एां ॥ रयाणछरयाणंच महाणरयसारिसा ॥ १ ॥ पुनः नच राजनयं नच चोरनयं न च इत्तिनयं न वियोगनयं॥इह लोकसुखं परलोकहितं श्रमणखमिदं रमणीयतरं॥ १॥

महातपोध्यानपरीषहादि न सलसाध्य यदि धर्तुमीशा ॥ तजावनाः

किं समितीश्च गुप्ती धेल्से शिवार्थिन् न मनः प्रसाध्याः ॥ ४० ॥ अनित्यताद्या जज जावनाः सदा यतस्व इःसाध्यगुणेऽपिसंयमे॥जि

चत्सया ते बरते ह्ययं यमः श्रयन् प्रमादान जवाहिजेषि किं॥४१॥

परित्या त लरता स्वय प्याः अपगर अपगर अपगर गयाद गरा द गरा उत्ता अर्थ ॥ हवेजेबढुकष्टकरीशकेनहीतोते सुखसाध्यधर्मकरे तेकहेने हेसाधु तुं पराक मवंतपुरुषने साधवायोग्य एहवाजे मासखमणप्रमुख महातप तथा प्राणायामादिक ध्यान तथाहुधादिकपरिसह धरवानेसमर्थनथी तोह्रेमोह्तनावांग्रक केवलमनेकरीज साधिसकीयेंएहवीजे अनित्यादिकजावनातेनुंसेवनकर ॥ ४० ॥ तथावलीप्रकारांत रेकहेने हेसाधोतुंअनित्यताप्रमुख बारजावना ने सदाजज अनेडःखें साधवायोग्य मूलोत्तरगुणने जेना एहवासंयमनेविषेपण सुकुमालपणुंग्रांनीज्यमकर केमके मृ त्युते तुजने यासकरवानीवांग्रायें उतावलुंथायने दिनदिनप्रतें ढुकर्छुआवेने मा टेप्रमादसेवतोथकोपण मनेकरीसंसारथकी बीहितोरहेजे ॥ ४१ ॥

हतं मनस्ते कुविकल्पजालै र्वचोप्यवयैश्च वपुः प्रमादैः ॥ लब्धी श्च सिद्धीश्च तथापि वांडन् मनोरथैरेव हहा हतोसि॥४२ ॥दग्धं मनो मे कुविकल्पजाले र्वचोप्यवयैश्च वपुः प्रमादैः॥लब्धीश्च सि दीश्च तथापि वांडन् मनोरथे रेव हहा विहन्ये ॥ इतिवापाठः ॥४३॥ अर्थ ॥ इवेसामग्रीविनापण महोटामहोटा मनोरयकरवा अफलडे तेकहेडे हे साधुताइरोमनतें मागविकल्पनासमूहें विएासाडग्रं अनेवचनपण मृषानाषणादि क पापेकरीविएासाडग्रं वलीशरीरपण प्रमादजेमद्यादिकते ऐकरी विएासाडग्रं एरीतें मनवचनकायारूप त्रएग्रिसविएासाडी तोपए आमोसदीप्रमुखलब्धि तथामंत्रवि द्यादिकसिदिने वांग्रेग्रे माटे हाइतिखेदे मनोरथेंकरीज पीडायग्रे जेमशाली छथ खां मत्रमुख सामग्रीविनापए कोइमूर्खद्वीरनानोजनतुं मनोरथधरतो खहार्नेशविकल्पें ज पीडाय तेमतुंपएपीडायग्रे ॥ ४ १ ॥ तथावलीपागंतरें माहरुंमन कुविकल्पजासें विएास्युं तथा खबद्यके म्रापालापादिकपापें वचनविएास्युं खनेप्रमादेकरीशरीर विएास्युं तोपए लब्धि खने सिदि प्रतें वांग्रतो थको हाइतिखेदे हुं मनोरथमात्रें

ज सुंपीमार्चंडुं इत्यादिक पहेलाकाव्यनुं पाठांतर काव्यजाणवुं ॥ ४३ ॥ मनोवदास्त्रे सुखडःखसंगमो मनो मिलेधैस्तु तदात्मकं जवेत् ॥

प्रमादचोरैरिति वार्यतां मिल्झीलांगमित्रैरनुषंजयानिद्रां ॥ ४४॥ अर्थ ॥ हवेमननेसतसंगमांजोडवुं तेकहेडे हेसाधुताहरे सुखछने इःखनोजे मि लाप तेमननेवशडे केमकेमनजेहनीसार्थेमिले तेरूपीथाय जेम तैलने जेहवाफूलनो संगमिले तेह्वीवासनामयथाय माटेमननेप्रमादरूपचोरसार्थेमलतो वारीने नित्थे शी लांगरथरूपजेमित्र तेनीसार्थेमेलव जेथकीतुजने सर्वथासुखसार्थेज मिलापथाय ॥ ४४

ध्रुवः प्रमादैर्जववारिधों मुने तव प्रपातः परमत्सरः पुनः॥ गले न बद्दोरुशिलोपमोस्ति चे क्वष्यं तदोन्मजनमव्यवाप्स्यसि॥४८॥ अर्थ ॥ इवेयुक्तिविज्ञेषेंकरी प्रमादनोपरिहारकहेठे हेसाधुप्रमादनाहेतुयेंकरी तु जनेसंसारमांपडवुंतो निश्चय थकीठे केमकेप्रमाद अनेसंसारने अग्निधुमादिकनीपरें नित्यबंधठे अनेवलीजो गलेबांधिमोटी शिलासरिखुं परप्राणीण्परमत्सरतुजनेठे तेवा रे संसारसंग्रुड्मांथी तरीनिकलवुं केमपामिस माटेप्रमादअने मत्सरबेढुत्यज्ञाथया

महर्षयः केपि सहंत्युदीर्था प्युग्रातपादीन्यदि निर्जरार्थं ॥ कष्टं प्रसंगागतमप्यणीयोपीचन शिवं किं सहसे न जिको॥ ४६ ॥ अर्थ ॥ हवेकष्टसहेवाञ्चाश्री उपदेशञ्चापेढे केटलाकमहाक्त्रपी तेजड्बादुस्वा मी दीक्तितचार व्यवहारीपुत्रनीपरें शीतादिक परिसहनासहनारा वली उग्रके० घ णोकविण चातपके० तडकाप्रमुख कप्टने उदरीनेपण निर्क्तरानेञ्चर्थेंसहेढे तेवारेंहे साधुतुं मुक्तिनेतोवांढेढे तेवारें प्रसंगथी उदयज्वाव्युं एहवोसव्पमात्र कष्टप्रतेकांन चीलहेतो ज्वनेकप्रसद्यादिना मुक्तिकेमपामिस एजावार्थ ॥ ४६ ॥ यो दानमानस्तुतिवंदनादिजि न मोदतेऽन्येने तु डर्मनायते ॥ छाला जलाजादिपरीषहान् जयन् यतिः सतत्वादपरो विमंबकः ॥ ४९॥ अर्थ ॥ हवेश्वसाधुपणा तथा साधुपणानो जेददेखाडेढे जेलाजञ्चलाजादिक प रिषहनेजीपतोथको यहस्थनुंञ्चाप्यो छहारउपधिप्रमुखदान तथासत्कारस्तुतिप्रमु खमान इत्यादिकेकरी हर्षपामेनही छनेञ्चलाज छापमान प्रहारादिकें छहवायनही तेहिजपरमार्थथी यतिजाणवो छने छपरके० बीजाजेदान वंदनादिकथी हर्षपामे तथा छाजाजनंदादिकथी छहवाय तेयतिनावेषे विडंबकके० नटरूपजाणवा ॥४ ॥

द्धज्रृहस्येषु ममलबुद्धिं तदीय तत्त्या परितप्यमानः ॥ अ

निर्हतांतःकरणः सदा स्वै स्तेषां च पापैर्श्वमिता जवसि॥४८॥ अर्थ ॥ हवेमनोगुप्तिराखवानेअर्थें यतियें यहस्थनी चिंताकरवीनही तेकहेने हेसाधुतुंयहस्थनेविषे ममखनीबुद्धिरतोयको अनेयहस्थनीचिंतायें तपतोयको पोतानापापें तथायहस्थनापापें निरंतरव्याकुजचित्तवंतथको संसारमांजमीसा।४०॥

त्यक्त्वा ग्रहं स्वं परगेहचिंता तप्तस्य को नाम गुणस्तवर्षे॥ आजीवि काऽस्ते यतिवेषतोऽत्र सुर्ड्धगतिः प्रेत्य तु र्डनिवारा ॥४ए॥ अर्थ ॥ हेसाधु पोतानुंवरमूकीने वलीपारका श्रावकादिकनाघरनी चिंतायेंकरी तुजनेशोग्रणने एकघरमूकी घणाघरनीचिंतायें कोइग्रणनथी आजवमांतोतुजने यति वेषनाप्रतापथी आजीविकाचालेने पूणपुरजवेंतो तुजने अतिशयर्ड्यगतिर्डार्नवारक

एइवा नरकादिकने पणपरजर्वे डर्गतिनोवारनारकोइन्थी एनावार्थ ॥ ४९ ॥ कुर्वे न सावद्यमिति प्रतिक्तां वदन्नकुर्वन्नपि देहमात्रात् ॥ शण्या

दिकत्येषु नुदन् गृहरुयान् इदा गिरा वाऽसि कयं मुमुक्तुः॥ ८०॥ अर्थ ॥ हवेतुंकायामात्रथीसाधुढो पणमनवचनथीसाधुनथी तेकहेढे हेमुक्तिवां ढकसाधुतुं नित्यप्रतें झावदयककरतां सबं सावज्जोगं पच्चखामि जा जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं इत्यादिकपाठकहीने ढुंसर्वसावद्यकरुंनही एहवीप्र तिज्ञाकरतोथको तेसावद्यमात्र शरीरथीज झणकरतोथकोथयो पणशय्या जेउपाश्र यप्रमुख कार्यनेविषे यहस्थनेध्रेरतोथकोढो तो तेमांमनथी झनेवचनथी मुमुकु तेशा नोढे एटजे मन वचन कायायेंकरी सावद्यमूके तेहनेमुमुकुकहियें छनेतुंतोकायामा त्रथीज सावद्यकरतोनथी पणमनथी सावद्यचिंतवेढे छनेवचनथी सायद्यकर्मधेरेढे तेमाटेमनथी तथा वचनथी मुमुकुनथी मात्रकायाथीज मुमुकुढे एजावाथे इहांप्रेर यतिशिक्तोपदेशाधिकार.

णाते आदेशदेवामात्रजजाणवी बीजीप्रवर्त्तनरूपप्रकरण इत्यादिकप्रेरणीयने एटले पूर्वेपणश्रावकें एकतकखांने लाजनुंकारणने इत्यादिकप्रेरणाकखानुंतो साधुनेव्यवदा रनेज यथाश्रीरायप्रश्रीयसूत्रे ज्जनमेयंसुरियाजा पुराणमेयंसुरियाजा किवमेयंसुरिया जा करणिक्जमेयंसुरियाजा आइणमेयंसुरियाजा अप्रणुनायमेयंसुरियाजा इत्यादिक विधिवाक्यदेखायने तेप्रेरणाजाणवी ॥ ५० ॥

कथं ममलाय ममलतोवा सावयमिइस्यपि संघलोंके ॥ न हे ममय्यप्युदरे हि रास्त्री किंप्ता किंगोति कणतोप्यसून् किं॥ १॥

अर्थ ॥ वलीतेइजकहेने हेसाधोतुं साधुसाध्वी आवकआविकारूप चतुर्विधसंघ मां अमुकागीतार्थनावखतमां आचैत्यकराव्युं एहवीमहोटाइपामवानेअर्थे तथाआ अमारागडनो चैत्यउपाश्रयादिकने इत्यादिकममत्वथकी संसावयकर्मवानेन्ने संसा रीनीपरे सारंजकार्यसर्वमाथेलेइने करवासुंवांनेने अथवासंघमां महत्वपामवानेअर्थे तथाममत्वथकीज सावयजे धनप्राप्ति प्रमुखतेसुंवांनेने जेमाटे सोनानीनुरीपण पे टमांचापीथकी सुंप्राणहरणनथीकरतीके. एटलेसोनानीनुरीपण पेटमांमारीथकी प्रा एइरेने तेमसंघनिमित्तपण अविधियें सावयकर्मकीधुंते संयम्हूपप्राणनेहरेने्यरा

रंकः कोपि जनाजिजूतिपदवीं त्यक्ला प्रसादा जुरोर्वेषं प्राप्य यतेः कथंचन किंयज्ञास्रं पदं कोपि च ॥ मौखर्यादिवरीकृतर्जुजनतादा

त्राप्यापि चारित्रमिदं इरापं स्वदोषजैश्चेदिषयत्रमादैः ॥ जवां बुधौ धिक् पतितासि जित्तो हतोऽसि इःखैस्तदनंतकालं॥४३॥ श्चर्थ ॥ हवेडर्जनचारित्रपामिने विषयप्रमादत्यजवा तेप्रकारांतरेकहेने हेनिहु इर्जनएहवुंजे चारित्रतेपामिने जोपोतानावांकथी उपना एहवाजे विषयप्रमाद तेणे करीतुंसंसारसमुड्मांपमी्श तेवारें ते श्चनंताकाजसुधी चारगतिसंबंधीनाइःखेकरीने

पीडाइश तेमाटेधिःकारतेतुजने जेतुंचारित्रनेविषे उजमालयातोनयी ॥ ५३ ॥

कछमपि समवाप्य बोधिरतं युगसमिलादिनिदर्शनाहुरापं ॥ कुरु कुरु रिपुवर्यतामगच्चन् किमपि हितं लज्ञसे यतोऽधितं शां॥ शा अर्थ ॥ हवेद्दष्टांतसहित बोधवुंर्ड्जनपणुंकहेन्ने हेसाधुतुंयुगसमिलादिक दशदृष्टां तेंकरी डर्जनएहवुं समकेतरूपरत तेघऐकष्टेंपामिने आगलेंवद्र्यमाण विषयादिक शत्रु तेहतुंआधीनपणुंत्यजतुंथको कांश्कआत्मावुंहितजे संयमादिकतेकर जेथकीवां नितसुखपामे. चुझ्ग पासग धन्ने जूए रयऐाय सुमिण चक्केश्र ॥चम्मजूगे परमाणु दस दिहंता मणुयलंजे॥ र ॥एदशदृष्टांतनानामजाएवा ॥ पुबं तेहुकज्जगं अवरं ते तस्स ह कत्ममिलाव ॥ जुगनिइंमि पवेसो इय संसइव मणुआलंजो ॥ र ॥ इत्यावद्यके ॥ थ ॥

धिषस्तिमे ते विषयप्रमादा असंग्रता मानसदेहवाचः ॥ असं

यमाः सप्तदराापि हास्या दयश्चबिज्यच्चर नित्यमेज्यः॥ ८८॥ अर्थे ॥ हवेनामथकी शत्रुदेखामीने तेथीदूररहेवानो उपदेशञ्चापेने हेसाधो वि षयजेशबादिकपांच तथाप्रमादजे मद्यादिक पांच अने असंवृतकहेतां मोकलामू क्या एवाजे मनवचनकायानायोग तथा प्राणातिपातादिक पांचअव्रत अनेपांचेंडि यतुं अएाजीततुं तथाक्रोधादिक चारकषायनो अपरिहार अनेमनवचनकाया एत्र एायोगने इःप्रवर्त्तियेंप्रवर्त्तावतुं एसर्वमलीसत्तर असंयमनास्थानक तथावली हास्य रति अरति नय शोक इनज्जा ए हास्यषट्क एटलां ताहाराशत्रुने तेमाटेएथकी सदाकाल बीहीतोथको विचरजे ॥ ५५ ॥

गुरूनवाप्याप्यपहाय गेह मधीत्य शास्त्र खपि तलवांचि॥

निर्वाहचिंतादिजराद्यजावे प्युषे न किं प्रेत्य हिताय यत्नः॥८६॥ अर्थ ॥ हवेसर्वसाममी मव्यावतांपण आत्महितकांनथीकरतो तेकहेवे हेरुषितुं घरतांमीने गुरुजेधर्माचार्य तेहनेपामीने तथातत्वप्ररूपक शास्त्रजेसिदांत तेजणीने पण तथानिर्वाहजेआजीविका तेहनीचिंता अनेआदिशब्दथी वस्त्रपात्र वसतिप्रमुख नीचिंता अनेराजजय चौरजय इत्यादिकतेहनो जरजेसमूह तथावलीआदिशब्दथी गूह राज देशांतर जलपंथ प्रमुखव्यापार तेहनो अजावबतां पण परलोकना हितने अर्थें कांजयमनथीकरतो एटले सकलसामयीने योगेपण जाखात्महितनथी साथ तो तोपढे घणोज शोचकरीश एनावार्थढे ॥ ५६ ॥

विराधितैः संयमसर्वयोगैः पतिष्यतस्ते जवङःखराशौ ॥ शास्त्रा

णि शिष्योपधिपुस्तकाद्या जक्ताश्च लोकाः शरणाय नालं॥८९॥ अर्थ ॥ हवेसंयमग्रहीने संयमविराधनानकरवी तेकहेने हेयतितेंविराध्या एहवा जे संयमनासर्वयोग एटले मूलगुणउत्तरगुणादिकविराध्यातेहेतुयेंकरीने संसारना इःखसमूहमांपडतातुजने शास्त्रजेआगमादिक तथाशिष्यजे छपधीपुस्तकप्रमुख तथा वलीनकलोकजे श्रावकश्राविकादिक तेकोइ्शरणआपवाने समर्थनहीथाय पण एक संयम मात्रज अविराध्यो थको शरणदाइषारो ॥ ५९ ॥

यस्य क्रणोपि सुरधामसुखानि पल्यकोटीर्न्छणां हिन

वतीं ह्यधिकां ददाति॥ किं हारयस्यधम संयमजीवि

तं तत् हा हा प्रमत्त पुनरस्य कुतस्तवाप्तिः ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवेसंयमेंजीवितनुं फलदेखाडी प्रमादनोपरिहार उपदेशेने हेसाधो संय मजीवितनुं क्णजेमुहूर्त्तमात्र तेपणपुरुषनेनिश्चयची साधिक बाणोकोमिपव्योपमल गें देवलोकनासुखआपे यडकं प्रतिक्रमणुसूत्रवृत्तौ सामाइयंकुणंतो समनावंसा वर्डअघडियडगं ॥ आउंसुरेसु बंधइ इत्तिय मित्ताइ पलियाई ॥१॥ बाणवईकोडीउ लरकगुणसहिसहस्सपणवीसं॥ नवसयपणवीसाए सतिहा अडनाग पलियस्स ॥ शा इति बाणुकरोड ञ्रोगणसावलाख पचीसहजार नवसेंपचीश एटलापव्योपम अनेएक पत्योपमना नवनागकरीयें एदवाञाठनवमांश अनेते उपरवली एकनवमांशनो एक तृतीयांश एटलुंदेवायु बेधमीना एकसामाइकथीबंधाय ते आंके करी लिखियेंछैयें ए२ ५ए २५ ए २५, ७१. तो हाहाइतिखेरे हेअधमनीचप्राणी तुं संयमेंजीवितने के महारेने हेन्रमादवंतफरीनेतुजने एसंयमनीप्राप्ति क्यांथीयाज्ञे ॥ ५७ ॥ नाम्नापि यस्येति जनेऽसि पूज्यः शुद्धात्ततो नेष्ठसुखानि कानि॥ त त्संयमेऽस्मिन् यतसे मुमुद्दो ऽनुजूयमानोरुफलेपि किंन ॥थए॥ अर्थ ॥हवे६ारसमाप्तिना मंगलनेअर्थे संयमनाग्रजफल देखाडी शिद्राकहेने हे मोक्रार्थीसाधु जेसंयमना केवलनाममात्रयीज एटलेसंयमी एहवुंनाममात्र धराव्या यीज प्रत्यक् प्रकारें करी लोकनेविषे तुं पूजनीकथयोगो तोग्रुद् निर्मल संयमधी शाशास्वर्गमोद्दादिक वांत्रितसुखनहोय एटजेसंयमधी अनीष्ठसुख होयज तेमाटेप्र

29

खक्दइयमान जेह्तुं महाफलअनुनवायने एहवाए संयमनेविषे तुं कांड्यम नथी करतो सर्वथा डयमकरवोज युक्तने ॥५७॥ इति श्री अध्यात्मकव्पडुमे यतिशि क्वानिधानोनाम त्रयोदशोधिकार, संपूर्णः ॥

ञ्जय सामन्यतो यतीन् विरोषधर्मस्यग्रहिणश्राश्रित्य मिथ्यातादिसं वरोपदेशः॥ मिथ्यातयोगा विरतित्रमादा नात्मन्सदा संरुणु सौख्य

मिछन् ॥ असंद्रता य जवतापमेते सुसंद्रता मुक्तिरमां च द्युः॥ र ॥ अर्थ॥ इवे यतिने तत्र्यासम्यक्तमूलवारवृत्तधारक आवकने साधारण मिण्यालाव्रति कषाय योग निरोधोपदेश तथा संवरोपदेश नामाचौदमो अधिकारकहेढे तिहांप्रथमक मैबंधनाहेतुजे मिथ्यालादिक तेह्रनुंसंवरकहेढे हेआत्मातु सुखनेवांढतो होयतोमिण्या लजे अनिग्रहिकादिकपांच तेमांअजियहिक तेपोतानाशास्त्रादिकनां ममल्वथी कदाय हकरवो तेकुतीर्थिपाखंडादिक बीज्तंत्र्यनाजियहिक ते सर्वे देवाः सर्वे युरुवः सर्वे धर्मा श्र आराध्याः एह्वोअजिप्राय जेसामान्यप्रारुतलोकोनोते त्रीज्तंत्राजिनिवेशिक ते व सुनुं यथाहिथत स्वरूपजाणेषके पण कोइइष्टाजिनिवेशना वशर्थी पोतानुं मतथा पवानेअर्थे गोष्टीमाहिलादिकनीपेठे असत्यरूपणानुंकरचुं चोथोसांशयिक ते देवादि कतत्वनेविषे आसाचूं एमसंदेहधरवो पांचमुं अनाजोगिकते अनाजोग नावशयकी एकेंडियादिकनेविषे जीवादिकतत्वनुं अणजाणतुं ५ एपांचमिण्यात् तथा अग्रजनमनोयोगादिकत्रण अनेअविरतिते प्राणातिपातादिकपांच तथाप्रमाद जे मद्यादिक पांच एचारेनेसदाकाललगे संवरवुंकेमके एचारेंने अणसंवस्तायका संसा रनातापप्रत्ये आपे अने संवस्त्रायका मुक्तिरूपिणी लक्क्यीनेआपे ॥ १ ॥

मनः संटणु हे विदन्नसंटतमना यतः ॥

याति तंडलमःस्यो जाक् सप्तमीं नरकावनीं ॥ १॥

अर्थ॥ हवेप्रयमयी मनतुंसंवरउपदेशेढे हेपंभितञ्चात्मा तुंतारामननेसंवर केमके मनने संवरे रहित एवुंजे तंडलमत्स्य तेउतावलुं थोडाकालमांज सातमांनरकप्रथ्वीयें जइञ्चवतरे एमत्स्यसमुझ्माहेला महोटामत्स्योनी आखनीपांपणमाहे सूक्त्ममस्सिने गर्ने सातमीनरकथीचवीनेञ्चवतरेढे तेमत्स्य तंडलप्रमाणगर्नजथाय पढेतेमहाम त्स्यना मुखनाफाडमा पेसतांनिकलतां एहवाञ्चनेकन्हाना मत्स्यादिकदेखीने तेतंडल मत्स्यएहदुंचिंतवेजे हाहाइतिखेदेजो माहारी आवडीमोहोटी कायाथइहोततो ढुंआ सर्वजीवनाकोलियाकरुं पणएमांथीएकेनेजावानआपुं एवुंमहाडध्यीन चिंतवतोथको अंतर्मुहूर्त्तप्रमाण आयुत्तोगवीने एकमुहूर्त्तने अंतरेवली सातमीनरकष्टथ्वीयें जइ अ वतरे एरीतेंजीवते वचन तथाकायायें अशक्तथकोहोयतो पण मात्रएकमननाज अ संवरथकी तंडलमत्स्यनीपेठें डर्गतिगामीथाय ॥ २ ॥

त्रसन्नचंडराजर्धे मनःत्रसरसंवरौ॥नरक

स्य शिवस्यापि हेतुजूतौ क्रणादपि ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीते उपरज दृष्टांतकहेने हेप्राणि मननुंप्रसरजे डथ्याननीप्रवृत्ति अने सं बरजे डथ्यानयीनिवृत्ति तेबेडु एकक्रणमात्रमांजेम प्रसन्नचंड्राजक्षिनेनरकनां अने मुक्तिनापण कारणथया केमकेतेने मननाडर्थ्यानथी एकक्रणमात्रमां सातमांनरकनुंद

लमेलव्युं अने तेजमनना संवरथी एकद्वणमां केवलकानपण उपार्ज्यु. ॥ ३ ॥ हवेसंद्वेपथीतेप्रश्नचंड्राजक्तिंनोसबंधलखीयेंबैयें झितिप्रतिष्टितपुरमां प्रसन्नचं इराजा राज्यकरताहता अन्यदातिहां श्रीवीरखामी समोसखा प्रसन्नचंइराजा सह परिवारें वांदवात्राव्यो देशनासांजली वेराग्यपाम्यो एत्रनेराज्येस्यापी श्रीवीरपासें पोतेदीक्तालीधी अनुक्रमेगीतार्थवयो अन्यदाविहारकरतो राजगृहनगरेंआव्यो ति हांजिनकल्पीनी तुव्यनानेखर्थे स्मशानमां काचलग्गधरीरह्योने एटलामांश्रीवीरखा मीराजगूहनगरेंसमोसखाने नगरलोकसर्व नगवंतने वांदवाजायने एटलामांकोइए क बेवणिक तेक्तित्रतिष्ठितनगरची आव्याने तेमांथीएकवणिक प्रसन्नचंड्राजर्षिने जोइबोल्यो केधन्यतेत्रापणाराजानेजे राज्यलक्कीतृणनीमाफकत्यजीने ध्यानाधिरूढथ को उग्रतपकरेने तेसांजजीबीजोवणिकबोव्यो केञ्चहोधिःकारनेएनातपने एतुंसुखजो वायोग्यनची केमकेएबापडाबालकपुत्रने राज्यन्त्रापी मूढयइनिकव्यो अनेपार्वलतो सीमाडेबीजाराजायेंत्रावीनेबालकनुंराज्यहरीलेवानगरघेखुंनेनगरतथादेशनालोकसर्व अनाथययाथका बहुतलपेढे माटेदेशनांगसे घएंअनर्थयाशे तेथीएतेंग्रंधर्मआराधेढे ते सांचलीप्रसन्नचंड्राजर्षि ध्यानयीचूकीने चिंतववालागो केञ्चहोसुजवेठा माहारुं राज्यले एवोकोएने एमरोइथ्यानमां व्याप्तथइने मनसायेंज महासंयामकरवामांमधो तेसमयेंश्रेणिकराजा श्रीवीरने वांदवाजातांमार्गमां तेकाउलग्गधरसाधुदेखी जक्ति पूर्वकवांदी तेइनीज्यतपस्याने अनुमोदतो समोसरणेपहोतो त्यांश्रीवीरनेवांदिनेषु व्युं जेखामीएप्रसन्नचंड्राजर्षि ध्यानाधिरूढअवस्थामां मेंवांद्यो तेत्र्यवस्थाने समयें काल करेतो ज्ञीगतिपामें जगवंतेंकह्यं सातमीनरकपामें तेसांजलिश्रेणिकसंचांतयइर ह्यो इवेप्रसन्नचंड्राजर्षियें मनयीसंग्रामकरतां सर्वशत्रुहत्या अनेएककोइमहोटा श त्रनीसाथेयु ६करता आयुधसर्वन्रष्टथयाने त्यारेजाण्युंजे माथेंलोइनोटोपपहेखोने ते लँइनेशत्रूनेमारुं एमचिंतवी माथेदाथनाख्यो एटलेमस्तकतत्कालनुं लोचितमुंमदेखी

ने मनमांसंवेगपाम्यो पश्चात्तापकरवालाग्यो हाहाञ्चामेग्रुंडर्थ्यानचितव्युं मिन्नामिडक डरेवालागो एवामांफरीश्रेणीकें वीरनेपुढ्युं हेखामीआसमये राजार्षकालकरेतोशीग तिपामे जगवंतेञ्चनुत्तरविमानकद्युं तेसांजलीविस्मितचइने श्रेणिकेपुढ्यं कहोस्वा मी पहेलेप्रश्नेतोतमे नरककद्यों तेएतपस्वीनेकेमसंजवे अनेएकमुद्गर्तने आंतरे अनु त्तरविमानकद्युं तेपणञतमंजस अथवा चांतेकरीनेमें अन्ययासांनृद्युं तेवारेंन गवंते यथास्थित सर्ववृत्तांतेंकरी श्रेणिकनोसंदेह टाव्यो एटलामां देवइंडनिनो नादसांजजीने श्रेणीके पुढ्युं हेखामि आमहोत्सवक्यांथायने जगवंतेकद्युंजे प्रस न्नचंइराजर्षिने केवलज्ञानचपनुं त्यांदेवता महोत्सवकरेळे एमएप्रसन्नचंइराजर्षिने एकमुहूर्त्तनेश्चंतरे मननोव्यापार नरकहेते अनेमुक्तिहेतेपणथयो ॥

मनोऽप्रवृत्तिमात्रेण ध्यानं नैकेंडियादिषु ॥ धर्म्य

शुक्तमनःस्थैर्यं जाजस्तु थायिनः स्तुमः॥ ४॥

अर्थ ॥ हवेपवनसाधनादिकथी मननोरोधनिरर्थकने तेकहेने केवजमननीअप्र वृत्तिजे मनोव्यापाररहितपणुं तेणेकरीने एकेंडि्यादिकजे एकेंड्यि बेंड्यि तेंड्यि चौ रेंडिय असंक्षिपंचेंडिय तेहनेविषेध्यानजे मनोरोध लक्वण तेग्रंनथी एटलेपवनसा धनादिक मनोरोधकरवाथी जोध्यानथायतो एकेंडियादिकनेविषेथाय केमकेतेहनेस्व नावथीज मननेछनावेंकरी मनोव्यापारनीप्रवृत्तिनथी तेथीपवनसाधनादिकतेकोइस माधिलकृण ध्याननो उपयोगीनथी श्वासरोधादिक क्रिष्टकर्मथी साइसुं मनआर्तियें व्याकुलयाय पणजेधर्मध्यान अनेद्यकथ्यान तेणेकरीने मननीस्थिरतानेजजे एवाजे थ्याननाकरनार तेनेज स्तवियेंंबैयें एटलेथ्यानते तेनुंजप्रमाणवे इतिजावः ॥ ४ ॥ सार्धं निरर्धकं वा यन्मनः सुध्यानयंत्रितं ॥ विरतं

डविंकल्पेन्यः पारगांस्तां स्तुवे यतीन् ॥ य ॥

अर्थ ॥ इवेध्यानेकरी जेइनुंमनसार्थकके ० सफलने अथवानिरर्थकके ० निष्फलने तोपण ग्रुनध्यानेकरियंत्रित एटले सांकर्त्त्युकुं डार्वेकल्पजे अग्रुनकार्यनामनोरथ ते हथीविरम्यूंग्रेतोतेसदाथ्यानजग्रे एहवाजे संसारनापारगामी साधुतेहने हुंसतुं हुं ॥५ वचोऽप्रदत्तिमात्रेण मौनं के के न बिश्वते॥ निर

वद्यं वची येषां वचेागुप्तांस्तु तांस्तुवे ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ द्वेवचनयोगतुं संवरजपदेशेवे केवलवचननी अप्रवत्ति एटलेमात्र वच ननेज अणजचरवेकरीने कोणकोणएकेंडियादिक तथा पंचेंडियमांपण रोगविशे

षथी तथामनुष्यमांपण सुंगाबोबडाप्रसुखप्राणी मौनपणानेनथीधरतासुं एटझेतेसर्वेमौ नपणोजधरें तोतेथी तेइने वचनगुप्तिवंतनकहियें पण जेहनुंवचन निरवद्यके० पाप रहितहोय एटलेवचनबोख्यानी शक्तिंढतांपण सर्वथासावद्यवचननबोले तेनेवचनगुप्ति वंतकहियें तेवानेहुंस्तवुंडुं पणमात्रमौनपणोज धस्वायी वचनगुप्तिवंतनकहियें॥६॥ निरवयं वचो ब्रुहि सावखवचेनैर्यतः ॥ प्रया ता नरकं घोरं वसुराजादयोद्धुतं ॥ 9 ॥ अर्थ ॥ इवेद्रष्टांतेकरीने सावद्यवचननुं अनिष्टफलदेखाडेने हेप्राणितुं पापरहि तवचनबोल केमके सावद्यवचनेकरीने वसुराजा प्रमुख ते घोररौड एहवोजे नरक तेने पाम्यां तेवसुराजानोसंबंध श्रीहेमाचार्यकृत रामचरित्रमांथी विस्तारेंजोइलेवो ए मजाणी असत्यवचन सावद्यवचननो परिहारकरवो ॥ ७ ॥ इहामुत्र च वैराय इर्वाचो नरकाय च ॥ इप्रसिद ग्धाः प्ररोहंति ड्वाग्दग्धाः पुनर्नहि ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ वलीतेहिजकहेने जेडवीचनो तेआजवमां अनेपरजवमांपण वैरकारीथा य अनेवलीनरकदाइपणयाय जेमाटेअझियेंकरीदाधाजेवृद्धादिक तेफरीनवपलवधा य पण डर्वचननादाधाजेमनुष्य तेनवपलवनथाय एटलेस्नेहांकुर तेनेप्रगटेनही केम के इरवचनथी उपनोजे वेरनाव तेजन्मांतरेपणनमटे इतिनावः ॥ ७ ॥ च्यतएव जिना दीका कालादाकेवलो भवं॥ उपव द्यादिनिया ब्रुयु र्ज्ञानत्रयजृतोपि न ॥ ए ॥ अर्थ॥ एटलामाटे दक्तिलीधापते केवलकान उपजेतिहालगें जिनजेतीर्थकरदेव तेमति श्रुत अवधि एत्रएङ्गानना धारकढतांपए अवद्यजेपाप तथाआदिशब्दधी वचनते प्यानविघातादिकने एमजाणी तेइनाजयथी बोलेनही यद्यपि जगवंतने न ग्रस्थपणे मनपर्यवज्ञाननी सत्ताहोय तथा पिइहांत्रणज्ञानना धारककह्या तेजाणि येंबैयेंजे मनपर्यवज्ञाननुंतो मात्र मननो पर्यायजाएवानुंज साम्यर्थवे तेमाटेखा चार्ये इहांकसुंनही अनेउपाध्यायश्री रलचंइगणिकत एज्यंथनी टीकामांपण एम जलख्युं ने वलीविहोष नुदिवं तेविचार वुं ॥ ए ॥ रूपया संदर्ण स्वांगं कूमी ज्ञाननिद्रीनात् ॥ सं टतासंटतांगा यत् सुखडःखान्यवान्नुयुः॥ १०॥ अर्थ ॥ हवेकायसंवरकहेने हेप्राणि तुंकरुणायेंकरीने कांचबानादृष्टांतनानि

दरीनयकी पोतानीकायानेसंवर केमके कायानासंवरवंत अने असंवरवंतते अनुक्रमे सुखअनेइःखपामे एटलेकायाना संवरवंततेसुखपामे अनेअसंवरवंतते इःखपामे जे मबेकाचबाइता तेमांचीएकेपोताना अंगसंवखातो पापीशीयालयीमृत्युनपाम्यो अ ने बीजेपोतानाअंगसंवखानही तो पापीशीयालयी अकालमृत्युपाम्यो एदष्टांत सवि स्तरपणे श्रीज्ञातासूत्रना चोथाअध्येनथी जाणवुं ॥ १०॥

कायस्तंजान्न के के स्यु स्तरुस्तंजादयों यतः ॥ शि

वहेतुः किया येषां कायस्तांस्तु स्तुवे यतीन् ॥ ११॥

अर्थ॥ केवलकायने स्थिरतामात्रयीतोतरुजे वृक्त तथा अचेतनजे स्तंनादिक ते कोणकोणसंवरवंतनथी अर्थातजेकोइ कायव्यापारना असमर्थने तेसर्वकायसंवरवं तजने पणजेहनीकियाजे कायव्यापार तेमोक्त्नेअर्थेंहोय तेहने कायग्रसिवंत कहियें वैयें जेकायव्यापारने नतेसामर्थें पण अग्रुनकायव्यापारने रुंधे अनेग्रुनक्रियानो खप करे तेहने कायग्रसिवंतकहियें इतिजावः ॥ ११ ॥

श्रुतिसंयममात्रेण राब्दान्कान् के त्यजंति न॥

इष्टानिष्टेषु चैतेषु रागदेषों त्यजन्मुनिः ॥ १ ९ ॥ अर्थ॥हवेपंचेंड्यिनुं संवरकहेने तेमांप्रथम श्रोत्रेंड्यियाश्री कहेने केवलकानना व्यापारना निरोधयकीज कोणकोणएकेंड्यि बेंड्यि तेंड्यि चोरेंड्यि तथापंचेंड्यिति र्यंच अनेमनुष्यमथ्येपण बेहेराप्रमुखजे श्रोत्रेंड्यिविकल होय तेशब्दनाविषयने नथी त्यजतासुं अर्थातत्यजेजने पणजेवारेंड्ष्टजे मृदंगादिवाजित्र तथास्त्रीकोयलप्रमुखना शब्द अनेखनिष्ठजे खर तथाधूक प्रमुखनाशब्द नेविषे रागअनेद्रेपखजे तेवारेंम्रुनिथाय

चक्तुःसंवरमात्रात्के रूपालोकारूत्यजंति न ॥

इष्टानिष्ठेषु चैतेषु रागदेषौ त्यजन्मुनिः॥१३॥

श्वर्थ ॥ केवलनेत्रव्यापारनेज तजवायकी कोणकोण एकेंडिय बेंडिय तेंडिय त या श्रंध मनुष्यादिक तेदृष्टिविषयने नयीत्यजतासुं अर्थातत्यजेजने पणइष्टजे स्त्रीनां कटाक्त् नाटकप्रमुख तथाश्चनिष्टजे अमेध्य बीजन्सप्रमुख एवाजेएदृष्टिनाविषय तेड् नेविषे राग अने देषने त्यजे तेवारें ते मुनियाय ॥ १३ ॥

घ्राणसंयममात्रेण गंधान् कान् के त्यजंति न ॥

इद्यनिष्टेषु चैतेषु रागदेषों त्युजन्मुनिः ॥ १४ ॥

अर्था केवलनाकना व्यापाररहितपणाथी कोणकोण ग्रुनाग्रुनगंधने एकेंड्रिय

बेंडियादिक तथाबीजापण घार्णेडियें विकलचयेला प्राणि नचीत्यजतां अर्थातत्य जेजने पणइष्टजे फुलप्रमुख अनेअनिष्टजे अमेथ्यादिक एवाजेगंध तेहेनेविषे राग अने देषस्यजे तेवारें तेमुनियाय ॥ १४ ॥ जिव्हासंयममात्रेण रसान्कान्के त्यजंति न ॥ मनसा त्यज तानिष्टान् यदी इसि तपः फलं ॥ १ ॥ अर्थ॥ केवलजिव्हाना संवरमात्रथीज कोएकोएग्रजाग्रज रसने पृथ्वीकायादिक एकेंडिय तथाबीजापण जावरसनेंडियथी विकलथयेलाप्राणी ते नथीखजतासुं अ र्थातत्यजेजने पणहेत्रात्माजो तुं तपनुंफलवांनेने तो तेजेइष्टवांनित मधुरादिकरस तेने मनसाकहेतां मनोयोगपूर्वक समता परिणामेकरीनेत्यज्ञ ॥ १ ५ ॥ लचःसंयममात्रेण रुपर्शान् काम्के त्यजंति न ॥ इष्टानिष्टेषु चैतेषु रागदेषौ त्यजन्मुनिः ॥ १६॥ अर्थ ॥ केवललचाजे स्पर्श्वनेंडि्य तेइनो संयमजे स्पर्शेज्ञानना नलेवानी ग्रून्यता तेणेकरीने कोणकोणप्राणी छनाग्रुनस्पर्शने नथीत्यजता अर्थातत्यजेजने यद्यपि एकेंडियादिक सर्वजीवने स्पर्शेतुं विषयदोयने तथापिकुष्ठादिक रोगनावशयकी लचानीबहिरिनाधणीने स्पर्शनुंज्ञाननजहोय एजावने पणइष्टजेस्वीस्पर्शादिक तथा अनिष्ठजे ताप शीत मांस मला प्रमुखनेविषे राग देषनेत्यजे तेवारेंजमुनिषाय॥१६ बस्तिसंयममात्रेण ब्रह्म के के न विश्वते ॥ मनःसंयमतो धेढि़ धीर चेत्तत्फलार्थ्यसि॥ १७॥ अर्थ ॥ हवेवलीस्पर्शनेंड्यिमां विशेषकहेने बस्तिके० मूत्राशय एटलेगुहोंड्यि ते नासंवरमात्रथीज ब्रह्मचर्यधारणनथीकरतां सुं एटले नारकी संमूर्विमपंचेंडिय प्रमुख तथा पुरुषरूपनपुंसक अने स्रीरूपनपुंसक इत्यादिक कोएकोए प्राणी मैथुननी अंश किथी शीलधारणनयीकरता एटलेतेसर्व ब्रह्मचर्यवंतजने पणपरिणामविना असक्ति थीपालवुं तेनिष्फलने माटेहेधीरञ्चात्मा जो तुंब्रह्मव्रतनाफलनो अर्थीहोयतो मनने संवरेंकरीने उतीशके ब्रह्मव्रतधार एकर ॥ १ ७ ॥ विषयेंडियसंयोगा जावात्के के न संयताः॥ राग देषमनोयोगजावाद्येतु स्तवीमि तान् ॥ १_७ ॥ अर्थ ॥ हवेसामान्यथी सर्वइंड्यिदिक तेहनोसंयोगजे एकत्रंमलवुंते हनाअजा वथी कोएकोएसंवरवंतनहोय एटलेविषयनोयोग मल्याविनासर्वेसंवरवंतजले पए

जेमहापुरुषने ते तो विषयादिकनो योगन्नतांपण रागदेष छने मनयोगना छनावथी एटजेजेमनथकी रागदेवरहितपणे संवरवंतने तेओनेढुंस्तवुंडुं ॥ १० ॥ कषायान् संवृणु त्राज्ञ नरकं यदसंचरात्॥ महातपस्विनोप्यापुः करटोत्करटाद्यः॥१७॥ अर्थ ॥ एमइंड्रियआश्रित संवरकहोने हवेकषायआश्रितकहेने प्राइके वहेवि वेकीप्राणी कषायजे कोधादिक तेनुंतुंसंवरकर केमकेएकषायना असंवरचकी करम अने उकरम प्रमुख महातपस्वी महानुनाव तेपणनरकनेपाम्या एकरड अने उकरड बे बाह्म एमासीयांइ नाइहता ते वैराग्यथकी दीक्वालइ उग्रतपकरी अन्यदाकुणालान गरियें कोटनाधरनालामां चोमासुंरह्या तिहांनगरना जलप्रवाहनेपूरें साधुरखेतणा इजाय एमजाणीदेवतायें कुणालानगरीठपर वरसादयंजाव्यो कुणालाशिवायबीजे सर्वत्रवर्षादवरस्युं केटलेक दहाडे तेवातजाणी नगरलोकें ताडनातर्जनाकरी तेसाधु नेकाढ्या तेवारें क्रोधझेखर करमबोव्यो वर्षमेघक्रणलायां तेवारें उकरमबोव्यो दि नानि दश पंच च वलीकरमबोव्यो मुशलप्रमाणधारानिः वलीवकरमबोव्यो यथारात्रौ तया दिवा तेवचनथी छहोरात्रमुशलधारायें कुणालानगरी उपर मेघवूनो तेहचीकु णाजानगरी जोकसहिततणाइगइ महाछनर्थथयो तेवारपर्वे त्रीजेवर्षे साकेतपूरें ते पापनेञ्च एञालो बेढते करमञ्चने उक्करडबेमरीने सातमीनरके कालनामा नरकावास मां बत्रीससागरोपमनेआयुर्थे नारकीपणे अवतस्ता एमजाणी कषायनोसंवरकरवो. यस्यास्ति किंचिन्न तपोयमादि ब्रयात् स य तत्तुदतां परान् वा॥ य स्यास्तिकष्टाप्तमिदं तु किं न तडंशजीः संटणुते स योगान् ॥१णा अर्थ॥इवेवलीमनोयोगादिकनो संवरकहेने जेप्राणिनेकांइ तपसंयमादिकनथी अ विरतिने तेप्राणिजेमतेम असंबंधबोले तथाअन्यजीवनेपीडाकरे एटले अव्रती जेजेअ रूखकरे तेतेघटेने पणविरतिवंतप्राणितो एतपसंयमादिक घणुंजकष्टेंप्राप्तिचायने ए मजाणी तद्वं शनीः के० रखेमहारांतपसंयमनो विनाशयाय एमबीही तो थको मनोयो गादिकने केमनसंवरे एटलेविरतिवंतने सर्वथासंवरकरवुंज एजावाधीने ॥ २० ॥ जवेत्समग्रेष्वपि संवरेषु परं निदानं शिवसंपदा यः ॥ त्यजन् कषायादिजडविंकल्पान् कुर्यान्मनः संवरमिडधीस्तं ॥ ११॥ अर्थ ॥ द्वेवलीमननासंवरनुं आधिक्यतापणुंकदेवे जेमननो संवरवे ते बीजा जेटला संवरने तेसर्वमां मोक्संपदानुं परमकारणने ते माटे विज्ञेषनुदिवंत

ចច

www.jainelibrary.org

पुरुषतो कषायादिकथी उपनाजे कुविकल्पते त्यजतोथको मननोसंवरकरे एटले मु किनुं मुख्यकारणजाणीने विवेकीपुरुषें प्रथममननुं संवरकरतुं इतिजावः ॥ ११ ॥

तदेवमात्मा कृतसंवरः स्यात् निःसंगताजाक् सततं सुखेन॥ निःसंगजावादय संवरस्तद्वयं शिवार्थां युगपङ्जेत ॥११॥

अर्थ॥इवे ए अधिकारनो उपसंदारकदेढे तेमाटे एमपूर्वोप्रकारें ऊतसंवरके० संव रवंतजे आत्मा तेसदाकालें सुखेकरीने निःसंगपणानेजजे अथवा वली निःसंगपणाथी संवरथाय एटले एबेढुनो अन्योन्यकार्यकारण जावजाणवो केमके कोइकनेनिःसंग पणाथी संवरञावे अनेकोइनेसंवरथी निःसंगतापणुंआवे माटेमोद्दार्थीपुरुष तेसंव र अनेनिःसंगता एबेनेसमकालेसेवे ॥ ३१॥ इति श्रीअध्यात्मकल्पडुमे मिथ्यात्वादि संवरोपदेशाख्य अतुर्दशोअधिकार समाप्त ॥ १४॥

अय शुज्ञत्वतिशिक्तोपदेशः॥आवर्यकेष्वातनु यत्नमाप्तौ दितेषु शुदेषु त मोपहेषु ॥ न हंत्यजुक्तं हि न चाप्यशुद्धं वैद्योक्तमप्यौषधमामयापहं॥१॥

अर्थ ॥हवेग्रजप्रवृत्तिशिक्ता एहवेनामे पन्नरमोअधिकारकहेढे एअधिकारमां य तियोग्यशिक्ता यतीनेजाणवी अनेश्रावकयोग्यशिक्ता आवकनेजाणवी इहांप्रथम आ वश्यक करवायोग्यजाणीने आवश्यकआश्रथी उपदेशेकहेढे हेसाधु तथा हेश्रावक तुं पापनानिवारक अनेसर्वेज्ञजाषित एवांजेग्रुद्धनिर्मल आवश्यक सामायिकादिक तथाअवश्यकरणीय पोसह उपवास आलोयणादिक तेहनेविषेउद्यमकर तेनाउपर दृष्टांतकहेढे जेम वैद्यनुकद्युंजेऔषध तेनखाधुंथकुं तथाअग्रद्धद्येजेकाचुं हरितालप्रमुख तेखाधुंथकुंपण रोगनिवारक नथाय तेम सर्वज्ञजाषित आवश्यद्यकजाणीनेपण तेह नीक्रियानकरीयें अथवाअग्रद्धक्रियाकरियें तोतेहथीकर्मक्त्यनथाय तेमाटेदोषरहित ग्रुद्धक्रियायेंकरी आवश्यकादिकनो उधमकरवो एउपनयढे इहांप्रसंगधी सामायिकना दोषलखियेंढेयें १ वस्वेंतथानुजायेंकरीने पलांठीबांधे २ आसनआघुपाछुंफेरवे ३ चपलपणेसर्वदिशायेंजोवे ४ गृद्संबंधीसावद्यकर्मकरें ५ निंतीस्थंजादिकेंओठंगीबे से ६ अंगोपांगमोडे ७ आलसमोडे तथाधर्मकार्येंआलसकरे ठ हाथपगेंकरकडा व जाडे ए शरीरनोमेलडतारे १० खाजिखणे ११ विसामणकरावे १२ निडाकरे ए बारदोषकायथकीजाणचा तथा १ कुवचन कोइनुंमर्मनिंदादिकबोले २ सहसात्कारे अविचार्खुबोले ३ आर्तिमयविसंस्थलवचनबोले ४ आपढरेंबोले ५ सूत्रजणतो अ

<u>r</u>r

उप्रध्यात्मकल्पडुम.

यवानवकारगुणतो वचनसंद्वेपकरे ६ कलड्विवादकरे ७ राजकथादिकविकथाकरे ए हास्यनावचनकहे ए संपदारहितसूत्रनएो १० जावाञ्चाववानाञ्चादेश आपे एद शदोषवचनयीजाणवा वली १ निर्विवेकीमनेकरे १ यशकीर्तिनीवांठायेंकरे ३ धनला जनेऋर्थेंकरे ४ गर्वथीकरे ५ जययीकरे ६ धनपुत्रादिनेऋर्थेनियाणुंकरे ७ सामायि कनाफलनो संदेहकरे ए रीसधरीसामायिककरे ए विनयरहितसामायिकककरे १० जक्तिरहितसामायिककरे एदशदोपमनयीउपजे एम मन वचन छने कायाना मलीने बत्रीशदोषसामायिकनात्यजवा तथावांदणाना ३१ दोष छाने काउसग्गना १ए दो ष ते जाष्यादिक मंथयी जाणीने त्यजवा ॥ १ ॥

> तपांसि तन्यादिविधानि नित्यं मुखे कटून्यायतिसुंदराणि ॥ वि घंति तान्येव कुकर्मराशिं रसायनानीव डरामयान् यत् ॥२॥

अर्थ॥ हवेतपप्रवृत्तिआश्रयी उपदेशे हे मुखके ॰ प्रथमकरती वेलायेंतो छखतृषादि कसहेवांपडे तेमाटे कडवा हे पण आयतिके ॰ उत्तरका खें सुखनाकरनार एहवां जेवि विधप्रकारना ढव अवम दशमादिक तप तेनित्येंकरवां केमकेतेतपज कर्मनासमूहने निवारे हे ते उपरदृष्टांतकहे हे जेमरसायन पारो हरिताल सुवर्णादिक औषधिष्ठो तेहिज ज्वरअनेक्त्यादिक इप्ररोगोनेनिवारे तेम इहांपण उपनय छेवुं ॥ २ ॥

विशुद्धरीलांगसहस्त्रधारी जवानिशं निर्मितयोगसिदिः ॥ सहोपसर्गोस्तनुनिर्ममः सन् जजस्व गुप्तीः समितीश्च सम्यक्॥३॥

श्चर्य ॥ हवेतपकरनार प्रायेंशीलवंतजोऽ्यें तेमाटेशीलश्चाश्रयीउपदेशेढे हेसाधु तुंविद्यद्रिमेलएवाजे छढारसहस्त शीलांगरयतेने धरतोथको नित्यें निर्मित योग सिदिके० निपजावीढे छष्टांगयोगनीसिदिजेऐो छायवायोगजे मनोयोगादिक तेह ना इःप्रणिधानना निवारवारूप समाधिनी सिदिकर एटलेशीलांगधरतोथको मनव चनकायाना योगवशकर एनावार्थढे वलीदेहनेविषे ममत्वरहितथको देवादिकनाक रेला उपसर्ग तेनेसहनकर छानेपांचसमिति तथात्रगुएागुप्ती तेहनेजज ॥ ३ ॥

स्वाध्याययोगेषु द्धस्व यत्नं मध्यस्यतृत्त्यानुसरागमार्थान् ॥ ज्यगारवो जेक्तमटाविषादी हेतौ विशुद्वे वशितेंड्यिाघः॥४॥

अर्थ ॥ इवेशोलवंतने मनस्थिरकरवानिमित्त जेसिद्धांतादिकतुं स्वाध्याय जणवुं

नणाववुं तेइनुं योगजे मनवचनकायायेंकरी नित्यञ्चन्यास करवानेविषे उद्यमकरे वलीत्रागमनाजे अर्थ तेमध्यस्थवृत्तियें कदायहरहितपणे अनुसरे एटजे कदायहें करीने जिनवचननाअर्थनी परुपणाजूठीनकरे वली अगारवके० रुदिगारव रसगा रव सातागारव तेणेरहितथकुं अनेविद्यदिनिर्मलहेतुजे मोइत्साधन तेहनेविषे वि षादरहितथकुं एटजेग्रद्तियाकरतां अविपिन्नचित्तथकुं अनेवलीवशकीधोढे इंड्रिय नोसमूहजेणे एहवुंथकुं जैंक्रेजेठंचनीचकुल ग्रुद्दमानआहारतेहनी गवेषणाकरे ॥४

ददस्व धर्माार्ध्यतयैव धर्म्यान् सदोपदेशान् स्वपरादिसाम्यात् ॥ जगद्वितैषी नवजिश्च कल्पे यामे कुले वा विहरात्रमत्तः ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवेसआयनुंफलते ग्रुन उपदेशने तेमाटेग्रुनोपदेशआश्रीकहेने हेसाथो तुं पोताना अनेपारकानेविषे समानपऐ उपदेशकर एटले आमाहारोनकने दाताने धनाढग्रने एहवानेधर्मकढुं अपवा आ मिष्यात्वी रुपएएदरिइनि एहवाने उपदेशको एकहे इत्यादिककल्पना त्यजी केवलधर्मार्थीपऐकरीनेज पए आहारवस्तादिकने अर्थेनही एप्रकारें नित्यधर्मसंबंधीयाजे उपदेशते कहेतोरहे अनेवली सर्वसंसारीजी वने हितवांग्रतोषको नवकल्पेकरीने प्रामनगरादिकनेविषे ग्रुन उपदेशकरतोरहे त याविहारकरवानी अशकों कुलके॰ प्रामनगरादिकनो एकप्रदेशतेनेविषे प्रमादरहित अर्छ विहारकर इहांकल्पते मागसिरप्रमुख आग्रामास जेक्तुबद्धकाल तेहनाआग्राकल्प आर्थ विहारकर इहांकल्पते मागसिरप्रमुख आग्रामास जेक्तुबद्धकाल तेहनाआग्राकल्प आर्थ विहारकर इहांकल्पते मागसिरप्रमुख आग्रामास जेक्तुबद्धकाल तेहनाआग्राकल्प

कृताकृतं स्वस्य तपोजपादि शक्तीरशकीः सुकृतेतरे च॥ सदा

समीक्तस्व हदाऽग्र साध्ये यतस्व हेयं त्यज चाव्ययार्था ॥६॥

अर्थ॥ इवेग्रजोपदेशनाकहेनारने रूत्यारुत्यनोविचारजोइयें तेमाटेतेआश्रयीकहे हे हेसाधु तयाहेश्रावक तुंपोतानुं तप जप प्रमुखजेकमे ते रूत्यारुत्यकहेतां एटलुंमेंकी धुं एटलुंमेनथीकीधुं एहवुंविवेचन तथाशक्ति अनेअशकि तथापोतानुंसुरुत अनेडः रुत एटलांवाना पोतानामनसायेंसदायविचारीने तेवारपहे मोद्दार्थांथकुं साध्यजे साधवायोग्य तपोनुष्टानादिक तेहनेविषेउद्यमकर अनेवली हेयकहेतां त्यजवायोग्य जेविषयकषायादिक तेहनेत्यज सत्पुरुषने चित्तरूपिणीनूमिनेविषे गुरुपदेश तेबीज त्यदिरूपहोय पहेतेमां विचाररूप जलनासिंचवाथी सुरुतरूपहद्द विस्तारपामेते माटे मोद्दार्थियें हेयउपादेयहोयना विचारपूर्वक धर्मोद्यमकरवो ॥ ६ ॥ परस्य पीमापरिवर्जनात्ते त्रिधा त्रियोग्यप्यमला सदाऽस्तु ॥ साम्यैकलीनं गतर्छार्वेकल्पं मनोवचश्चाप्यनघत्ररुति॥ ९॥

अर्थ॥ इवेजेविचारवंतहोयते त्रियोगीनिर्मलजोइयें तेमाटेतेआश्रयीकहेने हेआ त्मात्रियोगीजे मनवचनकायाना त्रऐयोगतेऐकरी सदाइंनिर्मलया एटलेसर्वजीवडप रें हितबुदिराखीने मनवचनकायानायोग निर्मलकर एजावार्थने केमके परनेपीडा व र्जवायकी काययोगतो निर्मलययोज अनेतेकाययोगनी निर्मलतायी मनपएसमता येंलीन अनेडर्विंकल्परहितयाय तथावचनपए पापव्यवहाररहितयाय इहांआचा यें काययोग सुगमने माटे जुदोकरीने नकह्यो ॥ ९ ॥

मैत्रीं प्रमोदं करुणां च सम्यक् मध्यस्थतांचानय साम्यमात्मन् ॥

सङ्गावनास्वात्मलयं प्रयत्नात् कृताविरामं रमयस्व चेतः॥ ७॥

अर्थ ॥ हवेएत्रियोगीनेनिर्मलताते मैत्र्यादिनावनाथीथाय तेमाटेतेकहेडे हेछा त्मातुं मैत्रीतयाप्रमोद तथाकारुएय अनेमध्यस्थता ए चारनावना तेआत्मानेविषे आए अनेवलीतेनावनायेंकरी सम्यक्प्रकारें समताआए वली प्रयत्नात्के० पॅमि तवीर्थफोरववाथी चित्तने आत्मलयके०ध्यानलीन अनेध्यानर्थी अविषिन्न एहवुं थयुं थकुं ग्रुननावनाजे अनित्यादिक तेहनेविषेरमाड ॥ ० ॥

कुर्यान्न कुत्रापि ममलजावं न च प्रजो रत्यरती कषायान् ॥ इहापि सोख्यं लजसेप्यनीहो ह्यनुत्तरामर्च्यसुखाजमात्मन् ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेएनावनात्रोते ममलनात्यागधीहोय तेमाटेतेत्राश्रयीकहेने हेसमर्थ आत्मा जोतुंकोइवस्तुनेविषे ममलनकरें अनेवली रति अरति अनेकषाय नकरे ए हवोतुं वांग्रनारहितयको रहेतो आजवेंज अनुत्तरविमानवासी देवतानाजेवुं सुखपा में केमके अनुत्तरवासी देवतामां स्वामिसेवकनो व्यवहारनथी तेमाटे संसारिक सुख जोतां अनुत्तरविमाननो सुखते सर्वोत्कष्टजाणवुं ॥ ए ॥

इति यतिवरशिक्तां योऽवधार्यं व्रतस्यश्चरणकरणयो गानेकचित्तः श्रयेत ॥ सपदि जवमहाब्धिक्वेशराशिं सतीर्बा विलसति शिवसोख्यानंत्यसायुज्यमाप्य ॥१०॥ णयी जलाश्रावकपणलेवा तेसंबंधीनीजेशिक्ता तेनेचित्तमांधरीने एकामचित्तचकुं चर णकरणयोगजे चरणसित्तरी अनेकरणसित्तरीनागुण तेनेजेसेवे तेसाधु तथा ते श्रावक शीघ्रके० उतावजुं क्वेशडःखना समूहरूपजे संसारमहासमुइ तेथकीतरीने मोक्सु खतुं अनंतपणुं तेह्रनुं सायुज्यके० जेसहचारीपणुं तेपामीने वलीमोक्त्नाअविनाशीसु खनीपरे पोतेपणत्यां अविनाशीजावपामी विलसतिके० सर्वदासुखनेअनुजवे ॥१०॥ इति श्रीअध्यात्मकल्पडुमेऽछनप्रवृत्तिशिक्तोपदेशाख्यः पंचदशोअधिकारसमाप्त.

> ख्य ग्रंथोपसंहाराय साम्यसर्वरुवं ॥ एवं सदाऱ्या सवरोन सात्म्यं नयस्व साम्यं परमार्थवेदिन् ॥ यतः करस्थाः शिवसंपदस्ते जवंति सद्यो जवजीतिजेतुः॥ १॥

श्वर्थ ॥ हवेयंथना उपसंहारनेश्वर्थं साम्यसर्वस्वनामें सोलमोश्वधिकारकहेने हेप रमार्थनाजाण विवेकीपुरुष तुंएमपूर्वोक्तप्रकारें खन्यासवरोंकरीने साम्यजेसमता ते हने सात्म्यकहेतां आत्मासाथे एक्यपमाड जेसमताथी जवजीतजे संसारसंबंधी जय तेहनेजेदवावांग्रतो एवोजेतुं तेतुजने मोक्ट्नी संपदाश्चो ते तत्कालमात्र करस्था कहेतां हस्तप्राप्तथाय ॥ १ ॥

लमेव इःखं नरकरूलमेव लमेव रार्मापि शिवं लमेव ॥ ल

मेव कर्माणि मनरतमेव जहीह्यवज्ञा मवधेहि चात्मन् ॥१॥

अर्थ ॥ इवेञ्चात्माने ञविद्यानोपरिहार अनेसमतानुंधरवुं कहेने हेञ्चात्मातुंडः खनेकारणें प्रवत्त्यों माटे डःखतेतुंजने एमञ्चागलपण सगलीवस्तुनुं आत्माजकार एरूपजाणवुं वलीनरकनुंकारणतेपणतुंजने वलीसुखपणतुंने अनेमुक्तिपणतुंने व लीकर्मपणतुंने अने मनोव्यापारना प्रकाशकपणाथी मनपणतुंने तेकारणमाटे अव झाजेधर्मकार्यनेविषे अनादरकरवो एटलेहमणा धर्मनथीपातो तोपनेकरीश इत्यादि क कब्पना त्यजोने अवधेहिकहेतां धर्मकार्यनेविषे सावधानरहे ॥ २ ॥

निःसंगतामेहि सदा तदात्मन्नर्थेष्वरोष्वपि साम्यजावात्॥ अवेहि विधन्ममतेव मूलं राुचां सुखानां समतैव चेति ॥ ३॥

अर्थ ॥ इवेसर्वत्रपणे निःसंगपणातुं प्राध्यान्यपणुंकहेढे हेआत्मा तेकारणमाटे सकलपदार्थनेविषे समतानावथी सदाय निःसंगपणाने पाम अनेवली हेनिपुणप्राणि

ሞኝ

सकलशोकनुंमूल ते ममताजने अनेसकलसुखनुंमूलते समताजने एहवुं जाणीने म मताने त्यज अने समताने आदर इतिजावः ॥ ३ ॥

स्त्रीपु धूलिषु निजे च परे वा संपदि प्रसरदापदि चात्मन् ॥ त

रवमेहि समतां ममतामुक् येन ज्ञाश्वतसुखाइयमेषि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ जेनिःसंगताते ममलमुकवाषीजचायने तेमाटेममतात्यजवानुं उपदेशे ने देआत्मा ते पूर्वोक्तकारणयी तुंममतारहितथको स्त्रीनेविषे अनेधूलिनेविषे वली स्वजननेविषे अनेपरशत्रूनेविषे तथा वलि संपत्तिनेविषे अने विस्तारपामतीआपदाने विषे समतानेपामवेकरीने सरखोपरिणामराखजे एटलेमोक्तसुखनोजोक्ताचाइश ॥४

तमेव सेवस्व गुरुं प्रयत्ना दधीष्व शास्त्राण्यपि तानि विघन्॥ न दे

वतलं परिजावयात्मन् येभ्यो जवेत्साम्यसुधोपजोगः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ इवेसमतातेज सकलपदार्थनो सारकरीने उपदेशेढे हेवि ६न् हेआत्मन् तुंडयमकरीने तेहिजग्रुरुनेसेव अनेग्रुरुसेवनाकरीनेशास्त्रपण तेहिजजण तथाशास्त्र जणीने तत्वरहस्यपण तेजचित्तमांचिंतव केजेग्रुरुषी अनेशास्त्रथी तथाजेतत्वथी सम तारूपीयुं जेअमृत तेनो उपजोग आस्वादपामे एटलेजेजेपदार्थनेतुं समतानुंकारणजा णें तेतेपदार्थनुंस्वरूपकर केमकेबीजासर्वपदार्थ तेनिरर्थकढे ॥ ५ ॥

समयसज्ञास्त्रमहाणिवन्यः समुद्रुतः साम्यसुधारसोऽयं ॥ निपी यतां हे विबुधा लजेध्व मिहापि मुक्तेः सुखवर्णिकां यत् ॥इ॥

अर्थ ॥ हवेत्राचार्ययंथने उपसंहरतो यथनीउपादेयतादेखाडेजे हेपंफितजनो तमेसमय नजांजे धर्मशास्त्र तेरूपीयो जेमहासम्रुइ तेहचीउधखुंजे एसमतारूपियुं सुधारसके॰ अमृतरसतेप्रत्यें तुमें पीयतांकहेतां आदरसहितसांजजो तथाजणो जे थी तमेत्राजोकेपण मुक्तिनासुखनी वर्णिकाकहेतां वानगीनेपामो केमकेसमतारस मय जीवते आजोकेपण मुक्तिसुखने अनुजवेजे ॥ ६ ॥

> शांतरसजावनात्मा मुनिसुंदरसूरिजिः कृतो ग्रंधः ॥ ब्रह्मस्पृह्या ध्येयः स्वपरहितोध्यात्मकल्पतरुरेषः॥ ९॥

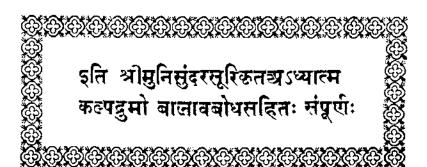
अर्थ ॥ द्वेमंथनेनेडे आचार्यपोतानुंनाम अनेमंथनुंनाम जणाववाकहेने स परदितकहेतां मंथकर्त्ताने तथापरजेश्रोताप्रमुख एवेदुनेदितकारी एवोजेआखध्या त्मकब्पडुमनामेयंथ तेतपगडाधिराज श्रीमुनिसुंदरस्र्रियेंकीधो ते एयंथ पंभितें ब्र ह्रजेकान तेदनी वांबायें जणवुं अथवा ब्रह्मजे मुक्ति तेदनीवांबायें चिंतववुं ॥ ७ ॥

इममिति मतिमानधीत्य चित्ते रमयति यो विरमत्ययं जवाडाक् ॥स च नियतमतो रमेत चास्मिन् सह जववैरिजयश्रिया शिवश्रीः॥७॥

अर्थ॥ इवेफलोपदर्शन हारें मंगलगर्नित उपसंहार वाक्यकहेळे जेमतिवंत पुरुष अथ्यात्मकल्पडुमनामे यंथनेजणि पोताना चित्तनेविषेरमाडे रात्रदिवसचिंतवे तेपुरुष संसारथकी थोडाकालमां विरक्तथाय अनेवलीएहनाज चिंतनथी तेपुरुषनेविषे सं साररूपीया रात्रुनीजे जयलक्की तेणेसहित शिवश्रीजेमोक्तक्क्की तेमां रमिके० आश्र यीनेरहे एटजेतेसंसाररूप रात्रुनेजीतीने मोक्रूपलक्कीपामे. इतिअध्यात्मकल्पडुमे साम्यसर्वस्वनामा षोडशोधिकारः समाप्तः॥ १६॥

ए श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमनामे मंथनो बालावबोधार्थ उपाध्यायश्री रत्नचंइगणिरुत तथाउपाध्यायश्री विद्यासागरगणिरुत एबेटीकाजोइने में महारीबुदिने अनुसारें मुज सरखा स्वल्पबुदिवंत प्राणिना उपकारने अर्थें लेशमात्र लख्योडे तेमां अनाजोगथी तथाअज्ञानथी तथाचांतिथी जेकांइसूत्रना तथाटीकाना अनुसारथी ओढुंअधकुं अपुक्त लखाणुंहोय तेहनुं मिडामीडुक्कर्म अथवाकिहांएक सुगमपणानेअर्थें किहांएक साहचर्यथी किहांएकरूढिथी जेकांइ विजक्ति वचन लिंग कारक अन्वय प्रमुखनो विपर्यास कीधो होय तेखपराध बहुश्रुत गीतार्थेंखमवो तथा उपकारबुदें अद्युद्ध टालिने ग्रुद्करवुं.

खय प्रशस्तिः॥ श्रीमत्तपगणगगनां गणजासनतरुणतरणिनिजः॥श्रीराजविजयस् रिर्बजूव छवि चृरि वितानयशाः ॥ १ ॥ योत्याक्तीदिजवं घनं सुविहितानुष्टानबदादरो लोकं कोकमिव प्रबोधमनयजोजिश्व गोस्वामिवत् ॥ढित्वादीकिटदर्षमुज्वलपटांश्वके वि शेषोज्वलान् यो वाचालितमालवेश्वरसितज्जत्रप्रजावोज्वलः ॥शा रत्नत्रयप्रयितसंय मन्ट्रत्दीय पट्टेष्वरत्नविजयाव्ह्यसुरिरासीत् ॥ येन प्रशांतरजसा प्रशमार्णवेन रत्ना करायितमनव्पगुणौधरंज्ञैः ॥ ३ ॥ तस्यान्वये निखिलजूतलगीतकीर्तिः श्रीहीररत्न इतिस्ररिवरो विरेजे ॥ स्वर्गं गतोप्यखिलजक्तसमीहितानि योद्यापि पूरयति नव्य इवाम रडुः ॥४॥ तत्पट्टजूषणमणिर्जयरत्नसुरिः सर्वायणीर्भुणिषु जूरिगुणाश्रयोऽजूत् ॥ श्री जावरत्न इति जावविदां वरेल्य स्तत्पद्दजृक्ष्यति संप्रति संप्रति स्वरिराजः ॥५॥ श्रीहीररत्नसूरे र्मुख्याः शिष्याः सुनिर्मेलाजिख्याः ॥ श्रीलच्धिरत्नविबुधाः शास्त्रार्णवपारदृश्वानः ॥ ६॥ श्रीसिदिरत्ननाम्ना पाठकवर्यास्तदन्वये तदनु ॥ श्रीहर्षरत्नवाचक, वरा वरीयोग्रणैर्वं द्याः ॥ ९ ॥ लक्कीरत्नगणीशा आसन् डर्वादिदनुजलक्कीशाः ॥ श्रीज्ञानरत्नगणयस्त दाश्रवाः सांप्रतं जयंतु चिरं ॥ ७॥ तच्चरणकमलसेवा नृंगस्तत्संगसमयतरंगः॥ सुविहि तकव्याणविमल गणिवरविहितार्थिनीनुन्नः ॥ ए ॥ बालावबोधवार्त्ता मध्यात्मसुरदु माख्यशास्त्रस्य ॥ सुनिहंसरत्न एता मतनोत्तनुबुद्धित्तत्वहितां ॥ १ ०॥ शोध्यं सुतत्ववि द्विर्येषो ऽयं धीधनैः प्रवाच्यमानश्च॥ सद्भावसंपदाढये राचंड्रार्के चिरं जयतात्॥ १ १॥



॥ ज्यय श्री सीतलनायष्ठकं ॥

रुषजतुव्यगति तृषदं सदा व्यजितदर्णकदर्णकचेदकं ॥ अमितशंजवजीतिविवर्जितं जिनमहं प्रणमामि सुशीतलं ॥ १ ॥ दृढरथाख्यकुनागनिनंदनं सुमतिधाम विचक् णपुंगवं ॥ ढविविनिर्जितपद्मप्रजं वरं जिनमहं० ॥ १ ॥ यमसुपार्श्वविनूषितविद्यहं विशदचंडप्रजाननबंधुरं ॥ सुविधिरंजितजव्यजनव्रजं जिन० ॥ ३ ॥ विद्युधमोदकशि तलवाग्नरं सकलश्रेयसिकामकुटोपमं ॥ सुवसुपूज्यपदं शिवदायकं जिन० ॥ ४ ॥ वि मलनीरजपत्रविलोचनं गृह्मनतग्रुणस्य रुपापरं ॥ सदयधर्म्मप्रतृत्ति प्ररूपकं ॥ जिन० ॥ ५ ॥ जगति शांतिविताननिपादकं धृतशमं किल कुस्थमनिंदितं ॥ विगतदो षमरं जविनौनिजं ॥ जिन०॥६॥युगकषायजयप्रतिमल्जजं कनकवर्णधरं सुनिसुव्रतं ॥ नमत दानवमानवराजितं ॥ जिन० ॥ ७ ॥ विततधर्म्मरथांगकनेमिकं निखिलविष्टप पार्श्वमदूषणं ॥ सबलमोद्दविनाशनवीरकं ॥ जिन० ॥ ० ॥ इति स्नुतः श्रीजिनशीत लाख्यः स्थितः पुरे रायधनाजिधाने ॥ श्रीवीरचंड्स्य मलूकचंड् नाम्ना विनेयेन वशां श्रिये स्तात् ॥ ए ॥ इति श्रीमङ्घीतलनाथाख्यदशमतीर्थाधिपतेरष्टकं समाप्तम् ॥

ង្រា

॥ अग्र श्री कल्याणसागरसूरिकृत माणिक्यस्वामिस्तवनप्रारंजः॥

नमःसिद्वेच्यः॥स्वग्धराढंदः॥स्वामी माणिक्यपूर्वस्त्रिच्चवनतिलकश्चिंतितश्रीसुराडि् स्ते श्चित्रकन्नाममंत्रः ॥ श्रीमन्त्रोनानिनूपान्वयगगनरवि लोकोद्योतकर्ता प्रथिततरयशा मैच्छकव्याणकांती राष्ट्रे सदद्विणाख्ये निरुपममहिमा ख्यातिकारिप्रतापः ॥ १ ॥ डुत विज्ञंबित चंदः॥ प्रवरधमधनार्पपणकामगौ रमृतवाग्युणरंजितनागरः॥रिपुसमूहनिवार णसङ्गटो वृषचचिन्हितपादकुरोशयः॥ शा हरिणीढंदः॥ ग्रुजमतिकरश्चंडादित्याधिको त्तरनास्वर स्त्रिज्जवनमणि विश्वाधारो धरेश्वरकीर्तितः ॥ उपशमरसासकस्वांतोप्यनंत ॥ अखर्व चतुष्टयी गुणमणिखनिर्नेष्ठारिष्टामयाधिजराव्यथः ॥ ३ ॥ पंचचामरर्ज्वंदः देहराजितो यतीश्वरो घृणाप्रशीतमानसः कलाधरः ॥ अनेकलब्धिमंडितो वृषाकरः शिवाव्धिवृद्धिचंड्मा नतासुरः ॥ ४ ॥ जुजंगप्रयातष्ठंदः ॥ प्रजुमीरुदेवश्विदाल्हादली नः सदाचारजीजाविजासातिशाजी ॥ महामोहमातंगपंचास्यकद्दो हितार्थी कजाशि ल्पविक्वाननाषी ॥ ५ ॥ मालिनीढंदः॥ जलधिनिनगनीरः सारसारंगघोषो जितविष यविकारो ज्ञानबुद्पिप्रदाता॥ खलसमिरप्रदाकुर्देवदेवाधिराजः समवसरएशोनासिंधु पूरौधमेवः ॥६॥ नाराचर्न्नदः ॥ श्वेतातपत्रचामरेर्युक्तो मनोइापुज्ञ्जैः ॥ जव्यांगिराशि वंदितो धर्मार्थमोक्त्साधकः ॥ ७ ॥ आर्थाठंदः॥ देवैर्थ्ययो विमलः सुंदरवंशो नृष्मरा त्मापि ॥ मान्यः सतामजर्खं सदोदयो वरातिशयधरः ॥ णा गीतिर्छदः ॥ जैलोक्या समस्तगुणरत्नकजितसाधुमनाः ॥ एनस्तमोनिरोशः सुश्लोकैधवजिता वाप्तविज्ञः श आशादः ॥ ए ॥ नगस्वरूपिणींडदः ॥ सदार्यमार्गदेशको प्यमेयनाग्यधारकः ॥ प्रनूतसत्वपालको विवेकनीतिकारकः ॥१०॥ माणवकर्त्तंदः॥ डःखहरो नाकिनुत स्त्य क्तमहादोवनरः ॥ पारगतस्तीर्थकरः शीलशाली ज्ञानधनः ॥११॥ तोटकर्छंदः॥ कम लाननमोहितलन्यजनः समयार्थनिरूपणरम्यसुधीः ॥ नृशिलीमुखखेलनतामरसः पु रुषोत्तमपुख्वनिधिर्वरदः ॥ १२ ॥ मणिमध्यचंदः॥ लक्त्णपंत्तया सारतनु निर्जितमा यालोजकलिः ॥ आहतसाध्वाचाररतिः सादरदेवाधीशपतिः ॥ १३ ॥ चंपकमालाउं दः॥ केवलयुग्मालोकितलोका लोकविनागः संयमिसेव्यः ॥ इंड्यिबाणानेदितचेता श्वंपकमालामंडितगात्रः॥ १ ४॥ इंसीउंदः॥ प्राप्तानंदो जुवनमुकुट स्तीर्थस्वामी विस्तृत नयनः ॥ सश्रीकात्मा सुरुतनिलयो योगींईो वै विजितकपटः ॥ १ ५ ॥ शालिनींबं दः॥ आदेयाख्यो मुक्तिजस्फारलौख्यो विश्वोत्तंसो डप्टकर्मारिहंता ॥ चक्रेश्वर्याराधितो गोम्रुखेशः कांताकारश्वोप्तधर्माधिकारः ॥ १ ६॥ केकीरवर्त्तवंदः॥ जगतीशपूज्यो जयताझि

13

नेशः कुशलार्थवल्लोततिवारिधारः ॥ विशदावदातावलिचित्तनामा नववार्धिपोतः कु लपाकनाथः ॥१९॥ कुलकं॥इंड्वज्ताढंदः॥एवं मया संस्तुत आदिदेवो नूयात् सदा संघगणस्य नूत्ये ॥ द्वेमंकरो विश्वजगत्सुदीपः कव्याणमांगव्यकलापकोशः॥ १०॥ ॥ अग्र सूर्यपुरीयश्रीसंज्जवजिनस्तवनप्रारंजनः॥

वसंततिलकाढंदः ॥ कामं नमोऽस्तु सततं जिनसंजवाय चंड्राननाय कमलामल लोचनाय ॥ देइप्रजास्थगितलोकचमत्कराय डर्ष्यानपादपविजेदनसिंधुराय ॥ १ ॥ देवैः स्तुताय नवसागरपारगाय कीर्तिंप्रसूनसुरजीकतविष्टपाय ॥ सन्मूर्तिकांतिततिरं जितमनिवाय सेनांगकुक्तिवरद्युक्तिकमौक्तिकाय ॥ २ ॥ छब्जोपमाय जिनशासनदीप काय सुर्घ्याख्यबंदरमनोरममंडनाय ॥ जव्याब्जकाननविजासनजास्कराय नानार्थ दानदरिचंदनसन्निजाय॥३॥आदेयनामकलिताय ग्राजाशयाय सिध्यंगनामिलनसादर लोजुपाय ॥ राद्धांतहाईकथनोत्तरकोविदाय तेजःप्रनावयशसामवनीश्वराय ॥ ४ ॥ अर्ज्ञानमोहनयसंज्वरजेषजाय सौजाग्यजाग्यगुणरत्नकरंडकाय ॥ अष्टापदाजतनुव र्णविराजिताय निर्लोजदंसरतिखेलनमानसाय ॥५॥ आव्हानमंत्रविनिवारितपातका य कव्याणसागरतरंगकलाधराय ॥ इष्टारिचकलवणांबुधरोपमाय वाचासुधाश्रवणह र्षितनागराय॥ ६ ॥ सदम्मेमार्गविधिदेशनदेशिकाय दुःखौधवारणमृगेंइपराक्रमाय॥ लोकातिशायिमहिमाचलजूषणायं गंधर्वलंडनसुशोजितपत्कजाय॥ ३॥ सस्यौधवृद्धिक रणाय जितेंडि्याय ग्रुदान्वयोन्नतिकराय रूपालयाय॥मिष्यात्वतापशशिचंदनपादपा य डब्कम्मेवायुद्धजगाय नराचितायााणा संकल्पकल्पनविवर्जितमानसाय गांजीर्थ्यधे र्यमणिसंनवरोहणाय ॥सज्ञानबुदिघरदाय गुणाकराय कौज्ञव्यवझिपरिवर्दनमंडपा य ॥ ए ॥ इंड्वंशार्वदः ॥ स्तोत्रं चतुर्थ्यतविनक्तिसंयुतं ध्यायंति ये संजवदेवरागि णः ॥ तिष्ठंति तदान्नि गुनाः समृद्यः कल्याणसंपादनकामधेनवः ॥ १० ॥ शा र्वूलविक्रीडितचंदः॥ लक्षीकेलिगृहं सदावलिनतं श्रीसंजवाख्यं जिनं सन्मार्तेडपुरा मजाचलवरोस्रीषे जवाब्धौ तटं॥ देवाधीशनरेशरोषपटलैः संसेवितं कामहं मुक्तिस्री सुखरंगलोनमनिशं सेवे सुदा सिद्ये ॥ ११ ॥

॥ छय श्रीसुविधिजिनस्तवनप्रारंजः॥

दुत्तवि तंबितष्ठंदः ॥ सुविधिनायजिनं नयनामृतं सुविधिनायजिनं महिमालयं॥ सुविधिनायजिनं नररंजनं सुविधिनायजिनं वरकेवलं॥ १॥ सुविधिनायजिनं कम लाकरं सुविधिनायजिनं जबदं परं॥ सुविधिनायजिनं ह्यतिकीर्तिदं सुविधिनायजिनं सुविधिप्रदं ॥ २ ॥ सुविधिनायजिनं रजतष्ठविं सुविधिनायजिनं जडतापदं ॥ सुवि धिनायजिनं मकरांकितंसुविधिनायजिनं जगदंचितं ॥ ३ ॥ सुविधिनायजिनं रजतां दितं सुविधिनायजिनं परमेश्वरं ॥ सुविधिनायजिनं श्रुतसूरिणं सुविधिनायजिनं शि वपारगं ॥ ४ ॥ सुविधिनायजिनं ग्रुनदर्शनं सुविधिनायजिनं जनतानतं ॥सुविधिना यजिनं वरदं विद्यं सुविधिनायजिनं नमितासुरं ॥ ५ ॥ अनुष्ठुप्ढंदः ॥ सितेतरपुरा धीशः सुविधिर्नवमो जिनः ॥ संघस्य सुखदो जूयात् कव्याणसूरिणा स्तुतः ॥६॥

॥ अय श्रीशांतिनायजिनस्तवनप्रारंज्ञः ॥

इतविलंबित इंद शासकलदेवनरेश्वरवंदितं विबुधमानवसंस्तुतपूजितं॥कमललोचनरंजि तनागरं नविकपातकतामसनास्करं ॥१॥ निखिलवांढितदानसुरागमं विदितशास्त्रविचा रनयागमं॥कविनकमेदवानलनीरदं परमशांतिरदामृतशांतिदं॥ शाविविधलक्त्णरंजित संचरं सुविधिमार्गप्रकाशनतत्परं॥चपलमत्तमतंगजगामिनं कमलकोमलमांसलपाणि नं॥३॥ दलितदंनमहाधृतिविग्रहं विहितमोह्महाबलिनिग्रहं ॥ दृढपरीषह्वायुच्चजंग मं किल ग्रुनंयुमनीष्टलमागमं ॥ ४ ॥ नविचकोरसुखाय कलानिधिं विनयधैर्यग्रुणो त्करज्ञेवधिं ॥ मुनिषडंन्द्रिनिवासकुज्ञेज्ञयं विधुसुधामधुसारतराज्ञयं ॥ ५ ॥ कुसुमस न्निनदंतविराजितं सुनगनाग्यसुखाकरशोनितं ॥ निजचुजाबलसाधितराष्ट्रकं जित विपद्दगणं नतराजकं ॥ ६ ॥ कुशलकेलिविलासछवं परं विशदकीर्त्तिविकाशिदिगंत रं॥कुमतसिंधुरसिंधुरवैरिणं सुमतिकामितसजतिकारणं ॥ ७॥ वरसुवर्णसवर्णसुवर्णकं जितहृषीकमधर्मनिवारकं ॥ इरिणसेवितपादकजं जिनं हितकरं स्तुतनिर्क्तरसद्ध नं ॥ ए ॥ प्रवरवार्षिकदानग्रेणैर्वरं इतदरिइपरं परमेश्वरं ॥ समधरीकृतमेरुसुरडुमैः प्रचुरसर्वगुणादधिकोत्तमैः ॥ ए ॥ विकटडर्जयमन्मथशंकरं जनकलापिधनं विगतां तरं ॥ लपननिर्जितचंइमसं जृशं विगतदोषकलिं च महौजसं ॥ १० ॥ अशिवविघ्न धनाधनमारुतं विषयतापवरां जनतामतं ॥ शिववधूपरिरंजणसोखुपं विमलकेवलि साधुकुलाधिपं ॥ ११ ॥ जजत शांतिजिनं तु शिवंकरं कुशलसागरवृद्धिकलाधरं ॥आ तुलरूपवशीकतमानवं प्रणतसादरकिन्नरदानवं ॥ १२॥ धादशनिः कुलकम् ॥ मा लिनोढंदः॥ ज्वननलिननानोः शांतिदेवस्य नर्नुर्नवजलनिधिसेतो र्डःखदारिइ्यहर्तुः॥ निजहृदयविद्युद्धा स्तोत्रमेतत्पठंति प्रतिदिनमपि ये ते संपदः प्राप्नुवंति॥१३॥ ॥ खप्य श्रीशांतिजिनस्तवनप्रारंजः ॥

सम्धराईदः ॥ दद्याङ्गीशांतिदेवो वरकनकतनुः सारसौख्यानि शभ्वझकानां चलि

जाजां त्रिष्ठवननगरे स्फारकोटीरहीरः ॥ चार्वाकारेः प्रऐता प्रएतहितकरः काम रो मारिवारः सर्वज्ञाख्यातनामा प्रकटितमहिमा प्राप्तकर्मारिपारः १ ॥ तोटकर्न्नदः॥ सुरमानवपूजितपार्णिकजः कमलोदयकारकधर्म्भधनः ॥ विगतामयद्र्षणजन्मततिः ग्रुनसागरसोमनिनो विमलः ॥ १॥ इति प्रथमांतविनक्तिकाव्य युग्मं ॥ जुजंगप्रयात इंदः ॥ अज्य्यं विद्यं विश्वपूर्ज्यं प्रसन्नं जिनं सत्प्रनं शंकरं देवदेवं ॥ सदाज्ञानव क्षीततौ मेघमेकं स्तवे शांतिनायं कलौ कामकुंजं॥३॥ दरिणीढंदः॥ कमलवदनं प्रा **प्तानंदं** नताग्रज्चंच नं गजपतिगतिं विश्वाधारं सुरेश्वरवंदितं॥सदयहृदयं त्यकातंकं वि निजितशोचनं परमपददं झातार्थोंघं त्रिकालविदंचितं ॥ ४ ॥ इंड्वंशाढंदः ॥ अर्च ति देवा जवपारगं जिनं कव्याणकारं मुनिवृंदसेवितं ॥ तत्रादिसझक्षणलक्तितं कि तावानंदसंदोद्दकरं सुधामयं ॥ ए ॥ इति दितीयांतविज्ञक्तिकाव्यत्रिकं ॥ शालिनीवं दुः॥ प्राज्यं राज्यं चक्रवर्त्तिलसंगं त्यक्ता दत्या स्वर्णरूप्यादिदानं॥श्रुत्वा वाक्यं ब्रह्म लोकांतिकानां येनावासं संयमं मुक्तियोग्यं ॥ ६ ॥ द्रुतविलंबित इंदः ॥ अमितपुष्य वता जनतावता क्रुगतिवारणतत्परसजिरा ॥ नतनरामरकिन्नरशालिना जगवता ष्ठवि शमे विधायिना॥ १॥इति तृतीयांतविजक्तिकाव्य ६ यं॥ इंड्वज्वाठंदः ॥ श्रीशांतिदेवाय नमोऽस्त नेत्रे विन्नौघहर्त्रे शिवमार्गदात्रे ॥ चकांकहस्ताय समस्तनर्त्रे शंखेंडहारोज्ज्व लग्रुक्कर्जे ॥ ए ॥ रथो६तावंदः ॥ दर्शनामृतनिलीनजंतवे विश्वशास्त्रनयनीतिहेत वे॥जोनसागरसुवेलसेतवे ६ापरावलितमिस्रनानवे ॥ए॥ इति चतुर्थाविनक्तिकाव्ययु ग्मं ॥ उपेंड्वज्जार्वदः ॥ अधानि नर्त्यति पुराकृतानि प्रशस्तनामातिशयप्रसत्तः ॥ श्वनेकसंसारनिबंधितानि प्रगाढबंधस्थितिसंचितानि ॥ १० ॥ मालिनीढंदः ॥ नव ति सुखमनंतं शांतिनायप्रसादा ६रिण शरणदातुर्विश्वसेनांगजातात् ॥ नतजविकज नानां प्रीतिराजात्प्रकामं निरवधिजिनरागे लग्नसन्मानसानां ॥ ११ ॥ इति पंचम्यं तविजक्तिकाव्य ६ यं ॥ शिखरिणीढंदः ॥ सदा ध्यानं शांतेरखिलगुणधाम्नः गुनवतो धरंति श्रीकारं सुमतिमतिकारं जयहरं ॥ नरा जव्याः शक्तया विगतमदतंडाः श्रुतप रास्त्रिसंथ्यं सद्धानं प्रबलतरचाग्योदयमतः ॥१ श। विद्युन्मालावंदः ॥ शांतेः शांतेः पाददंदं नला नला सश्रीकाः स्युः॥ नोनोः श्रादा आयुष्मंतस्तुष्ट्यानंदं रुला रुला॥ १३ ॥ इति षष्टीविजक्तिकाव्यदिकं ॥ वसंततिलकार्वदः ॥ चेतोस्ति चेङ्गवपयोनिधि पारमाप्त तीर्थकरे जिनपतौ किल शांतिदेवे ॥ नक्तिं कुरुष्व सततं विधुलामुदारां इत्वा प्रमादमपि कर्मविशेषजन्यं ॥ १४ ॥ दोधकत्वंदः ॥ डुर्गतिसागरपतिसमुद्दे नि भलसंपमपालनमेरो ॥ शारदग्रदसुधाकरवक्रं शंखसमाननिरंजनचित्रे ॥ १५ ॥ ना

www.jainelibrary.org

राचछंदः ॥ कारुत्परंगरंजिते कार्पत्पदोषवर्जिते ॥ देवाधिपेऽचिरासुते लोकोपकारक मेठे ॥ १६ ॥ इति सप्तमीविजक्तिकाव्यत्रिकं ॥ वंशस्य छंदः ॥ स्वकीयवंशांवरजास्कर प्रजो विशालगंगाजलग्रुच्चकीर्ने ॥ छपारसंसारजयाच सत्वरं रुपापरस्तं परिरद्ध सेवकान् ॥ १९ ॥ इति संबोधनविजक्तिकाव्यमेकं ॥ मंदाक्रांताढंदः ॥ कव्याणोक्तं कुशलजननं सर्वसंघस्य नित्यं नानावृत्तैः प्रकलितमिदं स्तोत्रमेतन्निकालां॥सुकत्वाऽऽल स्यं जणति मनुजो जाविनाजावितात्मा गेहे लच्चीर्जवति दृढता तस्य दीर्घायुष श्र ॥ १० ॥ शार्दूलविक्तीडितच्चंदः ॥ कव्याणोदधिवर्दनं कलिहरं कौशव्यमालास्पदं सौजाग्यौघकरं विजक्तिकलित्तं कायैर्विजिन्नैः परं ॥ श्रीशांतेः स्तवनं पतंति जविनः सरपुत्सपत्सालयास्तेषां धान्नि द्युजे निवासमतुलाः कुर्वति संपत्तयः ॥ १० ॥

॥ अस श्रीअंतरिक्तपार्श्वस्तवनत्रारंजः ॥

इंड्वजाइंदः॥विश्वेश्वरं विश्वजनेशपूज्यं सर्वाधनिष्पादनकामकुंजं॥ प्रख्यातिमंत महिमौधलद्दम्या पार्श्व जजे संस्थितमंतरिक्ते ॥१॥ कव्याणमालागुहमंगिदेव विद्या धराधीशनुतांन्हिपद्मं ॥ सर्वत्र राष्ट्रेष्ठ विशालकीर्त्ति पार्श्व०॥२॥ रोगाधिचिंतार्त्तिसमू हतापजैषज्यमाचारविचारसूरिं ॥ सन्नीलरत्नष्ठविजूषितांगं पार्श्व०॥३॥ संसारसिंधी वरयानपात्रं मुक्त्यंगनासकहदं शरए्यं ॥ वामांगजातं जगतीप्रदीपं पार्श्व०॥३ ॥ श्री पार्श्वयद्दाधिपमदितीयं श्रीशालिनं सेरपुरावतंसं ॥ वाचासुधाकार्षितसज्यलोकं पा श्वे० ॥ ५ ॥ त्रैलोक्यकोटीरमनाथनायं दारिद्यवाताहिमनंतर्शार्क्त ॥ शास्तार्थनेषु एपनिधिं दयाद्धं पार्श्व० ॥६॥ पद्मावतीसेवितपादयुग्म मंहोजरध्वांतदिनेशमाद्य ॥ लावएपसौजाग्ययशोनिराढवं पार्श्व० ॥ ७ ॥ क्रानादिधर्माजरणं वरेए्यं सद्दोधदाना दिकमार्गपांयं आनंदवझीततिवारिधारं पार्श्व० ॥ ० ॥ कल्रशः ॥ स्रग्धराठंदः इत्यं ये देववंद्यं विविधसुलकरं चांतरिक्ताख्यपार्श्व नित्यं ध्यायंति जक्त्या हृदयरति युजो नाग्यवंतो नरोपि ॥लक्कीस्तेषां निकाच्ये वसति दृढतया सर्वदा कामकत्रीं क व्याणश्रेणिकर्जुर्जुवि विदिततरा सर्वसंपत्तिकांता ॥ए॥

॥ अध श्रीगौंफिकपार्श्वाष्ठकत्रारंजः ॥

शाईूलविक्रीडित इंदः॥वामेयं मरुदेश जूष एतरंश्रीपार्श्वयक्तार्चितं कव्या एग वलिवलि सिंचनघनं श्रीह्वाकुवंशो इवं॥आराइ छूलमागतैर्नरव रैः संसेवितं नित्यशः श्रीमह्रीकर गीडिकाजिधधरं पार्श्व सुपार्श्व जजे॥ १ ॥नानालाधुजनौधपंकजवने मार्चडविंबायितं वि प्रव्यूहनिवारकं कलिष्ठगे प्राप्तप्रतापालयं॥ विश्वस्थां प्रथितावदाननिकरं निर्दोषडणो ज्वलं श्रीमङ्घीणाशासंपह्नेणिसुदानकामकलशं त्रैलोक्यचिंतामणिं सदाचामृतरंजि तामरनरं सदम्मेबोधप्रदं ॥ सौनाग्याङ्घतकांतकीर्त्तियशसा संपूरिताशांतरं श्रीम क्री० ॥३॥ मार्गे चांतरजीतिवारिनिचिते देमंकरं सर्वदा दारिद्या इनिपातनात्तकुलि शं चिंतार्तिरोगापदं ॥ डःखत्राससमीरणौघछजगं नागांकमंहोमयं श्रीमह्री०॥ ४ ॥ कारुत्यांचितचारुचित्तकमलं सत्वेषु संसारिषु सद्योदिगुणैरलंकततनुं लावप्थलीला स्पदं ॥ संसारार्णवपीतवारिधिसमं मुक्त्यंगनावछत्रं श्रीमङ्गी० ॥ थ ॥ त्रैलोक्ये ति लकायितं निरुपमं जव्यैर्नृतिः पूजितं ड्रष्टानां निजसखदर्शनपरं हिप्रं सतां कामदं॥ नाम्ना ध्वस्तसमस्तवैरिनिचयं राड्रांतनिर्दे शकं श्रीमङ्घी० ॥ ६ ॥ नूयिष्ठामलनकि शक्तिकलितैर्देवैश्वतुर्दा नतं सर्वाशाकरणैककब्पफलदं सर्वागिचूडामणां ॥ शिष्टानं तचतुष्टयीवरतरं श्रीमेरुतुंगं जिनं श्रीमङ्गी० ॥ ७ ॥ स्फाराकारनिराजितांगमतुलं स ६र्ष्यहेमाकरं विश्वव्याप्ततरं प्रवाससदनं गंनीरतासागरं ॥ जासोद्योतितविश्वविश्वम वनौ कल्याणसिंधौ विधुं श्रीमह्री०॥ ०॥ अष्ठनिः कुलकं ॥ अनुष्ठुप्तंदः ॥ निन्न माझे सदाश्रेष्ठे गुणवच्चद्रजूषिते॥पुष्पमाझेंऽतराजिख्ये नेकवीहारसंयुते ॥ ए ॥ श्री मतः पार्श्वनाथस्य स्तवनं जगतोऽवनं॥कत्याणसागराधीशैः सूरिजी रचितं मुदा॥ १०॥ ।। स्वग्धरां उदः ।। ध्येयं श्रीपार्श्वदेवं नजत किल जना गोमिकयामराजं शश्वत्सर्वार्थ सिद्यै विदितग्रजदितं विष्टपे चैत्रपूर्वे॥सानंदोझासलष्टाः कुशलगविषुधाः सर्वलोके विशिष्टानिर्दोषाचारपुष्टा जिनपपतिषु रता आप्तकव्याणतुष्टाः ॥ ११ ॥

॥ अध श्रीगोमीपार्श्वनायस्तवनत्रारंजः॥

मालिनीढंदः॥जयति जगति चंद्रः पार्श्वनामा जिनेंड्रो विकचकमलदृष्ट्या नंदिताम र्त्त्यमर्त्यः ॥ अकलितमहिमौधस्तोर्णसंसारसिंधुर्जुजगकलितपादः पुत्पषीयूषपुष्टः ॥ र स्रग्धराढंदः॥ श्रीपार्श्वं गोडिकाख्यं नजत नविगणे कल्पवृद्धं सुगोत्रं नानादेशेषु ल व्धातिशयमहितताव्यूहवारं सुमूर्त्तिं ॥ श्रीमंतं नीलरत्नाधिकतरवपुषं स्फारलावएपशा तं मोह्रांनोराशिकुंनोझवममरनुतं पार्श्वयद्दाचितांन्दिं ॥ १ ॥ पंचचामरह्वंदः ॥ नमं ति पार्श्वमंगिनो नरालसा प्रतातपत्रचामरैः सुरैः सुतं ॥ अनंतशक्तिमालिनं गतामयं विवेकरत्नरोहणं दयाकरं ॥ ३॥ वसंततिलकाढंदः ॥ करीरुतं व्रतमनुत्तरमंगिनेत्रा द त्वा ऽद्य येन वरवार्षिकदानराशिं ॥ वामो ६ हेन मुनिनायकनायकेन कव्याणकेलिनि लयेन द्युनाशयेन ॥ ४ ॥ घुतविलंबितह्वंदः ॥ मम नमोस्त्वते परमात्मने नगवते शिवशम्मविधायिने ॥ अमितशौर्ध्यतिरस्कतमेरवे द्युजदशेरकमंडलमौलये ॥ या णींबंदः॥ अमृतरसताधिक्याजीष्टान्नरोत्तमसंगताझुवनसुनगात्पार्थाजिख्यादिनइयति पातकं ॥ प्रसरति च वै कीर्त्तिर्दे कु प्रसूतवडुज्वला प्रनवति पुनः शीघ्रं लीलाजयो न्नतिवर्द्धनं ॥६॥ शार्दूलविक्रीडितंबदः ॥ आरुत्धा नरदेवदेवमनुषां संतुष्टिकर्तुस्सदा चेतोवछजकामसार्थददतः कर्मारिहर्त्तुर्नृशं ॥ आनंदौधसरःप्रवृद्धिकरणे पानीयदा तुर्मुदा पार्श्वस्यास्ति नतिः समृद्धिजननी कल्याणविस्तारिणी ॥॥॥तोटकंबदः॥नरल कृणजूषितवच्युपुरे मुखनीरजरंजितविश्वजने॥श्रुतदेशनदर्शितधर्मपथे जिननेतरि ति ष्ठति नाग्यरमा॥णाजुजंगप्रयातच्चंदः ॥ सुराधीशचकैः स्तुत झानसिधो जगन्नाथ नेतः रुपालोकबंधो ॥ विनो पाहि मां सर्वदा जकिनाजं स्मरं तं चिरं त्वत्पदानोजन्तृंगं ॥ ७ ॥ शार्दूलविक्रीडतचंदः ॥ स्तोत्रं पार्श्वजिनेश्वरस्य सततं ये प्राणिनो जा वतः सद्दुद्धापि पत्वति हृद्यमनसस्तेषां गृहे संपदः ॥ स्युर्नित्यं स्थिरनावशोज नतरा धर्म्मार्थनिष्पादिकाः कल्याणार्णवसूरिनिर्विरचितं मांगल्यमालाकरं ॥१०॥ शित्वरिणोढंदः॥ सदा धार्थ्यं चित्ते स्तवनमनवर्यं जयदरं नर्र्तूनं सिद्धे कुरालवन राजौ वननित्रं ॥ अवंथ्यं जकानां जिनग्रणरतानां स्मृतिमतां समेशां जव्यानां प्रमु

॥ उप्रथ श्रीदादापार्श्वनायस्तवनप्रारंज्ञः॥

॥ इंड्वजाढंदः ॥ कव्याणगेहं गुणरतराजं सद्देहकांत्याजितनीलरतं ॥ स्तोष्ये मुदाशंकरमंगिवंद्यं दादानिधं श्रीवरपाइवेनायं ॥ १ ॥ सद्भमेलीनाशयमाद्य विझं कम्माष्टदावानलवारिधारं ॥ संसारपायोनिधिकर्णधारं दादा० ॥ श ॥ त्याचारव ह्यीततितृद्धिनोरं सत्कीर्त्तिपुष्पष्ठतवासिताशं ॥ नानार्थराद्यांतविचारदद्वं दाद० ॥ ॥ ३ ॥ वैराग्यरंगार्पितचारुचित्तं सद्बोधिदातारमनीइसेव्यं ॥ नागेंइसंसेवि तपादपद्मं दादा० ॥ ४ ॥त्रैलोक्यचूडामणिमृदिशोजं सौनाग्यजाग्यावलिपूर्ण देहं ॥ जव्यौधराजीवदिनेशमेकं ॥ दादा० ॥ ५ ॥ सर्वांगिनेतारमजीष्टवाचं विश्वे श्वरं रंजितसज्यलोकं ॥ लोकार्त्तिचिंताज्यडःखवारं दादा० ॥६ ॥ हृद्याकतिं रुत्तजरा धिदोषं नरामरेंई स्तुतमर्त्यसंयं ॥ सन्नागचिन्हं कुशलार्थकारं दादा० ॥॥ सर्वत्र वि ख्याततरप्रतापं कारुष्पसत्रं छवि शिष्टगोत्रं ॥ अझानमिष्याल्वतमिस्तदीपं दादा० ॥ ७ ॥ इष्टनिः कुलकं ॥ शार्दूलविक्रीडितत्वद्रं ।। श्रीमह्रीवटपइज्ड्नगरे ग्रृंगार द्रारोपमं कव्याणांबुजनानुचंड्मसमं वामांगजातं परं ॥ दादार्थ्यं जिनपार्श्वदेवमन धं थ्यापंति ये नित्यशस्तेषां धान्नि रमा निवासमनिशं कुर्वति कव्याणतः ॥ ७ ॥ ॥ अध श्रीकलिकुंडपार्श्वाष्टकप्रारंजः॥

॥ विषुधादिराजैर्नतपादपद्मं बहुनाग्यसौनाग्यलतौधमेधं ॥ कमनोपसर्गांचल धैर्थ्यनित्तिं कलिकुंमपार्श्वं सुचिरं नजेऽदं ॥ १ ॥ कमलाप्रदाने हरिचंदनांगं सपयोधिदेशाझृतलब्धकीर्त्ति ॥ रुचिरारुतौ रंजितविश्वविश्वं कलिकुंम० ॥ १ ॥ महिमावदातोत्तमनाममंत्रं समतानिरामं कमलानिनेत्रं ॥ छनिलाषदं सिदि विलासयंत्रं कलि० ॥ ३ ॥ छरितांधकारारुणसन्निकाशं करुणाशयं डःखवने षु दावं ॥ नरदेवपूज्यं सुखदं सुमूर्तिं कलि० ॥ ४ ॥ कनकादिदातारमनंतशक्तिं वरनीलरत्नाधिकदेहवर्णे ॥ शिवशर्मराजं जनतानिवंद्यं कलि० ॥ ५ ॥ अनधं सदा सृष्ठणकेलिपालं ग्रुनलङ्कणालंछतवर्यगात्रं ॥ कुलनूषणं शत्रुतृणौधदात्रं कलि० ॥ ६ ॥ जगतीश्वरं कर्मविमुक्तसंगं विषमायुधालग्रमनःस्वरूपं ॥ धरऐाइपार्श्वार्चित पादयुग्मं कलि० ॥ ९ ॥ ग्रुनसिंधुत्वन्दौ शशिनं वरेष्धं वचसा सुधानेन सर्ह्षस न्यं ॥ श्रुतसूरिणं पुष्यविराजमानं कलि० ॥ ०॥ अष्ठनिः क्रुलकं ॥ इंइवजावंदः ॥ एवं स्तुतः श्रीकलिक्ठंडपार्श्वः कव्याणनाम्ना मयका नितांत्तं ॥ ये प्राणिनः स्तोन्नमिदं पत्रंति तदाम्नि लक्तीर्विलसत्यवश्यं ॥ ७ ॥

॥ अय श्रीरावणपार्श्वाष्टकप्रारंजः ॥

॥ इंड्वज्राह्नंदः ॥ देवाधिदेवं कृतपार्श्वतेवं नागाधिराजेन नतांन्द्रिपद्मं ॥ पद्मावतीसंस्तृतनामधेयं सेवे सदा रावणपार्श्वनायं ॥ १ ॥ आनंदकंदोदय वृद्धिमेयं मेघध्वनिध्वानविशेषराजं ॥ जितारिवृंदं विगताधिमोदं सेवे० ॥ १ ॥ वामांगजातं कुलनंदिकारं ध्वस्तोपसग्गेत्किटडुष्टरोगं ॥ प्रख्यातिमंतं छवने प्रजा वैः सेवे०॥ ३ ॥सन्नीलनासा इसितेंड्नीलं सत्कांतकांत्या रमणीयरूपं ॥ प्रावीण्पना नातिश्यैः प्रधानं सेवे० ॥ ४ ॥ संजीतिहर्त्तारमंनतसौख्यं विश्वेश्वरं द्योतितविश्व लोकं ॥ पद्मार्थदाने सुररत्नवृद्धं सेवे० ॥ ५ ॥ अक्षानमिष्यालतमिस्त्रजानुं नामं मलालंकृतमौलिष्टष्टं ॥ वाणीसुधामोदितसज्यसंवं सेवे० ॥६॥ कौशव्यमांगव्यनिवा सगेदं पूर्णीकृताजीष्टपदार्थराशिं त्रैलोक्यदीपं वरसिदिजाजं सेवे० ॥ ७ ॥ संसार रत्नाकरयानपात्रं निःशेषदोषोझितधर्ममार्गं ॥ आदेयसौजाग्ययशःसुपात्रं सेवे० ॥०॥ अष्टजिः कुलकं॥ मालिनीढंदः ॥ अलवरपुररत्नं रावणं पार्श्वदेवं प्रणतग्रजसप्रई कामदं देवदेवं ॥ अमितग्रणनिधाना ये नरः संस्तुवंति जगति विदितसारा जा ग्यवंतो जवंति ॥ ७ ॥

॥ अय श्री गोडीपुरपार्श्वजिनस्तवनप्रारंजः ॥

रागेणगीयते॥गौडिपुरप्रचपाइर्वममंदं दर्शनदर्शनपरमानंदं नमित्सुरासुरवृंदं॥१॥ श्रीजिनशासनचारुग्रंगारं श्रंतरंगरिपुवृद्धकुठारं सकलजगदाधारं॥ शानिरुपमरूपविरा जितदेहं विदलितनानाजनसंदेहं अमितगुणधनगेहं॥३॥इरितकाननचेदनदात्रं रुचि रलक्षणविनूषितगात्रं वारितकुमतकुपात्रं ॥४॥ अनघजिनवरगोत्रसुगोत्रं कामकुंजम णिनिर्जरगोत्रं संयमदृढतागोत्रं ॥५॥ बेदितजवजयमरणारिष्टं प्रकटितमहिमातिशयव रिष्ठं जगदैश्वर्यगरिष्ठं ॥६॥ विहिताखिलनविजनकल्याणं पालितययाख्यातकल्याणं दत्तमार्गणकल्याणं ॥ ३ ॥ आधिबंधवभगदद्त्तीरं वांत्रितकुशलसोस्विकर्त्तारं छव नत्रयजन्तीरं ॥ ७ ॥ विकटकष्टनिवारणशूरं आगमनयप्रकाशनसूरं जारतीगंगापू रं॥ ए॥ भूतिकीर्तिबुद्धिलक्सीगणविदवं केवलयुगलालोकितविदवं प्राप्तजनेफ्तित विश्वं ॥ १० ॥ सेवकमनोजीष्ठदातारं रंजितदेवनरनेतारं अनुजूतकुलत्रातारं ॥ ११ ॥ इंइनीलमणिवर्णसुवर्णं निखिलदेशविख्यातसुवर्णं वारुसुधासारसुवर्णं ॥ १२ ॥ सु किलीमंतिनीसंगमलुब्धं चंचलविषयसुखसंगालुब्धं कर्मपराविप्रलुब्धं ॥१३॥ वंति तामरमौलिकुटीरं विषमकषायदवानलनीरं उत्कटपरीषहधीरं ॥१४॥ अंचलगणनी रधिसारंगं कीर्तिलतावर्दनसारंगं इर्कनशलनसारंगं ॥ १५॥ वंदेऽनंतचतुष्टयिराजं प्रजितसुरपतिमानवराजं प्रवरतीर्थाधिराजं ॥ १ ६॥ षोडशनिः कुलकं॥ शिवतातिपाइर्वे वरदवरपाइवें मोहतमिस्त्रसवितारं नागराजराजं त्रिष्ठवनपूज्यं लब्धजवोदधिपारं॥ शुनलागरनित्यप्रथितगरिमाणं ये ध्यायंति विद्यं सुदा लक्कीस्तान ससुपैति सखर मतुला सर्वार्थसिदिप्रदा ॥ १७ ॥

॥ अर्थ श्रीपार्श्वजिनस्तवनप्रारंज्ञः ॥

तोटकष्ठंदः ॥ जविकांबुजजासनजानुनिजं जवतापसमावनवारिधरं ॥रचितागम शास्त्रविचारनयं जय मंगलकीर्तियशोनिचयं ॥ १ ॥ कमलामलकेलिगृद्दं विमलं लसदाशयमुश्नितसंतमसं ॥ शुजसागरवर्द्धनचंइमसं सकलामरपूजितपादकजं ॥श॥ विकटोत्कटकर्म्भमृगेजरिपुं खगनागनरेश्वरदेवनतं ॥ तरसा जितमोद्दरिपुं विजयं यमसंवरसंदितसाधुद्दितं ॥ ३ ॥ शुजलकृणलद्वितद्स्तयुगं गजराजगति गतविघ्न रुजं ॥ जडतामयजेषजमीशवरं दशनयुतिद्योतितचारुमुखं ॥४॥ कनकाचलधीरम जीष्टतरं रसनारसरंजितसर्वसजं ॥ज्जवनत्रयमंडलमोघतरं रुचिराकृतिमोद्दितदेवजनं ॥थाश्वरिद्दंतमनुत्तरतीर्थकरं रचितं वरबुदिधनं जिनपं ॥पुरुषोत्तममस्मरमर्थनिधिं धृ

28

तिकांतिनिकेतनमंगिनुतं ॥६॥ निजवंशवतंसकमार्तिंइरं रवनिर्जितमेघनदं शिवदं॥ दयितं छवि विश्वजनीनतमं नतनूतगणं जितलोनजटं ॥ ७ ॥ शरणाश्रितपालकमु किपदं दधतं वरशांतरसं नवमं ॥ महसेंइमणिप्रजदेहधरं धरऐंइनिषेवितपार्श्वयुगं ॥७॥ अपममं नुतपार्श्वजिनं सततं तपसा इतसिद्धमनंतवलं ॥ जलनाजनसंगविरक मलं मलवर्जितमुत्तरसौख्यधरं ॥९॥नवनिः कुलकं ॥ सुरराजखेचरनागपुरंदरधरणिरा जसुसेवितं श्रीपार्श्वजिनेश्वरं नमितसुरेश्वरपद्मावतीसंस्तुतं॥ येऽनंतजत्त्वया विशुद्धश तया संस्तुवंति जिनं मुदा ग्रुजसागरपठनाइविकरमासमेतं ते लजंति सुखं सदा॥ र ०॥ ॥ च्यप्य श्रीमहुरपार्श्वाप्टकप्रारंज्ञः ॥

दुतविलंबितचंदः ॥ विबुधमानवमानसनंदनं विजवदानविधौ हरिचंदनं ॥ नि खिलसन्यजनैः कृतवंदनं नजत पार्श्वजिनं महुरानिधं ॥ १ ॥ युगलकौशिकसा म्यतराश्यं छवनजानुनिवासधनाश्रयं ॥ विषयिवारणकेसरिसन्निजं जजत० 11 211 अरुएकोटिविजाधिकजास्वरं कुसुदबांधवश्वज्ञतराननं ॥ वरगनीरगुणोत्तमसागरं जजत०॥३॥ जविकपद्मविजासनजास्करं जगति जावप्रकाशनदीषकं ॥ नयनपाटव पावनतंत्रकं जजत०॥४॥रचितकामठवारिदसंचयैरखिजधैर्यसमन्वितचेतसं॥विकट कर्मसमीरएजोगिनं जजत० ॥ ५ ॥ कमठनिम्मितपांद्यकदंबकैः स्थिरतरोत्कटनाव विराजितं ॥ जगति डजेनसर्पविषापहं जजत० ॥६॥ प्रशमनूषणनूषणनूषनं सुनग नाग्यगुणावलिमंदिरं ॥ धवलकीतियशौंबरघासितं जजत० ॥ ९ ॥ सकलसंघसमीहि तक ईकं निचितविव्रपराजवहर्तृकं ॥ अतिशयाझुतचारुचरित्रकं जजतण् ॥ ए ॥ हरि णीउंदः ॥ महुरजिनपं नित्यं वंदे शिवोदधिवईनं शशिनमनिशं किण्वध्वांते दिनेश महोद्यं ॥ स्तवनजणने चिताल्हार्दैः कतादरसेवकेविविधधनदं विश्वे विश्वे जिनेश नतानने ॥ ए॥ हुतविलंबित जंदः ॥ महुरपाइर्वजिनेश्वरसंस्तवं पतति यः सुधियोपसि नित्यशः॥ वसति तस्य गृहे कमला ऽखिला स्थिरतरासुमतां वरदायिनी ॥ १० ॥ ॥ उप्रय सत्यपुरीय श्रीमहावीरस्तवनत्रारंजः ॥

हुतविजंबितचंदः ॥ त्वमसि सजुणनंदनमंदरस्त्वमसिमेरुलतावलिमंमपः ॥ त्वमसि खेचरनाकिनरस्तुतस्त्वमसि रूपवर्शाख्तविष्टपः ॥ १ ॥ त्वमसि योगिजनौ यशिरोमणिस्त्वमसि कांतिविकाशितदिग्गणः ॥ त्वमसि जाषितरंजितनागर स्त्वम सि सिदिवशारतिमोद्दितः ॥ १ ॥ त्वमसि जड्करः करुणालयस्त्वमसि जक्तचकोर निशाकरः ॥ त्वमसि दर्शनदर्भितमानवस्त्वमसि संसृतिसागरपोतकः ॥ ३ ॥ त्वमसि मोइमहोरुद्दमुज्ञरस्त्वमसि धर्मधनो धनकामदः ॥ त्वमसि संशयवायुज्जगम स्तोत्र.

स्लमसि दर्शितजीवदयापथः ॥ ४ ॥ लमसि धारितशीलविजूषणस्लमसि कामि तदामसुरदुमः ॥ त्वमसि देवनराधिपवंदितस्त्वमसि जाडचतमिस्त्रनजोमणिः ॥ ५॥ त्वमसि कर्मवनावनिपावकस्त्वमसि सेवकपूजितपंकजः ॥ त्वमसि जन्मजरामृतिवा ६ ॥ त्वमसि मंजुलसन्कुलदीपकस्त्वम रणस्त्वमसि शाश्वतमोक्तपदस्थितः 11 सि सर्वपदार्थविशारद. ॥ त्वमसि लोकनतो नतवत्सल रत्वमसि देवशिलीमुख पुष्करः ॥ ९ ॥ त्वमसि नाथमनोहरलक्षणस्त्वमसि संमतजीवगणः सदा ॥ त्वमसि ॥ ७ ॥ ल्वमसि चित्रकराति संवरमार्गविधायकस्त्वमसि दानगुणाव्पितकब्पकः श्यगंचितरत्वमलि स्ररिततीश्वरसेवितः॥ त्वमलि डःखिजनावनतत्परस्त्वमलि हारनि ॥ लमसि शिष्टनरामरसंगतस्लमसि . लोकचमत्कृतनिर्म नः क्वितिमंडले ॥ Ų लमसि केवलिसाधुनतो मुदा लमसि कुग्रहदोषनिवारकः॥ मः लमसि सहतनारवृषोपमस्लमसि वीतमदो विशदाशयः ॥ लमसि तीर्थपते रु लमसि बुद्धिपराजितगीःप **₹**₹ || चिराव्हयस्त्वमसि गुप्तिपवित्रितमानसः ॥ ॥ त्वमसि जाग्यविनाशनिकेतनस्त्वमसिलोज ति स्लमसि हाटकसन्निजवियहः महीधरवजकः ॥ १२ ॥ लमसि सप्तजयार्णवतारकस्लमसि इर्घटसत्यनयाध्व गः ॥ त्वमसि सम्मदसंततिकारकस्त्वमसि सिदिकरो वरदायकः॥ १ ३॥त्वमसि विश्व जगज्जनवलनस्लमसि रहितनूतकदंबकः ॥ लमसि डर्नगडस्थहरोनिशं लमसि वि स्तृतजोचनरंजकः ॥१४॥ त्वमसि विश्वपतिः श्रितबांधवस्त्वमसि वक्रतिरस्छतचंड लमसि वैरिसमुड्घटोद्भवस्लमसि तीर्थकरः प्रतिबोधदः माः लमसि जव्यशिखंडिबजाइकस्लमसि बंधुरमूर्तिधरोऽजरः ॥ त्वमसि सर्वविद्वर्विग ॥ १६॥ त्वमसि शांतरसाश्रितचेतनस्त्वमसि तातुरस्लमसि संयममंडनमंडितः पौरुषनिक्तितकामणः ॥ त्वमसि डर्छनबोधिनिबंधनस्त्वमसि कामडघाधिकदानदः ॥ १९॥ लमसि संचितपुष्यनिधिः परस्तमसि विघ्नसरीस्पगारुडः ॥ लमसि छ म्रयशोनरमंदिरस्त्वमसि संघजयोन्नतिहर्षदः ॥ १७ ॥ त्वमसि सत्वहितो मतिव र्कतरत्वमसि धर्म्मसरोजसरःसमः ॥ त्वमसि चक्रिनतो नविशेखरस्त्वमसि पारग ॥ १ ७ ॥ त्वमसि सत्यपुरामलनूषणस्त्वमसि संश्रितपादमृगाधि तः परमेश्वरः पः ॥ त्वमसि केवलयुग्मविराजितस्त्वमसि वीरजिनो जिननायकः ॥ २० It लमसि शासनपोतनियामकस्लमसि साधुदयाजुलजामकः॥लमसि सौख्यकरस्तिश लांगजरतमति विश्वगुरुः ग्रुनतागरः ॥ २१॥ दरिणीढंदः॥ जयति सततं वीरः शं छर्नव,दधिपारगो जगति तिलकः पापध्वांते गनस्तिरनुत्तरः ॥ क्रुशलनिलयस्तीर्थस्वा

www.jainelibrary.org

१००

मी सरासरसंस्तुतो विदितमहिनां विश्वे विश्वेश्वरार्चितपत्कजः।। ११।। वंशरयसंदः॥ कुलावतंसं यतिंधम्मेदेशकं कलंदिकापारगमंगिपालकं ।। नवीमि वीरं मतिदं हिता बदं मनोर्थसंपादनकामकुंजकं ॥ १३ ॥ छजंगप्रयातष्ठंदः ॥ प्रचं देववंद्यं जिनं वि श्वनार्थं जगचारुचूडामणिं वीरनार्थं ॥ सुवेऽहं जितारिं नतस्वर्गिनार्थं सदा शांति कारं नरेंड्राधिनायं ॥ २४ ॥ स्वग्धराइंदः ॥ श्रीराजं वीरदेवं प्रणतसुरमणि देवमर्त्या धिराजं कल्याणांनोधिव हो विमलशशधरं नाग्यसौनाग्यकारं ॥ ये जव्याः संस्तुवं ति प्रतिदिनमनघं चारुजत्त्या त्रिसंथ्यं प्रख्यातिं ते जजते त्रिच्चवनविदितां कीर्तिप्रा ग्नारकर्त्री । १५ ॥ तुन्यं नमः समयधर्म्मनिवेदकाय तुन्यं नमस्त्रिच्चवनेश्वरहोख राय ॥ तुन्यं नमः सुरनरामरसेविताय तुन्यं नमो जिनजनार्चितपत्कजाय ॥१॥ तु ज्यं नमोऽजिलपते हरिचंदनाय तुज्यं नमो वरकुलांबरजास्कराय॥तुज्यं नमः प्रणतदे वनराधिपाय तुन्यं नमः प्रवररूपमनोहराय ॥ २ ॥ तुन्यं नमो हरिणनायकनाय काय तुन्यं नमो यतिततिप्रतिपालकाय ॥ तुन्यं नमो विकचनीरजलोचनाय तुन्यं नमस्तनितनादविराजिताय ।। ३ ॥ तुन्यं नमः कुशलमार्गविधायकाय तुन्यं नमोवि कटकष्टनिषेधकाय ॥ तुन्यं नमो इरितरोगचिकित्सकाय तुन्यं नमस्विजगतो हृदि नूषणाय ॥ ४ ॥ तुन्यं नमो दलितमोइतमोनराय तुन्यं नमः कनकसन्निननूघना य ॥ तुन्यं नमोप्यखिलसद्वरणमंदिराय तुन्यं नमो मुखकलादिऽतचंड्काय ॥ ५ ॥ तुन्यं नमोऽतिशयराजिविनूषिताय तुन्यं नमः कुमतितापसुनंजनाय ॥ तुन्यं न मो मुखपयोधिवहित्रकाय तुन्यं नमो विगतकैतवमत्सराय ॥ ६॥ तुन्यं नमो विदि तजव्यजनाशयाय तुन्यं नमो निखिलसंशयवारकाय ॥ तुन्यं नमः प्रचितकीर्त्तिय शोन्विताय तुन्यं नमो जितहृषीकमुनीश्वराय ॥ ७ ॥ तुन्यं नमोप्रमितपुज्जनिर्मि ताय तुन्यं नमः सकलवाङ्मयपारगाय ॥ तुन्यं नमो नविकचातकनीरदाय तुन्यं नमश्वरणवैनवदायकाय ॥ ७ ॥कुलकम् ॥ वीराष्ट्रकं पठति यः सततं त्रिसंध्यं स्य क्ला सदा प्रबलमीइजडःप्रमादं ।। तदान्नि मंकु कुरुते कमला निवासं कल्याणसा गर छवामसतामनीष्टं ।। ए ।।

॥ छाय श्रीलोडणपार्श्वनायस्तवनप्रारंजः ॥ श्रीकरं कष्टहर्मारं विधिवादप्रकाशकं ॥ धिया तर्जितवागीशं परमात्मानमन्वहं ॥१॥ इमागारं रुपापात्रं गताधिव्याधिदूषणं ॥ हेकं तु सर्वकार्येषु श्रीप्रदं दलितामयं॥ १॥ धनधान्यकरं लोके रमाकेलिपदं परं ॥ मर्मतामदमा नौधमूर्खतादोषवर्जितं ॥ ३ ॥ द्यार्त्तिसंतादजेत्तारं सूरिश्रेणिशिरोमणिं ॥ रिपुसारंगसारंग मंगिनाधनिषेवितं ॥ ४ ॥ स्रोत्र

तेजसां मंदिरं रम्यं वारिताइोषर्ड्जनं ॥ निःसीमं सर्वगोत्राणां श्रीमंतं गुणतागरं ॥ ५ ॥ कथिताचारमार्गौधं कव्याणकमछे विधुं ॥ प्रणताइोषदेवेशं शासनं कांतन्तूष नं ॥ ६ ॥ गदितायमसंदोहं रसनामृतसुंदरं ॥ स्राधिकप्रतापानिं रिक्यदं दमितेंडि यं ॥ ९ ॥ नार्गेड्विचुधैः सेव्यं लोकानां शांतिकारकं॥ जडताया विवेत्तारं नयनाव्हा दकारणं ॥ ७ ॥ नार्गेड्विचुधैः सेव्यं लोकानां शांतिकारकं॥ जडताया विवेत्तारं नयनाव्हा दकारणं ॥ ७ ॥ नार्गेड्विचुधैः सेव्यं लोकानां शांतिकारकं॥ जडताया विवेत्तारं नयनाव्हा दकारणं ॥ ७ ॥ नार्गेड्विचुधैः सेव्यं लोकानां शांतिकारकं॥ जडताया विवेत्तारं नयनाव्हा तारतारुएपराजितं ॥ १ ॥ कियासंततिनेतारं त्रासितानेकदोषकं ॥ कतांतार्थविचारकं तारतारुएपराजितं ॥ १ ०॥ संसारसागरे पोतं घरमराधिविवर्जितं ॥ सर्वक्तं मेघगंनी रं हितं विदयस्य सर्वदा ॥ १ १ ॥ तेजोनिधिं मुदा पाद्वं नवीमि लोमणानिधं ॥ क व्याणसागराख्येन संस्तुतं द्यादिमार्क्रैः ॥ १ १ ॥ दादशनिः कुलकं ॥ श्रीमझोडण पार्वनाथमवनौ विख्यातगोत्रानिधं ये जव्या वरनावनक्तिसहिताः पूजंति सौख्या र्थिनः ॥ ते सत्वाः सुखमानकीर्त्तिकलिताः कव्याणतुंगाः परा जायंते चुवने प्रतापर चिरा आदेयवाचः सदा ॥ १ ३ ॥

॥ उप्रथ श्रीसेरीशपार्थाष्ठकप्रारंजः॥

कामौधकर्त्तारमञ्जेषदेवाधीशैस्सदाचर्चितपादपद्मं॥ कव्याणकारं वरनीलवर्णं सेरी शपाइर्वे नुष लोडणाख्यं ॥ १ ॥ सरपुष्पवद्वीवनवारिधारं निःश्लेषजव्यावलिप्रूरिता शं ॥ त्रैलोक्यब्रत्रं च्रुवनाधिनाथं सेरी० ॥श॥ सारंगवाणीजितचित्तदाढर्धं सारंगगंनी रनिनादकांतं ॥ सारंगसारांबकयुग्मराजं सेरी० ॥श॥ विश्वेषु सल्वेषु रुपानिधानं स म्यक्लरत्नानरणांकितांगं ॥ डुःस्वांगपर्श्चे दलितारिवर्गं सेरी० ॥श॥ अपारसंसारसमुद् पोतं सर्वक्रमाचारपवित्रवंशं॥रादांतशासार्थरदस्यदद्दं सेरी०॥श॥ वाणीरसानंदितवि श्वविश्वं तीर्थकरं नागपुरेशपूज्यं ॥ सर्वत्र विख्यातयशोनिरामं सेरी० ॥६॥ तेजोनिधिं कामितकामकुंजं सौजन्यसौदार्द्वविलासपात्रं ॥ कव्याणसूर्यादिवितानदेतुं सेरी० ॥ ॥ ७ ॥ आदित्यचंडाधिकदेदनासं सत्प्रातिदार्थ्याप्टकराजिराजं ॥ स्फाराठतौ मोदि् तदेवदेवं सेरी० ॥०॥ कलशः ॥ एवं कव्याणवंद्यं त्रिच्चवनतिलकं लोडणार्द् सुपार्श्व छल्लकाग्र्यं स्वचित्तं नवसफलठतो ज्ञानसंपत्तिसिद्धौ॥नित्यं ध्यायंति जव्याजिनसमय रताः द्यन्रज्ञेदयाजिरामास्तेपां दर्धात्प्रकामं जवति च सदने मंज्रुपद्मानिवासः ॥ ७ ॥ ॥ अप्र श्रीसंत्तवनायाष्टकप्रारंजः॥

लावल्पगेहं कलहेमवर्णं ढद्मोश्नितं सुंदरवाहचिन्हं ॥ लक्कीकलापार्णवधि ब्ल्पनाथं देवेर्नतं संजवनाथमीडे ॥ १ ॥ इयेनांगजं दारुणकर्मशत्रौ वीरं वरं पू तचरित्रशोजं ॥ देमास्पदं सङ्गुणरत्नखानिं देवै० ॥ १॥ इद्दवाकुवंशं वरतिग्मरदिम

राकेंडवकं गतवक्रमांदां ॥ अझानवैश्वानरशांतिनीरं देवै० ॥ ३ ॥ डःखोदधौ पीत समुइमिदं ॥ सत्प्रातिहार्याष्टकराजिराजं ॥ इमानिधिं विस्तृतपुष्पमूर्त्ति ॥ दे वै० ॥ ४ ॥ जव्यैर्मुदा सेवितपादपद्मं सझानवजाहतमोहजूधरं ॥ संसारदावाकुल मर्त्यमेधं देवै०॥५॥सत्कीर्त्तिपात्रं डरितारिसेव्यं जगज्जनानंदकरं शरए्यं ॥ कारुए्यसं युक्तपवित्रचित्तं देवै० ॥६॥ कुंदाईदंतं कजलोचनं वै वपुःश्रियातर्जितसूर्यकांतिं ॥ पापांधकारे ऽमलदीपकं तं देवै० ॥ ९ ॥ प्रसादनातत्परसेवकस्येप्सितार्थदाने सुर देववृद्धं ॥ सुखैरनेकैर्युतचारुदेहं देवै० ॥०॥ कलशः ॥ इत्यष्टकं श्रीजिनसंजवस्य पठंति ये मंज्रजनावयुक्त्याग्रियां गृहे पुष्पनिधानजव्याः कव्याणकाराश्च जवंति क् ६यः॥एगइति श्रीमज्जिननायकस्य श्रीसूर्यपुरजूषणस्य श्रीसंजवनाष्यस्याष्टकं संपूर्णे॥ ॥ च्याद्य श्रीसुक्तमक्तावली प्रारंजः॥

मालिनी ढंदः ॥ सकलसुरुतवझीवृंदजीमूतमालां निजमनसि निधाय श्रीजि नेंइस्य मूर्ति ॥ ललितवचनलीलालोकनाषांनिबदैरिह कतिपयपयैः सूक्तमालां तनोमि ॥ १ ॥ अथकमसंग्रहकाव्यं ॥ शार्दूलविकीडितउंदः ॥ तत्त्वज्ञानमनुष्य सज्जनगुणान्यायप्रतिङाङ्गमा चित्तादां च कुनुं विवेकविनयो विद्योपकारोद्यमाः ॥ दानकोधदयादितोषविषयाः साङ्गात्प्रमादस्तया साधुश्रावकधर्मवर्गविषये झेया प्रसंगाह्यमी ॥ १ ॥ अधदेवतत्वविषेः मालिनीइंदः ॥ संकल करमवारी मोक्तमार्गा धिकारी ॥ त्रिच्चवन उपगारी केवलक्तानधारी ॥ जविजन नित सेवो देव ए जक्तिजा वे ॥ इहिज जिन जजंतां सर्व संपत्ति आवे ॥ ३ ॥ जिनवरपदसेवा सर्वसंपत्तिदा ई॥ निशिदिन सुखदाई कब्पवद्वी सह्राई ॥नमि विनमि लहीजे सर्व विद्या वडाई ॥ क्तपन जिनह सेवा साधतां तेह पाई ॥ ४ ॥ अथगुरुविषेः ॥ स्वपरसमयजाणे ध मैवाणी वखाणे ॥ परम गुरुकह्याथी तत्व नीशंक माणे॥ जबिककज विकाशे जा नुज्यं तेज नासे ॥ इहज गुरु नजो जे ग्रुइमार्ग प्रकाहो ॥ ए ॥ सुगुरुवचनसंगे निस्तरेजीवरंगे ॥ निरमल नर आए जेम गंगाप्रसंगे ॥ सुणिय सुगुरु केशी॥ वाणि रायप्रदेशी ॥ लहि सुरनव वासी जे हसे मोक्तवाशी ॥ ६ ॥ अथधर्मविषे ॥ जलनि धि जलवेला चंइयी जेम वाधे ॥ सकल विजवलीला धर्मथी तेम साधे ॥ मनुञ्च जनमकेरो सार ते धर्म जाणी ॥ जजिजजि जवि जावे धर्म ते सौख्य खाणी ॥ आ इह धरम पसाये विकमे सत्य साध्यो ॥ इह धरम पसाये शालिनो साक वाथ्यो॥ जस नर गज वाजी मृत्तिकाना जिकेई ॥ रणसमय थया ते जीव साचा तिकेई ॥ ॥ ए ॥ अथज्ञानविषेः ॥ तन धन वकुराई सर्वे ए जीवनेने ॥ पण इक इहिलूं

इान संसारमां हे ॥ जवजजनिधि तारे सर्व जे इःख वारे ॥ निजपरहित हेते झान ते कां न धारे ॥ ए ॥ यवक्ति इक गाया बोधयी नै निवाखो ॥ इक पदथि चिलातीपुत्र संसार वाखो ॥ श्रुतजणत सुज्ञानी मास तुंबादि यावे॥ श्रुतथि अन य हाथे रोहिएयो चोर नावे ॥ १ ण अयमनुष्यजन्मविषेः ॥ जवजलनधि जमंतां कोइ वेला विशेषे ॥ मनुजजनम लाधो इलहो रत लेखे ॥ सफल कर सुधर्मा ज न्म ते धर्मयोगे ॥ परनवसुख जेखी मोइलक्सी प्रनोगे ॥ ११ ॥ मनुजजनम पा मी आलसे जे गमेने ॥ शशिनृपतिपरे ते शोचनाथी जमेने ॥ इलह दश कथा यूं मानुखोजन्म ए वे ॥ जिनधरम विशेषे जोडतां साथ ते वे ॥ १२ ॥ अधसजन विषेः ॥ सदयमन सदाई इःखियां जे सहाई ॥ परहित मतिदाई जास वाणी मि वाई॥ गुएकरि गहराई मेरुज्यूं धीरताई॥ सुजनजन सदाई तेह आनंददाई ॥ १ २॥ जइ इरजन लोके दूहव्या दोष देई ॥ मनमलिन न थाए सज्जना तेह तेई ॥ डुप दजनकपुत्री अंजना कष्टयोगे ॥ कनकजिम कशोटी ते तिसी शोल जोगे ॥ १४ ॥ अथगुणविषेः ॥ गुणगदि गुण जेमां ते बहू मान पावे ॥ नर सुरनिगुणे ज्यूं फूल रीज़े चढावे॥ गुएकरि बढु माने लोक ज्यूं चंइमाने ॥श्रति करा जिम माने र्णने त्यूं न माने ॥ १ ५ ॥ मलयगिरि कडे जे जंबुलिंबादि सोई ॥ मलयजतरु संगे चंदना तेइ होई ॥ इम लहिय वडाइयूं कीजिये संग रंगे ॥ गजशिरचडि बेठी ज्यूं अजा सिंहसंगे ॥ १६ ॥ अधन्यायविषे ॥ जग सुजस सुवासे न्यायलही उपासे ॥ व्यसन इरित नासे न्यायथी जोक वासे ॥ इम इत्य विमासी न्याय अंगी करी जे॥अनय परिहरीजे विदवने घदय कीजे ॥ १९ ॥ पद्य पण तस सेवे न्यायथी जे न चूके ॥ अनयपथ चले जे नाइ ते तास मूके ॥ कपिकुल मिलि सेव्यो रामने सीस नामी ॥ अनयकरि तज्यो ज्यूं नाइए लंकस्वामी ॥१ ०॥ इय गय न सहाई युद्ध कीर्त्ता सदाई॥ रिपुविजय वधाई न्याय ते धर्मदाई॥ धरमनय धरे जे ते सुखे वैरि जीपे ॥ धरमनय विद्रूणा तेहने वैरि कोपे ॥ १९ ॥ धरमनय पसाये पांगवा पंच तेई॥ करि युधे जय पाम्या राज्यलीला लहेई॥ धरमनय विदूणा कौरवा गर्व माता रणसमय विगृता पांमवा तेइ जीखा ॥ २० ॥ अध्यप्रतिज्ञाविषेः अग्रुन जिकांई आदखुं जे निवाहे ॥ रवि पण तस जोवा व्योम जाणी ग्रन पखाझे वगाहे ॥ करिगहन तिवाहे तास निस्तंत आपे ॥ मलिन तनु सिंधुमां सूर आपे ॥ ११ ॥ पुरुषरयण मोटा जे गणीजे धराये ॥ जिए जिम प डिवज्यूं ते न ढांडे पराये ॥ गिरिश विष धस्त्रो जे ते न छाद्यापि नाख्यों ॥ इर

गति नर लेई विक्रमादित्य राख्यो ॥ २२ ॥ अय उपशमविषेः ॥ उपशम हित कारी सर्वदा लोकमांही ॥ उपशम धर प्राणी ए समो सौख्य नांही ॥ तप ज प सुर सेवा सर्व जे झादरे जे ॥ उपशमविए जे ते वारि मंथा करे जे ॥ १३ - 11 उपशम रस लोला जास चित्ते विराजी ॥ किम नर जव केरी रिदिमां तेद् रा जी ॥ गज सुनिवर जेदा धन्य ते ज्ञान गेहा ॥ तपकरि छज्ञ देहा शांति पीयू ष मेहा ॥१४॥ अथ त्रिकरणशुद्धिविषेः ॥ जग जन सुखदाई चित्र एवुं सदाई ॥ मुखे अति मधुराई साच वाचा सुहाई ॥ वपु परहित हेते त्रएय ए ग्रुद ॥ तप जप वर्त सेवा तीर्थ ते सर्व तेने ॥ १५ ॥ मण वच तनु त्रत्ये गंगज्यं ग्रुइ जेने ॥ निज घर निवसंतां निर्जरा धर्म तेने ॥ जिम त्रिकरण ग्रुई डौप दी छांब वाब्यो ॥ घर सफल फलंतो शील धर्मे सुद्दाव्यो ॥ २६ ॥ छाथ कुलविषे सहज गुण वरो ज्यूं शंखमां श्वेतताई ॥ अमृत मधुरताई चंइमां शीतलाई कुवलय सुरनाई इकुमां ज्यूं मिठाई॥ कुलज मनुजकेरी खूं सुनावे नलाई॥ ॥१७ ॥ जिए घर वर विद्या जो दुवे तो न इदि ॥ जिए घर डय साने तो न सौजन्य वृदि ॥ सुकुल जनम योगे ते त्रणे जो लहीजे ॥ अजय कुमर ज्यूं तो जन्म साफल्य कीजे ॥ २० ॥ अप विवेकविषे ॥ हृदय घर विवेके प्राणि जो दीप वासे 11 सकल जब तणो तो मोह श्रंधार नाज्ञे 11 परम धरम वस्तु त त्व प्रत्यक्व जासे ॥ करम जर पतंगा खांग तेने विधंसे ॥ १९ ॥ विकल नर कहीजे जे विवेके विहीना ।। सकल गुएा जखा जे ते विवेके विलीना ।। जिम सुम ति पुरोधा नूमि गेहे वसंते ।। उगति जुगति कीधी जे विवेके उगंते. 11 3º 11 अप विनय विषे ॥ निशिविण शशि सोहे ज्यूं न शोले कलाई ॥ विनयविण न सोहे खूं न विद्या वमाई ॥ विनयवहि संदाई जेह विद्या सहाई ॥ वनय विएा न कांई लोकमां उच्चताई ॥ ३१ ॥ विनय गुएा वहीजे जेहथी श्री वरीजे ॥ सुर नर पति जीजा जेह हेलां जहीजे ॥ पर तणय शरीरे पेशवा जे सुविधा ॥ विनय गुएाथि लाधी विक्रमे तेइ विद्या ॥ ३२ ॥ अथ विद्याविषे ॥ श्रगम म ति प्रयुंज्ये विद्ययें कोन गंजे ।। रिपु दल बल जंजे विद्ययें विश्व रंजे খনখি 11 अखय विद्या सीख एएँ। तमासे ॥ गुरुमुख चाएँ। विद्या दीपका जेम जासे ॥ ३३ ॥ सुर नर सुप्रसंसे विद्ययें वैरि नाहो ॥ जगि सुजस सुवासे जेद दा उपासे ॥ जिएकरि नृप रंज्यो नोज बाएो मयूरे ॥ जिएकरि कुमरिंदो रीजव्यो हेम सुरे ॥ ३४ ग्रेंग्रच चपकारविषेः॥ तन धन तरुणाई आयु ए चंचला वे॥

www.jainelibrary.org

परहित करि ले जे ताहरो ए समे छे ॥ जब जनम जरा जां लागजो कंठ साई ॥ कहि न तिए समे तो कोए थारो सहाई ॥ ३५ ॥ नहि त खावे ना नदी नीर पीवे ।। जस धन परछर्थें सो जुछे जीव जीवे ।। रु फल नल करण नरिंदा विकमा राम जेवा ।। परहित करवा जे उद्यमी दक्त तेवा ॥३ ६॥ ॥अथ उद्यमविषे ॥ रथण निह्तिरी ने उद्यमे लहि आणे ॥ गुरु जगति हरीने उ यमे शास्त्र जाएो ॥ इख समय सहाई जयमे ने जलाई ॥ अति अलस तजी ने उद्यमे लाग नाई ॥ ३९॥ नृपशिर निपतंती वीज जात्कारकारी ॥ उदम क रि सुबुदी मंत्रिए ते निवारी ॥ तिम निज सुतकेरी आवती डुर्दशाने ॥ **उदम** करि निवारी ज्ञानगर्न प्रधाने ॥ ३० ॥ अप दानविषे ॥ थिर नहि धन राख्यो तेम नाख्यो न जाए॥ इणि पर धन जोतां एव गत्या जुणाए॥ इह सगुण सु पात्रे जेह दे जक्ति नावे ॥ निधि जिम धन छागे साथ तेहीज छावे 11 9 4 11 नल बलि इरिचंदा नोज जे जे गवाए॥ प्रह समय सदा ते दानकेरे पसाए॥ इम त्हदय विमाली सर्वथा दान दीजे ॥ धन सफल करीजे जन्मनो लाहु ली जे ॥ ४० ॥ अथ शीलविषे ॥ अग्रुन करम घाले शील शोना दिखाले ॥ गुएगए छजुआले आपदा सर्व टाले ॥ तस नर बहु जीवी रूप जावएय देई ॥ परनव जि व होई शील पाले जिकेई ॥ ४१ ॥ इस जग जिनदास श्रेष्ठ शीले सुहायो ॥ ति म निरमल शीले शील गंगेव गायो ॥ कलि करण नरिंदा ए समां हे जिकोई॥ परनव शिव पामे शील पाले तिकोई ॥ ४२ ॥ अय तपविषे ॥ तरणि किरणथी ज्यूं सर्व छंधार जाए॥ तपकरि तपथी त्यूं इःख ते दूर थाए ॥ वलि मलिन थ यूं जे कर्मचंमाल तीरे ॥ किम तनु न पखोले ते तपस्वर्ण नीरे. ॥ ४३ ॥ तपविण नवि थाए नाश इःकर्म केरो ॥ तपविएा न टले जे जन्म संसार फेरो ॥ तप ब लि लहि लब्धी गोतमे नंदिखेणे ।। तप बलि वपु कीयुं विष्णु वैकीय जेणे ।।धधा। अथ नावविषे ॥ मनविण मिलवो ज्यूं चाववो दंतहीणे ॥ गुरुविण जणवो ज्यूं जीमवो ज्यूं छाजुएो ।। जसविएा बहु जीवी जीव ते ज्यूं न सोहे ।। तिम धरम न सोहे नावना जो न होहे. ॥ ४५ ॥ जरत नृप इजाची जीर एश्रेष्ठि नावे ॥ वलि वलकल चीरी केवल ज्ञान पावे ॥ बलनद हरिणो जे पंचमे स्वर्ग जाए ॥ इहज गुए पसाये तास निस्तार थाए ॥ ४६ ॥ अथ कोधविषे ॥ तृए दहन द हंतो वस्तु ज्यूं सर्व बाले।। गुए करए जरी खूं कोध काया प्रजाले 🕕 प्रसम ज लद धारा वन्दि ते कोध वारो ।। तप जप व्रत सेवा प्रीतिवझी वधारो. ।। ४७ ।।

www.jainelibrary.org

धरणि परग्ररामे कोधि निक्तत्रि कीधी ॥ धरणि सुचुमराये कोधि निब्रह्मि सा थी।। नरकगति सहायी कोध ए इःख दाई ।। वरज वरज जाई प्रीति दे जे वधा ई।। ४०॥ अथ मानविषे ॥ विनय वनतणी जे मूल शाखा विमोडे ।। सुगुण क नककेरी ग्रंखलाबंध तोडे ।। उनमद करि दोडे मान ते मत्त हाथी ॥ निजवश करि ले जे अन्यया दूर एथी ॥ ४७ ॥ विषद विष समो ए मान ते सर्प जाणो मनुज विकल होवे एए मंके जडाएों ॥ इह न परिइखों जो मान डयॉधने तो ॥ निज कुल विएासाडचो मानने जे वहंतो ॥ ५० ॥ अथ मायाविषे ॥ नितुरपणु निवारी हीयडे हेज धारी।। परिहर इल माया जे असंतोषकारी।। मधुर मयुर बोले तोदि विश्वास नाणे ।। अदि गिलण प्रमाणे मायिने लोक जाणे ॥ ५१ ॥ म कर म कर माया दंज दोषद्व ढाया ।। नरय तिरिय केरा जन्म दे जेह माया ॥ बलि नृप ढलवाने विस्नु मायां वहंतां ॥ लहुयपण लह्यूं जे वामनारूप छेतां. ॥ ५२॥ अथ जोनविषे ॥ सुएा वयएा सयाएो चित्तमां जोन माएो ॥ सकल व्य सनकेरो मार्ग ए लोज जाएो ॥ इक खिएा पए। एने संग रंगे म लागे ॥ जव नव इख दे ए लोजने दूर त्यांगे ॥ ५३ ॥ कनकगिरि कराया लोजयी नंदराये ॥ निज अरथ न आया ते इसा देवताये ॥ सयल निधि लही जे स्वाय ते विश्व कीजे ॥ मन तनह वरीजे लोन तृष्मा न ढीजे ॥ ५४ ॥ अय दयाविषे ॥ सुरुत क लप वेली लज्जि विद्या सहेली ॥ विरतिरमण केली शांति राजा महेली ॥ सकल गुएा जलेरी जे दया जीव केरी ॥ निज त्हदय धरी ते साधिए मुक्ति सेरी ॥ ५५॥ निज सरण परेवो ज्ञेनची जेण राख्यो ॥ षट दज्ञम जिने ते ए दया धर्म दा ख्यो ॥ तिह त्हदय धरीने जो दया धर्म कीजे ॥ जवजजधि तरीजे छःख दूरे करी जे ॥ ५६ ॥ अय सत्यविषे ॥ गरल अमृत वाणी साचथी अग्नि पाणी ॥ सृज सम छहिराणी साच विश्वास खाणी ॥ सुपसन सुर कीजे साचथी ते तरीजे ॥ त्रिए अलिक तजीजे साचवाणी वदीजे ॥ ५७ ॥ जग अपजश वाधे कूडवाणी वदंतां ॥ वसु नृपति कुगत्यें साख कूडी जरंतां ॥ असत वचन वारी साचने स धारी ॥ वद वचन विचारी जे सदा सौख्यकारी ॥ ५० ॥ अथ चोरीविषे ॥ यर धन अपहारे खार्थपें चोर हारे ॥ कुल अजस वधारे बंध घातादि धारे ॥ पर धन तिए हेते सर्प ज्यूं दूर वारी ॥ जग जन हितकारी होय संतोष धारी ॥ ५७ ॥ निशिदिन नर पामे जेद्रथी ऊःख कोडी ॥ तज तज धन चोरी कष्टनी जेद्द ओरी ॥ पर विनव हरंतो रोहिणी चोर रंगे ॥ इह अनय कुमारे ते मह्यो बुद्धि संगे ॥ ६० ॥

ञ्प्रच कुशीलविषे॥ अयश पमह वागे लोकमां लीह जागे ॥ इरजन बहु जागे जे कुले लाज लागे ॥ सजन पर्ण विरागे मां रमे एए। रागे ॥ परतिय रस रागे दो पनी कोडि जागे ॥ ६१ ॥ परतिय रसरागे नाश लंकेश पायो ॥ परतिय रस त्या गे ज्ञील गंगेव गायो ॥ द्रुपद जनक पुत्री विइव विश्वे विदीती॥ सुर नर मिलि सेवी शीलने जे धरंती ॥ ६ २ ॥ अथ परिग्रहविषे ॥ शशिजदय वधे ज्यूं सिंधु वेला चलेरी॥ धनकरि मन साए तेम वाधे घऐोरी ॥ इरित नरग सेरी तूं करे ए परेरी ॥ ममकर अधि केरी प्रीति ए अर्थकेरी॥ ६३॥ मनुज जनम हारे ॥ इंखनी कोडि धारे ॥ परिम इ ममता ए स्वर्गना सोख्य वारे ॥ अधिक धरणि जेवा धातकी खंम केरी ॥ सुज्रम, कुगति पामी चक्रिराये घऐोरी ॥ ६४ ॥ अथ संतोषविषे ॥ सकल सुख नराए विश्व तावरय थाए॥ नवजलधि तराए इःख दूरे पलाए॥ निज जनम सुधारे आपदा दूर वारे ॥ निज धरम वधारे जेह संतोष धारे ॥ ६५ ॥ सकल सुखतणो ते सार संतोष जाएो ॥ कनक रमणिकेरी जेइ इज्ञा न आएो ॥ रजनि कपिल बांध्यो स्व र्णनी लोलताए॥ जमर कमल बांध्यो ते असंतोषताए॥ ६६॥ अथ विषयविषे॥ शिवपद यदि वांग्रे जेह झानंद दाई॥ विषसम विषया तो ग्रांमि दे इःखदाई॥ मधुर अमृत धारा दूधनी जो लहीजे ॥ अति विरस सदा तो कांजिका संग्रही जे ॥ ६ ७ ॥ विषय विकल ताणी कीचके नीम नायी ॥ दशमुख अपदारी जा नकी रामनायाँ ॥ रति धरि रहनेमी क्रीडवा नेमि नार्या ॥ जिए विषय न वर्ज्या तेइ जाणो खनायाँ ॥ ६० ॥ खय इंड्यिविषे ॥ गज मगर पतंगा जेह जुंगा करं गां॥ इक इक विषयार्थे ते लहे छःख चंगा ॥ जस परवश पावे तेहनुं ग्रूं कही जे ॥ इम त्हदय विमासी इंडि पांचे दमीजे ॥ ६ ७ ॥ विषय वन चरता इंडि जे उंटडा ए ॥ निज वश नवि राखे तेह दे ७ खडा ए॥अवश करण मृत्यू ^उयूं अगुप्तें डि पामे ॥ स्ववश सुख लह्या ज्यूं कुमे गुतींडि नामे ॥ ७० ॥ अथ प्रमादवि थे ॥ सद्घ मन सुख वांग्रे इःखने को न वांग्रे॥ नहि धरम विना ते सौख्य ए संपजे ने ॥ इह सुधरम पामी कां प्रमादे गमीजे ॥ अति अलश तजीने उद्यमे धर्म की जे ॥ ७१ ॥ इह दिवज्ञ गया जे तेह पाढा न आवे ॥ धरम समय आले कां प्र मादे गमावे ॥ धरम नवि करे जे आयु आले वहावे ॥ शशि नृपतिपरे त्युं सोच ना छंत पावे ॥ ९२ ॥ छाच साधुधर्मविषे ॥ शाईल विकीडितछंदः ॥ जे पंच व्रत मेरु नार तिवहे, निःसंग रंगे रहे ॥ पंचाचार धरे प्रमाद न करे, जे डःपरिस्सा सहे ॥ पांचे इंडि तुरंगमा वज्ञ करे, मोक्लार्थने संयहे ॥ एवो डब्कर साधु धर्म धन ते, जे

ण्यूं यहे त्यूं वहे ॥ ७३ ॥ मालिनी छंद ॥ मयएा सरव मोभी कामिनी संग होभी॥ तजिय कनक कोडी मुक्तिसूं प्रीति जोडी ॥ नव नव नय वामी छुढ चारित्र पामी ॥ इह जग शिवगामी ते नमो जंखु खामी ॥ ७४ ॥ अप श्रावकधर्म विषे ॥ शा दूलविक्रीडितडंद ॥ जे सम्यक्त लही सदा व्रत धरे, सर्वज्ञ सेवा करे ॥ संध्या वश्य क आदरे गुरु नजे, दानादि धर्माचरे ॥ नित्ये सदगुरु सेवना मनधरे. एवो जि नाधीशरे ॥ नाख्यो श्रावकधर्म दोय दशधा, जे आदरे ते तरे ॥ ७५ ॥ मालिनी ढंद ॥ निशिदिन जिनकेरी जे करे ग्रुद सेवा ॥ अणु व्रत धरि जे ते काम आनंद देवा ॥ चरम जिन वरिंदे जे सुधर्में सुवास्या ॥ समकित सतवंता श्रावका ते प्रसं स्या ॥ ७६ ॥ इम अरथ रसाला जे रची सूक्तमाला ॥ धरम नृपति बाला मालि नी ढंद शाला ॥ धरम मति धरंतां ए इहां पुएष वाध्यो ॥ प्रथम धरम केरो सार ए वर्ग साध्यो ॥ ७९ ॥ इति श्रीमत्सूक सुक्तावव्यां धर्मवर्गः प्रथमः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अय अर्थवर्ग प्रारंजः॥

उपेंड्वजाइंदः॥ अयार्थवर्गे दितचिंतनं श्रीमितंपचार्थ्यस्व महीशसेवा ॥ खलादिमैत्री व्यसनादि चैव; मिहावधार्याः कतिचित्प्रसंगाः ॥ १ ॥ अथ अर्थ विषेः मालिनी ढंद ॥ अरथ अरजि जेएो स्वायते विश्व होवे ॥ जिएा विएा गु ए विद्या रूपने कोए जोवे ॥ अनिनव सुखकेरो सार ए अर्थ जाएं। ॥ सकल धरम एयी साधिए चित्त आणी ॥ २ ॥ अरथ विण कवन्नो जेह वेइयाइ ना ख्यो ॥ अरथ विण वसिष्ठे राम जातो छवेख्यो ॥ सुरुत सुजस कारी अर्थ ते ए उपाजों॥ कुवएाज उपजंतो अर्थ ते दूर वर्जा ॥ ३॥ अथ हित चिंतन्वि षेः॥ परहित करवा जे चिन उज्जाह धारे ॥ परकत हितहीये जे न कांई विसारे ॥ प्रति हित परथी ते जे न वांगे कदाई ॥ पुरुष रयण सोई वंदिए सो सदाई ॥४॥ निज इख न गणीने पारकूं इःख वारे ॥ तिइतणि बलिहारे जाइए कोडि वा रे ॥ जिम विषचर जेएों मंक पीडा सहीने ॥ विषधर जिनवीरे बूजव्यो ते वहीने ॥ ५ ॥ अथ लक्कीविषेः॥इरि सुत रति रंगे जे रमे रात सारी ॥ शिवतनय कुमा रो बह्य पुत्री कुमारी ॥ दितकरि हगलीला जेइने लंडि जोवे ॥ सकल सुख ल हे सो सोहि विख्यात होवे ॥ ६ ॥ लखमि बलि यशोदा नंदने विश्व मोहे ॥ ल खमि विण विरूपी संछ जिकू न सोहे ॥ जखमि जहिय रांके जे शिलादिख नां ज्यो ॥ लखमि लहिय शाके विक्रमे विश्व रंज्यो ॥ ७ ॥ अथ रुपणविषेः ॥ कण

कण जिम संचे कीटिका धान्यकेरो ॥ मधुकर मधु संचे चोगवे को अनेरो ॥ ति म धन रुपणकेरो नोपकारे दिवाये ॥ इमहि विलय जाए अन्यया अन्य खाए ॥ ए ॥ रूपए पए धरंतां जे नवे नंद राया ॥ कनक गिरि कराया ते तिहां ञ्चर्भ नाया ॥ इम मजत करंतां इःख वासे वसीजे ॥ ऊपण पणु तजीजे मेघज्यूं दा न दीजे ॥ ए ॥ अथ याचनविषेः ॥ निरमल गुए राजी त्यां लगे जोक राजी ॥ तब लग कहि जीजी खां लगे प्रीति फाफी ॥ सुजन जन सनेही खां लगे िमि त्र तेही ॥ मुख यकि न कहीजे ज्यां लगे देहि देही ॥ १० ॥ जइ वडपण वांते मांगजे तो न कांई ॥ लद्ध पण जिए होवे केम कीजे तिकाई ॥ जिम लघु यइ सोनें वीरयी दान लीधूं ॥ इरिँ बल नृप आगे वामना रूप कीधूं ॥ ११ ॥ अथ नि धनविषेः ॥ धनविए निज बंधू तेइने दूर ढंडे ॥ धनविएा गृह जाया तेह सेवा न मंडे॥ निरजल सरजेवो देह निर्जीव जेवो ॥ निरधन तृएा जेवो लोकमें ते गएे वो॥ १ श ॥ सरवर जिम सोहे नीर पूरे जरायो ॥ धन करि नर सोहे तेम नीते उपायो ॥ धनकरिय सुंहंतो माघ जे जाए हूतो ॥ धनविए पग सूजी तेह दीवो मरं तो ॥ १३ ॥ अथ राज सेवाविषेः ॥ सुजनसुँ हित कीजे डर्जना सौँख दीजे ॥ जग जन वश कीजे चित्त वांढा वरीजे ॥ निज गुएा प्रगटीजे विश्वना कार्य कीजे ॥ प्रज सम विचरीजे जो प्रनूसेव कीजे ॥ १४ ॥ जगतिकरि वडानी सेब कीजे जिकाई ॥ अधिक फल न आपे कमेथी ते तिकाई ॥ जलधि तरिय लंका सीत संदेस लावे ॥ इनुमत करमे ते राम कज्जोट पावे ॥ १५ ॥ अथ खलताविषे ॥ रस विर स नजे ज्यूं श्रंब निंब प्रसंगे ॥ खल मिलण दुवे खूं श्रंतरंग प्रसंगे ॥ सूरा स ण ससनेही जाणि ले रीति जेही ॥ खल जन निसनेही तेहरां प्रीति केही ॥ र द मगर जल वसंतो ते कपीराय दीतो ॥ मधुर फल चरवावी ते कैस्रो मित्र मीतो ॥ कपि कलिज जखेवा मन्स खेली खलाई॥ जलमहिं कपि बुद्दी ग्रांमि दे ते जला ई ॥ १९ ॥ अय अविश्वाराविषे ॥ उपजाति ढंद ॥ विश्वासिसाये न ढले रमीजे ॥ न वैरि विश्वास कदापि कीजे ॥ जो चित्त ए धीर गुएो धरीजे ॥ तो लज्जि लीला ज गमां वरीजे॥ र ७॥ इंड्वजावंद॥ चाणायके ज्यूं निज काज साखो ॥ जे राज जागी नुष तेइ माखो ॥ जो घूऋडे काक विश्वास कीधो ॥ तो वायसे घूकने दाह दीधो ॥ र एँ॥ अय मैत्रीविषे ॥ मालिनी बंद ॥ करि कनक सरीसी साधु मैत्री सदाई ॥ घसि कसि तप वेधे जास वाणी सवाई ॥ छहव करहि मैत्री चंइमां सिंधु जेही ॥ घट घट वध वाधे सारखा वे सनेही ॥ २०॥ इह सहज सनेहे जे वधे मित्रताई ॥ रवि प

Jain Education International

रिन चले ते काजज्यूं बंधुताई ॥ दरि इलधर मैत्री रुझने जे ढमासे ॥ इलधर नि ज खंधे जे फिखो जीवि आसे ॥ ११॥ अथ व्यसन विषे ॥ नलिन मलिन शोजा सां जथी जेम थाए॥ इह कुवसनथी खूं संपदा कीर्त्ति जाए॥ कुविसन तिए हेते स वैथा दूर कीजे ॥ जनम सफल कीजे कीत्ति कांता वरीजे ॥ २२ ॥ अथ यूतविषे ॥ डु तविलंबित ढंद ॥ सुगुरु देव जिहां नवि लेखवे॥धनविणा सहुए जिण खेलवे ॥ जब नवे नमवूं जिए जवटें ॥ कहिनि कोएा रमे तिएा जूवटें ॥ २३ ॥ अधमांस जक्षण विषे॥ उपजातिबंद॥ जे मांस जुब्धा नर ते न होवे॥ते राङ्ग्सा मानुषरूप सोवे।।अय चोरीविषेः॥ जे लोकमां नर्ग निवास जरी॥ निवारीए ते परड्व्यचोरी ॥ २४ ॥ छाथ म यविषेः॥ छयंगप्रयातढंद ॥ सुरापानथी चित्त संचांत थाये ॥ गले लाज गंजीरता शी ल जाये ॥ जिहां ज्ञान विज्ञान सूर्फे न बूफे ॥ इग्रू मद्य जाणी न पीजे न दीजे ॥ ॥ १ ५॥ अथ वेदयाविषेः ॥ कहो कोए वेदया तएगे अंग सेवे ॥ जिएो अर्थनी लाजनी हाणि होवे ॥ जिणे कोश सिंहा गुफाये निवासी ॥ त्वव्यो साधु ने पालग्यो कंबलासी ॥१६॥ अथ खेटकविषेः॥ ढंद ॥ मृगयाने तज जीव घात जे ॥ सघले जीव दया सदा जजे ॥ मृगयाथी छख जे लह्या नवां ॥ इरि रामादि नरेंइ जे द्वा ॥ २९ ॥ परस्वीविषेः चौपाईग्रंद ॥ स्वर्ग सौंख्यजणि जो मन आशा ॥ ग्रांडे तो परनारि विलासा ॥ जेण एण निज जन्म डःखए ॥ सर्वथा न परलोक सूखए ॥ १० ॥ अय ए विषयोना उदाहरणो ॥ शाईलविकीडितइंदः ॥ जूवा खेलण पांमवा वन जम्या, मये बली दारिका ॥ मांसे श्रेणिक नारकी इख लह्या, बांध्या नरे चोरि का ॥ आखेटे दशरत्यपुत्र विरही, केवन्न वेइया घरे ॥ लंकास्वामि परत्रिया रमे, जे ए तजे ते तरे ॥ १९॥ अथ कीर्निविषेः ॥ मालिनी ढंदः ॥ दिशिदिशि पसरं ती चंइमा ज्योति जैसी ॥ श्रवण सुणत लागे जाण मीठी सुधासी ॥ निशिदिन जनगाये रामराजिंद जेवी ॥ इणि कलि बहु पुखे पामियें कीर्त्ति एवी ॥३०॥ अध प्रधानविषेः॥ सकल व्यसन वारे खामिसूं जकिधारे ॥ खपरहित वधारे राज्यना का ज सारे ॥ अनय नय विचारे हुइता दूरे वारे ॥ निजसुत जिम धारे राज्य लक्षी वधारे ॥ ३१ ॥ अथ कलाविषे ॥ चतुरं कर कलानो संयहो सौख्यकारी ॥ इण रुए जिए लाधी डौए संपत्ति सारी ॥ त्रिपुर विजय कत्ती जे कलाने प्रसंगे ॥ हि मकर मनरंगे ले धस्तो उत्तमांगे ॥३शा छाथ मूर्खताविषेः॥ वचन रसन जेदे मूर्ख वार्त्ता न वेदे ॥ तस कुवचन खेदे तेइने सीख जे दे ॥ नृपशिर रज नाखी जेणे मू र्खे वहीने ॥ हित कहत हणीज्युं वानरे सुग्रहीने ॥३२॥ अथ लक्काविषेः ॥ निज

वचन निवाहे लाज ग्युंराज्य वाले ॥ व्रत नय कुलरीतें मातज्यूं लाज पाले ॥ सक ल गुए सुहावे लाजथी नावदेवे ॥ व्रत नियम लह्यो जे नाइ लज्जा प्रनावे ॥३४॥ शालिनी ढंद ॥ एवा जे जे रूयडा नाव राजे ॥ एऐविश्वें अर्थथी तेह ढाजे ॥ एवुं जाएी सार ए सौख्य केरो ॥ ते धोरा जे अर्थ अर्जे नलेरो ॥ ३५ ॥ इतिश्री सुक्त मुकावल्यां अर्थवर्गा दितीयः समाप्तः ॥ २ ॥

॥ इष्रय कामवर्ग प्रारंजः ॥

उपजाति ढंदः॥ याह्याः कियंतः किल कामवर्गे कामो नूनायों गुणदोषनाजः ॥ सुंजद्रणे योंगवियोगयुक्तेः समातृपितृप्रसुखाः प्रसंगाः ॥ र ॥ अथ कामविषेः ॥ कंदर्प पंचानन तेज आगे ॥ कुरंग जेवा जगजीव जागे ॥ स्त्रीशस्त्र लेई जग जे व दीता ॥ तिएए। देवा जनवुंद जीता ॥ २ ॥ माजिनी ढंदः ॥ मनमथ जगमांहे इ र्जयीजे खद्यापी ॥ त्रिच्चवन सुरराजी जालशस्त्रे सतापी ॥ जलज विधि उपासे वा र्दिजा विष्णु सेवे ॥ हर हिम गिरिजाने जेण अर्दांग देवे ॥ ३ ॥ शार्दूलविकीडित **उंदः ॥ जिल्लीजाव च**ब्यो महेश उमया, जे काम रागे करी ॥ पुत्री देखि चब्यो चतुर्मु ख हरी, आहेरिका आदरी॥ इंडे गोतमनी त्रिया विलसिने, संजोग ते ओलव्या ॥ कामे एम महंत देव जग जे, ते जोलव्या रोलव्या ॥ ४ ॥ मालिनी ढंदः ॥ नल नृ पद वदंती देखि चारित्र चाले ॥ अरह नरहनेमी ते तपत्या विटाले ॥ चरम जिन मुनी ते चिझणारूप मोहे ॥ मयण सर व्यथाना एइ उन्माद सोहे ॥ ५ ॥ अध गुणदोषोज्ञावनविषे ॥ रथो ६ताउंदः ॥ उत्तमा पण नरा न संजवे ॥ मध्यमा तिम न योषिता दुवे ॥ एह उत्तमिक मध्यमी पणो ॥ बेहुमांहि गुणदोषनो गिणो ॥६॥ तत्र पुरुषगुणा यथा ॥ शार्दूलविकीडितढंदः॥ जे निखे गुण वृंद ले परतणा, दोषां न जे दाखवे ॥ जे विश्वे उपगारिने उपकरे, वाणीसुधा जे लवे ॥ पूरा पूनिम चंद जेम सुगुणा, जे धीर मेरूसमा॥ उंमा जेद गंनीर सायर जिस्या, ते मानवा उत्तमा ॥ । अनुषुष् वंदः ॥ रूप सौनाग्य संपन्नाः सत्वादिग्रणशोननाः ॥ ते लोके विरला थीराः श्रीराम सहशा नराः ॥ ७ ॥ अथ पुरुष दोषा यथा ॥ शार्दूलविक्रीडितवंदः ॥ लंकासामि इरंति राम तजि जे, शीतातणी एवकी ॥ खीवेची इरिचंद पांमव नृपे, रू ष्णा नराखी सको ॥ रात्रें गंंकि निज स्त्रिया नल नूपे, ए दोष मोटा जणी॥ जोवो उत्तम मांहि दोष गणना, का वात बीजातणी ॥ ए ॥ अय स्त्रीयुणा यथा ॥ उपजा तिबंदः ॥ सुसीख आले प्रिय चित्त चाले ॥ जे शील पाले गृह चिंत टाले ॥ दाना

दि जेऐो गृहधर्म होई॥ ते गेहि नित्ये घरलन्ति सोई॥ १०॥ अथ स्त्रीदोषा यथा ॥ उपजातिग्रंद ॥ जर्ना हुएयो जे पति मारकायें ॥ नाख्यो नदीमां ग्रुक मालिका यें ॥ सुदर्शनश्रेष्टि सुशील राख्यो ॥ ते आल देई अजयाय दाख्यो ॥ ११ ॥ वसं ततिलका ढंदः ॥ माखो प्रदेशि सुरिकांति विषयावलीए ॥ राजा यशोधर इत्यो न यनावलीए ॥ डःखी कस्रो खसुर नूपुर पंडिताए ॥ दोषी त्रिया इम जणी इए दोषताए ॥ १२ ॥ अथ सुलक्त्णी स्त्रीविषेः--शाईलविक्रीडितढंद ॥ रूडी रूपवती सुशील सुगुणी, लावएय अंगे लसे ॥ लकालु प्रियवादिनी प्रियतणे, चित्रे सदा जे वसे ॥ जीला यौवन उझसे उरवसी, जाएो नृलोके वशी ॥ एवी पुत्पत्र ऐ पताय लहिये, रामे रमा सारशी ॥१३॥ उपजाति इंदुः ॥ सीता सुनुझ नलराय रा णी ॥ जे इोपदी शीलवती वखाणी ॥ जे एहवी शीलगुणे समाणी ॥ सुलक्त्णा ते जगमांही जाएी ॥१४॥ अथसंयोगविषेः ॥ मालिनी ढंदः प्रियसखि प्रिययोगे उन्न से नेत्र रंगे ॥ इसित मुख शशीज्युं सर्व रोमांच अंगे ॥ कुच इक मुफ वैरी नम्रता जे न दाखे ॥ प्रिय मिलण समे जे अंतरो तेह राखे ॥ १५ ॥ अथ वियोगविषेः दिन वरस समाणे रेणि कल्पांत जाणे ॥ हिम रज कदली जे तेह जाला प्रमाणे ॥ शशिरसिकरसो जे सूरसो सोइ लागे ॥ प्रिय विरह प्रियाने इःख र्गू र्गू न जागे ॥ १ ६॥ अथ माताविषे॥ इंड्वजार्टदः ॥ जे मातनो बोल कदा न लोपे ॥ जे विद्वमां सू रज जेम छोपे ॥ ज्यां धर्म चर्या बहुधा परीखी ॥ त्यां मातपूजा सहुमां सरीखी ॥ र आ जे मात मोहें जिन एम की थों ॥ गर्जें वसंतां व्रत नेम ली धों ॥ जे मात न इा वयणे प्रबुदो ॥ शीला तपंते अरहन्न सीधो॥ र णाअयपिताविषेः॥ जे बाल ना वे सुतने रमाडे॥ विद्या जणावे सरस्तं जमाडे॥ते तातनो प्रत्युपकार एही॥ जे तेह् नी चक्ति हिये वहेही ॥ १ ए ॥ मालिनी ढंदः ॥ निषध सगर राया जे हरी नइ इा ॥ तिम दशरथ राया जे प्रसन्ना मुनिंइा ॥ मनक जनक जेते पुत्रने मोह जा सा ॥ समुत हित करीते तेहना काज साखा ॥ १ णा अय पुत्रविषेः ॥ सागतार्वदः मात तातपद पंकज सेवा ॥ जे करे तस सुपुत्र कहेवा॥जेह कीर्त्ति कुललाज वधा रे ॥ सूर्य जेम जगि तेज सधारे॥ ११ ॥ शालिनीढंदः ॥ गंगापुत्रे विश्वमां कीर्ति रोपी ॥ आज्ञा जेले तातकेरी न लोपी ॥ ते धन्या जे अंजनाएंत्र जेवां ॥ जेले की धी जानकी नाथ सेवा ॥ २२ ॥तोटकढंदः ॥ इम काम विलास उलास तए ॥ र सरीति हरे अनुनावतए ॥ जिमचंदन अंग विलेप तए ॥ हिय होय सदा सुख संपतए ॥ १३ ॥ इति श्रीसूक्त मुक्तावब्यां काम वर्गस्तृतीयः समाप्तः ॥

120

www.jainelibrary.org

ञ्चय मोक्कवर्ग प्रारंजः

उपजाति इंदः ॥ याह्याः कियंतः किल मोक्तवर्गे कर्मक्तयासंयमजावनाद्याः ॥ वि वेकनिर्वेदनिजप्रबोधा इत्येवमेते प्रवरप्रसंगाः ॥ १ ॥ मोक्वार्थविषे मालिनीढं दः ॥ इह जव सुख हेते के प्रवर्ते जलेरा ॥ परजव सुखहेते जे प्रवर्ते अनेरा ॥ अव र अरथ ढंमी मुक्ति पंथा अराधे ॥ परम पुरुष सोई जेइ मोकार्थ साथे ॥ १॥ तजिय नरत केरी जेएा वे खंड नूमी॥ शिवपथ जिएा साध्यो सोलमे सांति सामी॥ गजमुनि सुप्रसिदा जेम प्रत्येक बुदा ॥ अवर अर्थ ढंडी धन्य ते मोक्त जुदा॥३॥ अथ कर्मविषे ॥ करम नृपति कोंपे इःख आपे घणेरा॥ नरय तिरय केरा जन्म ज न्मे अनेरा ॥ ग्रज परिएति होवे जीवने कर्म तेवे ॥ सुरनरपतिकेरी संपदा सोइ देवे ॥ ४ ॥ करम शशि कलंकी कर्म जिङ्ग पिनाकी ॥ करम बजि नरेंई प्रार्थना विष्णुरांकी ॥ करम वश विधाता इंड सूर्योदि होई ॥ सबल करम लोई, कमे जेवो न कोई ॥ ५ ॥ अथ कमाविषे ॥इरित नर निवारे जे कमा कमे वारे ॥ सकल तप सधारे पुन्य लक्ती वधारे ॥ श्रुत सकल अराधे जे कमा मोक साधे ॥ जिए निज गुए वाधे ते कुमा कां न साधे ॥ ६ ॥ सुगति लहि खिमाए खंध स्ररीस सीसा ॥ सुगति हढ प्रहारे कूरगृह मुनीसा ॥ गज मुनिस खिमाए मु कि पंथा अराधे ॥ तिम सुगति खिमाए साधु मैतार्य साधे ॥ ७ ॥ अथ संयमविषे स्वागता ढंद ॥ पूर्व कर्म सवि संयम वारे ॥ जन्म वारिनिधि पार उतारे ॥ तेइ संयम न केम धरीजे ॥ जेएा मुक्ति रमएा वश कीजे ॥ ए ॥ तुंग शैल बलदेव सुहायो ॥ जे ण सिंह मूग बोध बतायो ॥ तेम संयम जहीय अरायों॥ जेएा पंचम सुराजय पायो ॥ ७ ॥ अथ हादरा नावनाविषे ॥तत्र प्रथम अनित्य नावना ॥मालिनी ढंदाधण कण तनु जीवी वीज जात्कार जेवी ॥ सुजन तरुण मैत्री स्वप्न जेवी गऐवी ॥ अहमत ममताए मूढता कांइ माचे ॥ अधिर अरथ जाए। एएशूं कोए राचे ॥ १० ॥ धरणि तरु गिरिंदा देखिए जाव जेई ॥ सुर धनुष परे ते जंगुरा जाव तेई इम त्ददय विमाली कारमी देह बाया॥तजिय जरतराया चित्त योगे जगाया॥११॥ दितीय असरण नावना ॥ परम पुरुष जेवा संहस्वा जे रुतांते ॥ अवर सरण के नुं लीजिये तेद् छंते ॥ प्रिय सुत्हद कुटंबा पाश बेठा जिकोई ॥ मरण समय राखे जीवने तेन कोई॥ १२॥ सुर गण नर कोडी जे करे जास सेवा ॥ मरण नय न जूटा तेह इंडादि देवा ॥ जगत जन हरंतो एम जाणी अनाची ॥ व्रत ग्रहिय वि बूटो जेह संसारमांथी ॥ १३ ॥ तृतीय संसार जावना ॥ शार्दूलविकी डितर्षंदः ॥

2.5

तिर्यचादि निगोद नार कितणी, जे योनि योनी रह्यां ॥ जीवे इःख अनेक इर्गतित णा, कर्मप्रनावे लह्यां॥ या संयोग वियोग रोग बहुधा, या जन्म जन्मे छली ॥ ते संसार आसार जाणि इहवो, जे ए तजे सो सुखी ॥ १४ ॥ इंड्वजा ढंदः ॥ जे हीन उत्तम जाति जाए ॥ जे उच्च ते मध्यम जाति थाए ॥ ज्यूं मोक्तमेतार्य मुनींइ जाए ॥ खूं मंगु सूरी पुरयक्त थाए ॥ १५ ॥ चतुर्थ एकलनावना पुल्पे अकेलो जिव स्वर्ग जाएँ॥ पापे अकेलो जिव नर्क जाए ॥ ए जीव जा आ व करेखकेलो ॥ ए जाणिने ते ममता महेलो ॥१६॥ उपजाति चंदः॥ ए एकलो जी व कुटंब योगे ॥ सुखी डुखी ते तस विप्रयोगे ॥ स्त्री हाथ देखी वलयो अकेलो ॥ न मी प्रबोध्यो तिएाधी वहेलो ॥१ ९॥ पंचम अन्यत्वनावना ॥ जो आपणो देइज ए न होई ॥ तो अन्यको आपण मित्त कोई ॥ जे सर्वते अन्य इहां नणीजे ॥ केहो ति हां हर्ष विषाद कीजे ॥ १ ७ ॥ देहादि जे जीवयकी अनेरां ॥ रयो इःख कीजे तस नासकेरां ॥ ते जाणिने वाघणिने प्रबोधी ॥ सुकोसले खांगन सारकीधी ॥१९॥ अथ अग्रुचिनावना ॥ काया महा एह अग्रूचिताई ॥ जिहां नव दार वहे सदाई ॥ कसू रिकर्पूर सुड्व्य सोई ॥ ते काय संयोग मलीन होई ॥ १०॥ अग्रुचि देही नर नारि केरी ॥ म राच जे ए मलमूत्र सेरी॥ए कारमी देह असार देखी॥चतुर्थ चक्रिय पण ते उवेखी ॥ १ र ॥ सप्तमी आश्रवजावना॥ मालिनी चंदः॥ इह अविरति मिथ्या योग पापादि साधे इए उए जव जीवा आश्रवे कमें बांधे ॥ करम जनक जेने आश्रवा जे न रुंधे ॥ स मर समय आत्मा संवरी सो प्रबुदे । १ शा इंड्वजाईदः । जेकुंडरीके व्रतगंडि दीधुं ।। नाईतएूं तेवलि राज्य लीधुं॥ तेडःख पाम्या नरके घऐोरा॥ तेहेतु एत्राश्रव दोषकेरा। १३ अप्टमी संवरजावनाजे सर्वथाआश्रवने निरुंधे॥ तेसंवरी संवरजाव साधे ॥ ते जाववंदो गुरुवज्र स्वामी॥जेऐो त्रिया कंचन कोडिवामी ॥१४॥ नवमीनिर्जरा जावना ॥ मालिनी इंदः॥इयदस तपचेदे कमे ए निर्जराए॥उतपति थिति नारो लोक जावा जराए॥इरलज जग बोधीडुर्लना धर्मबुदी॥जव हरणि विजावो नावना एह् गुदी॥१५।उपजातिष्ठंदः॥ बे निर्जरा काम सकाम तेही। अकाम जे ते मरुदेवि जेही। ते ज्ञानथी कर्मह निर्ज रीजे ॥ हढ प्रहारी परि तो तरीजे ॥ १६॥ दुशमी लोकनावना ॥ मालिनी छंदुः॥ जिम पुरुष विलोये ए अधो लोक तेवो ॥ तिरिय पण विराजे चाल स्योवन जे वो ॥ उर्ध मुरज जेवो लोकनालें प्रकास्यो ॥ तिमज जवन जानूं केवली ज्ञान नास्यो ॥ २७ ॥ एकादश बोधिदुर्जननावना ॥ स्वागता ढंदः ॥ बोधि बीज लहि जेह खराथे ॥ ते इलासुत परे शिव साधे ॥ धर्म नावन लही नवि नावो ॥ राय

संप्रति परे सुख पावो ॥ २० ॥ अथ रागविषे ॥ इंड्वजा ढंदः ॥ रागे म राचे जव बंध जाणी। जे जाण ते राग वज्ञे खनाणी। गौरी तणे राग महेस रागी। खर्धांग देवा नि जबुदि जागी ॥ १ए ।। अथ देषविषे ॥ रे जीव विदेष मने म आएो ॥ विदेष संसार निदान जाएो।। सासू नणंदे मिलि कूड कीधूं ।। जुर्व सुनइा शिर आल दीधूं ॥३०॥ अथ संतोषविषे ॥ वसंततिलका ढंदः ॥ संतोष तृप्त जनने सुख होय जेवं ॥ ते इव्य जुन्ध जनने सुख नाहि तेवुं॥ संतोषवंत जनने सद्ध लोक सेवे ॥ राजेंइ रंक सरि खा करि जेह जोवे ॥ ३ १ ॥ अथ विवेकविषे॥ उपजाति चंदः ॥ जो जेह चित्ते सुवि वेक जासे ॥ तो मोइ ऋंधार विकार नाज्ञे ॥ विवेक विज्ञानतणे प्रमाणे ॥ जीवादि जे वस्तु स्वनाव जाशे ॥ ३२ ॥ इंड्वज्जा छंदः ॥ बाला पर्ए। संयम योग धारों ॥ वर्षाकृतें काचलि जेए तारी ॥ श्रीवीरकेरो अयमन तेई ॥ सुझान पाम्यो सु विवेक लेई ॥ ३३ ॥ अथ निर्वेदविषे॥शाईलविकीडितर्डदः॥जे बंधूजन कमें बंधन जि सा, नोगा चुजंगा गिएो ॥ जाएंतो विषसारिखी विषयता, संसारता ते इएो ॥ जे सं सारह रागहेतु जनने, संसार जावा हुवे ॥ जावो तेइ विरागवंत जनने, वैराग्यता दाखवे ॥ ३४ ॥ वसंततिलकाढंदः ॥ निर्वेद ते प्रबल डर्नर बंदिखाणो ॥ जे ढोडवा मनधरे बुध तेह जाणो। निर्वेदथी तजिय राज विवेक जीधो ।।योगींइ जर्तृहरि सं यम योग लोधो ॥३५॥ अथ आत्मबोधविषे॥ए मोइनींद तजि केवल बोध हेते॥ ते थ्यान ग्रु६ इग्दि नावनि एक चित्ते ॥ ज्यूं निःप्रपंच निज ज्योति स्वरूप पावे ॥ निर्बोध जे अखय मोक सुखार्थ आवे॥ इदे ॥ मालिनी ढंदः॥ नवि विषयतणा जे चंचला सौख्य जाणी ॥ प्रियतम प्रिय योगा जंगुरा चित्र आणी ॥ करमदल खपे ई केवल ज्ञान लेई ॥ धन धन नर तेई मोक्व साधे जिकेई ॥ ३७ ॥ इति मोक्वव र्गः चतुर्थः समाप्तः ॥

उपजाति वृत्तं ॥ इत्येवमुका किल सूक्तमाला विनूषिता वर्गचतुष्टयेन ॥ तनोतु शोना मधिकं जनानां कंठस्थिता मौक्तिकमालिकेव ॥ १ ॥ शार्दूलविकीडितं वृत्तं ॥ आसीत्सकुणसिंधुपार्वणशशी श्रीमत्तपागड्ठपः सूरिः श्रीविजयप्रनानिधगुरुर्बुध्या जित त्वर्गुरुः ॥ तत्पट्टोदयनूधरो विजयते नात्वानिवोद्यत्प्रनः सूरिश्रीविजयादिर त्नसुगुरुर्तव ६क्तनानंदनूः ॥ १ ॥ आर्यावृत्तं ।। विख्यातास्तइाज्ये, प्राज्ञाः श्रीशांतिवि मलनामानः ॥ तत्सोदरा बन्नूतुः प्राज्ञाः श्रीकनकविमलाव्दाः ॥३॥ तेषामुर्त्त विनेयौ विदान् कय्याणविमल इत्याव्दः ॥तत्सोदरो दितीयः केसरविमलानिधो ऽवरजः ॥४॥ तेन चतुर्त्ति वे गैं, रचिता नाषानिबद्धरुचित्स्यं ॥ सूक्तानामिह् माला, मनोविनोदाय

193

शातसुधारस.-

র্থি

बालानां॥ ५॥ वेदेंड्यिर्षि चंड्, प्रमिते श्रीविक्रमाहते वर्षे ॥ अप्रंथि सूक्तमाला केसर विमलेन विबुधेन ॥ ६ ॥ इति श्रीसूक्तमुक्तावली संपूर्ण.

॥ श्री शांखेश्वरपार्श्वनाधाय नमः॥

স্থপ

श्री विनयविजयजी उपाध्यायकृत शांतसुधारस यंथ अर्थसहित प्रारंनः

रार्दूलविकीडितचंदः ॥ नीरंध्रे जवकानने परिगलत्पंचाश्र वांजोधरे नानाकर्मलतावितानगहने मोहांधकारोत्घुरे ॥

भ्रांतानामिह देहिनां स्थिरकते कारुण्यपुण्यासनिस्तीर्थे

रौैः त्रथितारुसुधारसकिरो रम्या गिरः पांतु वः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ प्रथमयंथकर्ता यंथनेआदें श्रीतीर्थंकरदेवनी वाणीनी स्तुतिकरी मंग लाचरणकरें देनव्यो जेमां कोइडिइनथी एटलेनिकलवानो बारणोनथी वलीजेमां समस्तप्रकारें पांचआश्रवरूप मेघ वरसीरद्धं तथानानाप्रकारना ज्ञानावरणीयादि क कर्मीनीप्रछतिरूप वेलियेंकरीव्याप्त अनेमोहरूप अंधकारेकरीयुक्त एहवोआसं साररूपवन तेमांफिरनाराजे प्राणीओ तेने स्थिरकरवानेआर्थें करुणायेंकरीपवित्र अंतःकरणजेहनो एहवा चतुर्विधसंघरूप तीर्थनाईश्वरजे श्रीतीर्थंकरदेव तेणे उपदे सेली अमृतरसने वरसती एहवीरमणीयजेवाणी ते तमारुं रक्षणकरो ॥ १ ॥

द्रुतविलंबितं छत्तत्रयं॥रुफुरति चेतसि जावनया विना न वि डषामपि शांतसुधारसः॥ न च सुखं रुशमण्यमुना विना जगति मोहविषादविषाकुले ॥ १॥ यदि जवश्वमखेदप राङ्मुखं यदि च चित्तमनंतसुखोन्मुखं ॥ शृणुत तब्सुधि यः शुजजावनाजृतरसं मम शांतसुधारसं ॥ ३ ॥ सुम नसो मनसि श्रुतपावना निद्धतां द्यधिका दश जावनाः॥ यदिह रोहति मोहतिरोहिताजुतगतिर्विदिता समतालता॥४॥ अर्थ ॥ इवेजेशांतसुधारसते जावनात्रोविना रफुरतोनधी तेकहेढे विदानलोको ना अंतःकरणमांपण शांतिरूपश्चमृतनोरस तेनावविना स्फुरतौनथी अने मोह तथा खेद तद्रूपविषेंकरीव्याप्त एहवोजेजगत तेमां शांतसुधारसविना किंचित्मात्र थोमोपणसुखनथी ॥ शा माटेश्वाशांतसुधारसनामा प्रंथसांनलवानो उपदेशकरेने हेबुदिमंतो जोतमारुंमन संसारच्रमणकरवाना खेदेंकरी पराङ्मुख उपरांत्रं थयोहोय अनेजेमां अनंतसुखने एहवोजेमोक्त तेनासुखपामवानेविषे सन्मुखथयो होय तोजेमां मनोहरनावनानो रसनरेलोने एवोमारो आशांतसुधारसनामा प्रथसांनलो ॥ ३ ॥ हवे नावनाथी समताप्रगटथायतेकहेने हेपंमितजनो आसंसारमां जेनुंश्रवणमा त्रकरवाथीज पवित्रतानेकरनारी एहवीबारनावनाने तो तेने धारणकरनारो जेजीव तेनाक्तदयमां मोहजेअज्ञान तेने आज्ञादितकरनारी अनेजेहनी अन्नुतगतिने एहवी प्रख्यात समतारूप वेलीप्रगटथशे ॥ ४ ॥

रघोदताटनं॥त्रार्तरोदपरिणामपावक छुष्टनावुकविवेकसोष्ठवे॥ मानसे विषयलोलुपाल्मना क प्ररोहतितमां समांकुरः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इवेसमतापामवाने जे अयोग्यहोयतेकहेने जेनुंमन पांचेंड्यिना त्रेवीस विषयोनेविषे लोजुपने एहवाप्राणोओने आर्च रोइध्यानेकरीने जरपन्नथयेली एह वीजे मातापरिणामरूप अग्नि तेणेकरीने जावनाना रसनेविषे जे चतुरपुरुषोने तेना विचाररूप रूडापणुं जेमांथीबलीगयुंने एहवाप्राणीओना मनमां समतानोञंकुर किहांथी जत्पन्नथाय अर्थातनजथाय ॥ ५ ॥

> वसंततिलकावृत्तं॥यस्यारायं श्रुतकृतातिरायं विवेकपी यूषवर्षरमणीयरमं श्रयंते ॥ सजावना सुरलता नहि तस्य दूरे लोकोत्तरप्ररामसोरव्यफलप्रसूतिः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेसमतापामवाने योग्यहोयतेकहेते सिद्धांतश्रवणादिकेकरीने अत्यं तपणे संपूर्णजरेला वृद्धिपामेला तथा विवेकरूप अमृतवृष्टीनी रमणीयजेक्रीडा ते णेकरीने रम्यके० मनोहर शोजायमान एहवांजेनां अंतःकरणते तेवांश्रंतःकरणो मां सज्ञावनाओ श्रयंतेके० प्रवेशकरेते तेथीतेपुरुषने लोकोत्तरजे प्रशमके० शांतर सनासुख अर्थात्मोक्सुख तेनाफलने प्रसवनारी एहवीजे सुरलताके० कष्पलता ते दूरनथी अर्थात् तेहने मोक्त्दूरनथी ॥ ६ ॥ अनुष्टुब्टत्त ध्यं॥ अनित्यतारारणते जवमेकत्वमन्यतां ॥ अशौच माश्रवं चात्मन् संवरं परिजावय ॥९॥ कर्मणो निर्जरां धर्मं सुकृतां लोकपठतिं ॥ बोधिङर्लजतामेता जावयन्मुच्यसे जवात् ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ इवेबे श्लोकेंकरी आयंथमांजाववानी बारजावनात्रोनां नामकहेते १ अनित्यजावना १ अशरणजावना ३ संसारजावना ४ एकत्वजावना ५ अ न्यत्वजावना ६ अश्चित्तावना ९ संसरजावना ४ एकत्वजावना ५ अ न्यत्वजावना ६ अश्चित्तावना ९ आश्वजावना ० संवरजावना॥हेआत्मातुं एजा वनात्रोनो विचारकर ॥ ९ ॥ ७ कर्मनिर्क्तराजावना १० धर्मजावना ११ रूडाप्रका रनो लोकस्वरूप जावना १२ बोधिर्छ्युज जावना॥हेआत्मातुं एबारजावनात्र्यो नो वि चारकरतोयको संसारथकीम्रुक्तथइस ॥ ८ ॥

पुष्पिताग्राहतं ॥ वपुरवपुरिदं विदभ्रलीलापरिचितमप्यतिजंगुरं नरा णां ॥ तदतिजिङरयौवनाविनीतं जवति कष्यं विष्ठषां महोदयाय ॥ ए ॥ अर्थ ॥ द्वेप्रयमञ्चनित्यजावना जावतां शरीरतुं अनित्यपणुंदेखाडेढे देविद न्जन आजगतमां अञ्चलीलानीपरें क्रणजंगुर अनेजेहनो जयकरवो अत्यंतकवी णढे एहवो तरुणञ्चवस्यायेंकरी उन्मत्त मदनजे कामदेव तेनाजेहवुं सुंदर एहवुं जे मनुष्योतुंशरीरते विद्दान्जे पंभितलोक तेनापण महोटा उदयकरवानुं कारण शरीतेंयाय अपितुनहीजयाय ॥ ए ॥

रार्दू लविकीडितं रत्त्वघ्यं॥ आयुर्वायुतरत्तरंगतरलं लग्नाप दः संपदः संवैंपींडियगोचराश्च चटुलाः संध्याश्चरागादिवत्॥ मित्रस्त्रीस्वजनादिसंगमसुखं स्वप्नेंडजालोपमं तत्किं वस्तुज वे जवेदिह मुदामालंबनं यत्सतां ॥ १०॥ प्रातर्भ्रातरिहाव दातरुचयो ये चेतनाचेतना दृष्टा विश्वमनः प्रमोदविष्डरा जा वाः स्वतः सुंदराः॥तांस्त्रेव दिने विपाकविरसात् हा नइय

तः परुयतश्चेतः प्रेतहतं जहाति न जवप्रेमानुबंधं मम॥११॥ अर्थ ॥ हवेबेकाव्येंकरी संसारनो अनित्यपणुंदेखामेळे हेप्राणी आसंसारमां वा यरेंकरी चंचलययला एहवाजे पाणीनातरंग तेहनीपरें आयुषपणचंचलळे वली विचित्रप्रकारनी संपत्तिओळे तेपण विपत्तियेंकरीयुक्तळे अने समस्त रूपरसादिकजे विषयने ते संथ्याकालना आकाशजेवासुंदरने एटले संथ्याना अच्ररागनीपरें सुंदर तोने पए अच्ररागनीपरें योडीवारपनि विनाशशीलने तथा मित्र स्वी खजन इत्या दिकोनोजे समागम तेऐकिरीने ययेलुंजेसुख तेखप्रसरीखुं किंवाइंइजालसरखुंने ते वारें आसंसारमां सत्पुरुषोने आश्रयकरवायोग्य कइवस्तुन्नेवारुं, अर्थात्कोइजनथी सर्वविनाशशील अनित्यने इतिजाव ॥ १० ॥ वली चातके० हेजाई आजगतमां जे प्रजातसमयें खन्नकांतिवान तथा अत्यंतपऐ जगतने आनंद आपनारा श्वने स्वतासुंदरजे चेतनपदार्थ अने अचेतनपदार्थना जावदीवाहोय तेपदार्थोंनो काल परिपाक थयाथी तेहिजदिवसें शोजायेंकरी हीन यईजायने अने नाशपामेने ए हवापदार्थोंने जोनारो एहवो महारुं हतके० नष्टथयलुं जे अंतःकरण ते संसार संबंधने मूकतुंनथी ए कहेवी महोटी खेदनीवातने ॥ १४ ॥

॥ प्रथमनावनाष्टकं रामगिरिरागेण गीयते ॥

मूढ मुह्यसि मुधा ॥ मूढ मुह्यसि मुधा ॥ धुवपदं ॥ विजव मनुचित्य इदि सपरिवारं ॥ कुराशिरसि नीरमिव गलद

निलकंपितं ॥ विनय जानीहि जीवितमसारं ॥ मूण॥ १ ॥ अर्थ ॥ हवेवलीविशेषें अनित्यनावना नावतोथको संसारनुं अनित्यपणुं देखाडे डे हेमूर्खशिष्य तुं परिवारसहित पोतानीसंपत्तिनुं चिंतनकरीने ग्रुंव्यर्थमोह्रपामेडे वायुयें हलाव्योथको कंपायमानथयीने गलीजनारो एहवो दर्जनाव्ययनागें रहेना रोजे पाणीनुं बिंडुओ तेनीपरें हेविनय आ तहारुंजीवितव्य असारडे एमजाए एरीतें विनयविजयजी उपाध्याय पोतेपोताने प्रतिबोधकरतो बीजानेपण उपदेशकरेडे॥१॥

परय जंगुरमिदं विपयसुखसोहदं परयतामेव नरयति सहासं॥ एतदनुहरति संसाररूपं रयाज्वलज्जलदवालिकारुचिविलासं॥मूणार अर्थ ॥ वलीहेमित्रतुं जो के आविषयसुखते क्रणजंग्ररु जेमकोई हाथतालीदेई ने हसतांहसतांज नाशीजाय के तेनीपरें विषयसुखपण जोतांजोतांज नहता एह वाथईजाय के वली आ संसारनुं सरूपते वेगेकरीने जनारी एहवीजे वीजली तेना जबुकानी कांतीनुं अनुकरण करें हे एटजे एसंसारनुं सरूपते वीजलीनीपरें चंचल के॥ श हंत हतयोंवनं पुच्चमिव शोवनं ॥ कुटिलमति तदपि लघु दृष्टनष्टं ॥ तेन वत परवशापरवशा हतधियः॥ कटुकमिह किंन कलयंति कष्टम्॥मूणा ३

शांतसुधारस.

अर्थ ॥ आ एकमहोटी खेदनीवातने के इष्टतारुखपणुंते कुतरानी पुन्रडीस्रिखो वांको अने जेहने जोतावारज तुरतनहीएवोथईजायने अर्थात् नाशपामीजायने एह वा तारुएथपणाने परवशाके॰ पराधीनश्रयला इतधियके॰ नष्टबुद्धिवंतजे पुरुषोने ते संसारमां परवशाके० स्त्रीत्रो ते कष्टकारी कडवाफलनीत्रापनारीने एहवुं जाए तानथी माटे बतइतिखेदे एपएएकमहोटुं खेदनोज कारएाळे ॥ ३ ॥ यदपि पिण्याकतामंगमिदमुपगतं ॥ जुवनङर्जयजरापीतसारं ॥ तदपि गतलजमुश्वतिमनो नांगिनां वितथमतिकुथितमन्मथविकारं॥मूणाधा अर्थ ॥ जोपण त्रऐलोकना प्राणीओ जेने जीतवाने अत्यंतअसमर्थ एहवीजे जराअवस्था तेणेकरीने जेपुरुषनुं सारके० सत्वपणुं जनुरह्यंचे एटले जरायेंकरी शरीरक्रीणयईगयुंगे एहवुं एशरीर इर्बल थयुं होय तोपण निर्लक्तप्राणीत्रोनां मन निष्फल बुद्धि वत्पन्नथयला कामविकारने मूकतानथी ॥ ४ ॥ सुखमनुत्तरसुरावधि यदतिमेङरं ॥ कालतस्तद्पि कलयति विरामं॥ क तरदितरत्तदा वस्तु सांसारिकं॥स्थिरतरं जवति चिंतय निकामं ॥मू०५ अर्थ ॥ जुओके पांचअनुत्तरविमाननां घणाज पुष्ठकारीसुखने तेनीपण मर्यादा ने ते पणकालेंकरी मर्यादापुरीययाथी विरामपामेने तो पांच अनुत्तरविमान करतां एवी बीजीकईवस्तुने जेसंसारमां वधारेस्थिरीनूतथसे एवातनो तुं महोटोविचारकर ए यैः समं क्रीमिता ये च ज़रामी मिता यैः सहाकृष्महि प्रीतिवादं ॥तान् जनान्वीद्वय बत जस्मजूयंगतात्रिर्विशंकाः रुम इति धिकप्रमादं॥मण्ह अर्थ ॥ जेनीसायें आपणे इरहमेस रमता खेलता क्रीमाकरता तथा जेनीआ पणे अत्यंत स्तुतिकरतां अने जेनीसाथें आपऐंप्रीतीयेंकरी बोलताइता तेहिजप्रा णीने जस्मजूत यईगयला देखीने पण जोअमें निशंक रहियें बेचें तो बतइतिखेदे एवोजे अमारो प्रमाद तेप्रमादने धिःकारहोजो ॥ ६ ॥ असकदुन्मिष्य निमिषंति सिंधूमिवचेतनाचेतनाः सर्वजावाः ॥ इंडजा लेापमाः स्वजनधनसंगमास्तेषु रज्यंति मूढस्वनावाः ॥ मू०॥ ९ ॥ अर्थ ॥ जेम समुइना कलोल वारंवार उत्पन्न ययीने नाशपामेबे तेमज जगत मां स्थावर अने जंगमपदार्थोना जावने एमजाणवुं अने जगतमां इव्यादिकनो जेसं बंधने तेलवे इंड्जाल सरिखोने तो एहवा पदार्थों उपर हेमूर्खप्राणीतुं जूंरीजपामेने अ

www.jainelibrary.org

कवलयन्नविरतं जंगमाजंगम जगदहो नैव तृप्यति कृतांतः ॥ मुखग तान् खादतस्तस्य करतलगतेर्न कथमुपलप्स्यतेऽस्माजिरंतः ॥ मूण॥ढ॥ अर्थ ॥ वली स्थावर अने जंगमात्मक जगतने निरंतर नक्तणकरनारो एदवोजे क तांतके ज्यमते तृप्तथातोनर्थ। एमहोटोआश्चर्यने तोमुखमां आव्याप्राणीनो जक्तणक रनारोजे कालतेनाजद्दायमां रहेनारा अमेन्नेयें ते अमारोमृत्यु केवीरीतेनथायाणा

नित्यमेकं चिदानंदमयमात्मनोरूपमजिरूप्यसुखमनुजवेयं॥ प्रशामरसनवसुधापानविनयोत्सवो जवतु सततं सतामिह ज वेऽयं ॥ ए॥ इतिमहोपाध्यायश्रीकीर्तिविजयगणिशिष्योपा ध्यायश्रीविनयविजयगणिविरचिते शांतसुधारसगेयकाव्ये इजनित्यज्ञावनाविज्ञावनो नाम प्रथमः प्रकाशः ॥

अर्थ ॥ तेमाटे निख एकचिदानंदमय जे महारोञ्चात्मा तेहनुं खरूपजोईने सु खनो अनुनव ढुंकरीश इहां विनयविजयजी उपाध्यायकहेढेके आ मनुष्यनवमां शांतिरसरूपजे नूतनञ्चमृत तेहनेपानकरवानो उत्साह सत्पुरुषोने निरंतरहोजो १ १ श्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्योपाथ्याय इतिश्रीमन्महोपाध्याय श्रीविनयविजयगणि विरचिते ज्ञांतसुधारसेगेयकाव्ये अनित्यनावनाविनावनोनाम प्रथमः प्रकाशः ॥ शाईलविक्री[फ्तं वृत्तं॥ये पट्खंडमहीमहीनतरसा निर्जित्य वभ्राजिरे ये च स्वर्गजूजो जुजोर्जितमदा मेर्ड्मुदामेर्डराः ॥ तेपि क्रूरकृतांतवक्ररदनैर्निर्द ल्यमाना हठादत्राणाः शरणाय हा दश दिशः प्रैक्त दीनाननाः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ इवेबीजी अशरणजावना जावेने आसंसारमां मृत्युआवेथकेकोईने को जीति शोजानेपाम्या एहवा चक्रवर्त्ता तथा जेहर्षेंकरीपुष्टथयला अने जेहनी जाञ्चोमां उत्कृष्टबलने एटले खर्गनासुखनोगवीने आनंदपाम्याने एहवा देवताओ नेपण जेवारें कूरहृदयवंत जे यम तेपोताना मुखमांलेई दांतोनाबलात्कारेंकरी इएएकरे तेवारें तेखशरण थयायका दीनसुखकरी कोईनुंशरणलेवानेश्चर्थं दशे दिशायें जूएडे तोपणतेने कालनादांतमांथी मूकाववाने कोई समर्थनथाय ॥ १ ॥ स्वागतावृत्तं ॥ तावदेव मदविश्रममाली तावदेव गुएागोरवद्या ली॥ यावदक्तमकतांतकटाक्तैर्नेक्तितो विदारणो नरकीटः ॥ १ ॥

2.9

अर्थ ॥ माटेजेनो रक्त्णकरनार कोईनथी एहवो एमनुष्यरूपीओ कीटजेकीडो ते इनेजिहांसुधि सहनकरवाने फुर्ज़न एहवोजेकाल तेणे पोताना कटाक्तेंकरी जोयुंन थी तिहांसुधी मदजे अहंकार तेनाविलासेकरी शोजेने अने तिहांसुधीज गुणोनो गौरवपणुं धारणकरेने ॥ २॥

> शिखरिणीवत्तं ॥ त्रतापैर्व्यापन्नं गलितमध तेजोजिरुदितैर्गतं धैर्योद्योगैः श्वधितमध पुष्टेन वपुषा॥त्रवत्तं तद्रव्यग्रहणविषये

बांधवजनैर्जने कीनारोन प्रसजमुपनीते निजवरां ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ पण जेप्राणीने जेवारें यमराजायें पोताने खाधीनकस्तो तेवारें तेप्राणी नो प्रतापपण नाशपाम्यो अने उदितथयद्धंजेतेज इतुं तेपणगलीगयुं तथा धैर्य अ ने उद्योग पण जतुंरद्युं वली शरीरपुष्टइतो तेपण शिथिलथईगयुं अनेतेपुरुषतुं एकतुं करेद्धुं इव्य देवाने अर्थें बांधवजन जे नाईओ प्रमुख इता ते प्रवर्त्तथया ॥ ३ ॥ दीतीयजावनाष्टकं मारुणीरागेण गीयते

स्वजनजनो बढुधा हितकामं प्रीतिरसेरिजिरामं॥मरणदद्मावद्ममुपगत वंतं रक्तति कोपि न संतं ॥१॥ विनय विधीयतां रे श्रीजिनधर्मः द्वारणं॥ उप्रनुसंधीयतां रे द्युचितरचरणस्मरणं ॥ विष् ॥ ए ॥ ध्रुवपदं ॥ अर्थ ॥ फिरि सम्यक्दष्टीजीवें विशेषेंकरी अशरणजावनाने आवीरीतें जाववीते कहेडे जेपोताना स्वजनजोकडे तेघणुंज हितनावांडक तथा प्रीतिनाराखनार इत्या दिकरीते घणाप्रकारें रूडाडे पणतेसर्व स्वार्थनिमिनेजाणवा ए तात्पर्यंडे परंतु हेस रघुरुषो जेवारें जीव मरणअवस्था पामवाने तैयारथयो तेवारेंतेनुं संरक्तण करना र कोईनथी ॥ १ ॥ तेमाटेयंथनाकर्त्ता श्रीविनयविजयजी उपाध्यायकहेडे के हेवि नय तुं श्रीजिनधर्मनुं शरणकर अने पवित्र एहवुंजे चारित्रतेनुं स्मरणकर ॥ १ ॥

तुरगरथेजनराव्ततिकलितं दधतं बलमस्खलितं ॥ हर

ति यमो नरपतिमपि दीनं मैनिकइव लघुमीनं ॥ विण् ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ घोडा रय दायी पायदल एचतुरंगणी सेनायेंकरीपुक्त तथा पोतेंपण अस्ललित बलने धारणकरनारो एटलेकोईकालें खलनापामेनदी एहवो महापरा कमवंत राजा तेनेपण जेरीतें मैनिकके० माढलानोमारनार जटदेईने लघुमी नके० न्हाना दीनमाढलात्रोने पकडीलियेढे तेरीतें यम पकमीलियेढे॥ ३ ॥ शांतसुधारस.

प्रविशति वजमये यदि सदने तृणमध घटयति वदने ॥ तदपि न मुंचति हतसमवर्ती निर्देयपौरुषनर्ती ॥ वि० ॥ ४ ॥ अधीाजो वजमय एटले वजनाज परमाणुयें बनावेला घरमांप्रवेशकरे अथवा मुखमां तृणषलाधारणकरे परंतु निर्देय अने पराक्रमेंकरी नाचनारो तथाजेइनी सर्वेनेविषें समानघातकरवानीजवृत्तिते एइवोजेयम ते तेनेपण मूकतोनची ॥४॥ विद्यामंत्रमहोेपधिसेवां सृजतु वराकितदेवां ॥ रसतू रसायनमुपचयकरणं तदपि न मुंचति मरणं॥ वि०॥ ॥॥ अर्थ ॥ हेप्राणी जो देवतानुंसाधनकरी पोतानेस्वाधीनकरो अथवा महोटीम होटी विद्याओं साधनकरों मंत्रसाधनकरों तथा महोटी औषधिओसाधी शरीरपु ष्टी करवानेव्यर्थे आरोगो तोपण मरण मूकतुंनथी ॥ ५ ॥ वपुपि चिरं निरुणि ि समीरं पतति जलधिपरतीरं ॥ शिर सि गिरेरधिरोइति तरसा तदपि स जीर्यति जरसा॥विणाह॥ अर्थ ॥हेनव्यो जो समाधीचडावी शरीरने घणाकालसुधी वायुनोरोधकरो अय वा समुइने पहेलाकांते जईवेशो अखवा बलात्कारें पर्वतनाशिखरचपर चडीवेशो तोपण जरात्र्यवस्थायी क्वीणयवुं ते कांईबंधयतुनयी ॥ ६ ॥ सृजतीमसितशिरोरुइललितं मनुजशिरोवलिपलितं ॥ को विद्धानां जुधनमरसं प्रजवति रोडुं जरसं ॥ विण् ॥ ९ ॥ अर्थ॥ कालाकेझेंकरीने घणोजसुंदर एहवो मनुष्यनो कालोमस्तक तेने सपेतप एानी करनारी तथा शरीरना मांसनोनाशकरनारी खोखरासरीखोकरी नशोनसने जूदी करीदेखाडनारी प्रथवी उपर मेघसमान शरीरतेने ग्रुष्ककरी नाखनारी एहवीजरा अवस्था जेवारें प्राणीने आवजो तेवारें तेनोरोधकरवाने कोण सहायजूतयसे आ र्थात् कोईपण वृद्धावस्थानो रोधकरवाने समर्थनथाय ॥ ३ ॥ व्यत व्यरुजा जनकायः कः स्यातत्र सहायः ॥ एकोऽ नुज्ञवति विधुरुपरागं विजजति कोपि न जागं॥ विष् ॥ ७॥ अर्थ ॥ देखात्मा जैवखतें ताइरुंशरीर उमरोगेकरी व्याप्तयाशे तेवखतें तुजने को एस हाय था जो ! जू छो जेम चंइमा एक लोपो तेज राहुना यह एनी पीढा जोग वें जे प

रंतु नक्तत्र अथवा ताराकोईपण तेनाइःखमांविजागक्षेतानथी तेम तुजनेपण जेवारें रोगादिक इःखप्राप्तथशे तेवारें ताहरोकोईपण संबंधी तेइःखमांविजागक्षेनारनथी॥५ शरणमेकमनुसर चतुरंगं परिहर ममतासंगं ॥ विनय रचय शिव सौख्यनिधानं शांतसुधारसपानं ॥ वि० ॥ ७॥ इति श्रीशांतिसुधार स गेयकाव्ये छश्रारणजावनाविजावनो नाम दितीयः प्रकाशः ॥ अर्थ ॥ माटे दान शील तप छने जाव एचार छंग जेहनाबे एहवाएक धर्मवुंज

तुं शरणकर अने ममलनो संग परिहर हेविनय तुं शिवसुखनो निधान एहवो जे शांतसुधारस तेनुंपानकर ॥ ७ ॥ इति श्री शांतसुधारसगेयकाव्ये अशरणलना वना विनावनोनाम दितीयः प्रकाशः ॥

शिखरिणीष्टतत्रयं ॥ इतो लोजः क्तोजं जनयति छरंतो दवईवो द्ध्वसद्धाजांजोजिः कथमपि न ज्ञाक्यः ज्ञामयितुं ॥ इतस्तृष्णाऽक्ता णां तुदति म्हगतृष्णेव विफला कथं स्वस्थ्रेः स्थ्रेयं विविधजयज्ञी मे जववने ॥ १ ॥ गलत्येका चिंता जवति पुनरन्या तदधिका मनोवाक्काये हा विकृतिरतिरोषात्तरजसः ॥ विपर्ज्तावर्ते ऊटिति पतयालोः प्रतिपदं न जंतोः संसारे जवति कथमप्यार्तंविरतिः ॥ ॥ १ ॥ सहित्त्वा संतापानज्ञुचिजननीकुक्तिकुहरे ततो जन्म प्राप्य प्रचुरतरकष्टक्रमहतः ॥ सुखाजासैर्यावत्स्पृशति कथमप्यार्तंवि

रतिं जरा तावत्कायं कवेलयति मृत्योः सहचरी ॥ ३ ॥ ॥ इवे त्रीजी संसारनावना नावेडे आ संसारमां छरंतके० घणोमहोटो जेहनो अंतनथी अनेदावानल सरिखो अर्थात् वनअग्नीसरखो एहवोजेलोन तेनेकोईपणरी तें चदयनेपामनारो जे लोनरूप अंनोनिःके० जदकते शांतकरी शक्तोनथी पणजलटो कोनने जत्पन्नकरेडे वलीइहां संसारमां मगतृसा जेवीरीतेविफलडे तेवीरीतेइंडियोनी तृष्ठा प्रेरणाकरेडे तेपणविफलडे तोएहवा अनेकप्रकारना नानाविधनयेंकरी बिहा मणा संसाररूप अरख्यमां शीरीतें स्वस्थपणे रहिशकियें ॥ १ ॥ आसंसारमां एक चिंतामटिजायडे तोफरी तेकरतांपण अधिक बीजीचिंताआवी जत्पन्नथायडे वली म न वचन अने कायानाव्यापारेंकरी विकारथायडे तथाअत्र्यातकोधना योगेंकरी रजो गुणने पामवापणुंप्राप्तयायडे एरीतेंसंसारमां विपत्तिरूप खाईनापाणीनी ज्रमरीमां पगलेपगले पडनारा प्राणीञ्चोने कोईवारेडःखनो छंतद्यावतोनची ॥ श॥ वली पहे लातो अपवित्रमाताना उदरनेविषे नानाप्रकारना उदरसंबंधी संतापोने सहनकर तो कष्टनीपरंपरायेंकरी तामनतर्जनायेयुक्तथको रहेडे छने जन्मपाम्थापडे जेटलामां सुखानाल करवानेअर्थें कोइपणपोताने थतीपीमाओ दूरकरेडे परंतु एटलामांतो मृ त्युनी सहचारिणी एहवीजे जराअवस्था ते आवीने प्राणीनादेहनो आसकरेडे ते वारें संसारमां सुखतेसुंडे अर्थात् काईजनथी ॥ ३ ॥

ठपजातिरुतं ॥ विश्वांतचित्तो बत बंश्वमीति पक्तीव रुबस्तनु पंजरेंऽगी ॥ नुन्नो नियत्याऽतनुकर्मतंतुसंदानितः सन्निहितां तकौतुः ॥ ४ ॥ अनुष्टुब्वृत्तं ॥ अनंतान् पुजलावर्ताननंतानं तरूपज्ञत् ॥ अनंतर्शा श्वमत्येव जीवोऽनादिजवार्णवे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ प्रारब्धें प्रेरणाकरेलो महोटाकर्मरूप तंतुयेंकरी बांधेलो कालरूप बिझा डानीपासें बेवेलो एहवोप्राणी बतइतिखेदे शरीररूप पिंजरामां पद्दीनीपरें रुंध्योथ को चांतिवंत चित्तेकरीफिरेबे ॥ 8 ॥ एरीतेंखनंतानंत शरीरोनोधारणकरनारो एजी वखनंतीवार खनादिकालनो संसारसमुड्मां खनंता पुजलपरावर्चरूप पाणीनी च मरीमां प्रतिच्रमण करतोथको फिरेबे ॥ 4 ॥

॥ तृतीयनावनाष्टकं केदारारागेण गीयते शांतसुधारसकुंमेमां एदेशी ॥

कलय संसारमतिदारुणं जन्ममरणादिजयजीत रे ॥ मो

हरिपुणेह सगलग्रहं त्रतिपदं विपदमुपनीत रे ॥ कणा १ ॥ अर्थ ॥ वलीविशेषप्रकारें संसारनावनानावतो संसारनीबीकदेखाडेने मोहरूप शत्रुयें गलोथोदेइने पकडग्रंने तेणेकरी पगले पगले विपनीनेपामेला अरेजीव आ संसारते जन्ममरणादिकना नयेंकरी अत्यंतनयंकरने एवं तुं जाण ॥ १ ॥

स्वजनतनयादिपरिचयगुणैरिह मुधा बध्यसे मूढरे ॥ प्रति पदं नवनवै रनुजवैः परिजवे रसकृङपगूढ रे ॥ क०॥ २ ॥ अर्थ ॥ हेमूर्खआत्मातुं खजन अने पुत्र इत्यादिकोनां परिचयगुणेकरीने गुंझा संसारमां व्यर्थबंधायढे वली पगलेपगले नवानवा अनुजवेकरी अने नवानवा परा जवेकरी वारंवारतुं आलिंगितढो एटले युक्तढो ॥ २ ॥ घटयसि कचन मदमुन्नतेः कचिदहो हीनतादीन रे ॥ प्र तिजवं रूपमपरापरं वहसि बत कर्मणाधीन रे ॥ कण् ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ देखात्मातुं किहांकतो राजलक्ष्मीप्रमुख संपत्तीनामदने धारणकरेन्ने वलीकिहांकतो हीनतापामी रांकजेवो जीखारी धई दीनतापणाने धारणकरेन्ने ए वाख्यार्थ्य देजीवतुं कर्माधीनथको जन्मजन्मप्रतें खपरखपरके ज्वानवाज रूपध रेन्ने कोईनवेनीखारो कोईनवेराजा कोईनवेतिर्यंच कोईनवेंनारकी वलीएकनवमांपण राजारंकपण्ठप्रमुख अनेकरूपधारणकरेन्ने ए केहेवो महोटो खेदनोहेतुन्ने ॥ ३ ॥

जातु शौशवदशापरवशो ॥ जातु तारुण्यमदमत्त रे ॥ जातु

ङर्जयजराजर्जरो ॥ जातु पितृपतिकरायत्तरे ॥ कण्॥ ४ ॥ अर्थे ॥ अरेजीवतुं एकजनवमांपण कोईकवारेंतो बालकअवस्थाने आधीनर

हेने अने कोईकवारेंतो तारुएयअवस्थाना मदेकरी उन्मत्तथायने वलीकोईकवारें इर्जय जरा अवस्थायें करी इःखवंतथायने अनेकोईकवारें यमराजाना हाथमां सप डाईजायने एहवी अवस्थाओने पामेने ॥ ४ ॥

व्रजति तनयोपि ननु जनकतां ॥ तनयतां व्रजति पुनरेष रे ॥ जाव यन् विकृतिमिति जवगते ॥ रूत्यजतमां नृजवद्युजरोप रे॥कणाथ ॥ अर्थ ॥ देखात्मा आत्तंसारमां कोईजवमांतो दीकरोते वापयायढे फरीकोईक जवमां वापतेदीकरो थायढे एद्दवी संसारी पुरुषोनी गतित्योनी फजेतीजोईने मनु

ष्यजन्ममां जेना पुख्यूरोषरह्याने एइवो तुं आसंसारने मूकीआप ॥ ५ ॥

यत्र इःखांतिगददवलवैरनुदिनं दह्यसे जीव रे॥ हंत

तत्रैव रज्यसि चिरं मोहमदिरामदक्तीब रे ॥ कणा ह ॥

अर्थ ॥ अरेजीव आसंसारमां इंख तथा आरतिजेचिंता अने रोगरूप दावान खेंकरीने तुं नित्यनित्यप्रते दाजेजे तोपएामोइरूप मदिराना मदेकरी उन्मत्तचईने तेमां जधणाकालसुधी अनुरक्तथायजे माटेबतइतिखेदे मोहनाफंदेज जीवइःखीथायजे॥द

दर्शायन् किमपि सुखवैज्ञवं ॥ संहरंस्तदय सहसैव रे ॥ विप्र तंजयति शिशुमिव जनं ॥ कालबटुको ऽयमंत्रेव रे ॥कणाण अर्थ ॥ अरेजीव जेमकोइलघुबालकने वगवासारुं कोइकचीजतेनाहायमां आ पीपाठी ठीनवीलइयें तेम हंतइतिखेदे आजगतमां कालरूपीओ बटुकके० चोर ते तुजने कांइकसुख ऐश्वर्यादिक देखाडीने अकस्मात् तेसुखने जाणेनजहता तेवा करीनाखेढे एम ढोकराने वगवानी रीतें कालरूपबटुक लोकोने वगेढे ॥ ९ ॥ सकल संसारजयजेदकं ॥ जिनवचो मनसि निबधान रे ॥ विनय परिण मय निःश्रेयसं ॥ विहितद्यामरससुधापान रे ॥ विनय परिण मय निःश्रेयसं ॥ विहितद्यामरससुधापान रे ॥ इति श्री द्यांतसुधारस गेयकाव्ये संसारजावना विज्ञावनो नाम तृतीयः प्रकाद्याः ॥ अर्थ ॥ तेमाटे अरेविनयतुं शांतिसुधारस्तुंपानकरी समस्तसंसारिकजयना

अय ॥ तमाट अरोवनयतु शातसुधारसनुपानकरा समस्तततारकजपना नाशकरनार एहवा जिन श्री वीतरागनावचनने मनमांधारणकर अने मोक्ट्रपाम एरोतें विनयविजयजीउपाध्याय पोतेजपोताना आत्मानेसीखामण आपेने ॥ इतिश्रीशांतसुधारसगेयकाव्ये संसारजावना विजावनोनाम तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

स्वागतारुत्तं॥एक एव जगवानयमाला ज्ञानदर्शनतरंगसरंगः ॥

सर्वमन्यङपकल्पितमेतत् व्याकुलीकरणमेव ममलम् ॥ १ ॥ अर्थ॥ हवेचोथी एकलनावना नावेडे एकज नगवानते आआत्माडे अने ज्ञानदर्श न तथा चारित्ररूप तरंगेकरीने सरंगके० विलासोडे पणते आत्मासिवाय बीजाजे

कांई कल्पितपुज़्ज़ादिकने तेसर्व ममतास्पदमांज व्याकुलकरनाराने ॥ १ ॥ प्रबोधतावृत्तत्रयं॥स्त्रबुधेः परजावलालसालसदझानददाा वद्यात्मजिः॥ परवस्तुषु हा स्वकीयता विषयावेदावद्यादि कल्प्यते ॥ २ ॥ कृतिनां दयितेति चिंतनं परदारेषु यद्या विपत्तये॥विविधार्त्तिजयावहं तद्या परजावेषु ममलजावनं॥ ३ ॥स्प्रधुना परजावसंद्यतिं हर चेतः परितोवगुंठितं॥ क्रण

मात्मविचारचंदनद्रुमवातोर्भिरसाः रुपृशांतु माँ॥ ४॥ अर्थ ॥ परवस्तुजपर रहेलीअत्यंतइहाना योगेकरी जपनीजे अज्ञानअवस्थानी आधीनता ते जेना अंतःकरणमां व्यापीठे एहवामूर्खोने जे परकीयवस्तुजपर स्वकी यपणुंकब्पेठे तेमात्र शब्द रूप रसादिकविषयोना आवेशेंकरीजकब्प्योजायठे ए ए क महोदुं खेदनुंकारणठे ॥ १ ॥ पुल्पवानपुरुषें परस्तीने पोतानीस्त्रीकरी चिंतवनक रवुं तेजेमविपत्तीनुं कारणभायठे तेमज परकीयवस्तुजपर जे ममत्वकरवुं तेपण नानाप्रकारनीपीमानुं अने अनेकप्रकारना जयनुं कारणयायठे ॥ ३ ॥ माटेहेआ

त्मा इवे चारेबाछयेंविंटेली परवस्तुनी संवृति जे आगादन तेनेतूंदूरकर अने आत्मवि चाररूप चंदनवृद्ध उपरना वायुनीलहेरीनुंजे रस तेनुंएकद्रूएमात्र स्पर्शकर ॥४॥ ञ्जनुष्टुब्रुटत्तं ॥ एकतां समतोपेतामेनामात्मन् वि जावय ॥ लजस्व परमानंदसंपदं नमिराजवत् ॥ ५ ॥ श्वर्थ ॥ अरेजीव आसमतायेंकरीयुक्त एइवुंजे एकत्वपणुं तेने तुं पोताना आ त्मामां विचारीजोईशतो नेमिराजक्तपीनाजेवी परमानंद संपदानेपामिश॥ ५॥ ॥ चतुर्थनावनाष्टकं परजीयारागेणगीयते ॥ विनय चिंतय वस्तुतलं जगति निजमिह कस्यांकें ॥ जवति मतिरिति यस्य हृद्ये इरितमुद्यति तस्य किं॥ विण ॥ १ ॥ एक उत्पद्यते तनुमानेक एव विपद्यते ॥ एक एव हि कर्म चिनुते ॥ सैंककः फलमश्नुते ॥ विण् ॥ ए ॥ अर्थ ॥ हवेवलीविद्येषें एकलजावनाजावेळे इंहांश्री विनयविजयजी उपाध्याय पोतेज पोतानी आत्माने उपदेशेने के हेविनय तुं वस्तुतलजे आत्मज्ञान तेनुं चिंत वनके । विचारकर आजगतमां कोइनोखकीयपणुं के हुं एहवीबुदि जेनाक्त्यमां उत्पन्नथायने तेप्राणीने इरितपापादिक उदयपामेनेसुं अपितुतेने पापोदयपामतुंज नथी ॥ १ ॥ देखात्मा ताहरोजीव एकलोज उपजेबे एकलोज मरएपपामेबे एक लोज कर्मनेबांधेळे अने तेबंधायला कर्मानाफलनेपए एकलोज जोगवेळे ॥ २ ॥ यस्य यावान्परपरिग्रहः ॥ विविधममतावीवधः ॥ जलधि विनिहितपोतयुक्त्या पतति तावद सावधः ॥ विण् ॥ ३ ॥ स्वस्वजावं मद्यमुदिते जुविं विखुप्य विचेष्ठते ॥ दृर्यतां प परनावघटनात्पतति विजुठति जुंनते ॥ विण् ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ जिहांसुधी जंप्राणीनेमाथे परपरिग्रहउपर नानाप्रकारनी जे ममत्व त द्रूपनारपड्योगे तिहांसुधी तो पश्चराप्रमुख वजनदारवसुयेंजरेलो जिहाज जेम समुद् नातलियामां जश्वेसेने तेम तेप्राणी पण संसाररूप समुइना तलियामां पमेलोजा एाउं ॥ ३ ॥ जेम मदेकरी जन्मत्तथयलो पुरुष खकीयखनाव एटले मूल खना वने लोपी जमीन उपरपनी चेष्टाकरेंढे तेमज परवस्तुनी घटनायेंकरी उन्मत्तवयलो पुरुष संसाररूप जमिनमांपडेने लोटेने अने जंत्रायमान थयोथकोरहेने ॥ ४ ॥

पर्य कांचनमित्तरपुज्ञलमिलितमंचति कां दर्शा ॥ केवलस्य तु तस्य रूपं विदितमेव जवादशां ॥विण् ॥८॥ एवमाल्मनि कर्मवशतो जवति रूपमनेकधा॥कर्म मलरहिते तु जगवति जासते कांचनविधा॥विण॥६॥ अर्थ ॥ जेमसुवर्णमां बीजाधातुनी मिश्रतायवाथी विपरीतदशानेपामेढे अने तेसुवर्णना ग्रुदस्वरूपनीतो हेजीव तहाराजेवाने खबरजढे ॥ ५ ॥ तेमजञ्चात्मा नेविषे कर्मरूप अन्यधातुना बरोंकरी नानाप्रकारना रूपयायढे पणकर्ममलरहित ग्रुदज्ञानस्वरूपी आत्मातो सुवर्णसरखो देदीप्यमानजासेढे ॥ ६ ॥

ज्ञानदर्शनचरणपर्यवपरिवृतः परमेश्वरः ॥ एक एवानुजवसदने स र मतामविनश्वरः॥विणाणाइति रुचिरसमताम्हतरसं क्वणमुदितमास्वाद य मुदा॥विनय विषयातीतसुखरसरतिरुदंचतु ते सदा॥विणाढ॥इतिश्री

शांतसुधारसंगेयकाव्ये एकलजावनाविजावनोनाम चतुर्थः त्रकाशः अर्थ॥तेञ्चात्मा ज्ञान दर्शनञ्चने चारित्रना पर्यायेंकरीयुक्त एदवो ञ्चविनाशीजे एकपर मेश्वर तेमहारा ञनुजवगृहमां रग्यमाणयजो॥ आमाटेहेञ्चात्मा प्राप्तययलो एहवो ञ तिसुंदर समतारूप अमृतरस तेनोएकक्त्णमात्र पण संतोषेंकरी आखादनकर अने हे विनय संर्वकाल विषयसुखयो छतीत एटजेजूदा एहवाजे शांतिसुख रस तेना उपर ताह रेप्रीतिहोजो॥ ७॥ ६० शांतसुधारसगेयकाव्येएकलनावनाविनावनोनामचतुर्थः प्रकाशः **उपजातिवृत्तं॥ परः प्रविष्टः कुरुते विना**र्द्रा लोकोक्तिरेषा न मृषेति मन्ये॥ निर्वित्रयकर्माणुजिरस्य किं किं ज्ञानात्मनों नो समपादि कष्टं॥ छार्थ॥ हवे पांचमी छन्यलनावना नावतोथको श्रीविनयविजयजी उपाध्यायकहे वे एकनावरमां बीजायेंप्रवेशकस्रो एटजे पहेलानोनाशकरेवे एहवुं लोकोवुं बोलवुं मने खोटुंजागतुंनथी केमके महारोखात्मा ज्ञानस्वरूपीने तेमां कर्मरूप परमाणुयें प्र वेशकरीने आत्माने कोणकोण कष्टोनथीआपी अर्थात् सर्वकष्टोआपीजने ॥ ? ॥ स्वागतावृत्तम्।।खिद्यसे ननु किमन्यकथार्तः सर्वदेव ममतापरतंत्रः॥ चिंतयस्यनुपमान्कयमात्मन्नात्मनो गुणमणीन्न कदापि ี จุ แ 11 अर्थ ॥ अरेजीवतुं सर्वकाल ममताने खाँधीनथई अन्यजे एजलादिक तेनीज गोष्टीयें पीडितयको कांखेदपामेने अने जेहनीकोइउपमाजनथी एवा तारी आत्मा ना गुएरूपजे मएरित तेतुंकोइवारेंपए चिंतन केमकरतोनथी एकेटलुं अयुक्तने श

राांतसुधारस

राार्दूलविकीडितं वृत्तघयम् ॥ यस्मै लं यतसे बिजेषि च यतो यत्रा निशंं मोदसे ययं चोचसिं यदि चसि हदा यत्त्राप्य पेत्रीयसे स्निग्धों येषु निजस्वजावममलं निर्लोठ्य लालप्यसे तत्सर्वं पर कीयमेव जगवन्नात्मन्न किंचित्तव ॥ ३ ॥ छष्टाः कष्टकदर्यनाः क तिन ताः सोढारुवया संसृतों तिर्यङ्नारकयोनिषु प्रतिहतचिन्नो विजिन्नो मुढुः ॥ सर्वं तत्परकीयर्डावेलसितं विरुम्ख तेष्वेव हा रज्यन्मुह्यसि मूढ तानुपचरन्नालन् न किं लजसे 1 Я अर्थ ॥ देआत्मात् जेनेवास्ते घणीयत्नकरेने अने जेनायकी घणोबीदितोरहेने तथा जेथकी सर्वकाल आनंदपामेळे वली जेनाअर्थेघणुंशोचकरेळे अथवा जेनेतुं ताहराक्तदयमां हरहमेस इन्नेने वली जेनादेखवाथी अत्यंतप्रीतिपामेने जेनेविषे तुं घणुंस्नेहराखी पोतानानिर्मल ज्ञानादिक स्वजावनो नाज्ञकरी लालनपालनकरेने 5 त्यादिककियाते सर्वपरकीयजले पण हेआत्मखरूपी जगवन् एमांस्वकीय ताहरोकां इनथी ॥ ३ ॥ अरेजीवतुंपूर्वोक्तप्रकारेंकरतोथको आसंसारमां तिर्येच अने नारकीनी योनीमां अत्यंतडए एहवी अनेककदर्थनाओं तेंनोगवीनथीकेसुं अपितु नोगवीतोने ज केमके सुदुके० वारंवार नरकादिकयोनीओमां हणाणुं नेदाणुं नेदाणुं एहवीएह वी तहारी अवस्थाओथइ तोपणहेमूर्ख तेसर्व परकीय एटजे खरूपविना पुज्जनासंग थी इर्विलासयया तेनेविस्मृतकरी फरितेनाउपरज प्रेमथरीने मोह्रपामेळे छनेतेहुंचु ज सेवनकरतोथको केमलझातोनथी माटे हाइतिखेदे एपएएमहोटी खेदनीजवातने

अनुपुर्व्वतं ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रकेतनांचेतनां विना ॥

सर्वमन्यदिनिश्चित्य यतस्व स्वहिताप्तये ॥ ॥ ॥ अर्थ ॥ देखात्मातुं झान दर्शन खने चारित्रनी आश्रयजूतजे चेतना तेविना बीजाजे विजाविक पदार्थोंग्ने तेसर्वने निश्वयथकी तहाराथी खन्यके० जूदाजाणीने पोताना हितने खर्थेंयत्नकर ॥ ॥ ॥

॥ पंचमनावनाष्टकं श्रीरागेण गीयते ॥ तुफरुणपारनहिस्त्रञ्रणोएदेशी ॥ विनय निजालय निजजवनं तनुधनसुतसदनस्वजनादिषु किं नि जमिह कुगतेरवनं ॥विणार॥ येन सहाश्रयसे ऽतिविमोह्ादिदमह्मि त्यविज्ञेदं तदपि दारीरं नियतमधीरं॥त्यजति जवंतं धृतखेदं॥विण्णा अधीक्षतेविशेषें अन्यत्वनावनाजावता श्रीविनयविजयजी उपाध्याय पोतानेउप देशकरेजे के हेविनय तुंतहारापोताना आत्मारूपघरने जो अने आर्त्तसारमां शरीर इव्य पुत्र घर खजनादिकमां कोएतुजने डर्गतिथी रक्षण करवालोजे अर्थात्कोइज नथी एटजेतुं खजनादिकनेअर्थें माठाकर्मकरेजे तेकर्मनायोगथी जेवारें नरकादिक डर्गतिमांजइस तेवारें तहारोहाथपकर्माने तुजने कोइडर्गतिथी वारीराखशेनही॥१॥ बीजातोदूररह्या पएजेनीसायें तुं अत्यंतमोहनावशथकी ऐकपएंकरेजे एहवुंजे शरीरतेपए निश्चयथीअर्धारोजे सेवट खेदकरावी तुजने मूकीचाव्योजसे अथवा खेद नोकरनारतुंजो एहवा तुजनेमूकी चाव्योजसे ॥ २ ॥

जन्मनि जन्मनि विविधपश्यिहमुपचिनुषे च कुटुंबं॥ तेषु ज्वं तं परजवगमने नानुसरति करामपि सुंबं ॥ वि० ॥३॥ त्यज ममतापरितापनिदानं ॥ परपरिचयपरिणामं ॥ जज निरसंगत या विद्यादीकृतमनुजवसुखरसमजिरामं ॥ वि० ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ हेप्राणीतुं जन्म जन्मने विषे विविधप्रकारना परिम्रहने संपादनकरेने तेमज नानाप्रकारना कुटुंबने संपादनकरेने परंतु जन्मांतरेंजाता ते पूर्वे।कपरिम्रह मांथी एकदोकडो पण ताह्ररीसार्थआवतोनथी ॥ ३ ॥ माटे ममतानायोगेंकरी आ व्यंततीव्रतापन्तुं मुख्यकारण एवो परकीयवस्तुनो परिणाम तेनोत्यागकर आने निःसंग तपणेकरी सज्जययत्तुं आव्हाददादनोकरनार एहदुंजेअनुजनसुख तेन्तुंसेवनकर ॥ ४॥

पथि पथि विविधपथैः पथिकैः सह कुरुते कः त्रतिबंधं ॥ निजनिजकर्मवरोः स्वजने सह किं कुरुपे ममताबंधं॥विणाय॥

प्रणयविहीने दधदजिपंगं ॥ सहते बहुसंतापं ॥ वयि निः

प्रणये पुजलनिचये वहसि मुधा ममतातापं ॥ वि० ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जेमपंथीमाणसने जूरेजुरेस्थानकें मार्गमार्गमां वाटालुलोकतुं मिलाप यतोजायने पणते वाटमार्गुनीसाथें कोइप्रतिबंधकरतोनथी तेमजपोतपोताना कर्म नेवरों आवीमव्या एहवावाटमार्गुतुव्य जे तारास्वजनलोक तेनीसाथेतुं ममत्वनो प्रतिबंधकांकरेने ॥ ॥ जेमकोइ स्नेहग्रून्यपदार्थहोय अथवामनुप्यहोय तेनाजपर स्नेहधरनाराप्राणी बहुसंतापने सहनकरेने तेमज तुंपण ताहाराजपर निस्नेही ए इवोजे प्रजलनोसम्रुदाय एटलेपोतानुंशरीर तेपणपुजलने अनेजेखजनादिक शरीरी जीवने तेपणपुज्जजने तथा नवविधपरियह तेपणपुज्जनने एहवापुज्जना समुदायउप र व्यर्थ ममता रूप ताप धारण करीने संताप सहन करेने ॥ ६ ॥

> त्यज संयोगं नियतवियोगं ॥ कुरु निर्मलमवधानं ॥ नहिविद धानःकथमपि तृप्यसि॥म्रगतृष्णाघनरसपानं ॥विणाणा जज जिनपतिमसहायसहायं ॥ शिवगतिसुगमोपायं ॥ पिब गद

रामनं परिहतवमनं ॥ शांतसुधारसमनपायं ॥ वि० ॥ त ॥ इण्शांतसुधारसगेय काव्ये अन्यलजावनाविजावनो नाम पंचमः प्रकाशः अर्थ ॥ माटेनिश्वयेंकरी जेइनो वियोगथवानोढे एहवाएफजादिकसाथे जे तें सं योगकखुंढे तेनोत्यागकर अनेनिर्मज एहवोजेपोतानो इन्हिल्सान्यतेनेविषे अवधान के॰ स्वस्थथइ एकायपऐजिह्तराख केमकेकोइपएपप्राण्डी मृगतृस्लारूप जजनुंपानक रीने कदापिकालें तृप्तथवानोनथी तेमतुंपए परवस्तुउपर ममत्वराखी कोइकालें घात्मरतिमां तृप्तिपामनारनथी ॥ ७ ॥ माटेरेआत्मा तुं असहायने सहायनाकर नार एटलेअशरणने शरणजूत एहवातीर्थंकरदेव तेनुंसेवनकर अनेनिरदोष मोह् गतिमांजवानुं जे सुगमोपाय अथवा जेमांथी परिक्तके॰ नाशपाम्युंढे वमनंके॰ मोह्नासुखनो वमवापएं वली गदशमनके॰ संसाररूप रोगनो समावनार एहवो जे शांतनामा सुधारसके॰ अमृतरस तेनो पिबके॰ पानकर ॥ ७ ॥ इतिश्रीशांतसु भारसगेयकाव्ये अन्यत्वनावनाविजावनो नाम पंचमः प्रकाशः

> शार्दूलविकीडितं वृत्तं ॥ सचिद्रो मदिराघटः परिगलतत्नेश संगाशुचिः शुच्या म्टयम्टदा बहिः स वहुशो धोतोपि गंगो दकैः ॥ नाधत्ते शुचितां यथा तनुजृतां कायो निकायो महाबी

जत्सास्थिपुरीषमूत्ररजसां नायं तथा द्युद्ध्यति ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हवेढही अग्रुचि जावना जावेढे जेम मदिरा गालवानुंयंत्र फारीनीमाफ क ढिईंकरी सहितयायढे तेढिझोमांथी मदिरागलावेढे तेथी तेढिझोमां मदिराना कणिआनुं अंशरहीजायढे तेखेशमात्र पण मदिरानासंगेकरीने अपवित्रथयलुं एहवोजे मदिराना जाजननो ढिइ तेनेपवित्रकरवाने अर्थे बाहिरथी माटीसायें गसी ने पढे गंगानदीना पाणीयेंकरी घणावखत धोइधोइने साफकरवामांमियें तोपणते मदिरागालबाना ढिझो कोइवारें पवित्र थायनही तेमज मनुष्यनो अत्यंत बीजत्स डगडाकरवायोग्य हाम रक्त मल मूत्रनोस्थानकरूप शरीर तेने माटीयेंगलवाथी अथवा गंगादिकनापाणीये नवराव्याथी पणपूर्वीक्त दृष्टांतेकोइवारें छदयातुंन्यी?

मंदाक्रांताछत्तं॥रुनायं रुनायं पुनरपि पुनः रुनांति शुआजिर कि वो रं वारं वत मलतनुं चंदनेरेर्चयंते॥ मूढात्मानो वय मपमलाः प्री

तिमित्याश्रयंते नो शुद्धंते कथमवकरः शक्यते शोडुमेवं ॥ १ ॥ छर्थ ॥ माटेजगतमां जेनुंछंतःकरण मूढथयुंढे एहवालोक स्नानकरीने वा रंवार शरीरग्रुदि करवानेछर्थे फरिपण स्नानकरेढे तथा वारंवार मलनास्थानकरू प शरीरने चंदनेकरीचर्चेढे छने छमेंनिर्मलथया एवुंकहीने प्रीतिकरेढे पण एम न थी जाणताजे एशरीर तो किवारेपण छद्धथातुंनथी केमके खात्रनुं उकरडो तेको इरीते ग्रुद्ध थायकेसुं छर्थातूनजथाय ॥ १ ॥

> शार्दूलविकीडितं छत्तं ॥ कर्पूरादिजिरचितोपि लशुनो नो गाहते सौरजं नाजन्मोपकतोपि हंत पिशुनः सौजन्यमा लंबते ॥ देहोप्येष तथा जहाति न नृणां स्वाजाविकीं विस्र

> तां नाज्यकोपि विजूषितोपि बढुधा पुष्टोपि विश्वस्यते॥३॥

अर्थ ॥ जेमलसणमां कर्पूरादिकपदार्थांनो जेलकखो तोपण लसणकांइ सुगंधी वंत यायनही तथा जन्मपर्यंत उपकारकखोहोय तोपण डर्जनपुरुष कांइ सौजन्यता ने धारणकरतोनथी तो हंतइतिखेदे आमनुष्यनुंशरीर तेपण खनावसिद्ध डर्गधने मूकतुंनथी आशरीरने विविधप्रकारनासुगंधीतेलेंकरीमसख्यो अनेवस्त्रालंकारेकरी नूषितकखो तथा खवरावी पीवरावीने अत्यंतपुष्टकखो तोपण विश्वासनोपात्र या

यनदी एटले एशरीर हवेसारुंचयुं एहवोविश्वास कदापिआवेनही ॥ ३ ॥ ठपेंडवजारातं ॥ यदीयसंसर्गमवाप्य सद्यो ज्वेच्छुचीनामशुचित्वमु

चैः॥छमेध्ययोनेर्ववपुषोस्य शोचसंकल्पमोहोयमहो महीयान्॥४॥ अर्थ ॥ शरीरनोसंबंधपामिने पवित्रपदायोंने पण अपवित्रतापणुं आवेढे केम के आशरीरने उत्तमजातिना चंदनादिकें मर्दनकरो तो तेचंदनादिक थोडीजवारमां पोतानुं सुगंधतापणुंमूकीने डुर्गंधतानेधारणकरेढे तेमज उत्तमप्रकारनाजोजन खव राव्यायी तेपण तुरत नरगमय थयीजायढे एवो आ अपवित्रवस्तुने उत्पत्तिनुंकार ण जेशरीर तेनेपवित्रपणुं करवाना संकल्पनो मोहराखर्डु एमहोटोआश्चर्यकारीढे स्वागताग्टत्तं॥इत्यवेत्य ग्रुचिवादेमतथ्यं पथ्यमेव जगदेकपवित्रं ॥ ग्रोधनं सकलदोषमलानां धर्ममेव हृदये निद्धीयाः ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ एरीतें शरीरने पवित्रकरवानोवाद स्वोटोजाणीने जगतमां एकपवित्र पथ्य तो समस्तदोषरूपमलनो शोधक एइवोजेधर्म तेइनेक्त्दयमांधरो ॥ ८ ॥ ॥ षष्टनावनाष्टकं आसावरीरागेण गीयते कागारेतनुचुनिचुनिजावे एदेशी. ॥ जावय रे वपुरिदमतिमलिनं विनय विवोधय मानसनलिनं॥ पावनमनुचिंतय विजुमेकं॥परममहोमयमुदितविवेकं॥जाणार॥ दम्पतिरेतोरुधिरविवर्त्ते किं ग्रुजमिह मलकइमलगर्त्ते॥ जृशम पि पिहितः स्रवति विरूपं को बढुमनुतेऽ वस्करकूपं ॥जाणाश॥

अर्थ ॥ हवविनयविजयजा उपाध्याय पतिपतिान उपदशकरता अग्राचपणु नावेळे हेविनय आशरीरनेतुं घणुजमलीनजाणीने पोतानुंमनरूपकमल प्रफुझित कर वलीजे परमतेजस्वो अनेजेनाथको उत्तमविचार उत्पन्नथाय एहवो एकपवित्र परमात्मानुं चिंतवनकर ॥ १ ॥ स्वीनोरक्त अने पुरुषनो रेत तेनापरिणाम स्वरूपथी उत्पन्नथयुं एहवुं मलमयजे कइमलके० चीखलतेनी गर्ताके० खाइ रूप आ शरीर तेमांसुसारुंग्रे जोआशरीरने अत्यंतढाकीराख्युं तोपणतेमांथी विरूपप णे माठोर्ड्गधज स्रवेग्रे तोएवांकचराना कूवाने कोणरुडोकरी माननारग्रे अर्थात् कोइपण उक्ररडारूप कचरायेंकरी नरेला कूवाने जलुंमानसेनही ॥ १ ॥

जजति सचंदं शुचि तांबूलं ॥ कर्तुं मुखमारुतमंनुकूलं ॥तिष्ठ ति सुरजि कियंतं कालं॥मुखमसुगंधि जुगुप्सितलालं॥ जाण ॥३॥ज्असुरजिगंधवहोंतरचारी॥ज्ञावरितुं शुक्यो न विकारी॥

वपुरूप जिघ्रसि वारंवारं॥इसति बुधस्तव द्रोोचाचारं ॥जा०४॥ अर्थ ॥ सुंदरतांबूलमां कर्पूरप्रमुखनाखीने मुखसंबंधीवायु अनुकूलकरवानेअर्थे खायबे परंतु निंदाकरवायोग्य अनेघणीज छगज्ञाकरवायोग्यबे लालजेनी वली अप वित्रजेनोगंध एहवा तहारामुखनी सुगंधीते केटलोक वखतरहसे ॥३॥ शरीरमांचाल नारो विविधप्रकारना विकारेकरीसहित असुरजिगंधनो वहेनारो जे ताहरामुखनो वा युतेने ढांकीमूकवाने तुंसमर्थययोनही तोताहरात्रांगने सुगंधीपदायोंनो लेपकरी वारं वार तेहनो सुवासलियेबे ए तारो पवित्रतानो आचारजोइने पंडितलोकोहसेबे॥४॥ घादद्या नव रंध्राणि निकामं॥ गलदद्युचीनि न यांति विरामं॥ यत्र वपुषि तत्कलयसि पूतां॥मन्ये तव नूतनमाकूतं॥जाणाश्व॥ उप्रदाितमुपस्करसंस्कृतमझं जगति जुगुण्सां जनयति हझं॥ पुं सवनं धेनवमपि लीढं जवति विर्गाहितमति जनमीढं॥जाणाइ॥ अर्थ ॥ अतिशयेंकरी जेमांथी रात्रदिवस अपवित्रवसुश्रवेढे पणकोश्वारें विरा मपामतिनयी एड्वास्तीना बारढिइ अने पुरुषनानवढिइ तेढिईंकरीसडित एड्वा शरीरने तुंपवित्रपपोजाणेढे माटेए ताह्ररोकोइ नवोज आचारजणायढे ॥ ५ ॥ ना नाप्रकारे वगारप्रमुखना संस्कारेकरी संस्कृतकरेलुं पचावेछुं एड्वुंजे अन्न तेपण आ शरीरमां आरोग्यायकी हन्नके० विष्टारूपयइजायढे तेपोकरी जगतमां छुयुप्सा के० डगज्जाउत्पन्नकरेढे वजी आशरीरने वीर्यनीटुद्धिकरनारुं गायनुंडध प्राशनक रीने फरीतेपुरुषें मूत्रितकस्त्रोथको तेपणअत्यंत निंदाकरवायोग्य यइपडेढे ॥ ६ ॥

केवलमलमयपुञ्जलनिचये छाद्युचीकृतद्युचिजोजनसिचये ॥वपु षि विचिंतय परमिहसारं शिवसाधनसामर्थ्यमुदारं॥ जाणा७॥ येन विराजितमिदमतिपुखं तच्चिंतय चेतननैपुखं॥विद्यादागमम धिगम्य निपानं विरचय शांतसुधारसपानं ॥ जाणाढ॥इतिश्री शांतसुधारसगेयकाव्ये छाशौचजावनाविजावनोनाम पष्ठः प्रकाशः

अर्थ ॥ माटे केवलमलरूप एजलनोसमूह अने पवित्रनोजनने अपवित्रपणु आ पनार एहवाशरीरमां मात्रएक मोक्साधन करवानुंजे सामर्थ्यंग्रे एहिजमहोटो सार जूतजाण ॥ ७ ॥ मोक्साधनेकरी जूषितकखोयको ए शरीरपवित्रयायग्रे तेचेतना नीज चातुर्यताजाणवी पणजेमां निर्मलसिद्धांतरूप जलमिलेग्रे एहवो जलस्यान कजोइने शांतसुधारसनोपानकर ॥ ७ ॥ इतिश्री शांतसुधारसगेयकाव्ये अग्रुचिना वनाविजावनोनाम षष्टः प्रकाशः

जुजंगत्रयातं वृत्तं॥यया सर्वतो निर्ऊरै रापतजिः त्रपूर्येत सद्यः पयोजिस्त टाकः॥तयेवाश्रवैः कर्मजिःसंजृतोंगी जवेद्याकुलश्चंचलः पंकिलश्च ॥१॥ अर्थ ॥ इवेसातमी आश्रवजावना जावेन्ने जेम सर्वबाज्जयी पमता पाणीना निजरणायेंकरी तत्कालतलाव जराइजायने पन्ने पाणीनातरंगेंकरी चंचलथायने ते मज कांदववधेढे इत्यादिके व्याकुलयायढे तेम आश्रवेंकरीयुक्तप्राणी कर्मरूपपाणी यो जरपूरबई व्याकुल अने चंचलयको पापरूपकादवें सहितयायढे॥ १॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ यावर्किंचिदिवानुजूय तरसा कर्मेंह निर्जीर्थते तावच्चाश्रवद्यात्रवोऽनुसमयं सिंचंति जूयोपि तत् ॥ हा कष्टं कथमाश्रवत्रतिज्ञटाः द्याक्या निरोडुं मया संसा रादतिज्ञीषणान्मम हहा मुक्तिः कथं जाविनी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ते जेटलामां अनुनवलेइने बलात्कारेकरी महारा अत्मामांथी कांइकक मेने हुं ग्रुष्ककरुंतुं तेटलामांवली आश्रवरूपशत्रु समयसमयप्रतें कमोंने फरी सी चनकरेजे माटे हाइतिखेदे मने एवुं कठणलागेजे के हुं आश्रवरूपशत्रुने केवीरीते जीतिशकुं अने एरीतेंतो अत्यंतजयंकर संसारथकी महारोबूटको पण सीरीतेंथसे॥शा

प्रहर्षणीवृत्तं॥ मिथ्यालाविरतिकषाययोगसंज्ञाश्चलारः

सुकृतिनिराश्रवाः प्रदिष्टाः ॥ कर्माणि प्रतिसमयं

रफुँटैरमीनिर्बध्नंतो भ्रमवज्ञातो भ्रमंति जीवाः ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ पुल्पवंतपुरुषोए १ मिष्यात्व २ अव्रति ३ कषाय ४ योग एचारनाम ना चारआश्रवकह्याने ते समयसमयप्रतें एचारआश्रवना योगेकरी कर्मोने बांध नारा जीवो ते चमेकरी चारगतिरूप संसारमांजमेने ॥ ३ ॥

रष्ट्रोइतावृत्तं॥ इंड्याव्रतकषाययोगजाः पंच पंच चतुरन्वितास्त्र

यः ॥ पंचविंशतिरसक्रिया इति नेत्रवेदपरिसंख्यया ऽप्यमी॥४॥ अर्थ ॥ पांचइंडियो तथा प्राणातिपातादिक पांचछव्रत छने कोधादिक चारक षाय वली मनादिक त्रणयोग तथा कायिकादिक पचीस छसत्क्रिया एरीते सर्व मलीने छाश्रव बेतालीस प्रकारनुंजे ॥ ४ ॥

इंडवजावृत्तं॥ इत्याश्रवाणामधिगम्य ततं निश्चित्य सतं श्रुतिसन्निधा नात्॥एषां निरोधे विगलदिरोधे सर्वात्मना डाग् यतितव्यमात्मन् ॥८ अर्थे ॥ एइवुं आश्रवचुं तत्वजाणीने निश्चययकी शास्त्रसन्निधानपणुं एटले आगम सिद्धांतरूप शास्त्रचुं बतापणुं तेजेनायकी विरोधगयुंबे एहवा आश्रवरूप शत्रुनो निरोधकरवा विषे हेआत्मातुं तुरत यत्नकर ॥ ५ ॥

सप्तमनावनाष्टकं धनाश्रीरागेण गीयते ॥ जोलीमारेहंसारेविषयनराचियें एदेशी ॥ परिहरणीया रे सुकृतिजिराश्रवा इदि रामतामवधाय॥प्रजवं त्येते रे जृत्रामुच्डृंखला विजुगुणविजववधाय ॥ परिण ॥ १ ॥ कुगुरुनियुक्ता रे कुमतिपरिष्ठुताः ॥ शिवपुरपथमपहाय प्रयतंतेऽमीरे क्रियया इष्टया प्रत्युत शिवविरहाय ॥ परिणाशा अर्थ ॥ सुरुतवंतपुरुषें हृदयमां समताधारणकरी आश्रवनोपरिहारकरवो अरे जीव आ लोखदना शांकलनीपरें बांधीराखनारो जे आश्रव ते विन्नजे परमात्मा तेनाग्रणरूप ऐश्वर्यतानो नाज्ञकरवाने समर्थयायने ॥ १ ॥ कुगुरुयेंकरेलीप्रेरणा अने कुमतियेंकरी युक्तघयला हेड्छजीव तुं कायिकादिक ड्रष्टक्रियार्डमां प्रवर्त्तवे करी मोक्तुरीयें जवानो मार्गमूकीने छलटोमोक्त्मार्गनो नाशकरवानुंज यत्नकरेबे॥शा उप्रविरतचित्ता रे विषयवरीकृता विपहंते विततानि ॥ इह परलोके रे कर्मविपाकजान्यविरलङःखरातानि ॥ परिणा ३ ॥ करिऊषमधुपा रे शलजम्हगादयो विषयविनोदरसेन ॥ हंत लजंते रे विविधा वेदना बत परिएतिविरसेन ॥ परिण ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ जेनाचित्तमां वैराग्यनची एहवा विषयने पराधीनचयलाप्राणी इहलोकें तथा परलोकेपण निरंतरपणे कर्मनापरिणामोथी उत्पन्नथयलां शैकमाङःखोनुं सहनकरेने ॥ ३ ॥ इस्ति मत्स्य चमर पतंग अने मृग एवा पांचजातना प्राणीओ अनुक्रमेंस्पद्दी रस गंध रूप शब्द ए एकेकाविषयना विनोदरसेकरी नानाप्रकारनी वेदनाञ्चोने एविषयोना परिएाम ज विरस एटले मागरस ते एकरीपामेले ए महो टुंखेदनुं कारणजे ॥ ४ ॥ उदितकपाया रे बिपयवशीकृता यांति महानरकेषु परिव र्त्तते रे नियतमनंतज्ञो जन्मजरामरकेषु ॥ परिण् ॥ ए ॥ मनसा वाचा रे वपुषा चंचला इर्जयइरिंतजरेण ॥ उपलि प्यंतेरे तत ज्आश्रवजये यततां कृतमपरेण ॥ परिण ॥ ६ ॥ अर्थ॥ जेने कोधादिक कपाय उदयमांत्राव्याने तेप्राणीओ पांचईडिओना विषयोने स्वाधीनथयजाने तेणेकरो महोटा नरकमां जायने अने अनंतिवार जन्म जरामरएकरेने ।।ए॥ आश्रवेंकरी चंचल थयला प्राणी मन वचन अने कायाना

योगें डर्जय एह्वुंजेपाप तेऐकरी युक्तथायते माटे चतुरपुरुषें आश्रवने जीतवानुं प्रयत्नकरवुं अने नवा कर्म बांधवानही ॥ ६ ॥ शुर्डायोगा रे यदपि यतात्मनां स्त्रवंते शुज्जकर्माणि ॥ कांचन निंगडांस्तान्यपि जानीयात् इतनिर्वतिरार्माणि ॥ परिण् ॥ ๆ ॥ मोदस्वैवं रे साश्रवपाप्मनां रोधे धियमाधाय ॥ शांतसुधारसपा नमनारतं विनय विधाय विधाय ॥ ७ ॥ इतिश्री शांतसुधा रस गेयकाव्ये आश्रवजावनाविजावनोनाम सप्तमः प्रकादाः श्चर्थ ।। जेऐोपोतानुं मनस्वाधीनकखुं तेनाग्नुइयोगजेने ते ग्रुध्योग जोपण ग्रनकमोंनेज स्रवेजे एटँखे ग्रुनकमोंनीज प्राप्तिकरावेजे परंतु तेकमोंपण मोइन्सुख ना नाशकरवाने शोनानीबेडीसरखा जाएवा ॥ ॥ माटे विनयविजयजी छपार्थ्याय पोते पोतानेकहेने के अरेबिनय आवाप्रकारेंकरी आश्रवसहित जेपाप तेनोनि रोधकरवा उपर बुद्धिराखी वारंवार शांतिसुधारसनो पानकरीकरीने आनंदपाम॥०॥ इतिश्रीशांतसुधारसं गेयकाव्ये आश्रवजावनाविजावनो नाम सप्तमः प्रकाशः स्वागतावृत्तवयं ॥ येन येन य इहाश्रवरोधः संजवेनियतमौ पयिकेन॥ आडियस्व विनयोद्यतचेतास्तत्तदांतरदृशा परिजा व्य ॥ १ ॥ संयमेन विषयाविरतत्वे दुर्शनेन वितथाजिनिवे शं॥ध्यानमार्तमय रोेड्मजस्त्रं चेतसः स्थिरतया च निरुंध्याः॥१॥ छर्थ ॥ इवेछाठमी संवरनावनानावेळे छरेविनय छाजगतमां जे जे छपायेंकरी निश्चयथी आश्रवनोरोध यतोहोय ते ते उपाय ताहरी अंतरदृष्टियेंजोइ तेनेविषे चित्त जगामीने तेनेस्वीकारकर ॥ १ ॥ एटजे संयमेंकरीने विषय उपर वैरागकर सम्यक्त दर्शनेकरीने अनिनिवेशके० मिष्यालनो आग्रदमूकीआप अने चित्तना स्थिरपरिणाम पर्णे करीने आर्त्त तथा रौड ए बे थ्याननुं निरंतर रुंधनकर ॥ २ ॥ शालिनीरृतं ॥ क्रोधं क्तांत्या मार्दवेनाजिमानं इन्या मायामार्जवेनो ज्वलेन॥लोजं वारांराशिरोंेंडं निरुंध्याः संतोषेण प्रांशुना सेतुनेव॥३॥ अर्थ ॥ क्वमार्थेकरी क्रोधनो जयकर माईवेंकरी अनिमाननो जयकर सरलपणे करी मायाजेकपट तेने हणीनाख वलीसमुइजेवो इष्कर जे लोन तेहनो उंचो सेतु सरिखोजे संतोष तेपोकरी रोधकर ॥ ३ ॥

शांतसुधारस.

स्वागतावृत्तं॥ गुप्तिजिस्तिसृजिरेवमजय्यान् त्रीन् विजित्य तरसाऽधमयो गान् ॥ साधुसंवरपथे त्रयतेष्ठा लप्स्यसे हितमनीहितमिई ॥ ४॥

अर्थ ॥ एमज मनगुप्ति वचनगुप्ति खने कायगुप्ति एत्रण गुप्तियेंकरीने जे जीत वाने घणाजडुर्लन निंदनीक एह्वा त्रण डुप्रयोग्य तेने जीती रूडासंवर मार्गनेवि षे यह्नकर एटजे प्रकाशवंत देदीप्यमान छने कोइकालें विनाशने न पामनारा एह वा जे हि्तार्थ तेने पामील छार्थात् मोक्षसुखने पामील ॥ ४ ॥

मंदाकांतारृतं ॥ एवं रुद्रेष्वमलहृदयैराश्रवेष्वाप्तवाक्यश्रदाचंच त्सितपटपटुः सुप्रतिष्ठानशाली ॥ शुद्धेयोंगेर्जवनपवनैः प्रेरितो जीवपोतः स्रोतस्तीर्वा जवजलनिधेर्याति निर्वाणपुर्या ॥ ५ ॥

श्वर्थ ॥ एवाप्रकारेंकरी स्वच्चक्तदयवंत पुरुषें आश्रवनो रोधकरवो पढे आप्तके पोतानादितवांढक तीर्थकरादिक पुरुषोना वाक्योठपर जेश्रदाराखवी तेजाणीयें वाइ एनेविषे एकसुंदर अनेउज्वल वावटोचडाव्यो एइवो नूतनपीठबंध पयो यको श्रुदमनोयोग श्रुद्वचनयोग श्रुद्काययोग एत्रएायोग तेहिज जाणियें कोइक वेग वानवायरो तेणेकरी पूर्खोयको जीवरूपीओ जहाज तेसंसारसमुइनो प्रवाहतरी ने सुरत मोक्त्रूप नगरियें जइपहोचेढे ॥ ५ ॥

॥ अष्टमनावनाष्टकं नटरागेण गीयते महावीरमेरो लालन एदेशी ॥

शृणु शिवसुखसाधनसङपायं सङपायं रे सङपायं॥ शृणु शिवसु खसाधनसङपायं ॥ ज्ञानादिकपावनरत्नत्रयपरमाराधनमनपायं ॥ शृ० ॥१ ॥ ॥ विषयविकारमपाकुरु दूरं कोधं मानं सहमायं॥ लोज रिपुंच विजित्य सहेलं॥ जज संयमगुणमकषायं॥ शृ०॥श॥

छर्थ ॥ दे विनय तुं मोक्साधननो रूडोण्णाय सांजल एकतो निर्दोषपवित्र इानादिक रत्नत्रयनुं आराधनकर बीजो पांचेंडियोना विषयसंबंधीजे विकारोजे ते इनेदूरकर त्रीजोमायासदित कोध मान अनेलोजरूप शत्रुओनी देलनाकरी सदेज मां श्रमदिना एचारेकषायने दलकटजेवा जाणी जीतीकेइने कषाययी ग्रून्यथयलो एह्वोजे संयमरूप ग्रुण तेनुंसेवनकर ॥ १ ॥ उपरामरसमनुराीलय मनसा रोषदहनजलदप्रायं॥ कलय विरागं धृतपरजागं हदि विनयं नायं नायं ॥ राृण्॥ ३॥ आर्ते रोडं ध्यानं मार्जय ॥ दह विकल्परचनानायं ॥

यदियमरुझ मानसवीथी॥ तलविदः पंथा नायं ॥ शू० ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ कोधरूपअग्रीने शमाववा मेघनीपरें शांतिनोकरनार एदवोजे उपशम रस तेदने तुं मनमां धारणकर दे विनय कदयमां धारणकरेलोजे परपुजलादिक संबंधी नाग तेदने तदाराक्तदयमांथी नीत्वानीत्वाकें० काढीकाढीने अत्यंत गुणवा नजे वैराग्य तेने धारणकर वली आर्त्तथ्यान अनेरौइध्यानने धारणकरीत्तनद्दी॥ श तथा संकब्प विकब्पनीजेजालबे तेने बाली जस्मकरीनाख कारणके मनो योगना मार्गने रुंधी न राखवो एवोकांइ तत्व वेत्तानो मार्गनथी तत्ववेत्ता पुरुष नेतो मनोयोग मोकलो राखवुंज नही ॥ ४ ॥

संयमयोगैरवहितमानसराुद्धा चरितार्थयकायं ॥ नानामत रुचिगढ्ने जुवने निश्चिनु राुइपयं नायं ॥ राूणाया ब्रह्म

वतमंगीकुरु विमलं बिंधाणं गुणसमवायं ॥ उदितं

गुरुवदनाइपदेशं संग्रहाण शुचिमिव रायं ॥ शृ० ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ संयमनायोगथी थयजीजेमननीश्चदि तेणेकरीने कांइपण रुतार्थंकर नानाप्रकारनी रुचिसदीत विचित्रप्रकारना मतेंकरी गद्दन एटखेव्याप्त एहवो आज गतमां नयरूप शुद्धमार्ग एटखे स्यादाद शैलीरूपजे जनमार्ग तेनोशोधकर ॥ ५॥ वली ग्रुणना समुदायने धरनार अत्यंतनिर्मेल एहवाब्रह्मचर्यव्रत ने सीकारकर अने गुरुयेंकरलाउपदेशने जेरीतें शुद्इव्यनो संयद्करियें तेरीतेंसंयदकर ॥ ६ ॥ संयमवाङ्मयकुसुमरसेरति सुरजय निजमध्यवसायं ॥ चेतन मुपलद्त्य रुतलद्त्रणज्ञानचरणगुणपर्यायं ॥ शृ० ॥ ९ ॥ वदन मलंकुरु पावनरसनं जिनचरितं गायं गायं ॥ सविनय शांतिसु धारसमेनं चिरं नंद पायं पायं ॥ शृ० ॥ ७ ॥ इति श्री शांतसुधा रसगेयकाव्ये संवरजावनाविजावना नाम आष्टमः प्रकाशः अर्थ ॥ संयमना प्रतिपादन करनारा एहवा परमेश्वरनी वाणीमय जेपुष्प ते पुष्पोना रसनीसुगंधी पोताना अध्यवसायनेअसंतपणेकर अने ज्ञानादिक गुणपर्या

शांतसुधारसः

यरूप लक्त्णनो करनारुं एद्वोजे तदारुं चैतनने तेने तुं छोलख ॥ ९ ॥ पवित्र अने जलारसेंकरी सहित एहवुं परमेश्वरनाचरित्रोनुं गायन करीकरीने पोताना मु खने अलंकतके० शोजितकर (जूषितकर) वली विनयसहित आ शांतिसुधारसनो पान करी करीने घणाकाल सुधी आनंद मयमां रहे ॥ इतिश्री शांतिग्रधारस गेयका व्ये संवरनावनाविनावनो नाम अष्टमः प्रकाशः ॥ इंड्वजारतं॥थन्निर्जरा घाददाधा निरुक्ता तत् घादद्यानां तपसां विजे दात्॥ हेतुप्रजेदादिह कार्यजेदः स्वातंत्र्यतस्त्वेकविधेव सा स्यात् ॥१॥ अर्थ॥ हवे निर्जरा नावनानावेने निर्क्तराजे बारप्रकारनी कहीने तेबारप्रकारना तपने नेदेंकरीयाय इहां कारणनेनेदें कार्यनो नेदयाय तेणेकरी बारप्रकार कहेवाय नहीकां खतंत्रपऐतो निर्क्तरा एकप्रकारनीजने ॥ १ ॥ ञ्जनुष्टब्रुत्तू घ्यं।।काष्ठोपलादिरूपाणां निदानानां विजेदतः।।वन्हि र्यर्थेकरूपोपि पृथयूरूपो विवत्तयते॥१॥ निर्जरापि घादराधा तपो नेदेस्तयोदिता॥ कर्मनिर्जरा णाला तु सेकरूपेव वस्तृतः ॥ ३ ॥ अर्थ ॥जेम कारणरूप काष्ठ अने पाखाणना जूदाजूदा जेदने तेनाजेदेंकरी यद्य पि अग्निएकरूपने तथापि जिन्नजिन्नरूप देखायने एटले आ अमुक काष्ट्रनी अग्नि अथवा आ अमुक पाखाणनी अग्नि इत्यादिक अग्निना जेदकहेवायने ॥ १ ॥ ते मज तपनाजेदेकरी निर्क्तरा बारप्रकारनीकहीने पण वस्तुतत्वें विचारतां कर्मनिर्क्त रा स्वरूप जे ने तेतो एक रूपजने ॥ ३ ॥ ठपेंडवजारटां॥ निकाचितानामपि कर्मणां यज्ञरीयसां जूधरर्ड्धराणां॥ विजेदने वज्रमिवातितीवं नमोस्तु तस्मै तपसेऽज़ताये ॥ Я l अर्थ ॥ पर्वतजेवा ऊर्दर एहवा महोटा निकाचितकर्मोनो जेंदकरवाविषे वज्रनी परें अत्यंततीव एहवुंअभुतजे तप तेने महारो नमस्कार होजो ॥ ४ ॥ **उपजातिरुत्तं ॥ किमुच्यते सत्तपसः प्र**जावः कठोरकर्मार्जितकिल्बि षोपि ॥ हढत्रहारीव निहत्य पापं यतो ऽपवर्ग लजतेऽ चिरेणा। ८॥ यथा सुवर्णस्यग्रुचि स्वरूपं दीप्तः कृगानुः त्रकटीकरोति ॥ तथात्मनः कर्मरजो निहत्य ज्योतिस्तपस्तर्विरादीकरोति ॥ ६॥ अर्थ॥ तपना रूमाप्रजावनुं केटलुं वखाण करियें जेटलुं वखाणकरिथें तेटलुं

<u>१४</u>ए

थोमुंजने केमके हटप्रहारी जेवा पुरुषोए महोटा कनोर कर्में करीने खत्यंत पापोनो संपादान कखुंहतो तेपण तपस्याना प्रजावें समस्त पापोनो नाशकरीने थोडाज का लमां मोक्ट प्रतें पाम्या ॥ ५ ॥ जेम प्रदीप्तछन्नि खुवर्णनुं पवित्रस्वरूप प्रगटकरेने तेमज तपजेने तेपण खात्मामांथी कर्मरूप रजनो नाशकरीने साह्तात् खात्मानुं ज्योतिस्वरूप प्रगटकरेने ॥ ६ ॥

स्रग्धरावृत्तं॥ बाह्येनाज्यंतरेण प्रथितबढुजिदा जीयते येन

रात्रुश्रेणी बाह्यांतरंगा जरतन्वपतिवत् जावलब्धडढिम्ना॥

य स्माब्प्राडर्भवेयुः प्रकटितविज्ञवा लब्धयः हिसिद्धयश्च वं

दे स्वर्गापवर्गार्पणपटु सततं तत्तपो विश्ववंद्यं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेना बाह्य अने अर्ज्यंतर जेदेकरी घणाजेद प्रख्यातने एहवा तपना उपर विशेषजावना योगेंकरी जेहने टढपणुं जब्धके० प्राप्तयायतो ते तपेंकरी इस मनादिक बाह्यशञ्च अने रागादिक अंतरंग शत्रु तेनीजे श्रेणीके० पंक्ति तेने जरत राजानीपरें जीतीजवायने वली जेतपथकी ऐश्वर्यताने प्रगटकरनारी अठ्यावीसल ब्धीओ अने आठसिदिओ प्रगटयायने तथा जे स्वर्ग अने मोक्त्ना सुखआपवामां कुशल वलीजगतने पूजवायोग्य एह्र्वोजेतप तेहनेढुं निरंतर नमस्कारकरुं ॥ ९ ॥ अथनवमजावनाष्टकं सारंगरागेण गीयते ॥ जिणंदरायसरण तिहारे आयोएदेशी॥

विजावय विनय तपोमहिमानं॥ ध्रुवपदं॥ बहुजवसंचितङ

ष्कृतममुना ॥ जन्नतेलघुलघिमानं ॥ विण्॥ं १ ॥ याति घनापि घनाघनपटली ॥ खरपवनेन विरामं ॥ जजति त

या तपसा इरिताली ॥ क्तूणजंगुरपरिणामं वि०॥ २॥ अर्थ ॥ विनयविजयजी पोताने उपदेशकरेढेके अरेविनय तुं तपनामहिमानी नावनाकर जेनायोगयकी घणाजवतुं संचितकरेखुं पाप तुरतज इलकापखुंपामे ढे ॥ १ ॥जेम तीक्रूणवायुयें करी महोटी महोटी मेघनीपंक्तिओ नाशपामेढे तेमज तपेंकरीने महोटीमहोटी पापनीपंक्तिओ एक क्रूणमात्रमां नष्टयइजायढे ॥ १ ॥ वांढितमाकर्षति दूरादपि रिपुमपि व्रजति वयस्यं॥ तप इदमाश्र य निर्मलज्ञावादागमपरमरहस्यं॥३॥ज्अनज्ञानमूनोदरतां वृत्तिऱ्हा सं रसपरिहारं जज सांलीन्यं कायळेज्ञां तप इति बाह्यमुदारं॥४॥ **शांतसुधारस**

छर्थ ॥ वली जे वांढितार्थ घणुंदूरहोय तेनेपण नजीकछाणीछापेढे तथाशत्रु नेपण मित्रकरेढे एहवाएतपने शास्त्रनुं परमरहस्य जाणीने निर्मलनावें छादर ॥ ॥ ३ ॥ तेतपनाबारजेदढे १ छनशन १ उनोदरी ३ वृत्तिःहास एटखे वृत्तिसं केप ४ रसपरिहार ५ सांलीन्यता एटखे ईडि्योनोरोधवुं एकांतेंबेसवुं ६ कायक्केश एढप्रकारनुं महोटुं बाह्यतपढे तेनुं तुं सेबनकर ॥ ४ ॥

त्रायश्चित्तं वैयावृत्यं स्वाध्यायं विनयं च ॥ कायोत्सर्गं शुजध्यानं ज्याज्यंतरमिदमंचाविणाधाशामयति तापं गमयति पापं रमयति मानसहंसंग्रहरति विमोहं दूरारोहं तप इति विगताशांसंःग्रविणाहा।

छर्ष ॥ १ प्रायश्चित्त २ वेयावच्च ३ स्वाध्याय ४ विनय ५ कायोत्सर्ग ६ छन ध्यान एठप्रकारना आज्यंतर तपढे तेनेसेव ॥ ५ ॥ एतप अनेकप्रकारना संसारी कतापनी शांतिकरेढे अनेपापनोनाशकरेढे तथा मनरूपदंसने रमाडेढे वली निःसं शयपऐ आजगतमां इःखोनेदूरकरवा असमर्थ एहवोजे मोहतेनो नाशकरेढे ॥६॥

संयमकमलाकार्मणमुज्वलशिवसुखसत्यंकारं चिंतितचिंतामणिमाराध य तप इह वारं वारं ॥विणाणा कर्मगदोेषधमिदमिदमस्य च जिनपति मतमनुपानां॥विनय समाचर सोंख्यनिधानं शांतिसुधारसपाना॥विणाठ इतिश्रीशांतसुधारसगेयकाव्ये निर्जराजावनाविज्ञावनानामनवमः प्रकाशः अर्थ ॥ वल्लीएतपते चारित्ररूप लक्तीने वशकरवानी विद्यान्ने तथा सुंदर मो हना सुखन्ठापवाने विशारदने वली चिंतितार्थ देवाने चिंतामणीरत्नसरखोने एद वा तपने आजगतमां देविनय तुं वारंवार अंगीकारकर ॥ ७ ॥ देविनय कर्मरूप रोगनुं औषध अने तीर्थकरोनो जे मत तेने अनुपानजेदनुं तथा समस्त सुखनुं निधान एद्वोजे शांतसुधारस तेनुंतुंपानकर ॥ ७ ॥ इतिश्रीशांतसुधारस गेयकाव्ये निर्कारानावनाविज्ञावनो नाम नवमः प्रकाशः

उपजातितृत्तं ॥ दानं च शीलं च तपश्च जावो धर्मश्चतुर्धा जिनबां धवेन॥निरूपितो यो जगतां हिताय स मानसे मे रमतामजस्त्रं॥१॥ अर्थ ॥ हवेदशमी धर्मजावना जावेडे तीर्थंकरदेवें लोकहितार्थें दानशील तप झ ने जाव एरीतें चारप्रकारनो धर्मकद्योडे तेधर्ममारामनमां सर्वकालरहो ॥ १ ॥

141

इंडवजारुत त्रयं॥सत्यक्तमामार्डवद्यौाचसंगत्यागार्जवब्रह्मविमुक्तियु कः॥ यः संयमः किंच ततोपगूढश्चारित्रधर्मो दद्याधायमुक्तः॥ २ ॥ य स्य प्रजावादिह पुष्पदंतौ विश्वोपकाराय सदोदये ते ॥ ग्रीष्मोष्मज्ञी ष्मामुदितस्तनितान् काले समावासयत्ति क्तितिं च ॥ ३ ॥ अस्त्रो ष्मामुदितस्तनितान् काले समावासयत्ति क्तितिं च ॥ ३ ॥ अस्त्रो लकद्वोलकलाविलासैर्नाष्ठावयत्यंबुनिधिः क्तितिं यत् ॥ न प्रंति यत् व्याघ्रमरुददवाद्या धर्मस्य सर्वोप्यनुजाव एषः ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ १ सत्य १ इमा १ मार्डव ४ शौच ५ तपधर्म ६ संगत्थागअब्रह्मचर्य ७ विशेषप्रकारें सुक्तिएटके निर्लोजतापणुं ७ संयम १० अकिंचनता तेणेकरीयुक्त ए रीतें दसप्रकारनुं चारित्रधर्म कद्युंत्रे ॥ १ ॥ जे धर्मनापसायेंकरी जगतमां चंडसूर्य पण सर्वप्राणीमात्रने उपकारकरवाने व्यर्थे नित्यजदयपणुं पामेत्रे वलीग्रीष्मक्त्तुमां नी अत्यंत तप्तथयली जमोनने वर्षाक्तुमां मेघ वर्षादकरीने वंनिकरेत्रे ॥ ३ ॥ त या समुइपोताना महोटाकल्लोक्तेंकरी प्रथ्वीनेबुडावतोनथी स्त्रने व्याघ्र तथा दावा नल अने पवन इत्यादिकोकोइने मारतानथी एप्रतापसर्व धर्मनोजन्ने ॥ ४ ॥

शार्दूलविकीडितं टत्त इयं ॥ यस्मिन्नेव पिता हिताय यतते भ्वाता च माता सुतः सैन्यं दैन्यमुपेति चापचपलं यत्रा फलं दोर्बलं ॥ तस्मिन्कछदर्शाविपाकसमये धर्मस्तु संवार्मि तः सज्जः सज्जन एष सर्वजगतस्त्राणाय बडोद्यमः ॥ ॥ त्रेलोक्यं सचराचरं विजयते यस्य प्रसादादिदं योत्रामु त्र हितावहस्तनुजृतां सर्वार्धसिद्विप्रदः ॥ येनानर्धकदर्ध ना निजमहःस्सामर्थ्यतो व्यर्धिता तस्मे कारुणिकाय ध मंविजवे जक्तिप्रणामोऽस्तु मे ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेवखत पोतानाहितने अर्थे बाप जाइ माता एत्र अत्यंत उद्योगकरे के तेपण धर्मनोजप्रतापजाणवो अनेवली धनुष्पनायोगेंकरी चपल घयलो जे सैम्यके लशकर तेपण दैन्यके दीनपणाने पामे के तथा जेवखतपोतानी छजात्रोनुंबल निष्फलयाय के एवी कष्ट अवस्थाना परिणामकालें पण सद्धनएइ बुंजे आधर्मरूप मित्रते पोताना अंगमां बख्तरजे बुंबइ जाणे एक धर्मरूप बख्तरज पहेख़ुं हो मनी एट शांतसुधारस.

खे आंगमां बख्तरपहेखा नीपरेंचयीने सर्वजगतना रक्त्णार्थं उद्योगकरेजे ॥ ए ॥ वली जेहनापसाययकी स्थावर छने जंगमसहित जगत शोचेने तथा जे छालोकें प्राणीओने हितकरवाने योग्यथयीने सर्वअर्थनी सिद्धताने पमाडेढे जेऐोपोताना तेजस्वीसामर्थेंकरी पापरूपविटंबनानो नाशकरीनाख्युंत्रे एहवो जे दयावंत धर्मरूप प्रञ्च तेने महारो नमस्कार होजो ॥ ६ ॥ मंदाक्रांतारृतं ॥ प्राज्यं राज्यं सुजगदयिता नंदनानंदनानां रम्यं रूपं सरसकविता चातुरी सुस्वरत्वं ॥ नीरोगत्वं गुणपरिचयः सजनत्वं सुबुद्धिं किंतु व्रूमः फलपरिएतिं धर्मकल्पद्वमस्य ॥ ९॥ अर्थ ॥ महोटुंराज्य सुंदरस्ती पुत्र पुत्रीओं रमणीकरूप घणीज सरस कविता करवानी चतुराइ सुखरपणुं आरोग्यतापणुं गुणोनोपरिचय तथासझनपणुं अने रूडीबुदि एसर्ववाना ते धर्मरूप कल्पवृक्त्ना फलते ॥ ७ ॥ ॥ अप्य देशमजावनाष्टकं वसंतरागेण गीयते जवितुमेवंदोरेहीरविजयसूरिराया एदेशी॥ पालय पालय रे पालय मां जिनधर्म ॥ मंगलकमलाकेलिनिके तन करुणाकेतन धीर ॥ शिवसुखसाधन जवजयबाधन जगटा धार गंजीर ॥ पा० ॥ रे॥ सिंचति पयसा जलधरपटलीजृतलममृत मयेन ॥ सूर्याचंडमसावुदयेते तव महिमातिरायेत् ॥ पाण ॥ २ ॥ अर्थ ॥ दे जैनधर्म तुं महारुंरक्रणकर महारुं रक्तणकर तुं मांगलिकरूप लक्षी नुं कीमागृहगो वलीकरुणानो स्थानकगो तथा मोक्सुखनुं साधनगो अने संसा रना समसजयनो नाशकरनारढो तेमज जगतना जीवोने आश्रयजूतढो अनेअतिगं जीरबो ॥ १ ॥ जे मेवनो समूहते पृथ्वीतजने अमृत सरखा पाणीयें करीने सिंचन करेने छने चंइ सूर्य जे नित्य जगेने तेसर्व ताहरोज महिमाने ॥ २ ॥ निरालंबमियमसदाधारा तिष्ठति वसुधा येन॥तं विश्वस्थितिमूलस्तं नं तं सेवे विनयेन॥पाणा३॥ दानइालिज्ञुजजावतपोमुखचरितार्थीऽक तलोकः ॥ शरणस्मरणकृतामिइ जविनां दूरीकृतजयशोकः॥पा० ४॥ अर्थ ॥ निरालंब पृथ्वीनेकोइ आधार नढतां जेनाआधारचकी रहेढे एहवो जग तनीस्थितीनो मूलस्तंन जे धर्म तेने हुं निस्पप्रतें विनय एटले जक्तिये करी सेवुं ज़ुं॥३॥ दान शील ग्रजनाव अने तप एचारप्रकारेकरी लोकोने चारित्रायैनो करनारों अने

For Private & Personal Use Only

Jain Education International

जे प्राणी आ जगतमां ए धर्मनो स्मरण करेने तथा आश्रय करेने ते प्राणीना जय तथा शोकने दूर करनारो एहवो ए धर्मने ॥ ४ ॥

क्तमासत्यसंतोषदयादिकसुजगसकलपरिवारः ॥ देवासुरनरपूजित ज्ञासन कृतबढुजवपरिहारः॥पाणा॥॥बंधुरबंधुजनस्य दिवानिद्यामस हायस्य सहायः॥भ्राम्यति जीमे जवगहनेंगी तां बांधवमपहाया।पाण्ड अर्थ ॥ जेनो क्तमा सत्य संतोष दया आदेदेइने समस्तपरिवार सुंदरढे वली देवता देत्य अने मनुष्पोए जेनी आज्ञामान्यकरीढे तथा अनेक जन्म जरा मरण नो परिहार करनारो ते ए धर्मजढे ॥५॥ वलीहे धर्मतुं जेनेकोइ जाइनथी तेनोजा इ तथा जेनेकोइ सहायनथी तेने रात्रदिवस सहायनो करनार बांधव रूपढो तेम ढता बांधवरूप तुजने मूकीने प्राणीओ संसाररूप अरएयमां फिरेढे॥ ६ ॥

र्डगतिगहनं जलति कराानुः स्थलति जलधिरचिरेणा।तव रूपयाऽखिल कामितसिद्धिर्बढुना किंतु परेण ॥पाणा॥॥ इह यच्चसि सुखमुदितदराांगं प्रेत्येंडादिपदानि॥क्रमताङ्गानादीनि च वितरसि निःश्रेयससुखदानि॥ अर्थ॥हे धर्मरूपमित्र तहारीरुपायकी आरप्ध ते महोटा नगर जेवो थाय तथा अर्थ॥हे धर्मरूपमित्र तहारीरुपायकी आरप्ध ते महोटा नगर जेवो थाय तथा अप्रिते पाणीसरखीयाय अने समुइते स्थल सरखो तुरतथइजायढे वधारे हुं कढुं तहारी रुपायकी प्राणीमात्रना सर्व मनोरथ पूर्णथायढे ॥ ७ ॥ आलोकमां जेना अंगनेविषे दयारूप धर्म उदयआव्योढे तो तेने इहांपण पूर्वोक्तप्रकारें सुखआपेढे अने परनवे इंडादिक देवताओनी पदवीआपेढे वली क्रमेकरी मोक्तसुखने आप नारा एहवा झानादिक गुणआपेढे ॥ ७ ॥

संवतंत्रनवनीतसनातन सिदिसदनसोपान ॥ जय जय वि नयवतां प्रतिलंबितशांतसुधारसपान ॥ पा० ॥ ए॥ इतिशांत सुधारस गेयकाव्ये धर्मजावनाविजावनो नाम दशमः प्रकाशः अर्थ ॥ सर्वशास्त्रोमां नवनीत एटले माखणजेवो सारजूत अने सनातनके० शा भत तथा सिदिरूपगृहनो सोपान एटले निसरणीरूप अने जे विनयवंत शिष्यो ने शतिसुधारसतुं पान करावेढे एहवोजे धर्म ते जयपामो जयपामो ॥ ए ॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये धर्मजावनाविजावनो नाम दशमः प्रकाशः

मालिनी वृत्तं॥ सप्ताधोधो विस्तृता याः एषिव्यर्ग्त्राकाराः संतिरत्नप्रजा द्याः ॥ ताजिः पूर्णो योरत्यधोलोक एतौ पादौ यस्य व्यायतौ संतरज्जुः॥ १ श्चर्य ॥ हवे इंग्यारमी लोकखरूप नावनानावेळे सातश्चधोश्चधो एटजे एकबी जाने नीचिंनीचें विस्तीर्ण बत्राकारें रत्नप्रनादिक सातप्रथ्वीछोबे तेणेकरी परिपू र्ण एवा अधोलोकरूप सातरज्छप्रमाणे जेना महोटाबेपगढे ॥ १ ॥ तिर्यग्लोको विस्तृतो रजुमेकां पूर्णो दीपैरर्णवांतेरसंख्यैः ॥यस्य ज्योतिश्वक्रकांचीकलापं मध्ये काइर्यं श्रीविचित्रं कटित्रं ॥ १ ॥ श्वर्य ॥ छने एक रज्जु प्रमाण विस्तारवंत छत्तंख्याता ६ीपसमुईकरी व्याप्त एइ वो तिर्यगुलोकमां ऊशपणानी शोनायेंकरी युक्तने वली ज्योतिष चक्ररूप कांचीक लापायें युक्त जेनुं सुंदर कणदोरोने ॥ २ ॥ लोकोऽघोर्ध्वे ब्रह्मलेकि चुलोके यस्य व्याप्तो कूर्परौ पंच रज़् ॥ लोक स्यांतो विरुत्ततो रजुमेकां सिश्वज्योतिश्चित्रको यस्य मौलिः ॥ ३ ॥ छर्च ॥ जेनो जर्ध्वलोकें ब्रह्मनामा देवलोक पांचरज्छप्रमाणे व्याप्त ते कोपरा स रखो कूरपरने अने जेनुं लोकनेखंते एकरज्छविस्तारपणेजे सिद्धिला तेमस्तकने॥३ यों वैशाखरुधानकरुधायिपादः श्रोणीदेशे न्यसतहस्तघ्यश्च ॥ का लेऽनादौ राश्वदूर्ध्वंदमलाहिश्राणोपि श्रांतमुडामलिनः ॥ 8 1 श्वर्थ॥ जेना मथनकरवाना दंडने स्थानकेंपगढे एटर्डे ढासमथन करवाना दंमनी परें जेना पगपसरेलाने जेऐो पोतानी कटी उपर बेहाथ राखेलाने एहवोथको खना दिकालनुं निरंतर जर्ध्व दमपणे जितेंड्यियको शांतमुडा धरीरह्योने पण खिन्ननथी॥ध सोयं झेयः पूरुषो लोकनामा षड्डव्यालाऽ कत्रिमोनायनंतः ॥ धर्माधर्माकाराकालालसंझे ईच्चेः पूर्णः सर्वतः पुजलेश्व॥ ४॥ श्वर्थ॥ षटइव्यरूप जेना आत्मानुं स्वरूपने जेनेकोइयें कथोनथी जेनो जन्म अथवा मृत्युथयोनथी वली धर्म अधर्म आकाश काल जीव अने एफज एपांचइ व्येकरी सर्वस्थले परिपूर्ण एवो आ चठदराज लोकनामा पुरुषजाएवो ॥ ५ ॥ रंगस्थानं पुजलानां नटानां नानारूपैर्नत्यतामालनां च ॥ का लोग्रोगस्वस्वजावादिजावैः कर्मातोधैर्नार्ततानां नियत्या ॥ ६॥ खर्थ ॥ वली जे काल उद्योग खखनावादिकनावें कर्मरूपवाजित्रें नियतियेक

री नानाप्रकारना रूपेकरी नचावेला जीवोतुं अने नाचनारोजे पुकलरूप नाटकी ओ तेतुं रंगस्थान एटले रंगमंमपत्ने एवो एचवदराज लोकनामा पुरुषत्ने ॥ ६ ॥

एवं लोको जाव्यमानो विविक्तया विज्ञानां स्यान्मानसस्थैर्थहेतुः॥ स्थैर्थं प्राप्ते मानसे चात्मनीना सुप्राप्येवा ऽध्यात्मसौख्यप्रसूतिः॥ ९॥

अर्थ ॥ एरीतेलोकने विवक्त एटले जूरोजूरो स्पष्टपणे नाव्यो थको विज्ञानीपुरुषो नामनने स्थिरकरवानो कारण तेहीजथायळे जेवारें मनस्थिरथयो तेवारें छात्माने हितकरनारी अभ्यात्मिक सुखनी प्राप्तिसुलनथायळे ॥९॥ सप्तनिर्मालनीवृत्तैः कुलकं ॥ अथ एकादशनावनाष्टकं काफीरागेणगीयते छाजसखीमनमोहनो ॥ एदेशी

विनय विजावय शाश्वतं ॥ इदि लोकाकाशं ॥ सकलचराचरधा रणे परिणमदवकाशं ॥ वि० ॥१॥ लसदलोकपरिवेष्टितं गणनाति गमानं ॥ पंचजिरपि धर्मादिजिः सुघटितसीमानं ॥ वि० ॥ २ ॥

असीस समिति प्रतिस्ति प्रतिस्ति पुर्वाट स्तानान साथिण स्विण्या स्वा श्वर्थ ॥ विनयविजयजी उपाथ्याय पोताने समजावेग्रेजे अरेविनय शाश्वतो चिरकाल रहेनारो एहवो लोकाकाशतुं ताहरा हृदयमां धारणकर जेमां समस्त स्थावर अनेजंगमपदार्थोंने धरवाविषे पूर्णअवकाशग्रे ॥ १ ॥ वलीशोनायमान अ स्वोकेंकरी वेष्टितके० विटधुंग्रे तथा जे गणनाके० परिमाण मूकीने रह्योग्रे केमके असंख्यातो लोकाकाशग्रे माटे, वली जेनीसीमाधर्मादिक पांचड्व्येंकरी सुघटितके० रूमीरचनायें करी रचितन्रे एहवो ए चउदराज लोकनामा पुरुषन्ने ॥ १ ॥

समवघातसमये जिनैः परिपूरितदेहं ॥ असुमदणुकविविधकिया गुणगोरवगेहं ॥विणा३॥ एकरूपमपि पुजलैः कृतविविधविवर्तं ॥ कांचनदौछदिाखरोन्नतं कचिदवनतगर्ते ॥ विण् ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली लोकनामा पुरुषनेविषे श्रीतीर्थंकरदेव समुजातना समयें पोतानी आत्माना प्रदेशेकरीने चठदेराजलोकना समस्तजाग परिपूर्णकरेढे तथा असुमत्के॰ प्राणी अने अणुके॰ परमाणु तेमनी नानाप्रकारनी जेकिया अनेग्रण तेनागौरवप णानुं स्थानकजाणवुं ॥ ३ ॥ वली ए लोकाकाश पुरुषमां यद्यपि रूपने धारणकर नारुं एक पुजजड्व्यढे तेले नानाप्रकारना करेला एहवा किह्तांक मेरूना शिखरप्र माणेउंचा सुवर्णमयपर्वतोढे वलीकिह्तांकतो गर्ता एटखे खामाओढे ॥ ४ ॥ कचन तविषमणिमंदिरैरुदितोदितरूपं ॥ घोरतिमिरनरकादिनिः कचनातिविरूपं ॥ वि० ॥ ५ ॥ कचिङत्सवमयमुज्वलं जयमंगल नादं ॥ कचिदमंदहाहारवं ॥ प्रयुर्शोकविषादं ॥ वि० ॥ ६ ॥

अर्थ॥ वली किहांक तो देवताओना छवन तेनी सूर्यकांत मणीरत्ननी शोनायें करी सुंदररूप पणाना उदयने पाम्धोढे एटखे उदितोदित रूपनेपाम्योढे वली किहांक नयंकर अंधकार अने नरकादिकें अत्यंत विरूप एटखे माठारूप पणाने पा म्योढे ॥ ५ ॥ वली किहांकतो उत्सवमयढे एटखे उज्वल जयमंगलना वाजित्र ना नादेंकरी युक्तढे तथा किहांकतो अत्यंतशोक अने खेदे करीयुक्त जेमांथी महो टो हाहाकार शब्द निकलीरह्योढे एहवुं पुजल इव्यढे ॥ ६ ॥

बहुपरिचितमनंतशो निखिलैरपिसत्वैः जन्ममरणपरिवर्तिज्ञिः कृ तमुक्तममलैः ॥ विण् ९॥ इहपर्यटनपराङ्मुखाः ॥ त्रणमत जगवं तं ॥ शांतसुधारसपानतो धृतविनयमवंतं ॥ ७ ॥ इतिश्रीशांतसु धारसगेयकाव्ये लोकस्वरूपजावनाविजावनो नामेकादशः त्रकाशः

अर्थ ॥ वली लोकमां पुजलनो सरूप विशेषें कहेने जेने जन्म मरणाना योगेंक री फिरनारा प्राणी पूर्वपूर्व ममल्वनी परंपरायेंकरी अनंति अनंतिवार लेइलेइनेमू क्योने अनेजेनुं सर्वप्राणीओए अनंतिवार घणुंपरिचित कखुंने एहवुंए पुजलइव्य ने ॥ ७ ॥ माटे हेजीव तुंजो आलोकरूप पुरुषमां फिरवानेविषे पराङ्मुख ययो होय तो शांतिसुधारसना पानेकरी विनय धारण करनाराओनुं रक्त्ण करवा वाला जे जगवंत परमात्मा तेने नमस्कारकर ॥ ७ ॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये लोक सरूपजावनाविनावनो नाम एकादशः प्रकाशः

मंदाक्रांतारृत्तं॥यरुमादिस्मापयितसुमनःस्वर्गसंपदिलासप्राप्तोद्धा साः पुनरपि जनिः सत्कुले जूरिजोगे॥ ब्रह्मादैतप्रगुणपदवीप्राप कं निःसपत्नं तद्दुष्प्रापं जृशमुरुधियः सेव्यतां बोधिरत्नं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ दवेबारमी बोधिर्ड्लज जावनाजावेग्रे जेनाथकी देवतात्र्योपण वि स्मयपामे एद्दवो स्वर्गसंपत्तिनो विलास पामीने जीव आनंद पामनार यायग्रे व लीजेनाथकी अनेकप्रकारना अखंत जोगेंकरी युक्त एद्दवा रूमाक्रुलमां पुनःपुनः ज न्मथायने तथा परंपरायें छदैत ब्रह्मपदवी पमाडवामां जेनेकोइशत्रुनची जेनीप्राप्ति पामवी अत्यंतकवीणने एद्दुंजे बोधरूपरत तेनोदेबुद्मितो तमेसेवनकरो ॥ १ ॥

जुजंगत्रयातत्वत्तत्रयं॥ञ्चनादों निगोदांधकूपे स्थितानामजस्त्रं जनुर्म् त्युडःखार्दितानां॥परीणामशुद्धिः कुतस्ताहरी स्याद्यया इंत तस्मादि निर्याति जीवाः ॥ २ ॥ततो निर्गतानामपि स्थावरतं त्रसतं पुनर्ङर्लजं देहजाजां ॥ त्रसत्वेपि पंचाक्तपर्याप्तसंझिस्थिरायुष्कवतं डर्लजं मानु पतं ॥३॥ तदेतन्मनुष्यत्वमाप्यापि मूढो महामोहमिथ्यात्वमायोपगूढः॥ श्वमन्दूरमग्नो जवागाधगर्ते पुनः क प्रपद्येत तद्वोधिरत्नं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पण अनादि कालना निगोदरूप अंधकार तदूप कुवामां रहेनारा निरं तर जन्म मरणना इःखेंकरी पीडायला प्राणीओने तेवी परिणामद्यदि केमयाय केमके जेथकी महोटा आनंदे सहित जीव निगोद रूप अंधकार कुवामांची बा हेरपडेने ॥ २ ॥ ते निगोदमांची नीकलीने पण स्थावरमां उपजवुंचाय केमके प्राणीने त्रसपणुं पामवुंतो इर्जनने वली त्रसपणामां पण पंचेंडियपणुं पामवुं इ र्लनने तेमां वलीपर्याप्तिपणुं पामवुं दूर्जनने तेमांपण संज्ञी पंचेंडियपणुं दीर्घांय अन ने मनुष्यपणुं पामवुंतो परमइर्जनने ॥३॥महामोह मिथ्याल तथा माया एणेकरी युक्तथको मूर्खप्राणी आ मनुष्यपणुं पामीने संसाररूप अगाध खाडामां फिरतो फिरतो बुढयोथको रहेने तेप्राणीने बोधिरत फरीने ज्ञीरीतें प्राप्तथसे ॥ ४ ॥

शिखरिणीवृत्तं॥विजिन्नाः पंथानः प्रतिपदमनल्पाश्च मतिनः कुयुक्ति व्यासंगैर्निजनिजमतोत्नासरसिकाः ॥ न देवाः सान्निथ्यं विदधति न वा कोप्यरसिकस्तदेवं कालेऽस्मिन् य इह दृढधर्मा स सुकृती॥ ॥

अर्थ ॥ धर्मोना निन्ननिन्न मार्ग अने निन्ननिन्न स्थानकें कुयुक्तिना व्यासंगें ए टले अज्यासें करीने पोतपोताना मतना उदयविषेरसिक एहवा घणामतवाला आ कालमांढे अनेजो देवतानेपूढवाजइयेंतो देव कांइ कोइपासें आवतोनथी एमजएह वो अतिशयवालोपण कोइनथीके जेने पूढि निर्णय करीयें तो एवा आ इष्करकाल मां जेप्राणी धर्मउपर दृढता राखेढे तेज प्राणी पुख्यवान जाणवो॥ ५॥ रार्दूलविक्रीडितरुत्तं॥ यावदेहमिदं गेदैर्न मुदितं नोवा जराजर्जरं याव खक्तकदंबकं स्वविषयझानावगाहक्तमं॥ यावद्यायुरजंगुरं निजहिते ता वहुधेर्थेयत्यतां कासारे रुफुटिते जले प्रचलिते पालिः कथं बध्यते ॥ द ॥ अर्थ ॥ जिहांसुधी आशरीर रोगाक्रांत पयोनथी तेमज जिहांसुधी आशरीर जरायेंकरी जर्जरीनूतथयोनथी तथा जिहांसुधी आ पांचेंड्यिनो समूह पोतपोता ना विषयो जेवाने समर्थने अने जिहांसुधी आयुष्य क्लीएबर्युनथी तिहांसुधी हेजीव तुं पोताना कब्याएविषे यत्नकर केमके तलोफुटीने पाणी बाहेर नीकली जसे तोपने पालते केवी बांधीस ॥ ६ ॥

अनुष्टुब्हतं ॥ विविधोपडवं देहमायुश्च क्रणजंगुरं ॥ कामालंब्य धृतिं मूढैः स्वश्रेयसि विलंब्यते ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ आशरीर नानाप्रकारना उपड्वेंकरी युक्तने आयुष क्रणजंगुरने एमन्ता कोणमूर्ख तेनाउपर संतोष राखी पोताना कल्याणयवाना कार्यमां विलंब करे॥ड ॥ दादशजावनाष्टकं धनश्रीरागेणगीयते ॥ दीचेरेदीचेरेपीआदिंडोलडेएदेशी ॥

बुध्यतां बुध्यतां बोधिरतिइर्छना ॥ जलधिजलपतितसुररत्नयु त्तया सम्यगाराध्यतां स्वहितमिइ साध्यतां ॥ बाध्यताम धरगतिरात्मदात्त्त्या ॥ बुण्॥ १ ॥ चक्रिजोज्यादिरिव न रजवो इर्छजो श्वाम्यतां घोरसंसारकके ॥ बहुनिगोदादिका यस्थितिव्यायते ॥ मोहमिथ्यात्वमुखचोरलके ॥ बुण्॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम समुइनापाणीमां पत्नीगयलुं चिंतामणीरत्न पाठोहाथमां आवदुं अर्थ ॥ जेम समुइनापाणीमां पत्नीगयलुं चिंतामणीरत्न पाठोहाथमां आवदुं आतिर्फ़र्जनजे तेम बोधिपामवीपण अतिर्फ्जनजे माटेरूत्नीरीतें बोधितुं आराधनकरी पोतातुं हितसाधवुं अनेपोतानी शक्तीयेंकरी इर्गतिनो बाधकरवो ॥ १ ॥ घणी नि गोदादिक कायस्थितियें करी विशाल अने मोह मिथ्यालप्रमुख लाखोगमे चोरटा यें युक्त एहवो आ घोर संसाररूप अरप्यमां फिरनारा जीवोने चक्रवर्त्तिना नोजन सरखो मनुष्य जन्म पामवो इर्लनजे ॥ १ ॥

लब्ध इह नरजवो ऽनार्यदेरोषु यः स जवति प्रत्युतानर्धकारी ॥ जी वहिंसादिपापाश्रवव्यसनिनां माघवत्यादिमार्गानुसारी ॥ बुण ॥ ३ ॥ आर्यदेशारुएशामपि सुकुलजन्मनां॥ इर्लजा विविदिषा धर्मतले॥ र तपरिग्रहजयाहारसंझावर्तिनि हंत मग्नं जगहुस्थितले ॥ बुण्॥ ४॥ अर्थ ॥ जो आ जगतमां प्राणी अनार्यदेशमां मनुष्यनव पाम्योतो उलटो अन र्थनुं कारणयायढे केमके जीवहिंसादिक पापाश्रवना व्यसनवाला जीवोतो माघव ति जे सातमी नरकादिकढे तेना मार्गनुं कारण यायढे ॥ ३ ॥ रूडाकुलमां जन्म पामेलो होय अनेवली आर्यदेशमां रहेनार होय तेनेपण धर्मतल जाणवानी इज्ञा यवीइर्जनढे कारणके रतके० मैथुन परियह जय अने अहार ए चार नामना छ स्थितपणामां सर्वजगत बूमोपडयोढे ॥ ४ ॥

विविदिपायामपि अवणमतिर्डर्लनं धर्मशास्त्रस्य गुरुसन्निधाने ॥ वित यविकद्यादितत्ति इसावेशतो विविधविद्वेपमलिने ऽवधाने ॥ वुण् ॥ ॥ ॥ धर्ममाकर्ष्य संबुध्य तत्रोद्यमं कुर्वतो वैरिवर्गों ऽतरंगःराग देपश्रमालस्यनिडादिको बाधते निहतसुकृतप्रसंगः ॥ बुण् ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ कदाचकोइने धर्मतत्व जाणवानी इज्ञाहोय अने गुरुसंनिध बेगेहोय तोपण वृथा विकथारसना आवेशयी नानाप्रकारना विद्वेपेंकरी जोतेनुंअंतःकरण मलीन थयुंहोयतो धर्मशास्त्रोनुं अवण डर्लजहोय ॥ ५ ॥ वली जेप्राणी धर्मने सांजली धर्मनेपान्यो अने धर्मनविषे उद्योगपण करवाबेगे तेवा प्राणीनेपण पुष्प रूप प्रसंगना नाशकरनारा जे रागदेष अम आलस निडा इत्यादिक अंतरंग शत्रु नो समूह्ये तेपीडाकरेग्रे तेथीतेने धर्मपामवुं डर्जजयायन्ये ॥ ६ ॥

चतुरद्यीतावहो योनिलद्वेष्वियं क तथा कर्णिता धर्मवार्ता ॥ प्राय द्यो जगति जनतां मियो विवदते इदिरसद्याातगुरुगोरवार्ता॥बुणाशा एवमतिङर्जजात्प्राप्य ऊर्जजतमं बोधिरतं सकलगुणनिधानं॥कुरु गुरु प्राज्यविनयप्रसादोदितं ॥ द्यांतरससरसपीयूपपानं ॥ बुण् ॥ ७॥ इण्द्यांतसुधारसगेयकाव्ये बोधिजावनाविजावनो नामधादद्याः प्रकाद्याः अर्थ ॥ माटे छद्दोइति आश्चर्य देजीव चोरासीलक् जीवा योनीमां किदां पण तें धर्मनीवात सांजली इसेके छर्थात् नदीज सांजली इसे केमके घणुकरीने आजगतमां इदिगारव रसगारव सातागारव एत्रण महोटा गारवेंकरी पीडायला लोकोतो परस्पर एकबीजा साथे वादकरेने पणधर्मनी वातोसांजली धर्ममार्गे प्रव शांतसुधारस.

र्ततानयी ॥॥ एम अतिइर्जन वस्तु करतां पण विशेष इर्जन खने समस्त गुणनुं निधानएवुं जे बोधिरत ते पामीने गुरुनो छत्यंत विनयकस्रो तेऐकरीने प्राप्तचुं एँ हवुं जे शांतिसुधारस रूप जलोश्चमृत तेवु तुं पानकर एमांकर्त्तायें पोतातुंनाम पणसु चर्युं ॥ ७ ॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये बोधिनावनाविनावनोनाम ६ादशःप्र काशः एरीतें अनित्यादिक बारनावनाओनो अधिकार संपूर्णथयो॥ अनुषुब्र्र्य्तं॥ सर्व्रमध्यानसंध्यानहेतवः श्रीजिनेश्वरैः ॥ मैत्रीप्रजृतयः प्रोक्ताश्चतस्त्रो जावनाः पराः ॥ १ ॥ तथाढुः॥मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्य स्यानि नियोजयेत् ॥ धर्मध्यानमुपस्कर्तुं तदि तस्य रसायनं ॥ ए ॥ अर्थ ॥ हवे मैञ्यादिक चारनावनाओं नावेने श्रीतीर्धकरदेवें सत्यधर्मध्याननी धारानी हेतुनूत मैत्रीआदेदेइने बीजी चारजावनाओं कहीने ॥१॥ तेश्रीतीर्थंकरदेवें कहीने तेमज जावियेवैयें ! मंत्री श प्रमोद ३ कारुएय छने ४ माध्यरुष्य एचारजाव नाते धर्मध्यानना नूषणार्थे एटले धर्मध्याननी शोनानेझर्थे योजना करीयकी थ्या वनारने चारनावनायुक्त जे धर्म ते रसायन (छोषधी) तुव्य यायते ॥ २ ॥ **उपजाति**रुत्तं॥मैत्री परेषां हितचिंतनं यत् जवेत्प्रमोदो गुणपक्तपातः॥ कारुण्यमात्तंगिरुजां जिहीर्षेत्युपेक्तणं इष्टधियामुपेक्ता ॥ ३ ॥ सर्वत्र मैत्रीमुपकल्पयात्मन् चिंत्यों जगत्यत्र न कोपि दात्रुः ॥ कियदिन स्यायिनि जीविते ऽस्मिन् किं खिद्यते वैरिधिया परस्मिन् ॥ ४ ॥ सर्वेण्यमीबंधुतया ऽनुजूताः सहस्त्रशोऽस्मिन्जवता जवाब्धोे ॥ जी वास्ततो बंधव एव सर्वे न कोपि ते रात्ररिति प्रतीहि ॥ ए ॥ सर्वे पितमात्तपितव्यमात्यपुत्रांगजास्त्रीनगिनीस्नुपालं जी 11 वाः प्रपन्नाबहुरास्तदेतत्कुटुंबमेवेति परों न कश्चित् Ę अर्थ ॥ जे बीजानाहितनुं चिंतनकरवुं ते मैत्रीनावना जाणवी गुणीनो पक्तपा तकरवुं ते प्रमोदनावना जाणवी इखीप्राणीना इख इरकरवानी इज्ञाराखवी ते का रुत्यनावना डप्टबुदीवंत प्राणीठपर उपेकाकरवी ते उपेकलानावना ॥ ३ ॥ देखा त्मातुं सर्वत्र मैत्रीतापणुंकर एटले आजगतमां कोइपण महारो शत्रुले एहवो तुं ताहरा मनमां बीलकुल लावीसनदी केमके चोडादिवस रहेनारो अल्पमात्र ताह रो जीवतव्यपणुने तेमां बीजाउपर शत्रुबुद्धि राखीने सुं तृथा खिन्नथायने ॥ ४ ॥

えをえ

१६२

हेजीव आसंसारसमुइमां ए समस्तप्राणीसाथें इजारोवखत तें नाइपणो अनुन व्यो तेमाटे एसर्व ताहरा नाइआेजजे पण कोइ तहारो शत्रुनथी एवीरीतें तुंजाण ॥ ५ ॥ सर्वजीवो मात्र, संसारमां माता पिता बंधु काको पुत्र पुत्री स्त्री, बहेन ढोकरानीस्त्री इत्यादिकरीतें ताहरीसाथें होकडो वखत सगपण करीचुकाजे तेमाटे एसर्व ताहारो कुटुंबजजे पण एमांकोइ परकीयनथी एमविचारी सर्वजंतु उपर मैं त्रिता पणुं आदर ॥ ६ ॥

इंडवजारत्वदयं॥ एकेंडियाया छपि हंत जीवा. पंचेंडियलायधि गत्य सम्यक् ॥बोधि समाराध्य कदा लजंते जूयो जवश्रांतिजियां विरामं॥ ९ ॥या रागरोषादिरुजो जनानां ज्ञाम्यंतु वाक्काय मंनोडहस्ताः॥सर्वेप्यदासीनरसंरसंत सर्वत्र सर्वेसखिनोजवंत॥ढ॥

मनोडुहस्ताः॥सर्वेप्युदासीनरसंरसंतु सर्वत्र सर्वेसुखिनोज्जवंतु॥७॥ अर्थ ॥ फिरी हेजीव तुं एवो विचारकर के छा संसारमां जे एकेंडियादिक जीवोढे तेपण रूडाप्रकारें पचेंडियादिकपणु पामीने झानाराधनाकरी कोइकालेंप ण संसारमां नमवारूप नयनुं छंतकरसे एवुंजाणीने तेजीवोनी साथे पण मित्रता कर ॥ ७ ॥ वलीजे प्राणीछोने रागदेषादिरूप पीडा मन वचन कायाना छनयो गोनो डोहकरेढे तेसर्वप्राणी जदाशीनतापणुं पामीने सर्वलोक सुखीषाछो एवोमै त्रीपणुं तुं सर्वजीवो उपर राख ॥ ७ ॥

॥ अय त्रयोदराजावनाष्टकं देशाखरागेणगीयते रेजीवजिनधर्मकीजियें एवेशी ॥ विनय विचिंतय मित्रतां ॥ त्रिजगति जनतासु ॥ कर्मविचित्रतया गतिं विविधां गमितासु ॥वि० ॥ १ ॥ सर्वेते प्रियबांधवा नदि रिपुरिइ कोपि ॥ माकुरु कलिकलुषं मनो निजसुकृतविलोपि ॥ विन० ॥२॥ अर्थ ॥ देविनय आ त्रखलोकमां कर्मनी विचित्रतायेंकरी नानाप्रकारनी तिर्यं चादिक गतिओने पामेलाप्राणी जे डे तेसर्वप्राणीमात्रना समूदउपर तुं मित्र ताजाव राख केमके एसर्व ताहरा परमप्रिय बांधवजडे पण एमांकोइ तहारोशन्न नथी माटे फोकट मनने क्वेज्ञेकरी कलुपता मकर कारणके क्रोधजेडे ते तहारा पोतानाज पुखनो नाशकरनारोडे ॥ १ ॥ १ ॥ ए बेकाव्यनो अर्थएकठोडे. यदि कोपं कुरुते परो निजकर्मवद्योन ॥ अपि जवता किं जूयते इदि रोषवदान ॥ वि० ॥३॥ अनुचितमिह कलहं सतां ॥ त्यज समरसमीन ॥ जज विवेककलहंसतां॥ गुणपरिचयपीनावि०॥४॥ अर्थ ॥ माटे जो बीजोकोइ पोताना कर्माधीनपणाथकी ताहराजपर कोधकरे बे तो तुंपण तहाराहृदयमां तेनाजपर कोथ शावास्ते करेबे ॥ ३ ॥ अरेजीवतुं स मतारूप पाणीना तजावनुं मत्सथइने सत्पुरुषोने अयोग्य एहवुंजे कजह तेनेमू कीआप अनेगुणोनो परिचय करवाने पुष्टकारी एहवोजे विवेकरूप सरोवर तेमां रमण करवाने हंस जेवो था ॥ ४ ॥

रात्रुजनाः सुखिनः समे मत्सरमपहाय ॥ संतु गंतुमनसोप्यमी शिवसौख्यग्रहायाविणायासकदपि यदि समतालवं हृदयेन लि हंति ॥ विदितरसास्तत इह रतिं स्वत एव वहंति ॥ विण् ॥ ६॥

अर्थ ॥ हेजीवतुं समस्त शत्रुलोकोनी मंग्रलीचपर मत्सरतानावनो खागकरी ने परमसुखीया अने मोइन्रूप सुखना घरने जाएवाने ताहरुं मनकर ॥ ५ ॥ जोए कवारपए समताना लवनुं ताहरा हृदयमां आस्वादन करीस तो रसझयइने सम्य कचपर पोतानी मेलेज प्रीतिकरीस ॥ ६ ॥

किमुत कुमतमदमूर्वितां इरितेषु पतंति जिनवचनानि कयंह हा न रसाइपयंति॥विण॥ण परमात्मनि विमलात्मनां परिणम्य वसं तु ॥विनय समास्तपानतो जनता विलसंतु॥विणाठ॥इतिश्रीशांत सुधारसगेयकाव्ये मैत्रीजावनाविजावनोनाम त्रयोदद्याः प्रकाशः

अर्थ ॥ दे जीवतुं शावास्ते कुमतायेंकरी मूर्क्तियइने नरकमांपडेढे अने शांत रसचीज जरेला श्रीतीर्थकरदेवना वचनोनुं केम संरक्षण करतोनयी ॥ ९ ॥ निर्म लखंतःकरणवाला जीवोनामन परमात्माना स्वरूपनेविषेज परिणत यइ रहो अने लोकोनासमूह ते समतारूपी अमृतना पानेकरी विनयनो विलासपामो॥ ७॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये मैत्रीजावनाविजावनो नाम त्रयोदशः प्रकाशः

> स्नग्धरावृत्तं॥धन्यास्ते वीतरागाः क्तपकपयगतिकीणकर्मा परागास्त्रैलोक्ये गंधनागाः सहजसमुदितज्ञानजायद्विरा गाः॥अध्यारुह्यालगुध्या सकलग्रश्चिकलानिर्मलध्यानधा रामारान्मुक्तेः त्रपन्नाः कृतसुकृतग्रातोपार्जितार्हत्यलद्दमीं ॥र॥तेषां कर्मक्तयोत्थेरतनुगुणगणे निर्मलालस्वजावेर्गायं

गायं पुनीमस्तवनपरिणतैरष्टवर्णास्पदानि ॥धन्यां मन्ये र सज्ञा जगति जवतस्तोत्रवाणीरसज्ञामक्तां मन्ये तदन्यां वितयजनकथाकार्यमौखर्यमग्नां ॥ २ ॥ निर्ध्रथास्तेपि ध न्या गिरिगहनगुहागव्हरांतर्निविष्टा धर्मथ्यानावधानाः समरससुहिताः पद्धमासापवासाः ॥ येन्येपि ज्ञानवंतः श्रुतविततधियो दत्तधर्मोपदेशाः शांता दांता जिताक्ता जगति जिनपतेः शासनं जासयंति ॥ ३ ॥ दानं शीलं तपो ये विदधति ग्रहिणो जावनां जावयंति धर्मं धन्या श्र्वतुर्धा श्रुतसमुपचितश्रद्धया राधयंति ॥ साध्व्यः श्राध्य श्र धन्याः श्रुतविदशधिया शीलमुकावयंत्यस्ता न्सर्वान्

मुक्तगर्वाः त्रतिदिनमसकृ ज्ञाग्यजाजः स्तुवंति ॥ ४ ॥

श्वर्धे ॥ इवे प्रमोद नावना नावेळे रूपकश्रेणीना मार्गमां प्रवेशकरवाने कर्म रूपमलने जेणे झीणकखुंगे अने त्रणलोकमां गंधहस्तिसरखा खखनावमां रमण करनारा सहजडदयने पामेला केवलज्ञानेकरी जागृतघयुंने वैराग्यजेहनुं एहवा श्रीवीतराग एटले तीर्थकरनेधन्यने केमके जे आत्मग्रुदिकरीने पूर्ण चंड्कलास रिखी निर्मल जे ध्यानधारा तडूप अनंतपुखना समूहेंकरी संपादनकरेली तीर्थ करनीलक्सी तेनुं आराधनकरी मुक्तिनेप्राप्तथायने ॥ ? ॥ श्रीविनयविजयजी उपा ध्यायकदेने के हुं ते तीर्थंकरोना कर्मक्रुपथकी उत्पन्नथयाजे घणा गुणना समूह तेनी सुतिकरवाविषे जेइना परिणामहोयने एवा आत्माना निर्मलस्वनावें सहित तीर्थकरनी सुति करीकरीने वरएना आहरथानकोप्रतें पवित्रकरुं छने आ जग तमां तीर्थंकरोनी सुतिना रसने जाएनारी जिव्हाने धन्यमानुंहुं तेविना बीजीजे निष्फल लोकवाता अने कार्याना वाचालपणामां वर्त्तनारी जिव्हाने मूर्खतुव्य मानुतुं ॥ २ ॥ वली पर्वतमां अरण्यमां युफायुद्धिरमां निवासकरीने धर्मध्यान् उ पर एकायचित्त राखनारा तथा सम्यक्तरूप रसेकरी संतुष्टथयला वली पक्ष मास विगेरेना छपवास करनारा एदवा जे नियंधसाधु तेनेपण धन्यने तथा वली बी जाजे ज्ञानीपुरुषो शास्त्र उपर पसरेली बुदियेंकरी धर्मापदेशआपेने अने शांतगुणी दांतगुणी जितेंडि्य एहवा महापुरुष जे जगतमां प्रवर्त्तायका श्री तीर्थकरदेवना

राांतसुधारसः

शासनने प्रकाशितकरेजे तेनेपण धन्यजे ॥ ३ ॥ वलीजे गृहस्यावासमां रह्यायका पण सुपात्रने दानञ्चापेजे शीलपालेजे तपकरेजे जावनाञ्चो जावेजे तथा चारप्रका रें करी धर्मध्यानने आराधेजे अने पुष्टश्रद्धायें शास्त्रनुं आराधन करेजे तेनेपण धन्यजे वलीजे साध्वी तथा आविकाञ्चो शास्त्रयकी स्वरूथयली बुद्धियें शीलपाले जे तेनेपण धन्यजे एरीतें हे जाग्यवंत जव्यपुरुषो तमे सर्वथा गर्वमूकीने ए पूर्वोक्त समस्त उत्तमपुरुषोनी नित्यप्रतें निरंतर स्तुतिकरो के जेथकी तमारुं कव्याणयायाथा

उपजातिरुत्तं॥ मिथ्यादृशामप्युपकारसारं संतोषसत्यादिगुणत्रसा रं॥ वदान्यतावैन यकत्रकारं मार्गानुसारीत्यनुमोदयामः॥ ॥ ॥

अर्थ ॥ ए पूर्वोक्त सम्यक् दृष्टी जीवनी स्तुति करवी ते तो श्रेष्ठजडे परंतु अमें मिच्यादृष्टीनो पण उत्तम उपकार जाणीयेंडैयें कारणके जो तेमनो संतोप सत्या दिक गुणनो प्रसार तथा दातारपणुं अने विनयना प्रकार एटलावाना मार्गानुं सारीडे तो एद्द्वोजाणीने तेनीपण अनुमोदना करियेंडे ॥ ५ ॥

स्रग्धरावृत्तं॥ जिव्हे त्रव्ही जव तं सुरुतिसुचरितोचारणे सु त्रसन्ना जूयास्तामन्यकीर्तिश्रुतिरसिकतया मेऽय कणौं सुक णौं॥ वीद्यान्यत्रोढलद्दमीं द्रुतमुपचिनुतं लोचने रोचनतं संसारेऽस्मिन्नसारे फलमिति जवतां जन्मनो मुख्यमेव ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेजीवो जो तमे सरलग्ने अने पुल्पवान पुरुषोना पुल्पनो उच्चार कर वाने प्रसन्नग्नो एटजे आज अमारा कान बीजा पुल्पवान पुरुषोनी कीर्त्ति अवण ना रसिकपणे करी सुंकर्णरहो अने बीजानी प्रौढ ऐश्वर्यताजोइने अमारी चक्क प्रकाशपणाने धारणकरो एहवा जो तमारा विचारने तो आ संसारमां एज तमारा जन्म सफज पणानो सुख्य फलने ॥ ६ ॥

अपजातिरुत्तं ॥ प्रमोदमासाय गुणेः परेषां येषां मतिः सक्तति सा म्यसिंधो ॥ देदीप्यते तेषु मनःप्रसादे गुणास्तयेते विदादीनवंति॥ ॥ अर्थ ॥ बीजाना गुणो सांचली संतोषपामिने जेनीबुदि समतारसरूप समुइ थी संझग्नयायने तेप्राणीना मननो प्रसाद देदीप्यमान थायने तेमज तेना पोता ना गुण पण सर्व सन्न थायने ॥ ॥

शांतसुधारसः

॥ खय चतुर्रेश नावनाष्टकं टोडीरागेएगीयते क्रषजकीमेरेमनजगतिवशीरोएदेशी ॥ विनय विजावय गुणपरितोषं ॥ ध्रुवपदं ॥ निजसुकृता प्तवरेषु परेषु॥ परिंहर दूरं मत्सरदोषं ॥ विण 11 2 11 अर्थ ॥ देविनय तुं गुणीपुरुषनागुण उपर संतोष करवुं मनमालाव अने पो ताना पुख्यप्राप्तिनावखतें बीजांजपर मत्सरंकरवापणाना दोषने दूरकर ॥ १ ॥ दिष्ट्यायं वितरति बहुदानं वरमयमिह लजते बहुमानं ॥ किमिति न विम्हरासि परपरमागं ॥ यदिजजसि तत्सुकृतविजागं विणा १॥ अर्थ ॥ अमुक मनुष्य असंत दानआपेने एबहु कव्याणकारक कामकरेने अथ वा अमुकपुरुष अमुकस्थानके बहुमानपामेने एपर्णेषणुजरूमुंने एहवो रूडोविचार तुं केमकरतोनथी वेकाणेवेकाणे लोकोना गुणोत्कर्भ करवा एहिंज सुकृत विजागढे श येषां मन इह विगतविकारं ॥ ये विद्धति जुवि जगडपकारं ॥ तेषां वयमुचिताचरितानां ॥ नाम जपामो वारंवारं ॥ 3 11 अर्घ ॥ आ जगतमां जेना मननेविषे कोइप्रकारनो विकारनथी एटेजे निर्विका रीवता प्रथ्वीनेविषे लोकोनो उपकारकरेवे एहवा पवित्र सदाचारी पुरुषोना नाम झमें वारंवार जपियेंंडैयें ॥ ३ ॥ छहह तितिक्तागुणमसमानं ॥ पर्यत जगवति मुक्तिनिदानं॥ येन रुपा सह लसद्जिमानं ॥ ऊटिति विघटते कर्मवितानं ॥विण् ॥४॥ श्वर्थ ॥ जेनीबराबरी करवाने कोई समर्थनथी एहवो मुक्तिनुं कारणजे इसा गुण ते श्रीतीर्थंकरदेव नोजूत्र्यो के जेणेकरी कोधसहित छनिमानेकरी शोजना रो एहवोजे कर्मनो समूह ते तुरत नाज्ञपामेळे ॥ ४ ॥ **छद्धुः केचन इ**िलमुदारं ॥ ग्रहिणोपि परिहृतपरदारं ॥ यदा इह संत्रखपि शुचि तेषां ॥ विलसति फलिताफलसहकारं ॥ विणाय ॥ अर्थ ॥ जेगृहस्यो परस्वीनुं त्यागकरी महोटुं शीलव्रतपालेने ते हमणापण आ जगतमां पवित्र यशें फलीनूत थयाथका सफल आंबानां वृद्ध सरिखाशोभेने ॥५॥ या वनिता अपि यशसा साकं कुलयुगलं विदधति सुपताकं॥ तासां सुचरितसंचितराकं ॥ दर्शनमपि कृतसुकृतविपाकं॥विणाहा। अर्थ ॥ वेलीजे स्त्रीत्रोपण शील पालीने पोताना मावित्र तथा ससरा बन्ने कु

www.jainelibrary.org

लोने यशनी सुपताकके० ध्वजाकरेने एवीस्त्रीत्रोनो पुत्य परिपाके करी प्राप्तथ येलुं जेदर्शन ते पण पुत्यरूप धननुंज संपादकने ॥ ६ ॥

तालिकसालिकसुजनवतंसाः ॥ केचन युक्तिविवेचनहंसाः ॥ उप्रलम कृपत किल जुवनाजोगं ॥ स्मरणमनीपां कृतज्ञुजयोगं।:विणा ७ ॥

अर्थ ॥ खरेखरा सलगुणने धारणकरनारा सज्जनलोकोना मस्तकना नूषणस मान अने जेम दंस दूध तथापाणीनो विवेचनकरेळे तेनीपरें युक्तियेंकरी विवेचन नाकरनारा एडवा जे सर्वोत्कष्टप्राणीळे ते आ त्रणेच्चवनने शोनायमान करवाने तत्परळे तो तेवापुरुषोनुं स्मरणकरवुं ते पण ग्रुनयोगनो करनारथाय ॥ ९ ॥

इति परगुणपरिजावनसारं ॥ सफलय सततं निजमवतारं ॥ कुरु

सुविहितगुणनिधिगुणगानं॥विरचय द्यांतसुधारसपानं॥विणाता इति श्री शांतसुधारसगेयकाव्ये प्रमोदजावनाविजावनोनामचतुर्ददाः प्रकादाः अर्थ ॥ दे आत्मा एपूर्वोक्तरीतें परनागुणनो विचार करवुं एदिज जेमां सार बे एवुं आ तदारो पोतानो अवतार तेने तुं निरंतर परनागुणो स्मरणकरीने सफ लकर तथा ग्रुद्युणोना निधि एहवाजे मनुष्यो तेना गुणोनुं गायनकर अने शां तसुधारसनुं पानकर ॥ ७ ॥ इतिश्री शांतसुधारसगेयकाव्य प्रमोदनावना वि नावनो नाम चतुर्दशः प्रकाशः ॥

मालिनीयतं॥ प्रथममज्ञानपानप्राप्तिवांगविहस्ता स्तद्नु वस

नवेरमालंकतिव्ययचित्ताः ॥ परिणयनमपत्यावातिमिष्टेंडि

यार्थान्सततमजिलपतंः स्वस्थतां कारसुतीरन् ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इवे कारुएयजावना जावेळे प्रथमतो खशनपान प्राप्तिकरवानी इष्ठा यें व्याकुलययला तदनंतर वस्त्र घर छलंकार इत्यादिकोनी प्राप्ति करवाने विषे जे मनुंचित्त व्ययययुंळे तेवारपळि लयकरवानी इष्ठा तेपछि पुत्रपुत्री प्राप्त करवानी इष्ठा छने इंडि्यार्थजे पांचइंडि्योना त्रेवीस विषयोतेप्रतें इष्ठनार एद्दवाजे संसार वासी जीवो तेकेवीरीतें स्वस्थ याय ॥ १ ॥

शिखरिणीवृत्तं ॥ उपायानां लक्तेेः कथमपि समासाद्य विजवं जवा ज्यासात्तत्र ध्रुवमिति निवधाति हृदयं॥ अधाकरुमादस्मिन्विकिर ति रजः क्रुरहृदयो रिपु वी रोगो वा जयमुत जरा मृत्युरथवा॥श॥ अर्थ ॥ दे प्राणी तुंखा जगतमां लक्तावधि उपायोकरीने कोइपणरीतें ऐश्वर्य ता मेलवी जन्मोजन्मना अञ्ज्यासेंकरी तेद्दनाउपरज मनने स्थिर राखेढे पण एना उपरतो एथीअनंतर जे अकस्मातिक कूर इदयवंत शत्रु किंवा रोगप्राप्ति जय जरा अथवा मृत्यु एटलावाना धुलनाखेढे ॥ २ ॥

स्त्रग्धरावृत्तं ॥ रूपर्धते केपि केचिद्दधति हदि मिद्यो मत्सरं कोधदग्धा युध्यंते केरुप्यदा धनयुवतिपद्युक्तेत्रपदादिहेतोः॥ केचिद्धोजाद्धजंते विपदमनुपदं दूरदेद्यानटंतः ॥ किं कुर्मः

किं वदामो जूरामरतिरातैर्व्याकुलं विश्वमेतत् ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ कोइ कोधेकरी दग्धचयाथका देषकरेढे कोइ परस्पर हृदयमां मत्सर धरेढे केटलाक कोइना रुंध्यानढता खढंदपणे इव्य स्त्री पद्य खेत्र गाम इत्यादिको ने वास्ते लडेढे वली कोइक लोजेंकरी विपत्तिये जोगित चयाचका दूर देशांतरोमां रटन करीकरीने व्यामूढयायढे तो हवे सुं करियें खने सुं बोलियें छा जगत तो छाखंत शेकडा इःखेकरी व्याकुलढे ॥ ३ ॥

ठपजातितृतत्रयं ॥ स्वयं खनंतः स्वकरेण गर्तानमध्ये स्वयं तत्र य था पतंति ॥ तथा ततो निष्क्रमणं तु दूरे ऽधोदः प्रपाताधिरमंति नैव ॥ ४ ॥ प्रकल्पयन्नास्तिकतादिवादमिदं प्रमादं परिज्ञीलयंतः ॥ मन्ना निगोदादिषु दोषदग्धा छरंतछःखानि हहा सहंते ॥ ५ ॥ ज्ञाएवंति ये नैव हितोपदेशं न धर्मलेशं मनसा रुप्रशंति ॥ रुजः

कर्यंकारमयापनेयास्तेपामुपायस्तयमेक एव ॥ इ ॥ अर्थ ॥ प्राणीपोतें पोतानेदायें खाडोखोदीने तेमां एवीरीतें पडेढेके फरीकोइ प्रकारें तेमांथी नीकलवुंतो दूररख परंतु उलटो नीचेनीचें जइपडवुं तेनुं किवारे अंतज आवनार नथी एटलो उंडोखाडो खोदेढे ॥ ४ ॥ जे नास्तिकादिक वादक व्यीने प्रमादनो अन्यासकरनारा दोषेकरी दग्धथयीने निगोदादिकमां बुमारह्या थका जेनोआंत घणुंजमाठो एहवा महा क्वेशकारी इःखोने सोसेढे तो हाहा इतिखे दे एवात केटली खेदजरेलीढे ॥ ५ ॥ जेप्राणीहितोपदेश सांजजतोनथी अने धर्म बेहयाने तो मनेकरीपण स्पर्श करतोनथी तेप्राणीना इःखो सीरीते दूरकरीयें तेनो आ एकज उपायढे तेआगलना श्लोकमां कहेढे ॥ ६ ॥ शांतसुधारस.

च्प्रनुष्टुब्रतं ॥ परङःखप्रतीकारमेवं थ्यायंति ये हृदि ॥ लजंते निर्विकारं ते सुखमायतिसुंदरं ॥ ९ 1 अर्थ ॥ जेप्राणी पूर्वोक्तप्रकारें बीजाना इःखोनो प्रतीकार हृदयमां धरेने तेणे करी जेना परिणाम सुंदरेषाय हे तेने निर्विकारी सुख प्राप्तषाय ॥ ७ ॥ ॥ पंचदशनावनाष्टकं रामकुलीरागेण गीयते ॥ इमारो अंबरदेद्रमुरारी एदेशी ॥ सुजना जजत मुदा जगवंतं सुजनाजजत मुदा जगवंतं॥ ध्रुवपदं॥ रारणागतजनमिह निष्कारणकरुणावंतमवंतरे ॥ सुजण ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हेलकनो आ जगतमां कारणविना दयाना पालनारा अने जे पोताने शरणे आव्यो तेनीरक्ताना करनारा जे नगवंतने तेने तुमे दर्षेंकरी नजो ॥ १ ॥ क्रणमुपधाय मनः स्थिरतायां पिवत जिनागमसारं॥ का पथघटनाविकृतविचारं त्यजत कृतांतमसारं रे॥ सुजण ॥ १॥ अर्थ ॥ एकक्त्एामात्र पोतानो मनस्थिरकरी जैनागमना सारनुं पानकरो छने जे रूखोमां कुत्सित मार्गनी घटनायें करी आपणो विवेक विकारवंत आयते एवा असार निंदनिक रूखनो त्यागकरो ॥ २ ॥ परिहरणीयो गुरुरविवेकी श्वमयति यो मतिमंदं॥ सुगुरुवचः सकदपि परिपीतं प्रथयति परमानंदं रे ॥ सुजण् ॥ ३ ॥ अर्थ॥अविचारितगुरुनो संगमूको केमके जे गुरुओ मंदबुद्विवंत पुरुषोने चांति सहि त करेबे अने सुगुरुना वचनो जो एक वखत सांजव्या तोपणपरमानंद उत्पन्नकरेबे र कुमततमोजरमीलितनयनं किमु पृच्छत पंथानं॥ दधिबुध्या नर जलमंथन्यां किमु निद्धत मंथानं रे ॥ सुजण् ॥ ४ ॥ अर्थ । कुमतरूपी अंधारेकरी जेनी आंखोढकांइ गयलीने तेवाप्राणीने मोक् मार्गनो रस्तोसुं प्रववुं हेलोको तमे वहीनी बुद्धियें पाणीनेविषे मधनिकाने केम नाखोबो केमके ए पाणीमांथी कांइ माखण निकलवानुं नथी ॥ ४ ॥ ञ्जनिरुईं मन एव जनानां ॥ जनयति विविधातंकं ॥ सप दि सुखानि तंदेव विधत्ते॥ ज्यात्माराममर्शांकं रे ॥ सुजणाए॥ अर्थ ॥ पोतानुंमन पोताने खाधीन न राख्यो बता तेहिज पोताने नानाप्रकार

For Private & Personal Use Only

नाडःखो उत्पन्नकरेबे अने तेहिज मनपोताने खाधीन राख्योबता आत्मारामने निशंकपणे विविध प्रकारना सुखआपेबे ॥ ५ ॥

परिहरताश्रवविकयागोरेवं मदनमनादिवयस्यं ॥ क्रियतां सांवरसाप्तपदीनं ॥ ध्रुवमिदमेव रहस्यम् रे॥ सुज०॥ ६ ॥ अर्थ ॥ हे सज़नो तमे आश्रव अने विकथानुंजे गौरवपणुं तथा अनादिकालनुं मित्रजे कामदेव तेनी साथें मित्रतानो त्याग नाव करीने संवररूप सन्मित्रकरो ए हिज एक ग्रुत तत्वन्ने ॥ ६ ॥

सह्यत इह किं जवकांतारे॥ गदनिकुरंबमपारं ॥ इप्रनुस

रताहितजगडपकारं जिनपतिमगदंकारं रे ॥ सुज । ॥ छ ॥ अर्थ ॥ हेजीव आ संसाररूप अरख्यमां राग हेषादिक अपाररोगना समूहने तुं सोसेने तेनो त्यागकरी ने जगतना उपकार करनार अने संसारीजीवोने राग हेष मद मत्सर इत्यादिक रोगोनो निवारणकरी निरोगताना आपनार एह्वा श्री तीर्थकरदेवरूप औषधनी सेवनाकर ॥ ७ ॥

राणुतेकं विनयोदितवचनं नियतायतिहितरचनं ॥ रचयत सुकृत सुखरातसंधानं राांतसुधारसपानं रे ॥सुजणाठ॥ इति श्रीशांतसु

धारसंगेयकाव्ये कारुण्यज्ञावनाविज्ञावनो नाम पंचद्राः प्रकाराः॥ अर्थ ॥ माटेहे जव्यो विनयविजयजीना कहेला अयवा विनयेंकरीने कहेला आ पंथमांहेला वाक्यो तेने एक नियमें करी एटले तदाकार वृत्तियें करी बरावर ध्यानराखीने सांजलो ए वचनो सांजलवाथी उत्तरफलनी प्राप्तिथवाना कालनेविषे दित रंजनना करनाराढे एइवुंजाणीने ए वाक्यो ते एकनियमथी सांजलो॥ ण इति दित रंजनना करनाराढे एइवुंजाणीने ए वाक्यो ते एकनियमथी सांजलो॥ ण इति श्रीशांतसुधारस गेयकाव्ये कारुत्यज्ञावनाविजावनो नाम पंचद्शः प्रकाशः ॥ पंचापि शालिनीवृत्तानि॥श्रांता यस्मिन् विश्रमं संश्रयंते रुग्णाः प्री तिं यत्समासाद्य सद्यः॥ लज्यं रागदेपविद्वेपिरोधादौदासीन्यं सर्व दा तस्त्रियं नः॥ राालोके लोका जिन्नजिन्नस्वरूपा जिन्नेर्जिन्नैः कर्म जिर्मर्मजिन्निः॥ रम्यारम्येश्वेष्ठितैः कस्य कस्य तदिद्व जिस्तूयते रुप्यते

वा॥ २॥ मिथ्याशंसन्वीरतीर्धेश्वरेण रोडुं शोकें न स्वशिष्यो जमा लिः॥ अन्यः कोवा रोत्स्यते केन पापात्तरमादौदासीन्यमेवात्मनी शांतसुधारस.

नं॥ ३॥ ऋईतोपि प्राज्यशक्तिरपृशः किं धर्मोद्योगं कारयेयुः प्र सह्य॥ दद्युः शुद्धं किंतु धर्में।पदेशं यत्कुर्वाणा इस्तरं निस्तरंति॥४ तस्मादौदासीन्यपीयूषसारं वारंवारं हंत संतो जिहंतु ॥ छानंदा नामुत्तरंगतरंगैर्जीवर्बिर्यकुज्यते मुक्तिसोस्व्यं ॥ ८॥

श्वर्थ ॥ हवे सोलमी माध्यस्य नावना जावेळे जेमकोइप्राणीने आकचडेलो होयते प्राणी विश्रांतिनास्थानकें विश्रांतिलेगे तेमज जदासीनता जेगेते संसार रूप अरखमां जमलकरनारा प्राणीने विश्वांतिलेवानुं स्थानकढे अने जेनेजोड रोगीपुरुष तत्काल प्रीतिवंतथायने एटले गमेतेवा रोगेकरी पीडितदोय तथापि जेने उदासीनता पणुं प्राप्तथयुं तो तेने ते रोगनी व्याधि कांइपण जाणवामां न आवता उलटो हर्षवधेने वली जेनीप्राप्ति राग आने हेषरूप शत्रुनो रोधकरवाथी यायने एहवीजे उदासीनता ते अमोने सर्वकाल प्रियने ॥ १ ॥ आजगतमांना लोको ञ्चंतरना ञ्याशयेकरी मर्मनाजेदे जिन्नजिन्न कर्मेंकरी छने रम्यारम्य व्या पारेकरी जिन्नजिन्न स्वरूपवंतने पण बधाप्राणीनी एकप्ररुति तो नचीज तिवारें हवे विदानपुरुषे केनीकेनी रम्यारम्य चेष्ठा उपर संतुष्टथावुं किंवा रुष्टथावुं आर्था त् विदान पुरुषेतो सर्वप्राणी उपर संतुष्ट अथवा रुष्टनयता समदृष्टीज राखवी जलीने ॥ २ ॥ जुत्रोकेश्री वीरजगवान पोते तीर्थंकर तता मिथ्यासहित बोलना रो पोतानो शिष्य जमाली तेने रुंधीशक्यानही तो बीजो कोए कोइने पए पाप थकी रुंधीराखनारने माटे उदासीनपणुं राखवुंतेहीज आत्मानं हितकारीने एम जाणवुं ॥ ३ ॥ जुत्र्योके श्रीतीर्थंकरदेव अस्पंत शक्तिना धरनारहता तथापिते कोइने बलात्कारेंकरी धर्मोंद्योग करवाने प्रवर्तावताइता केसुं ते तो जेऐकिरी ज व्यपुरुषो इस्तर संसार समुइमांथी तरी पारपामे एहवो केवल ग्रुद्धर्मनोज उपदेश मात्र आपताहता ॥ ४ ॥ तेकारणे हेसत्पुरुषो तमेवारंवार हर्षेंसहित औदासीन्य तारूप सारचूत अमृतनो आस्वादनकरो के जेथकी जीव आनंदना वहेनारा मो जायेंकरी सहित मोइन्सुख जोगवे ॥ ५ ॥

॥ षोडशनावनाष्टकं प्रनातिरागेण गीयते ॥ आदरजीवक्तमागुणआदर ॥ एदेशी

ञ्छनुजव विनय सदासुखमनुजव ॥ ओदासीन्यमुदारं रे ॥ कु रालसमागममागमसारं ॥ कामितफलमंदारं रे ॥ छनु० ॥ १ ॥

शांतसुधारस.

परिहर परचिंतापरिवारं ॥ चिंतय निजमविकारं रे ॥ वदति को पि चिनोति करीरं ॥ चिनुतेऽन्यः सहकारं रे ॥ च्प्रनुण ॥ १ ॥ अर्थ ॥ वली विशेषप्रकारें माण्यस्थपणुं नावेने हे विनयतुं सर्वकाल सुखनो अनुनवकर जेम वांढित पदार्थों आपवामां कब्पवृत्तमुख्यते तेम वांढित मोक्सु खनी पमाडनारी अने सर्वशास्त्रोमां महोटी सारजूत एहवीजे उदासीनता तेनुंज तुंसेवनकर ॥ १ ॥ अरेजीव तुं बीजा विकारीपदार्थोनी चिंतवनानो करावनारोजे ताइरो परिवार तेनोत्यागकर उपने पोताना अविकारि स्वरूपनुं चिंतनकर ॥ २ ॥ योपि न सहते हितमुपदेशं ॥ तडपरि माकुरु कोपं रे ॥ निष्फ लया किं परजनतत्वा ॥ कुरुषे निजसुखलोपं रे ॥ च्यनु० ३॥ सूत्र मपास्य जडा जापंते ॥ केचन मतमुत्सूत्रं रे ॥ किंकुर्मस्ते प रिहतपयसो यदि पीयंते मूत्रं रे ॥ ज्यनु० ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ जोपणकोइ हितकारी उपदेश सांजलतो नची तोपण तेनाउपर कोधक रीसनही निष्फल लोको उपर संतापकरी पोताना सुखनो लोपकांकरेने ॥ ३ ॥ केट लाक मूर्ख सूत्र खजीने बोलेने केटलाक उत्सूत्र नाषणकरेने एवीरीतना बोल नारा जोनिर्मलपाणीने मूकी लघुनीतनुं पान करवालागा तोतेने अमेसुंकरियें ॥ ४ ॥ पर्यति किंन मनःपरिणामं निजनिजगत्यनुसारं रे॥ येन जनेन यथा जवितव्यं तज्जवता इर्वारं रे ॥ अनु० ॥ ५ ॥ रमय हदा हृदयंगमसमतां ॥ संदृणु मायाजालं रे ॥ दृष्टा वहसि पुजलपरवद्यातामायुःपरिमितकालं रे॥ छनुणा ६ ॥ अर्थ ॥ देजीव पोतपोतानी गत्यनुसारें सर्वजीवोनामननो परिणाम जूदोजूदो डे तेतुं केमजोतोनथी केमके जेप्राणीने जेवी जवितव्यताढे तेना मननो परिणाम पण तेह्वोजने तो ते तहाराथी ड्वारने एटले तहाराथी वारीशकाय तेमनथी॥५॥ माटे हृदयने आनंद आपनारीएवीजे समतातेने मनमां धारणकरी आनंदनेपाम श्वने मायाजालने त्यागकर व्यर्थ पुजलने परवश कांचायने केमके तहारोआयुष प रिमितकालने एटले प्रमाणसहितने तेनेत्रूटतां वारलागसेनही ॥ ६ ॥ ञ्यनुपमतीर्थमिदं स्मर चेतनमंतस्थितमजिरामंरे॥ चिरंजीव विश दपरिणामं ॥ लजसे सुखमविरामं रे ॥ अनु० ॥ १॥ परब्रह्मपरि

णामनिदानं ॥ स्फुटकेवलविज्ञानं रे ॥ विरचय विनय विवेचित ज्ञानं ॥ शांतसुधारसपानं रे ॥ छनुण ॥७ ॥ इतिश्री शांतसुधार स गेयकाव्ये माध्यस्थ्यजावनाविजावनो नाम षोम्हाः प्रकाशाः ॥

अर्थ ॥ देनव्यो तमे मनमां रदेनारुं आनंदनुं कारण एदवुं अनोपम उदा सीनपणारूप तीर्थनुं स्मरणकरो अने जे कोइकालेंपण विराम पामतानथी एदवा मोइत्सुखपामि चिरकाल खडापरिणामेरदो ॥ ९ ॥ अने परब्रह्मतारूप परिणामोनुं जे निदान तडूप विज्ञानने जे प्रगटकरेजे एदवुं विवेचननुंकरनारुंजेमां ज्ञान जे एदवा शांतसुधारसनुं पान ते दे विनयतुं निरंतरकर ॥ ७ ॥ इति श्रीशांतसुधार स गेयकाव्यमाध्यस्थ्यजावना विजावनोनाम षोडशः प्रकाशः ॥

स्त्रग्धराग्टत्त इयं ॥ एवं सजावनाजिः सुरजितहृदयाः संज्ञायाती तगीतोन्नीतरूफीतालतत्त्वारूत्वरितमपसरन्मोइनिजाममत्त्वाः ॥ गत्त्वा सत्त्वा ममत्त्वातिज्ञायमनुपमां चक्रिज्ञाक्राधिकानां सौख्या नां मंक्तु लह्दमीं परिचितविनयाः रूफारकीर्त्तिं श्रयंते ॥ १ ॥ इर्ध्यानप्रेतपीमा प्रजवति न मनाक् काचिद्दंदसौख्यरूफा तिः प्रीणाति चित्तं प्रसरति परितः सौख्यसौहित्यसिंधुः ॥ क्तीयंते रागरोषप्रजृतिरिपुज्ञटाः सिद्धिसाम्वाज्यलह्दमीः स्याघ ज्या यन्महिम्ना विनयज्जुचिधियो जावनास्ताः श्रयध्वं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे श्रीविनयविजयजी उपाध्याय आग्रंथ समाप्तकरीने उपदेशरूप पोताना आनिप्रायनुं कथनकरेळे. आवीरीतें पूर्वोक्तप्रकारें सज्जावनाओनी सुगंधियें जेनाहृदयमां संशयरहित गायनकरवाथी तार्किककखुंळे स्पष्ट आत्मतत्वजेणे अने जे ना मोह निइा अने ममत्व तुरत नाशपाम्या ळे एवाप्राणी ममतानुं अतिशय पणुं मूकीने चक्रवर्तिं तथा इंडादिकोनासुखोथकी पण अधिक एवा विनयधरनारा अ नुपम सुखोनी पुष्कल कीर्त्तिवंत लक्क्मीने पामेळे ॥ १ ॥ जेहना महिमायेंकरी डर्थ्यानरूप प्रेतनीपीडा लगारमात्रपण थातीनची पण कोइएक अपूर्व अदं ६ सौ ख्यनी वृदिधायळे अने चित्तप्रीतिवंतयायळे अने आत्माने चारे बाजुयी सौख्य त तिनी नदीपसरेजे वली रागदेषरूपशञ्च इरीणधइजायळे सिदिरूप साम्राज्यलक्क्मी

वशयायने एड्वीजे नावनात्र्यो तेने हे नव्य लोको तमारी विनर्येकरी पवित्रबु दियइढता ते नावनाओनुं आश्रयकरो ॥ २ ॥ पथ्यारृतं ॥ श्रीहीरविजयसूरीश्वरज्ञिष्यौ सोदरावजूतां हो।। श्रीसोमविजयवाचकवाचकवरकीर्तिविजयाख्यो॥३॥ अर्थ ॥ श्रीहीरविजय सूरीश्वरना शिष्यवेनाइहता तेमां एक सोमविजयवाच क अने बीजा कीर्त्तिविजयवाचक॥ ३॥ गीति इयं ॥ तत्र च कीर्तिविजयवाचकशिष्योपाध्यायविनय विजयेन॥शांतसुधारसनामा संदृष्टो जावनात्रबोधो ऽयं॥४ शिखिनयनसिंधु शशिमितवर्षे हर्पेण गंधपुरनगरे ॥ श्री विजयप्रजसूरिप्रसादतो यत्न एष सफलो ऽजूत् ॥ ॥ अर्थ॥ तेमां कीर्त्तिवजय वाचकना शिष्य श्रीविनयविजयजी उपाध्याय तेऐ आ शांतसुधारस नामा जावनानो प्रबोधकस्त्रो ॥ ४ ॥ आ प्रयत्न संवत सतरसोने त्रेवीलना वर्षे श्रीगांधार नगरमां श्रीविजयप्रनसूरिना प्रसादथकी दुर्षसदित सफलयुर्धु ॥ ए ॥ **उपजाति**रुत्तं ॥ यथा विधुः षोडराजिः कलाजिः संपूर्णतामेत्य जग त्पुनीते॥ यंथस्तथा षोडरां जिः त्रकाशैरयं समंधैः शिवमातनोतु॥ ६॥ अर्थ ॥ जेम चंड्मा सोलेकलाये पूर्णतापामी जगतने पवित्रकरेले तेम छा यंथपण सोलकलारूप सोलप्रकाज़ेंकरी जगतनुं कल्याणकरोएवो महारोत्राज्ञीवदिने द इंड्वजारटतं ॥ यावजगत्येष सहस्त्रजानुः पीयूषजानुश्च सदोद्ये ते ॥ तावत्सतामेतदपि अमोदं ज्योतिः स्फुर हाङ्मयमातनोतु॥ ९॥ अर्थे ॥ जेकालपर्यंत जगतमां चंइसूर्य उगेने तिहांसुधी जेमांप्रकाशमान वा ए। मयरूप ज्योतिने एहवो आ शास्त्र ते सत्पुरुषोने आनंद आपो ॥ ९ ॥ इति श्रीमन्महोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजयगणिशिष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणिविरचिते शांतसुधारसयंथे पोर्मशः प्रकाशोऽर्थस हितः समाप्तिमगमत्.

198

॥ ज्यय श्रीजिनप्रजसूरिकृतचतुर्बिंशतिजिनस्तवनं ॥

पात्वादिदेवो दशकब्पवृद्धा यस्मादधीत्येहितदानविद्याम् ॥ अप्रुपुजन् यच्चरणौ नखाजिव्याजेन नूनं नवपछवैः स्वैः ॥ १ ॥ गत्या विजित्य दिरदं स्वसेवां चिन्ह ज्ञलाज्ञश्वदचीकरचः ॥ यस्योदये हव्यज्ञजा नृणां वो बनूव नूमा जुवि सोऽजि तोऽव्यात् ॥ २ ।' सद्यः स जिद्याझवसंनवं वः श्रीशंनवो यस्य पितुर्जितारेः ॥ रा जाधिराजलजुषोपि सेनापतित्वमेवानिमतं बतानूत् ॥ ३ ॥ जातोपि यः संवरतः खयं यदजीजनत् संवरमझुतं तत् ॥ स कीशकेतुर्जितमीनकेतुर्जितोऽनिनंद्यादनिनं दनो वः ॥ ४ ॥ सुर्ङ्लजं मेघनवस्य यस्य सुक्ताफलस्येव न दर्शनं कैः ॥ चंड्राव दातं सुमतिं तमार्याः सर्वश्रियामाश्रयमाश्रयध्वं ॥ ५ ॥ न चेजिवान् वक्रगतिं क दाचित् नचातिचारं सततं च सौम्य ॥ पद्मप्रजः शोएतनुप्रजोपि नव्यश्रिये को पि धरांगजन्मा ॥ ६ ॥ प्रथ्व्यां प्रसूतः सुमनोनिरच्यः सुपर्ऐकांतिर्बद्धकव्युपास्यः ॥ श्रेयःफलश्रीर्जयताडदयस्कंधः सुपार्श्वदुरपास्ततापः ॥ ७ ॥ चंइप्रजोऽव्यात् वपुरं ग्रजालैरालिंगितांगीजनता यदीयैः ॥ प्रसेननिर्वाणरमाविमुक्तकटाक्तलक्तरनंपितेव जाति ॥ ७ ॥ जावाहवे पुष्पशरं विजित्य नश्यध्वजं यो मकरं गृहीला ॥ आरोप यलक्षपदे ध्रुवं स खनृत्यतां मे सुविधिर्विधेयात् ॥ ७ ॥ पित्रंगदाइप्रशमेन जाव दाइप्रमाथेपि खज्ज खर्जांक ॥ अजिइापकर्नगतोपि विझान् यस्तं स्तुमः शीतलमज्ञ शीलं ॥ १० ॥ श्रेयान् श्रिये दौहदि मातृरुदात् गर्नस्थिते यत्र महाईतव्पात् ॥ डव्यैतरीइाक् प्रणनाशमोहराजाय पूत्कर्तुमिवाहितोत्थः ॥ ११ ॥ नव्यांगिनां यस्य रुचिप्रपंचेरंगानि चेतांसि च रंजितानि ॥ स वासुपूज्यो जगदेकपूज्यः संपूज्यतां नि र्जितडर्जयारिः ॥ १२ ॥ इमाजरं धर्तुमशिद्धितांकढलेन सेवां प्रतिपंद्य यस्मात् ॥ धंत्रे ततस्तं स किलादिकोलः कांपिव्यजन्मा विमलः स जीयात् ॥ १३ ॥ अनंत जिन्नंतुरनंतसौख्यप्रदोऽस्तु दोस्तंनितवैरिवारः ॥ यझांढनं इयेनमपि प्रदृश्य विश्व स्य नइपंत्यच वर्तिकौधाः ॥ १ ४॥ पापाडिनि६ जमुदीद्य दीप्रं यझक्णं जकिचिकीरु पेतः ॥ तद्वंशशंकी मुहुराजुलोके शक्तः स्वपाणिं स धिनोतु धर्मः ॥ र ५॥ अरातिरम्ये प्यनरातिरम्ये सन्नाजियोगेऽपि दढाजियोगे॥ चक्रे स्थिता यस्य सुखं जयश्रीः स पातु वः पंचमचक्रवर्ती ॥ १६ ॥ तागं ध्वजं यस्य तनौ विलोक्य तत्प्रेमतो हव्य छजा धुवं यः ॥ सर्वांगमालिंगिसुवर्णवर्णनाः सुपूरदंनात्स मुदेऽस्तु कुंषुः ॥१ ॥ सुदर्शना

ज्जात इति प्रसह्य बेदं व्यधायस्तमसः खवृत्तेः ॥ पितुः क्रमं पालयितुं किलासौ स्तान्नः कलासौष्टवरुक्तिनोरः ॥ १ ७ ॥ यस्य प्रिया नो विहितारिसोपासुड्रा नव द्यो न पपौ नदीनं ॥ निस्तारकात्मा नयमालयस्यो नव्यः श्रिये कुंजजवः स मझिः ॥ १ ए ॥ यस्यांग्रोचिःपटलं समंतात्प्रसृत्वरं चृंगकुलानिरामं ॥ उच्चाट्नध्यानमि वास साक्ताज्ञावदिशां नंदतु सुव्रतोऽसौं॥ २०ँ॥ यद्वोचनस्पर्दिविधेर्विदिला स्वं सापराधं जगदेकनाथः ॥ यो लक्सलझ्यान्नरणं श्रितो इाक् नीलोत्पलेनासु नमः स जूत्ये ॥ ११ ॥ य ६ ऋयोगात्सुनगं विदन् स्वं महाशयोत्पन्नतया कतङाः ॥ यं कं बुर दोंकमिषात्सिषेवे तं नेमिमप्येमि यछप्रकांडं ॥ ११ ॥ यद्देहदीप्तिं तुलितेंइनील प्रनां चिरं चारुनिजालयंतः ॥ नैमेल्यकोटिं घटयंति होष्टेः शिष्टा अनिष्टं स पिनषु पार्श्वः ॥ १३ ॥ प्राच्यं विमोच्यास्पदमुद्भवात्प्राक् स्थानांतरे रोपितवान् हरिर्यं ॥ प्राचीकसत्सजुणशालिनूयं यस्याधमस्यान्नमतां संवीरः ॥ १४ ॥ जयंति गर्नागम जन्मदीक्ता क्रानापवर्गीत्सववासराणि ॥ जैनानि नाकायितजूतलानि त्रैलोक्य लोकप्रमदप्रदानि ॥२५॥ यदाष्ठवांनः शिरसाऽनिवंद्य सुमेरुरदाऽजनि गोत्रमुख्यः॥ तीर्थाधिनायाः प्रथयंतु सेवाहेवाकिनां ते कुपथप्रमार्थं ॥ १६ ॥ कुवादिवक्राडि्गु हांतरान्न प्रयोगधूकालिरलं निरेतुं ॥ यस्मिस्तपत्यस्ततमःसमूहे श्रीवीरसिद्धांतरविः स जीयात् ॥ १९ ॥ व्यामोहनूपालवरं विजित्य तस्माडपानं तु सितातपत्रं ॥ य स्याः करे राजति पुंमरीकं सा नारती यज्ञतु वांतितं वः ॥ २०॥ इति जिनप्रनस् रिनिरीडिता जिनवराश्चतुरुत्तरविंशतिः ॥ नरतवर्षनवा चुवनेश्वराः स्वरससिदिसु खं वितरंतु नः ॥ २७ ॥ इति श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तवनं समाप्तम् ॥

Ć

॥ इति श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तवनं समाप्तम् ॥

www.jainelibrary.org

ञ्पास्तिक नास्तिक संवाद.

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

॥ अथ श्री आस्तिक तथा नास्तिकनो संवाद प्रारंजः ॥

१ नास्तिकः-आ जगत अने तेमांना पदार्थों सर्व ग्रून्यने; एने ससलानां शांगडां, आकाशनां फूल तथा वांजणीना एत्र वगेरे जे पदार्थोंनी त्रणे कालमां सिद ता थती नथी, तेवा पदार्थोंनी उपमा देवाय. कदाच तमे कहेशो के, जेम शशगुं गादिक देखातां नथी, तेम ए पदार्थों पण देखाया न जोइये, तेम तो नथी. जग ततो प्रत्यक्त देखायने; तेने ए उपमा केम देवाय; प्रत्यक्त प्रमाणवडे सिद्ध पदार्थ ने ग्रून्य केम कहेवाय? एनो उत्तर ए के, जे ए पदार्थोंने देखे ने, ते चमिष्ट ने. जे पुरुषने चम थवो होय, तेने एकनुं बीजुं नाशे; तेम तमने पण धयुं कहेवा शे. तमे ए दृष्टांतोनो मर्भ समजी शकता नथी, त्यारे तमारा ध्यानमां सहेज आ वे एवो बीजो दृष्टांत कहुं छुं ते सांजलो; आ जगत स्वप्तसमान ने. जेम स्वप्त अस त्य ने, तेम जगत पण असत्य ने. अने स्वप्तना पदार्थोंनी पते आ जगतना पदार्थो पण असत्य ने. जे देखाय ने ते स्वप्तनी पते चम मात्र ने; एमां संशय नथी.

आसिकः-अरे नासिक, हुं तने एटलुंज पुढुं हुं के तारा सिदांतनो कहेनार जीव डे के अजीव डे, एनो उत्तर ताराथी शुं देवाशे ? जीव अथवा अजीव कह्याविना चाल शेज नही. जो तुं कहीश के ते जमरूप डो, तो ते एक रीते व्यवहार दृष्टीए योग्य कहेवाशे खरुं, केम के जे पोते जमरूप होय तेने बधुं जमरूप जाशे. जो एम हो य तो अमारो कांई वांधो नथी; पण जो तारो सिदांती जमरूप ठरशे नही, तो जेवो ठरशे तेवा बीजा पदार्थों पण कबूल करवा पडशे; अने कबूल कखाविना चालनार नथी; केम के, बीछं बधुं जमरूप होय अने तारो सिदांतीज मात्र अजम होय एम संजवे नही. त्यारे एक, सिदांती ने एक सिदांत ए बे पदार्थ मानवा जोइये डे. ए बे पदार्थ जो तुं माने, तो जीव अने अजीवपणुं सिद घाय डे के नही! एवी रीते जगतमां पण घटपटादिक जे वस्तु डे ते वस्तुज डे अवस्तु नथी. तेमज घट ते घट डे, ने पट ते पट डे. घट पट नथी, ने पट घट नथी. एक पदार्थमां बीजा पदार्थनो अनाव होय डे, पण घट घटपणे जावरूप होय ते सत्यज होय डे. ए रीतें आजत नावरूप होवाथी सत्य डे. केम के सर्व वस्तु पोतपोताना रू पें अनादि सिद्ध हे, अने जेनो अंत नथी तेने शशलाना शिंगडां प्रमुखनी उपमा देवी ए केवी मूर्खता हे वारु ! माटे ए बोलवुं बालकना जेवुं कहेवाय.

जो खप्तजेवुं जगत मानशो, तो तमारा पोताने महोडे पोते बंधाशो. खप्न जे बे ते स्वप्नपणे नावरूप वे अने जायतपणे अनावरूप वे; तेम जागृत जे वे ते जागृतपणे नावरूप ने अने खन्नपणे अनावरूपने: पण केवल अनावरूपें कोई पदार्थ कहेवाय नही ज्यारे खन्नजावरूप हे खारे तेना जेवो जे जगत तमे कहोहो ते केम अजावरूप कहेवाय, अने स्वप्नने जो अजावरूप कहेशो तो देखाय ने केम ? जे अजावरूप ते तो दे खाय नही; अने स्वप्न तो रात्रे दीठुं ते रात्रे दीठुंकहेवायळे.अने दिवसें दीठुं तेदीवसें दी हुं कहेवाय हे: माटे जे वखते स्वन्न देखाय हे ते वखते ते देखावारूपे अने संप्राप्तरूपें स ख हे. अने जागृत असला हे. तेमज ज्यारे जागृत देखाय हे लारे साप्त असलाहे एम नावानावरूप पदार्थ होय ते साद्यंत होय हे. वली विशेष एवुं समजवुं जोइ ये जे के, यद्यपि स्वन्न तो साद्यंत जे पए स्वन्ननो जे विकल्प जे ते आद्यंतरहित शा श्वत हे. तेमांथी कोईक समये स्वन्न उझव थाय हे. माटे स्वन्ननुं देखवुं कोई काले हे तेमज यद्यपि जगतमांना पदार्थोने पलटवापणे उत्पाद व्ययनी श्रपेक्तायें पर्यायप णे सायंत हे. तथापि इव्यरूपे सदा शाश्वत धुव हे. केमके पर्यायपणे धर्म, अधर्म, आकाश, काल, जीव अने पुजल ए ढए इव्य शाश्वत हे: जो पण हेला त्रण इव्यना पर्याय उपशाश्वत कहेवाय हे, तो पण स्वरूपें इव्यपर्याय सदा शाश्वतज बे: तेने असख केम कहेवाय ?

अरे चमिष्ट, तमे जीवने मानो गो के नही? जो ना कहेशो तो या बोखे गे ते कोण गे? अने जगत असत्य कोण तेरावे गे? जे पोतेज असत्य होय ते बीजाने गं सत्यासत्य कहेवानोगे? जे पोतेसत्य होय ते बीजाने सत्य अथवा असत्य कहेवाने समर्थ थाय. माटे जीव पदार्थ नथीज एम जो कहेशो तो तमे पोतेज काईक पदार्थ गो ए वात तमाराथी ना कहेवाशे नही. अने जगतने असत्य मानो गो तेवारे तमें पोते तो सत्य वरशोज; केमके जे पोताथी अतिरिक्त वस्तुने असत्य माने ते पोते ते ना जेवो असत्य होतो नथी, किंतु तेनाकरतां विपरीत स्वजाववालो सत्य होयगे. ते नो आ प्रत्यक्त दाखलो गे के, जगतने तमे स्वप्नजेवुं गणोगो, त्यारे तमे पोते जागृत गो के नही ? केमके तमे पोते जागृत अवस्थामां न हो तो स्वप्नने स्वप्न कहो नही स्वप्नावस्थानो तमे पोते अनुज्जव करेलो गे, त्यारेज तेनाविषे कथन करी शको जो, ते मज जगतविषे पण तमे अनुनव करीने कथन करो ठो, तेथकी जगतथी जुढ़ा अ नुनव कर्त्ता ठो माटे जीव ठो.

अने जो जीव न होय तो गतागतनाग, जाव, जाषा, कार्य तथा कारण इत्यादिक विषयोनो अनुजव करवो, पांच इंडिओनो नियह करवो, त्रणयोगे शरीरनी चाल ना करवी इत्यादिक चेष्टा करनारो कोण छे? ए चेष्टा चेतन्य शक्तिथी थाय छे एथी चेतना लक्षणवान जीव जाणवो. ज्यारे शरीरमांथी चेतना नीकली जाय छे त्यारे चेष्टा थती दीठामां आवती नथी; माटे ते अजीव कहिये. एवी रीते जीव अने अजीव ए बन्ने पदार्थ छे एम सिद थाय छे.

सर्व वस्तुना बे प्रकार थाय छे, एक पद्दयने बीजो प्रतिपद्दय. जीव पद्दी छे छने अजीव प्रतिपद्दी छे अथवा अजीव पद्दी छे ने जीव प्रतिपद्दी छे. अर्थात् जीव तथा अजीव ए बे पदार्थों सदा शाश्वत अविनाशी छे, एवुं केवलीनुं वचन छे, ते अवइय मान्य करवुं जोये. दोढ्रा, खरी शीख ए मानजो, मनमां राखी जाव; सद्दहाए जिन वचननुं, करो धरी चित चाव. १

श नास्तिकः- जीव अने अजीव नही मननारा मूर्ख बे. केमके, जोव तो पांच महानूतोना संमेलनथी उत्पन्न थाय बे. ज्यारे पांच माहानूतोनुं प्रथककरण एटले जुडंथवापणुं थाय बे. त्यारे जीवनो नाश थाय बे ए वात साची बे.

आसिकः- पांच महानूतोथी तो तमारा मतप्रमाणे पांच छुदाछदा पदार्थोनी उत्पत्ति थाय छे. ते आप्रमाणेः- पृथ्वीथी अस्थि, जलयकी रुधिर, अग्नियकी जठ राग्नि, वायुथकी श्वासोथ्यास अने आकाशथको झून्यता थाय छे. ए बधाधी जीव तो छुदो छे, ते शाथकी जल्पन्न थायछे वारु ? चैतन्यने उत्पन्न करवानी शक्ति कया जूतमां छे ? चैतन्य कयानूतना अंसथकी जल्पन्न थयुं ? ते कहो. पांचे महा जूत पोते जड छे; ते चैतन्यने केम करी शकशे ? माटे ए पांच महाजूतवुं समेल न जोवनी जल्पत्ति करे छे एम तमे कथुं छे ते पण संजवे नही; केमके, संमेलन कोई एवो पदार्थ नथी के जेथी कोई पदार्थ छत्पन्न थई शके. माटे जीवनो जल्पन्न करनारो कोई नथी, पण ए तो अनादि पंच महाजूतचत्री छदोज छे. दोहा,जिनवच नामृत पान करि, पामो अमर स्वरूप; जीव अनादी अनुजवो, ए छे शीख अनूप. श ३ नास्तिकः- सर्व जाणे छे के जीव ते शाश्वत पदार्थ छे, तेनी छत्पत्ति केम संजवे ! ज्यारे छत्पत्ति कहेशो ल्यारे नाश पण थशे. अने चेतन तो उत्पत्ति त था नाश रहित है; तो चेतनलक्रणवंत जीवने जूतथी उपनो कहिये ते युक्त नथी केमके पांच महाजूतना खंलथी तो मात्र शरीरनी उत्पत्ति थाय है

आस्तिकः- ए वात पण कहिपत हे. यद्यपि जीवविषे तो तारा सारा विचार ज णाय हे, तथापि जहांग्रुधी जिनोक्त वचनजन्य ज्ञान नथी थयुं, तहांग्रुधी सर्व मि च्या हो. एक जीवने शाश्वत जाएयो तेथी हुं थयुं! कोई छजाएाना मुखयकी नव कार प्रमुख जेवा ताहृइय अङ्गरोनो अचानक उच्चार थाय तेथी ग्रुं तेने तेना फ लनी प्राप्ति थाय हे! तेम तें जीवने शाश्वत जाएयो तेथी ग्रुं सम्यक्त झानवान क हेवारो ! कदी नही छने शरीर पंच महानूतोथकी उत्पन्न थाय हे; एवुं जे तें कहां ते असत्य हे. शरीरनी उत्पत्ति तो पुजलयकी थाय हे. बीजा संवादमां अस्थ्या दिकनी उत्पत्ति महानूतथी कही ने ते पए मिथ्याने केमके, अस्थि जे ने ते प्रथ्वी नो छंश नथी, पण प्रथ्वीना जेवा करण हे: रुधीर हे तेजलनो छंस नथी, पण जल नी पठे प्रवाही बिंडधारा याय हे: ज़ुरामि जे हे ते खन्निनो खंश नथी, पण अमीनीप वे उक्त हे, शाश्वोश्वास जे हे ते वायुनो छंश नथी, पण वायुनी पवे पुरुषनो विका र हे: आकाश ते आकाश नाजन हे. तेम हतां शरीर पंचमहानूतोथकी उत्पन्न थाय वे एम कहेशो तो ए पंचमहानूतोमांना पृथ्वी, अप, तेज अने वायु ए नां शरीर शाथकी जत्पन्न थाय हे ? ए प्रथ्व्यादिकपण जीवरूप हे: अने तेओ शरीर सहित हे. जेम काची माटी सजीवन हे माटेज तेमां वनस्पति उगे हे; अने जे हार जूजि अजीव हे तेमां वनस्पति उत्पन्न थती नथी. तेमज ए पंच महाजूत ते सर्व सजीव तथा निर्जीव ए बन्ने रूपें हे, माटे जो जगत उपजवानां कारणे ए पांच महानूतने कहेशो तो पांचमहानूत शाथकी पेदा थया कहेशो ? माटे एनाथी शरीर अथवा जगतनी उत्पत्ति संनवे नहीं. जीव अने जड ए बन्ने पदार्थों थी जग तनी प्रवर्ति वे एम जाणवुं. दोहा, आगम अगम अगाधकत, ज्ञान लह्यो नर जे ह; बेशि वचन जिनकब्पतरु, लहे चाह फल तेह. ३

४ नास्तिकः-- जीव तो ईश्वरना छंशयकी उत्पन्न यायने एम जणाय ने. छास्तिकः-- जो ईश्वरना छंशयकी जीव याय ने तो ईश्वर पोते छाखंम रूप ने

आसिकः-- जो इश्वरना अशयक। जाव याय ब तो इश्वर पति अखम रूप ब ते घटघटप्रते खंडखंड जावने पामझे. ईश्वर निर्जेप बे तो कर्मखेप सहित केमथाय बे ? जन्मरोग जरारोग अने मरणरोग रहित बे ते जन्मादिक सहित केमथाय बे ? नि रावरण बे ते सावरण केम थाय बे ? एहवो मूढतो जगतमां कोई नथी जे प्रधानपद मूकी अधमपद आदरे ! माटे परमेश्वरने एवी बुद्धि केम थई जे परमेश्वरपद सूकी ने जगत वाशी जीव थयों. केमके सर्व मतमतांतर वाला परमपदनी वांग्रनाये पो तपोताना मार्गनी किया करे गे. पोताना आत्माने निर्जेपपछं चाहे गे तो खमेव ईश्वरपद जन्म जरा मरण रहितपणुं पामीने वली जन्ममरण सहित उपाधिपणुं केमआदरे गे? माटे ए तमारा वचन विरुद्ध जणाय गे.

५ नास्तिकः-- कांई नवी युक्ति कहाडीने बोखे छे. आ बीजाओनी मति तो मारी गई छे माटे गमे तेम बके छे. जीवने कोई शाश्वत कहे छे, ने कोई छशाश्वत कहे छे. वगैरे जेना मनमां जेम आवे छे ते तेम महोडेथी बोखे छे. पण मर्म कोई जाणतो नथी आपणे प्रत्यक्त अनुनव करेखुं छे ने आंखे देखीए छैए के जीव पदार्थ उत्प त्रिवान छे, ने कोईक समये तेनो अंत पण आय छे. स्त्रीपुरुषनो संयोग थयाथी ते ओना रज तथा वीर्यथी माताना छदरनेविषे शरीररूप एक पिंम बंधाय छे, ने पढी नियमित समये तेमां चेतना शक्ति आवे छे, तेने जीव कहे छे. वजी शरीर कांई रो गादिकने वश मरण पामे छे, त्यारे जीव पण तेनी शाये नाश थाय छे, ए प्रत्यक्त वात छे. हाथना कांकणने आरीछं शासारु जोये. माटे जीव पदार्थ कोईकालें न यो पेदा थाय छे, तेथीजीवनी आदि छे एम जणाय छे.

आसिकः – नाई, तुं तो वली बधायी दाह्यो देखाय हे! चेतननी उत्पत्ति तथा नाश संजवे नही. कर्मना वशे जीवने जन्मांतर थाय हे, तेथी नवुं शरीर धारण करे हे; पण जीव नवुं यतुं नथी. वली शरीरनो नाश थयाथी जीवनो नाश पण थतो नथी. जीव तो बीजा शरीरने धारण करे हे. तेम हतां जो वधारे आयह करी श, तो आ मारा प्रश्ननो छत्तर आप हे, जीव कई वस्तु पलटीने तेमांथी उत्पन्न थाय हे ? अथवा कई वस्तुनो परिणाम हे ? केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थाय नही एवो नियम हे; एटजुं लमजाव्या हतां पण जो नही मानीश, तो तुं पोते जीव नथी पण जड हो एवुं हरहो. त्यारे जडनी साथे कोण माथाकूट करे !

६ नास्तिकः- कर्दाच जड वस्तुनो परिणाम जीव छने जीवनो परिणाम जड थाय बे, एम कहीए तो कांई दोष छावे के ? छाधटितघटनापटीयशी माया बे, ते मां बधु संजवे बे माटे छमे तो एम मानीए बेए के, जड वस्तु बदलीने तेथी जी वनी उत्पत्ति थाय बे.

छास्तिकः—जाई, ए तमारुं बोलवुं केवल छविचारनुं बे, एम तो कोई छज्जानी प ए माननार नथी जे जड वस्तुयी जीवनी जत्पत्ति घाय; एक खजाववाला पदार्थ थी बीजा खजाववाला पदार्थीनी जत्पत्ति घाय नही एवो नियम बे. जेम के, मा

रतर

टीना पिंमचकी पट थाय नही अने तंतुना पुंजचकी घट थाय नही. तेम छजीवची जीव उत्पन्न थाय नही अने जीवची छजीव उत्पन्न याय नही. जे अचेतन होय तेने जड कहे डे अने जे चेतन होय तेने जीव कहे डे. ए बन्ने पदार्थ परस्पर स्वजावे अमिलित डे, तेम डतां जड वस्तुचकी जीवनी उत्पत्ति कहेवी, एना जेवी बीजी मूर्ख ता कई डे ! ग्रुं कोईक एवो मसालो हज़े के जो ते जड वस्तुमां पडे तो तेमांची चेतन पेदा थाय ? एवी कांई चीज तमे जोधी कहाडी होय तो अमने देखमावो नी ! माटे ए छज्ञानरूप छंधारुं हृदयमांची कहाडी नाखो, ने ग्रुद्ध धर्मने छंगीकार करो. दोहा ग्रुद्ध धर्म जन जे लहे, ते पामे पद मोक्ट;प्रगट वस्तुने मूकिने, कां जन चमे परोक्ट ध ध नास्तिकः - स्वडंदीना जेवी मुखमुडा करीने बोलवा लाग्यो के, जीवने कर्म लागे डे के नही ? ए विषे विचार करवो जोइये. अमारा मतप्रमाणे जी वने कर्म लागतां नची.

ञ्चास्तिकः- तमे तो वर्ली बधाना शिरताज थया जणाञ्चो ढो ! पण कर्मविना कांई बनतुंज नथी; एम मान्याविना चालज्ञो नही. कर्मने तो सर्व अंगीकार करे बे, एमां कोई बांधों कहाडे एवुं नची। जो कर्म न होय तो पापपुष्पनुं फल चवुं न जोइये: ते तो प्रत्यक्त दींगमां आवे हे: जेरो पाप कखुं हे ते इंखी हे, ने जे ए प्रत्य कर्खु जे ते सुखी जे; वली जो एम होय तो, दान, ध्यान, स्नान त था पूजा प्रमुख जे सल्कर्म डे, ते सर्व मतवालाओ शासारु करे डे? तमारा क ह्याप्रमाणे तेनुं फल तो कांई थनार नथी: पण ते छन कर्म जाणीने लोको आ दरे हे. ज्यारे कर्म नथी त्यारे जन्म धारण करवानुं छं प्रयोजन हे ? माटे जो ज न्ममरण तथा सुखडःख वे, तो कर्म पण होवां जोइये. कर्म वे ते जीवने रज रूप हो. रागादिक यी बंधाय हो, ने जोगव्यापही हुटे हो. जहांलगि कर्म हे तहांल गि संसारी जीव कहेवाय हे, कर्मोंनो क्त्य खवायी मुक्त थयों कहेवाय हे. माटे तमारे निश्चय मानवुं जोइये ने के जीवने खवरय कर्म जागे ने. दोहा, कर्मथकी आ जीवने, सुख डॅंग्ख लघलां थाय; रूख ग्रुनाग्रुन जेहथी, शफल थया कहेवाय. ए नास्तिकः -- तमे कहो हो के, जीव जवांतर थकी आवीने आहिं उपजे हे. त्यारे एक जवनी वात बीजा जवमां केम करतो नथी? जो जवांतर होय तो ते नी स्मृति जरूर थवी जोइये: ते तो कोईने पए थती नथी. त्यारे जवांतर वे एम ज्ञाजपरथी समजाय ?

आस्तिकः--आगला नवनी स्मृति थती नथी ते उपरथी नवांतरनो अनाव हे ए

म जाणवुं नही. आगला जवनी वात तो रही, पण आ जवमांज मद्यादिक पदा र्थना योगे, गया दिवसनी वात पूछवाथी माणस बराबर कही शकतो नथी छ ओ के, कोई मनुष्य ताडनादिकना योगे मूठीवान थयो होय, कोई पुरुषे सुरापान कखुं होय, अथवा निडावश थयो होय, त्यारे गया दिवसनी स्ट्रति रहेती नथी; तेनुं कारण मद्यादिक पदार्थोंनुं आवरण छे तेम जीवने झानावरणी कर्मना उदयथी पूर्व जवना वातनी स्मृति थती नथी. वली जेम आ जवमांज माताना ज दरमां नाना प्रकारना डःख सहन करेला होय, ते वात जन्म्यापठी कांई कही शक तो नथी; तो जवांतरनी वात केम कही शके ? माटे जवांतरनी वात तो विशेष झा नीविना बीजो कोई जाणी शकेज नही, एम समजवुं. दोहा, झानावरणी कर्मथी ज वविस्मृति थइ जाय: विशेष झानी कहि शके, पूर्व जन्म महिमाय द

आसिकः-टुंकामांज समाधान करे हे के, यद्यपि जीवतुं वास्तविक खरूप शुद हे, तथापि शुनाशुन कर्मने योगे तेने लेप लागे हे; तेथीज जीव बंध कहेवाय हे अने जेने कर्मनो लेप नथी, ते मुक्त कहेवाय हे मुक्ति तो सिद्धता पाम्याविना संज वेनही अने जहांसुधी मुक्तिनो अजाव हे, तहांसुधी बंधनी कल्पना अवदय कर वी जोइये. ते बंध जीवने अनादि कालयी चाव्यो आवे हे. जेम धानने तूस ला गेलाज होय हे तेम जीवने कर्म अने कर्मजन्य शरीर लागेलुंज होय हे. जेम धा नने तूस लागवानुं कारण होतरां होय हे. तेम जीवने कर्मबंध लागवानुं का रण मिथ्याल तथा रागदेषादिक होय हे. जेम धान्यमांथी तूस तथा तत्संबंधी हो तरांरूप बंध हेतु पदार्थना अजावथी शुद्ध कण देखाय हे; तेम जीवमांधी मि थ्याल तथा राग देषादिक कर्मबंध हेतुनो अजाव ययाथी शुद्ध निर्मल थाय हे. जेम अनाजनो शुद्ध ययलुं दाणुं उगे नही. तेम जीवपण शुद्ध निर्मल थाय थी जन्ममरण पामे नही. दोहा, कर्म लेपना योगधी, बंध जीवने होय; कर्म खपे मुक्ती लहे, जन्म मरण नहि कोय. 9

१० नास्तिकः- छंमा विचारमां पडेला जेवी मुझाथी बोलवा लागे छे. कर्म पोते तो जड पदार्थ छे. तेश्रोनो जीवनी साथे स्वतंत्र संबंध संजवे नही. कोई पण प्रेरक होवो

जोये. माटे ईश्वरेन्नाची जीवने कर्म बंध याय हे; अने तेज प्रेरक हे एम जाएवुं. आस्तिकः- लगारेक हास्य करीने बोले हे. ईश्वरे पोताना अंशरूप जीवने जत्पन्न कस्वा ने तेथी जीव ईश्वरनो छंश कहेवाय, ए जपरथी जीव तथा ईश्वरनो छंशांशीनाव संबंध तमारा कहेवा प्रमाणे वरे हे. जो ईश्वर छंश हे एम मानीए,तो ईश्वरना जेवो जीव होवो जोये. केमके, अंशां अंशीमां जेद होतो नथी. तेथी ईश्वर नी पते जीव पए निर्मेज ढे, एम मानवुं जोये. खारे एवा निर्मलस्वरूपी जीवने कर्म लगाडीने मलसदित करवानुं कारण हुं इतु! आपरो कोई हु६ वस्तु वाप रवाने अर्थे ज्यारे लावीए वैये, त्यारे जहांसुधी बने तहांसुधी तेने मलीन करवा देता नथी: अने खड़ राखवानो घणो प्रयत्न कथा करीये हे. त्यारे पोताना अंश रूप जीवने जाएी जोईने मेल लगाडवुं ए ईश्वरनेविषे संनवे नहीं. एम तो कोई साधारण मूर्ख मनुष्य पण करे नहीं, त्यारे ईश्वर ते तेम करे! झने जे पोता ना छंगनो तिरस्कार छाथवा नाश करे ते आत्मघाती कहेवाय. तेम ईश्वरपण आत्मघाती कहेवारो. कदाच तमे एम कहेशो के, ईश्वर पोते पण कर्मकलंकसहित ने खारे जे पोते कलंकसहित होय, ते बीजानो कलंक छं मटाडी शकवानो हतो ! अने ते ईश्वर पण शानो ! माटे गमे तेवी मनकल्पना करीने निर्दाेषी ईश्वरने दोष लाग्र करवो ए केटली मूर्खता जे ! माटे ईश्वरनी इज्राष्ठी कांई पण थतुं नथी. जे याय ने ते कर्मची चाय ने एम जाएावुं. दोहा, कर्मबंध छा जीवने, ईश्वर इज्ञारूप; कहे एम ते मूर्ख हे, ईश अक्रीय अनूप. ज

११ नास्तिकः-छा जगतनी जे अञ्चत रचना देखाय हे, तेनो कर्त्ता कोई पए होवो जोये. केमके, एवी रुति खानाविक थई शके नहीं. तेम कर्मादिक जड पदार्थोथी पए जगतनी उत्पत्ति संजवे नहीं. माटे जे जगतने उत्पन्न करे हे, तेनेज ईश्वर कहिये; छने एवी लोकवदंता पए हे, के जगत सर्व ईश्वर रुख हे.

आस्तिकः-- जगतनो कर्त्ता ईश्वर होय, तो सर्व प्राणीमात्रनुं ईश्वर कारण थ युं. ने सर्व पदार्थो ईश्वरना कार्य थया. पिता जेम पुत्रनी उत्पत्ति करे ठे तेम ई श्वर सर्व प्राणी मात्रनी उत्पत्ति करे ठे. त्यारे ईश्वर पितारूप अने सर्व पदार्थो पुत्ररूप मानवा जोये. पुत्रनी उपर पितानो प्यार होय ए स्वानाविक सिद्ध ठे. तेम ईश्वर नो पण सर्वनी उपर प्यार होवो जोये. जो एम होय तो सर्व प्राणीमात्र सुखी होवा जोये. तेम तो दीठामां आवतुं नथी. कोई सुखी, कोई इःखी, कोई पापी, कोई पुल्पवान, कोई नरकगामी, तथा कोई स्वर्गगामी वगैरे सर्व जीवो

नी वर्त्तणुक छुदी छुदी दीठामां आवे हे. एम केम कीधुं हे ? वली जगतना जी वोने प्रवर्त्तावनारो ईश्वर हे, एम पण तमारा कह्या उपरथीज सिद्ध थाय हे. खारे हिंडए गायनी पूजा करवी, अने म्लेब्रे तेनो वध करवो, ए बुद्धि पए ईश्वरे आ पी कहेवाज़ो. जो एवी बुदि देनारो ईश्वर मानज्ञो नही, तो बीजो कोई मानवो जोइरो. केमके तमारा मत प्रमाणे प्रेरणा करनारो कोई जुदोज होय हे: अने जे प्रेरणा करे जे ते ईश्वर जे. त्यारे ते बीजो प्रेरणा करनारो ईश्वर मानवो पडज़े. ईवी रीते ईश्वरनो ईश्वर तेनो ईश्वर इत्यादिक मानशो तो अनवस्था दोष प्राप्त य गे. वली पोते पोताने इःखी कोई पण करतो नथी. सर्व पोताने सुखनी चाइना करे बे. तेमज पोताना संबंधी आविषे पण सुखनी चाहना करे बे. तमारा केहेवा प्रमाणे तो जे जीव नरके जाय हे तेपए ईश्वरनो छंश, छने जे स्वर्गे जायहे ते पए ईश्वर नोज अंश जे. एटजे सुखी तथा इःखी थाय ते सर्व ईश्वर पोतेज जे एम वखुं. ए प्रमाणे ईश्वर पोतेज संसारमां परिच्रमण करेते. ते पोताना सेवकनां जन्म मरणादिक इःख केम टाली शके! अने जीवोने नरकथी अथवा बीजी कुगतिथी केम बचावी शके? इत्यादिक विचार करतां जगतनो कर्त्ता ईश्वर नथी; किंतु स्वाजाविक सिद्धे दोहा, ज ग कर्त्ता ईश्वर कहे, ते विदान न होय: ईश्वरने कर्त्तव्यनहि, खनाव सिदज जोय. ए १२ नास्तिकः- जगतनी उत्पत्तिकर्त्ता जले ईश्वर न होय, एमां हुं कशो वांधो लेतो नथी. पण ईश्वर सर्वव्यापक ने के नही?

आसिकः- जो ईश्वर सर्वव्यापक होय, तो जीव शिवाय बीजो कोई पदार्थ ज होवो न जोये केमके, ईश्वरतो चेतनवंत डे; ते सर्वमां व्यापक होय, तो चेतना विना कोई जगा खाली न जोइये, के जे ठेकाणे बीजो पदार्थ रही शके; अने जगतमां तो जीव अजीव पदार्थों जुदा जुदा दीठामां आवे डे. एषी स्पष्ट सिद्ध थाय डे के, ईश्वर सर्व व्यापक नथी. वली बाह्मण, इन्त्रिय, वैद्य तथा ग्रूइ, ए चार वर्ण अनुक्रमे श्रेष्ठता तथा कनिष्टता केम पाम्या डे! जेम के, ब्राह्मण सर्वथी श्रेष्ठ, तेनाथी इन्त्रिय कनिष्ट, इन्त्रियथी वैद्य, अने वैदयर्थी ग्रूइ कनिष्ट डे, अने सर्वथी कनिष्ट चंमालादिक जाति डे; तेओमां श्रेष्ठ कनिष्टता न यवी जोइये. के मके, ईश्वर तो सर्वमां एक अने समान डे; तेमां उत्तम मध्यमता प्रमुख संजवे नही; अने उत्तम मध्यम तो प्रखद्द दीठामां आवे डे. वली बीजा पण छदाहर ण अनेक डे; जेम के, कोई पुरुष ग्रुत रुख करे डे, ने कोई पुरुष अग्रुन रुख कर रे डे,एम न अन्तुं जोइये. ईश्वर तो बधामां व्यापक डे, तेथी ग्रुनाग्रुन रुख शासा

२४

रु करे बे ? ए उपरची एवो निश्चय थाय बे के, ईश्वर सर्व व्यापक नथी. दोहा. व्याप क ईश्वर जे कहे, तेह न जाएो मर्म; जर्में जूव्या सर्व मत, विना एक जिनधर्म १० १३ नास्तिकः- ईश्वर सर्व व्यापक हो के न हो, तेनी साथे अमारे जरूर नथी; पए आ जगतनो अधिपति ईश्वर बे; अने जगतरूप तेनुं ऐश्वर्य बे; तेथीज ईश्व रताने पाम्यो बे. जे अश्वर्यवालो होय तेने ईश्वर कहिये.

आसिकः- जगततुं आधिपत्य लेवातुं ईश्वरने ग्रुं कारण हतुं! अने जगत रूप अश्वर्थ पण तेने शासारु जोइतुं हतुं! ग्रुं जगतनी उत्पत्तिनी पूर्वे ते अश्वर्य ने पाम्यो न हतो! ऐश्वर्थविना ईश्वरता संजवे नही. ए उपरथी जे जगतनी उत्प तिनी पूर्वे अनीश्वर हतो. ते उत्पत्ति करीने ईश्वरताने पाम्यो छे; एवो तमारो आशय जणाय छे नही वारु! पण ए बधुं खोटुं छे. ईश्वरनेविषे एवी कल्पना करवीज नही जोये. जुआ के, तमारा कहेवा प्रमाणेज जेम प्रजानी अपेहाये राजा कहेवाय छे, अथवा धननी अपेह्ताये धनाढध कहेवाय छे; तेम जगतनी अपेह्ताये ईश्वर कहेवाय छे. एटले जेवारे जगतने उपजावे तेवारे जगततुं ईश्वर पणुं कहिये; एषी जगतनी पूर्वे ईश्वर न हतो एम थयुं; अने जेवारे जगततुं ईश्वर पणुं कहिये; एषी जगतनी पूर्वे ईश्वर न हतो एम थयुं; अने जेवारे जगततुं ईश्वर पणुं कहिये; एषी जगतनी पूर्वे ईश्वर न हतो एम थयुं; अने जेवारे जगतनो प्रजय वाय त्यारे ईश्वर कहेवाय छे. एटले जेवारे जगतने उपजावे तेवारे जगततुं क्रिय पणुं कहिये; एषी जगतनी पूर्वे ईश्वर न हतो एम थयुं; अने जेवारे जगतनो प्रजय वाय त्यारे ईश्वरनो पण अनाव थई जवो जोये. जो ए वात कबूल करशो तो जे कोई कालमां होय ने कोई कालमां न होय ते इरणिक कहेवाशे. जो इणिक मानशो तो बीजा घणा दोष प्राप्त थरो; माटे ईश्वरने जगतनो एवी रीते अधिपति कहेवो ते योग्य नथी. दोहा, अधिपति जगनो जे कहे, ईश्वरने मतवादि ; ते एकांत कनिष्ट छे, उत्तम अनेक वादि. ११

र ध नास्तिकः - आटला संवाद थया, तेओमां ईश्वरनुं यथार्थ कारणपणुं कोइए कद्युं नथी. जगतनी उत्पत्तिनी पूर्वे ईश्वरने एवो संकल्प थयो के, मारुं सामर्थ्य प्रगट करुं; ए वात वेदमां कही ते. ते आवी रीतेः- 'एकोहं बहुष्यामि' एटले एक हुं बहु रूपे थाउं. एवा कारणथी जगतनी उत्पत्ति करी ते; तेथी ईश्व रने कारण कह्यो ते.

आस्तिकः-- पोतानुं सामर्थ्य प्रगट करवानी इज्ञा तो तेने थाय के, जेनेविषे अज्ञान होयः ईश्वरतो सर्वेङ छे, ते द्युं पोतानुं सामर्थ्य जाणतो नहोतो ! मा रामां केटलुं सामर्थ्य छे, एवो जेने संशय होय, ते ईश्वर शानो ! साधारण मनु ष्य प्राणी पण पोतानुं सामर्थ्य जाणी शके छे, तो ईश्वर केम न जाणी शके ! माटे एम कहेवुं ते मूर्खता बेः दोहा, निज समर्थने जाणवा, कखुं ईज्ञ जग एह; कारण वादी जे कहे, जतमूरख बे तेहः १२

रे ५ नास्तिकः -- ईश्वरे पोतानुं सामर्थ्य बताववा सारु जगतनी उत्पत्ति करी हे; एम जाणवुं जोइये

आसिकः-- कोने बताववा सारु जगतनी उत्पत्ति करी हे? जीव अने जड प पार्थों तो ईश्वरेज उत्पन्न कखा हे, एम तमे कहो हो. त्यारे बीजो कोए जगतनी पूर्वें हतो के, जेने देखाडवा सारु ईश्वरे आ जगतनी उत्पत्ति करी हे! माटे ए वात पए असत्य हे. दोहा, बीजाने देखाडवा, पोतानुं सामर्थ्य; जग उपजा व्युं ईश्वरे, एम कहे ते व्यर्थ. १३

र ६ नास्तिकः-जेम माएस सवारमां उठी वस्त्रादिक पहेरीने आरीसामां पोतानुं स्वरूप देखे छे; ते सारुं देखाय तो आनंदित याय छे, तेम ईश्वर पए पोते पोतानुं स्वरूप जोवासारु आ जगतरूप शृंगार करी पोतानुं रूप विस्तारीने देखे छे; एम जाएवुं जोइये.

आसिकः--माणस पोतानुं रूप आरीसामां जुवे हे, तेनुं कारण ए के, मारुं रूप सारुं देखाज्ञो नदी, तो लोको दाशी करज्ञे; अथवा कोई खोड काहाडज्ञे; तेम ईश्वरे बीजा कोना जयथी पोताना रूपनो विस्तार कखो हे? ईश्वरना जेवो बीजो ईश्वर कोई हे नदी; त्यारे जोनारो कोण ! माटे ए वात पण जूठी हे. दोहा, पोते जोवा आपने, रच्यो जगत आ ईश; कोना जयथी ते कहो, मतवादी तजि रीज्ञ. १४

१९ नास्तिकः-- 'एक एवहि जूतात्मा, जूते जूते व्यवस्थितः; एकधा बहुधा चेव, हर्रयंते जल चंडवत्'' एवी रीते आत्मा एक ढतां सर्व प्राणीमात्रमां जुदो जुदो दी ढामां आवे ढे; जेम चंड्मा एक ढतां अनेक जलस्थानकोमां प्रतिबिंब रूपे जुदो जुदो दीढामां आवे ढे; तेम ईश्वर एकज ढे पण घट घटमां जुदो जुदो देखाय ढे एटखे ईश्वर बिंब ढे ने सर्व जीव प्रतिबिंब ढे; एम जाणवुं.

आस्तिकः - जेम एक चंइमाना अनेक प्रतिबिंबो होय हे, ते जेवो चंइमां होय तेवा देखाय हे. तथा काचना छवनमां एक मनुष्य हतां अनेक प्रतिबिंब रूपे दीहामां आवे हे. तेमां मूल आरुतिथी छदी आरुति देखाती नथी. जेमके, बीजथी ते पूर्णिमाछाधी गमे तेवी चंइमानी आरुति होय, तेवो प्रतिबिंब देखाय हे; तथा काच छवनमां मनुष्यनी जेवी आरुति होय तेवीज तादृश्य दे खाय हे. काणो होय तो काणो देखाय, आंधलो होय तो आंधलो देखाय; वगैरे

आस्तिक नास्तिक संवाद.

बिंबना जेवोज प्रतिबिंब देखाय हे. तेम ईश्वर सर्व प्राणीश्रोमां सरखो देखातो नथी. कोई सुखी, कोई डुःखी, कोई पापी, कोई पुख्यवान यगैरे अनेक प्रकारे दे खाय हे. त्यारे ईश्वरना प्रतिबिंब केम संजवे ? जे प्रतिबिंब होय, ते बिंबना जेवोज होय हे? तेम तो ए नथी. वली जेम चंड्मानो उदय थतां प्रतिबिंब पण तेज व खते उत्पन्न थाय हे. अने चंड्मां अस्त थयाथी प्रतिबिंब पण मटी जाय हे. तेम ईश्वर अने जीवोनेविषे थतुं नथी. ईश्वर उत्पत्ति नाश रहित हे; तेम जीव पण होवा जोये. ईश्वर जेम अक्रिय हे, तेम जीव पण कर्मविना होवा जोये. जेवो बिंब तेवा प्रतिबिंब होवा जोये. तेम तो ईश्वर अने जीव नथी; माटे चंड्बिंब नो दृष्टांत सर्वथा असत्य हे; केमके सर्व जीव पोताना कर्मोंदयथी उत्तम मध्यम पणुं पामेहे. दोहा, बिंब अने प्रतिबिंबता, ईश्वर जीव प्रमान; चंड् बिंबवत ए नही, तेथी सत्थ न जान. १ ए

१ छ नास्तिकः- जीव वर्णादिके करी सहित हे; एम मानवुं जोये.

आस्तिकः- जीव वर्णादिके करी रहित जे, अने चेतन लक्त् एवंत ठे; अने कालुं, रातुं, नीलुं, पीलुं, तथा धोलुं ए पांच वर्ष; सुगंधि तथा डर्गध ए बे गंध; तीखुं, क डतुं, कशायलुं, खादुं तथा मीतुं ए पांच रस; शीत, जस, श्रिग्ध, लूखुं, करकश, मुड, युरु, तथा लघु ए आठ फरस; अने परिमंमल, व्रत, त्रयांश, चठरंस तथा आयतन ए संस्थान प्रमुख सर्व जड पदार्थना युएा ठे; ते चैतन्यमां नथी. चेतन नो आकार शरीरने आश्रये ठे. जेम पाणीनो आकार जलाशयथी जणाय ठे तेम चेतननो आकार पुज्लथी जणाय ठे.

१ए नास्तिक:- जीव कमोंने केम यहण करतो हरो वारु?

आसिकः - जेम वस्वना तंतु ते वस्वना अंश ठे; तेम जीवना प्रदेश ते जीव ना अंश ठे; जेम वस्वांतर्गत तंतुना सूक्ष तंतु ठे तेम जीवना पर्यायठे जेम वस्वनो वरण तेम जीवनुं सर्ज़क्तण ठे जेम वस्त्रने मेल लागवानुं कारण, तेमजीवने मिच्या खादिक हेतुये रागदेष आश्रवे कर्मरूप मेल जागवानुं कारण ठे. जेम वस्त्रनो मल टा लादिक हेतुये रागदेष आश्रवे कर्मरूप मेल जागवानुं कारण ठे. जेम वस्त्रनो मल टा लनार धोबी तेम पोताना अंतरनो मल टालनार आत्मा पोते ठे. जेम वस्त्रने साबुये करी मल टले ठे, तेम जीवने ग्रुनध्यानेकरी कर्मरूप मल टले ठे. जेम वस्त्रने आझि, तेम जीवने तपस्या ठे. इत्यादिक कस्त्राची कर्मनो क्य याय ठे जे जीव कर्म सहि त होय तेने कर्म लागे, पण कर्मरहित होय, तेने नवां कर्म लागे नही. जेम स्त्रका तनारी नाडी काते, तेमांची थोडी बाकी रहे, त्यारे तेनी साये बीजी वलगा डे, पण पहेली होयज नही, तो तेनीसाथे बीजो संबंध साथी करे! तेम जीव प ण अनादिनो कर्मसहित जे, अनादि जीवनुं एहवुंज खरूप चाखुं आवे जे; माटे जहांग्रुधी कर्म सहित जे तहांग्रुधी नवां कर्म पण यहण करे जे; पण प्रथमथी अमुक वखतेज जीव नवां कर्म यहण करी कर्ममल सहित थयो; एवी आदि नथी.

श्वाप पंपा पंपा प्रम प्रदूष गरी प्रमाश (गरा, प्रा पंपा, प्रा जाप पंपा) श० नास्तिकः--जीवने कर्म क्यारे लागां छे? कर्म लागवानी कोई पण आद जोयें जे पदार्थनो छंत यतो होय, तेनी आदि पण होबी जोये ज्ञाने करी क मोंनो छंत याय छे. एम तमेज कहो छो. त्यारे आद्य पण कबुल करवी पडरो; ते आदिनो समय कह्यो ठेरवशो? केम के, जीव प्रथम निर्मल होय तोज तेने कर्मरूप मल लाग्यो कहेवाय.

आस्तिकः--ए वचन दूषए सहित हे. केमके, जीव प्रथम ज्यारे निर्मेल हतो त्यारे तेने कर्म लागवाना परिएाम केम थया ? जे निर्मल होय ते पोताने मल सहित थवानी इज्ञा करे नही. तेम हतां जीवे कर्मोनी वांहा केम करी ? माटे जीव अनादिनो कर्म सहित हे. जीवनेविषे कर्म खनावे अनादिसिद हे. दोहा, आदि जीव निर्मल हतो, पहि वलग्यां हे कर्म; एम कहे ते ना लहे, जिन वच नोनो मर्म. १६

११ नास्तिकः--सर्वमां व्यापक आत्मा एक हे; अने शरीरो जुदां जुदां हे; एम मानुदुं जोइये.

आसिकः -- जो बधामां आत्मा एक होय तो माता. पिता. स्त्री, पुरुष, जाई, बेन, पुत्र, राजा, प्रजा, चोर, साहुकार, चंमाल, क्त्त्रिय, उंच, नीच, नरक, देव ता, पुत्पवान, तया पापी इत्यादिक जिन्न जिन्न केम देखाय छे ? सर्वमां आत्मा एक होवाथी तेज देखायुं जोइये; अने एके कीधेलुं पाप सर्वने लागवुं जोइये; ते मज एके कीधेला पुत्पना सर्व जागीदार यवा जोइये; एकना मुक्त थयायी सर्व मु क यवा जोइये; प्रत्येक माणसनुं छुईं छुईं अनुष्टान निष्फल यवुं जोइये; तेम तो यतुं नथी. जे करे छे ते जोगवे छे; ए कहेवत प्रमाणे बधा आत्मा जिन्न जिन्न दे खाय छे. माटे सर्वमां एक आत्मा व्यापकपणुं कहेवुं ते समीचीन नथी; एम जाणवुं. दोहा, आत्म सर्वमां एक छे, जिन्न जिन्न आ देह; एम कहे एकांत म त; आत्मत कहीजे तेह. १७

र् १२ नास्तिकः--सर्व कार्य अने खकार्य ईश्वरनी इज्ञारूप हे; अने ईश्वरनी इ ज्ञाथीज सर्व याय हे; एम जाएवुं जोइये,

आस्तिकः--जो एम होय, तो जन्म धारण करवामां मातापितानुं गुं काम बे ? अने विष खाधाथी मरण थाय बे, तेमां विषतुं सु वांक बे ? तेमज जो जनयी कुधानी निवृत्ति, पाणीयी तृषानी निवृत्ति, अग्नियी शीतनिवृत्ति, व ली तापर्यं खेदोत्पत्ति, वर्षांयी धान्योत्पत्ति, देपयी वैरोत्पत्ति, नम्रतायी स्नेहो त्पत्ति, चोरी कखायी ताडन, यारी थकी निर्लेझ, पापथकी नरक, पुख्यकी स्वर्ग, इत्यादि सर्व कारणो अने कार्यो व्यर्थ थरो. अने सर्व वसुत्र स्वग्रंण रहित कहेवी जोइशे. राग करनारो स्नेही नही, तेम देष करनारो वैरी नही कहेवाशे. उ पकार प्रति उपकार करवानी कांई जरूर रहेशे नहीं. अने पाप पुख फलरहित थशे. केम के, सर्व कार्य करवानुं मूल कारण एक ईश्वर इज्ञा अई; माटे सर्व ईश्व र इडारूप डे, एम कहेवुं ते समीचीन नथी. तमारा कहेवा प्रमाणे पुएय पापनुं कर्त्ता पए ईश्वर अने नोंका पए ईश्वर थयो. दोहा, ईश्वर इज्वारूप आ, कुख स र्व जगमांदि: एम कहे गुएता टले, सारासार न कांहि १ ज १३ नास्तिकः-- आत्मा पंच जूतो थकी थयो छे: ए वात असत्य नथी, किंतु साचो बे, एवं अमने जणाय बे. आस्तिकः - नूत शब्दनो अर्थ त्र े कालमां अस्तित्व याय हे. एटले जे हे हे ने जे, तेने जूत कहियें. जूतनो तो कोई काले जेद यतो नयी; माटे ए अस्तिलरूप नूतनो अंश तो संनवे नहीं; तेम आकाशादिक पंच महानूतनो अंश पण कही शकाय नही. वली पांच जुतना अंग्रे करी शरीरनी उत्पत्ति ज्याय हे, खारे ङ्गान अने चेतना कह्या अंशयी जत्पन्न थयां ? माटे जूत शब्द ए ज्रमजाल हे. ञने चिदानंद ज्ञानरूप आत्मा तो शाश्वत हे. ते कोई समये जूनो तथा नवो थतो नथी. ते जीव पूर्वेापार्जित कमें करी शरीर बांधे हे. ते जल पुद्गलनुं ग्रहण हे. तेमां जूतनुं काई प्रयोजन नथी; जूत केवी वस्तु ते ? जीव ते के जड ते ? रूपी ते के छरूपी जे ? ईश्वराश्रित जे के नवा प्रगट याय जे ? जता रूप जे. के संयोगे थाय जे ? ए विषे कांई विचार करी शकातो नथी; माटे नूत ए शब्दज व्यर्थ जे. ते नाथी जीवनी उत्पत्ति केम मनाय ! दोहा, जीव जपजे जूतथी, ए मत बे चम रूप: जीव चिदानँद सत्य हे, अनादि नाव अनूप. १ ए

श्ध नास्तिकः--तमारा कद्या प्रमाणे जीवने नवांतर थाय बे. नवनी प्राप्ति क मींडुसार बे. जेवां कर्में कस्यां होय तेवा नवनी प्राप्ति थाय बे. छन कर्मनुं फल सारो नव बे, खने अग्रुन कर्मनुं फल नरशो नव बे. तेवात सत्य बे, परंतु को ई जीवने एक खंडमां शरीर मूकीने बीजा खंममां बीज़ुं शरीर धारण करवुं पमे. तो एटलो दूर जतां तेने केटलो वखत लागतो इशे ! अने कोई जीवने एक श रीर मूकी तरत तेज गाममां उपजवुं होय, तेने कांई दूर जवुं पडतुं नथी, तेथी कांई वधारे वखत लागतो नही हशे, पण जेने दूर जवुं पडतुं हशे तेने रस्तामां चालता वधारे कखत लागतो हशे नी !

आसिकः – नजीक अथवा दूर जवांतर करवामां वधारे वखत लागतो नथी; सरखोज वखत लागे छे. जेम घाणी, रहेंटीओ अथवा बारणुं इत्यादिक ज्यारे फरे छे, त्यारे तेओना माहेला तथा बाहेरना जागने फरतां सरखोज वखत लागे छे. यद्यपि अंदरनो देत्र थोडो होय छे, ने बाहेरनो घणो होय छे; तथापि फरतां वखतमां वधघट यती तथी. वली जेम दीपकने शलगावीए ते क्ल्एमांज प्रकाश करेछे. वचमां काई अंतर पडतो नथी; तेम जे वखते एक जव मूके के लागलोज बीजो जव पामे छे; तेमां लगार पण अवकाश रहेतो नथी. ते जव पछी दूर देश धारण करवो होय, के नजीक देशमां धारण करवो होय, गमे खां जव धारण कर मांवामां वखतनो वार फेर यतो नथी.

१५ नास्तिकः-जीवने कर्म केवी रीते लागे हे.

आस्तिकः-आत्माना ग्राजाग्रज परिणामथी जीवने कर्म लागे छे. जो ग्राज परिणाम दोय, तो सारा कर्म लागे छे; अने अग्राज परिणाम दोय, तो नरशां कर्म लागे छे. अने तेनां फल पण तेवां थाय छे. कर्मने कांई ज्ञान नथी, जे आ जीवे पाप कखुं माटे हुं एने पापरूप कर्म थई लागुं.

श्द नास्तिकः-कर्म तो जड छे तेथी तेत्रोमां ज्ञान शक्ति नथी त्यारे जीवे नर शां अथवा सारां कर्मों कखाथी पाप अथवा पुत्यरूप परिणाम केम थाय छे ? ए परिणाम तो ज्ञानविना थाय नहीं। तेथी एवुं जणाय छे के कर्म जागवामां ईश्वर देतु छे कर्म करवापणुं जीवने छे; ने तेवुं फल देवुं ईश्वरने छे.

आसिकः-कर्म जागवामां ईश्वरनुं कांई काम नथी. कर्मीनो एवो खनावज बे के परिणामने पामनुं. जेम कोई पुरुष विषमिश्रित नोजन करे, ते मरण पामे बे मरनुं ए विषनो परिणाम बे; पण विष जम पदार्थ होवाथी तेने एनुं ज्ञान नथी के मने जे खाय बे, ते मरीजायबे; तेम बतां तेथी तेवो परिणाम थायबे के नही! वजी जेम कोई पुरुष मिष्ठान्न नोजन करे, तेथी पुष्ट थाय बे पण ते नोजन एम नथी जाणतुं के, माराथकी आ शरीरनी पुष्ठी थाय बे. तेम बतां तेनो परिणाम

1.61

तेवो याय ते. एतो एनो खनाव ते. तेम छुनाछुन कमोंने यद्यपि झान नथो, तोपण तेओनो एवो खनावज ते, के फलरूपे पोते परिणामने पामवुं. कमों नो एवो खनावज ते के छुन कछाथी पुष्पकर्म बंधाईने उत्तम गतिनी प्राप्ति थाय ते, तेमज छागुनविषे पण जाणी लेवुं. एवो कमोंनो छनत कालनो खनाव ते. वली जेम चमक पाहाण लोहने पोतानी तरफ खेंची लिये ते, तेवुं चमकने कांई पण झान नथी, के हुं लोहवुं छाकर्षण करूंडुं; परंतु ते किया खाजाविक थाय ते. तेम जीव ग्रुनाग्रुन परिणामना उपयोगे ग्रुनाग्रुन कर्म छाकर्षण करी छा त्मापणे लोलीजूत करे ते; एवो छनादि कालनो खजावज ते. एमां ईश्वरतुं कांई काम नथी.

१९ नास्तिकः- जीव एवो कोई पदार्थज नथी; बधुं ग्रून्यज वे. त्यारे ग्रुनाग्रुज कर्मो ते कोने लागवाना इता! ए बधो जर्म वे. जीव कोई वेज नही

आसिकः – नाई, तूं पाको बुदिनो देखाय बे. जीवनेज उराडी नाख्यो एटखे बधी खटपट चूकी गई के नही वारु ! अरे मूढमति विचार तो कर, के जो शरीरमां जीव न होय, तो शरीरनी चेष्टा केम थई शके ? शरीर तो जम बे, तेमां चेतन शकि न होय तो किया केम थाय ? जो आत्मा न होय तो आ शरीर, हाथ, पग, कान, नाक, जीज, आंख, मन, बुदि, धन, धान्य, राज्य, तथा संपत्ति प्रमुख सर्व पोताथी जुदा पदार्थामां शरीर मारुं बे, धन मारुं बे, वगैरे एवो बोजनार कोए बे ! मारुं बे, एवुं कहेनार पदार्थथी जुदो होय बे. एम तो कोई पए कहे तो नथी के हुं शरीर ढुं, हुं मन ढुं वगैरे, माटे शरीरादिक सर्व वस्तुनो निन्न व्य वहार होवाथी जीव बे एवुं वरे बे शरीरमांथी जीव नीकली गया पढी विचार करवुं, बोलवुं, तथा चालवुं वगैरे काई पए किया थई शकती नथी. तेथी शरीर यकी जीव जुदो कोईक बे एम नकी जाएजे. वली शरीरमां ज्यारे जीव बे त्यारे बोले बे, ने घट पटादिक पदार्थीमां जीव नथी त्यारे बोलता नथी. तेथी शरीर बोले बे, ने घट पटादिक पदार्थीमां जीव नथी त्यारे बोलता नथी. तेथी जीवड व्य ते शरीर थकी निन्न बे एवुं शिद धयुं. तेने बेज नही एम तुं केम माने बे ? जो जीव न होय तो व्यवहार केम चाले ? माटे जीव व्यवस्य बे एम जाएवुं. २० नासिकः – जीव समय समयनेविषे नवो थाय बे. हमेश एक जीव रहे

तो नथी.

आस्तिकः- ए वात तदन जूठी हे. जीवल नवुं कोई समये यतुंज नथी. जीवना पर्याय इव्य, देन्त्र, काल, जाव, तथा उदय जावाश्रित तो छुदा छुदा

Ŧ:

होय हे, पण जीवपणुं नवुं होतुं नथी. जीव समय समय प्रत्ये जो नवो थ तो होय, तो बालपणनी वात यौवनावस्थामां शांजलवी न जोये. तथा गत सम यतुं शांजलेलुं, दीतेलुं, नोगवेलुं, लीधेलु, तथा दीधेलुं प्रमुख कांई पण स्मरणमां आव्युं न जोये. तेनी स्मृति तो थाय हे. तेथी जीव तेहिज हे. जो जीव नवो यतो होय तो एक जीवनुं करेलुं कार्य बीजो जीव केम जाणी शके ? ए तो प्रसिद्ध वात हे. तेथी जीव इच्य सदा सरखुं हे; एमां कोई काले पण फेर पडतो नथी, एम जाणवुं.

१ए नास्तिकः- जीव जे नाना प्रकारनां कर्मों करे छे, तेखोनो करावनार ईश्वर छे. ईश्वरनी प्रेरणा विना जीव थकी कर्म थाय नही, एम जाणवुं.

आस्तिकः- जो जीवने कर्म ईश्वर करावतो होय, तो कर्मनो कर्त्ताज ईश्वर तरजो: केमके जे कीयानो प्रेरक होय हे, तेज कर्त्ता होय हे. जो ईश्वर कर्त्ता तेरा वद्यं तो जे कर्त्ता होय हे, तेज जोका होय हे. ए रीतथी ईश्वरने जोकापणुं पण आवज्ञे. नोका ईश्वर चयाची पापपुण्य ईश्वरनेज लागे हे, एम मानवुं पडज्ञे. जेम कोई प्ररुष पोताना दाथमां खड्ग लईने बीजाने मारे. तेवं पाप खडगने लागतं नथी, पण ते खडगना मारनारने लागे हे. तेम पुरुषे कीधेलुं पाप पण ईश्वरने लागनार हे. कर्मनो करनार तो खडगना जेवो हे: तेने कर्म लागवा न जोईए. तेथी कर्म ईश्वरने जागे जे एम सिद ययुं. एम माननारने एटलुंज पूजवुं जोये के, कमेनो कर्ता तुं नयी, तेम कमेनो नोका पए तूं नयी; कर्ता नोका ईश्वर बे. त्यारे सर्व मनुष्यों पोतपोताना मत प्रमार्थों किया करवानी बुदि केम करेबे ? मद्य मांजनो ल्याग, अने स्नान, संध्या, स्रोत्र, तप, जप. वगैरे शासार, करेते ? पोताने कांई पाप प्रमुख लाग्युंहोय तो तेनुं निवारण शासारु करे छे? अकार्य शासा रु करता नथी? पाप यकी शासारुं बीडेने! कत्ती शो नोका एम शासारुं कहे ने ? पोते करे डे, ते नोगवे डे; तेम डतां वली कहे डे के हे प्रछ, मारां पाप टालो. प ए एम नथी कहेतो के प्रदा तमारां पाप टालो, जे चोरी करे तेने दंड थाय ने जे बेद करे तेनां प्राण जाय. अने हिंसा करे ते अवस्य नरक गामी आय. वगैरे ए सर्व व्यर्च मानवा जोइरो. माटे कर्त्ता जीव ने ईश्वर नथी एम मानवं जोये.

३० नास्तिकः- अमे मान्य करेलुं ईश्वर सर्वइ वे एम जाणवुं. अने शास्त्रोमां पण 'सर्वज्ञो ईश्वर." एवां घणां वाक्यो दीठामां आवे वे; माटे ईश्वर बधुं जाणे वे.

રષ

आसिक--यद्यपि तमे कहोग्रो के ईश्वर सर्वझ छे, ए वात सत्य छे. तथापि ते सर्वझतानी रीत कांईक जूदीज छे. जे तमे मानो ग्रो ते ईश्वर सर्वझ नथी. अ मे एटलुंज पूठीए ग्रेए के, ज्यारे ईश्वर सर्वझ छे, त्यारे पोताने छःख देनारा राव णादिकने तेणे शा सारु उत्पन्न कह्या ! ज्यारे ए राइत्सोनी उत्पत्ति पोते कीधी त्यारे पोतानेज युद्ध करवुं पड्युं. ए उपरथीज विचार करो के जो ईश्वर सर्व जाएतो होय, तो एवी नूल केम करे ? जो एम कहिये, के राइत्सादिक प्राणी ओ ईश्वर थकी अजाएमां उत्पन्न थया जएाय छे; तो ईश्वरनेविषे अझानरूप दूषण प्राप्त थरो. अने जो एम कहीग्रुं के जाएाी जोईने उत्पन्न कह्या छे; तो ई श्वरना नकने पए संग्राम उचित नथी; तो ईश्वरने ते केम संग्राम कार्य उचि त थयो ? माटे एम कहेवुं तदन असंजवित छे.

३१ नास्तिकः-ईश्वर ज्यारे जगतनो संहार करेंग्रे, त्यारे पोते प्रागवमनां पांद डांपर पहोढे ग्रे; अने ज्यारे जगतनी उत्पत्ति करवानो संनव होय, त्यारे जागृत थाय ग्रे: ए वात तो साची ग्रे के नी?

आसिक.-ए वात ते वली जूठी होय ! पए हुं तमने पूडुं डुं के ते प्राग वड अधर आकाशमां रहे डे के, प्रथ्वी उपर होय डे ? तेमां अधर रहे डे, एम तो तमे कचूंल करशो नही, केम के तमे वली एम पएा मानो डो के, बधुं जलमय पई जाय डे; ने तेनी उपर मात्र प्रागवम देखाय डे; त्यारे प्रथ्वी पएा कचूल क रवी पमझे. जो पाएी, प्रथ्वी, तथा प्रागवम ए बधा पदार्थ महा प्रलय थया पडी पएा रहे डें, त्यारे संहार ते शानो कस्तो कहेवाय ? जो एम होय तो सर्व पदार्थों शाश्वत थया एम जएाय डे. फरी ज्यारे ईश्वरे सृष्टि उत्पन्न करी, ते प हेलां कह्या प्रमाणे पांच महा जूत तथा, प्रागवड हतो त्यारे नवुं ते ग्रुं कीधुं ए वगैरे विचार कस्ताथी एम जएाय डे के, ए बधा गपाटा डे. जेना मनमां जेम आव्युं, तेऐो तेम शास्त्रोमां लखी नाख्युं जएाय डे.

३१ नॉस्तिकः-ब्रह्मा, विसु, अने महेश एँ त्रेणे सर्वेङ ईश्वर बे; एम अमे मा निये बैये.

आस्तिकः-तमे गमे तेम मानो तेमां अमारुं ग्रं गयुं! अमे तो जेम इहो ते म मानज्ञ. तमे कह्या ते त्रणे जो सर्वक्त होय तो अज्ञानने केम अंगीकार क रे! जुवो के, महादेवे पोताना पुत्र गणेशनुं माथुं कापी नाख्युं तेनी खबर पो ताने केम न पडी? रावण सीतानुं हरण करी गयो ते वखते राम सर्वक्त ढतां ञ्यास्तिक नास्तिक संवाद.

पशु, पही, तथा हुद्द प्रमुखने केम पूडतो इतो ? अने ब्रह्मा पासेथी राद्यसो वेद केम चोरी लई गया ? ए रीते ब्रह्मा, विक्षु अने शिव अज्ञानी ठरे डे. एवा अज्ञानी तेने ईश्वर केम कहिये ?

३३ नास्तिकः-सर्व योनित्रोमां मनुष्य योनि उत्तम बे. एवुं शास्त्रोमां कह्युं बे ते सत्य बे. अने वली अनुजव सिद्ध पण बे.

आसिकः-ना कोणे कह्युं जे ? मनुष्य योनि तो उत्तमज जे. परंतु तमे तेम अंतःकरण पूर्वक मानता नथी देखाता. महोडाधीज मात्र कहो जो. केम के तमारे तो एयकी पण बीजी उत्तम योनिओ मानवी जोइये जे. जे योनिने ई श्वरे अंगीकार करी जे, ते योनि तमारे पण सर्वोंत्रुष्ट मानवी जोइये. मझ, क छ, तथा वराह, प्रमुख योनिओमां ईश्वरे अवतार लीधो जे; ते योनिओ मनु ष्य योनिकरतां उत्तम मानवी जोइये. जो मनुष्य योनिज उत्तम होय तो ईश्व र पोते बीजी योनि केम धारण करे ? माटे तमारा बोलवा प्रमाणे तो मनुष्य योनि करतां वराहादिक योनि उत्तम जणाय जे. ईश्वर ज्यारे पद्यमां अवतार लिये जे, त्यारे पद्यमुखी, पद्यवाही, तथा पद्यरूपी होय जे. तेने देव मानवो ते अयोग्य जे. आहार, अस्ति, आयुध, असवारी, तथा आवाश ए पांच पदार्थ ईश्वरना जकने पण त्याग करवा कद्युं जे; तो ईश्वर पोते तेनुं केम यहण करे ? माटे वराहादि योनि धारण करनारो ईश्वर मानो, तो मनुष्य योनि करतां ते योनि उत्तम कहेवी जोइरो; जो तेम नही कहेशो तो ईश्वरने अपमान जागरो.

३४ नास्तिकः-शरीरनो त्याग करीने जीव परलोके गया पढीपाछो छा लोक मां केम छावतो नथी? जे हे तेने तो छाव्युं जोइये

आसिकः-आ संसारनो संबंध मटी गया पढी जीवनुं फरी आवनुं यतुं न थी; तेनुं कारण कर्म ढे. जीवनुं आवनुं जनुं कर्माधीन ढे. ज्यां कर्म लई जाय त्यां जीव जाय ढे. अने जे जे नव पामे ढे ते ते नवना कार्य करे ढे. आ न वमां पण हमेश एक रीत रेहेती नथी जेम के बालपणानी प्रीति होय ते कोई काले मटी जाय ढे. घणा काल लक्षीनो संबंध छतां कोई काले तूटी जाय ढे. त्यारे दारिद्रा आवे ढे. कोई कर्मना योगे प्राणी बंदीखानामां पडे, ते वारे तेनो अत्यं त स्नेही होय ते पण पासे आवतो नथी. कोई पुरुष एक स्वीउपर बीजी करे त्यारे प्रथम स्वीनी उपर प्रीति रहेती नथी; अने पूर्वनो संबंध पण तूटी गया जे दुं थाय ढे. तो पूर्व जन्मना संबंध ते केम याद आवे ? इानावरणी कर्मना यो

गे बीजा जवनुं स्मरण पण थतुं नथी. ए विषयने मलती प्रदेशी राजा अने के शी गुरुगी प्रसोत्तररूप चर्चा ने ते कढुं डुं. प्रदेशी राजाः- मारो अधर्मी दादों नरकमां गयो हे, ते तमारा मतप्रमाणे त्यांथी आवीने मने अधर्म करतो वारे त्यारे हुं मानुं, के वात साची हे. केशी गुरुः- तारी स्त्रीनी साथे कोई पुरुषने कामनोग करतो तने दीठामां आ वे, ने ते तारा हाथमां आव्या पढी ते तारी वीनती करे के,मने थोडीक वार रजा आपो, तो हुं मारा कुटंबने कही आवुं के, कामनोग कखाथी आवुं डॅंख याय हे तो ते वात कबूल करीने तेने तूं रजा आपीश? राजाः- ना तेने एक इत्एा पण जुटो मूकुं नही. गुरुः- तेमज तारो दोदो पण पापसंची, गुनेहगार थई, नरकमां गया पढी, परमाधामी तेने केम मूके ? तेथी ते व्यावी शके नही. राजाः- मारी दादी स्वेज्ञाचारी थई, जैनधर्मने अंगीकार करीने खर्गे गई, ते पाठी केम कहेवा आवी नही: ने आवे तो तेने हुं इरकत छे ? ग्ररुः- कोई पुरुष स्नानकरी, कुंद्यम तथा धूष प्रमुख लई देवनी पूजा करवा जेतो होय, तेने कोई चांमाल संमाशमां जवाने कहे तो ते त्यां जाय के ? एवी क दी इज्ञा पण करे ? राजाः- ना ते एवा खराब स्थले केम जाय ? कदी पण जाय नही. ग्रुरुः- तेम तारी दादी स्वर्गजोकमां गई जे, ते सेतखाना तुव्य आ मनुष्य जो कमां केम आवे ! आ लोकमां आववानी इज्ञा पण याय नही. राजाः- एक चोरे चोरी करी, तेनो इन्साफ करीने तेने जोहानी कोवीमां घा ली दीधों तेनुं मुख बंध करीने उपर सारी रीते कलई करावी. तेमां पवन पण प्रवेश करी शके नही एवुं कखुं. पडी ते चोर कोनीमां मरी गयो. तेनो जीव ते कोवीना क्या रस्तेथी नोकजी गयो ? तेमां तो कोई बिइ दीवामां आव्यो नही. हवे जीव ते केम मनाय ? गुरुः- मोटी शालामां एक पुरुषने जेरी सहित घालीने तेने चोतरफ बंध क री लीधी होय, तेमां ते जेरी वगाडचाथी तेनो अवाज बाहार शंजलाय ले. ते लि इविना बाहार केम आवे हे? तेम जीव पण हिइविना बाहार निकली जाय हे. राजाः- एक चोरना कटका करी एक कुंजमां में जरी राख्याहता. तेनुं महोडुं च परथी सारी रीते बांधी लीधुं हतुं, के जेमां पवन पण प्रवेश करी शके नही. ते

१ए६

www.jainelibrary.org

केटलाक काल पत्नी उघाडी जोयुं, तो तेमां अनेक कम पडेला देखायां. ते तिइ विना क्यांथी आव्यां ?

गुरु - अग्निमां लोदनो गोलो नाख्यो होय तेमां डिइविना अग्नि केम प्रवेश करेडे! जे वस्तु अभिमां नाखीए तेमां डिइ नहोय, तो पए अभि प्रवेश करे डे. तेम जीवनो प्रवेश थवामां डिइनुं काई काम नथी.

राजाः- एक चोरने में ते जीवतो इतो त्यारे तोव्यो, अने मरी गया पठी पए तोव्यो; त्यारे जीव नीकली गयो ठतां जारमां कांई फेर पड्यो नही. तेनुं छ कारए होवुं जोये?

गुरुः- जेम खाली मशक तथा पवनथी नरेली मशक तोली जोतां वजनमां फेरफार थतों नथी. तेम जीव वागुरूप होवाथी ते शरीरमांथी नीकली गया प ढी कांइ तोलमां फेर पडतों नथी.

राजाः- बालक अने यौवनना शरीरमां फेर हे पण जीवमां कांई फेर नथी. बन्ने वाणी सरखी बोले हे ने तेनुं शब्द पणे कानमां सरखी रीते स्वर जाय हे; तेम हतां उपयोग सरखो केम थतो नथी? युवान जे किया करी शके हे ते बाल कथी थती नथी तेनुं कारण हुं ते कहो.

गुरुः- जेम जूनुं धनुष्य होय तेथी बाएानो उपयोग जुदी रीते थाय हे ने न वुं धनुष्य होय तो तेथी बाएानो उपयोग जुदी रीते थाय हे; धनुष्यमां फेर होवा थी बाएानी क्रियामां फेर पडे हे. तेम बालक अने युवानना शरीरमां फेर होवा थी जीवनी क्रिया सरखी थाय नही. एटजे बल वीर्य प्रमुखमां पए फेर फारथाय हे.

राजाः-युवान अने वृद्ध माणज्ञना शरीरमां जीव सरखो बतां युवाननी पते वृद्ध केम नार जपाडी शकतो नथी?

गुरुः-जेम कावडवडे नार जपाडनारो पुरुष सारी नवी कावड होय तो वधा रे नार जपामी शके बे, ने जूनी कावड होय तो कांईक थोडो नार जपाडी शके बे. तेम जीव तो तेज बे पण युवान शरीर होय तो वधारे नार जपामी शके, ने वृद्ध शरीर थाय तो थोमो नार जपाडी शके बे.

राजाः-एक चोरने मारीने तेना अनेक खंम कीधां, पण जीव तथा जीवना रहेवानुं वेकाणुं दीवामां आव्युं नही: माटे जीव कोई बेज नही.

गुरुः-जेम काष्टमां अग्नि रही हे, तेम शरीरमां जीव रह्यो हे, ते देखाय केम ? जो काष्टमां अग्नि देखाय तो शरीरमां जीव देखाय काठीआरो हमेश जाकमा कापे डे पण तेने अग्नि कोई वखते पण दीगमां आवती नथी. ने ते अग्निनुं र देवानुं ठेकाणुं पण दीगमां आवतुं नथी तेम जाणी लेवुं.

राजाः-मने प्रखद्द जीव देखामी आपो के जेथी हुं जीवने जाएं.

गुरुः-तमे बादर वायु कायना जीवने जोई शकशों के ? तेने पण जोई शक शो नही तो जे अरूपी जीव डे तेने केम जोई शकशो ?

राजाः-हाथीमां अने कीमीमां जीव केम सरखो होय हे ?

गुरुः-हाथीनुं तथा कीमीनुं शरीर महोटुं नानुं ने, पण जीवमां अधिक न्यून ता नथी जीव बन्नेमां सरखो ने.

राजाः- लोकमां जीव अने जड एक देन्त्र अवगाही निरंतरपणे निराबाध केम रह्या ने ?

गुरुः- जेम दूधनी जरेली कडाईमां साकर, एलची, अने केशर नाखी होय ते केम समाई जाय बे? दूधग्रुदां चारे वस्तु एक देन्त्र अवगादी निरंतरपणे केम रहे बे? एकज वेकाणे चारे वस्तु अनिन्न जावे रहेली बे. एना वर्ण, गंध, रस, फरश निरंतर निराबाधपणे बे. तेम जीब अने जड जगतमां निरंतर एक देन्त्र अवगाही निराबाधपणे रह्या बे.

३५ नास्तिकः- सर्व लोकमां जीव जरपूर हे त्यारे देखाता केम नथी ?

आस्तिकः - जेम सूक्स जीव सर्वत्र पूर्ण हे. ते ज्यारे दिवज्ञे तडको पडे त्यारे घरमांना कोई ढिइ हारायें योडोएक तडको घरमां आवे हे. ते तडका तरफ जोतां केटला एक परमाणु जेवा दीगमां आवे हे, ते बधा सूक्स जीवो हे. ते ढायमा मां तडको आवे त्यारे उडता देखाय हे, बीजी रीते देखाता नथी. तेम जीव अ ने जड सर्व लोकमां जरपूर ढतां ढग्नस्थने देखाय नही; किंतु केवल ज्ञानरूप आ तपना योगे देखायहे. अर्थात् केवल ज्ञानीज जाणी शकेहे.

३६ नास्तिकः- चंइ, सूर्य, ढाया, छातप, माता, पिता, स्वर्ग, नरक, जीव, जड, घट, पट, स्तंन, तथा कुंन प्रमुख सर्व चममात्र ढे; वस्तुरूप कंईजनयी.

आस्तिकः- जेम अंधकारमां आकाशनेविषे कोई पुरुष चाल्यो जाय, ते निरा बाधपणे जई शके ढे; पण वचमां जाे जिंत आवीजाय तो आगल चलातुं नथी ने ते कार्यमां अपराबाधक थायढे. ए प्रत्यक्त चम के सत्यढे? तथा कोई कोईने मारे, कूटे, दानदिये, ए वस्तु गत्थे सत्यढे; असत्य अने चमजाल तो स्वप्न अने संकल्पने कहिये. ३ ९ नास्तिकः-सर्व जगतमां एकज ईश्वर हे. इश्वर विना बीजुं कांई नथी, ए म जाणवुं जोये.

आसिकः - जो सर्व जगतमां एक ईश्वर होय, तो दाननो देनार पए ईश्व र, अने लेनार पए ईश्वर कहिये. लेनार अने देनारमां कांई जेद ययो नही. ई श्वरे पोते पोतानी पाझेथी दान जिधुं त्यारे दान दीधानुं पुए्य कोने चयुं ? एथी दान तथा पुए्य व्यर्थ गयां. वजी मारनार पएा ईश्वर ने मरनार पएा ईश्वर कहेवो जोये; तो ईश्वरे ईश्वरने मास्त्रो तेनुं पाप कोने जाग्युं ? धएी पए ईश्वर कहेवो जोये; तो ईश्वरे ईश्वरने मास्त्रो तेनुं पाप कोने जाग्युं ? धएी पए ईश्वर ने चोर पए ईश्वर; तो ईश्वरने मास्त्रो तेनुं पाप कोने जाग्युं ? धएी पए ईश्वर ने चोर पए ईश्वर; तो ईश्वरनो माल ईश्वरे चोस्त्रो कहेवाय, त्यारे चोरीनी तपाश शासा रु करवी जोयेढे ? पुए्षे करी स्वर्गमां गयो ते पए ईश्वर, तथा पापे करी नरकमां गयो ते पए ईश्वर; त्यारे स्वर्गमां पुए्यवान जाय अने नरकमां पापी जाय; एम क हेवुं व्यर्थ ढे. ए उपरथी तमारुं बोलवुं असंनवित ढे. जगतमां एकज ईश्वर ढे एम जे कहेवुं ते असत्य ढे. घटघटप्रत्ये जीव जुदा जुदा ढे, अने तेत्रोनी कर एी पए जुदी जुदी जाएवी.

३ ७ नास्तिकः- घट पटादिक सर्वे पदार्थोमां ईश्वर एकज छे, एम जाणवुं जोये.

आसिकः जो सर्वमां एक ईश्वर होय तो जात, कुल, राजा, तथा चंडा लनी जिन्नता कही न जोये; कोई श्रेष्ट तथा नष्ट कहेवाय नही. एक पुल्य करे ते उं फल सर्वने थवुं जोये, तेमज कोईएक पाप करे तेनुं फल पण सर्वने थवुं जो ये. एके नोजन कखाथी सर्वनी तृप्ति थवी जोये; एक नरकगामी थयाथी सगला न रके जवाजोये; एक स्वर्गगामी थयाथी सर्व स्वर्गमां जवा जोये; एकनो जोग सर्वने नोगव्यो जोये; कर्म जुदां जुदां नोगववां न जोये; तेम तो देखातुं नथी; जे करे ते नोगवे एवुं स्पष्ट देखाय बे. त्यारे सर्वमां एक ईश्वर केम कहेवाय? माटे एम क हेवुं ते समीचीन नथी; बधा जीव जुदा जुदा बे, एम कहेवुं योग्य बे.

३ए नास्तिकः-स्वर्ग, नरक, पुत्य, पाप, चंइ, सूर्य, नदी, समुइ, दीप, नर, नारी, नगर, याम, तथा माता, पिता इत्यादिक चोराशी लक्ट् जीवयोनि प्रमु ख सर्वे असत्य बे; एत्रोमां सत्य पदार्थ कोई नथी.

आस्तिकः-सर्व पदार्थ लत्य छे. जलनी बुंद पण असत्य कहेवाय नही, तो खर्गादिक पदार्थों केम असत्य कहेवाय? जे वस्तु धाय त्यारे धई कहेवायछे, अने वणज्ञो त्यारे नाज्ञ थई कहेवायजे. ए प्रत्यक्त प्रमाणे सिद्ध जे; ते मूढ पण जाणे जे तो हे नास्तिक तूं केम जाणतो नथी ! ४० नास्तिकः-जगत ईश्वर रचित जे.

आस्तिकः-जो जगत ईश्वररुत होय, तो जेटला ईश्वरना जक ते, ते बधा सुखी होवा जोये; तेम तो दीठामां आवतुं नथी. हिंड तथा मुसलमान बधा सुखी तथा डःखी देखायते; तेने पण प्रंतिये तेवारे एम कहे जे सहु पोतपोतानी करणी प्रमाणे पामेते, एम कहीतूटे; त्यारे तमारा कहेवा प्रमाणे तो सुख तथा डःखनो देनार कर्मविना कोई बीजो होवो जोये तेनो तो विचार थई शके नही, माटे हे मूर्खबुद्धि आ जगतनो कोई करता नथी; ए तो खजाव सिद्ध ते. अने जी व जेवी करणी करे, ते प्रमाणे सुख तथा डुःख जोगवेते.

४१ नास्तिकः-सुख डःखनो देनारो ईश्वर हे, एम मानवुं जोये.

आस्तिकः-सुखडःखनो कर्त्ता आपणो आत्मा हे, तेज सुखडःखनो नोका जाणवो. माटे सुखडःखनो देनारो बीजो कोई समजवो नई।

४२ नास्तिकः--(प्रत्यक्त प्रमाण वादी) पुल्यचकी लारुं चायने, ने पाप चकी नरहुं चायने; ते झमने प्रत्यक्त दृष्टिए देखाडो तो मानीए.

आस्तिकः-पुख्यपाप तो सूद्रम पुक्त समूहरूपने जेम शब्दना पुक्त कानप्रत्ये आ वेत्यारे शब्द नुंकान थायने; माटे ते सत्य ने पण आवता देखाता नथी तेम सुगं ध, डर्गंध, प्रमुखना पुक्त इंड्यो प्रत्ये आवता देखाता नथी; पण तेनुं कान थायने; तेथी अनुमान प्रमाण वडे जणाय ने के ए सत्य ने तथा शरीरमां वायु अने गरमी प्रमुख जे थायने, ते रोगना जदयथी जाप्यामां आवेने, पण प्रत्यक्त दीनामां आवतांनथी तेम पुख्य तथा पाप पण फल जोगव्यायकी जा खामां आवेने. तेओना पुक्त नग्रस्थ दृष्टिए आवे नही.

४३ नास्तिकः-बाल्यावस्था तथा तरुणावस्थामां जीव सरखो छे. तो ते बन्ने अवस्थामां विज्ञान, विद्या, जाषा, तथा पराक्रम सरखां केम नथी देखातां ?

आसिकः-जेम वृक्त्ना बीमां अनेक वक्त, फल, फूल प्रमुख रहेलां डे; परंतु जेवा साधनो मलेडे, तेवी उज्जवताने पामेडे. जेम के, क्तेत्रनी जूमि सारी होय ने पाणीनी पण बराबर साह्यता होय, तो रूषि फलरूप धान्यनी उत्पत्ति सारी थायडे. तेम सारा साधनोवडे जेम जेम शरीरनी वृदि थती जाय, तेम तेम जाषा पण प्रौढ ताने पामती जायडे; पण अवस्थांतर थयाथी बुदि बाहेरथी आवती नथी. किंतु शरीरनी पठे बुदिनुं अवस्थांतर थायते. सर्व आत्मगुण आत्माने विषे सदा ज खाज ते. पण योग्य समयमां उद्भव मात्र थायते. कांई बाहेरथी नवा आवता नथी. जेम मयूरना शरीरमां अनेक रंग रहेलाते, पण समय पामे प्रगट थायते. तेम बाल्यावस्थामां पण सर्व गुण सत्वनावे ते, परंतु जेवी रीते पुरुष बलवान त तां धनुष्यविना बाण चलाववामां समर्थ थाय नही; गलोला, गोफण, तथा खड्ग प्रमुख बधा शस्त्र ते आेना उपकरणची उपयोगी थायते, ते विना थाय नही; तेम जीव पण शरीरोपकरण अवस्थारूप सामग्री थकी सर्व कार्य साधी शकेते. चेत नमां कांई फेर नथी, चेतन सदासर्वदा सरखुंज ते.

४४ नास्तिकः-जगत सर्व ईश्वरकत होवाँची सर्व पदार्थमां तथा सर्व जीवमां ई श्वरनी कला बे.

आसिकः-जो एम होय तो घट, पट, स्तंन, कुंन, शास्त्र तथा नाषा इत्यादिक अनेक वस्तुनुं झान कोई एक जीवने छे, ने कोईएक जीवने नथी. जे जीवने झेय पदार्थनुं झान छे, तेने तो हे मूढमति, तूं ईश्वरनो अंश मानेछे, त्यारे श्वान, शूकर, रासन, मांजर, व्याध, प्रमुख श्वापद चौंपद जीवोने घटादिक पदार्थोंनुं झान नथी तेथी तेओमां ग्रुं ईश्वरनो अंश नथी? तमे तो जीवमात्रने ईश्वरनो अंश मानो ढो तेने बाध आवशे. जे ईश्वरनो अंश होय ते अझानी केम होय? एथी जगत नो कर्ना ईश्वर अविवेकी ठरेछे. अने सर्वमा ईश्वरनी कजा छे, ए बोलवुं पए अ सत्य छे; केमके जो एम होय तो सर्व सरखा झानी होवा जोये. तेम तो देखातुं नथी; माटे ए वात पए मिच्या छे. तेम सर्व जीव ईश्वरना अंशरूप छे, एम जे तमे मानो डो, ते पए अझानी होवाने लीधे मानोडो माटे संजवे नही.

४५ नास्तिकः- ईश्वर जक्तवत्सल जे, अने स्वेज्वाथी जन्मधारण करेजे.

आसिकः-जो एम होय, तो नकोने शरीर मूकतां वेदना केम थाय छे ? अ ने सजनादिकना कोलाहल शब्दो सांचलीने चक्तने वत्सलनावकारी आयुष्यवृदि केम नथी करतो ? मरणादिक किया तो सर्व ईश्वरना स्वाधीन छे. ए आदि वि चार करतां तमारुं बोलवुं बधुं पोकल छे. जीव तो कर्मने आधीन छे. जेम के फ लोधेलो प्राणी तेनी लहेरने स्वाधीन थई जायछे, तेम जीवविषे पण जाणी लेवुं. जन्ममरण पण कर्माधीन छे; तेने जे धारण करे ते ईश्वर ज्ञानो ! ते तो संसारीज कहेवाय. ईश्वर तो कर्मथी मुक्त होयछे, माटे तमारुं बोलवुं बधुं व्यर्थछे. ४६ नास्तिकः-आ पंच महाजूतोथी उत्पन्न थएलुं जे विश्व, ते महा प्रलयना समये पोताना कारण पंच महानूतोमां लीन थरो; ने पंच महानूतो ईश्वरमां लीन थरो.

आस्तिकः-जो एम होय तो ईश्वर जड मिश्रित याय. अने ते समज तथा निर्मल ए बे अवस्थावालो कदेवारो. त्यारे केवल ज्योतिसरूपपणुं क्यां गयुं ? जे पंच महानूतोयकी जगतनी उत्पत्ति यई कहोडो ते तो सदा शाश्वत डे. ते आमां प्रथ्वी, आप, तेज तथा वायु; ए चारे जूतो पोतपोतानी किया करेडे, के म के, वनस्पति अने जंगम त्रसनी उत्पत्ति करेडे ते कियाविना याय नही. एवी रीते तो जीवनी ड खान शाश्वत सदा काल डे. त्यारे प्रलय ते शानो थयो ? जो एम कहेशो, के पंच महाजूतो जगत विनिर्मित किया करता नथी. एवी ते जूतड्व्यरूप कथन मान्नज वरहो. अने हरेक वस्तु पोतपोताना ग्रुणविना रहे नही एवो नियम डे. वली जो कहेशो के जूत तो अनंत कालना डे. त्यारे तो संसार पण अनंत कालनो वरहो. तेनी उत्पत्ति तथा प्रलय केम कहेवाय ? ए तो जेम डे तेम डे. वली जो कहेशो के जूत तो अनंत कालना डे. त्यारे तो संसार पण अनंत कालनो वरहो. तेनी उत्पत्ति तथा प्रलय केम कहेवाय ? ए तो जेम डे तेम डे. वली ईश्वर मनसा वाचा कर्मणा करि रहित डे. अने एक यी अत्तेक थाउं एवी मननी इज्ञा थई त्यारे जगतनी उत्पत्ति करी. ए बे वाक्यो नो परस्पर विरोध डे; केम के, प्रथम वाक्यप्रमाणे ईश्वर इज्ञारहित तरे डे; ने बीजा वाक्यमां इज्ञासहित कहो डो; एवो पूर्वापर वचनविरोध होवाथी तमारुं बोलवुं सर्व असमीचीन डे.

8 9 नास्तिकः- सर्व वस्तुनो ईश्वर अधिष्ठान जे. ईश्वरनी इज्वायी रुत तथा अकृत सर्वे यायजे.

आस्तिकः- जो एमने तो घट ते पट केम थतो नथी ? पण तेम थाय नही; केमके, घटनुं कारण मृत्तिकानुं पिंग ने, तेमांथी घटज थायने. पण पटादि कार्य नथी थता. तेमज पटनुं कारण तंतु ने, तेथकी पटज थायने; पण घटादि क बीजा कार्यनी उत्पत्ति थायनही. जो एम थतुं न होय तो कारणथी कार्य थायने, ए प्रद्यति मिथ्या थाय. माटे ईश्वरना अधिष्ठितपणातले ईश्वरनी इज्लाथी ऊत तथा अरुत सर्व थायने ए तमारुं कहेवुं सर्व व्यर्थ ने.

8 ज्नास्तिकः- जीवने नवांतर थाय बे खरुं, पण वेदनो बेद थतो नथी. पुरुष वेद ते स्त्री वेद न थाय, स्त्रीवेद ते पुरुषवेद न थाय; तेम स्त्री तथा पुरुष ते नपुंस क वेद न थाय; इ्यने नपुंसकवेद ते पुरुष तथा स्त्री वेद न थाय. एम जाणवुं जोये ज्यास्तिकः-पुजलना परिणामनो नियम नथी. एना पुनः पुनः रूपांतर थया क रेग्ने. मात्र अवस्तुपणुं पामता नथी, वस्तुपणे गमे ते रूपे घई जायग्ने. जेम जेंस ना शिंगमांथी केल यायग्ने; काशयकी सेरडी थायग्ने, माखीना हिंगारथकी कद लीनी जाजी थायग्ने. एवी रीते कर्मना परिणामे गत्यंतर थायग्ने. आगामिक जव नेविषे कायवेद पलटाईने ते नवा जवरूपे परिणामेग्ने. जेम सोनीना योगे सुव र्ण नाना प्रकारना आकाररूपे परिणामने पामेग्ने. तेम जीव कर्मना योगे नाना विध गतित्र्यो पामेग्ने. ते तो रह्यं, आ जवमां पण एकसरखी स्थिति रहेती न थी. जेम के, राजा ते रंक धई जायग्ने. ते, रंक ते राजा बनी जायग्ने, सुखी ते डः स्वी, तथा छःखी ते सुखवान धई जायग्ने. इत्यादिक आ जवमां पण पर्याय पलटाई जायग्ने; तो जवांतरमां केम एकरूपे रहे ? कर्मना बंध सादि ग्ने, माटे जेवो कर्म नो उदय तेवा फलनी प्राप्ति यायग्ने, एविषे कोई नियम धई शके नही. गमे ते वेद बदली ने गमे ते वेद कर्मना योगे धायग्ने एम जाणावुं.

४ए नास्तिकः-एम कह्युं ने के ब्रह्माना मुखमांथी ब्राह्मणो उत्पन्न थया. उज थकी क्त्त्रिय थया, तथा जंघा थकी वैद्य थया, माटे ए त्रणे वर्ण उत्तम ने, अ ने पादयकी ग्रुइ उत्पन्न थया माटे अधम ने, एम जाणवुं.

आसिकः- ए वात संजवित नथी. छुवो के, जबराना हरूमां पेड, दाल, तथा पत्रनेविषे सरखां फल लागेजे. ते सर्व फलोनुं रूप सरखुं होयजे; तथा ते श्रोमां रस पण सरखोज होयजे. तेश्रोमां कोई प्रकारे जनम तथा. अधमता क हेवाय नही. तेमज ब्रह्माना शरीर थकी उत्पन्न थया जे चार वर्ण, ते सर्व चेतन रूप होवाथी सर्व जीव सरखा जाणवा. जनम मध्यम वगरे सर्व जांकिक कार्य थकी कहेवायजे. पण चेतनपणे तो सर्व सरखा जे. एना जपर एक दृष्टांत कढुं चुं. चारे वर्णना मनुष्य एक तलावने कांने बेशीने पाणी पिये जे; तेथी कोई वट लतो नथी. पण ते तलावमांची पाणी जरीने पोतपोताना वासणोमां लीधा पडी इलका वर्णना वासणनुं पाणी जंचा वरणवालो माण्स पीए तो वटले जे. फरी चारे वर्णना नरेला पाणीना वासणो मानुं पाणी ते तलावमां नाखीने पी तां कोई वटलतुं नथी तेनुं कारण द्युं ? माटे पाणीमां वटलवापणुं नथी. ने वा सण तो सर्वनां सरखा जे. माटे वटलवुं ए मननी मानीता जे; अने एवी लोक म र्यादा जे. ज्यां सुधी मननो मिष्यानाव जे, त्यां सुधी निन्न पणुं जे एम जाणवुं. ए० नास्तिकः- समदृष्टीने विषे मिष्यानाव होतो नथी. तेम जतां ते निन्न जाव केम राखेजे ? आस्तिकः-लोक मर्यादा लोपवी नही ए नीति बे तेनो लोप करवो नही. जे कार्यनी जगत निंदा करे ते कार्य करवो नही एवुं श्रेष्ठोनुं वचन बे तेनो पण लोप करवो नहो. तेथीज समदृष्टि पण तेवुं आचरण करे बे पण मनयकी स म दृष्टिने कांइ नथी.

धर नास्तिकः- सर्व कार्यनो कर्ता ईश्वर ले, एम मानवुं जोये के नही ?

आसिकः - एम मानवुं नही जोये. ए वचन प्रलाप हे. ईश्वरविषे कर्तृत्व होयज नही. घट, पट, रुषि, संग्राम, खान, पान, दान, मान, स्तान, तप किया, विनय तथा व्यावच इत्यादिक सर्व पदार्थोनां कारण काल, खनाव, नि यत, पूर्वरुत कर्म, तथा पराक्रम ए पांच हे. जेम के, तंतुना पुंजमांथी पटनी च त्पत्ति थवानो जे समय ते काल समजवो, तंतुना पुंजने पटनी चत्पत्ति करवानीजे योग्यता ते खनाव जाणवो; तंतुना पुंजमांथी पटनी चत्पत्तिकुं जे निमित्त थवुं ते पूर्व कर्म समजवुं, अने तंतुना पुंजमांथी पटनी चत्पत्तिक रवानीजे ये प्रव कर्म समजवुं, अने तंतुना पुंजमांथी पटनी चत्पत्ति करवानी जे च्यम करवो ते पराक्रम जाणवो; ए पांचमाथी एक त्रोकुं होय तो वस्तुनी चत्पत्ति थई शके नही. ए पांचनां समुदायथी घटपटादिक सर्व कार्योनी चत्पत्ति थायहे; एद्युद्ध मत जाणवुं. ॥ श्व नास्तिकः - जो कुढ होता है, सो अझाद्धुतालाके द्रुकमसे होता है; और किसीका किया कुढ होता नही; यही बात रास है.

आसिकः जो ऐसे होवे, तो अझादुतालाने पँदा किये हुये, इमामे हसन औ दुसन, काफिरोंके हातसें कैसे मारे गये ? वे ता खुदाके प्यारे बंदे थे, तिनकूं काफिरोने मारे, ये बडी अजायबकी बात है. तिनकूं बचानेके वास्ते खुदा ना कौवत था ? इमाम किसीके उनेहगारजी नही थे; वे क्य़ं मारे गये ? इसवास्ते जो होता है, सो तकदीरसें होता है. जो जैसा करता है, सो तैसा पावता है, तामें अझादुतालाका कुठ वास्ता नही है. यही बात रास्त है.

५३ नास्तिकः - अलादुतालाने इमामेंका दिल देखनेके वास्ते आजाब दियाथा.

आस्तिकः — आजाब दिये शिवाय तिनोंके दिलकी वात खुदा नही जाणता था ! जो कहोगे की नही जाणताथा, तौ खुदामें खुदापना क्या रहा ! खुदा तेो सब जानता है, ऐसे तुमारे छुरानेशरीफमें कह्या हू. एसे होके जी इमामोंकूं मारनेकी दयानत जो काफरोने करीथी सो खुदा जानके जी कैसे चुप रहा ! इ सवास्ते ये बात जी गलत है.

១០৪

ञ्पास्तिक नास्तिक संवाद

५४ नास्तिकः- आदमी मरगये बाद जीकूं फिरस्त जेजाते हैं ये बात तो सच हैं की नही ?

आसिकः— इस बातकूं कौन फूठ कहता है ? लैकीन समजमें कुठ फरक है. तुम कहेते हो की कीयामततक जीकूं एक ठिकानेमें रखते हैं, पीठे खुदाके पाश जे जाके इन्साफ करवाते हैं; ऐसे नही होवै है. लेकीन उसीवरूत जी अपनी त गदीरके जिये अठा या बुरा फल पावता है. तुमनी सुख, इःख, नेहेस्त औं दोज क तो मानते हो ! सो जैसी जीने करनी करी होवै तेसी गति उसकु मलती है. ५५ नान्तिकः— अझाढुतालाने औसे फरमाया है की जो किसीकूं इजा देता है

सो मारने जायक है.

आसिकः – कबू माबाप ठोकरेकूं इजा देते हैं, आ कबु ठोकरा माबापकूं इजा देता है; कबू पीर मुर्बिंदकूं इजा देता है, औ कबू मुर्षिंद पीरकूं इजा देता है; कबू नेोकर खाविंदकूं इजा देता ह, कबू खाविंद नोकरकूं इजा देताहै; ऐसे खुदाकी खलकतमें जहांतके जी हैं, वे सब इजा देनेवाले होनेते जो सब मारने लायक हो वै तो खैर महिर कैसे रहेगी ! औ रहम करने लायक कोई जी नही रहेगां और इमामोकूं जब काफरोने इजा दी, तब तिनोकूं कायके वास्ते इमामोने मारे नही इस वास्ते जो होवे है सो तगदिरसें होवे एसे जानना चाहिये.

५६ नास्तिकः-मांसाञ्चाहारी पापिष्ठ कहे के आ इनीआमां जलचर, स्थलचर, तथा खेचर प्रमुख जे नाना प्रकारना जीव के, तेओने बेशक मारी नाखवा, अने तेओनुं मांस जक्त्ण करतुं. एम अमने साहेबे फरमाव्युं के, ते प्रमाणे करवामां ग्रुं गुनाह तथा पाप के ?

आसिकः-तमारा कह्या प्रमाणे जीवने मारवुं ए खुदानो हुकम छे, ते कोई ए फेरववो जोये नही. जो फेरवीए तो गुनेहगार ठरीए, एम सिद थायछे ; त्यारे कोई वाघ अथवा सिंह प्रमुख मनुष्यनो आहार करनार जीव, तमने मारवा आ वेछे, तेथी मरीने तमे केम नाशी जाओछो? अने ते प्राणीने नाना प्रकारना ह थीआर वगैरेनी सहायता वमे केम मारवा तैयार थाओछो? अने जो ते जीव तमारा दावमां आवी जाए तो केम मारीनाखो छो? जेम खुदाए तमने जीव मा रवाने फरमाव्युं छे तेम तेओने पए मनुष्य मारवाने फरमाव्युं छे! ते प्रमाणे तेओ पोतानुं रुत्य करेछे; तेओने मारवुं लायक नथी. जो तेओने मारवानुं त मने लायक दीशतुं होय, तो जे जीवोने तमे मारोठो, तेओए अथवा तेओने वा

QOU

से कोई बीजा प्राणीए तमने मारवुं पण नालायक नथी; लायकज ठे. माटे जेम वाघ वगेरे प्राणीओ जीव घातक दोवाथी मारवा योग्य ठे. तेम तमे पण जी व घातक होवाथी मारवा योग्य ठो. एम तमारे कबूल करवुं जोइज़े. जो कवूल नही करशो. तो खुदाना ग्रनेहगार ठरशो माटे हे महामदीयन सुसलमीनो वगेरे, जीव मारवामां खुदानोढुकम होयज नही. जो एम होय तो खुदा रहम विनानो व रे. खुदा तो रहमदिल ठे, एवुं तमारा रसूलिझाए कुरानेशरीफमां फरमाव्युं ठे. तेने बाध आवशे. ए उपरथी एवुं जणाय ठे के, कोई एक पुरुषने कोई कारणने ली थे आवानक मांसनो आहार मली गयाथी, तेने तेनो स्वाद लागो तेथी, व्यसन पडी गयुं, ने पठी लोकापवादसारु खुदाए फरमाव्युं ठे. एम कहीने बचारा खुदाने हिंसक ठेरव्यो जणाय ठे. तेमां केटलो गुनाह ठे ! एनो विचारतो करो ! ते प्राणीआने मार वाने खुदा फरमावे त्यारे बीजी अन्नादिक वन्तुओ पेदा शावास्ते करे ? ए उपरथी साफ जणायठे के, अन्नादिक वस्तु खावायोग्य ठे, पण मांस खावायोग्य नथी. ते म ठतां जे जीनना सादने आर्थे खायठे ते राक्तसतुव्य जाणवा.

वली सुसलमीन प्रमुखने बीजुं युक्तिथी समजावे ने के, तमारा किताबोमां आ बने पाक वस्तु कहीडे, अने पिशाबने नापाक वग्नु कहीडे, पाक वस्तुची जे पे दाश थायते, ते पाक कहेवायते, अने नापाक वस्तुची जे पेदाश चायते ते नापाक कहेवायते. जेम के, अन्न वगैरे पदार्थों जे पाए। यी पेदा थायते, ते पाक ते; अने पिशावथी जे कीटकादिक पेदा थायने, ते नापाक ने. एवं तमे पण मानो नो. परंतु तेम चालता नथी. केमके मांलाहार करो हो. जुओके प्राणिमात्र पिशाबनी पेदाश हे. ते पिशाब ज्यारे नापाक त्यारे तेथी पेदा थयेला प्राणीओ केम पाक होय! ते ञ्चोना मांसने तमे पाक मानो हो, ए केटली बेवकूफी हे वारु ! जो मांसने पाक मा नशो तो पिशाबने नापाक कहेवाशे नही; ने जो पिशाबने नापाक मानशो तो मांस ने पाक मानज्ञे नही. जेवुं कारण तेवों कार्य एवो इनीयामां नियम बे. ज्यारे पि शाब जेवो मांस बे, त्यारे तेनो आहार कखाथी दोजकमां गयाविना केम रहेशो! एनो पाको विचार करीने मांस नक्षण मूकी द्यो; अने पाक पाणीनी पेदाश अन्न फल, तथा फूल वगेरे अनेक खादिष्ट पदार्थींनों आहार करोने ! परंतु तमे मानशो नही. केमके एतो जन्मनी आदत पडीगई हे. कहां हे के, तहाड जाए रुए ने आद त जाय मुए; तेम तमारी आदत इमणा जनार नथी; पण याद राखजो के किया मतने दहाडे जवाब देवों पडरो त्यारे आंखो, फाटीने पडोला थरो हो !

ञ्पास्तिक नास्तिक संवाद.

५७ नास्तिकः- याझिक नास्तिको प्रश्न करे ने के, यज्ञनेविषे होम करवासारु जी वने मारवुं योग्य हे. केमके ए रूख शास्त्रविहित हे: माटे एमां पाप नथी; पण पुण्य बे. यज्ञनें अर्थे जे जीव मरे बे. ते खर्गमां जायबे: माटे ते केम न करवुं ? आस्तिकः- यज्ञादिकने अर्थं जे जीवनी हिंसा करवी ते योग्य नथी. केमके, हिंसानो परिणाम ते पुण्य होयज नही; किंतु पाप होयने. एवो नियम ने. जे ज्ञा स्रोमां पद्य होमवानुं कहां हे, ते शास नहीं पेए कुशास हे. अने तेनी रचना कर नारा मनुष्य नहीं पण मनुष्यरूपे राइल हे: एम निश्वय जाणवुं. जे पापने पुख माने तेना करतां बीजो पापी कोएा ! यज्ञमां होमायजुं जीव जो खर्गमां जतुं होय तो यङ करनारा तथा करावनारा पोते होमाईने केम खर्गमां जता नथी! पोते एम करता नथी तेथीज जणाय ने के, ए कल्पित वचन ने; यक्तमां पथादिकनो होम शिव, ब्रह्मा, अने विष्णु आदिक देवताओने अर्थे करेंबे. अने तेनो बली नोग ते देवताओ लियेने. ए वात जो साची होय, तो ते देवताओ मांसाहारी तरहो. देवताञ्चोने जो मांस नक्ष्ण करवानी आदत होय, तो तेओ मनुष्यना हाथे शा सारु लीये! गुं तेओ पोते आहारने अर्थे मांस मेलवी शकता नथी? तेओ तो मोटा सामर्थ्यवान कहेवायढे. ते सामर्थ्य केम फोरवता नथी! जे जीवना मांसनो बलिदान तेओने आपेबे, ते जीवोनी उत्पत्ति पण तेओ पोतेज करेबे; एम तमे मानो हो। पोते जीवोने जत्पन्न करी तेने मनुष्यना हाथे मरावीने तेनो बलिदान पोते खेवो ए छं देवता आने योग्य जे ! एम तो कोई साधारण माणस पण करे नही, ते रूख देवताओने केम संजवे ? जो ते देवताओने मांस जक्तण करवानी होंस होय, तो पोताने माटे जुदीज जातना कोई जीव विनाना एवाज खादवा ला पदार्थनी उत्पत्ति करी, ते पदार्थनो आहार करवाने छुं हरकत हे ? माटे ए ब धी वात मनकविपत हे, उत्तम देवताओनेविषे एवी कल्पना करवी योग्य नथी. जो ए वात तमारा कह्या प्रमाणे साची होय, तो ते उत्तम देव नही, पण अधम कहेवाय. याझिक लोको होमादिकने अर्थे जीवघात करी, तेनो बलिदान दीधा थी पोताने जक्त समजे बे. पण एइवुं जकनुं लक्ष्ण होय नही; देवनकनं श्रंतःकरण ग्रुइ होयहे. तेमां मलिन वासना उत्पन्न यायज नही. जो मलिन वासनावालाने जक्त कहिये, तो अनक कोने कदीछं ! माटे एवं दिंसारूप रुख करनारने जक्त मानवो नही; पण अजक मानवो. अने ते निश्चय नरकगामी हे, एमां रंचमात्र संशय आणवों नही.

១០៤

ञ्पास्तिक नास्तिक संवादः

५० नास्तिकः- कोइ वेदधर्मी प्रस करे हे के, तमारा जैनमतमां जीवना खरूपा दिकनेविषे केवीरीते वर्णन करेज़ुंगे ? तेने उत्तर दिये गे के, सर्वज्ञ केवलीए आवी रीते कद्युं जेः-सर्व लोकनेविषे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय, काल, जीवा स्तिकाय तथा पुजलास्तिकाय ए व इच्य नरपूर वे. ए वए इच्य पोतपोताना गुए तथा पर्याये करी पूर्ण वे. सदा नावरूप वे. जगतनी स्थिति जेम वर्त्तमान कालमां वे, ते मज नूत कालमां इती, अने नविष्य कालमां पए एवी रीतेज जाएावी. ते मध्ये जीव अने पुद्गल अनंत काल लोलुपनूत हे. एटले जेम झीर तथा पाणी अने मृत्तिका तथा धातुनुं मिश्रण थयाथी एक रूप बनी जाय हे. तेम जीव तथा पु जलोपण एकरूपे रहे हे. समय समयने विषे नवां कर्म जीवबांधे हे. अने समय स मयने विषे पूर्व कर्म निर्जरीने ढूटी पण जाय छे. कर्मोनी उत्पत्ति तथा नाशमां ईश्वरनुं कांइ कारण पणुं नथी ईश्वर तो खकर्त्ता बे, तेने विषे कर्त्ता पणुं कल्पाय नही. माटे ईश्वर कोईनुं कारण नथी. काल, स्वनाव, नियत, पूर्व कर्म, तथा पु रुषाकार ए पांच कारणो उत्पत्तिना कह्यां हे. एएो करीनेज पुत्य पाप जन्य स्व र्ग नरकने विषे गमनागमन थाय हे. अने दंमकमां जे नरक, तिर्यंच, मनुष्य त था देवतानी चोवीश गतिओ कही ते. ते प्रमाणे नवपरंपराने पामेते. ञ्चने पो ताना उपार्जेला गुजाग्रुन कर्म जोगवे हे. ते ते जवने विषे झानावरणादिक आ ठ कर्मने अनुसारे वर्त्ते बेन जेम माटीनी जरेली तूंबी जलमां नाखीए तो ते मा टीना चारने लीधे मूबी जाय हे. पही जेम जेम ते माटी, तेमांची ओही यती जा य तेम तेम ते तूंबी उपर आवती जाय हे. ज्यारे बधी माटी नीकली जाय खारे पा णीनी उपर तरती रहे हे. पण पाणीथी उपर जाय नहीं तेवी रीते जीव पाप कर्मथी जेपायो थको अधोगतिने पामे बे. पत्नी जेम जेम ते कर्मनी न्यूनता थती जाय तेम तेम ते ऊर्ध्व गतिने पामतो जाय हे, ज्यारे बधा कर्मानों नाश घ ई जाय बे. त्यारे ते जीव लोकायने विषे प्राप्त थाय बे; पण तेनी उपर अलोक मां गमन करतो नथी, जेवी रीते तुंबी जलना योगे उंची आवे बे, तेम जीव ध मोस्तिकायना योगे लोकांत रूप ऊर्ध्व गति पामेने.

वादी आशंका करे जे के, मनुष्य शाना बलथी सात राज लोक सुधी ऊर्ध्व ग मन करे जे? जीव तो चौदमे गुएागाएो अयोगी याय जे. एनो उत्तर दिये जे के जेम धनुष्यथी जे बाएा ढूटे जे. ते पूर्व जोरना बलथी चालेजे. तेने वचमां बीजो को ई चलावनारो जोई तो नथी. ज्यारे धनुष्यमांथी बाएा ढूटे जे, ते क्रूएाने विषेज नि यमित ठेकाणे पहोतो एम समजवुं. ए विषय उपर बीजा पण त्रण दृष्टांतो हे. कुंजकारनो चक्र, अग्निनो धूमाडो, तथा एरंडीओ ए चार दृष्टांत वडे जाणी लेवुं. ५ए नास्तिकः-कर्मद्वय यया पही जीव अलोकनेविषे केम जतो नथी! जो जायतो वचमां तेने कोण रोकनारो हे?

आस्तिकः-चलन शकिने सहाय आपनारुं जे धर्मास्तिकाय इव्य, तेनुं त्यां आलंबन नथी. धर्मास्तिकाय इव्य लोक प्रमाणेज ठे. ते यकी अधिक नथी. तेथी अलोकमां जवाने जीव तथा एजलनी गति थती नथी.

६० नास्तिकः-कर्मोनो क्य करीने सिद्धावस्थाने पामेजां जे सिद्ध जीवो ते सिद्ध केत्रे समश्रेषीए जायते. पण स्थानांतरनेविषे जता नथी तेवुं कारण हुं?

आस्तिक'--ते समयनेविषे कोई प्रेरक नथी. प्रेरणाविना चकन्रमण थाय नही, तेथी सिद्दना जीवो समश्रेणीए सिद्धसिला उपर जायते.

६१ नास्तिकः-सिदने शरीरनो अजाव थायते. त्यारे अवगाहना केम कही ते? ञ्चास्तिकः-जेम ढारानुं वासए बनाववाने अर्थे प्रथम तेना जेवो मेएनो आ कार करवो पडेबे. तेमां ते रस छोत्याथी ते धातुनो तेवो छाकार थायबे. ते वालण मेणथी बूटूं कखा पढी पण मेलनो आकार थायढे. कदाच मेल गाली नाखीए तो पए ते आकारपणुं जतुं नयी, केमके वासएानो आकार जे कायम रहेन्ने. ते पण ते मेणना आकार जेवोज ने; तेथी आकारपणुं कायम रहेने. तेम जीव जे शरीराकारे थयोडे. ते शरीरनो अनाव यया पडी पण सिद्ध पुरु षनो आत्मा ते शरीरनी अवगाइनारूपे रहेने. एटले आजखाने अंते जेवो सि दना शरीरनो आकार रहेने. तेवोज जीवना प्रदेशोनो अरूपी आकार रहेने. ६२ नास्तिकः--जेम जलमां जल मले ते एकरूपे थई जायते. जिन्नता देखा ती नथी, तेम अनंत सिद एकरूपे थई रहेने के चेतन इव्यपणुं जुड़ं जुड़ं ने. आस्तिकः-- ज्यारे जलना बिंडुओ मलीने एक जलनो पिंम याय; त्यारे एक ज जल कहेवायते. पण ज्यारे जलना बिंड जुदा जुदा होय त्यारे बिंड कहेवा यते. एक जल कहेवाय नही. तेम सिद पर्ऐ सर्व एकज ते: परंतु चेतन इ व्ये करी सर्व जिन्न जिन्न जे. ते उपर दृष्टांत: जेम अनेक शीपीओथकी उत्पन्न थएला अनेक मोतीओ जुदा जुदा होयने, तेओमांना केटलाएक लईने एक मोटो ढगलो करिये. ने पढी तेत्रो विषे विचार करिये के ए ढगलामां एकता अनेकता ग्रुं बे? तो तरत जणाज्ञे के ते मोतीओ उज्वलता गुएरूपे सर्व एक बे. पण

आकाररूपे सर्व जुदा ठे. तेम सिद्धो सर्व सिद्धतारूपे तो एक ठे. पण चेतन इव्य रूपे जुदा ठे, एविषे धाच्यना पुंज वगैरे घणा दृष्ठांतो ठे तेथी विचारी खेवुं. वली सर्व सिद्धोनुं सिदरूपपणुं एक सरखुं होवाथी जाति वाचकपणे तेओ एकज कहेवाय; पण इव्यपणे अनंता कहेवायठे, माटेज जगतमां एवी वदंता ठे के, "प्रचु एकमां अनेक ठे, अने अनेकमां एक ठे" कोई सिद्धमां मोटा नाहनाप णुं नथी, सर्व समान ठे. मोटामां मोटापणुं तेनी पोतानी अपेक्ता ए नथी थतुं पण बीजा नाहनानी अपेक्ता ए थायठे, मोटो पोताना खरूपे करी छुं मोटापणुं पामेठे, जो मोटो कहेछुं तो कोई काले नाहानो यवानो संजव यशे ! अने नहा नो थयाथी खरूपमां अपूर्णता थशे, माटे सिद्ध बधा सरखा ठे. एम जाणवुं. अने सिद्ध जनना कर्मना छंश सर्व क्त्य थई गयाथी पुनरपि जगतमां आगमन यतुं नथी. जेम छंजेला अनाजना दाणाने प्रथवीमां वावीए तो ते छगे नही; तेम सिद्ध पणपाढा संसारीजीव थाय नही. केमके संसारमां आववुं कर्म विना थतुं नथी. ६३ नास्तिक:- ईश्वर पृथ्वीनो नार छतारवाने अर्थे अवतार धारण करेठे ए वात सख ठे के मिष्या ?

आसिकः – ईश्वरने तो कोई शत्रु मित्र जाव नथी। तेम ढतां दानवने मार वासारु तथा देवताओने निर्जय सुखी करवासारु अवतार धारण करे तो दानव शत्रु अने देवता मित्र उस्था के नी! जेने शत्रु मित्र जाव होय तो ते ईश्वर शानो ! अने दानवोने प्रथम उत्पन्न शासारु कस्था के जेओने मारवासारु पो ताने माताना उदरमां आवी नाना प्रकारनी वेदनाओ सहन करी संयामादिक आपत्ति वेठवी पडी ! वली दानव अने देवताओनो ईश्वर तो एकज ढे, सर्वमां तेज ईश्वरनी कला ढे. तेम ढतां दानवनी उत्पत्ति करी तेथी ईश्वरमां अज्ञानपणुं आवशे संसारमां त्रण प्रकारना जीव होय ढे. एक धर्मी, बीजा पापी, त्रीजा महापापी जे कोईने मारे नही ते धर्मी कहेवायढे. जे बीजा जीवने मारे ते पापी कहेवायढे ने जे पोताना जीवनो घात करे ते महापापी कहेवायढे. ईश्वरे देव तथा दानव वगैरेनी उत्पत्ति करी तेमां पोते छंशरूपे प्रवेश कस्वो ढतां तेओने मास्वायी आत्मघाती ठरहो ने तेम ढस्यायी महापापी कहेवाहो.

६४ नास्तिकः-स्नाने करीने झुद्ध खवुं ए मुक्तिनुं छंग हे.

आस्तिकः-पेटमां रोग होय ने शरीरनी बाहेर खेप लगाडीए तो ते रोग कदी मटे नहीं। तेम आत्माना कर्म विकार ते शरीर द्यचिथी कोई काले जाय नहीं. ए उपर दृष्टांत कहुं हुं. जेम कोई मोटी हवेलीमां बालक मूतखो होय ते छुद करवा ने जेटली जूमि बगमी होय तेटलीज धोवी जाइये. तेम शरीररूप हवेली कर्में करी मलीन थई होय तेटलीज तपसायें करी छुद करवी. पण आखा शरीरने स्नान, मज्जन, स्वज्ञ वस्त्रादिक, तथा सुगंध्यादिक करवानुं कांई काम नथी; स्नान तो सोल शृंगारमांनो प्रथम शृंगार जे.ते सर्व शृंगारनो त्याग करे त्यारे ब्रह्मचारी कहेवाय. कर्म निर्जराने अर्थे सुनिने ब्रह्मचर्य व्रत पालवो कह्यो तेथी पण स्नान करनुं नही एनुं सिद्ध थाय जे.

६५ नास्तिकः-यह इनिया सब खुदाने पैदा करी है.

आस्तिकः-यह इनिया सब खुदाकी करी होवें तो जो खुदाका बंदा हरवखत खुदाकी बंदगी करें, कुरान बांचे, नमाज करे, औ रोजा रखे, तिसीकूं इनीयांकी नियामते जैसेकी आल औलाद औ पैसा वगैरा मिलना चाहिये; औ हिंड व गैरा सब फकीरके माफक होना चाहिये. तैसे तौ नही होता है. दूसरे जी अ डी सब्तीनत वाले आंखोके सामने मौजूद है. इस वास्ते ये बात रास्त नही है जो होवे है सो सब तकदीरसें होवे है.

६६ नास्तिकः - आ संसार रामे उत्पन्न कस्रो बे.

आसिकः जो आ जगत रामनुं उपजावेलुं होय. तो जेओ हमेश रामनी च कि करे जे. पुराण वांचे जे. वंदना करे जे. तथा एकादशी आदिक व्रत राखे जे तेओने सर्व इव्यादिक संपत्ति मलवी जोये. बीजाओने विपत्ति होवी जोये. ते म तो दीठामां आवतुं नथी. बीजा मुसलमानादिक पण महा संपत्तिवान दीठा मां आवे जे तेथी बधुं कर्माधीन जे.

इ ९ नास्तिकः – अंगदान (कन्यादान) दीधाथी पुण्य थाय जे. केमके. स्त्रीपु रुष इलीमली मैधुन कियाना सुखने पामे जे. तेनुं फल दानदेनाराने थायजे.

आसिकः—नाई, तारा जेवो पूर्वपद्वी तो एके मत्यो नथी. तें तो आडो आंक वात्यो. पण नाई, मैथुन किया तो सर्व थकी आग्रु हे; यवन लोको पण इमाम ना दशरानी किया करेंग्रे; त्यारे मैथुन सेव्याना वस्त्र पहेरीने करता नथी केमके ते वस्तने तेओ नापाक कहेग्रे. तेमज हिंडुओ देवपूजामां, व्रतने दिवशे तथा तीर्थयात्रामां मैथुननो त्याग करेग्रे. जे मुमुक्तु (मुक्तिनी इज्वा करतो होय) तेणे प्रथम मैथुननो त्याग करेग्रे. जे मुमुक्तु (मुक्तिनी इज्वा करतो होय) तेणे प्रथम मैथुननो त्याग करवो. ए रुत्य नरकनो हेतु होवाथी सर्वथा निंदनीक ग्रे. इति श्री आस्तिक नास्तिकनो संवाद संक्तिप्त रूपें समाप्तः

सम्यक्त सडसठबोल सजाय.

॥ उँ श्री जिनाय नमः ॥

ञ्रय श्रीयशोविजयजी उपाध्यायकृत सम्यक्तना

सडसठ बोलनी सजाय प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥ ॥ सुकृत वल्लिकादंबिनी। समरी सरसति मात ॥ समकित सड सत बोलनी। कहिशूं मधुरी वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरुतणो । पज्जुवयार न थाय ॥ जव कोडोकोडे करी । करतां सर्व उपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरियान दिये। समकित विण शिवशर्म ॥ तेमाटे समकित वडूं। जाणो प्रवचन मर्म ॥३॥ दर्शन मोह विनाशथी। जे निर्मल गुएताए ॥ ते निश्चय समकित कह्यो । तेइना ए छहिगणा ॥ थ ॥ ॥ ढाल ॥ देइ देइ दरसण छापणू, एदेशी ॥ ॥ चत्र सदहणा तिलिंग हे। दशविध विनय विचारोरे ॥ त्रिण ग्रुडि पण दूषण । आत प्रनाविक धारोरे॥५॥त्रूटक॥प्रनाबिक अड पंच नूषण । पंच लक्षण जाणियें॥ षट् जयण षट् आगार नावन । बहिहा मन आणियें 🕅 ५ ॥ षट वाण समकित तणां सडसव । नेद एह उदार ए॥ एहनो तत्व विचार करतां। लहीजे जवपार ए॥६॥ ढाल ॥ चढु विह सदहणा तिहां। जीवादिक परमछोरे॥ प्रवचनमां जे नाषिया। लीजे ते नो अज्ञोरे॥ ७॥ त्रूटक॥ तेहनो अर्थ विचार करिये। प्रथम सद्दहणा खरी॥ बीजी सदहणा तेहना जे। जाण मुनिगुण जवहरी ॥ संवेग रंग तरंग जीले । मार्ग ग्रुइ कहे बुधा ॥ तेहनी सेवा कीजिये जिम । पीजिये समता सुधा ॥ ७ ॥ ढाल ॥ सम केत जेएो यही वमिऊं । निन्ह्व ने छह्रढंदारे ॥ पासहाने कुशीलिया ते । वेष विमंबक मंदारे॥ ए॥ त्रूटक॥ मंदा छनाएी दूर ढंमो। त्रीजी सदद एा यही॥ परद र्शनीनो संग तजिये ो चोथी सदहणा कही ॥ हीणातणो जे संग न तजे । तेहनो गुण नवि रहे ॥ ज्यूं जलधि जलमां नव्यूं गंगा । नीर जूणपणू लहे॥ १ ण ॥ ढाल ॥ कपूर होवे अति जज़ दूरे; एदेशी ॥ ा त्रण लिंग समकित तणारे ! पहिलो अतत्र्यनिलाष॥ जेहवि श्रोता रस लहेरे। जेवो साकर इाखरे। प्राणी, धरियें समकित रंग। जिम लहिये सुख अनंग रे। प्राणी, टेक ॥ ११ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवस्तोरे चतुर सुरो सुरगीत॥ तेहथि रागे अति घणो रे। धर्म सुल्यानी री त रे । प्राणीण ॥ १२ ॥ जूख्यो अटवी जतस्वो रे । जिम दिज येवर चंग ॥ इन्ने तिम जे धर्मने रे। तेहिज बीजूं लिंग रे। प्राणी० ॥ १३ ॥ वैयावच गुरु देवतुं

रे। त्रीज़ुं लिंग जदार ॥ विद्या साधक तणि परे रे । आलस नविय लगार रे । प्राणीणारधा ॥ ढाल ॥ प्रथम गोवालातणे जवेजी, ए देशी ॥ ॥ अरिहंत ते जि न विचरता जी ॥ कर्म खपी हुआ सिद ॥ चेइय जिए पडिमा कही जी । सूत्र सिदांत प्रसिद्ध । चतुर नर, समजो विनय प्रकार । जिम लहिबे समकित सारे । चतुर०॥ १५ ॥ धर्म खिमादिक जाखेओ जी। साधु तेहना गेह ॥ आचारय आ चारना जी। दायक नायक जेह ! चतुर० ॥ १६ ॥ उपाध्याय ते शिष्यने जी ! सूत्र जणावण हार ॥ प्रवचन संघ वखाणिये जी । दरसण समकित सार । च तुर० ॥ १९ ॥ नगति बाह्य प्रतिपत्तिथी जी । इदय प्रेम बहुमान ॥ ग्रंण श्रुति अवगुण ढांकवा जी। आशातननी हाण। चतुर०॥ १०॥ पांच जेद ए दश त णो जी। विनय करे अनुकूल ॥ सीचे तेद् सुधा रसें जी। धर्म वृद्धनूं मूल । चतुर ॥ ॥१ ए॥ ढाल ॥ ॥ धोबीडा तूं धोए मननूं धोतीयू रे ॥ ॥ एदेशी ॥ ॥ त्र ए ग्रुदि सम कितत एी रे । तिहाँ पहिली मन ग्रुदि रे ॥ श्री जिनने जिनमत विना रे । जूव स कल ए बुदि रे॥ चतुर विचारो चित्तमां रे। टेक ॥ २० ॥ जिन जगतें जे नवि ययुं रे। तेबीजाथि नवि थाय रे॥ एवुं जे मुख नाखिये रे। ते वचन ग्रुदि कहिवाय रे। च तुर०॥ ११॥ वेद्यो जेदा रे। जैसहतो अनेक प्रकाररे ॥ जिए विंए पर सुर नवि नमे रे। तेहनी काया ग्रुद्ध उदाररे। चतुर० ॥११॥ ॥ढाल ॥ मुनि जन मारगनी, ए देशी ॥ ॥ समकित दूषण परिहरो । तेमां पहिली ने शंका रें ॥ ते जिन वचन मां मत करो ॥ जेइने समनूप रंका रे । समकित दूषण परि इरो ॥ टेक ॥ १३॥ कंखा कुमतनी वांढना । बीजूं दूषण तजिये ॥ पामी सुरतरु परगडो । किमबाजल जजिये॥ समकितणा २४॥ संशय धर्मना फलतणो। वित्तिगिज्ञा नामे ॥ त्रीजूं द्रषण परिहरो। निज ग्रुन परिणामे ॥ समकित० ॥ २५ ॥ मिथ्यामति गुण वर्णेनो । टालो चोथो दोष॥ उन्मारगि शुएतां हुवे । उनमारग पोष ॥ समकित० ॥ २६ ॥ पांचमो दोष मिच्यामती । परिचय नवि कीजे ॥ इम ग्रुज मति अरविंदनी । ज ली वासना लीजे ॥ समकित० ॥ २९ ॥ ॥ ढाल॥ नोलिडा इंसारे विषय न रा चीये, ए देशी ॥ आत प्रचाविक प्रवचनना कह्या । पावयणी धुरि जाण ॥ व र्त्तमान श्रुतना जे अर्थनो । पार लहे गुए खाए ॥ धन धन शासन मंमन मु निवरा । टेक० ॥ २० ॥ धर्म कथी ते बीजो जाणिये । नंदिखेण परि जेइ ॥ नि ज उपदेशेरे रंजे लोकने । जंजे हृदय संदेह । धन धन० ॥ १९॥ वादी त्रीजोरे त र्क निपुण जुल्पो । मझवादी परि जेहु ॥ राजदारेरे जयकमला वरे । गाजंतो जिम

सम्यक्त सडसठबोल सङाय.

मेह । धन धन । । ३० ॥ जड्बाहु परि जेह निमित्त कहे । परमत जीपण का ज ॥ तेह निमित्तीरे चोथो जाणिये । श्री जिनशासन राज । धन धन०॥ ३१॥ तप गुए जपर रोपे धर्मने । गोपे नवि जिन आए ॥ आश्रव लोपेरे नविकोपे क दा। पंचम तपसी जाए। धन धन०॥ ३२॥ ढठो विद्यारे मंत्र तणो बलि। जिम श्रीवयर मुणिंद ॥ सिद्ध सातमोरे खंजन योगथी । जिम कालिक मुनि चंद । धन धन०॥ ३२॥ काव्य सुधारस मधुर अर्थ जखा। धर्म हेतु करि जेह ॥ सिदसेन परि नरपति रीजवे । अन्नम वर कवि तेद्र । धन धनण् ॥ ३४ ॥ जव नवि होवे प्र नाविक एहवा। तव विधि पूरव अनेक॥ जात्रा पूजादिक करणी करे। तेह प्रजावि क ढेक। धन धन गा इ ए ।।ढाला। सतीय सुनर्जनी। ए देशी ॥ ॥ सोहे समकित जेहथी । सखि जिम आजरणे देह ॥ जूषण पांच ते मन वस्यां । सखी मन व स्यां । तेमां नही संदेह । मुफ समकित रंग अचल होयो । टेक० ॥ ३६॥ पहि लुं कुशलपणुं तिहां । सखी वंदन ने पच्चखाण ॥ किरियानो विधि छति घणो । सखी आचरे तेद सुजाए । मुफ० ॥ ३७ ॥ बीज़ूं तीरथ सेवना । सखी तीरथ तारे जेइ ॥ ते गीतारथ मुनिवरा । सखी तेइस्रं कीजे नेइ । मुफण ॥ इण ॥ ज गति करे गुरु देवनी । सखी त्रीजूं नूषण होय ॥ किणहि चलाव्यो नवि चले । सखि चोष्ठं नूषण जोय। मुज० ॥ ३७॥ जिनशासन अनुमोदना। सखी जेह थी बहु जन हुंत ॥ कीजे तेइ प्रनावना । सखी पांच नूषणनी खंत । मुक्र । ढाल ।। इम नवि कीजे हो, ए देशी ।। ।। लहरण पांच कह्यां स 11 8 0 11 -मकित तणा । धुर उपशम अनुकूल । सुरुण नर ॥ अपराधी सूं पण नवि चि तथकी। चिंतवियें प्रतिकूल। सुग्रण नर। श्री जिननाषित वचन विचारिये। टेक० ॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे इःख करि लेखवे। वंजे शिवसुख एक ॥ सु० ॥ बीज़ूं लक्ष्ण ते अंगीकरे । सार संवेग सुंटेक । सुण श्रीजिनण ॥ ४२ ॥ नारक चारक स मनव जनग्यो। तारक जाणिने धर्म। सु०॥ चाहे निकलवुं निर्वेद ते। त्रीज़ूं ल इरण मर्म । सु० । श्री जिन० ॥ ४३ ॥ इव्यथकी डुःखियानी जे दया । धर्मदी णानी नाव । सु॰ ॥ चोषुं लद्दण अनुकंपा कही । निज शकते मनव्याव । सु० श्रीजिन० ४४ ॥ जे जिन नाख्युं ते नहि अन्यथा । एहवो जे दृढ रंग। सु० ते आस्तिकता लक्ष्ण पांचमुं। करे कुमतिनो ए जंग। सु०। श्रीजिन० ॥ ४५॥ ॥ ढाल ॥ जिन जिन प्रति बंदन दिसे, ए देशी ॥ पर तीर्थी परना सुर तेणे । चै त्य ग्रह्मां वलि जेइ ॥ वंदन प्रमुख तिहां नवि करवुं । ते जयणा घट जेय रे।

जविका, समकित यतना कीजे। टेकणा धदा वंदन ते कर जोडन कडि्ये। न मन ते शील नमाडे । दान इष्ट अन्नादिक देवूं । गौरव जगति देखाडेरे । जवि का०॥ ४९॥ अनुप्रदान ते तेइने कहिये। वार वार जे दान॥ दोष कुपात्रे पात्र मतिये । नहि अनुकंपा मान रे । जविकाण् ॥ ४७ ॥ अए बोलावे जेद जा खवूं। ते कहिये आलाप ॥ वार वार आलाप जे करवो । ते कहिये संलाप रे। नविकाण ॥४ए॥ ए जयणायी समकित दीपे । बलि दीपे व्यवहार ॥ एमां पण कारणथी जयणा। तेना अनेक प्रकार रे। नविकाणा ५णा ढाला ललना नीदेशी ॥ ग्रुद्ध धरमधी नवि चले । अति हढ गुएा आधार ललना ॥ तो पण जे नवि तेहवा । तेहने एह छागार । ललना ॥ ५१ ॥ बोव्युं तेहवुं पालिये । दंति दंत सम बोल । ललना ॥ सज्जनना इर्जन तणा । कइप कोटिने तोल । ल लना।।बोणापशाराजा नगरादिक धणी । तस शासन अजियोग। जलना । तेद्दथी कार्त्तिकनी परे। नहि मिथ्यात संयोग। ललना ।।बो०।।ए३।।मेलो जननो घए कह्यो। बल चोरादिक जाए। ललना॥ षेत्रपालादिक देवता। तातादिक गुरु ठाए। ल लना।।बो०।।ए।।।वृत्ति डर्लन आजिविका । ते नीखण कंतार । जलना ॥ ते हेते दू षण नहीं। करतां अन्य आचार। जलना ॥बोणाययाढालाराग महहार॥ जाविजे रे समकित जेहथी रूछडूं॥ते नावनारे नावो मनकरि परवडूं ॥ जो समकित रे ताजूं साजूं मूल रे ॥ तो व्रत तरु रे दीये शिवपद अनुकूल रे॥ एदान्नटका अनुकूल मू ल रसाल समकित । तेहविएा मति छंध रे ॥ जे करे किरिया गर्व जरिया । तेह जूनो धंध रे॥ए प्रथम जावना गुणो रुछडी। सुणो बीजी जावना॥ बारणूं समकि त धर्मपुरनुं। एइवोते पावनागय आढालात्रीजी जावना रे समकित पीन जो हढ स ही ॥ तो मोटो रे धर्म प्रासाद मगे नही ॥ पाइये खोटे रे मोटो मंमाण न ज्ञोजी ये ॥ तेह कारण रे समकितसूं चित थोनीयें ॥एणात्रूटका। थोनीयें चित नित एम जावी । चोथी जावना जाविये ॥ समकित निधान समस्त गुएनुं । एइतुं मन ला वियें ॥ तेह विण बूटा रत सरिखा । मूल उत्तर गुण सवे ॥ किम रहे ताके जेह हरवा। चोर जोर जवे जवे ॥एए॥ढाला जावो पंचमी रे जावना सम दम सार रे ष्ट्रयवी परे रे समकित तस आधार रे ॥ ढठी जावना रे जाजन समकित जो मि ले॥ श्रुत शीलनो रे तो रस तेहमां नवि ढले॥६०॥त्रूटक॥नवि ढले समकित जाव ना रते । अमियसम संवरतणो ॥ घट नावना ए कही एहमां । करो आदर अ ति घणो ॥ इम नावता परमार्थ जलनिधि । होइ निनु जकजोल ए ॥ घन पवन

www.jainelibrary.org

पुण्य प्रमाण प्रगटे। चिदानंद कलोल ए॥ ६१ ॥ढालाजे मुनिवेष सके नवी ढंमी ए देशी॥ वरे जिहां समकित ते यानक । तेहना षट विध कहिये रे॥ तिहां पहिलुं यानक क ने चेतन । लक्तण आतम लहियें रे ॥ खीर नीर परें पुजल मिश्रित । पण एइथी जे अलगो रे॥ अनुनव हंस चंच जो लागे। तो नवि दीसे वलगो रे॥ ६ शा बीज़ूं थानक नित्य छातमा । जे छानुनूत संनारे रे ॥ बालकने स्तन पान वासना । पूरव जब अनुसारे रे ॥ देव मनुज नरकादिक तेइना । जे अनित्य पर्याय रे ॥ इव्ययकी अविचलित अखंफित । निज गुएा आतमराय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजूं यान क चेतन कर्ता। कर्मतणे वे योगे रे॥ कुंजकार जिम कुंजतणो जे । दंमादि क संयोगे रे ॥ निश्चयथी निज गुणनो कर्त्ता । अनुपचरित व्यवहारे रे ॥ इव्य कर्मनो नगरादिकनो । ते उपचार प्रकारे रे ॥ ६४ ॥ चोथूं थानक वे ते जोका । पुख पाप फल केरो रे ॥ व्यवहारे निश्चय नय दृष्टें । छंजे निज गुण नेरो रे ॥ पं चम थानक ढे परम पद । अचल अनंत सुख वासो रे ॥ आधि व्याधि तन म नथी लहिये । तसु अनावे सुख खासो रे ॥ दय ॥ ठतुं थानक मोक्ततणू ठे । सं यम ज्ञान जपायों रे ॥ जोसहिजे लहिये तो सघले । कारण निःफलयायो रे ॥ कहे ज्ञान नय ज्ञानज साचूं। ते विर्ण जूठीकिरिया रे ॥ न लहे रूप्न रूप्न जाणी । सीप जाणी जे फिरियारे ॥ ६६ ॥ कहे किरियानय किरियाविण जे । ज्ञान तेह सूं करशे रे॥जल पेसी कर पद न इलावे । तारू ते किम तरसे रे॥ दूषण नूषण बे इहां बहुला । नय एकेकने वादे रे ॥ सिद्धांति ते बेहु नय साधे । ज्ञानवंत छ प्रमादे रे ॥ ६९ ॥ इणि परे सडसव बोल विचारी । जे समकित आराहे रे ॥ राग देष टाली मन वाली । ते समसुख अवगाहे रे ॥ जेहनो मन समकितमां निश्वल । कोइ नही तस तोखे रे ॥ श्री नय विजय विद्युध पय सेवक। वाचक ज स इम बोले रे ॥ ६० ॥

॥ इति श्री सम्यक्त सडसठबोल सज्जाय समाप्तः

रुरह

उँ श्री जिनाय नमः इप्रध श्री ज्ञृंगारवैराग्यतरंगिणीप्रारंजः

संस्कृतटीकाना कत्ती आरंजमां मंगलाचरण करेने.

उपजातिरुतं ॥ श्रीपार्श्वनायं प्रणिपत्य जक्तया पुरि स्थितं श्रीफलवर्धिकायां ॥ शृंगारंवैराग्यतरंगिणी या व्याख्याननाव्या क्रियते मया सा ॥ १ ॥

अर्थः- श्रीफलवर्दिकानामनी पुरीनेविषे स्थित श्रीपार्श्वनाय जगवानने ज किवडे प्रणाम करीने शृंगारवैराग्यतरंगिणी नदीनी नाविकारूप व्याख्या हुं करुंहुं. अवतरण-श्रीसोमप्रजाचार्य, वैराग्यनी वासनावडे शृंगारने दूषित करनार उ तां छा शृंगारवैराग्यतरंगणी नामनो यंथ करवानी कामनाएकरी स्त्रीतुं रूप निं दा करवा योग्य ठे एवुं प्रतिपादन करेठे. ॥ १ ॥

> र्गार्दूलविकीडितंग्रतम् ॥ धर्मारामदवाप्तिधूमलहरीलावण्य लीलाजुप स्तन्वंग्या यमितान्विलोक्य तदहो वालान्किमु कंठसे ॥ व्यालान् द्र्रानतोपि मुक्तिनगरप्रस्थानविव्वक्त

मुक्तिरूप नगरीना मार्गमां स्त्रीना चालरूप सर्प जो आडे आवे एटले तेओमां मोह उत्पन्न थाय तो मोटो विन्न थायले, माटे ए सर्वथा खाग करवा योग्य ले. उपर कह्युं के, स्त्रीओना बांधेला वालने व्यालरूप जाएा; ए ठेकाएो कविए च मत्कार राख्यो ले के, वालशब्दमां यकार मव्याथी व्यालशब्द थायले; माटे वा लने व्याल कहेवुं योग्य ले. एने श्लेषालंकार कहेले.

आ वृत्तमां, सर्भ चालती वखते जेम वांकोचूको थई जायने; तेम स्वीना के श विंटडीआला होय तेने कविलोको श्रेष्ठ कहेने. अने जेम सर्भनो रंग अति कालो होयने, तेम स्वीना अति काला रंगवाला वाल होय, तो ते श्रेष्ट कहेवाय ने. एवी रीते वालनी जे श्रेष्ठता ने, ते विषयक शृंगार रस दर्शाव्योने, अने जे म मार्गमां सर्भ आप्तो आवे तो कार्यसिधि याय नही; तेम गुएास्थानक निसर एी चडतां पुरुषने वचमां स्वीना केशनो मोह उत्पन्न थयो तो तेथी श्रेणी आरो हनी सिदि यती नथी; एवी रीते वालनी जे निर्नर्त्सना कीधीने ते विषयक वैरा रय रस दर्शाव्योने. ॥ १ ॥

ये केशा लसिताः सरोरुहृहशां चारित्रचंडप्रजाश्वंशां

नोदसहोदरास्तव सखे चेतश्चमत्कारिणः ॥ क्वेशान्मू

तिमतोऽवगम्य नियतं दूरेण तानुत्सृजेनेचित् कष्टपरंप

रापरिचितः शोच्यां दशामेष्यसि ॥ १ ॥

अर्थः- हे सखा, कमलपत्रना जेवां नेत्रोवाली स्त्रीना देदीप्यमान केश, चा रित्ररूप चंइनी ज्योतिनो नाश करवाविषे मेघजेवा छे; अने जे तारा अंतःकरणमां चमत्कार उत्पन्न करेछे, तेओ मूर्त्तिमान चक्रुरिंडियगम्य क्वेश छे; एम निश्रय जाणीने दूर नाखी दे. जो एओनो तुं त्याग करीश नहीं, तो तुं कष्टपरंपराए उक्त थयोथको शोक करवायोग्य अवस्थाने पामीश. आ श्लोकमां स्त्रीना केशने क्वेशवुं सादृश्य कक्षुंछे, ते आवी रीते " लसित " ए शब्द मूलमां छे, एनो अर्थ जकारे करी सित केहेतां उक्त, केशशब्दनो क्वेश शब्द थायछे.

आ वृत्तमां, मेधना वर्शनी साथे स्त्रीना केशनी बराबरी करीते. जेम आ काशने विषे मेध अति शोजायमान दीवामां आवेते, तेम स्त्रीना मस्तकनेविषे केश अति लसित एटले देदीप्यमान दीवामां आवेते. स्त्रीनां केश जे चलकता हो य ते श्रेष्ठ कहेवायते. ए मुख्य केशनी श्रेष्ठतानो विषय कहेतां अंतरगत ते केश धारण करनारी स्त्रीनां नेत्रोने कमलपत्र जेवां कह्यांग्रे ; ए बधो शृंगार रस जाण वो. अने स्त्रीना एवा केश जोईने पुरुषना अंतःकरणमां मदनादि विकाररूप चम त्कार उत्पन्न थायग्रे, माटे ते क्वेशरूप कह्याग्रे; केमके, कामादि विकारो क्वेशरूप कह्याग्रे, क्वेशो अंतरना विषय होवाथी चट्हना विषय नथी, तेओएज जाणे केश रूप मूर्ति धारण करी होय नी ! एवी उत्प्रेक्ता थायग्रे. ए कारणथी स्त्रीना देदीप्य मान केशने क्वेशरूप जाणीने तेनो तुं त्याग कर; एवडे वैराग्य रस दर्शाव्योग्रे.॥शा

वसंततिलकारतम्॥ ये शुद्रबोधशशिखंडनरादुचंमाश्चित्तं

हरंति तव वक्रकचा हज्ञांग्याः ॥ ते निश्चितं सुकृतमर्त्य

विवेकदेहनिर्दारणे ननु नवककचाः रुफुरंति ॥ ३ ॥ अर्थः हे पुरुष, निर्मज ज्ञानरूप चंइनुं यासन करवाविषे, स्त्रीना वांका के श, राहु जेवा क्रूर बे. ते तारा खंतःकरणमां चमत्कार उत्पन्न करेबे. अर्थात् रा हु जेम चंइनो यास करेबे, तेम ए वांका केश तारा ज्ञाननो नाश करनारा बे. अने ते जाणे सुरुतरूप मनुष्यना विवेकरूप देइनुं विदारण करवाने नवी कर्वत ज होयनी ! ए उत्प्रेक्ता बे. एमां " वक्त कच " एटले वांका केश ते " नवकक च " एटले नवी करवतना जेवा बे. एमकह्याथी श्लेषरूप चमत्कार जाणवो.

आ उत्तमां, स्त्रीना वांका केश होय ते श्रेष्ट कह्याने स्त्रीना वक्तकेश पुरुषना मनने मोहित करेने, एषीज श्रंतःकरणमां चमत्कार उत्पन्न करेने एम कह्युं ने, माटे ए शृंगार रस ने ; अने स्त्रीना वांका केशनुं दर्शन चतांज पुरुषनुं मन विव्हज चायने, देहनी पए शुद्धि रहेती नची. अपने झाननो नाश घई जायने तेथी तेओने राहुरूप कह्याने, तेमज विवेकरूप शरीरने कापवाने नवी कर्वत जेवा कह्याने, एवा जाणीने तेओनो तुं त्याग कर, ए वैराग्य रस जाएवो. ॥३॥

उपजातिरुत्तम्॥व्अलंकृतं कुंतलजारमस्या विलोक्य लोकः कुरुते प्रमोदम्॥वैराग्यवीरच्ठिडरं डरंत ममुं न किं पर्यसि कुंतजारम्॥४॥

अर्थः-हे पुरुष, पुष्पादिकेकरी गूंथेला स्त्रीना बांधेला केशोनो समूह एटझे आंबोडो जोईने लोक आनंदने पामेळे; परंतु ए वराग्यरूप वीरनुं ळेदन करणा रुं प्रास नामक छःसह शस्त्र ळे. एम तूं कां जोतो तथी? अर्थात् स्त्रीना अलंकत "कुंतलजार" एटखे जे शएगारीने बांधेला केश ळे, ते कुंतजार एटखे प्रास नाम क शस्त्रज ने एम जाणवुं - आ तेकाणे अलं एटले लकाररहित, रुत एटले करे लो, जे कुंतलनार शब्द, तेनो कुंतनार एवो शब्द थाय : ते योग्य ने.

आ उत्तमां, पुष्पादिकेकरी ग्रृंगारेलो स्त्रीना केशोनो आंबोमो पुरुषने एवो रम एथि जागेने के, ते जोईने वैराग्यवान पुरुषनो वैराग्य पण मगी जायने; एवी श्रेष्ठता कहीने, ते शृंगाररस ने. अने ते डुःखे करीने पण सहन न थाय एवा प्रास नामक शस्त्ररूप ततां वैराग्यनो नाशकरनारो ने; माटे तेनो त्याग कर; ए वैराग्य रस ने. ॥ ४ ॥

वसंततिलकारटत्तम् ॥ कस्तूरिकातिलकितं तुलिताष्टमीं इ

चित्ते विचिंतयसि सौख्यनिमित्तमेकम्॥ वामञ्जुवां यदलिकं

तदहो अलीकमित्याख्ययेव परया प्रवदंति रूपम् ॥ ॥

अर्थः-हे पुरुष, जेमां कस्तूरीनो तिलक कस्त्रोठे, तेथी अष्टमीना चंइ जेवी जेनी सुंदर चुकुटी देखाय ठे, ते अदितीय सौख्यनुं कारण ठे, एवुं तुं अंतःकरण मां चिंतन करेठे, ते व्यर्थ ठे. अहो इत्याश्वर्ये ! ते स्त्रीओनुं अलिक एटले जे ल लाट ठे, तेने पंडित लोको अलीक एटले मिष्या कहेठे. अर्थात् अलिक एवां बे रूप ललाट वाचक ठे; तेओमांना पहेला रूपने बीजा रूपे करी जाण, एटले ल लाटने मिण्या जाण; ए पण श्लेषज ठे.

आ रूसमां, अप्टमीनो चंइ अर्थगोलाकार बतां बन्ने खूणाए सरखो देखायढे, तेना वचमां इयाम वर्णना चांदलाना जेवुं देखायढे, तेथी ते अति शोजित लागेढे, तेम स्त्रीवुं पण वांकुं ललाट बतां तेमां कस्तूरीनो तिलक कस्तो होग, तो अति म नोहर देखायढे, ते जोईने पुरुषना मननेविषे घणो आनंद थायढे ; ते ठूंगाररस ढे. अने ए जे कस्तूरीना तिलक सहित स्त्रीवुं ललाट अति शोनायमान देखायढे, तेमां कांई अर्थ नथी, किंतु अर्थ ढे; माटे तेनो त्याग करवो ए बराग्यरस ढे. ॥५॥

उपजातिरुत्तम् ॥ न भ्रूरियं पंकजलोचनायाश्चकास्ति जृंगाररसै कपात्रम्॥जूः किंलसौ साधुतरा प्रसूते निबंधनं मोहविषडुमस्य॥६॥

अर्थः∽दे पुरुष, कमलपत्रना जेवां लोचनवाली स्वीनी शोनायमान चुकुटी *बे,* ते जाण गृंगाररसनुं एक पात्रज बे; ते अतिशय श्रेष्ट नूमि बे; केमके, एथकी मोह रूपविषना वृद्दनो प्राप्तनीव उत्पन्न थायबे; अर्थात् चू एटले चुकुटी, ते साधुतरा जू एटले जूमि थायते, एम कह्युं; तेमां छावी रीते श्लेष तेः- सा एटले प्रसिद, धुतरा एटले रेफरहित एवो, जू शब्द जूमिवाचक शब्द ययो ते योग्य ते. आ तत्तमां, स्तीनी जे शोजायमान ज्रुकुटि, तेने शृंगार रसना पात्ररूपे कही ते; केमके, एने जोतांज पुरुषने मोह उत्पन्न थायते, माटे ए शृंगार रस ते; आ ने ए ज्रुकुटि नथी पए मोहरूप विवना तृद्दने उत्पन्न करनारी सारी जूमि ते, एम

कहेवाथी वैराग्य रस जाएवो. ॥ ६ ॥

मालिनी रतम् ॥ नवकुवलयदामइयामलान् दृष्टिपातान् कृत

परमदनाशान् विकिपत्यायताक्ती॥ इति वहसि मुदं किं मोह

राजप्रयुक्तान् प्रशमजटवधार्थं विद्यमून्छिपातान् ॥ ९ ॥

अर्थः- हे पुरुष, विसीर्ण नेत्रोवाली स्वीना कुवलयनी माला जेवा स्यामव र्णवाला, अन्यमदना नाश करनारा जे कटाइ, ते मारा उपर नाखेडे, एम जाणीने तूं शासारु हर्षित थायडे ? अरे, ए जे दृष्टिपात (कटाइ) डे ते प्रशम रूप शूरवी रनो वध करवा सारु मोह राजाए प्रेरणा करेला रुष्टिपात एटले तलवारना पात (या) डे; एम जाण; अंही दृष्टिपातनो रुष्टिपात आवी रीते चयो डे:- दृष्टिपात शब्दनुं विशेषण मूलमां " रुतपरमदनाशान् "डे; एनो श्लेष करी आवो अर्थ याय डे:- रुत एटले कखो, परम एटले अत्यंत, दनाश एटले दकारनो नाश ध्याधी रुष्टिपात शब्द थाय डे ते योग्य डे.

आ इत्तमां, विस्तीर्ण नेत्रोवाली स्त्री कही हे, एथी स्त्रीना विशाल नेत्रोने कवीओ ए उत्तम कह्या हे, एम जाणवुं, एवा विशाल नेत्रोना जे कटाक्त, ते कुवलयनी माला जेवा, अने अन्य मदना नाश करनारा कह्या हे; एटले जे पुरुष उपर कु वलयनी मालाना जेवा कटाक्त परे ते पुरुष बीजा गमे तेवा मदवालो होय तो पण तरत ते स्त्रीनी उपर मोहित धर्रने तेना किंकर जेवो धर्र रहेहे, अने ते पोतानी उपर स्त्रीना कटाक्त पडवा जोइने अति आनंदित थायहे, माटे ए शृंगा रस हे; अने एवो जुब्ध थएलो पुरुष मोहरूप राजाने वश थयो यको इःखी थायहे; केमके, नेत्रकटाक्त्रूप तलवारना घाएकरी तेना प्रशमरूप शूरवीरपणानो वथ थायहे. तेनो तुं त्याग कर, ए वैराग्य रस हे. ॥ ९ ॥

> शार्दूजविक्रीडितं छत्तम् ॥ तस्याः कोपपदं यदाननमहोरा त्रं स्मरन्नात्मनः संतापं वितनोषि काननमहो ज्ञाला स

खे तत्त्यजेः । एतस्मिन् वसता मनोजनमहासर्पेण दृष्टः

पुमान् कार्याकार्यविवेकशून्यहृदयः करूको न संजायते॥ अर्थः-हे स्खा, कोपनुं स्थान् जे स्त्रीनुं झानन एटले मुख, तेनुं रात्रदिवस स्म

रण करीने तूं पोताने संताप करीखे छे, अहो इति खेदे! ते आनन नथी पण कानन एट खे वन छे; एम जाणीने मूकी दे, केमके, ए वनमां रहेनारो जे कामरूप सर्प, ते जे पुरुषने दंश करेछे, ते पुरुषनो हृदय कार्याकार्य विवेकथी शून्य थई जायछे, एवो कोण छे, के जे उक्त विवेकशून्य न थाय! किंतु सर्व थायज छे. सामान्य सर्पनाविषे करीने मूर्छित थएलो पुरुष पण शून्य हृदयवालो थई जायछे, तो जेने सर्प दंश कस्वो होय तेनुं शुं कहेतुं! अहीं कोपपद आनन कानन छे, एम कह्युंछे, तेथी कोपपद एटखे ककार छे उपपद एटखे समीपपद जेनो एवो आनन शब्द कानन शब्द थाय छे ते योग्य छे, एश्खेष छे.

आ उत्तमां, स्त्रीनुं मुख कोपायमान कह्यं जे तेनुं कारण ए के, स्त्रीनी मुखमुझा यरिंकचित कोपायमान पुरुषने दीतामां आवे तो तेने कामविकार जत्पन्न थायजे अथवा कोई कारणने लीधे स्त्रीने रीश आवीने पुरुषने पोतानी मुखमुझा कोपाय मान करी देखाडचाथी तेने प्रीति जत्पन्न थायजे, अने विविध प्रकारे तेने सम ज्याव्यानी आतुरताने लोधे कामविकार जत्पन्न थायजे ते अर्हा गृंगाररस जाणवो, अने स्त्रीना मुखने वन जेवुं कह्युं जे, ने तेमां कामरूप सर्प रहे जे ते दंश करीने पुरु पना हृदयने ग्रून्य करे जे एटले सारासार विवेकरहित करे जे; अर्थात् मृतकतु व्य करे जे, तेथी तेनो तुं त्याग कर. ए वेराग्यरस जाणवो. ॥ ७ ॥

ठपजातिरुत्तम् ॥ साकारमालोक्य मुखं तरुण्यः किं मुग्धवुदे मुद

मादधासि॥इदं हि चित्तश्रमनाटकस्य विचक्तणेरामुखमाचचक्ते ॥ए॥ .अर्थः- हेरूडीबुदिवान पुरुष, तरुण स्त्रीनुं साकार एटले सुंदर मुख जोईने ति शासारु आनंदित थायने ! ए मुखने विदान पुरुष निश्चये करी चित्त चमरूप नाटकनुं आमुख एटले आद्यारंन कहेने. अहीं साकार एटले आकार सहित जे मुख होय ते आमुख ने, ते योग्य ने.

आ वत्तमां, तरुण स्तीवुं सुंदर मुख कह्युं जे, तेवुं कारण ए के मुखनी सुंदरता तारुप्पपणामां होयजे. ते गमे तेवी सारीबुदिवाला पुरुषनी बुदिने विच्रम करे जे. एट ले मोहित करेजे. ए शृंगार रस जे. अने तरुण स्तीवुं मुख चित्तविच्रमरूप नाटकनो आद्यारंन बे. एटले स्वीनुं मुख जोईने मोहनो आरंन थाय बे. जेम ना टकनो आद्यारंन सूत्रधार अने नटीप्रमुखना गायन दारा थायबे, ते जोनारा पुरुषना चित्तने मोह जत्पन्न करेबे. तेम ए पण जाणवुं. तेनो तुं त्याग कर. ए वैराग्य रस बे.॥ ए॥

> वसंततिलकावृत्तम् ॥ कामज्वरातुरमते तव सर्वदाऽऽस्यं वा मश्रुवां यदि कथंचिदवाप्नुमिच्चा ॥ यत्नं विनाप्यखिलज

न्मपरंपरासु तजातमेव जवतो ननु सर्वदास्यम् ॥ १० ॥

अर्थः- हे कामरूपज्वरथी पीडायमान थएली मतिवाला पुरुष, जो सर्वदा एटले सर्व काल सुंदर चुकुटिवाली स्त्रीनुं आस्य एटले मुख, कोई पए प्रकारेकरि तने प्राप्त यवानी इन्ना होय, तो निश्चयेकरि यल्लशिवाय संपूर्ण जन्मपरंपराने विषे सर्वदास्य एटले सर्वनुं दासपएं तने थयलुंज ढे, एम जाएावुं. आश्लोकमां बे ठेकाणे ' सर्वदास्य " ए शब्द आवेलो ढे. ते बन्नेनो अर्थ जिन्न जिन्न थाय ढे. तेथी अहिं यमक जाएावो.

आ वृत्तमां, सुंदर चुकुटीवालुं स्तीनुं सुख कह्यं ते, एथी जे स्तीनी चुकुटि सा री होय, ते सुरूप दीगमां आवेते. तेनुं मुख कामी पुरुषने अति प्रिय लागेते. अने तेने जोतांज कामीपुरुषनी मति कामज्वरथी पीडायमान यायते, एज इह्यं शृंगार रस ते. अने एवा स्तीना मुखनी प्राप्तिनी इह्या जे पुरुष करेते ते जन्मो जन्मने विषे प्राधीन रहेते. माटे तेनो तूं त्याग कर ए वैराग्य रस जाएावो.॥ ? णा

शार्दूजविकी फितं छत्तम् ॥ तस्याः साधुरदं विलोक्य वद

नं यः संश्रयत्यंजसा मुक्ता मुक्तिपयं इहा प्रविदाति आं

त्या स डर्ग वनम् ॥ तचात्यंतमचारुब इवसतियेंनात्र रा

गादिजिश्चोरेंधर्मधनापहारकरणात्कष्टं न किं प्राप्यते॥११॥ अर्थः न ते स्वीतुं "साधु रदं" एटले सारा दांतवालुं वदनं एटले मुख जो इने जे पुरुष वेगे करी तेनो आश्रय करेत्रे, एटले तेमां लुव्ध यायत्रे ते पुरुष, हा हा इति खेदे! मुक्तिमार्गने मूकीने, वसतिने अरम्य करीने इःखेकरि प ए गमन न थाय एवा वननेविषे च्रांतिए करि प्रवेश करेत्रे. ते वन मर्यादारद्दि त ते, तेमां गमन करनारा पुरुषत्रुं धर्मरूप धन रागादिक चोरो हरएा करी जाय ते तेथी द्यं कप्टनी प्राप्ति थती नथी? अदिं साधुरदं वदन जे ते ते वन ते ए म कह्यं ते. ते आमः- साधुरदं ए शब्दनो पदछेद करिये तो साधुः अदं ए बे पद जुदा थायते. एमांना अदं पदथकी दकार रहितपणुं थायते, एम वदननुं वन थायते, ते योग्य ते.

आ उत्तमां, सारा दांतवाली स्त्रीनुं मुख जोतांज पुरुषनुं मन जुब्ध धई जा यहे. मुकिनो मार्ग जे धर्मध्यानादिक तेने ते मूकी दे हे. जेने वसति सारी ला गती नथी, मदनने वश थयो थको वनादिक एकांत स्थलमां ते स्त्रीसदित अथवा स्त्रीना आगमननी इज्जावान थयो थको वास करेहे, अने तेथी महाकष्ट सहन करेहे, एवो स्त्रीना मुख दर्शननो जे प्रजाव ते अहिं शृंगार रस हे. अने स्त्रीना मु खरूप जे वन तेमां जे पुरुष प्रवेश करेहे तेनुं धर्मरूप धन रागादिक चोर खूंटी जिये हे. माटे तेमां जुब्ध थवुं नही. ए अहिं वैराग्य रस हे. ॥ ११ ॥

प्रथ्वीदत्तम् ॥ यियाससि जवोद्धेर्यदितटं तदेणीहज्ञामहीनमधरं

धरं परिहरेः परं दूरतः ॥ इहारुफुलनतोऽन्यद्याविद्यादवासनानो

स्तव व्रजिष्यति विद्रार्णितां न जविता ततो वांग्तिम् ॥ १२ ॥ अर्थः-हे पुरुष, जो तुं आ संसार समुइनो पार लेबानी इज्ञा करतो हो, तो ह रिणी जेवां नेत्रोवाली स्त्रीओना अहीन एटले अमृतादिवडे परिपूर्ण, अधर एटले ओष्टरूप धर एटले पर्वत जे गे तेने तुं दूर नाखी दे. ते जो तुं नही मूकीश तो ते प वैतना संघटनना योगे तारी निर्मल वासनारूप नोका नांगी जशे. तेथी तारुं इन्ने हुं पार पडशे नही. जेम समुइमां पर्वतना लागवाथी वहाण जांगी जाय तो जवा आववादिक इष्टसिदि थती नथी. ते प्रमाणे तुं पण आ जव समुइने पहेले पार पहोची शकीश नही. अर्ही अहीन अधर जे गे ते धर एटले पर्वतज गे, एम कह्युं गे, ते आमः- जे आहीन एटले अकारे करि हीन एटले रहित अधर शब्द ते धर शब्द थाय गे, ते योग्य गे.

आ रुत्तमां, स्त्रीनां नेत्रोने हरिणीनां नेत्रोनी बराबरी करीडे, एटले हरिणी नां नेत्रो अति विशाल अने सुशोनित होयडे तेम स्त्रीना नेत्रो पण अति विशा ल तथा सुशोनित होवाथी पुरुषतुं मन खेंची लियेडे, तथा जे कामी पुरुष डे तेने स्त्रीना अधरामृतनेविषे घणी प्रीति होयडे, माटे अमृतेकरी पूर्ण अधर कह्यां डे, ते शुगार रस डे. अने ते अधर डे ते पर्वतज डे, केमके, जे पुरुष ते अध रनेविषे जुन्ध यायडे ते संसारयी डूटी शकतो नथी. ए वैराग्य रस डे. ॥ १ श शिखरिणीवत्तम् ॥ न जातीदं खातः रफुरदरुणरत्नौधकिरणप्रता नं तन्वंग्यास्तरलतरलं कुंडलयुगम् ॥ दमं छग्धं पुंसामिह विरहसं योगदरायोर्ज्वलचोकानंगज्वलनयुगिदं कुंडयुगलम् ॥ १३ ॥

अर्थः- दे जाई. देदीप्यमान रक्तवर्ण रत्नोनो किरणसमूह बे जेनाविषे, तथा "तरल तरलं" एटले जे अत्यंत चंचल बे. एवा कशांगी एटले पातला आंगवाली स्त्री ना जे "कुंमलयुगं" एटले जे वे कानना कुंमल बे ते शोजता नथी; किंतु विरहदशा अने संयोगदशामां शोक तथा कामाग्निएकरी युक्तबे एटले विरहावस्थामां शोकावि र्जाव, तथा स्त्रीपुरुषनी संयोगावस्थामां कामाग्निनो आविर्जाव थायबे. अने आ संसारनेविषे पुरुषना शांतिरूप दूधने वालवावाला ए कुंमयुगल एटले वेकुंमबे एम जाएा. अहीं कुंमलयुग ते कुंमयुगल थाय बे. ते आवी रीतेः-कुंमलयुग शब्द वे शेषण तरलतरलं एवं बे. एनो श्लेषार्थ आम बे:- तरलतर एटले चंचल बे. ल एटले लकार जेमां एवो जे कुंमलयुग शब्द; तेमांनो लकार कहाडी नाखिये तो कुंमयुग शब्द थायबे; अने युग शब्द थया पढी तेना अंतमां लकार जोडीये तो कुंमयुगल शब्द थायबे. ते योग्य बे.

आ उत्तमां, स्त्रीना काननेविषे देदीप्यमान रत्नजडित जे बे कुंमल होयजे, ते स्त्रीना रूपमां अति वृद्धि करेजे. अने चंचल होवाथी अति सुशोजित देखायजे तेमां पण रुशांगी एटले पातला आंगवाली स्त्रीने अति शोजेजे. ए ग्रुंगार जे. आ ने ए जे बे कुंमल जे ते शोजाकारक नथी पण विरहदशा तथा संयोगदशामां शो क तथा कामाझिना उत्पन्न करनारा जे, ए पुरुषनी शांतिरूप दूधनो नाश करना रा जे तेथी कुंडरूप जे, तेनो तूं त्याग कर. ए वैराग्य रस जे. ॥ १३ ॥

च्छनुष्टुब्रुट्तम् ॥ ताडंकं संस्पृहं तस्याः पत्रयन् मूढः परे जवे ॥ नरो नरकपालेन्यस्ताडं कं न संहिष्यते ॥ १४॥

अर्थः - हे मूर्ख पुरुष, ते स्त्रीनुं साजिलाष "तामकं " एटले कर्णनूषण अव लोकन करतां आगल आवनारा जवमध्ये नरक पालन करनारा अधम परमाधा मी पुरुषोनी पाझेथी "कंताडं" एटले कोण आधात सहन करनार नथी? अ पितु सर्व आधात सहन करझे. आही "ताडंकं" ए शब्द बे वार आव्योगे, तेओ नो अर्थ जिन्न जिन्न गे. ए यमकालंकार गे.

२९

आ वृत्तमां, खीना कानना कुंमल जोतांज पुरुषने एवी अनिलापा यायते के ए कुंमलेकरी शोनायमान स्त्री मने प्राप्त याय तो सारुं. ए शृंगार रस ते; अने अ निलापाए करी स्त्रीनां कुंडलोने जे पुरुष छुवे ते ते आवता जवमां नरकना पा लन करनारा परमाधामी देवताओनी मार खायते; माटे एनो त्याग करवो ए वै राग्य रस ते. 11 रह ॥

> वसंततिलकारुत्तम् ॥ सारं गलं यमरविंदविलोचनाना मालोक्य चेतसि मुदं कलयंति मूढाः ॥ हा निश्चितं रचि

तमुक्तिपुरप्रवेशव्यापेधमर्गलममुं न विचारयंति ॥ १८ ॥ अर्थः-- हे सूढ, कमलना जेवां नेत्रोवाली स्वीओनो जे सार एटले श्रेष्ठ, गल एटले कंव अवलोकन करीने पुरुषो अंतःकरणमां हर्ष पामेने. परंतु हर इति खे दे ! ए जे गल ने ते मुक्तिनगरीमां प्रवेश करवानेविषे प्रतिबंध करनार होवाथी अ गेल ने, एवो विचार करता नथी. अहीं सार एटले अरसहित गल शब्द ते अर्गल शब्द थायने. ते योग्य ने.

आ उत्तमां, स्त्रीना कंठनी श्रेष्टता कहीते. जो स्त्रीनो कंठ सारो होय तो ते ने जोतांज पुरुष आनंदित थायते; अर्थात् कामनी इडा उत्पन्न थायते, ते अ ही शृंगार रस ते; अने एवा अजिजावी पुरुषोनो मुक्तिरूप नगरीमां प्रवेश थतो नथी. माटे तेनो त्याग करवो ए वैराग्य रस ते.॥ १५॥

शिखरिणीवृत्तम् ॥ छालं प्राप्य स्पर्शं कुचकलशयोः पंकजदशां परां प्रीतिं श्वातः कलयसि सुधामग्नइव किम्॥छवस्कंदं धर्मद्वितिप पकटके दातुमनसा प्रयुक्तं जानीयाः कलुपवरटेन स्पशमिम्॥१६॥

अर्थः - हे चात, जेना कमलनां पत्र जेवां नेत्र हे, एवी स्वीत्रोना स्तनरूप जे कुंन हे, तेने अलं एटले अल्यंत स्पर्शे पामीने अमृतमां मझ थई जनाराना जेवो जे तुं ते ग्रुं उल्टूह प्रीतिने पामेहे ? ए स्पर्श, धर्मरूप राजानी सैन्यने प्रहार क रवानुं हे जेना मनमां, एवा कलुप एटले पापरूप नीले मोकलेलो स्पश एटले जासूद हे; एम तुं जाए. अहीं अलं स्पर्शे जे हे ते स्पश हे; एम कह्युं. रेफ अने लकार एकज होयहे; एवो नियम हे. माटे अलं एटले जेमां रेफ नथी एवो स्प र्श शब्द जे हे ते स्पश शब्द थायहे ते योग्य हे.

ŹĮĘ

ज्ञांगारवेराग्यतरंगिणी.

आ उत्तमां, स्त्रीता स्तननी उत्छप्टता कहीते, एटले पुरुषने स्त्रीना स्तननो स्प ही चतांज अमृतनेविषे मझ चई गएला पुरुषनी पते आनंद उत्पन्न चायते; ए शृंगार रस ते; अने ए स्तन जे ते ते धर्मनो नाश करवाने अर्थे पापनो एक ता नो जासूद ते, माटे तेनो तुं त्याग कर. ए वैराग्य रस ते. ॥ १ ६ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ पीनोन्नतं स्तनतटं म्हगलोचनाया आ लोकसे नरहितं यदपूर्वमेतत् ॥ मोहांधकारनिकरक्तय

कारणस्य विद्यास्तदस्तेतटमेव विवेकजानाः ॥ १७ ॥

अर्थः - मूगना जेवां लोचनवाली स्त्रीनां जे पुष्ट अने उन्नत स्तनतट एटले वे स्तनो हे, ते नरहित एटले पुरुषने हितकारक जासेहे, अने अपूर्व एटले प्र तिइए पुरुषने चमत्कार उत्पन्न करे हे; तेनुं तुं अवलोकन करेहे ; पण ते मोह रूप अंधकारनो इत्य करवानुं कारण विवेकरूप सूर्यना अस्ततट हे. अर्थात् ए यकी झानरूप सूर्यनो अस्त यायहे. आ पद्यमां स्तनतट जे हे तेने तुं अस्ततट जाण एम कह्युं, केमके, नरहितं अने अपूर्व ए वे स्तनतटनां विशेषणो हे, तेओ मांची आवो अर्थ निकले हे:- नरहित एटले नकारेकरी रहित अने अपूर्व एटले जेनी आद्यमां अकार हे, एम कखायी स्तनतटनो अस्ततट शब्द थायहे ते योग्य हे. आ हत्तमां, मूगना जेवां लोचनवाली स्त्रीना मांसथी नरेला अने चंचा रहेला जे वे स्तन हे, ते पुरुषने अति सुख करनारा लागेहे; अने पुरुषना मनमां कामवि कार उत्पन्न करेहे माटे ए धूंगार रस हे. अने एज स्तनोनुं विलोकन करनारा पुरु षोनो विवेकनाश थई जायहे, एटले कामविव्हल थयो यको तेने कांई स्रजतूं न थी तेथी एनो स्थान कर ए वैराग्य रस हे. ॥ १९ ॥

र्गार्दूलविक्रीमितं रतम् ॥कंदर्भविप्कुंजचारुणि कुचदंदे मृ

गाह्या मया न्यस्तो हस्त इति प्रमोदमदिरामाद्यन्मना मा

रमनूः ॥ किंलाजन्म यदर्जितं बहुविधामन्यस्य कष्ठकियां

हस्तोऽयं सुकृतस्य तस्य सहसाऽदायीति संचितयेः॥१ ७॥ ऋर्थ ॥ हे सखा, कामरूप हम्तिना गंमस्थल जेवा मनोक जे मृगार्द्दी स्त्रीना बे स्तन बे, तेनेविषे में इस्तस्थापन कखां बे, एम जाणीने हर्षरूप मदिराएकरी मदो न्मन छंतःकरणवालो तुं नही था. केमके, नाना प्रकारनी तपोनुष्ठानादिरूप जे क ष्टसाथ्य किया बे, तेनो अज्यास करोने जन्मेकरी संपादन करेलां जे सुरुत एटले पुष्प, तेने तें आडुं हाथ दीधुठे. जेमके, कोई बाहेरथी आवनारा पुरुषने हस्तप्र दानसंज्ञाएकरी निषेध करे, तेम कुचढं इनेविषे हस्तप्रदानेकरीने सुरुतनो तें नि षेध कस्तोठे. एवो जे तुं ते मनमां विचार कर. आ पद्यमां स्तन उपर हाथ रा ख्युं अने सुरुतने हाथ दीधुं एज चमत्कार ठे.

आ वृत्तमां, कामरूप इस्ती कह्योंने ने तेना गंमस्थलरूप स्त्रीना बे स्तन क ह्याने. ते ज्यारे पुरुष दाथनेविषे यहण करेने त्यारे मदनातुर थयोथको म हाहर्षने पामेने; ए ग्रांगार रस ने ; अने नाना प्रकारे कष्ट करीने संपादन करेलां सुरुतनो निषेध करेने ; माटे तेनो त्यागकर ए वैराग्य रस ने. ॥ १० ॥

इंड्वंशावृत्तम्॥ कंठोपकंठे लुलितं विचावयेर्चुजं युवत्या

जुजगं गराजितम् ॥ एतस्य संस्पर्शवज्ञादपि क्तणाद

रोषचैतन्यमुपेति संक्लयम् ॥ १७ ॥

अर्थः-कंतनी पारों वलेला गर एटले विषे करीने अजित एवा जे तरुण स्वी ना छज एटले बाहु, ते छजग एटले सर्पज हे; एम तुं जाएा. ए सर्पना स्पर्शमा त्रेकरी संपूर्णचैतन्य इएणमात्रमां नाशने पामेहे. जेम सर्पना स्पर्शेकरी चैतन्य नो नाश थायहे; तेमज तरुएा स्वीना छजस्पर्शेथी चैतन्यनाश थायहे. छज नो छजग आवी रीते थायहे:-छज शब्दुं विशेषण गराजित हे, तेनो अर्थ ग कार अक्तरेकरी राजित एटले युक्तथयाथी छजग शब्द थायहे; ते युक्त हे.

आ उत्तमां, कंठनी पाझे वांका वलेला स्वीना बे हाथ पुरुषने अडकतांज पुरुष अति मोहित थयोथको पोताना शरीरनी ग्रुदि पण रहेती नथी. ए शूंगार रस बे; अने ए बे स्वीना हाथ बे ते साक्तात सर्परूप बे, केमके, एनो स्पर्श थयाथी पुरुष बेग्रुद थई जायबे, माटे तेनो तुं त्याग कर. ए वराग्य रस बे. ॥१९॥ उपजातिउत्तम् ॥ कंठावसक्ते कुपिते नवाहों वरं बहिः प्राणहरे प्रमो

दः ॥ विध्वस्तधर्मांतरजीविते नुः स्त्रेणे न वाहों विष्ठषां स युक्तः 90 अर्थः-बाह्य प्राणनो नाज्ञ करनारो कोधायमान जे नवाहों एटले नवीन स र्ष, ते पुरुषना गलामां संलग्न थाय ते सारुं; परंतु धर्मरूप अन्यंतर जीवित नाज्ञ करनारा जे स्त्रीसंबंधी वाहों एटले छज, ते पुरुषना गलामां संलग्न थयाथी जे हर्ष थायडे, ते पंमित पुरुषने योग्य नथी; केमके, सर्प, कंवसंलग्न डतां बाह्य प्रा णनो नाज्ञ करेडे; पण स्त्रीओना जे बाहु डे, ते कंठसंलग्न थयाथी अंतर प्राण नो नाश करेने ; माटे स्त्रीए पोताना हाथथी करेलुं आलिंगन सर्प करतां पण झ धिक डःख देनारुं ने आश्वोकमां नवादों शब्द वे वखत आव्योने तेनो अर्थ जुदो ने. आ हत्तमां, स्त्री ज्यारे पोतानी जुजावडे पुरुषने आलिंगन करेने, त्यारे पुरुष पोताना प्राणनी पण परवा राखतो नथी, एवो कामातुर थायने ; ए गृंगाररसने. अने सर्प गलामां वाफी प्राण लिये ते सारुं, पण स्त्रीतुं आलिंगन जलुं नही; के मके, तेथी माता कर्म बंधाईने अंतरात्मानो नाश थायने माटे तेनो त्याग कर वो उचित ने ए वैराग्यरस ने ॥ २० ॥

इंडवंशारटतम् ॥ कोयं विवेकस्तव यन्नतचुवां दोषावगूढः प्रमदं वि गाहसे ॥ यतः स्मरातंकपरीतचेतसां किं सुंदरासुंदरयोर्विवेचनं ॥ १ ॥

अर्थः – हे साधो, आ तारो कयो विवेक छे के, नम छे चुकुटि जेओनी एवी स्त्रीना दोषावगृढ एटखे छजाए आलिंगित थयो थको तूं जल्रुष्ट मदने पामेछे ! केमके, कामरूप रोगेकरीने जेना अंतःकरण व्याप्त थयाछे, एवा पुरुषने सारा तथा नरसानुं विवेचन थतुं नथी. जेम अपस्मारादि (मरी) रोगवाला पुरुषने छ नाछन ज्ञान होतुं नथी, तेम तने पण थयुंछे. अथवा तारो विवेक दोषावगूढ एटखे दोषेकरीने पुक्त छे एवो अर्थ पण थायछे, माटे ए तारो केवो विवेक छे एम कहेवुं योग्यज छे.

आ इत्तमां, पुरुषने स्त्रीए आलिंगन कखुंबतां, ते गमे तेवो विवेकी द्दोय तो पण ते एक कोरे रद्दीने कामातुर थयोथको दर्षित थायबे; ए शृंगार रस बे; अने स्त्रीना आलिंगनथी पुरुषना विवेकनो नाश थायबे, अने अंतःकरणमां अ विवेक आवेबे, माटे तेनो तुं त्याग कर ए वैराग्य रस बे. ॥ २१ ॥

वसंततिलकारतम् ॥ हंहो विलोक्य परमंगदमंगनाना मानंदमुघहसि किं मदनांधबुदे ॥ सत्यं विवेकनिधने

कनिमित्तमेतत् मेधाविनो हि परमं गदमुङृणंति ॥ २२ ॥

अर्थः- हे कामेकरी अंधवुदिवाला पुरुष, स्वीधोना परमंगदं एटले उत्ठष्ट बाजूबंध जोईने ग्रुं आनंद करेजे ? पंभित लोको जे जे ते ए बाजूबंधने ज्ञाननोनाश करनारो परम एटले उत्कृष्ट गद एटले रोग कहेजे; ते सत्य जे. केमके, जेम रोग जीव ना नाशनो हेतु जे, तेम स्वीनो बाहुनूषण पण ज्ञानना नाशनो हेतु जे. ए पद्यमां परमंगदं ए बे वखत आव्योजे, तेनो अर्थ जुदो जुदो जे, एवो यमकरूप चमत्कार जे.

शृंगारवेराग्यतरंगिणी.

या वत्तमां, स्वीना बाहुनुं नूषण जे बाजूबंध बे, ते पुरुषना मनने एवो मो हित करी लियेबे के पुरुष कामांध ययोथको महाहर्षने पामेबे. ए हूंगार रस बे; खने ए जे बाजूबंध बे ते आनंद करनारो नथी, पण जीवनो नाज्ञ करनारो मोटो रोग बे; एम जाणीने तेनो तूं त्याग कर. ए वैराग्य रस बे. ॥ २२ ॥

अयं जनो वलयत्तरं विलोकते मगीटराामधिजुजवत्नि बालिराः॥

न बुध्यते सुकृतचमूं जिगीपतः समुद्यतं बलजरमेनमेनसः ॥ २३॥

अर्थः – अयं एटले आ प्रत्यक्त मूर्ख जन जे हे, ते हरिणाक्ती स्वीओना छज लतानेविषे वलयजरं एटले जे कंकणसमूह हे ते छुवेहे. परंतु ए वलय जे हे ते सुरुत जे शीलादिक, तेओने जीतवानी इज्ञावालो एवो पापनो सावधानीनूत बलनर एटले सेनासमूह हे; एम जाएा. आ पद्यमां वलयजर जे हे, ते बलजर हे एम कह्युंहे; बकार अने वकारचुं ऐक्यहे वलयजर शब्दचुं विशेषण अयं ए शब्द हे. एनो अर्थ अ रहित यं थायहे; तेथी वलयजर शब्द, बलजर थयो ते योग्य हे. आ हत्तमां, स्वीओना हाथमां जे कंकण होयहे, तेने जोईने जे मूर्ख जन हे ते आ नंदने पामेहे, ए शुंगार रस हे; अने ए जे कंकणनो समूह हे, ते शीलादिक नो नाश करनारो हे, माटे तेनो तुं स्थाग कर. ए वैराग्य रस हे. ॥ २३ ॥

नारा करनारा छ, माट तना तु खान करः एवराग्य रस छः ॥ २२ । वसंततिलकारुत्तम् ॥ ये हक्पछे तव पतंति नितंबिनीनां

कांताः करा जमिमपद्धवनप्रवीणाः॥नो वेत्सि तान् किमपव

र्गपुरत्रयाणत्रत्यूढ्कारणतया करकानवर्यम् ॥ १४ ॥

अर्थः – हे जमताना प्रकटीकरण करवाविषे निपुण पुरुष, नितंबिनी स्वीत्रोना कांत एटले मनोइ कर एटले हाथ तारी दृष्टिरूप मार्गमां आवेळे, तेओने मोह्रूप नगरी प्रते जतां करक एटले करानी पेठे विघ्न करनारा केम जाणतो नथी ! बाहेर जतां जो मार्गमां करानी वृष्टि याय तो इडेला कार्यनी सिदि थाय नही, एवुं श कुनशास्त्रमां कद्युंळे. आ पद्यमां स्त्रीना कर जे ळे ते करकज एम कह्युं ळे. ते आ वी रीतेः – करशब्दनुं विशेषण कांत शब्द छे, एनो अर्थ क छे जेना अंतनेविषे एवो थायळे; अर्थात् कर शब्दना अंते ककार राखिये तो करक थाय ते योग्य छे.

आ वृत्तमां, जडतानुं प्रकटीकरण करवाविषे स्त्रीना हाथ निपुण ते, एटले स्त्री ना हाथवती पुरुषने स्पर्शादि थतांज ते गमे तेवो धर्मादिकनेविषे सावध होय तो

पण दिग्मूढ एटले कामने वज्ञ अई जाय ले, ने तेमां ते पोताने परमानंद माने वे; ए गुंगार रस वे. अने स्वीना करस्पर्शादिकेकरी स्तब्ध बनी गएला पुरुषने मोकनो मार्ग जे धर्म, ते सूजतो नथी, माटे तेनो तुं ल्याग कर. ए वैराग्य रस जे. **उपजातिरुत्तम् ॥ नीव्याप्तमस्या इरिणेक् णांया यंवीक्य हारं ह**दि ह र्षमेषि॥ विवेकपंकेरुहकाननस्य तमेव नीहारमुदाहरंति ॥ २५ ॥ अर्थः-नीवी एटले वस्त, तेनी गांठ पर्यंत हरिएाही स्त्रीनो जे लंबायमान हा र, तेने जोईने तूं पोताना मनमां आनंदने पामेंग्रे, ते हारने पंमितलोक, ज्ञानरू प कमलना वनने नीहार एटले हिम कहेने. जेम हिम, कमलना वनने नाश कर नारो बे, तेम स्वीना हृदय जपरनों जे हार ते ज्ञानने नाश करनारो बे. आ पद्यमां हारने नीहार कह्योंने, ते आमः-हारशब्दुं विशेषण नीव्याप्त ने एनो अर्थ आ बेः-नीशब्देकरी व्याप्त एटले जे युक्त हारशब्द ते नीहारशब्द थायबे ते योग्य बे. आ वत्तमां, स्वीना हृदयनो जे लांबो दार ते जोतांज पुरुषने अति आनंद उ त्पन्न थायने; ए ग्रंगाररस ने; अने ते हार जे ने ते ज्ञानरूप कमलना वनने बा लवामां हिम जेवों हे, एटले ते हारमां लुब्ध यएला पुरुषनुं ज्ञान नाश थई जाय वे, माटे तेनो तूं त्याग कर. ए वैराग्य रस वे. ॥ १५ ॥ वंशास्यवत्तम्॥ विलोक्य किं सुंदरमंगनोदरं करोपि मोहं मदनज्वरा तुरा।नो ईक्तसे डर्गतिपातसंजवं जवांतरे जाविनमंगनोदरम् ॥ १६॥ अर्थः-कामज्वरवडे पीडाने पामेला हे पुरुष, सुंदर अंगना एटले स्त्रीनुं चदर जोईने तूं कां मोदने पामेळे ? अंग एटले हे पुरुष, ए उदर नथी पए जन्मांतरने विषे अने नरकने विषे पड्याची उत्पन्न थनारा जे दर एटखे नय; तेज ळे; एवो कां विचार करतो नथी ? आ पद्यमां अंगनोदर ए पद बे वखत बे; तेओनो पद विनागेकरी जिन्न अर्थ हे, ते अहिं यमकरूप चमत्कार जाएवो.

आ वत्तमां, स्तीनुं उदर जोई पुरुष मोहने पामीने कामज्वरनी पीडाने पामेने ए शृंगाररसने; अने ए उदर नथी पए जन्मांतर तथा नरकमां थनारो जय ने, एम जाणीने तेनो तूं त्याग कर ए वैराग्य रस ने. ॥ १६ ॥

वसंततिलकारुत्तम् ॥ स्फूर्जन्मनोजवजुजंगमपारानाजी नाजी कुरंगकदृशां दृशि यस्य लग्ना ॥ नाजीमयं जगदरोषमुदी कतेऽसौ यो यत्र रज्यति स तन्मयमेव पर्यत् ॥ २९ ॥ अर्थः न देदीप्यमान कामरूप सर्पनुं पाशनानी एटले रहेवानुं स्थान जे हरि णाह्वी स्त्रीओनी नानी एटले अवयवविशेष; तेनेविषे जे पुरुषनी दृष्टि लग्न एटले लागेलीने, ते पुरुष अनीमय एटले निर्नय अवलोकन करतो नथी, जे पुरुष जे नेकाणे अनुरक्त थायने ते पुरुष संपूर्ण तडूप थायने. आ पद्यमां दृष्टि संलग्न नानी, नानीमय संपूर्ण जुएने. ए शब्दश्लेष चमत्कारने.

आ वत्तमां, स्वीनौ जे नानि बे ते कामने रहेवानुं स्थान बे, एटजे ते नानिने जो तांज पुरुषने कामविकार उत्पन्न थायबे, ए शूंगार बे; अने जे पुरुष ए नानिनेवि षे आसक्त थायबे, ते अनेक जयने पामेबे; माटे एनो तुं त्याग कर; ए वैराग्य बे॥ श् ॥ उपेंज्वजादत्तम् ॥ जफोपयुक्तं जघनं म्हगाद्दयाः समीद्दय किं तोषज रं तनोषि॥ अमुं विशुंद्धाध्यवसायहंसप्रवासहेतुं घनमेव विंद्याः॥ १०॥

अर्थः- हे सखा, जम एटले मूर्ख, तेओने उपयुक्त एटले योग्य, एवा हरि एाक्दी स्त्रीना जे जघन एटले जांघ, जोईने तुं का आनंद पामेछे ? ए जघन जे छे ते निर्मेल चित्ताजिप्रायरूप इंसना प्रवास ने कारण जूत घन एटले मेघ छे; ए म तुं जाएा. अर्थात् ज्यारे वर्षा पडेछे त्यारे हंस पोतानुं स्थान मूकीने मानसस रोवर जपर जायछे. एप्रसिद्ध छे. तेम मनुष्यनी दृष्टिने विषे स्त्रीनी जंघा आवेछे, त्यारे चित्तना निर्मेल अजिप्राय मटी जायछे. आ पद्यमां जडोपयुक्त जवन जे छे ते घन छे, एम कह्युं छे, मकार अने लकारनुं सावर्ण्य होवाथी जडोपयुक्त शब्द नो जलोपयुक्त शब्द करवो एटले मकारना लोप सहित जे जघन ते घन थाय छे, ते योग्यछे. ॥ १० ॥

आ वत्तमां, स्त्रीनी जांघ मूर्ख कामी पुरुषोने छति प्रिय लागे जे ने ते तेमां जुब्ध होयजे ए शृंगार रस जे; छने निर्मल चित्तना छत्तिप्रायनो नाज्ञ करेजे, अर्थात् स्त्रीनी जंघा निरख्याची पुरुषतुं चित्त मलिन चायजे, माटे त्याग करवा योग्य जे ए वैराग्य रस जे. ॥ १७ ॥

उपजातिवृत्तम् ॥ नितंबमुद्धासिततापनोदं दिदद्कसे यत्कम लेक्तणाना म्॥सर्वात्मनाऽत्यंतकटुं विदिला तं निंबमेव त्यज दूरतोपि ॥ १ए ॥ अर्थः- संतापनी प्रेरणा करनारा कमलनयना स्वीना जे नितंब, एटले कटि नो पाढलो जाग, जोवानी तुं इन्ठा करेढे; ते नितंब, पत्र, पुष्प तथा फल इत्या दिना समूद्देकरी अत्यंत कडुवा जाडना जेवा ढे, एम जाणीने दूर नाखी दे. अर्था त् निंबनुं जाड सर्व प्रकारे कडनुं होयने, तेम स्त्रीना नितंब सर्व प्रकारे ग्लानि करवा योग्य ने, तेनो तुं त्याग कर. आ पद्यमां उझसित तापनो देनार जे नितंब ते निंबहरूज ने, एम कह्युं, ते आमः-ज्झसित एटले विकसित ने तकारनो अप नोद एटले नाश जेने विषे, एवो नितंब शब्द निंबशब्द थायने ते योग्य ने.

आ वृत्तमां, कमलना जेवां नेत्रोवाली स्त्रीना जे बे नितंब ठे, ते संतापनी प्रेर णा करनाराठे, एटले स्त्रीनी कटिनो पाठलो नाग जोयाथी अत्यंत मदन विकार उत्पन्न यायठे, ते इज्ञा पूर्ण न थयाथी तेना मनमां संताप यायठे, एवो ते नि तंबोनो जे प्रजाव ठे, ते शृंगार रस ठे; अने स्त्रीओना नितंब निंबडाना फाडजेवा कडवा ठे, माटे एनो तुं त्याग कर; ए वैराग्य रस ठे.॥ १९ ॥

शार्दूलविक्रीडितं रुत्तम्॥नूनं नूपुरमेतदायतहराो रागादि विदेपिणां क्रीडार्थं पुरमित्यवेत्य न हर्शाप्यालोकनीयं क चित् ॥ येनास्मिन् मुखमात्रचंगिमगुणेरारुष्य तैरुल्बणे र्बद्धय प्रसनं चिरादपि सखे मुक्तिर्नवित्री न ते ॥ ३०॥

अर्थः- हे सखा, नूनं एटखे निश्वयेकरी विशालनेत्रोवाली स्वीत्रोनां जे आ नूपुर एटखे चरणनूपण, रागादिशत्रुने कीडा करवावुं पुर एटखे नगर छे; एम जाणीने क्यारे पण नजरेकरी जोईश नही. जेने पोतावुं सारुं थवानी इज्ञा हो य, तेणे क्यारे पण शत्रुवुं नगर जोवुं नही. केमके, ए नगर प्रसिद्ध, उदार, त या सुख्यत्वे अष्ट गुणे आकर्षण करी बलात्कारेकरी तने बांधीखेशे, तेथी फरी तुं तूटी शकनार नथी. अर्थात् ते नूपुरमां जो तुं आसक्त थशे तो, फसाई पड शे; आ पद्यमां स्वीत्रोना नूपुरने शत्रुवुं नगर कह्युंचे, ते आमः-नूपुरशब्दवुं विशे पण जे नून छे,तेनो अर्थ न शब्देकरि जन एटखे जे रहित छे, एवुं नूपुर छे, एम जाणवुं. आ हत्तमां स्वीत्रोना पगनां नूपुर पुरुषना मनवुं हरण करी लिएछे. ए शृंगाररस छे; अने ते नूपुर शत्रुवुं नगर छे एम जाणीने तेनो त्याग करवो, ए वैराग्य रस छे. ३० ठेपजाति टत्तम्॥यास्त्रीतिनाम्ना बिजृते दामादों दास्त्री प्रबुद्दिरवबुध्यतां सा ॥ एनां पुरस्कृत्य जगत्यनंगजटो यतः पुण्यजटं जिन्नत्ति ॥ ३१ ॥ अर्थ:-जे स्वी एवुं नाम तुं अंतःकरणमां धारण करेबे, ते शमादौ एटखे उपश मादि धर्म कर्मने विषे शस्वी एटखे एक आयुधविशेष छे, एम सुजाण पुरुषोए जा ष्ठ्रध

एवुं. आ संसारनेविषे कामरूप योदो, ए स्वीरूप शस्त्रीने आगल करीने धर्मरूप यो दानुं जेदन करेंडे. जेम संयामनेविषे एक मोटो योदो, पोताना शस्त्रेकरीने प्रति योदानुं जेदन करेंडे ; तेम कामरूप योदो स्वीरूप शस्त्रीए करी धर्मरूप योदानुं जे दन करेडे. आ पद्यमां स्वीने शस्त्री कहीडे, ते आमः-या स्त्री शमादौ बिजृते, ए टले जे स्वी प्रथम शकार धारेडे, अर्थात् स्त्रीशब्दनी आद्ये शकार आव्याची शस्त्री शब्द यायडे ते योग्य डे.

आ उत्तमां, प्रसिद्ध शुंगाररस नथी, परंतु स्त्रीनी निर्नत्सना दारा वैराग्यांतर गत शृंगारनी पण सूचना करीते. ॥ ३१ ॥

> वसंततिलकारुत्तम् ॥ येयं वधूरवसिता हृद्ये प्रमोदसंपा दनव्यतिकरेकनिबंधनं ते ॥ सा डर्गडर्गतिपयेन जगन्नि नीपोर्धूरेव मन्मयरथस्य विजावनीया ॥ ३२ ॥

अर्थः – हे पुरुष, ताराहृदयनेविषे हर्षसमूह उत्पादन करवानुं कारण जे वधू एटले स्त्री, अवसिता एटले आवीने रहीते, ते स्त्रीने तुं जे हृदयने हर्ष उत्पन्न करनारी मानेते, ते वधू, अखंत इर्गम नरकना मार्गेकरी लेई जवाविषे इज्ञा क रनारा कामरथनी धू एटले धुरी ते; एम तुं जाण. अर्थात् ए स्त्री नथी, किंतु नरक ना मार्गेकरी संसारनेविषे लईजनारो जे कामरथ, तेनी धुरी ते. आ पद्यमां व धू कामरथनी धुरी ते, एम कह्युं; मूलमां वधू शब्दतुं विशेषण अवसिता शब्द ते, एनो अर्थ वकारेकरि सित एटले रहित थयाथी वधू शब्दनो धू शब्द थायते ते योग्य ते.

आ वृत्तमां, स्त्रीने हर्षसमूह उत्पादन करनारी, अने पुरुषना मननेविषे रम ए करनारी कहीते, ए शृंगार रस ते; अने ए वधू नथी पए कामदेवना रथनी धुरी ते, एम जाणीने तुं स्थाग कर, ए वैराग्य रस ते।॥ ३२॥

मंदाकांतावृत्तम् ॥ त्रीतिं तन्वंत्यनलसहज्ञो यास्तरुएय स्तवैता देहचुत्या कनकनिजया द्योतिताज्ञा विवेकिन् ॥ सत्यं तासामनलसहज्ञां संयमारामराज्यां माजूः पा र्श्वेष्यसि यदि ज्ञिवावाप्तये बद्दबुद्धिः ॥ ३३ ॥

अर्थः- हे विवेकवान् पुरुष, जेनी अनलस एटले आलस्य रहित दृष्टि हे, अने

जेनी सुवर्णना जेवी शरीरनी कांतीए दिशाओ प्रकाशित करीडे, एवी तरुण स्वीत्यो तने दर्भ उत्पन्न करेडे, ते अनलसदश एटखे अग्निना जेवी स्वीत्र्योनी सत्ता संयम एटखे चारित्ररूप वनपरंपराविषे डे, एम जाण. अर्थात् जेम अग्निसंपर्केकरी वन द ग्ध थायडे, तेम स्वीसंपर्केंकरी चारित्र दग्ध थायडे. जो मोक्त्प्राप्तिनी बुद्धि तने थई दोय, तो स्वीत्र्योनी समीप पण जतो नही, आ पद्यमां अनलसदश पद बे बार आव्योडे, तेनो अर्थ नोखो नोखो डे, ए चमत्कार जाणवो.

आ वृत्तमां, चंचलदृष्टिवाली स्त्रीना शरीरनो वर्ण सोना जेवो होय, तो पुरु षना मनमां अति आनंद जत्पन्न करेंडे. ए शृंगार रस डे; अने स्त्री अग्नि जेवी डे, ते संयमादिक वनपरंपराने बाली जस्म करनारी डे, माटे एनो तुं त्याग कर, ए वैराग्य रस डे ॥ ३३ ॥

मालिनीवृत्तम ॥ क इह विषयजोगं पुण्यकर्मायज्ञून्यं स्पृहय

ति विपनोगं नावयेस्तबतस्बम्॥रुमरति न करणीयं मुर्वि

तो येन जंतुः पतति कुगतिगतें नेक्ते मोक्तमार्गम् ॥ ३४ ॥

खर्थः- आ संसारनेविषे कयों पुरुष पुंत्यकर्मनो आप एटजे लान, ए एोकरी इत्य एटजे रहित जे विषय नोग एटजे पांच इंड्यिना सुखनी इज्ञा करेंडे, केमके ए जे विषयनोग डे, ते विषनोग एटजे विषनक्त्एा डे, जे विषयनोगना योगे मोइने पामेलो प्राणी, स्मरण करवायोग्य ते करतो नथी, तेथी नरकरूप खा डामां पडेडे. ते फरी मोक्तमार्गने पामतो नथी, जेम विष खानारा पुरुषने स्म रणादि रहेतां नथी, तेम विषयोपनोग करनाराने पण स्मरणादिक रहेतां नथी. आ पद्यमां विषय नोग जे हे ते विषनोग हे, एम कह्युं; ते आम.- विषयोपनोगी पदनुं यग्न, यं ए विशेषण हे, एनो अर्थ यकारेकरी ज्ञून्य एटले रहित यायहे; एम यकाररहित जे विषयनोग ते विषनोग हे, ते योग्य हे.

आ उत्तमां, पांचे विषयोनो तिरस्कार कस्तो छे, तेओनुं मूल कारण स्त्री विषय सुख शास्त्रोमां कह्युंछे, ते आश्लोकमां यद्यपि प्रगट कह्युं नथी तथापि अर्था तू सि६ यायडे, तेथी ए शृंगार रस छे; अने विषयनोगने विषनोग कह्याडे ए वैराग्य रस छे. ॥ ३४ ॥

उपजातिवृत्तम् ॥ सखे सुखं वैषयिकं यदेतदाजासते तन्नरकां तमंतः ॥ सत्यं तड्व्सर्पद्घत्रबंधनिबंधनबान्नरकांतमेव ॥ ३५ ॥ अर्थः- दे सखा, आ जे विषयसुख ढे ते तारा अंतःकरणमां कांत एटखे म नोहर जागेडे, ते सत्य ढे, मिथ्या नथी, परंतु विस्तारने पामनारी जे पाप परंपरा, तेनुं ए कारण ढे, माटे जेनो अंत नरक ढे, एटखे नरकने देनारा ढे; एम जाण. आ पद्यमां प्रथमना नर कांत ए बे शब्द जिन्न ढे, अने पाढलना नरकांत ए बे पद एकसरखा ढे, ए काव्यचमत्कार जाणवो.

ञ्चा वृत्तमां, विषयसुख जे जे, ते पुरुषना मनने घणा सारा जागेजे, एम कह्युं जे, ते शृंगार रस जे ; अने ए विषयसुखर्थी पापपरंपरा विस्तारने पामेजे, माटे त्या ग करवा योग्य जे ए वैराग्य रस जे. ॥ ३५ ॥

शिखरिणीरुतम् ॥ स्मरक्रीडावाप्यां वदनकमले पद्दमलहराां हढाऽ सक्तिर्थेपामधरमधुपानं विदधताम् ॥ च्प्रदूरस्या बंधव्यसनघटना क्रेरामहती विदग्धानां तेपामिह मधुकराणामिव नृणाम् ॥ ३६ ॥

छर्ग रिसागर ने सार्थ सार्थर में जुनराशा पर पट्यान् मा २५ म अर्थः - कामनी क्रीडारूप जे वापी एटले कुवो छे, तेनेविषे स्त्रीना अधरोष्ठरूप मधुपुष्परस पान करणारा जे पुरुष छे, जेओनी स्त्रीना मुखकमलनेविषे हढ आ सक्ति छे; एवा मोइ पामनारा जे पुरुष छे, तेओने आ स्त्रीना मुख कमलनेविषे जमरानी पठे क्वेशेकरी इःसइ एवा बंधनोए व्यसन घटना एटले कछरचना समीप वर्त्तिनी छे; जेम मधुपान करनारा जमराओनी कमलोनेविषे हढाशक्ति बंधने करी क ष्ट देनारी छे, तेम अधररसपान करनारा पुरुषोने स्त्रीना मुख कमलनेविषे हढ जे आसक्ति ते प्रेमबंधनेकरी कष्ट देनारी छे.

आ वृत्तमां, स्वीनो अधरामृत जमराओनी पत्रे पुरुषोने अति प्रेम उत्पन्न कर नारो डे, ए शृंगार रस डे, अने तेथी ते जमरानी पत्रे बंधनने पामेडे, माटे खाग करवा योग्य डे, ए वैराग्य रस डे. ॥ ३६ ॥

सखे संतोषांजः पिब चपलतामुत्सृज निजां शमारामे कामं विर चय रुचिं चित्तहरिएा ॥ हरंत्येतां तृप्णां न युवतिनितंबस्छलजु वो विमुक्ता नीरागेर्विपमशरसंपातविषमाः ॥ ३९ ॥ अर्थः – दे सखा, आ चित्त हरिएाना जेवो बे, केमके, जेम हरिएा अतिचंचल होयबे, तेम चित्त पए महाचंचल होयबे; माटे मृग अने चित्तनुं सादृश्यल क ह्यंबे; एवी चपलताने त्याग करीने संतोषरूप जलनुं पान कर; अने अत्यंत शम रूप वननी प्रीति कर. आ जे युवती एटले तरुए स्वीओ बे, तेओना नितंब एटले जे केडनी पाढलनो जाग डे, ते स्थलजूमिना जेवो डे, त्यां तारी तृषा मटनार न थी. ए स्थलजूमि केवी डे, नीर एटले पाणी अने अग एटले हरू, एएोकरी रहि त डे. जल अथवा हरूनी डायावडे तृषा निवारण थायडे, ए बन्नेमांनो कोई ए स्थलनूमिने विषे नथी. अने ए जूमिनेविषे व्याध्यादिक छष्ट पुरुष बाएा नाखेडे, ते वाग्याधी घणो संताप पामोने तारुं मरण थशे; पण तृषा मटवानी नथी. व ली ते नितंब जूमि केवी डे? के रागरहित पुरुषोए जेनो त्याग कस्तोडे, अने वि षमशर जे कामदेव, तेना बाएाना संपातना योगे बिह्रामणी डे. माटे युवतीना नितंबनी इज्जा तुंनही कर. एवो चित्त प्रत्ये उपदेश डे.

आ उत्तमां, स्तीना नितंबतुं वर्णन कखुं हे ; ए शृंगाररस हे ; अने ते स्थलनूमि नी पहे चित्तरूप चमरने पीडा करेहे, ए वैराग्यरस हे. ॥ ३ ७ ॥

शार्दूलविकीडितं वृत्तम् ॥ चेतश्चापलमाकलय्य कुटिलाका रां कुरंगीदृशो दृष्ट्वा कुंतलराजिमंजनघनश्यामां किमुना म्यसि ॥ धर्मध्यानमहानिधानमधुना स्वीकर्त्तुकामस्य मे

त्रत्यूहार्थमुपस्थितेयमुरगश्रेणीति संचितयेः ॥ ३० ॥

अर्थः – दे चिन, कुटिल एटले वक आकारवाला मेघना जेवा काला अथवा काजलना जेवा अत्यंत स्थामवर्ण, जे हरिणाई शिव्ता केशनी पंक्ति हे. तेने जोई ने तुं शासारु व्याकुल यायहे ? ए स्वीना केशनी पंक्ति जे हे ते धर्मचिंतनरूप म हानिधान स्वीकार करनारो तुं तेने सांप्रत कालनेविषे विघ्न करवासारू तैयार थई हे. एवी जरगश्रेणि एटले सर्पपंक्ति हे; एम जाएा. कोई कार्य करवासारू ज्युक्त पुरुषने सर्पदर्शन निषिद्ध हे; अने निधान यहणना समये तो अत्यंत अनिष्ट हे. माटे स्वीकेशपंक्तिरूप सर्पिणीनुं दर्शन तुं नही कर. केमके, एम कस्ताची धर्म चिंतनरूप निधानना यहण समये तने विघ्न आवशे नही.

आ वृत्तमां, स्त्रीना केशनी पंक्तिने सर्पपंक्ति कहीते. अने तेनी श्यामताने मे धनी तथा काजलनी जपमा दीधीते; ए शृंगाररस ते; अने ते सर्पनी पते विन्नकारी होवाथी सर्वथा त्याग करवा योग्य ते; ए वैराग्यरस ते. ॥ ३०॥

यातुं यद्यनुरुच्यते शिवपुरीं रामानितंबस्यलीं मुंचेर्दूरमिमामनं गकलज्जीडाविहारोचिताम् ॥ नोचेद्यौवनचंडवातविततव्यामो हधूलीकणक्ठाम्यदृष्टिरदृष्टद्याश्वतपद्यः प्राप्तोसि जन्माटवीम् ॥३१७॥

र्शुंगारवेराग्यतरंगिणी.

अर्थः- हे पुरुष, जो तने मुक्तिरूप नगरी प्रत्ये जवानी अनिरुचि होय, तो तूं कामरूप गजशिद्युने कीडाने अर्थे, विहारविषे योग्य एवा आ स्त्री नितंबरूप स्थली एटले नूमि, तेने तूं दूर मूकीदे. जो तूं ए नूमिने मुकीश नही, तो यौवनरू प प्रबल वायुए करो विस्तारने पामेला व्यामोहरूप रजःकणो तारां नेत्रोमां पन्हो तेथी मार्ग सूफनार नथी अर्थात् मोक्तमार्ग मलनार नथी. आंखोमां धूल गयाथी मार्गने जोई शकातुं नथी. ए प्रसिद्ध हे; एम संसाररूप अरएयमां ज्रमण करीश. आ उत्तमां, कामने हस्तिनाबालक जेवो कह्योहे. तेने कीडा करवाने स्त्री नितंब रूप प्रथवी हे, अर्थात् कामकीडानुं स्थान जे स्त्रीना नितंब कह्याहो. ए शृंगाररस हे; अने ए प्रथवीनेविषे यौवनना योगे नेत्रोनेविषे रजःकणो पमधार्थी मार्ग सूजतो नथी; अर्थात् स्त्रीनितंबरूप नूमिनेविषे जे पुरुष आवी जायहे ते विषयरूप रजःक ऐकरी हृदयांध अई जायहे. माटे ए त्याग करवा योग्य हे. ए वैराग्यरस हे.॥ ३९॥

> मालिनीटत्तम्॥ शमधनमपहतुं कामचौरप्रचारं विरचयति निकामं कामिनी यामिनीयम् ॥ सपदि विद्धती या मोह निषासमुष्टां जनयति जनमंतः सर्वचैतन्यशून्यम् ॥ ४० ॥

अर्थः-आ कामिनीरूप यामिनी एटले रात्रि, उपशमरूप धन हरण करवाने सारू कामरूप चोरनो अत्यंत प्रचार प्रगट करेंडे; तथा मोहरूप निझानी समृदि कर नारी जे ए रात्र, ते जन एटले मनुष्योने अंतःकरणनेविषे सर्व चैतन्य थकी रहित करेडे. जेम रात्रिनेविषे सर्व मनुष्य निध्ति डतां इव्य हरण करवासारू चोर फिरे डे तेनी पठे जाणी लेवुं.

आ ष्टनमां, स्त्रीने मोइ उत्पन्न करनारी रात्रि कहीते, ने कामने चोर कह्योते. अर्थात् स्त्री कामोत्पत्ति करनारी ते, ए शृंगाररस ते ; अने ए रात्रिनेविषे मनुष्य च्रम ए करे तो कामरूप चोरना सपाटामां आवी पोतानी संपत्ति तथा प्राए प्रमुख सर्व खोई दियेते, माटे एनो त्याग करवो योग्य ते ए वैराग्य रसते. ॥ ४० ॥

उपजातिव्रत्तम् ॥ मृगेक्त्णा नूनमसावसीमा जीमाटवी बुद्धिमतामती त्या ॥ यद्दाढुवद्धीजिरनंगजिद्धो बध्वा नरान् लंजयते न मुक्तिम् ॥४१॥ अर्थः-जे बुद्धिमान पुरुषोने अतिकमण करवा योग्य नथी, जेने मर्यादा नथी, जेना मृगना जेवां नेत्र हे, एवी आ स्त्री ते जयंकर वन हे; जेनी बाढुलताए करी, कामरूप जील, मनुष्योने बांधिने फरी ढोडी मूकतो नथी, अर्थात् बांधेलोने बांधेलो ज रहेवा दियेठे. जेम अरएयमां मार्गें चालनारा लोकोने चोर, वेलिवडे बांधिने तेओनुं सर्वस्व हरएा करी लीयेठे, तेमज मृगेक्एणा स्वी पोतानी बाहुलताए कंठने विषे बंधन कखा पठी पुरुषने मूकती नथी.

आ उत्तमां, स्वीने मर्यादारहित कही, तैथी हावनाव सूचव्या छे, स्वीने वनरूप कही ने तेनी जुजाने लतारूप कही, एमां कोई पुरुष सपडाय तो फसी पडेछे, आ र्थात् स्वीए जुजावडे आलिंगन कखुंढतां तेथी पुरुष ठूटी शकतो नथी, ए शृंगार रस छे, अने ए वनमां कामरूप चोरटा वशेछे ते मोइन्मार्गे जनारा पुरुषनुं धर्म धन प्रमुख हरए करी जेनार छे, माटे त्याग करवा योग्य छे, ए वैराग्य रस छे. ॥ध १॥

शिखरिणीयत्तम् ॥ इयं वारं वारं द्युतितुजितरोजंबवलयं न वक्रं भूचकं चलयति सगाक्ती मम पुरः ॥ कुधीकारागारापसरणमतिं

मां रखलयितुं प्रपंचत्पंचेषोर्वहति निवडं लोहनिगडम् ॥ ४२ ॥

अर्थः — आ मृगलोचना जे स्वी ढे, तेनुं जे वांकुं चुकुटिचक ढे, ते जमराओना जेवुं कांतिवालुं ढे, ते मारी सांबे वारंवार चंचल करेढे, एम नथी; पण नरशी बु दिरूप कारायहथी दूर नाशी जवानी इहावालो जे हुं ढुं, तेमने नाशी जवा न देतां कामना प्रपंच युक्त डःसह जे लोखंमनी बेडी धारण करेली ढे, अर्थात् जेम चोरने बेमी नाखीने बंदीखानामां नाखेढे, तेमज मने पण वश करवा सारु आ स्वी चुकुटी चकरूप कामदेवनी लोखंमनी बेडी धारण करेढे.

आ वृत्तमां, स्त्रीनुं चुकुटिचक एवुं जे के जे पुरुष तेना फासामां आवे ते फरी ढूटी शकतो नथी, अर्थात् अति मोद उत्पन्न करनारुं जे; ए शृंगार रस जे; अने स्त्रीनुं चुकुटिचक काम देवनी लोद्दनी बेमी जे, माटे तेनो त्याग करवो जोये ए वराग्य रस जे. ॥ ४१ ॥

मंदाकांता हत्तम् ॥ यामोन्यत्र डुततरमितो मित्र यत्कंठपींठे नायं हारश्चकितहरिणीलोचनाया चकास्ति ॥ नाजीरंध्रे विहितवसति योस्ति कंदर्पसर्पस्तन्मुक्तोयं स्फुरति रुचिरः किंतु निर्मोकपद्टः ॥४३॥ अर्थः-हेमित्र, आ आपणे स्थानकने मूकीने जलदी बीजे ठेकाणे जवुं जोये. के मके तृषावान थएली हरिणीना नेत्रना जेवां जेनां नेत्र डे, एवी स्वीओना कंठमां जे **១**४០

आ हार शोजे बे, ते हार नथी; किंतु नाजिरूप रंघनेविषे रहेनारो जे कामरूप स र्प, तेेणे मूकेलुं आ मनोहर निर्मोंकपट एटले कंचुक दीवामां आवेबे, तेज आ वेकाणुं मूकीने बीजे वेकाणे जागी जवानी सूचना करेबे. सर्पनुं कंचुक जयनो हेतु बे, माटे नाजीरूप जे कामरूप सर्पने रहेवानुं राफमुं, अने आ हाररूप सर्पनुं कंचुक बे, एम जाणीने नाशी जवुं योग्य बे.

आ वृत्तमां, स्त्रीओना कंवना हारनी शोजा कहीते, तथा नाजिनुं वर्णन करेलुं ते, ए शृंगाररस ते ; अने ए बन्ने डःखना साधन होवाथी त्याग करवा योग्य ते ए वैराग्यरस ते. ॥ ४३ ॥

वसंततिलका रतम् ॥ यः कामकामलविजुप्तविवेकचक्तुः

स्वर्गापवर्गपुरमार्गमवीद्वयमाणः ॥ ज्ञानांजनं प्रति निरा

दरतामुंपैति आत: पतिष्यति स जीमजवांधुकूपे ॥ ४४॥

अर्थः - जे पुरुषना विवेकरूप चकु कामरूप कामल एटले नेत्र रोगेकरी यस्त छे; ते स्वर्ग अने अपवर्ग एटले मोक्रूप नगरनो मार्ग जोई शकतो नथी; एमछतां जे पुरुष ज्ञानरूप अंजननो आदर करतो नथी, ते पुरुष जयंकर संसाररूप अंधकू पमां पडेछे; जेम कमलाना रोगेकरीने जेनां नेत्रो यस्त थयलां होय, ते जो आं खोनेविषे अंजन नाखवानो अनादर करे तो अंध कूपमां पडी जाय, तेम ज्ञानां जननो जे निरादर करेछे, ते आ संसाररूप आंधला कूवामां पडेछे.

आ वत्तमां, कामने नेत्र रोगना जेवो कह्योबे, एटजे जेने कामलो प्रमुख ने त्ररोग यायबे, ते कांई जोई शकतो नथी, तेम कामरूप नेत्र रोगना योगे पुरुष निर्लेज थायबे, एवी कामनी महिमा बे, ते शृंगाररस बे; अने कामांध पुरुष आ संसाररूप आंधला कूवामां पडेबे,माटे त्याग करवायोग्य बे,ए वैराग्यरस बे.॥४४॥

शिखरिणी वृत्तम् ॥ जवारण्यं मुक्ला यदि जिगमिषुर्मुक्तिनगरीं त दानीं माकार्षीविषयविषवृत्तेषु वसतिम् ॥ यतश्वायाप्येषां प्रयय ति महामोहमचिरादयं जंतुर्यस्मात्पदमपि न गंतुं प्रजवति ॥४८॥ अर्थः- हे पुरुष, जो तुं जवाटवीने मूकीने मुक्ति नगरीप्रते जावानी इज्ञा क रतो हो, तो विषयरूप विषवृत्तनेविषे वसति नही कर. केमके, आ वृत्तनी बा या पण महामोहना विस्तारने पमाडेबे ए विषयवृत्तनी बायानो स्पर्श्व पण मो इ कारक हे. ए कारण माटे आ प्राणी एक पगजुं पण चालवाने समर्थ थतो नथी. जेम वननेविषे विषवृद्धनी नीचे बेठेलो पुरुष, मत्त थयेलो होयहे, ते वखते ते वन मूकीने नगरमां जवानी इन्ना करे तो एक पगजुं, पण नाखी शकातुं नथी. मा टे मोद्दनी इन्ना करनारा पुरुषे विषयसेवन करवानी बुद्धि करवी नही.

आ उत्तमां, विषयना सेवन थकी पुरुष कामांध थई जाय हे, एम कह्युंहे ते शृं गाररस हे, अने ते सर्वथा त्याग करवा योग्य हे एम कह्युंहे ते वैराग्यरस हे. उपजातितृत्तम्॥सामप्रज्ञाचार्यमज्ञा च यन्न पुंसां तमःपंकमपाकरोति॥ तदप्यमुष्मिन्नुपदेदालेदेा निदाम्यमानेऽनिदामेति नाद्याम् ॥ ४६॥

इति श्रीशतार्थरत्तिकारश्रीसोमप्रज्ञाचार्यविरचिता

रांगारवेराग्यतरंगिणी समाप्ता.

अर्थः-सोमप्रना एटलेचंड्कांति, अने अर्थमना एटले सूर्यकांति जे मनुष्यो नो तमःपंक एटले अज्ञानांधकारसमूद दूर करता नथी, ते पए आ अल्प उप देश अवए कखो बतां नाशने पामेबे, अर्थात् चंड्कांति तथा सूर्यकांति अज्ञानरू प अंधकारनो नाश करवाने समर्थ थती नथी, अने आ उपदेश अंतरनो अंधका र मटाडवाने समर्थ बे. एथी आ उपदेश अति उत्रुष्ट बे. आ पद्यमां यंथकर्ता ए पोतानुं सोमप्रनाचार्य एवुं नाम चातुर्ये करी गोपन करेलुंबे, ते ज्ञाताओए जाणी लेवुं. ॥ ४ ६ ॥

आ प्रंथनुं नाम प्रंथकर्त्ताए शृंगारवैराग्यतरंगिणी राख्युं हे, एनोअर्थ शृंगार अने वैराग्यरूप तरंगोवाली नदी, एवो खायहे. ते नदीना बन्ने प्रकार नंदलाल नामना टी काकर्त्ताए स्पष्टरीते दर्शाव्या हे, तेनोज जाव लईने आ अमे अर्थ कस्तो हे. प्रंथ ना अंतमां टीकाकर्त्ताए त्रण श्लोक राख्या हे ते आप्रमाणे:-

संवत्सर दिपमुनीं इमितस्य मासे मार्गे त्रयोदशमिते दिवसे जूगो च ॥ स्वब्पा तरी विरचिता सुखबोधिकाख्या श्लेषीयइस्तरतरंगिणिकासुशास्ते ॥ १ ॥ छागारानाझि नगरे नंदलाक्षेन धीमता ॥ दानविश्वालशिष्यानुरोधेन रूपया गुरोः ॥ शा गुग्मम् ॥ सोमप्रचाचार्थरुतिं सुहर्गमां विरुण्वता स्वल्पधिया मयाऽत्र यत् ॥ न्यूनाधिकोर्टकन मल्पबुद्धितः रूतं विशोध्यं रुतिजिः रूपालुजिः ॥ ३ ॥

इति श्रीशृंगारवैराग्यतरंगिणीनाषांतरं समाप्तं

॥ अय श्रीवीरस्तवनप्रारंजः ॥

स्वःश्रेयससरसीरुइ, सूरं श्रीवीरं रूषिवरं सेव ॥ सविशेषदर्षरसवश, सुरासुर व्यूह्सेव्यांऽन्हिं ॥ १ ॥ अश्वोवसीयससरः, शोषसहस्रांग्रुराश्रयः सहसां ॥ संसार जालसां वो, जूयाझवशो वशी वीरः ॥ १॥ विषयाशीविषवीश्वर, हिंसारस सरसवा रिरुइ शिशिर ॥ विश्वस्य रोपशार्वर, संहाररवे शिवाय स्याः ॥ ३ ॥ आशंसवः शि वश्री,विलासलीलां विहाय सुरयोषाः ॥ यं शिश्रियुः खरीशाः श्रीवीरः श्रेयसेऽसौ वः ॥ ४ ॥ इरदालदंलशशिदा,रदारियशलोः शिवैषिसंश्रययोः ॥ ईदे वरिवस्यायै, वीरेशस्यांन्द्रिसारसयोः ॥ ५ ॥ शीलसरोवरलहरी, विहारशिशिरा असंवरीयो वः ॥ वीरस्य व्याहारा, न्दियासुरशरीरशौर्यहरा ॥ ६ ॥ उरुसंशयशैलखरु, ररिहा वीराव्ह यो वरवृषांसः ॥ अवसेयाझौल्यं वा, वर्षारुद्धवारिवाद्दरवः ॥ ७ ॥ सरलाशयाः सुशी ला, रिरंसवः श्रायसश्रिया सह ये ॥ येषां श्रीवीरेश्वर,सेवारस एव हर्षाय ॥ ७ ॥ वीर शिवालयसरसी, वरलावर सर्वविषयविद्वास्य॥ संवरसारसवासर, सर्वेषां लोलवीष्यव षं ॥ ए ॥ शीलश्रियो विवाहावसरे विश्वाश्रयो रसावलये ॥ आवर्षे वसुवर्षी, वि शां विशालैरयैरासीः ॥ १० ॥ आ इांसे सहसाहं, वासवसेवाई शिवरसाल हरे ॥ रु इविश्रसावसाय, व्यवसायायासविरहवरं ॥ ११ ॥ छहरुषयोर्विंशरारु,श्रीसर्वस्वं हि शशिसरोरुह्योः ॥ अशरारुस्वास्यश्री, लास्यविलासैर्विलोलयसि ॥ १२ ॥ संसा रसलिलराज्ञेः, ज्ञोषे क्रषिरावज्ञेयइव वीरः ॥ सर्वाज्ञालासियज्ञो,राज्ञिरहिंसारहःशा ला॥ १३॥ जरतिशयाद्धः श्रेयः,श्रिया असंवरसरोरुद्दशशीव ॥ रायाझयं शि वावह, रसाविहारः स्वसेवायां ॥ १४ ॥ संदानिकं ॥ अविषह्यशिरः शुलं, विश्व लिहो विषयवैरिवारस्य ॥ व्याहरसि वृषरहस्यं, शस्याय शरीरिविसराय ॥ १ ५ ॥ शैश व एव सुसारः, खरहार्यशिरोविजोलसेव्यांन्हे ॥ संहरसि हेलयांहः, सिंहइव वरोश्वरं सहसा ॥ १६ ॥ शिशिरांग्रुशिशिरलेश्यै,रार्यव्यवहारलालसैररुपैः ॥ संश्रीयसं क् षीज्ञे,रीर्ष्यावज्ञीलवासिवरैः ॥ १ ७ ॥ उजासय खसेवारसशीले विशि शिवावलीं वी र ॥ अविरलविषयहलाहल, लहरीसंहारसुशिरीष ॥ १० ॥ श्रवसी वशयसि सौवै, व्यहिाररसैः सुरासुराहिविशां ॥ यैः सह रसालयाऽहा,सि हारहूरारसानरस ॥१९॥ रेहारिशरीरश्रीः, सुरासुरावार्यवीर्यशाली यः ॥ संवरवैरियशः श्रेशि, राहुरशेषश्रियां वासः ॥ २० ॥ वरिवस्यः सूरिवरे ,विंहाय आज्ञारसाविहारियज्ञाः ॥ अंहोऽसुरवंश

स्तोत्र.

हरिः, सुरशैलशिलाविशालोराः ॥ ११ ॥ ग्रुश्रुष्ठशिष्यविसर, अवःसुहर्षरसवर्षिसंरा वः ॥ अविलयवार्थेश्वर्य, श्रीयोषाश्लेषरसविवशः ॥११॥ सैषोऽसहायवीर:, शिवा रिवाराहवेष्वसुसहेषु ॥ विश्वस्य सुरोर्वीरुह, आयुष्यः श्रेयसां वीरः ॥ १३ ॥ संसारो रुविषालय, वारिविशोषौर्वहव्यवाहो वः ॥ अव्याझीलाऽलससुर, विलयाहावाऽविषय शीलः ॥ १४ ॥ पंचजिः कुलकं ॥ अन्द्रियोऽलसस्य शिष्या, वयवलवस्याऽयविरह्वि रसस्य ॥ श्रीवीर वीरयरया, झेश्या अश्रेयसीरस्य ॥ १५ ॥ यः पंचवर्गपरिहारमनो इमेतचेतश्रमत्रुतिकरं गुणकीर्तनं ते ॥ जिव्हायवार्ति वितनोति विपदितानाः श्री वीरनाग्ययुजि न प्रनवंति तस्मिन् ॥ १६ ॥ इति पंचवर्गपरिहारेण श्रीजिनप्रनस् रिकृतश्रीवीरस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ उप्रथ श्रीगोतमस्तवनं ॥

श्रीमंतं मगधेषु गौवेर इति यामोनिरामोऽस्ति यस्तत्रोत्पन्नमसन्नचित्तमनिशं श्री ॥ ज्योतिःसंश्रयगौतमान्वयवियत्प्रद्योतनद्योमणिं तापोत्तीर्शसव वीरसेवाविधौ र्णवर्णवपुर्वं जन्त्रयेंइजूतिं स्तुवे ॥ १ ॥ के नाम नाजंगुरजाग्यसृष्ट्ये दृष्ट्ये सुराणां स्पृहर्यति संतः ॥ निमेषविद्रोक्षितमाननेंडुज्योत्स्नां मनोइत्य तवापिबद्या 1 8 1 निर्जित्य नूनं निजरूपलद्दम्यातृ एीछतः पंचशरस्त्वया सः ॥ इत्थं न चेत्तर्दि कुतस्तिने त्रनेत्रानलस्तं सहसा ददाइ ॥३॥ पीला गिरं ते गलितामृतेज्ञाः सुराश्चिरं चकुरनो ज्यमिंडं ॥ सुधान्ह्रदे तत्र मुनीश मन्ये लक्षाज्ञलात् शैवलमीद्वयतेऽतः ॥ ४ ॥ सौ जाग्यजंग्यापि समाधिदाने प्रत्येति लोकः कथमेतदङ्गः ॥ यत्त्वां समग्राश्चपि लब्धिकां ताः समाजिलिंगुः समकालमेव ॥ ५ ॥ त्वत्पादपीवे विद्धुवंत्यमत्यांस्त जेड्जूत्याः किल कल्पवृद्धाः ॥ तैरप्यमाहंत तवोपमानोपमेयजावः कथमस्तु वस्तु ॥ ६ ॥ पदो र्नखाली तब रोहिणीयं मुदे न कत्याङ्गतरुचरित्रा ॥ वंदारुपुंसां वदनेंडरंतःप्रविष्टवि बोपि शिवाय यस्याः ॥ ७ ॥ यत्केवलङ्गानमविद्यमानमयात्मनि स्वांतिषदामदा स्त्वं ॥ लोकोत्तरत्वे ननु तावकानां दिङ्मात्रमेतचरिताङ्घतानां ॥ ७ ॥ जवजुणानां सुतयो गुएज्ञैर्विधीयमाना विबुधाधिपाद्येः ॥ सुत्यांतरस्तोत्रकथामणस्य समाप्त ये हत्करणीजवंति ॥ ए ॥ न रागवान्नो जजसेतिचारं नालंबसे वक्रगतिं कदाचित ॥ पुरस्कते नोपि घनाधनाशी तथापि प्रथ्वीतनयोसि रूढः ॥ १ ण ॥ प्रनो महावीर मुपांस्य सम्यक् त्वयार्जितं यत्इकजारहस्यं ॥ गृहे यतित्वेप्यनिरूपरत्नत्रयीजुषा कीर्तिरतानि तेन ॥ ११ ॥ त्व दाणिमाधुर्यजिता पंजाय्य सितोपजा काचयटीं विवे

श ॥ तत्रापि जीति दधती शलाकाव्याजेन जयाद तृणं तु वक्रे ॥ १ श ॥ श्रीवीरसेवा रसलालसत्वात् तद्दाधिनीं केवलबोधलक्कीं ॥ अप्यायतामादरिणीं वरीतुं तृणा य मत्वा त्वमिव त्वमस्थाः ॥ १३ ॥ अपोढपंके कविनिर्निषेव्ये निरस्ततापे बदु जंगजाले ॥ विजो जवदाङ्मुखगांगपूरे ड्वांदिप्रगास्तृणवत्तरंति ॥ १४ ॥ राका मये दिग्वलये समंतात् यशःशराग्तेन रुते ध्रुवं ते ॥ कुद्रूध्वनिः केवलमेव कंवदेशं पिकानां शरणीचकार ॥ १५ ॥ जगत्रयोझासि यशस्तवेतत् क स्पर्क्तां सार्क्षमनेन चं इः ॥ यस्यापरार्द्धपि तृणस्य नैव प्रजाप्रजावो लजतेऽवकाशं ॥ १६ ॥ ठत्रेंडपद्मादिष्ठ रूढिमात्रं त्वन्नाच्नि तु श्रीवेस्ततीति मुष्टिः ॥ कुत्तोन्यचा तज्जपदीद्दितानां पुरःपुरो नृत्य ति नित्यमृद्धिः ॥ १९ ॥ वसुनूतिसुतोपि कौतुकं वसुनूतेर्जनकः प्रऐम्रिषां ॥ जगव न्नजवोपि वर्तसे कथ्यमंगीरुतसर्वमंगलः ॥ १७ ॥ नाधःकरोषि तृष्यमीश गणाधिपोपि धत्से सदा स थमपाशमपि प्रचेताः ॥ श्रीदोपि स्त्रितयमालयवासकेलिस्त्वं पावकोपि इरसे दरदेतिपातं ॥ १९ ॥ यत्तपत्यपि कलौ जिनप्रजाचार्यमंत्रमनुशीलतां स्फुरेत् ॥ देतुताऽत्र खलु तत्वदेकताध्यानपारमितयेव गृह्यते ॥ ३० ॥ मयैवं डुर्दव शमयितुमलं मूक्षमदिमा सुतस्त्वं छेज्ञेन श्रुतरचधुरा गौतम नमः॥ १ ॥ इत्रिशीगौतमस्तवनं समाप्तम् ॥ ॥ च्यय नेमिस्तवनं क्रियागुप्ते ॥ ।

श्रीहरिकुलहीराकर, वजमणिर्वज्रपाणिना प्रणतः ॥ लमवयमुक नेमे, प्रणमुषां शेमुषीमग्रुनां ॥ १ ॥ अवय ॥ मयि प्रसादप्रवणं रुपानिधे विधेहि शैवेय निजं मनस्त या ॥ यथा जगन्नाथ मधुव्रत व्रतं नवे नवे तारकपादपद्मयोः॥ शानवे ॥ नयेन नेमे यड वंशमौकिक श्रियानिवासस्तव पादपंक्तं ॥ डःखोर्मिसंघट्टविघटितात्मना तेनाति गंनीरतमे नवांबुधौ ॥ ३ ॥ आति ॥ डर्नयार्णवमहातरीनिज्ञाः स्यात्पदोपहितवस्तु विस्तराः ॥ पातकानि नवदीरितागिराऽजंतु जातशिवदानलाखताः ॥ ४ ॥ अजंतु ॥ प्रेंखन्नखश्रेणिमयूखलेखा निर्वासिताशावलयांधकारं ॥ अवार्थसौंदर्यविखास गेऽहं तवांधियुग्मं शरणं प्रपद्ये ॥ ५ ॥ गे ॥ यस्त्वया कज्रुपथः सतां मतो देवखंडितकुतीर्थि कवर्गः ॥ तं प्रपद्य निरवद्यमुद्यता नेदयंति नत्रु मुक्तिपुरीं डाक् ॥ ६ ॥ ज्यत्तं भि कर्वर्भः ॥ तं प्रपद्य निरवद्यमुद्यता नेदयंति नत्रु मुक्तिपुरीं डाक् ॥ ६ ॥ ज्यत्त्या विधौ यस्ते सदिवेकविनारुतः ॥ तस्यानिमुखमीइंते न जातु सुखसंपदः ॥ आ असत् ॥ कर्मकहावलीपावकं तावकं इनियाहंरुतित्रासनं शासनं ॥ ये प्रपन्ना गुणस्नेहिनो देहिनस्ते सुराराध्यडःखानि सुश्चियां ॥ ७ ॥ व्यसुः ॥ विज्ञवराज्यकलासुररा जतांवरमणीर्रमणीनिरलं मम ॥ इदि पदांबुरुहरूस्मरणं चते गिरि च तथ्यगुणस्तव

नं तव ॥ ए ॥ चते ॥ जगजनश्रवणपुटामृतहटां तमोपहां सुललितरा गपेशलां ॥ **उदीरयन्** गिरमिलदेझनावनावरा गतामयसुखसंपदां सतां ॥ १० ॥ अराः ॥ जव्यान् जवच्रमणजीरुकचित्तवृत्तीन् संदेशनाजिरजितस्त्वसुरुप्र नावः ॥ दोषासमागमनिमीलितमज्जखंडमाश्वासयेन्न किंम्रुरश्मिनिरंग्रुमाली॥ ११॥ आवः ॥ जूत्याजिजूतपुरुद्रूतपुराजिरामतां कुर्वति संततमहोत्सवजाजमुर्वरां खइंदनंदद्यमयानि महाज्ञतानि ते कव्याणकानि जुवनेश विचाव्य चेतला ॥ १ शा अयानि ॥ नारत्वया चमरविचमवर्णो हे सुनींइ वपुषि प्रचरिसुः ॥ पापशात्रवनिब ईएएएस ध्यानसंततिरिवाश्रितमूर्तिः ॥ १३ ॥ जहे ॥ डर्बोधं मे सपदि पदकीनूत वास्तोः पते सद्नुंगश्रेणीकुवलयवनश्यामलहायकाय ॥ आकौमाराज्जुवनजयिनि र्यस्य ते ब्रह्मवर्म सैः कादंबैर्न खलु मदनः स्प्रष्टुमप्यक्तमीष्ट ॥ १४ ॥ इय ॥ नाड्ांनो दनिनाद्यादवकुलश्रीकंवपीवीजुवन् सुक्ताहारमहारथं रतिपति निर्जित्य जैनाजिरे ॥ कीर्ति कैरवकोमलामधिगतं त्वामेव देव प्रचं श्रीमन्नेमिजिनेंड्चंड् शरणं नीरुर्न वारातितः ॥ १५ ॥ एमि ॥ सेवाहेवाकिनः स्युस्तव पदयुगले येऽत्र जनित्रयुक्तास्तेषां वेवाः सदा पिप्रति इतविपदः संपदः सुप्रसन्नाः ॥ चिंतारतं प्रयत्नात् करतलकलि तं कुर्वतां सर्वकालं कालं नेतर्नराणामटति सुघटतां नो मनोराज्यसिदिः॥ १६॥पि प्रति॥ जवताऽऽरि जयोडु रेर्यशःप्रसरैः शुक्कतया जगत्रयं॥ जिनसिदिरिति प्रसिदिजा क सुखसाम्राज्यमयी महापुरी ॥ १९ ॥ आरि ॥ अवगन्नतरां खसेवकं मां जगवन् यां च शिवस्य वर्तिनीं लं ॥ करुणाईमनाः कुरु प्रसादं मयि तस्याः सपदि प्रकाश नेन ॥ १ ७ ॥ अवक् ॥ मरकतकमनीयकांतिकाय लमजिनतेंड् किरीटघट्टितांऱ्हे ॥ चिरमिन मम चंचरीकचर्यों हृदय कुशेशयकोशमन्वजस्त्रं॥ १७॥ अय ॥ निखिलज गतां गोप्ता गुप्तकियास्तवसूत्रणादिति कृतनुतिः सानंदं श्रीजिनप्रनसूरीनिः ॥ जव तु जवतां जेतुं जूयो जवचमसंजवं जयमजयदो जीमः श्रीमहिवातनयः प्रचुः ॥ १०॥ इति श्रीनेमिजिनस्तवनं कियाग्रसं समाप्तम् ॥

॥ अय श्रीवर्दमानस्तवनत्रारंत्तः ॥

कंसारिकमनिर्यदापगाधाराद्य विराट् इद इविं ॥ इंदोनिर्विविधैरधीरधीः स्तोष्येऽहं चरमं जिनेश्वरं ॥ १ ॥ त्रैलोक्यनेतस्तव डर्नयालीनिर्नाशनं शासनमाश्रितो यः ॥ त स्येंड्वजायुधमाविरस्ति डःकर्मशैखेंड्निदाविधाने ॥ १॥ किमेकमाश्रर्यकरं न ते यत् पुष्पंधयोप्येष विशेषविज्ञः ॥ त्यकोपजातिच्रमणानिजाषस्त्वदंगसे।गंध्यमनुप्रयाति ॥ ३ ॥ यः सृजत्यजर सौरनसा रैरंबुजैस्तव पदांबुजपूजां ॥ प्रेत्य तस्य दिवि देवम्

गाद्रयः स्वागतानि निगदंति सरागं ॥ ध ॥ वालिवारणरयो ६ताजटैरुझटा सुनग जोगजंगिजृत् ॥ राज्यक्रिहरुपनन्नमीति तं नंनमीति तव यः पदौ मुदा ॥ ५ ॥ ना किनिकायकरप्रहतानां संप्रसरन् गगने मरुजानां ॥ जन्ममहे तव कस्य न जड़ो दत्तमदो धकधोंकतिनादः ॥ ६ ॥ ये जत्तयात्तज्जमरविलसिता जङ्युः पादांबुरुद्दि तव विनो॥ तैः श्रेयः श्रीमेधुरमधुरसाखादो सादात् समजनि छतिनिः ॥ ९ ॥ तला तलारोपलोपप्रवीणां प्रव्हप्राणित्राणसंस्थाधुरीणां ॥ आज्ञां धने मौलिना जव्यजं तुश्रेणिः श्रद्धाशालिनी तावकीनां ॥ ७ ॥ वसुधाम सुधामयवक्र विधो तव नाषित माडियते छवि यः ॥ स सुखानि सुखानिरिवोद्यमणीन् बिन्नते परितोऽटककीर्ति त्ररः ॥ ए ॥ स्रग्विणी कुंडलचाजिगझस्थला तारहारद्यतियोतिवक्तसतटा ॥ राजि राखंमजानामखंडादरा पादपीठे जुठत्तावके पावके ॥ १०॥ ऋणादेव तेषां शिव श्रीच्चजंगप्रयातं विवृद्धि ग्रुजं कर्म पुंसां ॥ जवन्नाममंत्रस्य वर्णानुपूर्वी रसझायव तिंसुरापादिता यैः ॥ ११ ॥ दुतविलंबितमध्यरवध्वनद् विविधतूर्यमनेकमणीमयं ॥ कुसुंमवर्षचितं तव देशनावनितलं कइवैत्य न मोदते ॥ १२ ॥ सुकुरोज्वले ग एजूतां हृदये प्रमिताक्र्रापि बत वाक् जवतः ॥ अनियत्तया प्रतिपफाल जिनध्व नितोऽर्थतश्च जगदर्च्यधियां ॥ १३ ॥ जगत्प्रनो नक्तिनरादनुदिजा दिजातिवंशाद पहत्य कृत्यवित् ॥ नरेंड्वंशस्यमचीकरह्वचीपतिर्नवंतं इरिनैगमेषिणा ॥१४॥ वाचां ते निखिलनयाविरोधिनीनां डुर्बेाधद्रमदलने कुठारिकाणां ॥ माहात्म्यं छवनमनः प्रहर्षिणीनां निर्वक्तुं कइव यथावरस्तु शक्तः ॥ १५ ॥ सिद्धार्थराजकुलनंदनपारिजा त न चाम्यति क तव कीर्तिरपारिजात ॥ वर्णेन इग्धमधुरेण मतोजनागसिंहो ६ता स्थिरतया सुमनोजनाऽग ॥ १६ ॥ अति महति जवोमींमालिनीह जमंतो जननमरणवीच्या घातदोटूयमानाः ॥ कथमपि ष्टशुपुत्थाः प्राणिनः प्राप्नुवंति प्रव इएमिव केचिज्वासनं तावकीनं ॥ १९ ॥ जवएिमतर्जितस्मरपुरंधिरूपदर्पा घटितक टाक्तलक्त्रारविक्कामिमर्मा ॥ कनकमणीमयानरणरहिमरंजितांगी व्यजयत वाणि नी न जवतः समाधिमुड्ां ॥ १०॥ प्रबोधं जव्यांजोरुहवनमधीशाधिगमयन् ह रन् मोहध्वांतं परतमयताराः कवलयन् ॥ निविष्ठः सिंहासन्यलममलनामंडलयु तो जवानाजातिस्मोदयशिखरिणीव युतिपतिः ॥ १७ ॥ अमितदमितस्रोतो मा यतुरंगमसंगमत्रिदशहरणीनेत्रो नेत्रत्रिनागविलोकितैः ॥ तव जिन मनः शेके कर्तुं मनागपि न स्वलाचलयितुमलं किं हेमाईि युगांतमहाबलाः ॥ २० ॥ दारिद्यापत्प रिजवजनुविस्तरामृत्युडःखराताः के के न तब बलवदेवसेवां प्रपन्नाः ॥ किं स्याडोग

प्रशमनपटोरोषधस्योपयुक्ती मंदाकांता जगति जनता डःसदेनामयेन ॥ २१ ॥ श रडदितनिशाकरांग्रुप्रजा जैत्रकीर्तिछटाधवलितनिखिलत्रिलोकीतलं अद्योपासते ॥ सरजसविनमत्सुराधीशचूडामणिज्योतिषामरुणितपदपीठमूर्मिजिरेष्यछविस्त्वां प्रजो ॥ २२ ॥ बिच्राणो नखविकियां जयकरीं धूतोल्लसहालधीरौड़ं शब्दम नीचकैः प्रकटयन् जूयोवनीकाहतः ॥ त्वक्रक्त्या चृतकोप्यवाप्य नृपतां मांसादरं वर्धयन् धत्तेऽनेकपराजिदर्पदलने शार्दूलविक्रीडितं ॥ २३ ॥ विद्यामंत्रैर्न कार्यं सुर तरुजिरलं वित्तेन च मृतं पर्याप्तं राज्यलद्वम्या रुतममरतया ह्यास्तां सुवदना ॥ स्फू र्जत्वेका तु जकिस्त्वयि मम मनसि ध्वस्ताखिलमला कैवव्यश्रीर्यया स्यात् करतलनिल या साऽन्हाय जगवन् ॥ २४ ॥ श्रीवीरः सर्वदिक्रैः कनकरुचितनूरोचिरुद्दीप्रदीपैर्मग व्यः सोस्तु दीपोत्सव इव जगदानंदसंदर्जकंदः ॥ स्तूक्तिर्जनप्रचीयं मृडविशदपदा रूग्ध राधीयमाना जव्यानां जव्यनूत्ये जवतु जवतुदे जावनाजावितानां ॥ २५ ॥ इति श्रीवर्दमान स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अय चतुर्विंशतिजिनस्तवनं ॥

कनककांतिधनुः शतपंचकोव्रितवृषांकितदेहसुपास्महे ॥ रतिपतेर्जथिनं प्रथ मं जिनं नृवृष्उणं वृषजं वृषजंजिनः ॥ १ ॥ दिरदलांढित वांढितदायक कमलुवत्रि दशासुरनायका। स्तुतिपरः पुरुषो जवति क्तिता वजित राजितरा जितराग ते॥ शातुरग लांढनसंजव संजवत्यहरिदं जिन यत्र रसादहं ॥ हृदि दधे जणितीर्गुणजूरुहां शमहिता महितामहि तावकीः ॥ ३ ॥ जवमहार्णवनिस्तरणेष्ठया त्वमजिनंदन देव निषेव्यसे ॥ व्रतनृतां कुगतेः स्मरनिग्रहप्रसजया सजया सजयात्मना ॥ ४ ॥ त्रिच्चवामितकामितपूरणे सुरतरोरुपमामतिगामुकौ ॥ तव विजो जजते जवतः कमावसुमते सुमते सुमतेर्दद ॥ ५ ॥ धरनृपात्मज षष्ठ जिनेश्वर त्वयि रुतप्रण यः क्रियते पतिः ॥ रजसतः प्रथितार्थिदरिइ तोपरमया रमया त्मयान्वितः ॥६॥ प्रचुसुपार्श्वजगत्रितयाद्धनुः पवितकाशिपुरीकवीलङ्कणः ॥ सुरुतिनः रुतिनश्वरितं वि इःद्युजवतो जवतो जवतोदनं ॥ ७ ॥ ठुनयकाननजंजनकुंजराः शशिरुचे महसेन सुत प्रजो ॥ निखिलजोवनिकायहितोक्तिजिः ग्रजवदा जवदा जवदागमाः ॥ ७ ॥ युधि विजित्य मनोजवमग्रहीन्मकरमंकमिषाद्ध्वजमस्य यः ॥ स्तुतजनाः सविधिं ठुटदशां सुरस्तुतमसंतमसं तमसंस्तुतं ॥ ७ ॥ दढरणांगजशीतल शीतलयुत्तिकलावि मला तव जारती ॥ मनसि कस्य न दर्षसनाथतां जिन ततान ततानततायिनी ॥ १ ०॥ **១**४៤

जयति गंडकलक्मतनुर्जिनः शशिमुखोंबुजदक् दशमोत्तरः ॥ कनकदीक्षिरमर्षितहीर कस्तवरदो वरदो वरदोर्युगं॥ ११॥ ग्रुनमयी वसुपूज्यसुत प्रनो ज्ञवननेत्रमहो महि षांकिता ॥ तव तनुवितनोतु सुखं सतामरुचिरं रुचिरं रुचिरंजिता ॥ १२ ॥ सकलस लसरोजविकासने रविरुचिर्विमल त्रिजगत्पते ॥ अपि शमं नयते तव गीजिनामृत रसा तरसा तरसा तृषं ॥ १३ ॥ निजयशोनरनिन्दुतजान्दवीजलवलक्तिमकिर्तिरनं तजित् ॥ दिशतु वः कुमतासुरनियहे नृशमनःशमनंः शमनश्वरं ॥ १४ ॥ नवनयं तव धर्म धुनोतु वाक्शुतिपथाऽतिथितां गमिता सती ॥ किमु करोति न पित्तरजः शमं वरसिता रसिता रसिताजुषा ॥ १५॥ जयति शांतिजिनः स्म जगंति या जटचमूर्यु धि मोइमदीपतेः ॥ रणकथामपि नकिनरेण ते ससदसा सदसा सहसाऽसुचत् ॥ १६॥ अवति कुंषुजिनाधिपराज्यमाहिमवत स्लयि चक्रहताहितं॥ त्रिदिवतोऽन्य धिका जनिक्तिजिर्घनरंसा नरसानरसारकिं॥१ आजगदधीश सुदर्शन जूमिपान्वयपयः सरिदीश निशामणे॥ प्रणिदर्धेऽतिषदो विशदव्रता वनरतानरता नरतावकान् ॥ १ ७॥ हदि नरस्तवमझिजिनस्मरन्नपि हि मूर्तिमुपैति महत्फलं ॥ निशमयन् समताकरु णांचितां किमुदिता मुदिता मुदितादरः ॥ १ ए॥ लमिन सुव्रत कह्वपलांढनो जनरुचि ईरिवंशविनूषणः ॥ शिवसुखाय तपःपरग्रुह्विताऽग्रुनवनो नवनो नवनोधियां॥ १०॥ विरतिवमे तटाइतिकुंवितस्मरशरः शरणीक्रियतां लया॥ गुएगएसय नमिर्बुधवर्द ण व्रजनना जननाजन नावनक् ॥ ११ ॥ अनुमितं खलु नेमिविनो नवचमणतो मयका यदि यचिरं ॥ महितपादनवान् जवतः रूपानवन्मानवमा वनमालिना ॥ २२ ॥ कमठशासन पार्श्वशिवंकरे रमतएव मनः प्रियधर्मणां ॥ अपि कुतीर्थ्यज नेन डरात्मना तव मतेऽवमतेऽवमतेजसः ॥ १३ ॥ त्रिजगदीद्रण केसरिलद्रण द्र एमपि प्रचुवीर मनोगिरौ॥ गुएगएगन् मम मास्म विरज्यतामुदयिता दयितादयि तावकान् ॥ १४॥ च्युतिजनुर्वत केवलनिर्वृतिक्रणदिनाददतां सुदमार्हताः ॥ व्यरचि यैरुपयबिदरौर्हरां नवसुधा वसुधा वसुधामनिः॥ १५॥ इति जिनप्रनवोमयकांऽति मकमगतैर्थमकाऽवयवैर्वुताः ॥ बलममी वितरंतु धुरिस्थिताः ग्रुजवतां जवतां जवतां तिजित् ॥ २६ ॥ सडपदेशकर प्रसरद्विताऽखिजतमस्कतया तपनोपमाः ॥ ददतु तीर्थ कतो मम निर्ममाः शमरमा मरमाऽमरमानिताः ॥ २०॥ जयति इर्नयपंकजिनीवने हिमततिमेतिकेरवकौमुदी॥शमयितुं तिमिराणि जते महावृजिनजाजि न जाजिनजार ती॥ १७ ॥ कररुताच्रफला ष्टणती जिनप्रजवतीर्थमिजारिमधिश्रिता ॥ हरतु हेमरु चिः सुहशां सुखञ्जुपरमं परमं परमंबिका ॥ २० ॥ इति चतुर्विंशतिजिनस्तवनं समाप्तं॥

ञ्रथ श्रीमहावीरस्तवनप्रारंजः

पराक्रमेणेव पराजितोऽयं सिंहः सिषेवे धृतलक्कदंनः ॥ सुखानि वः खानिरयं र माणां दैमातुरस्तीर्थकरः करोतु ॥ १ ॥ संप्ताश्वतेजाः करतप्तकोच्चः कर्मेधसप्ता विरसप्तनीतिः ॥ प्रणीतवान् संप्तशतीं नयानां वीरः श्रिये व्यंजितसप्ततत्वः ॥ २ ॥ शकानत प्राणतकल्पपुष्योत्तरात्वमाषाढवलऋषष्ठ्यां ॥ देवाधिदेव िजदारदेवा नंदोदरेऽजूर्विहितावतारः ॥ ३ ॥ इपस्य नंद्यादसिता त्रयोदशी ६घशीत्यहानंत तरमीशितस्ततः ॥ सुरेशसेनापतिदेशिताध्वना च्हात्रं कुलं यत्र पवित्रितं त्वया ॥ ४॥ प्रनूतनूतिद्युनवझुवा नवज्जनुर्महे नोऽजनि हेजिन धुवम् ॥ जगत्रयीजंतु षु हर्षवर्षिणी निरूढरूढिर्मदनत्रयोदशी ॥ ५ ॥ त्वया स्वदेइँयुतिसंविनागसंनावि तं हेम सुवर्णमासीत् ॥ तारंतु हीनं लदनुयहेण ड्वीर्णमित्यापदवर्णवादं ॥ ६ ॥ बाव्ये विबोधाय हरेः सुराडिः पादायनुन्नस्तव यज्ञकंपे ॥ चित्रीयता ल्वत्तरसा रसात न्मूर्थानमाधूनयतिस्म नूनं ॥ ७ ॥ बनूव नाग्यातिशयप्रनावात् शुरुस्तवापि त्रिजग जुरौर्यः ॥ युत्तयैव तं मेरुगिरेर्गरिष्ठं सिद्धार्थमप्यार्यगणा गृणंति ॥ ७ ॥ कथं गु र्णैः प्राप्तयशःपताका नारीषु नास्तु त्रिशलाशलाका ॥ यत्कुक्ति्शुकौ विमलः सुव त्तो मौतिक्यनूस्त्वं गुणयुक्तिहृद्य ॥ ए ॥ दिवि प्रवृद्धं सुरमीश मुष्टिघातेन य दाम नतामनेषीः ॥ गर्वाडिखर्वीकरणश्रमं तु चकर्ष तीर्थेश्वर शैशवेन तत् ॥ १० ॥ मो क्तं गमी यः खलु तझवेषि गंतुं कथं सोर्हति लेखशालां ॥ इतीव शक्तोऽपललाप पित्रोरनै।चितिं ते विनयेन धीमान् ॥ ११ ॥ व्याकुर्वतस्ते हरये यदागमं संगृह्य बु थ्या कतिचित् गिरां लवान् ॥ अथ्यापको यहिदधे तडुच्चकेरेंई छवि व्याकरणं प्र थामगात् ॥ १२ ॥ यत्या न कत्योदितमुक्तिमार्गमार्गस्य कक्षा देशमी शमीश ॥ प्रा ज्यं प्रनो यत्र विसृज्य राज्यं श्रमत्यसाम्राज्यमुपाययास्त्वं ॥ १३ ॥ शिवालये प्रो जिफतविग्रहं यत् खत्पादमूले चमरं निलीनं ॥ जंनारिदंनोलियमः प्रचंडो नस्प्र ष्टुमाप्यैष्ट किमत्र चित्रं ॥ रे थ ॥ न बाधितुं जातु दधुः समर्थतां सुनींइ धातोरि व नान्ववर्त्तिषुः ॥ समाधिरूढां प्ररुतार्थसंपदं तवोपसर्गा व्यशिषंस्तु केवलं ॥ १ ५॥ न कौशिके रागसुपासनापरे करोषि रोषं स्म न चंमकौशिके ॥ छहो उदासीनत यैव निर्जिता चमूरत्वया डविंषदापि कर्मणां ॥ १६ ॥ निर्बार्दतुंगां सुर नर्तुरुयतस्तथा तथा यो इरचेष्टत त्वयि ॥ बहिः कृतः स्वर्गिसमाजसंगमा

त् ससंगमः स्यान्नकथं जनंगमः ॥ १७ ॥ एकायपद्वत्रिज्ञतावसाने श्रीवीरती रे ऋजुवालिकायाः ॥ तवोदगात् केवलक्त्रिरस्ताऽपराधराधस्य ग्रुचौ दशम्यां ॥ १७॥ एकाक्तमाहुर्मुनयः कथं मामितीव कोपात् लडपर्यशोकः ॥ अदीदृशत् षट् पदगर्नपुष्पव्याजस्फुरनारकटक्सहस्रं ॥ १ ए ॥ सुरैर्विकीर्णास्तव देशनावना बच्चः प्रसुनप्रकराः समंततः ॥ जयश्लयीनूतकरात्परिच्युताः शराइवानंगजटस्य कौसुमाः ॥ २०॥ स्फुटीनवन्मालककौशिकीमुखप्रशस्तरागस्तवसंस्तवोचितः ॥ प्रविइय दि व्यः श्रवणाध्वनि ध्वनिर्मुदे न केषां रजयन् मृगानपि ॥ ११ ॥ स्थातुं चलज्ञामर गुग्मकैतवात् लदीयदंतद्यतिजान्हवीजले ॥ धुवं लदास्यांबुजवासिनारती युग्ये उपेतां कलहंसदंपती ॥ २२ ॥ स्थैर्थ हतं यज्ञवता शिद्यत्वे तद्याचनाय स्फुटमे प मेरुः ॥ खयंसमागादिति तुंगहेमसिंहासने ते करवंति तर्क ॥ २३ ॥ हंतुं इत्मो इं तम एकमेव तदेहि मेसर्वतमोपहत्वं ॥ इतीव विकापयितुं सिषेवे नामंडलज्ञदा धरो रविस्त्वां ॥ १४ ॥ दूराजराजन्मनिरे जवजीः सुधासपीत्ये त्रिजगज्जनौधं ॥ नूनं नदन् संसदि देवदेवैर्दिव्याहतो इंडजिराछहाव ॥ २५ ॥ मेदं प्रमाणांतरद शितं सन्नमंस्यते सर्वे इतीव पुंसां॥ सितातपत्रत्रितयज्ञलेन रत्नत्रयं दर्शयतिस्म सा हात् ॥ २६ ॥ सुपर्वसंचारितहेमपंकजापदेशतश्रंकमणकरणे किल ॥ गतस्प्रहस्या पि गुणैर्वशंवदाः पदोस्तजे ते निधयो नवाजुठन् ॥ २९ ॥ त्रैलोक्यसंयुक्तनिरंकुशश्रि प्राकाररेखात्रयवेष्टितांगं ॥ नैक्तंत धन्याः कतिनाम रक्तायंत्रोपमं त्वां सुमनोर्चनीयं ॥ २७॥ लत्प्रातिहार्यश्रियमित्यवेद्दय चेतो न यस्येश चमचकार ॥ स केवली चेन्न तदा ऽस्त तस्य नरबुवस्याजननिर्जगत्यां ॥ १९ ॥ अनिंद्यविद्यावदनेंडदर्पणा गणा धिपास्ते यदसूत्रयन् श्रुतं ॥ गिरस्तवैव त्रिपदीसुधाकिरः सतां मनःस्वप्रथितेन गौ रवं ॥ ३० ॥ अरोषनापापरिणाममंछलं विचित्रसंदेदविषांतवक्कलं ॥ स्तुवे वच स्ते नयनिर्विरोधता विधायि संबोधविधौ निबंधनं ॥ ३१ ॥ तप्ला तपः पष्टमपास्तन व्यलोकार्तिकः कार्तिकदर्शरात्रौ ॥ अपापमापुः पदमीश पापा पुर्या दियुग्सप्त तिवत्सरायुः ॥ ३१ ॥ स्वे यत्र बुदे सति फल्युनीषु जाले स्मरोऽजून्मृतकल्पमानी तदिश्ववंद्योत्तरफल्युनीषु बजूव कव्याएकपंचकं ते ॥ ३३ ॥ छवनाधिपतेरनंतया नवतः स्वातिगतेऽत्र नाधिपे ॥ उदयाद्यचितं घनाघनोदकयोगान्नवमौक्तिकश्रि या ॥ ३४ ॥ झातेद्वाकुकुलप्रदीप नगवन् वंदारुवृदारकश्रेणीरत्नकिरीटकांतिलह्री संस्नाप्यमानां-इये ॥ मोहोर्वोपतिगर्वपर्वतनिदि व्याधामधामश्रियामश्रांतं जिनसिं इसूरिमहितं श्रीवीर तुन्यं नमः ॥३५॥ इतिस्तुतिपरायणे त्रिजगदेकचूंडामणे प्रसीद

परमेश्वर खरसजकिनन्ने मथि॥ जवेन्मम जवेजवे नवडपासनावासना जिनप्रजवसं विंदां वरद पूर्णमेतावता॥३६॥ इति पंचकव्याणिकमयं श्रीमहावीरस्तवनं समाप्तम्॥ ॥ उप्रय श्रीमंत्रस्तवनप्रारंजनः ॥

सःश्रिपं श्रीमदर्ईतः सिदाः सिदिपुरीपदं ॥ आचार्याः पंचधाऽऽचारं वाचका वाचनां वरां ॥ १ ॥ साधवः सिदिसाहाय्यं वितन्वंतु विवेकिनां ॥ मंगलानां च सर्वेषा माद्यं जवति मंगलं ॥ १ ॥ अर्हमित्यक्तरं माया बीजं च प्रएवाक्तरं ॥ एनं नानास्व रूपं च थ्येयं ध्यायंति योगिनः ॥ ३ ॥ हृत्पद्मषोडशदलस्यापितं षोडशाक्तरं ॥ पर मेष्ठिस्तुतेर्बीजं ध्यायेदक्तरदं मुदा ॥ ४ ॥ मंत्राएामादिमं मंत्रं तंत्रं विग्नौधनिय्रदे ॥ ये स्मरंति सदैवेनं ते जवंति जिनप्रजाः ॥ ५ ॥ इति श्रीजिनप्रजविरचितं मंत्रस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ उप्रय श्रीवर्डमानस्तवनत्रारंजः ॥

श्रीवर्दभानः सुखष्ट्वयेऽसु यशःप्रतापैरजिवर्दभानः ॥ सिद्धायिका रक्तति यस्य तीर्थं विग्नीधतः संततमेव देवी ॥ १ ॥ जिनेंघ् नेंघ्रा अपि तावकीनां स्तोतुं गुणान् शक्तिज्जपस्तथापि ॥ जक्त्येरितस्तान् कतिचिन्नवीमि नाइः स्वमात्रां विविनक्ति वीर ॥ १ ॥ नयाध्वनां नाय कर्तेकमत्येरश्रांतमेकांतदितोपदेशैः ॥ करेरिवोझयुति ना तमिस्तास्त्वया नतानां जवनीर्निरासि ॥ ३ ॥ प्रणीयतेऽस्माघ्रुतरत्नचित्रैः स मं विमानैस्तिदशागमेन ॥ कव्याणकैर्जूवलयं त्वदीयैस्तिविष्टपान्यूनमनूनरुदि ॥ ४ ॥ नवंतमीशं नजतोऽनुजातु इःत्यान्यतं कानि च नापि तापैः ॥पाणिस्यचिंतामणिमंग जाजं का निईतिः पीडयितुं शशाक ॥ ५ ॥ स्र्यप्रजा मोद्दतमःसमूद्दव्यापादने संशयव झिदात्री ॥ त्वदेशनावाग् जयति त्रितोकीत्रोकोत्रोक्तस्य कर्णामृतवृष्टितुव्या ॥ ६ ॥ रिप्रून् विजित्यांतरगानगाधवीर्येण सत्झानरमां निवेश्य ॥ कर्र्यकार्षोरिन मुक्तिपुर्याः सा माज्यमज्यानि सुखोत्करेण ॥ ७ ॥ जिस्सेव पीयूषड्उजा जनस्य मध्नाति मिष्यात्व विर्घार्मपूरं ॥ तव प्रजा नेत्रपुटीर्निपीता कृतस्थितिर्वर्ध्मणि निःकलंके ॥ ७ ॥ वृत्ताष्ट कायक्त्ररनामधेयैस्तदंत्यर्णीदितनामकेऽन्दि ॥ इयं स्तुतिर्वारजिनस्य दृष्टा करोतु क त्याणमनुत्तरं वः ॥ ९ ॥ इति जिनप्रनसूरिकत श्रीवर्दमानस्तवनं समाप्तम् ॥ ॥ च्यय श्रीपार्श्वस्तन्वनप्रारंजः ॥

पार्श्व प्रद्धं शश्वदकोपमानं दकोपमानं जववन्दिशांतौ ॥ आराधतां दत्तनिरंतरा यं निरंतरायं पदमाप्तुमीडे ॥ १ ॥ वीक्ते जगन्नेत्र महाज यत्र महाजयत्रस्य तर्वाद्रि युग्मं ॥ पुष्पः स एवाऽवसरोऽमराली सरो मरालीव निषेवते यत् ॥ २ ॥ प्रऐम्झां पूर्णसमस्तकामं समस्तकामं सरूदप्यधीश ॥ जवंतमानम्य विमानमाया विमानमा याः प्रजवो जवंति ॥ ३ ॥ नयाढ्यमुद्यज्ञमजंगमाल मजंगमालहितसर्वजावं ॥ केर्ना म धीमझिरमानि शांतं रमानिशांतं न वचस्त्वदीयं ॥ ४ ॥ नित्यं प्रमादेनविना शि तामं विनाशितामंगलमंगजाजां ॥ त्वन्नाम धन्यः स्परतीश सारं रतीशसारंगमूगेंइ नादं ॥ ५ ॥ जृत्योपि योत्राऽवृजिनप्रजावे जिनप्रजावकरसस्त्वयि स्यात् ॥ सरूपवा न्नीरगजाश्वसेने गजाश्वसेनेश्वरता&्पेति ॥ ६ ॥ जूयान्नमो नीलतमाऽलकाय तमाल कायप्रज तुज्यमेव ॥ जवात्त्वदन्यः कतमोऽविता न तमोवितानडिइरोऽर्क एव ॥ ७ ॥ त्वइक्तरुत्वेष्वविरामवामे विराम वामेय मयि प्रसीद॥जव्यान् स्तवः पातु जिन प्रजोऽयं जिनप्रजो यं विदधे यतींइः ॥ ७ ॥ इति जिनप्रजस्त्व्यित्वतं श्रीपार्श्वस्तवनं समाप्तम्॥

॥ अग्र श्रीपार्श्वनायस्तवनप्रारंजः ॥

श्रीपार्श्वपादानतनागराज प्रोत्सर्पदेनःकफनागराज ॥ सतां हताऽसत्परिणामरागं त्वां संस्तुमः स्थैर्यगुणाऽमराऽगं ॥ १ ॥ ये मर्त्यदेवासुरमाननीयं पद्यंति ते श्रीन रमाननीयं ॥ सद्यस्तिलोकीतिलकाऽमितानि सिभ्यंति तेषामिह् कामितानि ॥ २ ॥ दशोईपं पद्मदलानुकारं नाशिश्रयत्ते कमलानुकाऽरं ॥ कुतोऽन्यथा त्वन्नतिदीह्तितेषु स वैश्रियां प्रेम तदीद्वितेषु ॥ ३ ॥ अर्ज्यार्ह्ततं जव्यकदंबकानां हर्षप्रकर्षाझसदंबकानां ॥ सेवंति ये त्वां विधिवझत्रंते निर्वाणसौरूपं बुधवझत्रं ते ॥ ४ ॥ रतेरहंकत्यपनायिका नि वेषुःश्रिया ते सुरनायिकानिः ॥ नाह्तोनि चेतः परनावलीनर्माचत्यविस्तारि द्य नावलीनं ॥ ५ ॥ प्रजो तवाऽस्तस्मरराजमाने नत्यांद्यजालेन विराजमाने ॥ कमांबु जे लक्तिगृहे रसेनशकार्चनीय स्तुमहे रसेन ॥ ६ ॥ ब्याकांह्तिता बहुविधं जनतानि रामाऽस्प्रष्टामहोदयधुरी ध्रुवतानिरामा ॥ अप्यध्वरश्रुतितपःसवनादते न पुंसाऽऽ प्यते जिन तव स्तवनादतेन ॥ ७ ॥ इत्यं फर्णाइ सततश्रितपार्श्व नाऽय स्त्री वा स्तवं पठति यस्तव पार्श्वनाया तस्मै स्प्रहामठुजिनप्रजवाय नव्या जच्ची विंजार्त्त सुमनःस मवायनव्या ॥ ७ ॥ इति जिनप्रजसूरिविरचितं श्रीपार्श्वनायस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अय श्रीनंदीश्वरकल्पत्रारंज्ञः ॥

त्राराध्य श्रीजिनाधीशान् सुंराधीशार्चितकमान् ॥ कब्पं नंदीश्वर दीपस्याच देवि श्वपावनं ॥ १ ॥ अस्ति नंदीश्वरोनाम्नाऽष्टमोदीपो युसंनिज्ञः ॥ तत्परि देपिणां नं दीश्वरेणांजोधिना युतः ॥ १ ॥ एत दलयविष्कंजे लक्दाशीतिश्वतुर्युता ॥ योजना नां त्रिषष्टिश्च कोटघः कोटीशतं तथा ॥ ३ ॥ असौ विविधविन्यासोद्यानवान् देव नोगनुः ॥ जिनेंड्यूजासंसक्तसुरसंपातसुंदरः ॥ ४ ॥ अस्य मध्यप्रदेशे तु कमात् पूर्वादिदिङ्ग च ॥ अंजनवर्णाश्रत्वारस्तिष्ठंत्यंजनपर्वताः ॥ ५ ॥ दशयोजनसहस्रा तिरिक्तविस्तृतास्तले ॥ सदस्रयोजनाश्चाई कुइमेरूब्र्याश्च ते ॥ ६ ॥ तत्र प्राक् देवरमणो नित्योद्योतश्च दक्तिणः ॥ स्वयंत्रनः प्रतीच्यस्तु रमणीय उदक्रियतः ॥ आ शतयोजनायतानि तदर्धं विस्तृतानि च ॥ दिसप्ततियोजनोचान्यर्द्धैत्यानि तेषु च ॥ ॥ ७ ॥ प्रथक् दाराणि चलार्युचानि षोडरा योजनीं ॥ प्रवेशे योजनान्यष्ट विस्ता रेप्यष्ट तेषु तु ॥ ए ॥ तानि देवासुरनागसुपर्णानां दिवाकसां ॥ समाश्रयादेव तेषां नामनिर्विश्रुतानि च ॥ १० ॥ षोडशयोजनायामा स्तावन्मात्राश्च विस्तृतौ ॥ अष्ट योजनकोर्त्सेधास्तन्मध्ये मणिपीविकाः ॥ ११ ॥ सर्वरत्नमया देवचंदकाः पीविकोप रि॥ पीतिकाच्योऽधिकायामोङ्रयनाजस्तु तेषु च ॥ १२॥ क्तषना वर्द्धमाना च त या चंडाननापि च ॥ वारिषेणाचेति नाम्ना पर्यंकालनसंस्थिता ॥ १३ ॥ रत्नमद्योयु ताः स्वस्वपरिवारेण हारिणा ॥ शाश्वताईत्प्रतिमाः प्रत्येकमष्टोत्तरं शतं ॥ १४ ॥ दे दे नागजूतकुंडजूत् प्रतिमे प्रथक् प्रथक् ॥ प्रतिमानां प्रष्टतस्तु बत्रजूत् प्रतिमैकिका ॥ तेषु धूपघटीदामघंटाष्टमंगलध्वजाः ॥ तत्रतोरणचंगेर्यः पटलान्यास ॥ १५ नानि च ॥ १६ ॥ भोडश पूर्णकलशादीन्यलंकरणानि च ॥ सुवर्णरुचिररजो वालु कास्तत्र जूमयः ॥ १९ ॥ आयतनप्रमाणेन रुचिरा मुखमंडपाः ॥ प्रेक्टार्श्वमंडपा अक्तवाटिकामणिपीविका. ॥ १ ए ॥ रम्याश्र स्तूपप्रतिमाश्रैत्यवृक्ताश्र सुंदराः ॥ इं इध्वजाः पुष्करिष्यो दिव्याः संति यथाक्रमं ॥ रेष् ॥ प्रतिमाः भोमश चतुर्दारस्तू पेषु सर्वतः ॥ शतं चतुर्विंशमेवं ताः साप्टशततद्युताः ॥ २० ॥ प्रत्येकमंजनाइीणां ककुब्सु चतसृष्वपि ॥ गते लक्ते योजनानां निर्मत्स्यस्वज्ववारयः ॥ ११ ॥ संदस्व योजनो देधा विष्कंचे लद्त्योजनाः ॥ पुष्करिष्यः संति तासां कमान्नामानि षो मज्ञ ॥ ११ ॥ नंदिषेणा चाप्यमोधा गोस्तूपाऽथ सुदर्शना ॥ तथा नंदोत्तरानंदा सु नंदा नंदिवर्धना ॥ १३ ॥ जडा विशाला कुमुदा पुंडरीकिणिका तथा॥ विजया वै जयंती च जयंती चापराजिता ॥ १४ ॥ प्रत्येकं योजनं पंच पंचराखा परत्रच ॥ यो यावदिस्तारनांजि तु २५॥ लक्त्योजनदीर्घाणि महो जनानां पंचर्शाते II अशोकसप्तज्जदक चूत चंपकसंझया ॥ १६ ॥ मध्ये द्यानानि तानि तु 11 ब्करिणीनां च स्फटिकाः पव्यमूर्तयः ॥ ललामवो घुद्यानादिचिन्हा दधिमुखाइ ॥ चतुःषष्टिसद्स्रोचाः सहस्रं चावगाह्निः ॥ सहस्राणि दशा यः ॥ **२ अ**

www.jainelibrary.org

ર્યય

धस्ताडपरिष्टाच विस्तृताः ॥ १० ॥ अंतरे पुष्करिणीनां हो हो रतिकराचली ॥ त तो नवंतिदात्रिंशदेते रतिकराचलाः ॥ १९ ॥ शैलेषु दधिमुखेषु तथा रतिकराड् षु ॥ तज्ञाश्वतार्ह्र्ज्वैत्यानि संत्यंजनगिरिष्विव ॥ ३०॥ चत्वारो दीपविदिक्तु तथा रतिकराचलाः ॥ दशयोजनसदस्त्रायामविष्कंनशालिनः ॥ ३१ ॥ योजनानां स इस्रं तु यावछ्रव्रयशोनिताः ॥ सर्वरत्नमयादिव्या जल्लयांकारधारिणः ॥ ३२ ॥ त त्र ६यो रतिकराचलयोर्दद्विणस्थयोः ॥ शक्रस्येशानस्य पुनरुत्तरस्थितयोः ष्टथक् ॥३३॥ अष्टानां महादेवीनां राजधान्योऽष्ठदिद्यु ताः ॥ लद्दाबाधा लद्दमाना जिना यतनजूषिताः ॥ ३४ ॥ सुजाता सौमनसा चार्चिमाली च प्रजाकरा ॥ पद्मा शिवा तथा ग्रुच्यंजने जूतावतंलिका ॥ ३५ ॥ गोस्तूपासुदर्शने अप्यमलाप्तरसौ तथा ॥ रोहिणी नवमी चार्थ रता रत्नोचयापि च ॥ ३६ ॥ सर्वरत्नसंचया च सुवसुर्वसुमित्रिका ॥ व संजागादि च वसुंधरानंदोत्तरे अपि ॥ ३७ ॥ नंदोत्तरकुरुर्देवकुरुः रुसा ततो पि च ॥ ऊसराजी रामरामा रहिता प्राक् कमादमूः ३ ७ ॥ सर्वर्क्षयस्तासु देवाः कुर्व ते सपरिहनाः ॥ चैत्येष्वष्टाहिकापुंख्यतिथिषु श्रीमदर्हतां ॥ ३७ ॥ प्रार्चेऽजन गिरौ शकः कुरुतेऽष्टाहिकोत्सवं ॥ प्रतिमानां शाश्वतीनां चतुर्हारे जिनालये ॥४०॥ तस्य चाईश्रतुर्दिक्स्थमहावापीवितर्दिषु ॥ स्फाटिकेषु दधिमुखपरितेषु चतुर्ष्वपि ॥ ४१ ॥ चैत्येष्वईत्प्रतिमानां शाश्वतीनां यथाविधि ॥ चत्वारः शक्रदिग्पालाः कुर्वते ष्टाहिकोत्सवं ॥४ शा ईशानेंइस्लोत्तराहेंऽजनाईौ विदधाति तं ॥ तझोकपालास्त दापी दथ्यास्यादिष्ठ क्वतेते ॥ ४३ ॥ चमरेंइो दाहिएणात्येंऽजनाइाबुत्सवं सृजेत् ॥ तद्राप्यंत र्दधिमुखेष्वस्य दिग्पतयः पुनः ॥ ४४ ॥ पश्चिमेंऽजनशैक्षेतु बलींइः कुरुते महं ॥ तदि ग्पालास्तु तदाप्यंतर्जाग्दधिमुखाइिषु ॥ ४५ ॥ वर्षदीपदिनारब्धानुपवासान् कुहू तिथौ ॥ कुर्वन्नंदीश्वरोपास्त्यै श्रायसीं श्रियमाश्रयेत् ॥ ४६॥ जन्म्या चैत्यानि वंदा रुस्तत्स्तोत्रसुतिपावनाक् ॥ नंदीश्वरमुपासीनोऽनुपर्वोहस्तरेत्तरां ॥ ४ ७ ॥ प्रायःपू र्वाचार्य यथितैरेवायमाचितः श्लोकैः ॥ श्रीनंदीश्वरकल्पो लिखित इति श्रीजिन प्रजाचार्यैः ॥ ४० ॥ इति श्रीजिनप्रजाचार्यविरचितनंदीश्वरकृष्पः समाप्तः ॥

॥ अय श्रीशारदास्तवनप्रारंजः॥

वाग्देवते जक्तिमतां खशक्तिकलापवित्रासितवियदा मे ॥ बोधं विद्युदं जवती विधत्तां कलापवित्रासितवियदा मे ॥१॥ अकंप्रवीणाकलहंसपत्रारुतस्मरेणानमतां निहंतुं ॥ अकंप्रवीणा कलहंसपत्रा सरस्वती शश्वदपोह्ता६ः ॥ १॥ ब्राह्मी विजे षीष्ट विनिइकुंदप्रनावदाता घनगर्जितस्य ॥ स्वरेण जैत्री क्तुना स्वकीयप्रना वदाता घनगर्जितस्य ॥ ३ ॥ मुकाक्तमालालसदौषधीशाऽनिग्रज्वला जाति करे ल दीये ॥ मुक्ताक्तमाला लसदौषधीशा यां प्रेद्दय जेजे मुनयोपि हर्षे ॥ ४ ॥ ज्ञानं प्रदातुं प्रवणा ममातिशया जुनाना नवपातकानि ॥ लं नेमुषां नारति पुंडरीक शयालुनानाजवपातकानि ॥ ५ ॥ प्रौढप्रजावा समपुस्तके न ध्याता सि येनांबि विरा जिहस्ता ॥ प्रौढप्रजावा समपुस्तकेन विद्या सुधापूरमदूरुङःखा ॥ ६ ॥ तुऱ्यं प्र णामः क्रियते नयेन मरालयेन प्रमदेन मातः ॥ कीर्तिप्रतापौ डवि तस्य नम्रमरालयेन प्रमदेन मातः ॥ ७ ॥ रुच्यारविंदच्रमदं करोति वेलं यदीयोर्चति तेंऽऱ्हिग्रुग्मं ॥ रु च्या रविं दुच्चमदं करोति स स्वस्य गोष्ठीं विडुषां प्रविइय ॥ ७ ॥ पादप्रसादात्तव रू तमानवेशः ॥ ए ॥ सितांग्रुकां ते नयनानिरामां मूर्तिं समाराध्य जवेन्मनुष्यः ॥ सितांग्रुकांते नयनाजिरामांधकारसूर्यः द्वितिपावतंसः ॥ १०॥ येन स्थितं त्वामनु सर्वतीच्यैः सन्नाजिता मानतमस्तकेन ॥ ड्वादिनां निर्दलितं नरें इसनाजितामानत मस्तकेन ॥ ११ ॥ सर्वेङ्ग वऋवरतामरसांकलीनामालीं घ्रती प्रणयमंथरया हशै व ॥ सर्वक्षवक्रवरतामरसांकुलीना प्रीणातु विश्रुतयशाः श्रुतदेवता नः ॥ १२ ॥ क्वप्तस्तुतिर्निबिडनक्तिजमखप्रक्तैगुँफैर्गिरामिति गिरामधिदेवता सा॥ बालोऽनुकंप्य इ ति रोपयतु प्रसादस्मेरां हहां मयि जिनप्रनसूरिवर्ष्या ॥ १३ ॥ इति श्रीजिनप्रनसूरि कृतश्रीशारदास्तवनं समाप्तम् ॥

॥ ज्यय श्रीजिनसिंहसूरिस्तवनत्रारंजः ॥

प्रचुः प्रदयान्मुनिपह्तिपंक्तेर्नागारिरागोपचितिं सदानः ॥ समुद्धहन् श्रीजिनसिंह सूरिर्नागारिरागोपचितिं सदा नः ॥ १ ॥ कव्याण गोत्रायितमोहरेणौ चंमानिलेन स्थिरतागुणेन ॥ कव्याणगोत्रायि तमोहरेणौन्नत्यं त्वयैवार्हतशासनस्य ॥ १ ॥ स्वा मिन् मनोन्वेति न ते मृगार्ह्तां मनोजवानां चतुरंगमानां ॥ बोधेन क्रदीर्न कुलं गजा नां मनोजवानां च तुरंगमानां ॥ ३ ॥ कंदर्पकांतारविजावसूनां प्राप्ते त्वयीशान्यमृ षिं तपःश्रीः ॥ कंदर्पकांतारविजावसूनां निधिर्गुणानां छवि यत्त्वमेव ॥ ४ ॥ ज गज्जनांनोजवने गुणौधवक्तारविंदं जविना छतोहं ॥ वंदे त्वदीयं सकलोग्रुपस्य व कारविंदं जविनाछतोहं ॥या सर्व कषायानलमेघवारिमोहाय सूक्तं शृणु तं विजेतुं ॥ स वे कषायानलमेघवारिवृत्तं स्मर श्रीजिनसिंहसूरेः ॥ ६ ॥ मुदे न कस्यास्तु धुरि स्थि ता ते सरसती कुड्वशीकराणां ॥ माधुर्यशैत्थाक्कयिनी तरिर्जी सरस्वती कुड्वशीक राणां ॥ ३ ॥ सदोदिताबोधमपूरुषा अप्यानंदितावागमृतं श्रवोन्यां ॥ सदोदिताबो धमपूरुषा अप्युपाशमंस्तेन मुनीषु तेषां ॥ ७ ॥ व्यामोद्दबाणासुरदर्पमाथ पद्मावरो दीर्णतमोवितानः ॥ त्वमेधि सन्मंत्रजपाजिराइ पद्मावरो दीर्णतमोवितानः ॥ ७ ॥ योगेन धीरोचित माननीय श्रियस्तवोचे शशिनोपमानं ॥ योगेनधीरोचित माननीय प्रख्यातमूर्खे तमुदाहरामः ॥ १ ० ॥ स्मराग्रुगानां हृदि मेंगिममीविधामरेशास्त्र निधेहि तानि ॥ तत्वानि सूरींड् मदान्दिज्ञेदविधाऽमरेशाऽस्त्रनिधे हितानि ॥ ११ ॥ जिनप्र नाचार्यमजासमानावबोधमव्याः कविमात्मशिष्यं ॥ जिनप्रजा चार्यमजासमाना प्र जो रफ़ुरत्वस्य तव प्रसादात् ॥ १२ ॥ श्रीमक्तिनेश्वरयतीश्वरपादपद्मशृंगारजुंगकरणि जिनसिंदसूरिः ॥ इत्यं स्तुतोस्तु यमकैः शमकैरवेंड्ररानंदकंदलनडर्ललितो नतानां ॥ १३ ॥ इति श्रीजिनप्रजसूरिरुतयमकस्तबकितश्रीजिनसिंहसूरिस्तवनं समाप्तं ॥

॥ अग्र श्रीपंचनमस्कृतिस्तवनप्रारंजः ॥

प्रतिष्ठितं तमः पारे पारेवाग्वर्त्तिवैजवं ॥ प्रपंचं वेदसः पंच नमस्कारमजिष्ट्रमः ॥ १ ॥ छाहो पंचनमस्कारः कोप्युदारो जगत्सु यः ॥ संपदोऽष्टौ स्वयं धत्ते दत्तेऽनंता सुतताः सतां ॥ १॥ दत्तेऽनुकूलएवान्यो छक्तिमात्रमपि प्रछः ॥ एष पंच नमस्कारः प्रा तिलोम्येपि मुक्तिदः ॥ ३ ॥ नमस्कारनरेंइस्य किमपि प्राजवं स्तुमः ॥ यदीयफूत्कतेना पि विइवंति दिपः क्रुणात् ॥ ४ ॥ सिद्योप्यणिमाद्यास्ता नमस्कारमधिष्ठिताः ॥ अष्टाषष्ट्रघक्तरात्मापि यदसों प्रणवेऽविशत् ॥ ५ ॥ शिरःकादिधियाधी रैः स्वांगदेशनि वेशिता ॥ नमस्कृतेर्नवपदी कटरे वज्रपंजरः ॥ ६ ॥ वर्ण्यतां श्रीनमस्कारान् कार्मणं किमतोधिकं ॥ यत्संप्रयोगतःपांग्रुरपि संवनयेझगत् ॥ ७ ॥ नमस्कारं नुमः सिदं यत्पदस्पर्शेष्ठतया ॥ पद्माहादितसर्वांगः शांतिमासादयेऽऽवरी ॥ ७ ॥ नववर्णीं नम रुख्याः कती प्रतिपदं जपन् ॥ विधत्ते विविधानिघ्नविघ्नावयहनियहं ॥ ए ॥ कर्णिका ष्टदलाढधे हृत्पुंडरीके निवेदय यः ॥ थ्यायेत्पंच नमस्कारं संसारं स तरेत्तरां ॥ १ ०॥ अधौ कोष्टे पदेष्वस्य वर्णानालिख्य तावतः ॥ कुडचादावर्चयन् सम्यगेति शांतेर्निशांततां ॥११॥ आयादरात्यपीष्टार्थसिध्यै स्युः परमेष्ठिनां॥बिंडरप्यामृतः किं न नाशयेदिषवि क्रियां॥ १ श ॥ करांगुलीषु विन्यस्यार्हदादीन् ध्यानमानयन् ॥ प्रत्यू हपन्नगव्यू हव्यपोहे वैन्तेयति ॥ १ ३॥ गुरून् पंच कमात् ध्यायन् मुड्या परमेष्ठिनां ॥ गूढप्ररूढं मचिरात् कर्मग्रंथिं विमोचयेत् ॥ १४ ॥ षोडशाक्तरगान् अद्यापरमः परमेष्ठिनः ॥ प्राणी प्रणि

दधानोप्यौपवस्तुफलमेधते ॥ १५॥ विद्युक्तलाग्निनूपालव्यालचौरारिमारिजं ॥ नयं वंचयते पंच नमस्कारस्य संस्मरन् ॥ १ द ॥ आराध्य विधिवत्पंच नमस्कारमु दारधीः ॥ लक्तजापेन पापेन मुक्तमाईत्यमश्नुते ॥ १ ७ ॥ ऐहिकं फलमीप्सूनामष्ट कर्मप्रसाधिनी ॥ मुत्तयर्थिनां च स्यादेषैवाष्ट्रकर्मनिषेधिनी ॥ १० ॥ विषदामनि चारस्योपादानस्याखिलश्रियां ॥ स्मर्ता नमस्कतेः स्वर्गिवर्गेख वरिवस्यते ॥ १ ए॥ चतुर्दशानां पूर्वाणामेभैवोपनिषत्परा ॥ आद्या सकलविद्यानां बीजानां प्रकृतिः परा ॥ २० ॥ इयं पथ्योदनं पथ्यं परलोकाध्वयायिनां ॥ परमास्त्रं नृणां मोह्राज युद्धाय सज्जतां ॥ ११ ॥ प्राणी प्राणप्रयाणस्य ऋणे ध्यायन्नमस्क्रियां ॥ जनते सु गतिं नैकान् पाप्मनः कृतपूर्व्यपि ॥ ११ ॥ नमस्कृतिं कृपावित्तैः श्रोत्रयोः प्राजृती कतां ॥ स्वीकृत्य पुष्पसध्यंचस्तिर्यचोपि ययुर्दिवं ॥ २३ ॥ त्रिदंडिनं निगृह्याऽसिय ष्टिना श्रेष्टिनंदनः ॥ नमस्कारस्य महलाऽसाधय त्स्वर्णपूरुषं ॥ २४ ॥ स्मृत्वा पंच नमस्कारं प्रविष्टायास्तमोगृहं ॥ घटन्यस्तो महासत्याः पन्नगः पुष्पमात्यनूत् ॥ १ ५॥ नमस्कारेण संबोध्य मातुलिंगवनामरं ॥ प्राणत्राणं स्वपरयोर्व्यधत्त आदेपुंगवः ॥ १६ ॥ यद्वतां ढुंडिकः प्रापत् सुकुलं चंडपिंगलः ॥ इतस्ताहक् गुएास्फीतिं सुदर्श नः सुदर्शने ॥ १९ ॥ एष माता पिता खामी गुरुर्नेत्रं निषक् संखा ॥ प्राणत्राणं गतिर्दीपः शांतिः पुष्टिमेहन्महः ॥ २० ॥ निधयः संनिधो कामधेनुरप्यनुगामिका ॥ नूजूतो जुतकास्तस्य यस्य नैष हृदो हिरुक् ॥१९॥ नास्येयत्तां प्रजावाणां क्रमवर्ति तया गिरां ॥ मितायुष्ट्वाच सर्वोपि न्यदेण जणितुं इमः ॥ ३० ॥ सर्वावस्योचितं सर्वश्रुतसारं सनातनं ॥ परमेष्ठिमहामंत्रं नक्तितंत्रमुपास्महे ॥ ३१ ॥ उच्चेर्योजन लक्त्मानविदितो बिच्नत्सुवर्णात्मतां जव्यानंदनजङ्शालमहिमा रोचिस्मुचूलांचि तः ॥ असु श्रीजिनगेद्रजाखररुचिस्थानं लसन्निर्जरः सोयं वः परमेष्ठिपंचकेनम स्कारः सुमेरुःश्रिये ॥ ३१ ॥ साम्नायावयवां जिनप्रजगुरुयां सूत्रयामासिवान् दि व्यां पंचनमस्कृतिसिमामानंदनंदन्मनाः ॥ यस्यैषांचति कंठसीमनि सदा मुक्ता लताविच्रमं तं मुंचल्यचिरेण विभ्ननिचयाः श्लिष्यंति च श्रीजराः ॥ ३३ ॥ ऽति श्रीपंचनमरुहतिस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अय श्रीवीरस्तवनप्रारंज्ञः ॥

श्रीवर्दमान परिपूरितनचकाम चामीकरप्रन जिनप्रनसूरिरेतं॥ सोसूञ्यते त व जगजानदर्षवर्षदीपोत्सवस्तवलवं यमकावदातं ॥ १ ॥ श्रितारत्वां कमलाह

₹₹

र्म्य कल्पपाद पयोज ये ॥ करौ तान् प्रति विश्वैककल्पपादपयोजये ॥ १ ॥ क स्ते नतिं न सद्दोधसिंधुरारातिलक्षणे ॥ रंके च तुब्यचित्राय सिंधुरारातिलक्षणे ॥ ३ ॥ हिलेश देहं दर्शे लां शिवशंकार्त्तिके विदः ॥ नान्यतीर्थ्या यत्र लुप्ता शिवशंका र्त्तिकेविदः ॥ ४ ॥ रुद्वान्यपवर्णानामादानं दीपालिका सतां ॥ कोटिं परां यत्र तेऽनू दानंदी पालिका सतां ॥ ५॥ कुहशां ग्रुश्रुवे तेंऽत्यदेशनाशितदर्पका ॥ धन्यैरेवेश वैरा ग्यदेशनाशितदर्पका ॥ ६ ॥ खन्मुत्तयाऽसीत्तमो हंतुं तरसा दक्त पावनी ॥ प्रः पापा पापपद्माऽब्पेतरसादद्वपाऽवनी॥ ७॥ त्वत्सेवायां हिपीकेञहस्तिपाऽलस्यहीनता ॥ केने नाम तदा राको इस्तिपालस्य इीनता ॥ ७ ॥ दधाना ऽघोरगेषूक्तस्वातिरेकाविराज तां॥ क्रहेषु जात लन्मोक्नो स्वातिरेका विराजतां ॥ ए ॥ लन्निर्थापोन करणं ना गसंज्ञमरंजयत् ॥ एनांसि नगवन् कं ना नागसंज्ञमरंजयत् ॥ १ ० ॥ मूर्वागत स्येंडियार्थममता विषपानतः ॥ नाथोपचर्या कुर्यास्त्वं मम ताविषपानतः ॥ ११ ॥ तावकं या पिबत्युचै रमायाननसारसं ॥ दृष्टिविंदति सेरिस्य रमाया न न सारसं ॥ १२॥ स्तूयालमन्वहमहं नवतः ष्टथिव्यां सिद्धार्थनंदनयशोनिमतं समस्याः॥ सिदार्थनंदनयशोजि मतं समस्याः सर्वश्रियां जिन निजं हदि रोप्यतां मे ॥ १३ ॥ इतिश्री जिनप्रचसुरिविरचितश्रीवीरस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अग्र श्रीआदिजिनादिस्तवनप्रारंनः ॥

प्रणम्यादिजिनं प्राणी मरुदेवांगजायते ॥ हरणे पापरेणूनां मरुदेवांःग जायते ॥ १ ॥ गर्वमैंदवमब्जावमाननस्यप्रजोरुणः ॥ सौंदर्येणाजितसैर माननस्य प्रजोरु णः ॥ १ ॥ मोहस्यानापतंस्नाणं रांजवेश मिता रये ॥ यस्मै विश्वं नमश्वक्रे रां जवे शमितारये ॥ ३ ॥ मुदे ऽजिनंदनः सूतो राजसंवरदेहतः ॥ यत्पादाब्जे नृणां जावं राजसं वरदे हतः ॥ ४ ॥ इःस्थानां सुमते दौस्थ्यं साध्वसागदवालनं ॥ ध्यायंस्लां च स नीरोगः साध्वसागद वालनं ॥ ५ ॥ कः पद्मप्रज शकीस्ते प्रजावद मिता हिताः ॥ संख्यातुमीप्टे चंड्रार्कप्रजावदमिता हि ताः ॥ ६ ॥ मोहराजं सुपार्श्व त्वं नुतमायामलोलुपः ॥ जकौ तेऽतः कोस्नु विदानुतमायामलोलुपः ॥ ९ ॥ मयि बिन्नजनुं चंड्जावलक्त्प्रजोदयां ॥ तत्यास्त्वं सुविधे सर्वजावलक्त्र प्रजो दयां ॥ ७ ॥ श्वीतलाप्तुं श्रियोधाम्ना रविकल्पमनामयाः ॥ त्वां प्रत्यात्मा रुतो नर्तरवि कल्पमना मया ॥ १० ॥ खन्मते रमते श्रेयन् कमलायतनेत्र या ॥ सा धीप्रिया मेऽस्तु रुतं कमलायतनेत्रया ॥ ११ ॥ वासुप्रूज्य सविझास्त बंधूकारुएयोगतः ॥

शरणं त्वक्रमौ विश्वबंधूकारुप्ययोगतः ॥ १२ ॥ श्रेयसः शरणं जव्य त्वं गत्न | विमलंकते ॥ त्हदि देहिंच जक्तयादिकृत्वं गडविमलंकते ॥ १३ ॥ यःख्यातस्त्रि जगत्यार्थं सदानुतनयोऽनिशं ॥ इंत्वर्कवन्मोहमयीं सदानुतनयोनिशं ॥ १४ ॥ लत्पादाजेऽलिनो हर्षाद मलं पटतां पदं ॥ शांते मोहं जितं मन्ये दमलंपटतां पदं ॥ १५ ॥ सुश्रीकुंषुं प्रतिप्रव्हा यमलार्जन जंजनाः ॥ यास्तावींईरागरोपयम लार्जनजंनाः ॥ १६ ॥ सोढुं समर्था नूयस्य नतमामवनिर्वलं ॥ सीरलमर्हज्ञ कींड्नत मामव निर्बलं ॥ १९ ॥ शक्तिं जवाब्धेरुइतुं मतिमझीनदेहिनः । पुण्य धातर्जने नक्तिमीतिमल्लीन देहि नः ॥ १ ७ ॥ यस्या विलासास्त्रैलोक्य पद्मानंदनना नवः ॥ मा तु सुव्रत सा शक्या पद्मानंदनना न वः ॥ १७ ॥ यत्र नांन्दि६यी ते वा न मे रुचिरकोमला ॥ तत्र राजेप्यनीतानां नमेरुचिरकोमला ॥ १०॥ नेमे नमस्ते दोषइा रंजनः प्रनविस्तवे ॥ कर्मासुरवधायोचैरंजनप्रनविस्तवे – ॥ तापाझौ II 22 जुदुवे पार्श्व नवता पंचसायकः ॥ श्रितोऽतस्त्वं जनो मोद्जवतापं च सायकः ॥ १२ ॥ नाऽख़ुच्यः कामसौख्याय लोकनेतरणीयसा ॥ तेन वीर जगत्कर्मालोकने त रणीयसे ॥ २३ ॥ तवाईन् पंचकव्याणी दया लोकामदायिनः ॥ पायास्त्रिजगते दत्तो दयालो कामदायिनः ॥ २४ ॥ त्रातुं जीववीधाः संविदक्ता मानव तामिताः ॥ जिनें इाः पांतु करुणा दक्ता मानवतामिताः ।। १५।। यदाराध्यंति गीर्वाणव्रजाऽजयदशा सनं ॥ तत् प्रज्ञा शरणं नका व्रजानयदशासनं ॥ २६ ॥ यस्या नेशजिरा जैन्या सुत रामघवासना ॥ इंत्वापदः सुसंघस्यासुतरा मघवासना ॥ १ ९॥ लद्दम्यारुष्टिकरं जिनेंड् मनवं नडावलीमंदिरं वंदे तस्य गिरं नतचमतमः सूर्यं धियां कारणं ॥ सार्वीयप्रथित प्रनावमखिलारिष्ठौधहानिप्रदं दंनव्यालसूणिं वरेण्यसमयं रंगजुणं बोधिदं ॥ २०॥ इति श्रीयमकयुक्त आदिजिनादिस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अध श्रीपार्श्वप्रातिहार्यस्तवनप्रारंजः ॥

लां विनुत्य महिमश्रियामदं पन्नगांकमठदर्पकोषिणं ॥ स्वां पुनामि किमपीनर कितापन्नगां कमठदर्पकोषिणं ॥ १ ॥ कोनुरज्यति देशनौकसि झागशोकतरुणा वि नासिते ॥ रलहेमरुचिनिः कितोझसझागशोकतरुणाविजासिते ॥ १ ॥ देहदीधिति तिरस्कतो दयत्सौरनाः सुमनसः सदानवाः ॥ देशना छवि किरंति ते स्फुरत्सौरनाः सुमनसः सदानवाः ॥ ३ ॥ तादृशः श्रवणतस्तवोत्तमा कारकाय वरदेशनाध्वनेः ॥ प्रस्थितः कइव पाप्मनां निराकारकायवरदेशनाध्वनेः ॥ ४ ॥ नाकिनायकयुगेन सादरं चामरैर्विषदनाग वीज्यसे ॥ त्वं न केर्नवसुखायमुक्तये चामरैर्विषदनागवीज्यसे ॥ ५ ॥ वीदितुर्नयनयोर्निराकता शंसजासुरमणीपनावतः॥ आतनोति कृतसिंहविष्टरं शंस नासुर मणीपनावतः ॥ ६ ॥ इष्टरपंपति कीर्तिद्यचिता शांतजावलयमर्थमोह्दं ॥ दीप्यमानमनुमौलि तावकं शांतजावलयमर्थमोह्दं ॥ ७ ॥ व्योग्नि गर्जि निनदः पु रस्तवामानवैरिमुदिरो महर्षिनिः ॥ कैर्ने इंडुनिरवः श्रुतस्तनौ मानवैरिमुदि रोमहर्षि जिः ॥ ७ ॥ शेमुषीष्ठ कुपयानि मौक्तिकन्यास हृद्यरुचितानि चायितुः ॥ त्रीणि ते जिन शितोक्षवारणं न्यासहृद्यरुचितानिचायितुः ॥ ७ ॥ प्रातिहार्यमहिमालयस्तवः श्रीजिनप्रज विति स्तुतो मया ॥ पार्श्वकामितफलाय कल्पतां कल्पपादप इवेष नेमुषां ॥ १० ॥ इति जिनप्रजसूरिकृतश्रीपार्श्वप्रातिहार्यस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अस्र श्रीकल्याणपंचकस्तवनत्रारंज्ञः ॥

निलिपलोकायित जूतलं श्रिया नयन्मुदं नैरयिकानपि क्रूणं ॥ त्रिलोकलोकस्य रतेः प्रपंचकं जिनेंड् कव्याणकपंचकं स्तुमः ॥ १ ॥ निवेदितः प्रीतिपरैः पुरंदरैश्वतुर्द श स्वप्तविनावितोदयः ॥ महानिधानागम चारुरर्द्वतां तनोतु गर्नावतरोत्सवः शिवं ॥ १ ॥ कुकुष्कुमारीरुतसूतिसंस्क्रियं सुपर्वसंपादितमझ्जनक्र्णं ॥ सृजंतमुद्योतम यं जगत्रयं जदुर्मदं संस्तुमहे नवद्रहं ॥३॥ सुरोपनीतैः परिवत्सरं धनैर्यथानिला षं परितोषितार्थिने ॥ जिनाधिपानां निखिलांगिरक्तिणे नमस्तपस्याप्रतिपत्तिपर्वणे ॥ ४ ॥ अम्ब्यनिर्वार्त्ततदेशनाऽवनीरुताछुतः कैवलवेनवोक्रवः ॥ त्यमंदनांदीरवपू रितांबरः करोतु जैनः ग्रुनजाजनं जनं ॥ ५ ॥ पुरंदरकंदितसंच्रमच्रमत्सुरोधमालिं गितमुक्तिवर्क्तनं ॥ जिनस्य निर्वाणदिनं दिगंतरस्फुरत्तमः सत्तमग्रमेणेऽस्तु नः ॥ ६ महर्षयो नूतनवक्रविच्यताममुत्र कव्याणकपंचकेऽर्हतां ॥ विना विदेहान् दश कर्मनू मिष्ठ स्मरंति मासर्कतिथीन् सनातनान् ॥ ७ ॥ इत्याप्टतस्विच्चवनप्रच्रसत्क पंचक व्याणवज्जकवचं हदि यो बिनर्त्ति ॥ शस्त्राणि ते जिततराण्यपि मोहराजः सौनाग्य जाग्ययुजि न प्रनवंति तस्मिन् ॥ ७ ॥ इति श्रीकब्याणपंचकस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ उप्रय लक्त्णप्रयोगमयश्रीवीरस्तवनप्रारंजः ॥

निस्तीर्णविस्तीर्णजवार्णवं कैरुत्कर्णमाकर्णितवर्णवादं ॥ सुपर्णमंदोहि दमे सु पर्ण श्रीपर्णवर्ण विनुवामि वीरं ॥१॥ यैर्व्याप्यतां प्राप्यत तावकीनं क्रमांबुजं नाथ नमस्करोतेः ॥ संसारचक्रच्रमणानिधस्य गणस्य ते वृत्करणं गूर्णति ॥१॥ तुख्येपि ने त्राम्तवर्षिजावे कर्ज़कपंकच्युतिसंयुतिज्यां ॥ प्रधानशिष्टं वदनं त्वदीयं मन्यामदे ऽन्वाचयशिष्टमिंडं ॥ ३ ॥ द्विगोरिव त्वत्प्रणतस्य संख्या पूर्वा प्रवृत्तिर्न क्रुतीर्थिका

2éo

नां ॥ विनो बहुवीहिसमासवत्वमन्यार्थे एवोपदधासि वृत्तिं ॥ ४ ॥ विनक्तिमुक्तं पुरु षैरसंख्यैः समाश्रितं धातुविकारदीनं ॥ अपूर्वमेतत्कटरुखनिष्ठाप्रधानमाख्यात मिन लदीयं ॥ ५ ॥ यस्मिन्न संधिने च वर्णलोपो न संस्तुतिर्विग्रहकारकाणां ॥ नवा विकब्पः क्रचन प्रयोगेष्वहो नवं व्याकरणं तवेदं ॥ ६ ॥ ध्यात्वा हृदा लां फ जमेति जव्यो दृष्टापि साझान्न कृतीलजव्यः ॥ तत्सत्यमेतद्दहिरंगतो यत् स्यादंतरं गोत्रविधिर्बलीयान् ॥ ९ ॥ एतावतैव प्रतिजाति विश्वविलद्दणं वीर जवचरित्रं ॥ जालेन युष्मत्पदसंप्रयोगेप्यलंजि लोकस्य यडनमलं ॥ ७ ॥ एकत्र धातावुपस गेपंचकप्रयोग इष्टः कविनिर्निरंतरं ॥ खद्यानधातावुपसर्गविंशतिं सुरः प्रयोक्ता न कथं कुलक्षणः ॥ ए ॥ प्रनो महचित्रमिदं कदंबके कुतीर्थिकाणामपि कर्म धारये॥ यन्मोह्रराजप्रधनेषु पुंवज्ञावो न कश्चित् परिपोस्फुरीति ॥१ णा ग्रुद्योर्वरद जावकर्म णोर्दर्शयन् विकरणस्थितिं पदे।।निर्विजकि समुदाहरन् पदं साधुलद्रणविचद्रणो न वान्॥११॥अनुपधातिनमेव किलागमं प्रणिगदंति जिनेश्वर शाब्दिकाः॥श्वसुमतासुपधा तकरः स्प्रज्ञत् कथमिवागमतां स छतः परैः॥ १ शायोपादानं नज्यतः पापपूर्गस्यासि व्या प्यं वंदतेवींसवानां॥आधारः श्रीसंपदां संप्रदानं त्रैलोक्यस्य स्तोत्ररत्नोपदायाः ॥१३॥ बेडावद्यः करणमुशतां मोदवार्दि तरीतुं कर्ता जातेर्दिरदरदन बेदशोजिर्यशोजिः ॥ जव्यानां यरत्वमसि सुंपयप्रस्थितो हेतुकर्त्ता तस्मै तुज्यं जिन मम शिरो नम्रताकमम स्तु॥ १४॥ श्रंतस्यास्तव शासनस्य यशसां कुंदावदातत्विषां गल्नंते छवि संप्र सारणविधौ मर्खा न तत्कौतुकं ॥ यत्ते नित्यमनामिनोपि कुगुरौ डर्वृत्तदेवेषु च चा जंते गुणवृद्धिनाजनतया ब्रूमस्तदत्यङ्गतं ॥ १५ ॥ तात त्रातरिदं नपुंसकमपि स्वांत मदीयं नवन्माह्तातम्यस्तुतिसुंदरीं प्रणयतः पाणौ करोत्वेकदा ॥ तथ्संश्लेषसुंखानु नाववशतः क्वेव्यं विधूय क्त्णात् तत्रोत्पादयिता ऽथ शाश्वतचिदानंदाव्ह्यं नंदनं ॥ १ ६ ॥ इत्यंकारमिनारि लक्षणनरः सलक्षणप्रक्रियाचित्रं स्तोत्रमिदं विदंनहृदयो जिव्हाग्रजाग्रत्तमं ॥ कुर्वाणः स्मरबाणकुंग्नकलानिसाततानर्तकी नाटचाचार्य जिनप्रनेंइ पदवीसाम्राज्यमासादयेत् ॥ १९॥ इति श्रीजिनप्रन विरचितलद्दणप्र योगमयश्रीवीरस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अग्र श्रीवीतरागस्तवनत्रारंज्ञः ॥

जयंति पादा जिननायकस्य दोषापद्दा ध्वस्ततमोविकाराः ॥ रवेरिवाश्चर्यमतापका श्च न कौशिकक्केशकराः खराश्च ॥ १ ॥ वाग्झानपूजानिरपायरूपाश्चत्वार एतेऽतिशया स्तवैव ॥ देवाधिदेवत्वमनिष्ठुवंतश्चतुःकषायक्ततये तु नाच ॥ २ ॥ ग्रुदप्रयोगस्तवसं

स्तवेन कतार्थतामेति कृती कृतीश ॥ न वाच्यतां याति कदापि जोके यथा यथार्थस्तव काव्यकर्ता ॥ ३ ॥ त्वमेव चेच्चेतसि जागरूको जंतोरसि श्रीजिनराजमझः ॥ जवेन्न किं सम्तिजगन्मह्तः प्रपाखते किं नहि मोहमझः ॥४॥ खमेव देवस्त्रिविधेन येषां जगत्र यीवंद्यपदो हि पादैः ॥ धात्री पवित्रीक्रियते किमत्रचित्रं तदीयैस्त्रिजगत्पवित्रैः ॥ ५ ॥ **उपाधियोगान्महतो लघु**त्वं लघोरपि प्राज्यगुरुत्वमेव ॥ञ्चादर्शके देव यथा दिपस्य प्रदी पदीप्ती तु तनूजृतःस्यात् ॥६॥ कश्चिजुणानां हि जवोपि जोके यो दृश्यते सोपि विजोः प्रनावः ॥ अहैतकव्याएनिधेर्जिनेंड् पयोविना पछविता नवृद्धः ॥ ७ ॥ नातःपरं देव जडलमंतः प्रत्यक्तकोपि नवान्नबुदः ॥ सर्वकृताप्यस्ति विनो न चान्या लमेव दे वो विदितो यदीहा। ७॥ विदंति सर्वेप्यपरानधीशान् नतान्नतास्ते प्रवदंति सर्वान् ॥ जगजागन्नाथ यथास्थितं हि त्वं वेत्सिहि त्वांतु न वेत्ति चित्रं ॥ ए ॥ बहिःस्थितं वेत्ति परस्वरूपं न स्वस्थितं देव तव स्वरूपं॥ चकुर्यथा पर्दयति बाह्यरूपं नचात्मरू पंतु कदापि लोके ॥ १० ॥ सदात्मविकानविहीनधीनिर्न क्रायते नाथ विजोः स्वरूपं ॥ स्वर्शीर्थपश्चात्प्रविजागसम्यङ्निरीक्षणे कोपि न बाह्य हेतुः ॥ ११ ॥ मध्य स्थनावोपि जिन लयीह गुणकतेः स्याजुणिनो नितांतं॥ यथाऽगुणप्रत्यय एषधातोः कर्मेख्यचो कोऽत्र विचारहेतुः ॥ १२ ॥ त्वज्ञक्तिजावोप्ययथार्थ एव जवत्प्रणीतार्थ विपर्ययेण ॥ विधीयते सर्वहितोपसर्गवर्गेण धालर्थञ्वान्यया हि ॥ १३ ॥ दो दूयते यःस्वयमेव रागदेषादिलुंटाकनटैर्यथेष्टं ॥ संस्तूयते सोपि हि देवबुध्या हहा महामोहविजंनितं तत् ॥ १४ ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिं प्रसन्नं जगत्वराखं जगतोपि पूज्यं ॥ त्वमेव देव प्रविवेत्सि हि त्वां प्रकाशतेऽन्येन किसु प्रदीपः ॥ १५ ॥ किम स्तिनास्तिति विवेकपद्वा रागादिपद्वद्वतिलब्धदद्वाः ॥ ये श्रीजगन्नाय जिनप्रनस्ते लामेव देवं जिनमाश्रयंति ॥ १६ ॥ इति श्रीवीतरागस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ इप्रथ श्रीचंडप्रजस्वामिस्तवनप्रारंजः ॥

देवैर्थःस्तुष्ठवे तुष्टैः सोमलांग्रितविग्रहः ॥ दद्याचंइप्रज्ञःप्रीति सोमलांग्रितविग्रहः ॥ १ ॥ येपां पूजाविधिःकर्माजनहत्कमलालयः ॥ ते जिनाः पांतु वोजव्यजनहत् कमलालयः ॥ १ ॥ कुतीर्थिसार्थेन इरासदं नोक्तानिरंजनं ॥ श्रुतं सेवेत मोहाग्नि सदंजो क्तानिरंजनं ॥३॥ पातु गीर्वाःकताविद्योपरमा कमलासना ॥ यत् प्रजो वा ज नैर्लेजे परमा कमलासना ॥ ४ ॥ इति श्रीचंइप्रजस्वामिस्तवनं समाप्तम् ॥

रुइर

॥ अथ श्रीक्तषजदेवस्तवनप्रारंजः ॥ संस्कृतजापाः

निरवधिरुचिरज्ञानं दोषत्रयविजयिनं सतां थ्येयम् ॥ जगदवबोधनिबंधनमादि जिनेंई नवीमि सुदा ॥ १ ॥ कस्तवमिति दिषोलं वदितुं परितो गुणान् गुरुनिजो पि ॥ चुलुकैः प्रमिमासति वा कइव जलं वरमनीरनिधेः ॥ २ ॥ तदपि त्वज्ञक्तिज्ञर प्रतरजितो वच्मि तावकगुणाणुं ॥ चापलनुन्नो स्फुटमपि लपन् शिद्यवी निरपवा दः ॥ ३ ॥ ज्ञानप्रदीपजमिव स्निग्धांजनसुपहितं चरणलद्रम्या ॥ सद्धानद्दगंजि ताय चिक्ठरचयस्ते स यो रुरुचे ॥ ४ ॥

प्राकृतजाषा.

तमकसिण सण्पखयमो,र मोरउझाढुते किलिम्मंति ॥ तुइ सासणापिधं जे कुणं ति विविहे तव किलेसो ॥ ५ ॥ तक्तिय कझाणसिरि, पिदे वकझाणसिरिविलासगि दं ॥ तुइ वंदे देहमहं विलसिरमोहंपि इयमोहं ॥ ६ ॥ युग्मं ॥ तुइ मुहरन्नासयला, रविंदलज्ञी मरटफुसणेणं ॥ जं विजितुं हिमरस्सी नियकंती निवहसुहडेहिं ॥ ९ ॥ असई तमनि जवजरं सुसिरिटं पहू ससंकोसो ॥ डुग्गं खुर इय घणपरि,हिदंजर्ड परनिसेहन्ना ॥ ७ ॥

मागधी नापा.

तुद्द ग्रस्तिवैवनाव, स्तं गदपञ्ञे शमयपथमचञ्ञें ॥ ते थिए कुंमदलश्कशव,शि मिश्रादिस्टी पददि नवे॥ ए ॥ तमवय्यवय्यिदमिधं, आचिस्तिद ग्रुस्टु मोस्कपुलम ग्गं ॥ काला चिष्टामि हगे, हलिशनले पिस्किछं धञ्त्रे ॥ १० ॥ केलीहलाहरुएएहं, हलिञ्जकशवस्टलायि किलएाह ॥ तुद्द अपुलनवत्तिलसं, वंदामु हगे शलीलाह ॥ ११ ॥ संयणिदधञ्जकमले, ये पष्कालिदमहंदपंकमले ॥ धिदपलमहि्मशजूवे, ययछ नवं शे शदा कोहे ॥ ११ ॥

पैशाची जापा.

विबुधान राचित्रानत, अनञ्ज सामञ्ज बुञ्ज तिसपञ्जं॥ रंतून हितपके मे, कतसि दीकुतुंबिनी पनय॥ १३॥ जत्तिजरातो दूरे चिष्ठति यो तुह्र रमिय्यतेनेन॥ कसटजरे चरणसुधा विहितसिनातो न सो नोति॥ १४॥ युम्हातिसेवि तेदे अपुरवसुरपात वे सतय्येव॥कीरतिनो येन रती स कथं वपते सुकतबीजं॥ १ ५॥ नत्यून तुरितरिपुनो जवबं तिंघे तुमं मिमलरूपा॥ विलसिर पमतज्ञीजल, परकालितका इवापगता॥ १ ६॥

चूलिका पैशाची

काठं सिनेइफलिता तुद्द वतनं सेवते लमा अनखं॥हानून फंकुरकुनं पोमं सक लंकमपि च विद्यं ॥ १९ ॥ चलचलमंटलपटिमा चिकुराली शोफते तवंसयुके ॥ चल नसिरितितसथेनू चरनायल तच्च नव तुवा ॥ १० ॥ तुद्धंसकिलितटे फुल,ति मवख नालिइ मंचुकचलाची ॥ गतरुचकपोलतलरुचि,फासुर सोतामिनीतामा ॥ १७ ॥ लि सफसुमक्कानाविल चनपरिह्तिन संखनीरवाहखटा ॥ पथसं फुवि सहकला नयनी ती तैसिया तुमए ॥ २० ॥

शोरसेनी.

कुमद मकय्यनिदाणं ताइध जवमाणविद्धदे जगवं ॥ चिंदाविदाव नय्ये, व जो दि यावाणनाध इमा ॥ २१ ॥ कहुय छलं हरिपदविं कहुय छलं वा महत्त विस यसुहे ॥ खलु लहिय छपुरवपदं पणइजणं पाविदूण खलु ॥ ११ ॥ दबाछ वि रागमिदो पय्यत्तं ऐग उत्तरक्षेणं ॥ नवरि तुद्ध जत्तिपथि माजिणरायं फुरछ हि दयम्मि ॥ १३ ॥ युग्मम् ॥ हीमाणहे जवादो चकिदोहं छम्महे यदिछावो ॥ एं ता यध तायध मं ससेवगं सामिछा तत्तो ॥ १४ ॥

॥ समसंस्कृतम् ॥

हेमसरोरुइजासं कलिमलकमलालिमंथहिमजासं ॥ जवजयधूलिमहाबल ना जेय जवंतमजिवंदे ॥ १५ ॥ तव चरणोजयजलरुइ पालीसेवापरायणादेव ॥ विंदं ति नरालिगणा वरसिदिरमामरंदलयं ॥१६॥ महिमधरं तमसमहिम, विमलं वरधी सरोरुहेविमलं ॥ समयदयारससुगमं चरणं सेवे तवासुगमं ॥ १९ ॥ तव नामधेय चिंताबदरसा छवि नरावलीधत्ते ॥ संरुदारिनरामरजं, दरमालिंगकेलिरसं ॥१७॥

॥ अपभ्रंशनापा ॥

त र रेह्द अलिसामलि बिदु उरावलि उपपिछि॥ निक्तिपरि उबलमृणे छग सुद्दडन असिलछि ॥ १७ ॥ दछ मिढिह विसद्जछि, यावदुदिय जणववहार ॥ पई कायहि मुणियदं, सुफरुसप्रिय करणपयार ॥३ ०॥ ताख महाजवजलहिज, लिनरु निवडइ हुहुरुत्ति ॥ जाखन पाखिय तुघ्र प,हुसारुणनावऊडत्ति ॥ ३ १ ॥ सुकटु कहं तिहु ता सुथ, इ कहंत सुसजल उजम्मु ॥ दिविदिवि जीवाज्जन कर,दि पई वुत उजिणधम्मु ॥३ शाचूवे हि कुतित्थियजं, वयणू अवरुप्य रयई विरुद्धातं नेरसिवपंभिय त, ई जिदेवु प्रमाणेहिं सुरिष्ठु ॥ ३ ३ ॥ इकासि तेहा जाव वि,णु बुडुपणमिय तुह पाय ॥ जुंजि का

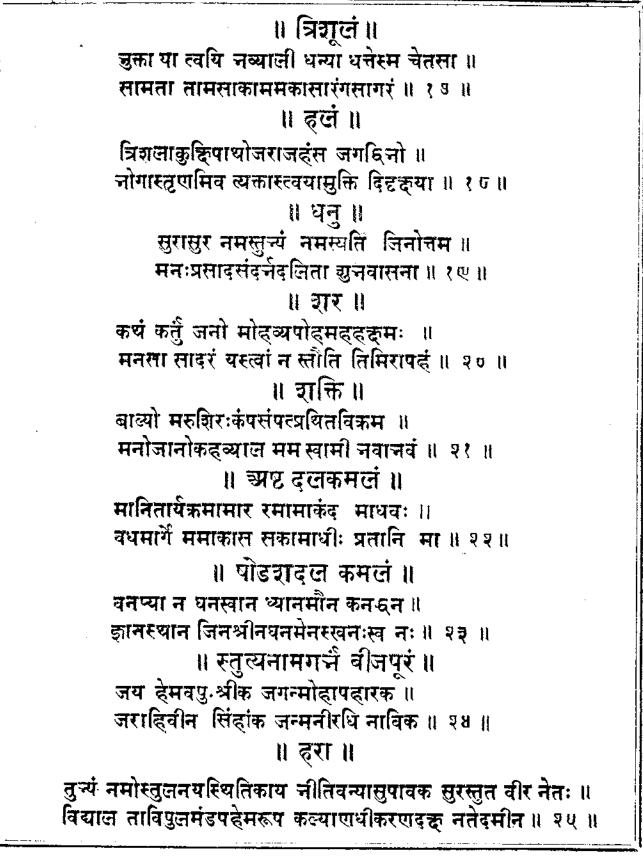
हि ता सुर रह्इं करिविणु इस्कविधाय॥३४॥ मश्न कहंतिहु नावरि, उ दडवड तण उद वेकू ॥ सामिय सटलतेज, बु डुनडु चंपइ परचकू ॥ ३ ५॥ जुत्तिवि किरिय नाणहरि, घ यंमण मनसुदि जगगिग ॥ कुकुनपढुंबई सिवनय, रि तुद्द सासणरहिलगिग ॥३६ ॥ परि कवि तुद्द तणु नूडहि,कंचणकांति रवन्न ॥ वियसदि मद्दणयणुझम, तामइ नवडुद तिन्न ॥ ३७ ॥ उत्तरपद्यस्याद्यं रहें। संस्कृतं १ समसंस्कृतं २ प्राकृतं ३ हितीये पेंद्राची चूलिका पैशाचिके ॥ तार्तीयिके मागधीशौरसेन्यौ॥ तुर्ये अपभ्रंशः॥ नायालीइयमंदयामयमलं जासं धरंतं परं राकालिं पवलोतयं अखचयासत्तं क मालाचितं ॥ धीलं लोखमहं ददावहकलं ढिन्नाहमायालदं नाधा नीवृदिरेसि वंदर्ज पई सारणंड सीसुझई ॥ ३० ॥ ॥ कविनामगर्भचक्रं ॥ तं प्राप्तो रुचिग्रुदयोगरनसोन्मीलत्प्रतोषान्वितं शस्तः सौष्ठवनममोहरवनः कं कं जहस्त इविः ॥ रुच्या जास्करतिग्मसिदिरमणीसंक्रुप्तजावः परं रंता ज्ञानरमांशमास्त रुषमे तन्याः सुविद्यां चिरं ॥ ३९ ॥ जगति विदितवान् यस्त्वत्कमाज्ञास्वरूपं तव ग्र चिपदनावं संस्तवादध्यवस्य॥ रचयति निजकंठालंकियां स्तोत्रमेतज्ञवति नवकरीणां सिंहसोजीष्टलक्काः ॥ ४०॥ इति श्रीजिनप्रचसूरिविरचितं छष्टनाषात्मकं श्रीक्तपन वेवस्तवनं समाप्तम् ॥ ॥ छप्य श्रीमहावीरस्तवनं ॥ चित्रैः स्तोष्ये जिनं वीरं चित्रकचरितं सुदा ॥ प्रतिलोमानुलोमाचैः खड्गाचैश्वातिचारुनिः ॥ १ ॥ ॥ प्रतिलोमानुलोमपाद ॥ वंदे ऽमंददमं देवं यशमाय यमाशयः ॥ नाथेनाघघनायेना पारुता ममता रूपा श ॥ ञ्जनुलोमप्रतिलोम ॥ दासतां तव जागारा नचेयाय मतामसा। समतामययाचेनरागाजावततां सदा॥३॥ ॥ अर्ध्वत्रतिलोमानुलोम॥ वरदानवरादित्व त्वदिरावनदारव ॥ याज्यदेव नयान्यास सन्याय नवदेज्यया॥४॥ ॥ अर्धभ्रम ॥ श्रीद वीर विरेजत्वं दमिताक गताग्रज्ञ ॥ वीताकमारंजितारे रक्त मां सहरंगविय

स्तोत्र.

॥ मुरजबंध ॥ गीरतारजतार इपो धीरता स्थिरतारसा ॥सारतारश्रुतावंध्या सुरता जन तावकी६ ॥ गोमत्रिका॥ ये पर्श्वति तवेहास्यारविंदं जक्तिबंधुराः॥ने पतंति जवे शस्यास्ते विदो जगवन्नराः॥ ९॥ ॥ सर्वतोज्ञ ॥ नमासररसामान मारिताक्तक्तारिमा॥साता म या यामतासा रक्त्याममयाक्रंण ॥ रष्ठपदं ॥ तिर्यङ्नरसुराकीणी जासते ननते सजा ॥ त्वन्माइात्म्यात् कृताश्चर्यं याश्रिता ततता श्रिया ॥ ए ॥ ॥ द्यकरपाद ॥ रैगोरांगोरुगीर्गंगा गौरीगुरुररोगरुक् ॥ गोरंगा माररोगारि रेरिरो रेगुरुं गिरिं ॥ १ ०॥ ॥ एकाक्तरपाद ॥ जाजलालोललीलालं ततताततितातते ॥ ममाममाममसुमा ननानेनोननानन॥ १ १॥ ॥ एकाक्तर श्लोक ॥ कार्ककि काककंकौकः केकाकोकककेकिक ॥ कककाकुककोकैक ककुःकौकोंककांककं ॥ १२ ॥ ॥ छसंयोग ॥ मरुनुमौ तपक्ताविव चारुसरोवरं ॥ कुतः सुकतदीनानां सुलनं तव शासनं ॥ १३ ॥ युग्मं ॥ ॥ घाऱ्यां खडुसंदानितकं ॥ सारणिः पुत्यवन्याया न्यायमौक्तिकग्रुक्तिका ॥ कामधेनुर्नयविदां बंधोझासन लालसा ॥ १४ ॥ सारं स्यादादमुझ्यास्त्रिपदी जवतोंऽजसा ॥ सा मेऽस्तु हदि कां तैका खिलेन रहितेन सा ॥ १ ५ ॥ ॥ मुसलं ॥ श्रीसिदार्थकुलव्योमदिवाकर निरंजन ॥ ककृतेकांतवा मतं तीर्थंकर तवाश्रिताः ॥ १ ६ ॥

ĮĘĘ

	स्तोत्र.	
_	<u> </u>	



www.jainelibrary.org

222

॥ कविकाव्यनामांकं चक्रं. ॥

नग्नारुत्यपथो जिनेश्वरवरो जव्याज्ञमित्रः क्रियादिष्टं तत्वविगानदोषरहितैः स्रक्तैः श्रवस्तर्पणः जन्माचिंत्यसुखप्रदः सुरचितारिष्टक्त्यो वः सदा दाता शोजनवादिधीः क जलदं यामेक्र्णः संविदा ॥ २६ ॥

॥ चामरबंधः ॥

श्रीमदाम समग्रविग्रह् मया चित्रस्तवेनामुना नूतस्लं पुरुहूतपूजित विजो सद्यः प्रसृद्यैधिमे ॥ ख्यातङातकुलावतंस सकलत्रैलोक्यक्लृप्तांतरः स्फारकूरतरज्वरस्मरज रः संरब्धरक्तारतः ॥ ३७ ॥ इति श्रीमहावीरस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ इप्रय श्रीजीरापद्धिपार्श्वस्तवनं ॥

जीरिकापुरपतिं सदैवतं दैवतं परमहं स्तुवे जिनं ॥ यस्य नाम जगतो वशंकरं शंकरं जपति मंत्रवज्जनः ॥ १ ॥ नाथ तत्तव मुखेंडुदर्शनं दर्शनं च नयनामूत स्तुवे ॥ येन मेडरिततापहारिणा हारिणा लसति पुल्यवारिधिः ॥ २ ॥ विश्वविस्तृत महाप्रनाव ते नावतेज इह मातिनो युगे ॥ उन्नते दिनकरे हि नासुरे नासुरेश्वरपुर स्य किं नवेत् ॥ २ ॥ अर्बुदस्य नवता व्यनावि या नावियात्रिकजनेष्वनीतिद ॥ परयतोहरजुतापि सारसा सारसाधुनिचिता जवत्तरां ॥ ४ ॥ याममात्रमपिजीरप लिका पलिकाननसहोदरीव या ॥ ल्वत्पदस्थितिबलेन साधुना साधुनायकपुरीवना सते ॥ ५ ॥ त्वां नमत्यशिववार्धितारकं तारकंकणसुमैः प्रपूज्य यः ॥ प्राप्य चिन्म यमनेनसं पदं संपदं स समुपैति शाश्वतीं ॥ ६ ॥ लटपुरः प्रकुरुते प्रजावनां जावनां जिन निधाय यो हृदि ॥ निश्चितं स लजते न डुर्गती डुर्गतीर्णजवसागर प्रजो ॥ ॥ यो दधाति हृदि तेंऽन्हिपंकजं पंकजं मलमधः करोति सः ॥ तप्तयेपि न जवंति पा र्थतः पार्श्वतस्यतु नवोझवच्रमाः॥णालवत्स्मृतेरपि जना निरामया रामया चरमया निरामया ॥ योगिनूषण नवंति नूषिता नूषिताःकिल सुधाज्ञानाइव ॥ए॥ त्वप्तदप्रण तिलालसादरं सादरं दधति जातुनाध्वनिं॥ यत्र यांति ननु जानुजानवो जानवोद य नमस्तु तत्र किं ॥ १०॥ अंतरंगरिपवोऽरूपापराः पापराशिहर पीमयंति मां ॥ सखपि ल्वयि विजो रूपालये पालयेश शरणागतं ततः ॥ ११ ॥ लनमयं जगति यस्य मानसं मानसंयमनतस्य छर्दराः ॥ तस्करानजपयः करेणवो रेणवो जिन न वंति तत्क्णात् ॥ १२ ॥ देवशाखिमणिधेनुदेवता देव तावदिइ वांग्रितप्रदाः ॥ या वदेव तव धामनामजं नाम जंतुमनसि प्रदीव्यति ॥१३॥ ज्ञानिनं जगदिनं निरंजनं रंजनं त्रिजगतः पुरातनं ॥ लां स्मरामि सकलंच निष्कलं निष्कलंकमचलं महाब लं ॥१४॥ इत्तं यः प्रयतः स्तवीति सततं श्रीजीरपद्वीपुरीवासं पार्श्वजिनप्रद्धं प्रकटित प्रौढप्रतापोदयं ॥ सोवर्ड्य सुनगं जविस्नुरधिकं धर्मार्थकामामृतश्रीजिः स्वीनिरिव स्वयं गुएगणाश्लिष्टानिराश्लिष्यते ॥१५॥ इति श्रीजीरापद्वीपार्श्वस्तवनं समाप्तम्। ॥ उप्रय श्रीफलवर्डिजिनपार्श्वस्तवनं ॥

सयलाहिवाहिजलहर, समूहसंहरणचंडपवमाणं ॥ फलविपालनाहं संदुणि मो फणय इछफलं ॥ १ ॥ विद्रुयासं विद्रुयासं, विद्रुयासं पत्तमनिष्ठणंति तुमं ॥ श्रम यरया अमयरया, अमयरया णुगइखमवयणं ॥ २ ॥ समणाणं समणाणं, समणा णं लंधिउं फुरइ सत्ती ॥ विणयाणं विणयाणं, विणयाणंदणत्तयाहि सुदे ॥ ३ ॥ अ हिरना छहिरन्ना, छहिरना विणियमंति कयपूर्या ॥ सवाही सवाही, सवाहीणा तुह य जत्ता ॥ ४ ॥ गयवाहा गयवाहा, गयवाहा अरहियापइपसन्ने ॥ परमहिया परमहिया, परमहिया सह न ढुंति नरा ॥ ५ ॥ सदवणा सदवणा, सदवणामयरि ज द्वंति जणा ॥ सुद्यगया सुद्यगया, सुद्यगया तुद् पताएण ॥ ६ ॥ कणयार्च करणयार्छ, करणयार्छ रखती तुमं जवर्णं ॥ जदवत्रो जदवत्रो, जदवत्रो रिदिसिरिया णं ॥ ७ ॥ नाएणं नाएणं, नाएणं चियति लोदसुद्ध उसि ॥ नयराई नयराई, नयरा ई सुगुणपोराणं ॥ ७ ॥ फलवदी फलवदी, फलवदी दाइणा तुमे विदिया ॥ सन्न यरी सन्नयरी, सन्नयरीणंतयाइजया ॥ ए॥ समणाली समणाली, समणाली णं तहागमे धन्ना ॥ चरणरया चरणरया, चरणरया नाइचत्तसिरी ॥१०॥ निद्यपहस्स निद्द, प्पहरस, निद्दप्पहरस मोहदले ॥ रयणायर रयणायर, रयणायर गुहिर तुझ नमो ॥ ११ ॥ इत्यं युउंसि सिरिपास जगन्निवास सिंगारहारफजवदिपुरीसिरीए ॥ बुदीयराकयजिएपदसूरिवाएी यूयचमे वियर अंतररोगमुंखं ॥ १२॥

॥ इति श्रीफलवर्दिपार्श्वनाथस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अय श्रीचंडप्रजस्वामिस्तवनं ॥

॥ संस्कृतं ॥

नमो महसेननरेंड्तनूज जगज्जनलोचनर्चृंगसरोज ॥ शरझवसोमसमयुतिकाय दयामय तुज्यमनंतसुखाय ॥ १ ॥ सुखीकृतसादरसेवकलक् विनिर्जितडर्जपनाव विपक्त ॥ सुरासुरवृंदनमस्कृत नंद महोदय कल्पमहीरुहकंद ॥ १ ॥

॥ त्राकृतं ॥

जय निरसिय तिहुयणजंतु जंति जय मोइमहीरुइदलनदंति ॥ जयकुंदक

स्तोत्र

लियसमदंतयंति जयजय चंदप्पह्वंदकंति ॥ ३ ॥ जय पण्यपाणिगणकृष्परु
स्क जय जगडिय अपयमकसयपस्क ॥ जय निम्मलकेवलनाणगेह, जयजयजिणिं जनगणजिन्द्रेत ॥ ॥
द अपडिमदेह ॥ ४ ॥ ॥ शोरसेनी ॥
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
विगदछहहेड मोहारिकेदूरयं दलिदगुरुडरिदमध विहिदकुमदस्कयं ॥
नाधतं नमदिजोसदटनदवत्सलंलहदिनिच्चदि गतिं सोददं निम्मलं ॥ ५ ॥
॥मागधी॥
त्रसुजसुजविसजनजनाय सेविवपदे नमिज जय जंतुतुदि दिन्नसिवपुजपदे॥ चलनपुजनिजद संसाजिसजसीजुदे, देहि महसामितंसाजि सासदपदे॥ ६॥
॥ पैशाचिकं ॥
तजिताखिजतोसतया सतनं मदनानजनीजमनानगुणं ॥
नजिनारुणपाततलांनमते जिननो इधतं सशिवं जनते ॥ ७ ॥
॥ चूलिका पैशाचिकं ॥
कलनालिकनातुलतपद्लं चलनीकल चालुपराप्पसलं ॥
ललनाचनकीतकुनंलुचिलं,चिनलावमहंसमलामिचिलं ॥ ७ ॥
॥ ज्यपश्चंदा ॥
सासयसुक्ख निहाणुनाहनदिहो जेहिं तउं पुन्नविहूणउजाणु निफलजम्मु तिहं
नरपसुदं॥ ७॥ निम्मल तुद् सुद्दंडजे पहुपिक्खुइं पसरिसिउं इयनिरुवमआणंड ति
ह मुनिसामी विप्फुरइ ॥ १० ॥
॥ इयं समसंस्कृतं ॥
हारिहारहरहालकुंदसुंदरदेहानय केवलकमलाकेलिनिलय मंजुलगुणगणमय॥
कमलारुणकरचरणचरणचरधरणधवल बलसिदिरमणिसंगमविलासलालसमलम
वदल ॥ ११ ॥ नवनवदवजलवाद्विमलमंगलकुलमंदिर वामकामकरिकेलिदरण
हरिवरगुणबंधुर ॥ मंदरगिरीगुरुसारसबलकलिनूरुह्कुंजर देहिमहोदयमेव देव म
मं केवलिकुंजर ॥ १२ ॥ इति जगदनिनंदन जन्हदि चंदन चंइप्रन जिनचंइवर ॥
षड्नाषानिष्ठुत मम मंगलयुतसिदिसुखानि विनो वितर ॥ १३ ॥
इति श्रीजिनप्रनसूरिकतचंइप्रनस्वामिसकं षम्नाषास्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अय श्रीवर्द्धमाननिर्वाणकल्याणकस्तवनत्रारंजः॥

श्रीसिदार्थनरेशवंशकमलाशृंगारचूमामर्योर्जव्यानां डरपोदमोहतिमिरप्रोकासने ऽहमे ऐाः ॥ कुर्वे किंचन कांचनोज्वलरुचेर्निर्वाणकव्याणकस्तोत्रं गोत्रजिदर्चनीयचर णांनोजस्य वीरप्रनोः ॥ १ ॥ प्राप्य देव शरदांदिसप्ततिं शीतगौ पवनदेवतर्द्वगे ॥ तामुपायत रसेन कार्तिकाऽमावसीनिशि शिवश्रियं जवान् ॥ २ ॥ इस्तिपालकनृ पालपालिता पूर्न पूरयतु मन्मनः शुचा॥ यत्र दर्शेश्व चंड्मा जवानस्तमाप जवताप हा पुनः ॥३॥ जर्जदर्शनिशि दर्शितर्६यस्तत्रपुर्यखिलवर्णजाः प्रजाः॥ खन्महोदयमही तयाऽधुनाऽप्युत्सवं विदधतेऽनुवत्सरं॥ ४॥ यैर्ध्वनिस्तव पपे अवःपुर्टेः षोडराप्रहरदे शनाविधो ॥ तान्निवेश्य धुरिधन्यताज्जुषां रेखया न खलु सुप्यतेऽन्यतः ॥५॥ पुख्यपाप फलपाकवर्णनामध्यमध्ययनपंक्तियुक्शतं ॥ व्यारुषाः स्फुटमष्टषपट्रुतिव्यारुतीश्च परिषद्पुरस्तदा ॥६॥ जीवति लयि जिनेंइनूतिना लत्प्रणामविधिर्जगनीरुणा॥ नून मेष्यत न देव केवलक्ञानसंपदनुरागनागपि ॥ ७ ॥ यदिधेयमुपदिइय गौतमः प्रैषि नक्तिनृदपि त्वयाऽन्यतः ॥ रोगिणः कटुकजायुपानवज्ज्यायसेऽस्य चरूपे गुणाय तत् ॥ ७ ॥ त्वदिदृद्वववतरत्सुरावली या न देहमणिनूषणां छनिः ॥ सा छहूरजनि र स्ततामसा पूर्णिमानिशमुपाइसद्धुवं ॥११ ॥ निर्वृते लेथि विलोक्य विष्ठपं ध्वांतपूरपरि प्ररितोदरं॥ रोदयंत इव रोदसी प्रतिश्चज्ञरेण रुरुङः पुरंदराः॥१ ०॥ वन्द्वायुजलदेश्व रैंः सुरैस्तैलपर्धिकळतांगसंस्कते॥नूतिमात्रमपि नूतिधाम ते ऽपस्प्रशन् बत न तान् र जोऽस्प्रशत् ॥१ १॥ जकितो महितुमीशवासवास्तावकीनह नुसंयहं व्यधुः॥नूनमक्विज याय तावकानुयहेण इनुमलमिञ्चवः॥ १ शा कुयहा न तव जातु शासनं वीर बाधितुम लंनविभवः ॥ एककः स खलु जस्मकयहो बाधते नवडपेक्तितस्तदा॥ १ ३॥ जग्मुषि ख यि शिवं नराधिपासत्कूणं गूरूमणीनबोधयन् ॥ ये बच्चः कुनयकाननष्ठुषुस्त्वत्प्रताप शिखिनः कणा इव ॥ १४॥ यन्न कश्चन मुनिस्त्वया समं युक्ति मैयरितरेर्जनैरिव॥ डःषमा समयनावलिंगिनां व्यंजितेन गुरुनिर्व्यपेक्तिता ॥ १५ ॥ प्रस्थिते लयि शिवाय तत्क्णं संमुमूर्हरधिप्रथ्वि कुंथवः ॥ कुड्जीवबदुलामतः परं सूचयंतइव नाविनीं महीं 11 र ६ ॥ यत्र यत्र चरणौ लयाऽपितौ तत्तदास्पदमगादमापतां ॥ ए कया पुनरपापया पुरापापयाऽजनि सुरोक्तिनामतः ॥ १७ ॥ यत्र मुक्तिमगमः शम डुमावाप पापतुद्दिनार्कतापतत् ॥ प्रीतिमीति तरुकुंजजंजने नाग नागकरणं करो तु नः १ ७ ॥ यः पत्रत्यशत्रधीस्तव वीरस्तोत्रमेतदवधानसमेतः ॥ तत्रजावरिपुरा

जि रयश्रीनाजि न प्रजवति प्रबलापि ॥ १७॥ इति श्रीवर्धमाननिर्वाणकव्याण कस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अय श्रीखरिनायस्तवनत्रारंत्रः ॥

जय शरदशकलदशहयवदन जय हतजगदसहनमदमदन ॥ जय नतशमगतश मनजकदन जयजगवदरपरमपदसदन ॥ १ गतमलकमलसकलकरचरण H. जननमरणनवनयनरहरण ॥ रचय चरणरसनशबलखन मनवमसनवमरसरम वचन ॥ २ ॥ नवरचनरतदशशतनयन नयवनजलदजलजदलनयन ॥ फलद कलकलयजयकरयजन नमदशमपहरशममनजजन ॥ ३ ॥ अमरफलदपदहर पदकमल गजकरसरलसबलकरयमल ॥ जनयसनयमतनतजनसकल मतफ लमपमलकलमलमकल H 8 ॥ नयमयवचनपवनसमवमत परमतजलदपट लमनसमत ॥ शमदमयमसमरसरमसमय जवपतनजजयमज मम शमय ॥ ५ ॥ धनखकनकशकलधनवरन मदकलकर एकलनजयशरन ॥ शरएादचर एनरकदर शमन सदयमदयमफलयगजगमन ॥ ६ ॥ नतशतमखतमखलजनमदर ग मयपरमपदमजयदसदर ॥ नवनवज्तववनजवदशमगम शकलनगजकलगलदन वगम ॥ ९ ॥ तमचयमपनयतपमहतपन परसमयजरजहरपदजपन ॥ समज नदमनकमनगजकरट दलनसबलतमह्तमद्चरट ॥ ७ ॥ मदनयनगमश्ररणन रशरण गतरणसद्वतरणवरकरण ॥ परसहचरसमरसजगदवन समवसरण रमदह्मह्जवन ॥ ए ॥ सततमचरचरजगदवगमक मननजनकथनतरतम् गम क॥ परपदनगरगमनर एर एक मफलदशमल फलयपथन एक । १०॥ रसनर लसदनजसनमदमन जवनपवनचरनरयतसमर ॥ दलयबहलमलमरवरवशत मतरतनरशतगतपरवशत ॥ ११ ॥ कपटशकटजलशयसमनवक जनमवगमय समयरसमवक ॥ गढगजरणफणधरदकदहन धनहरमरकजदरहरमहन ॥ १ २॥ समतसतमह्परमतकलस गणधरगणधरशमरसकलस ॥ जवदजवदपदलयलस दवम वनमवनमयसहनमहनवम ॥ १२ ॥ एवं श्रीखरतीर्धराज तव यो इःक मेरोगडिदा कामः केवलवर्णसंस्तवसुधास्वादं विधत्ते सुधीः ॥ श्रेयो वा न जरामर लपदवीसौख्यानि बाह्यंतरा मित्राली जय सुंदरः स नियतं शिश्रीयते मानवः ॥१४॥ इति केवलाद्वरमयं श्रीखरनायस्तवनं संपूर्ण ॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ श्रीयशोविजयजी उपाथ्यायकत अध्यात्ममतपरीक्दाप्रारंजः॥ ॥ आर्या वत्तं॥पणमिय पासजिणंदं, वंदिअ सिरिविजयदेवसू

रिंदं ॥ अश्रेष्यमयपरिकं, जहबे हिमिमं करिस्सामि ॥ १ ॥ व्याख्याः - सर्व कव्याणनी सिदिने अर्थे, श्रीपार्श्वनायने प्रणाम करीने, तथा संप्रति विजयमान तपागडाधिराज जे श्रीविजयदेवसूरी तेमनी वंदना करीने, पो ताना बोधने अनुसारे, आ अध्यात्ममतपरीक्तानामनुं प्रकरण हुं करुं हुं.

उपोबातः- कोई आशंका करे के, छुठ तत्वनों जे अंगीकार तेने अध्यात्म कहेढे. तेमां कोई विवाद नथी; खारे परीक्ता ते शानी करवी ? जे वस्तुमां संदेद पर्ने तेनी परीक्ता कराय ढे; निस्संदेह वस्तुनी शी परीक्ता ! माटे आ अध्यात्ममत परीक्तानामनुं प्रकरण करवानुं काई प्रयोजन दीवामां आवतुं नथी. तेने कहेढे ॥१॥

अक्षणं णामाई, चठबिहं चउविहा य तवंता ॥

तड इमे अध्रुत्तिय, णामेणकण्विआ णेआ ॥ १ ॥

व्याख्याः- अध्यात्मना चार प्रकार हे. एक नामअध्यात्म, बीजो स्थापनाश्च ध्यात्म, त्रीजो इव्यअध्यात्म अने चोथो जावअध्यात्म. चेतन तथा अचेतन ए बेमांनी कोई पण वस्तुतुं अध्यात्म एतुं नाम राखेलुं होय ते नामअध्यात्म; अ ध्यात्मवंत यतिना आकारनुं चित्र कहाडग्रं होय ते स्थापनाअध्यात्म; अने जेथ की जावअध्यात्म उत्पन्न थाय, जेवां के, प्रतिमादर्शन, सफ़ुरुसेवा, अने अध्या त्मशास्त्रान्यास ए त्रणे जावाध्यात्मना कारण हे, माटे ते इव्याध्यात्म; तथा आ त्माना जे द्युद्ध परिणामते जाव अध्यात्म कहिये. तेम अध्यात्मीना पण पूर्वोक्त रीते चार प्रकार हे तेओमां इहां जेओना मतनो विचार कर्त्तव्य हे, ते नामअध्यात्म वंत हे. तेओना मतनी आहांकानुं निवारण करवुं, ते आ यंथनुं प्रयोजन हे.॥श॥ उ०:- पूर्वोक्त चार प्रकारना अध्यात्ममानो जावअध्यात्म मोइन्जुं कारण हे. माटे तेनुं विशेषेकरी सरूप कहेहे:-

जा खलु सहावसिद्धा, किरिच्छा छप्पाणमेव छहिगिव ॥ जस्एइ परमक्षपं, सा दंसण नाण चरणफूा ॥ ३ ॥ व्याण्- जहांद्यधी कषाय तथा इंड्यिने वश थयोथको संसारनेविषे छात्मा

अध्यालमतपरीक्ता.

फरे ठे, तहांग्रधी आत्मानेविषे कर्मनो अधिकार ठे; खतः आत्मानो अधिकार नथी. केमके, आत्मखनावनुं आह्वादन थएलुं ठे. जेम मलड्व्यना योगे सुवर्ण नुं आह्वादन थई जायठे, तेथी तेनो खनाव प्रगट थई शकतो नथी. तेम कर्मना योगे आत्मानुं आह्वादन थई जायठे, तेथी तेनो झान, विझान, तथा अमूर्चला दि खनाव प्रगट थई शकतो नथी. अने नामकर्म ते आत्मखनावने पलटावीने नर, तिर्थंच, नारकी, तथा देवताप्रमुखना पर्यायरूप पोताना खनावने प्रगटवरी ठे. जेम तीव्र अग्निमां सुवर्णने नाख्याथी ते मल ज्यारे बली जाय त्यारे सुवर्ण नो ग्रुद्तादिखनाव प्रगट थायठे. तेम ग्रुनपरिणाम पूर्वक तपश्चर्याप्रमुख थ की ज्यारे कर्मोनो इत्य थई जायठे, त्यारे आत्मानो झानादिरूप खनाव प्रगट थायठे. एटले कर्मनो अधिकार टलीने खतः आत्मानो झानादिरूप खनाव प्रगट वाथी बोधरूप ठे माटे झान कहिये; तेमज रुचिरूप दोवाथी सम्यक्त दर्शन क हिये; तथा प्राणातिपातादिक आश्रवनिरोधरूप होवाथी चारित्र कहिये. यतः "आ हंमानमात्मनोवेत्ति, मोदत्यागायआत्मनि॥ तदेव तस्य चारित्रं, तज्झानं तच्च दर्शनं."

उ० कोइ आशंका करे के, नावाध्यात्म तथा ग्रुदोपयोग ए बे शब्दोनो अर्थ एक ठे. जेम उपाधिरहित स्फटिकनो निर्मल खनाव ठे. तेम परड् वसंगरहि त जीवनो निर्मल खनाव ठे. तेनेज छदोपयोग कहेठे. अने एनेज चारित्र कहेठे. परड्व्यसंगे जीवनो जे मलिन खनाव थायठे, तेने अग्रुद्धोपयोग कहेठे एना बे जेद ठे:--एक छनोपयोग बीजो अग्रुनोपयोग. देव गुरु तथा धर्मादिक उ पर जे प्रशस्त राग होयठे, तेने छनोषयोग कहेठे. जेम राता फूलना संगथकी स्फटिकनो रातो रंग थायठे, तेम जाणावुं. अने जे अप्रशस्त राग तथा देप होय ठे, तेने अग्रुनोपयोग कहेठे. जेम काला फूलना संगथकी स्फटिकनो कालो रंग थायठे, तेम जाणावुं. ए बन्ने मूल खनावने ढांकी लियेठे, तेथी अग्रुद्धोपयोग कहेठे. एनेज ग्रुद्धोपयोगरूप चारित्रना ठेद कहेठेः एनां आयतन परड्व्य ठे त्यारे श्वेतांबरनेविषे चठद उपकरणरूप परड्व्यनो संग ढता अध्यात्म केम प्रग ट थाय ? तेने उत्तर कहे ठे. ॥ ३ ॥

> णविना रागदोसो, उप्रश्रपरसेहि किंचि पडिकूलं॥ परदबं ठवगरणं, किंपुण देढुब धम्म छं॥ ४॥

व्या० मात्र रागदेषविना बीजूं कोई पण परड्य ते ग्रुद्धोपयोगरूप अध्यात्म ने प्रतिकूल नथी. एम जो अंगीकार नही करशो तो लोकमां सर्वत्र धर्मास्तिका यादिक परड्व्य जस्ता ढे, ते बधां प्रतिकूल कहेवासे. तेम तो संजवे नही; माटे ग्रुद्धोपयोगरूप अध्यात्मने राग देषज प्रतिकूल ढे, एविनाबीज्रं कोई परड्व्य प्र तिकूल नथी एम जाणवुं. जो एम कहेशो के परिग्रहीत परड्व्य अध्या त्मनुं विरोधीज ढे, पण अपरिग्रहीत परड्व्य अध्यात्मनुं विरोधी नथी. त्यारे श रीर रूपड्व्य परिग्रहीत ढतां केम अध्यात्म उत्पन्न थायढे? जो एम कहेशो के, शरीर धर्मनुं कारण ढे. तेथी अध्यात्मनो विरोधी नथी त्यारे धर्मोपकरण पण धर्मनां साधन होवाथी अध्यात्मना विरोधी थाय नही. ए सामान्थपणे उत्तर कह्यं. उ० कोई एवी आहांका करे के ज्यांग्रुधी उपधि होय. त्यां ग्रुधी सर्वथा अ ध्यात्मनी सिदि थाय नही तेनुं मत दूषित करेढे:-॥ ४॥

> ठवधिसहिद्यो एसिश्वइ, सतुसा जह तंडला न सिशंति॥ इय वयएां पकित्तं, दूरे दिइंतवेसम्मा ॥ ॥ ॥

व्या०:- उपधिसहित जीव सिद्धताने पामे नही. जेम तूससहित चोखो सीफे नही, तेम जाणवुं. जेम चोखाने तूस दोषरूप हे, तेम उपधि जीवने दोषरूप हे. एवुं वचन अमरचंद नामना दिगंबरनुं छुडंज नाख्युं हे, माटे ए दृष्टांत स मीचीन नथी. केमके, चोखाने तूसरूप दोष ते खरूपथकी हे; अने जीवने उ पधिरूप दोष खरूपथकी नथी. जीवने उपधिरूप दोष जो खरूपथी होय, तो क्रूपकश्रेणीए चढेला यतिना स्कंधउपर वस्त्र नाखिये तो तेने केवलज्ञान उत्पन्नथवुं न जोये. अने तूससहित वस्तु सीफे नही. ए पण सर्वथा संजवित नथी. केमके, मुग प्रमुख तूससहित त्यी जतां दीलामां आवेहे. माटे ए पण एकांत नथी, अनेकांत हे. उ०:- परवादी जे दोष उपधिनेविषे कहेहे, ते दोष शरीरनेविषे पण संजवे हे ते देखडावे हे:- ॥ 4 ॥

> जा ठवगरणे मुझा, आरंजो वा असंजमो तस्स ॥ तह परदबम्मि रई, सा किस तुहं सरीरेवि ॥ ६ ॥

व्याणः- जो एम कहेशो के, उपधि राख्याथी मूर्वा थायत्रे. त्यारे शरीरउपर केम मूर्वा थती नथी, उपधिनी मूर्वा तो शरीर मूर्वानिमित्त त्रे. तेथी शरीरने

अधिक मूर्डी संनवे. एनं समाधान जो आवी रीते करिये के, मूर्डीना बे चेद बेः- एक मारुं मारुं एवों ममत्वपरिणाम, अने बीजो पामेली वस्तुजपर अवि योगनो अध्यवसाय; ए आर्त्तध्याननो जेद हे. तेओमांनी पहेली जे शरीरविषे ममलपरिणामरूप मूर्ज्ञा कहीने, ते तो सम्यक्टष्टिने पण थाय नही: केमके, अने ममलपरिएाम तो अज्ञाननिमित्त हे. एयीज सम्यकदृष्टि ते जानी बे विषयादिकनुं सेवन करतो बतां पण तेने परमार्थथी विषयसेवनरहित कहाँ बे: त्यारे यतिनेविषे ते ग्रं कहेवुं! अर्थात् यति तो सर्वथा विषयसेवनरहित खने बीजी आर्त्तथ्यानरूप जे मूर्ज्ञी हे ते धर्मथ्यानना प्रजावेकरी शरीरविषे था य नही. एज समाधान उपकरेणनेविषे पण जाणी लेवुं. जो एम कहेशो के, उपकरण राख्याथी तेना यहण तथा त्यागथी आरंन थायने., ए वात पण असं चवित बे. केमके, आरंच तो शरीरना करचरणादिनी किया कखाश्री पण आय बे. जो कहेशो के शरीरना करचरणादिकनी किया जयणाएकरी थायबे. तो जय णाएकरी धर्मोंपकरण जेतां तथा मूकतां पण आरंन थतुं नथी. जो एम कहे शो के धर्मोपकरणयकी ग्रुआत्मपरिणाम नंगरूप हिंसा यायने त्यारे शरीरथ की केम हिंसा यती नथी? ज्यारे मूर्बाविना शरीरथकी हिंसानो संजव यतो न थी, त्यारे मूर्वाविना धर्मोंपकर एनो पेए संनव केम थरो ! जो एम कहेशोके, धर्मोपकरणयकी परइव्यनेविषे रति होवाथी आत्मइव्यमां रति वती नथी. त्यारे शरीरचकी पण इव्यरति केम नथाय? किंतु थवीज जोइये एनो विचार करो. **उ०ः- परड्व्यरतिने** बे विकल्पेकरी दूषित करेंनेः- ॥ ६ ॥

तह परदुवम्मि रई, परिणामो रक्तणाणुबंधो वा ॥

इह ओ तणु सममुवहिं, पासंतो किं ए लेकेसि॥ १॥

व्याण- परइव्यरति ते छं काययोगना परिणामरूप डे के, संरक्तणानुबंधी रैाइध्यानरूप डे? जो प्रथम काययोग परिणाम कहेशो तो छनकाययोगे दोष केम लागे? अर्थात् एम तो संनवे नही. अने जो संरक्तणानुबंधी रोइध्यानरू प कहेशो तो ते पण संनवशे नही. केमके, घोरादिकथकी सर्व प्रकारे जे वस्ता दिकनुं बचाववुं, तेने संरक्तण कहेडे, ने तेनुं जे निरंतर चिंतन करवुं, तेने अनुबं ध कहेडे. एवुं रोइध्याननो जेद जो उपधिथकी थाय तो शरीरथकी पण थवुं जोइये. केमके, सर्प, चोर, तथा कंटकप्रमुख थकी शरीरनी रक्ता करवाना अ अध्यालमतपरी का.

ध्यवसाय पण घणानेविषे दीगमां आवेडे. एने तो रोइध्यान कहेता नथी! जो एम कहेशो के, यतिने शरीरनेविषे राग नथी होतो, तेम डतां सर्पादिकथी शरीर नी रक्ता तो धर्मसाधनने अर्थे करेडे. तेथी तेना अध्यवसाय अग्रुन होता नथी. एम पण संनवे नही! केमके, यतिने शरीरनी पठे धर्मोंपकरण उपर पण राग हो तो नथी. तेम डतां तेनी रक्ता पण धर्मसाधनने अर्थे करेडे. एवी रीते शरीरना जे वांज धर्मोंपकरण ठरेडे. तेम डतां तेओनी उज्जापना करतां तमने शरम चती नथी! उ०:- कोई आशंका करे के, उपकरण जे डे ते ध्यानना विरोधी डे. केमके, तेओना प्रतिखेखनादि बाह्यव्यापारना थोगे अंतर आत्मतत्वनेविषे चित्त एकाय तारूपध्यानमां विन्न थायडे. एम कहेनाराने उत्तर दिये डे. ॥ ७ ॥

> जो किर जयणापुवो, वावारो सोण जाण पडिवको॥ सोचेव होइ जाणं, जुगवं मण वयण कायाणं ॥ ए॥

व्याणः- आवश्यक पडिलेहणाप्रमुख जे जयणाएकरी व्यापार थायने ते प ए ध्याननो विरोधी होवोजोये; एने तो कोई विरोधी कहेतो नची किंतु एतो ए क कालाश्रित मन, वचन, तथा कायासंबंधी ध्यानरूप होयते. जेमके, ग्रुनयो गे करीमन एकाय होयडे, एनेज मन संबंधी ध्यान कहेडे; निरवद्य वचन बोला यडे, अने सावद्य वचननो त्याग थायडे, एनेज वचनसंबंधी थ्यान कहेडे; अने ग्रुनयोगनेविषे यत्नेकरी कायानी हढता थायढे, एने कायसंबंधी ध्यान क हेन्ने. जो तमे एम कहेशो के, जगवंते एकसमयनेविषे वे क्रियानो निषेध कह्योने: तेम इतां एकसमयाश्रित मन, वचन तथा काया संबंधी ध्यान केम संज्ञवे ? ए नो उत्तर आमग्ने:- जगवंते जे एकसमयनेविषे बे कियानो निषेध कह्योग्ने ते निन्न विषयविषे छे: एक विषयविषे निषेध नथी कह्यो. जेमके, वांदणाना आवर्त्तननेवि षे त्रए योगनी किया एकज समयनेविषे थायत्ने. यतः " जिन्नविषये एिसिई, किरि या डगमेगयाण एगम्मि ; जोग तिगस्त विनंगिय, सुने किरिया जर्ड नणिया. " उण्- कोई आशंका करे के, ध्यान जे जे ते योगनो परिणाम नथी के जेनी प्रवृत्ति बाह्य व्यापार करतां थाय. जो योगना परिणामरूप ध्यान होय, तो लेरया अने ध्यान एक कहेवाय. एखोमां कांई न्यूनाधिकता होय नही. तेम तो नथी देखातुं. जेरयात्रोतुं रूप पण छुडंने, ने ध्यानतुं रूप पण शास्त्रोमां ন্মন্ত कह्युंने. वली जो योगपरिणामरूप थ्यान होय तो चौदमे अयोगिकेवल ग्रंग

स्थानके शुक्लध्याननो संजव केम थाय ! ए तो योगनी परिएतिरूप नथी. केम के, ध्यानतो आत्मखनाव समवस्थानरूप ठे. अने तेनी उत्पत्ति आवीरीते था पठेः- संखनी तृष्णएकरी मोइनीयकर्मने वश थयो थको जीव परड्व्यनेविषे प्र वृत्ति करेठे, ज्यारे मोइनीयकर्मनी न्यूनता थायठे, त्यारे परड्व्यनेविषे प्रवृत्ति यती नथी. एमथयाथी विषयनेविषे वैराग्य थाय ठे. केमके, विषयनेविषे जे रा ग होय ठे, ते विषय प्राप्तिपूर्वक होयठे. अने रागना अनावे वैराग्य होयठे. वैरा ग्यथकी मननो रोध थायठे. केमके, मननी प्रवृत्ति विषयविना थती नथी. जेम तृएारहित स्थानकनेविषे पडेली अग्नि पामेठे. मननो विषयविना थती नथी. जेम तृएारहित स्थानकनेविषे पडेली अग्नि पामेठे. मननो निरोध थयाथी चंचलता मटी जायठे. अने पठी मन एकाय धर्षने आत्मानेविषे प्रवृत्त थायठे. ए आत्मखनाव ने ध्यान कहेठे. यतः "जो खविदमोइकखुसो, विषयविरनो मएोएा संजित्ता; समवठिदो सहावे, सो अप्पाणे दवदिजा दा. " इति प्रवचनसारे. एवुं सह चेतन खनावरूप जे ध्यान ते, बाह्य व्यापार करतां, तथा परड्व्य अधिकरए कियाढतां केम प्रगट थाय ? एनो निर्णय करेठे. ॥ ७ ॥

जाण तिकरण पयत्तो, ण सहावो तेण जेण सिइस्स॥

इह एठाएविनागो, कह सुक्रशाएनेआएं ॥ ए ॥

व्या॰ मन वचन तथा कायारूप त्रिकरण एटले त्रण योगनो प्रयत्न कस्ताथी ध्याननी सिद्धि थाय हे; माटे योगपरिणामरूप ध्यान हे; परंतु उपयोगरूपज ध्यान नथी. अने लेरया पण योगपरिणामरूप हे. तेथी योगपरिणामपणे तो ध्यान तथा लेरया ए बन्ने सरखा हे; परंतु बन्नेनां लह्तणो छुदां छुदांहे. लेरया जे हे ते योगनो चलाचल परिणाम हे, अने ध्यान जे हे ते योगनो निश्चल परिणा म हे. अयोगीने यद्यपि करणव्यापार नथी, तथापि हता मन वचन तथा काया ना निरोधरूप प्रयत्न करें हे ते प्रयत्ने करीने जे त्रणे योगनो निरोध थाय हे, ते नेज ध्यान कहेहे. अने आही जो आत्मखनाव समवस्थानरूप ध्यान लड्ये तो सिद्दने पण ध्यानचुं कर्नृत्व ठरज़े. ज्ञास्त्रोमां तो सिद्धनेविषे ध्यानप्रजृति सर्व कि यानो अनाव कह्योहो. जो एम कहिये के, सिद्धने व्यावहारिक ध्यान तो नथी, पण आत्मखनावरूप नैश्वयिक ध्यान तो हे. जो एम होय तो योगनो निरोध कस्ता विना पूर्वकोमिपर्यंत केवलीने ध्याननो निषेध केम कस्त्रोहे? आत्मखनाव सम वस्यान तो केवर्जीने सर्वथकी अधिक हे. ए कारण माटे अयोगीने तो योगनि रोधरूप थ्यान हे, अने हस्रस्यने करणना हढव्यापाररूप थ्यानहे. एवी रीते हान योगेकरी प्रवर्त्तनीय जे थ्यान, तेमां वाद विवाद शानो होय !

उ० कोई आइांका करे के, जो उपकरण होय तो राग पण होय, माटे उप करण सर्वथा त्याग करवा योग्य जे, तेम जो न करिये तो उत्सर्गमार्ग केम रहे? एप्रश्ननो उत्तर दिये जे:- ॥ ए ॥

जा खलु सरागचरिद्या, साविय उस्सग्गमग्गसंलग्गं॥

मोत्तुं अववायपयं, अइपसंगी परविसेसो ॥ १० ॥

व्या० जे स्थिविरकल्परूप सरागचर्या कहेतां सरागमार्ग छे. ते पए उत्स र्गमार्गने लागेलोज छे. अर्थात् अपवाद मार्ग अने उत्सर्ग मार्ग निकट संबंधी छे. यद्यपि स्थिविरकल्पी पए अपवादनो तो त्याग करेछे, तथापि कोई कारए ने लीधे तेने यहए पए करवुं जोयेछे. अने जिनकल्पी तो कदापि अपवादनुं यह ए करेज नही. एवी रीते स्थिविरकल्पी तथा जिनकल्पीना अपवाद तथा उत्स र्गमार्गमां अल्प अंतराय छे. एटले अपवादमार्ग थकी उत्सर्गमार्गनी काईक उत्छष्टता छे, तेथीज बे जेद थयाछे. अने जिनकल्पनी अपेक्ताए स्थिविर कल्प कह्योछे. तेमज उत्सर्गमार्गनीअपेक्ताए अपवाद मार्ग कह्यो छे. जो उत्सर्ग मार्ग थकी कांईक न्यूनता वालो अपवाद मार्ग, तथा अपवादमार्गथी काईक अधिकतावालो उत्सर्ग न कहेशुं तो चौदमां गुएएस्थानकना अंतना समयसुधी उत्सर्गमार्गनो संजव थशे नही. केमके सर्वोत्रुए संवर तिहांज छे. माटे जे वेकाणे जे मार्ग उत्छष्ठ कह्यो होय ते वेकाणे तेज उत्सर्गमार्ग छे. जेमके स्थि विरकल्पनेविषे चौद उपकरएज उत्छष्ठ होवाथी ते उत्सर्ग मार्ग छे. ॥ १० ॥ उ० मूल गायावडे पूर्वपन्नी आश्वका करे छे:--

नणु बर्शनं साहण, मववार्ड छंतरंगमुस्सग्गो ॥ जा पुण सराग चरिया, समुच्चिया ऐव सिद्धाए॥११॥ पडिसेवणो पुणसो, छववा ड फुडो छणायारो ॥ ता वत्ताई गंधो, णो उस्सग्गो ण छववाडी॥१ १॥ व्या०ः- परइव्यमात्रनी जे निवत्ति, एटले परइव्यनो कांई पण परियह रह्यो न होय, मात्र छात्मइव्यनोज प्रतिबंध होय, तेज संयमतुं छंतरंग कारण हे;

एने उत्सर्गमार्ग कहेने. एवी सामग्रीनी प्राप्तिविना ग्रुदोपयोगनूमिकाए चढी शकातुं नथी, त्यारे तेनी साह्यता करनारी जे उपधि होय तेनुं धारण करवुं तेने अपवाद कहेने. ते उपधि बंधनो हेतु नथी, माटे निषेध नथीं कही. केमके, ए उपधि संयमरहित पुरुषना उपयोगमां आवती नथी. किंतु संयतीनेज उपयोगी ते. अने मूर्वानो हेतु यती नयी. यतः " अस्मिकुइं उवहिं, अपच्च णिकं असं जद जणोहिं; मुज्ञादिजणणरहिदं, गेह्लडुतमणोयजदि विश्वप्यंते. " ते उपधि ञा हे:- एक तो यथाजातलिंग पुजल, एटले जेवो माताना उदरमांथी नीकव्यो होय तेवो आकार धारण करवो, बीजो वचनपुजल, एटले जेथी शुद्धात्मतलनो बोध थायते ; तेनुं ग्रहण करतुं ; त्रीजुं ग्रवीदिक विनयरूप मनना पुजलनुं धारण करवुं; अने चोथुं सूत्राध्ययनना पुजलने धारण करवुं. यतः " ववयरणं जिएम ग्गो, लिंगं जह जादरूपमिदि नणिदं; गुरुवयणंपि झ विणर्ड, सुत्तश्वयणं च प ननं " एवो जे अपवादमार्ग तेने सरागचर्या कहेने. अर्थात् शुर्दोपयोगनी न्यू नताने लीधे अपवादमार्ग कहेवाय हे. पए जे वस्तू प्रतिषिद्ध एटले सेवन करवा योग्य न होयने तेनुं जे सेवन करतुं तेने अपवाद कहता नथी. तेने तो प्रगट अ नाचारज कहेने. तेमन्नता संयतीने वस्त्रादिक सेवन करवायोग्य नथी केमके, ए अनाचार हे. माटे ए सर्व परिग्रहनो त्याग करवो जोये. वस्त्रादिक परिग्रहनुं जे यहण करवुं ते उत्सर्ग पण नथीं ने अपवाद पण नथी; किंतु अनाचार ते, ते केम करवो ? एहड़ं जे कहेने तेने उत्तर आपी तेनो समाधान करेनेः-॥११॥१ शा

उवकुणइ जह सरीरं, सुडुवउंगं तहेवमुवगरणं ॥

जम्हा तर्व मुणीणं, सुए छणेगे गुणा जणिछा ॥ १३ ॥

व्या०:-जेम शरीर परइव्य ठतां द्युद्धोपयोगनुं साह्यकारिने ; तेथी परिग्रह क हेवाय नही. तेमउपकरण पण द्युद्धोपयोगनां साह्यकारी होवाथी परिग्रह कहेवा य नही. केमके, ए वात, सिद्धांतोनेविषे पण धर्मोपकरणना अनेक राण कह्याने तेथी सिद्ध यायने. जेमके, रात्रीयें चठकालें काल ग्रहलेतां वस्त्रे करी यतीने शीत नी पीडाटले ने. ने जो वस्त्र न होय तो शीतनी पीमाने लीधे अग्निना ताप प्रमुख नी चिंतना थाय तेथी आर्त्तध्यान उत्पन्न थायने. वस्त्रेकरी सचित्त प्रथि वी, धूंहरी ओस, वृष्टि, तथा हिरमज प्रमुखनी रक्ता थायने. ने जो वस्त्र न होय अने उधारुं शरीर होय, तो शरीरनी गरमीनी बाफथकी ते जीवोने छःख उत्पन्न थायने संपातिमरजरेणु प्रमार्जवाने अर्थे मुहपती राखवी, खेवादेवा प्रमुखनी कियाए पू वें प्रमार्जवाने अर्थे तथा जैनलिंगने अर्थे उंगो राखवो. तथा पुरुष वेदनीयोद बादिक वर्जने अर्थे चोलपट राखवो. इत्यादिक वस्त्रना गुए कह्याने. अनानोगे लीधेलां जे संसक्त गोरसादिक, ते पात्रेंकरीने विधिए परठाई शकायने. पात्रवि ना हाथमांज लीधा होय तो योग्य नेकाणे केम परठवी शकाय ? तथा हाथमां सरस वस्तु लीधायी तेनो बिंडु जो नीचे पडे, तो तेथकी कीडीओप्रमुख अनेक जं तुओनी विराधना थाय. गृहस्य नाजनने अर्थे उपनोगेपए पश्चात्कर्मादिक दोष उपजे; अने जो पात्र होय तो तेणे करी ग्लान अथवा डर्बलने पथ्यादिक जाव वाने अर्थे उपयोगी होवाथी उपकार थायने. अल्विचेत तथा लब्धिवंत उपस मर्थ तथा समर्थ प्राहुएगने वास्तव्य पात्र होय तो अन्नपानादिकने आपणी उप कार करे. अन्यया केम करे ? इत्यादिक वस्त्र तथा पात्रनेविषे अनेक गुएजाणी शरीरनी पने धर्महेतु होवाथी तेमां परिग्रहपणानी आशंका करवी नही.॥ ? ॥ उः- उपहासयुक्त पूर्वपद्वीनी मूल गाथा वडे आशंका करे नेः-

जइ उवहिचारगहणं, इंठ डश्राणवङ्णणिमित्तं ॥

तो सेयं श्रीगहणं, मेहुणसण्णणिरोह्वं ॥ १४ ॥ व्याण् - शीत तथा तापप्रमुखनी पीडाए करी आर्त्तध्यान उपजे नही; ते सा रुं तमे एटलो बधो उपधिनो जार वेगे हो; त्यारे मैथुन संज्ञानिमित्त आर्त्तध्यान नो त्या करवासारु एक स्त्रीनो परियह पण शासारुं राखता नथी? ज्यारे जी णीदिक वस्त्र राखवाथी मूर्डा थती नथी, त्यारे अंगनंग थएली तथा कुरूप स्त्री राखवाथी मूर्डी केम थाय? ॥ १४ ॥ उण्- ए आशंकानो उत्तर दियेहे:-

एयं वि दूसगाणं, वयणं मयणंधवयणमिव मोहा ॥

छाएह समीवहासी, देहाहाराइगहणेवि ॥ १८ ॥ व्या०:- तमारुं बोलवुं जांड (मस्करा) ना जेवुं जासेजे. जेम होलीना दाहा डांमां कामी पुरुषो गमे तेम बक्या करेजे. अने कामने वश चया चका लाज उप जावे एवां वचनो बोल्या करे जे. तेम तमे पण मिच्यालना परवशेकरी छज्जानने लीधे मस्करीना वचन बोलो जो. ते वचनोची छमने तो कांई चवाचुं नची, पण तमे पोते तेवा देखाई छावो जो. केमके, तमे पोते पण जूखनी पीडा टालवासारुं

३६

खावाने न मलेतो छात्तेंध्यान थाय तेने टालवासारुं, तथा शरीरने जीवतुं राख वासारु छाद्दार लेवानुं मानोग्रो, तेम स्त्रीपरिग्रह शासारु मानता नथी? माटे जेम छाद्दारमां गुए ग्रे, दोष नथी. तेम धर्मीपकरएमां पए गुए ग्रे, दोष नथी. ए रूहुं समाधान ग्रे. ए कारएथी धर्मनां साधनोनेविषे जे राग थाय ग्रे, ते प्रशस्त जाएीने तेनेपरिग्रहरूप दोष जाएवो नही. ॥ १५॥

उण्- सम्यक्झान खवासारु राग प्रशस्त ने अने देष अप्रशस्त ने ते कहेनेः-

रागस्स व दोसस्सव, अहिस्स सुहासुहे सुहासुहया ॥ जइ पुण विसयावेका, कह होजा तो विजागोसि ॥ १६ ॥

व्याणः- सारा जदेशेकरी अरिहंतादिकनेविषे जे राग करवो, ते प्रशस्त राग कहेवायडे. यतः " अरिहंते सुयरागो, रागो सारीसु बंजयारीसु ; एस पसुछो रागो, अझल रागाण लादूणं " इति आवश्यके. अग्रुनने तजवासारु जे देष करवो पडे तेने प्रशस्त देष कहि्ये. जेम के, मिष्याल, अज्ञान, तथा अविरति प्रमुख जपर जे देश थाय हे, ते प्रशस्त देश कहेवायहे. केमके, तै छोविषे जो देप न याय तो तेत्रोनो त्याग केम याय! केवल विषयनी अपेकाएज देष या यडे एम न मानवुं. जो मात्र विषयनेअर्थेज देष यतो होय तो तेना प्रशस्त त था अप्रशस्त ए बे विनाग थई शके नहीं. तेमज उत्तमयतीनेविषे तथा उत्तम धर्मनेविषें पण जे आ लोकादिकने अर्थे राग यायने ते अप्रशस्त कहेवायने. कोई कहेजो के, रागना उपर कहेला बे विचाग थई शकेने केमके, तेना संक्लेश तथा विद्युद ए बे अंगढे. तेम देवना ए बे विचाग थई शके नही: केमके, ते नो बीजो विद्युद्ध अंग नथी. मात्र संक्वेशरूप दोवाची अप्रशस्त हे. यतः "प रिणामो दो बंधो, परिणामो राग दोस मोद जुदो; अग्रुनो मोद य दोसो, सुद्दोव असुद्रो हवदि रागो. " इति प्रवचनसारे. एम कहेनाराने एम कहेवुं के, तम ने सामायकनेविषे पाप गर्हाना अध्यवसाय केम चायते ? जे वस्तुविषे देष न याय तेने त्याग करवाना परिणाम याय नही. तेवा परिणामो तो यायने ते गुं अप्रशस्त देष कहेवाय? किंतु प्रशस्त देपज कहेवाय, केमके, परने ताप करवो ते कोधनो खंश हे, माटे कोधरूप जे देष ते पण रागनी पहे वे प्रकारे होयहे. उ०:- चार निक्वेपाए करी राग तथा देवनुं विवरण करे जे:-॥ १६॥

णामं ठवणा दविए, रागो दोसो छ जाव चठजेया ॥ कृम्मं जोग्गं बर्द्र, बन्नंतमुदीरणोवगयं ॥ १९॥ णो कम्म दबराठ, णायबो वीस साप ठगा य ॥ संजाइ कुसुंजाई, दोसो छठबणाईछो ॥१८॥ जं राग दोस कम्मं, समुइन्नं जे तछो छपरिणामा ॥ ते जावराग दोसा, वोडमिह णय समोछारं ॥१९॥ कोहो माणो दोसो, माया दोसा, वोडमिह णय समोछारं ॥१९॥ कोहो माणो दोसो, माया लोजो छ राग पजाया ॥ संगहणयमयमेयं, दोसो माया छवि वहारा ॥ १०॥ ठकुमु छरसय कोहो, दोसो सेसेसु णडि ए गंतो ॥ कोहोचिय लोहोचिय, माणो मायाव सदरस ॥ ११ ॥

व्या० राग तथा देवनां नाम, स्थापना, इव्य तथा नाव ए चार चार प्रकार होवाथी बन्नेना चार चार जेद थायते. जेम के, नामराग, स्थापनाराग, इव्य राग, तथा जावराग ए चार जेद रागना थायने तेमज नामदेष, स्थापनादेष, इव्यदेष, तथा जावदेष ए चार जेद देषना थायते. जेनुं राग एवुं नाम होय ते नामराग कहेवाय. रागवाननुं जे चित्र कहाडेलुं होय ते स्थापनाराग कहेवाय. इव्यरागना बे प्रकार बेः-एक कर्मइव्यराग, बीजो नोकर्मइव्यराग, एमांना कर्म इव्यरागना चार प्रकार बेः-एक योग बीजो बद्ध्यमान, त्रीजो बद, खने चोथो उदीरणाप्राप्त जे मोदनीयकर्मना पुजलबंध परिणामने अनिमुख थया होय ते योगकर्मइव्यराग कहेबाय. जे मोहनीयकर्मना पुफलबंध कियाना परिणामने पाम्या होय ते बद्धमान कर्मड्व्यराग कहेवाय. जे मोहनीयकर्मना पुन्नल बंध परिणामनी निष्ठाने पाम्या होय तेबदकर्म इव्यराग कहेवाय. अने जे मोहनीय कर्मना पुजल उदयने पान्या होय ते उदीरणात्राप्त कर्मइव्यराग कहेवायते. तेम नोकर्मइव्यरागना बे प्रकार ढेः-एक विश्रसा, बीजो प्रयोग. जे संध्याराग प्र मुख देखायने ते विश्रसानो कर्मइव्यराग कहेवाय: अने जे वस्त्रादिकनेविषे कु संजादिक राग देखायते ते प्रयोगनो कर्मइव्यराग कहेवाय. अने जावरागना पण बे प्रकार हे:-एक उदयप्राप्त, बीजो परिणाम, मोइनीयकर्मनो उदय थाय ते उदयप्राप्त जावराग कहेवाय. अने मोहनीयकर्म परिणामने पामे ते परिणामनावराग कहेवायते.

जेनुं देष एवं नाम दोय ते नामदेष कहेवाय. देषवाननुं जे चित्र कहामेलुं

दोय ते स्थापनादेष कहेवाय. इव्यदेषना वे प्रकारग्नेः-एक कर्मइव्यदेष; बीजो नोकर्मइव्यदेष. एमांना कर्मइव्यदेषना चार प्रकार ग्रेः-एक योग, बीजो बद्ध्यमान, त्रीजो बद छने चोथो उदीरणाप्राप्त. जे मोहनीयकर्मना पुजल बंध परिणामने अजिमुख यया होय ते योगकर्मइव्यदेष कहेवाय; जे मोहनीयकर्म ना पुजल बंधक्रियाना परिणामने पाम्या होय ते बद्ध्यमानकर्मइव्यदेप कहेवा य; जे मोहनीयकर्मना पुजल बंधपरिणामनी निष्टाने पाम्या होय ते बद्धकर्म इव्यदेषकहेवाय; अने जे मोहनीयकर्मना पुजल उदयने पाम्या होय ते उदीर णाप्राप्तकर्मइव्यदेष कहेवायग्ने. तेम नोकर्मइव्यदेषना वे प्रकार ग्रेः-एक वि श्रसा, बीजो प्रयोग. जे संध्याराग प्रमुख देखाय ग्रे, ते विश्वसानोकर्मइव्यदेष कहेवाय; तथा जे वस्तादिकनेविषे छत्तुंनादिक राग देखायग्ने ते प्रयोगनो कर्म इव्यदेष कहेवाय ग्रे. ज्रेने नावदेषना पण वे प्रकार ग्रेः-एक उदयप्राप्त, बीजो परिणाम. मोहनीयकर्मनो जे उदय थाय ते उदयप्राप्तनावदेष कहेवाय; अने मोहनीयकर्मपरिणामने पामे ते परिणामनाव देष कहेवायग्रे.

हवे नयेकरी राग देषनुंविवरण करे जेः-संग्रह नयनी रीतिए कोध तथा मान ए बन्ने अप्रीतिनो परिणाम होवाथी देष कहेवायने ; अने माया तथा लोन ए परिणाम होवाची राग कहेवायने व्यवहारनयनी रीतिए बन्ने प्रीतिनो मायानी योजना परना उपघातने अर्थे यायते माटे त्रीजी माया पण देवज कहेवाय. अने न्यायोपात इव्यप्रमुखनेविषे जे लोन थायने ते राग कहेवायने. परंतु अन्यायोपार्जित इव्यादिकनेविषे जे लोन थायने ते राग कहेवाय नही केम के, एथी कषायादिकनी उत्पत्ति यायने. रुजुसूत्रनयनी रीतिए कोध जे ने ते अप्रीतिनोज परिणाम होवाथी एकांत देष कहेवायने. बाकीना त्रण जे मान, माया ने लोन ते एकांत देप कहेवाय नही सिंतु अनेकांत कहेवाय; केम के, मान ज्यारे खोत्कर्भ परिणामरूप होय ने त्यारे राग कहेवायने, अने ज्यारे परनिंदापरिणामरूप होयने त्यारे देव कहेवायने. तेमज माया तथा लोज पण ज्यारे पूर्व परिणामरूप होय वे त्यारे राग कहेवाय वे; अने ज्यारे परइोइ परिणामरूप होयने खारे देव कहेवायने. अने शब्दनयनी रीतिए कोध तथा लोन ए बे कषायरूप होवाथी एमांना मान तथा माया अप्रीतिना परिएा मरूपे चईने ज्यारे कोधमां आवीने मली जाय त्यारे ते देष कहेवायने ; अने प्रीति ना परिणामरूपे थईने ज्यारें लोजमां आवी मली जाय खारे राग कहेवायने.॥११॥

अध्यात्ममतपरीका.

परदबंमि पवित्ती, एा मोइजाणिया व मोइजाणावा॥

जोगकयाहु पवित्ती, फलकंखा रागदोसकया ॥ ९९ ॥ व्याण्न परइव्यनेविषे जे प्रवृत्ति याय ते तेनुं निश्चययी मोद कारण नयी. केमके, प्रवृत्ति तो मन वचन तथा काय योगयी यायते, छने फलनी इज्ञा राग देषयी यायते. माटे फलनी इज्ञाविना यतिजो धर्मोपकरण धारण करे तो तेयी

अयोग्य ग्रं थयुं कहेवाय ? केमके, फलनी इडाविना राग तथा देष यता नथी ॥२२॥ वज्ञाइऐोवगंद्यो, मुणीण मुज्ञं विऐोव गहणाउं ॥ तह

देहपालणघा, जह आहाला तुह वि इहो ॥ २३ ॥

व्या०:- यतिने वस्त्रादिकनो प्रंय यतो नथी. केमके, मात्र शरीरनी रहा कर वासारु यहण करेबे. तेमां मूर्बा रंचमात्र पण होती नथी. जेम शरीरनी रहाने अर्थे यति निरवय आहारनुं यहण करेबे पण तेमां मूर्बा होती नथी. तेम धर्मो पकरणोविषे पण जाणी लेवुं. ॥ १३ ॥

> जह देहपालणघा, जुताहारो विराहगो ण मुणी॥ जह जुत्तवचपत्ता, विराहगो ऐव णिदि हो॥ १४॥

व्याण्न जेम शरीरनुं पालन करवाने अर्थे निरवद्य आहार लेतां यतिने विरा धक कह्यो नथी. तेम निरवद्य वस्त्र पात्र राख्याथी पणविराधक न कहेवाय किंतु आराधकज कहेवाय. कोई एम कहे के, ग्रुद्धोपयोग जे छे ते प्रदीप जेवो छे, अने नोजन तथा शरीर संचलन जे छे ते तेलपूरण तथा वाटसंचार जेवो छे. एतो योग्य छे पण उपधि अयोग्य छे. एवुं अमरचंदनुं बोलवुं असमीचीन छे. केमके, धर्मोपकरण धारण करवां ते प्रदीपने निर्वातस्थले राखवा जेवां छे. माटे योग्यछे.

अणसण सहावजोगा, जह असणं अणसणं तिजुत्त

मिणं॥ जुत्तं तह वहाई, सहाववं तप्ररिणयरस ॥ २५ ॥

व्याणः- जेम सर्व जोजननी तृसायकी रहित बतां अंतरंग आत्मखनावनी जावना करतां तेना उपष्टंजने अर्थे आहारनुं जे यहण करवुं ते परमार्थे अनाहार ज कहेवाय. यतः "जस्त अणेतणमप्पा, तंपि तओ तप्पडिन्नगतमणा; अण जिस्तमणे सण, मधतेत्तमणाअणाहारा." इति प्रवचनसारे. तेमज सकल परि

रुत्य

यहरहित बतां आत्मखनावनी नावना करतां तेना उपष्टंनने अर्थे वस्तादिक रा खतां पण परमार्थे वस्तादिकरहित कहेवाय. ते युक्तज बे. ॥ १५ ॥ एवंच सचेलाणं, कहठ सुत्तं जवे अचेलत्तं ॥ इअ

पनणंतरस तुहं, को णिखघररकणे वाउँ॥ १६॥

व्या०:- एवीरीते सूत्रमां कहेलुं जे सचेल यतिने अचेलपएं ते केम संजवे; एम कहेतां तमने पोतानुं संजालतां कठएा थई पडरो. केमके, तमारा शाखमा ज यतीने आहार करतां अनाहारी कह्याने. त्यारे मूर्वारहित सचेलने पए अचे ल कहेतां गुं अघटित थाय ! ॥ १६ ॥

जइ चेल जोगमेता, ए जिया चेलय परीसहो सा

ढू॥ जुंजंतो अजिअ खुहा, परीसहो तो तुमंपत्तो॥ १९॥

व्याण्- जो एम कहेशो के वस्त्र वापखाथी अचेल परीसह जीताय नही. खा रे आहार कखाथी कुधापरीसह केम जीताय ! जो एम कहेशो के, तीव्र कुधा ला गी होय तोपए यतीए अनेषणी आहार खेवो नही. किंतु जो ग्रुड आहार मले तोज आत्माने उपग्रह करवो. एवीरीते कुधापरीसह जीतायडे. तेमज शीतादिक वडे धणी वेदना थती होय तोपए यतिए सदोष वस्त्र खेवुं नही; किंतु निर्दोष वस्त्र मखे तोज आत्माने उपग्रह करवुं, एवीरीते अचेलपरीसह पए जीतायडे. एम निश्चयथी अचेलपएं जाएावुं. ॥ २७ ॥

उ० व्यवहारथी अचेलपणुं दर्शावे तेः--

जह जलमवगाहंतो, जणई चेलरहिउ सचेलोवि ॥ तहवज्ञोजुण कुच्चिय, चेलावि अचेलया साहू ॥ २० ॥

व्या०:- जेम कोई माणस पोतीर्ड पहेरीने तलावप्रमुखना पाणीमां स्नान क रवासारु पेज्ञे ते पोतिउं ठतां लोकमां नय कहेवाय. तेम यति जीर्णवस्त्रने धार ए करे ते छाचेलज कहेवाय. ॥ १० ॥

ठवयारेण उप्रचेला, सेसयुणी सबहा जिणंदाय ॥

खंधान देव दूसं, चवइ तन चेव आरझ ॥ १ए ॥

व्याणः- तीर्थंकर विना बीजा यति उपचारे छाचेला कहेवाय केमके, तेर्ड व स्व उतां पण छावस्व गणेजे. जेम कोटी धनवान उतां तेनो छानिमान न होय

হৃতহ

तो ते निर्धन जेवोज होय हे. एम सचेल साधुविषे पए जाएी लेवुं. सर्वथा अ चेल तो ज्यारे स्कंध जपरची देवडुष्य वस्त्र पडे त्यारे तीर्थंकर कहेवायते. ॥१९॥

एएण जइ अचेला, जिएंद जिएकणिआइआ सुमु

णी॥ता एसोचिय मग्गो, एसोति पराकयं वयणं॥३०॥

व्याणः- एएोकरी, जिनतीर्थकर तथा जिनकद्पिप्रमुख अचेलाजे, तैथी एज मार्ग उत्तमने ; अने स्थिविरकल्पनो मार्ग उत्तम नथी ; एम कहेनारानुं निराकरण कखुं. कारएके, जे जिनकब्पीने ते पए एकांते अचेजा नथी। केमके, जे जिनकब्पीने पात्रनी लच्धि होय, हाथ ढिइरहित थया होय : किंतु वस्त्रनी लच्धि न होय ते ओमांना कोइएकने रजोहरण, मुद्रपति, तथा एक कल्पक ए त्रण उपधि होय बे; कोइकने रजोहरण, मुह्रपति, तथा बे कब्पक मली चार उपधि होयबे; को इकने रजोहरण, मुहपति, तथा त्रण कब्पक मजी पांच उपधि होयने; जेने व स्वनी लच्धि होय, किंतु पात्रनी लच्धि न होय तेने सप्तविध पात्रनियोंग, रजोह লন্দি रए, तथा मुहुपती मली नव उपधि होयते ; जेने बन्ने लब्धिमांनी एके न होय तेओमांना कोइकने सात पात्रा, रजोहरण, मुहपती तथा एक कब्पक मली दरा उपधि होयने; कोइकने सात पात्रा, रजोहरण, मुह्रपति तथा बे कल्प क मली अग्यार उपधि होयते, अने कोइकने सात पात्रा, रजोहरण, मुहपति, तथा त्रण कल्पक मली बार उपधि होय. अर्थात् पोतानी शक्तिने अनुसारे उप धि होयने. अने जेने बन्ने लब्धीओ होय तेने पर्ण रजोहरण तथा मुह्यति ए बे उपधि तो निश्चयथी होयने. एवो नियमने. ॥ ३० ॥

जिएकम्मेव य कम्मं, जइ कायबं तर्ठ तुहं इहयं॥

ठवएस सिस्स दिखा, गुरुवयणाईहि किं कर्ज ॥ ३१॥ व्या०ः− जो तमे कहेशो के, जे कार्य जिनेश्वरे नथी कह्युं ते छमारे पण क रवुं नथी ! त्यारे धर्मांपदेश, शिष्य, दीक्दा, तथा गुरुवचनादिकनुं तमारे हुं उप योग हे ! जेम जगवंते ज्ञान उपना पही धर्मोंपदेश दीधो हे, किंतु केवलज्ञाननी पूर्वे कोईने उपदेश कथो नथी; तेम तमारे पण केवलज्ञान उत्पन्न याय त्यारेज उपदेश करवो जोये. तेनी पूर्वें कांई पण धर्मापदेश प्रमुख करवुं जोईये नही बारु !!! ॥३१॥ णिरतिसयाणं कप्गे, घेराणहिउ ठिउ उप्र तत्वेव - 11 पनिवज्ज जिएकमं, पंचहि तुलएाइ जुतो तो ॥ ३२ ॥

969

व्याणः- जे साधु जब्धिरहित होय, तेने स्थिविरकल्प मार्गज हितकारी हे. ते समये जिनकल्प त्याग करवा योग्य हे. ज्यारे आत्मज्ञान थाय त्यारे जिनकल्प आदरवो. परंतु आसमर्थ हतां उत्रुष्ट मार्गनो जे आदर करवो ते केवल आर्त्तध्याननो हेतु थायहे. यतः 'आकालौ त्सुक्यस्य तत्वतः आर्त्तध्यानरूपत्वात् धर्मविदो" ॥३ शा

वेजुवदि ईं उसह, मिव जिएकहियं हिच्छं तर्ड मग्गं ॥ सेवं

तो होइ सुही, इहरा विवरीछफलजागी ॥ ३३ ॥ व्याण्- माटे जगवंते कहेला मार्गने जे जजे ते सुखी थाय; अने जगवंते जे म कखुं ठे तेम जे करवा मांके ते विपरीत फलने लायक थाय. जेम रोगी वैदे कहेली औषधी जो सेवे, तो रोगरहित थाय पण वैदना कखा प्रमाणे न करे तो छपण्य सेवन करतो ठतां जेम खकाले नाश पामे. तेम ए पण जाणी लेवुं. ॥३३॥

अणगूहिंतो सत्तिं, जुंजतोवि जह णो चयइ मग्गं॥

ज्प्रणगूहिंतो सतिं, तह ववगरणं धरंतोवि ॥ ३४ ॥

व्या०:- सकल आदमशकिने फोरवनारो यति संयमादिकने अर्थे, जेम आहा र करतो ढतां जिनमार्गनो त्याग करतो नथी; तेम साध्यायादिकने अर्थेपण ते यतिए धर्मोंपकरणनो त्याग करवो नही. यत: '' तिहिं ठाणेहिं वत्यंधरेक्षा, तं जहा, हरिवचित्रं, इगंढवचित्रं परीसहवचित्रं ' इति. लक्षा अथवा इगंडा मटा डवाने तथा संयमने अर्थे वस्त्र धारण करवां जोये. जो वस्त्र न होय ने नम्न होय तो लक्षाथाय, अने संयम पक्षे नही; जो वस्त्र न होयतो लोक निंदा करे के, ए धर्म सारो नथी केमके जेमां साधु उधाडा फरेबे. ते टालवाने अर्थे वस्त्र धारण करवा; जो वस्त्र न होय तो टाढ तथा तापप्रमुख लागे तेथी चारित्रजंगरूप आर्चध्यान उत्पन्न थाय ते मटाडवाने अर्थे वस्त्र धा रण करवां. एम कारणीक वस्त्र होवाथी अमे साहसवंत बतां केम धारण करिये; एम जो कहेशो तो आहार पण कारणीक कद्युं बतां तेपण तमारे क रवो न जोये. यतः ''बहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे आहारा माहारे माणेइ कमइ तं वेयण वेयावचे इरियघाए अत्तंवत्त खाहार करे तेथी आहानुं अतिक्रमण थाय नही. तेना कारण आहे:- कुधानी वेदनाने मटाडवाने आर्थे, वेयावच्च करवाने आर्थे ईपीशोधवाने अर्थे, संयम पालवाने अर्थे प्राणधारवाने आर्थे, तथा साध्या यप्रमुख धर्मचिंताने अर्थे साधु आहार करे हे. पण वल तथा रूपादिकने अर्थे करतो नथी, तेमज वस्त पण कारणने लीधे धारण करे हे तेनो त्याग करवानुं का रण ग्रुं! आहार जेवो अने वस्त मूकवा! एम करवाने तमारो ग्रुं अजिप्राय हे ते जाणतु नथी ॥ ३४ ॥

अविजिय हिरिकुच्चाणं जइ नूणं संजमेण अहिगारो ॥

ता कह अजिय छगंग तसाएं तज्ज अहिगारो ॥ ३५ ॥

व्याण्न जो एम कहेशो के जेपो लाज तथा डगंढा प्रमुख जीखां न होय ते ने चारित्रनो अधिकार नथी. खारे जेपो कुधा तथा तृषा जीखां न होय तेने चा रित्रनो अधिकार केम कहेवाय ? ज्यारे कुधा तथा तृषा मूलगुणनां घातक नथीं खारे लज्जा तथा डगंढा पण मूल गुणघातक केम कहेवाय ? माटे अहीं तमारे अजिनिवेशविना बीजू कांई कारण दीठामां आबतुं नथी ॥ ३ ५ ॥

च्छह हिरि कुंडा हिसया हिरि कुंड सहाव जावणो णोचेत् ॥

एहा इहाहि ताकह तय जाव सहाव संबुधी॥ ३६॥

व्या०:- जो कहेशो के, यतिने लजा तथा छगंग होय तो तेथी विपरीत जे अलजा तथा अछगंशारूप आत्मखनावनी नावना ते न थाय. त्यारे कुधा तथा तथा ग्रतां तेथकी विपरित जे अक्तुधा तथा अतृपारूप आत्मखनावनी नावना ते यतिने केम थाय ! माटे शांत दांत प्रमुख श्रेष्ट गुणयुक्त जे यति ग्रे, तेवुं मन ग्रुइ होयग्रे तेनाबलथी आत्मखनावनावना टलती नथी. ए समाधान आहार अने उपकरण ए बन्नेनेविषे लागु पडेग्रे ॥ ३६ ॥

> अस्तग्गववायाणं मित्तीए छहण जोछणं इदं ॥ उ स्सग्गववायाणं मित्तीइ तहेव उवगरणं ॥ ३४ ॥

व्या ः- जो एम कहेशो के, उत्सर्ग तथा अपवाद ए बन्ने मार्गनेविषे सापेक् ताएकरी नोजन करवुं ते अयोग्य कहेवाय नही; त्यारे सापेक्ताएकरी उपकरण धारण करवामां ग्रुं अयोग्यता जे ? ॥ ३ ७ ॥

> ए पसुवगरणेणं पच्चकाणस्स दबर्ठ जंगो ॥ इयकण णावि विहवा जोवणमिव णिष्फला एच्या ॥ ३०॥

> > ২৩

व्याणः - जो एम कहेशो के, उपकरण जे हे ते नावथी तो मूहारिहित हे पण इव्यवकी परिग्रहरूप हे. तैथी पञ्चखाणनो नंग थायहे. केमके इव्य, देझ, काल तथा नाव ए चार प्रकारे जे पच्चस्काण हे तेमांनो प्रथम इव्यपचरकाण उपकरण हतां संजवे नही. एवी जे अध्यात्मनी कल्पना हे ते विधवायौवननी पहे निष्फल हे. केमके, इव्यादिक चार प्रकारे सर्व मूहांनो जे खाग करवो तेज सिद्धांतोनो परमार्थ हे. एम जो न मानीए तो शरीर पण इव्यपरिग्रह हे, तेनो खाग केम थाय ! अने पच्चस्काणना जे चार प्रकार कह्या हे ते तो सर्व जाव प चरवाणनो विस्तार हे, एम जाणवु. यतः " अपरिग्गहिआसुत्ते, तिजाय मुहा प रिग्गहोनिमर्ठ; सबद्देसु एसा, कायवा सुत्तसद्भावो," इति विशेषावरयके. ॥३ ण

सिईंत सिद्धरणं ववगरणं तं मुणीण सुहकरणं ॥

छाह होइ पावहरणं इय छाम्हं विंति छायरिया ॥३ए॥

व्या०:- एवीरीते सिद्धांतनेविषे उपकरण धारण करवानुं कह्युं हे, ते जयणाएकरी राख्याथी यतिने सुखकारक थाय हे, तथा पापनुं दरण करेहें एम उत्तराध्ययन बूद्द दृत्तिप्रमुखनेविषे द्यमारा पूर्वाचार्ये कह्युं हे, ते खवरय मान्य करनुं जोये ॥३९॥

पुद्धा दिछांबराणं केवलमञ्चणिद्धाण ववहासो ॥

छम्हाणं पुण दूहइ दोह्न विवहि छारवावारो ॥ ४०॥

व्या०:- आग्नंथनेविषे दिगंबरीओए जे प्रश्न कह्यां हे, तथा अध्यात्मीओए जे हांसीनां वचनो कह्यांहे, ए बन्नेनो अमारे प्रतिकार करवानो अधिकार हे. एवीरीते धर्मोपकरण तथा जावअध्यात्म ए बन्नेनुं पोतपोतामां अविरोधपणुं बताव्युं.॥४०॥ उ०:- अध्यात्मनी प्राप्ति केम थाय ते कहेहे:-

पंच समिन तिगुत्तो सुविहिय ववहार किरिछ परिक म्मो ॥ पावइ परमक्षण साहू विजिइंदिछप्पसरो ॥ ४१ ॥

च्या०:- जेपांच समिति तथात्रण ग्रसिए करि सहित होय, आलय, विहार, नाषा, तथा विनयप्रमुख विविधप्रकारे किया पालतो होय, तथा इंड्यो नीति होय, ते साधुने जल्रुष्ट अध्यात्मनी प्राप्ति याय हे. ॥ ४१ ॥

लुंपई वर्श किरियं जो खलु आहच जाव कहणेणं॥ सोहणइ बोहिवीआं उम्मग्गपरूवणं काउं ॥ ४२ ॥

Beig

व्याणः- कोई एम कहे के, व्यवहाररूप बाह्य क्रियायी छर्थ सिद याय एवो नियम नथी; केमके, क्रिया कस्ताविना जरत चक्रवर्त्तिने काच ज्रुवनमां छनिस्य जावना जावतां केवल ज्ञान उत्पन्न थयुं छने बाह्य क्रिया करतां रौड् भ्यानना योगे प्रसन्नचंडे छग्रुज प्ररुति बांधि लीधी. माटे व्यवहार क्रिया करवी नही, किंतु निश्चय क्रियानो छंगीकार करवो. एम कहेनारा उन्मार्गनी प्ररूपणा करीने पोताना बोधबीजनो नाश करेबे. माटे ते वचन मान्य करवां नही. केमके, जरता दिकतुं स्वरूप कदाचित जावमां कहेवाय. एटझे एवुं कदाचितज बनेबे, पण नि यमथी एमज थायबे एवुं कोईनाथी कहेवाय नही. छने व्यवहार पंथमां तो व्य वहारक्रियाविना निश्चय क्रिया संजवेज नही. छने ए कारण माटे एक निश्चय छंगीकार करिने क्रिया मूकी देवी नही किंतु बन्नै छवश्य करवी: ॥ ४२ ॥

सबं सहावसजं णिचं पठपरकयं च ववहारा ॥ ए

गंते मिचंतं उत्तय एयमयं पुए वयाणं ॥ ४३ ॥

व्या ०:- निश्चयनयनी रीतिए सर्वे वस्तु खनावे उत्पन्न यायने, विशिष्ट वस्तु परिणामने खनाव कहेने. ज्यारे बीजने खेंकुरपणे उत्पन्न खवानो परिणाम था यत्ने, त्यारे बीजपर्याय टलीने अंकुरपर्याय ठत्पन्न थायत्ने. पण तेने बीजा का रएनी अपेका होती नथी. अहीं कोई आरांका करे के, जो बीजा कारएनी अ पेका न होय तो कोतामां पडेला बीजनो केम छंक्तररूपे परिणाम यतो नथी? एनो जवाबः- कोगमां पडेला बीजने श्रंकुररूप परिणाम थवानां बीजां कारणो जोयेडे, माटे व्यवहारनय पण अंगीकार करवो जोये डे. तेने सामग्री कहेडे, ते सामग्री मल्याविना बीजनो अंकुररूपे परिणाम थाय नही. किंतु सामग्रीना योगे ते परिणाम थाय ते. कोई आशंका करे के जो सामग्रीथील कार्यनी उत्प त्ति चती होय तो तेने परिणाम एवं नाम राखवानुं कारण छं? किंतु सामग्रीय एवो अंगीकार करवो जोइये. की कार्यनी उत्पत्ति थायजे, एनो जवाब के, सामग्रीथी कार्यनी उत्पत्ति आयते एम मानिये तो व्यवहारनय सिद्ध आय पण निश्चयनय उमी जाय. तेथी एकांतपणुं थाय ते मिथ्यात्व कहेवाय. माटे बन्ने नयतुं मत प्रमाणजूत मानतुं, जो एकलो निश्चय नय अंगीकार करिये ने व्यव हारनय अंगीकार नही करिये तो सामग्री थकी परिणामविज्ञेषनी उत्पत्ति मना य नही, अने एकज वस्तु कारण तथा अकारण ए बन्ने नावे कहेवाज़े. त्यारे

अकारण वस्तुची परिणामरूप कार्यनी छत्पत्तिनो संजव केम धरो. कार्यनी उत्प ति तो कारणची थायने पण अकारणची चाय नही, इस्यादिक सूक्य विचार कथा ची बन्ने पक्त अंगीकार करवा योग्य ने एवुं सहज जणाई आवशे. ॥ धरु ॥ उप्रप्नंतर बक्षाणं बलिजाबलितणंति जइ बुदि ॥ नणु कयरं उप्रब लत्तं वेचित्तंवा विवेसम्मं ॥ ४४ ॥ णिप्पत्तीव फलंड अणिचय जोगो फलेण वा सिर्द्र ॥ पढमे समसावग्गी बि ति ए वावार वे सम्मं ॥ ४८ ॥ तति ए दोण विसमया सउछ पक्को पुणो असि दोति ॥ तेण समावेक्काणं दोए विसमयत्ति वज्जुनिई ॥ ४६ ॥

व्याणः- कोई कहे के, कर्मरूप अंतरंग हेतु जे वे ते बलवान वे. अने जयमा दिरूप बाह्यहेतु जे हे, तेनिर्बल हे. एम कहेनारा नयवादीने एम पूहवुं के, कमे रूप अंतरंग हेतु केवी रीते बलवान हे ? जो कहेशो के एक जातनो उद्यम करनारा पुरुषोने कर्मनी विचित्रताने लीधे सुखडुःखनी अधिक न्यूनता दीशेंग्रे, तेथी कर्मरूप अंतर हेतुनुं बल सिद थायते. तो ते कर्म शाथी थया ते ? एनो विचार कखाथी पूर्व जवना उद्यमथी थयां बेएम वरशे. एथी उद्यमनी विचित्रताने लीधेज कर्मनी विचित्रता बे.॥धधाजो कहेशो के, सुखनां कारण बतां पण अशातावेदनीयकर्मना उदये जीव ने इःख जपजेबे, ए कमेनुं बलवंतपणु, जाणवुं; छहीं दृष्टांत ए के, जेम कोइक मनुष्य ने दूधना पानथी पण इःख थायते. ए वचनपण समर्थ नथी छहीं पण नवांतरना उद्यमनी अपेक्ता हे, केमके, झुग्धपानादिके करी पण पित्तादिकना योगे तिक्तरसादिक नुं उद्दोधन थयाथी डःख जपजेते. ॥४ ५॥ जो कहेशो के, कम पोताना नोगने अर्थ बाह्य कारणने लियेंडे,ते बल डे. तो जन्मांतरनो उद्यम जन्मांतरना फलजोगने अर्थ. अंतराजे कारण कर्मादिक कारण उत्पन्न करेने एम पण कहेवाई शकायने. जो क हेशो के, कचित् बाह्यकारणविना कार्यनी उत्पत्ति थायते; पण अंतरंगकारणविना कोइ कार्यनी उत्पत्ति यायजनही; एबलजाणवुंतो एम पण संनवे नही; केमके, साहात् अथवा बाह्यकारणथीज कार्यनी उत्पत्ति थायने, ते विना कार्य थायज नही. किंबदुना कालादिक बाह्य कारणविना कोई कार्यनी उत्पत्तिज यती नथी. माटे परमार्थताए बाहा तथा अंतरंग ए बन्नेकारण सरखांज हे. ए वस्तुस्थिति कहेतां बे नयने अनुरोधे प्रमाणमार्ग हे. ॥ ४६ ॥ ञ० निश्वयनयनुं मत कहे हे:-

अध्यालमतपरीहा

णिजिय उसकहंचिय संब णो परकयं हवइ वहुं॥

परिणामा बंऊता एयबंऊं दाए हरणाई॥ ४९॥

व्या०:- निश्रयनयथी सर्व वस्तु आत्मपरिणामथी उत्पन्न थायने; परंतु पर थी परवस्तुनी उत्पत्ति थती नथी. केवल पुख्य पापकर्मना विपाकने अवसरे पाग्ने आवेला जे अंगना सर्पादिक बाह्य अर्थ ते निमित्त मात्र ने. तेने व्यवहार बद मूढ जीव कारण करी माने ने. व्यवहारवादी कहेने के, ज्यारे परकारणत्व नथी, त्यारे साधुने दान दीधार्थी ग्रुनफल अने परइव्यन्तं हरण कस्ताथी अग्रुन फल केम थायने ? निश्वयवादी समाधान करे ने के, निर्दोष आहार साधुने देतां ते देनराना जे ग्रुन परिणाम होयने, तेथी ग्रुनफल यायने, परंतु आत्नादिक पुजलरू प होवाथी, तेथी फल थतुं नथी. केमके, पुजल इव्यथकी पुजल परिणाम थाय ने; परंतु आत्मपरिणाम नथी थतो. तेमज परइव्यनुं हरण कस्ताथी जे अग्रुन फल यायने, ते पण आत्माना अग्रुन परिणामे करी थाय ने, परंतु इव्यरूप पु जल थकी नथी थतुं. ॥ ४९ ॥

अण्- निश्चय यकी दान पंण आत्मपरिणामरूपने, पुजल परिणामरूप नथी एम कहेनेः-

दिंतो वहरंतो वा एय किंचि परस्स देइ अवहरई ॥

देइ सुहं परिणामं हरइ वत्तं अपणोचेव ॥ ४० ॥

व्याणः - निश्चययकी तो साधुने निर्दोष आहार देतां तथा परइव्यनुं हरण क रतां ते दान देनार तथा इव्य हरण करनारनेविषे कांई देवुं, तथा लेवुं बन्धुज नथी. कोई कोईने दान देतो नथी, तथा कोई कोईनुं इव्य हरण करतो नथी. साधुने आहारादिकनुं दान देतां देनारो पोते पोतानेज परानुग्रह बुदिरूप राजप रिणाम दियेबे; तथा परनुं इव्य हरण करतां ते हरण करनारो जीव धात बु दिए करी पोतेज पोताना राज परिणामनुं हरण करेबे. परंतु परनेविषे कांई दे बुं लेवुं संजवे नही. ॥ ४ ७ ॥

णय धम्माव सुहं वा परस्स देयं एाया विहरणिजं ॥

कयणासा कयनोग, पमुहा दोसा फुमाइ हरा ॥ ४ए ॥ व्यावः- जो परछात्मा परने देतो होय तो पोतानो धर्म तथा पोतानुं सुख बीजाने देवाई शकाय बे; अने जो परनो आत्मा परनुं हरण करतो होय तो बीजानो धर्म तथा बीजानुं सुख पोते खेवाई शकायते. ए बन्ने परूमां रुतनाश अने अरुतागम दोष प्राप्त थायते; केमके, जो पोतानो धर्म तथा पोतानुं सुख बीजाने देवाई शकातुं होय तो पोते करेला रुतनो नाश थई गयो कहेवाय, अ ने खेनारने अरुतनो आगम थयो कहेवाय. केमके, तेने नकरेलो धर्म तथा ते नुं फल जे सुख, तेनी प्राप्ति थायते, तथा करेलो अधर्म तथा तेहना फलनो नाश थायते, ते रुतनाश कहेवाय ते. तेमज बीजानो धर्म तथा बीजानुं सुख पोताथ की खेवाई शकातुं होय तो तेणे करेला रुतनो नाश थई गयो कहेवाय, अने पोतान का खेवाई शकातुं होय तो तेणे करेला रुतनो नाश थई गयो कहेवाय, अने पोतान का खेवाई शकातुं होय तो तेणे करेला रुतनो नाश थई गयो कहेवाय, अने पोताने भारतनो आगम थयो कहेवाय ; केमके, पोताने नही करेलो धर्म तथा तेना फ लनी प्राप्ति थायते, तथा करेलो अधर्म तथा तेना फलनो नाश थायते, ते रुत नाश कहेवाय ते. ॥ ४७ ॥

जत्ताइ पोग्गलाणवि णं दाण हरणाइ होइ जीवस्स॥

जइ तं संचिय हुजा तो दिजावा खवहरिजा॥ ८०॥

व्या ः-जक्तप्रसुख एजलतुं देवुं तथा लेवुं जीवनेविषे थाय नही, केमके, जे वस्तु पोतानी होय तेतुं देवुं तथा लेवुं थायडे; परनी वस्तुनुं लेवुं देवुं थतुं न थी, ने परवस्तुनुं लेवुं देवुं तो प्रत्यक्त करिये डैये ते केम बने? ज्यारे एजल इव्य थापणुं नथी त्यारे लेवुं देवुं केम कराय डे?॥ ५०॥

जोगवसेणुवणीआ इठाणिठा य पोग्गला जेहु॥ असाणे जीवाउ जीवो आसो अतेहिंतो ॥ ५१ ॥

व्या०:- नामकर्मना परिणाम जे मन वचन तथा कायना योग हे; तैना व रो एजलतुं महण थायहे; जेम के, सुगंध तथा डर्गधतुं महण करतां काय यो गना वरोकरी एजलतुं महण थायहे; ते आत्मतत्वना ज्ञानथकी जीवने रागदेषना कारण थायहे; पण ते आत्मायकी अन्य हे. अने आत्मा तेथकी अन्य हे. केम के, एजल महण गुण हे; अने आत्मा उपयोग गुण हे. ॥ ५१ ॥

> तम्हास परिविज्ञागों पोग्गलदुबंमि एडि एडियउं॥ जोगाजोगविसेसो ववहाराचेव सपसस्तं ॥ ५२ ॥

व्याण्- माटे निश्चयनयथकी एटलो विशेष वे के, जे आपणने नोग आवेवे, तेमांतुं न्यायोपार्जित वित्त दोय ते आपणुं; ने जे परने नोग आवे ते परतुं जाणतुं आपश पुस्पयडीण ठदये जोगो जोगांतराय विलएणं ॥ ज इ णिअचित्तेणंचिछ, तो जोगो किण किं विणाणं॥ ८३॥

व्याणः सातावेदनीयप्रमुख पुख्यप्रकृतीना ठदयथी जोगांतरायकर्मनो विल य थया पढी पण जो जीवने जोग थता होय तो रूपणने पण जोगनी प्राप्ति थ वी जोइये, तेम तो नथी थतुं; केमके, रूपणने पण जाजांतरायकर्मना इत्योप शमथकी इष्यनी प्राप्ति तो थायढे, परंतु जोगांतराय कर्मना वशथी जोगवी शकतो नथी. माटे जे आपणने जोगवायोग्य होय ते खड्व्य कहेवाय, ने बीर्ज्ज बधुं परड् व्य ढे एम जाणवुं. एवी रीते व्यवहार नयना मते पण एकांत नथी; माटे ए सर्व पुज्ज इव्यने परकरी जाणवुं जोइये. ॥ ५३ ॥

अ० आ सर्व प्रजल इव्य परकीय जे एम जे जारो नही तेने आत्मस्वजावनी प्राप्ति न थाय. ते कहे जे.

जो परदबंमि पुणो करेइ मूढो ममत्त संकणो ॥ सो

कहञाय सहायं गिद्रो विसेएसु उवलहई ॥ ५४ ॥

व्याणः- व्यवहारमूढ जीव परइव्यनी उपर ममलत्तंकल्प करेने, ते विषय लोजुप थयो थको आत्मस्वजावने पामतो नथी. केमके, शरीरादिकनेविषे ' ढुं मा तेलो डुं, ढुं दूबलो ढुं, ढुं गोरो डुं तथा ढुं कालो डुं ' इत्यादिक अहंकार जीवने उत्पन्न थायने; तथा 'मारुं शरीर, मारुं छटुंब; इत्यादिक ममकार उत्पन्न थायने; तेथी विषयोनेविषे दृढप्रवृत्ति थायने, अने विषयना अज्यासे तेओनेविषे दृढ जाव थायने, एवी परंपराए करी अज्ञाननी वृदि धई गयाथी आत्मज्ञान केम थाय !॥५४॥

> णाहं होमि परेसिं ए में परे एडि मझमिहांकची॥ इय अपनावणाए राग होसा विलर्क्तति॥ ८८॥

व्या०:-- हुं बीजा कोईनो संबंधी नथी, तेम मारो कोई बीजो संबंधी नथी, आ जगतनेविषे मारुं कांई नथी, केमके, परइव्यनुं अस्तित्व जिन्न ने; अने मारा आ त्मइव्यनुं अस्तित्व जिन्न ने, शरीर कुटुंबादिक कर्मना योगे संयोग जव्हण जावने; तेमां मारुं कांई जागतुं वजगतुं नथी, केमके, तैत्रोनो वियोग पण थायने, जेनो कोई काजे संयोग तथा कोई काजे वियोग थतो होय ते पोतानुं इव्य कहेवाय नही जेनो कोई काजे वियोग थाय नही ते पोतानुं इव्य कहेवाय ने, एवो तो आत्मस्व

য়ন্দ

नाव हे, जेनो आत्माथी वियोग थतो नथी; जेम ज्ञान दर्शननादिक खनावोतुं कोई कार्जे आत्माथी वियोग थतो नथी. एवी रीते शास्त्रोक्तमर्यादाए करी आ त्मनावना कस्ताथी राग देषनो नाश थाय हे. ॥ ५५ ॥

तो परिणामाउचिय वंधो मोको व णिच्चयणयरस ॥ णेगितिया छणचं तिया पुणो बाहिरो जोगो ॥ ८६ ॥

व्याण्-माटे जीवने बंध अथवामोक निश्चयनयथी आत्मपरिणामयीज याय बे. अज्ञानरूप परिणामयकी बंध थायबे, अने आत्मज्ञानरूप परिणामयी मोक् यायबे. जेम हिमथकी थएली जे शीतनी वेदना ते अग्निना तापथकी निवृत्त थाय बे, तेम आत्माना अज्ञानथकी थएलो जे कर्मबंध, ते आत्मज्ञानथकी निवृत्त था यबे. केमके, एम सिद्धांतोमां पण कह्युं बे के, तपथकी छश्चीर्ण कर्मनो क्र्य थायबे ते पण ज्ञानना संयोगथीज फल थायबे. केमके, अज्ञानी कोमाकोडी वर्षेकरी जे कर्मनो क्र्य करे, ते कर्मनो क्र्य ज्ञानी एक उच्चासमां करेबे. बाह्य योग प्राणाति पातादिक, तथा कियानुष्ठानादिक एकांतिक नथी, तेम आत्थतिक पण नयी. के मके, बाह्य हिंसाविना मनना क्रिष्ट परिणामे करी, तंछलमज्ज, सातमी नरक प्रथ्वी नेविषे उत्पन्न थायबे. अत्रमत्त यतिने जयणाए चालतां अनानोगे जीवया तथी पण ते प्रत्ययिक कर्मनो बंध थतो नथी. तथाविध क्रियानुष्टानविना पण केवल ज्ञान उत्पन्न थाय बे. ने अत्तव्य जीव यतीने लिंगे उत्छष्ठ बाह्य किया पा खे बे तेना बखे ते नवमां मैवेयकसुधी जायबे, तो पण ग्रुद्ध परिणामविना संसारनो पार पामता नथी॥ ॥ ध्रा

> सिई। णिच्चय वोह्नं संजोगठ अवेयतं॥ क चइ कर्चई दोह्नवि उवठंगो तुद्धवंचेव ॥ ५७ ॥

व्या०:- संसारपार गमन सिदलक्षण निश्चय क्रियाथीज यायनेः एमां पए छा टली विशेषता ने के, घणाने व्यवहारयकीज निश्चय छावेने. छने कोइक जरतादि कने पूर्व चारित्राज्यासेकरी तथा जव्यत्वना परिपाकेकरी सहजे पए थायने. क पएं कहेतां योग्यपएं ते निश्चय तथा व्यवहार ए बन्नेना संयोग थकीज थायने. एविषे सिद्धांतमां चार जांगा कह्या ने. पहेलो जे रूपुं सारुं नही ने नाप पए सा रीनही, तेनी पने ए जांगो चरकपरिव्राजकप्रमुखनेविषे ने. केमके, ते रूपाना

रण्ड्

ञ्प्रथ्यालमतपरीक्ता.

जेवो छ६ परिणाम नथी, तथा ठापना जेवो वेष पण नथी. माटे तेओना अर्थ नी सिदि थती नथी, ने ते वंदन करवायोग्य पण नथी. बीजो रूएँ खोष्टुं, होय ने ढाप खरी होय ए नांगो, पासत्था, उसन्ना, प्रमुखनेविषे चाय हे ; प्रसुख श ब्देकरी दिगंबरादिक पण लेवा. केमके, तेओने रूपाना जेवो छद परिणाम नथी मात्र ढापनी पते वेष तेवो ढे. पण परिणामविना तेओना अर्थनी सिदि वती नथी. वेष तेवोने माटे जहांसूधी दोष जाखा न होय तहांसूधी वंदना करवायोग्यने, परं तु दोष जाएया पठी जो वंदना करिये तो माहा दोष लागे. यतः "जह वेलं बगलिं गं, जाएं तस्स एमंड धुवं दोसो ; एिइंदसतिएाक, ए वंदमाएे धुवंदोसो " इत्या वश्यके. एनो अर्थः- जेम कोइ नांडे यतिनो वेष लीधो होय तेने जाणीने वंदन क रतां निश्वयेकरी दोष लागेले. तिम निर्दे इस जाणी वेष मात्र जोइने वंदना करतां धुव दोष लागे. त्रीजो रूपुं चोखुं होय पण ढाप खरी न होय ए जांगो प्रत्येक बुधने लागु थायते. केमके, तेओ अन्यलिंगे पए होय तथापि तेओने रूपानी पते नावचारि त्रतो बे, तेथी पोताना आत्मानो अर्थ तो सिद्ध करेबे, परंतु साधुना पथ्यविना वंदन करवा योग्य नथी. चोथो जांगो रूपुं पण चोखुं तथा ढाप पण चोखी होय तेनी पठे सर्वे ग्रुह जाणवुं. जे महानुनाव आलय विहारादिक सर्वे ग्रुह, यतिनी समाचारी पाले, अने विद्य चारित्रवंत होय, एने रूपानी पते द्य ६ परिएाम ते, तेथी आत्मानो अर्थ सिद्ध करेंबे, तथा साधुनुं पथ्य बे, माटे वंदवा योग्य तथा पूजवायोग्य पण बे. एवीरीते एवा वेकाणे ग्रु६ परिणामरूप निश्चय बलवंत वे. साधु वेषादिरूप उपचरिता सञ्चत व्यवहार ते निर्बलजे. तथाकोईक ठेकाणे व्यवहार छने निश्चय ए बन्नेनो सरखो **उपयोग के. छ**र्दी ज्ञान छने कियानुं उदाहरण लेवुं ज्ञाननयनी रीतिए झाम कसुं बे के ज्ञानविना कियामात्रथी फलनी सिदि थती नथी. केमके, मिथ्याज्ञानेकरी सीपनेविषे रूपानी बुद्धि प्रवर्त्ते हे. ने तेनी प्राप्ति तो थती नथी माटे मिथ्याक्वानजन्य जे किया, तेथी फलनी प्राप्ति थती नथी: किंतु सत्यक्वानजन्यकियायी फलनी प्राप्ति यायने. परंतु क्रिया तो ज्ञानेकरीनेज यायने, तेमां मिच्याज्ञानजन्यकि या निष्फल थायने ने सख ज्ञानजन्यकिया सफल थायने, एवीरीते क्रियानुं कारण ज्ञान होवाथी प्रधान हे. अने ज्ञाननुं कार्य किया होवाथी अप्रधान हे, ते मज कियानयनी अपेकाए एम कह्युंनेः- ज्ञानजन्यकियाएं करीने संपादन क रेखुं जे फल, ते कोई कारणने लीधे झीण थई जाय तो ते पाडुं कियाथी प्राप्त यायने ; माटे किया प्रधान ने. अने ज्ञान अप्रधान ने. जुवो के, ज्ञानवान तता

32

www.jainelibrary.org

किया न करे तो ते ज्ञानमात्रयकी फलनी प्राप्ति थती नथी. अहीं दर्षातो कहे ढे:- जेम कोई पुरुषने मार्गनुं ज्ञान सारी पठे होय, पएा जो चलनकिया न करे तो वांढित नगर प्रत्ये पहोची शके नही; जेम कोई पुरुषने नृत्यकलानुं सारुं ज्ञा न होय पएा जो नृत्य अजिनय किया न करे तो जोनारा लोकनुं मनरंजन करी शके नही; तथा तेने कांई इच्यनी प्राप्ति थाय नहीं तथा जेम कोई पुरुष तरी जाएातो होय एटले जलतरएाज्ञानवान होय, पएा जो इस्तपादचलनरूपकिया न क रेतो इडितस्थले न पोहोचतां वच्चेज बूडी मरे, एवी रीते ज्ञाननय तथा कियानय नो परस्पर विवाद ढे; तेने एककोरे मूकीने मात्र सारांशनो विचार जो कस्वो होय तो परमार्थदृष्टिए फलसिदिने विषे बन्ने समान बलवंत ढे. केमके, शैलेशीअव स्थानेविषे केवलज्ञानरूप ज्ञान, तथा संवररूप किया ए बन्ने योगथी मुक्ति थायढे पएा ए बन्नेमांनुं कोई एक न होय तो मुक्ति थाय नही, ए प्रमाण पद्द ढे: ॥ ५७ ॥ अ० निश्वयनयनी अपेक्ताए कहेडे:--

तुद्धत्तमवेकाए णियमासमुदाय जोगमहि गिच ॥ किरिआ विसरसए पुण नाणाठ सुए जठ जणि आं ॥ ८ ज जम्हा दंसण नाणं संपुन्नफलं न दिति पत्ते आं ॥ चा

रित्तजुद्धा दिंतिहु विसरसए तेण चारित्तं ॥ ८ए ॥ व्या०:- यद्यपि कार्य करवानी अपेक्षाए ज्ञान अने किया ए बन्नेतुं सरखुं ब लगे; तथापि ज्ञान करतां कियाने आटली विशेषता गे:- ज्यारे ग्रुइकिया हो यगे त्यारे पटादिग्रणस्थानके नियमे ग्रुइक्ञान होयग्रे. पण ज्यारे ग्रुइक्रान हो य, त्यारे ग्रुइक्रियानो नियम नथी. केमके, चतुर्थग्रणस्थानके सम्यक्तना प्रता पे करी ग्रुइ ज्ञान तो होयग्रे, परंतु अविरति होवाने लीधे ग्रुइक्रिया होती नथी. एविषे आवश्यक निर्युक्तिमां कद्युंग्रे के, जेमाटे दर्शन तथा ज्ञान ए प्रत्ये के संपूर्ण फल दई शकता नथी, पण ज्यारे चारित्रनेविषे एकता मलेग्रे. त्यारे संपूर्ण फल दियेग्रे. तेमाटे दर्शन तथा ज्ञान करतां चारित्र श्रेष्ठ ग्रे ॥ ५०॥ ५७॥ एवं ववहारान बलवंतो णिज्ञन ज्योयवो ॥ एग

मयं ववहारो सबमयं णिच्च वति ॥ ६० ॥

व्याण- एवी रीते व्यवहारयकी निश्चयतुं बल अधिक कह्युं तथा आवीरीते पए निश्चयनी विशेषता जे- जे एकनयतुं मत ते व्यवहार, अने सर्वनयतुं मत ते निश्चय कहिये, यथा जूतपदार्थनुं जे कथन ते निश्चयनय कहेवाय हे, ने ए जूता र्थनय पण कहेवायहे, निश्चयनयनो विषय जाव जे हे ते सर्व समान हे. यतः "सबएाया नावमिछंति " इति विशेषावरयके ॥ ६० ॥ छ० एवंनिश्वयनयनुंमत सांजलीने सिंहावलोकनन्यायें व्यवहारवादी बोले जेः-छहिञ्जा जइ तुह किरिञ्जा छहिञ्जा नाएं वि तरस हेउति ॥ कारणगुणाणुरूवा कजगुणाणेव विवरीच्या ॥ ६१ ॥ व्याणः- पूर्व कहेली रीतिए ज्यारे तुं कियाने अधिक माने हे, त्यारे झानने पण अधिक मानवुं जोयेते. केमके, ज्ञान किंयानुं कारण ते. कारणना गुण जेवाज का र्यना गुएा होयने, तेथी विपरीत होता नथी. जेमाटे ज्ञान कियानुं कारएा ने, तेमाटे तेना गुणे करीने क्रियाने कार्थ पणानी प्रधानता हे, तेथी ज्ञान छत्यंत प्रधान हे, जो कहेशोके, मोक्तूरूप कार्य कियाथकी थायते. माटे किया अधिक ते : तो तेम पण संजवे नही. केमके, ज्यारे किया ज्ञाननुं कार्य हे. त्यारे कियानुं कार्य जे मोक, तेपण परंपराए ज्ञाननुंज कार्य जाणवुं. यतः "दासेण मे खरो कीर्ठ, दासोवि मे खरोबि मे." एटले मारा दासे खर वेचातो जीधो, ते दास पण मारो अने खर पए मारो हे ; एम सिद्धांतोकन्यायथी जाएी लेवुं. ॥ ६१ ॥ ञ्जह जह सब एयमयं व णिहिंठे इंगमयं च ववहारों ॥ सोसा सयलादेसा विगलादेसा कहं होऊं ॥ ६२ ॥ व्या० पूर्वे कह्या प्रमाणे निश्चयनय जे ते ते सर्व नयनुं मत ते, जो एम होय तो ते सर्व नांगानुं यहण करनार सकलादेश प्रमाणरूप मानवो जोइशे. त्यारे ते नयरूप विकलादेश केम मानशे ? ॥ ६१ ॥ छ० एवीरीते व्यवहार तथा निश्वय ए बन्नेनय परस्पर वाद करता जोईने मथ्यस्थपणे प्रमाणवादी कहेनेः-मुखामुखविजागो इज्ञामेत्रेण एजि एगंतो ॥ जइ छाहि तो विनाणे चरणं सारोति तं मुखं ॥ ६३ ॥ व्या ० व्यवहार तथा निश्चय एबन्ने नयोना मुख्य तथा अमुख्य ए बे विनाग पोतपो तानी इहाए चई शकेने, कोईक गुएने लईने निश्चयनी मुख्यता कहेवायने, अने कोईक गुणने लईने व्यवहारनी मुख्यता कहेवायते. परंतु एञ्रीनेविषे एकांतपणुं संज

वे नही; किंतु अनेकांतपणुं संजवेठे. केम के, निश्चय तथा व्यवहारना मुख्य तथा अमुख्य विजाग स्वजाविकधर्मरूप नथी; किंतु आपेह्निक ठे. जेम आमलक बदरनी अपेह्नाए दीर्घ कहेवाय; अने घटादिकनी अपेह्नाए ऱ्ह्स्व कहेवायठे. तेम ए बन्ने नयो एक बीजानी अपेह्नाए मुख्य तथा अमुख्य कहेवायठे, एम ठतां पण जो व्यवहारनयवादी पोताना मतनुं मुख्यपणुं प्रकाशवानुं मांमी न वाखे तो तेणे वली आ युक्तियेकरीने पोताना मननुं समाधान करी खेनुं जोये के व्यवहारनुं जे मुख्यपणुं ठे ते मात्र कहेवानुं ठे, अने निश्चयनुं मुख्यपणुं तो कार्यनो उपयोगी ठे; केम के, सामायक आदिदर्शने चौद पूर्वपर्यंत ज्ञाननुं सार ते चारित्र कह्युं ठे, यतः "सामाइअमाईअं, सुअनाणं जाव विंडुसाराउं; तस्स वि सारो चरण, स्सारो चरणस्स निद्याणं" इति आवइयके. ॥ ६३ ॥

सवणयमयतं पुण सबेसि सम्मर्गजरं विसरं ॥

णयणिज्ञयस्स तेणं सयल दिसत्त मेगस्स ॥ ६४ ॥

व्या०ः निश्रयनयने सर्वनयमय पणुं जे पूर्वे कद्युं ते सर्वनय सम्मत अ चे मानेने तेमाटे कद्युं एम जाएयाची एकला निश्रयनयने सर्वनयसमूहरूप प्रमाणात्मक सकल देशपणुं पण दोषनुं करनार थहो नही ॥ ६४ ॥

जेणं सयला देसो इप्रत्नेय वित्तीइ णिच्चयाधीणो॥

तेणेव सोपमाणं ए पमाणं होइ ववहारो ॥ हथ ॥

व्या०ः जिह्तां एक धर्मनी धाराए सर्व धर्म जे सकलादेशनेविषे प्रतिपादन कराय ø, तिहां अस्तित्वादिक एक धर्मनी साथे बीजा सकल धर्मोंनुं अजेदपणुं जे जाणवुं ते निश्चयनयने आयत ø, एवी अपेक्ताएकरी निश्चयनयने प्रमाण कह्योबे; अने व्यवहारनयने अप्रमाण कह्योबे; परंतु एकांत निश्चयनय प्रमाण कह्यो नथी. ॥६ ५॥

जम णुवयारोवि चलं कासइ णेगंतिझं हवे तंपि॥ एग

स्स मुख्तजावे णियमा उप्रवरोवयारोति ॥ ६६ ॥ व्याणः कोई एम कहेन्ने के निश्चयनय परमार्थयाहीने तेमां कोई उपचार न ही होवाथी ते बलवानने, अने व्यवहार नय परमार्थयाही नथी, तेमां घणा उपचार होवाथी ते निर्वलने, एपण एकांत नथी; केमके, बन्नेनय वस्तुयाही ने, व्यवहारनय अंशयाही ने, तेमां ज्यारे निश्चयनयनी मुख्यता विवह्तिए त्यारेनिश्च अध्यालमतपरी हा.

यनय पण उपचारसहित थायढे, इहां कोई विज्ञेषता नथी, यतः "अर्पि तानर्पितसिदे तत्वार्थे '' शब्देकरी नयनी प्रधानतानी जे विवक्ता करवी ते अर्पित कहिये, अने नयांतरनी अपेक्षाए तेनी अप्रधानतानी जे विवक्ता करवी ते अन र्पित कहिये, एबन्ने प्रकारनी विवक्ताथी जे पदार्थनी सिदि थायने, ते तत्वार्थ सिदि कहेवायने ॥ ६६ ॥ णिचयणयस्स विसयं जावंचिय जे पमाण माहंसु॥ तेसिं विणेव हेउं कजज्पतीइ कामेरा ॥ इउ ॥ व्या : कोईक छाम मानेबे के, निश्चयनयनो विषय जे नाव बे तेज प्रमाण बे, तो ते नावनो हेतु इव्य बे, इव्यविना नावनी उत्पत्ति थाय नही जो इव्यवि ना नावनी उत्पत्ति अंगीकार करीये तो मर्यादा रहे नहीं। अने कारणविना का र्यनी उत्पत्ति यती नथी एवो नियम ने तेनो जंग थरो! जो एम कहेशो के, इव्य किया संसारमां अनंतवार प्राप्त थएली हे, माटे ते अप्रधान हे : तो नाव पण अ प्रशस्त खनंतवार प्राप्त थएलो हे ते केम प्रधान कहेवाय ? जो कहेशो के, शुद नाव छपूर्व हे, तो छुद इव्य पण छपूर्वज हे, ते शासारुं नही मानवुं जोये ! ॥ ६ ९॥ खावंवसमिगनावे सुद्रो हेऊ सुहरूस खइञ्जरूस ॥ त झावेण कया पुण किरिच्या तझाववुट्हि करी ॥ ६० ॥ व्याणः इतायोपशमिक नावे कीधेली जे किया तेज इतायोपशमिक नावनीव दि करनारी है; माटे ग्रुद्रनावयी किया खवइय करवी योग्य हे; खने तेम न क्खाची नावनी हाएं। धई जाय. ॥ ६ ७ ॥ धिइ सद्धा सुह विविइस विस्ती तत्त धम्म जोणित्ती॥ तत्नइधम्मजावा वहुई जावतत्तणं तत्तो ॥ ६७ ॥ एवं पवमुनावों कमेण गुणठाणसिहिमारुहिय ॥ पकीणघाँइकम्मो कयकिचों केवली होइ ॥ 90 ॥ व्याणः धृति, अदा, ग्रुश्रूषा, विविदिषा, तथा विइप्ति ए पांच पदार्थ धर्मनां कारण बे, एविषे पतंजलिप्रमुख अंथोमां पण कहेलुं बे, उदेगादिनो खाग क रीने चित्त खर्थ करवुं ते धृति कहिये, चित्त खरथ ययाथी मार्गानुसारिणी रुचि उत्पन्न चाय ने ते अदा कहिये ; मार्गानुसारिणी बुदि थयाथी झायोपशम जाव

www.jainelibrary.org

उत्पन्न थायढे, खारे जेम सर्प बाहेर आमो तिडो चाले पण ज्यारे राफडांमां पे सेढे खारे पांसरो थई जायढे तेम अवणादिकनेविषे बुदिनी जे सरला थवी ते ग्रंभू पा कहिये, अवणादिक कखाथी जेम जेम बुदि ग्रुद थती जायढे, तेम तेम झा त्मतलचिंतननी उत्पत्ति थती जायढे ते विविदिषा कहिये, खात्मतल्वचिंतनथ की ग्रुभूषा जे ढे ते अवणादिग्रुएरूप थायढे, तेविना ते आजासमात्र कहेवाय; पए ग्रुए कहेवाय नही, आत्मतल्वचिंतन वडे अवणादिक ग्रुए उत्पन्न थयाथी सम्य कनी उत्पत्ति थायढे, ते सम्यक्तना पांच लिंग शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, तथा आस्तिक्यता; एवो आत्मानो जे ग्रुज परिएाम तेने परमतनेविषे विझप्ति कहेढे, आ त्माना ग्रुजपरिएामथी धर्मनो जाव उत्पन्न थायढे; तेऐकरी जावांतरनी वृ दि थायढे, एम उत्तरोत्तर, जाववृदिकरी अविरति देशविरत्यादिक ग्रुएरियान श्रे एपिचढी घातीकर्मनो व्हयकरी उत्तरुत्थ केवलीयाय एनो सारी रीते विचार करी जुवो एटले सहज ज्एाईआवेढे ॥ ६ए॥ ७० ॥

ञ० एवुं युक्तिपूर्वक वचन सांजलीने पीडितकर्ए थयो यको परवादी बोल्योः-

नणु जय सो कयकिचो इप्रधारसदोसविरहिन देवो ॥

ता बुहतह्या जावा जुकइ कम्मा कवलजोजी ॥ 9१ ॥

व्या॰ देव तो छडारदोषरहित छे; छने छतछख छे; ए सर्व मान्यछे. ने तमे पए जो एमज मानता होतो तेने कवलाहार करनारो केम कहोठो ? कव लाहार छंगीकार कखायी कुधा तृषा पए छंगीकार करवा जोईशे. केम के, कुधा तृषाविना कवलाहार संजवे नही. जो कुधा तृषाने पए छंगीकार करशो तो परमेश्वरने छडारदोषरहित केम कही शकशो? केम के, कुधा छने तृषा ए बे दोष तो कवलाहारना छहएथी सिद्ध थायछे. खारे शुं केवली सोलदोषरहित छे, जो एम मानशो तो छागमवचननो छपमान थशे. यतः "कुल्पिपासा जरातंक, जन्मांतकजयस्मयाः ॥ न रागदेषमोहाश्व, यस्याप्तः स प्रकीर्त्यते." इति दिगंबरमं यांतरगत उपासकाध्ययने कुधा, तृषा, जरा, क्त्य, जन्म, यम, इहलोकादिजय, छ हंकार, राग, देष, मोह, चिंता, छरति, निडा, विस्मय, विषाद, स्वेद, तथा खेद; ए छडार दोष केवलीने नथी एम कहांछे. तेछोमाना कुधा तथा तृषा ए बे दोष ढतां छतछस्यता केम संजवे? माटे केवलीने जो कवलाहारी कहो तो बे दोष छंगीकार करो. ॥ ७ १ ॥ अ० ए आशंकानो उत्तर कहे नेः--

तो सकावुतुं जे बुढ्तह्राई जिएरस किरदोसो ॥ जइ

तं दूसेज गुणं साहावियमणणो किं वि॥ ७२ ॥

दूसइ अवाबादं इय जइ तुह सम्मर्ग तयं दोसो ॥

मणुयत्त णं वि दोसो ता सिइत्सस दूसण !। ७३ ॥

व्या०ः क्रुधा अने तृषा ए बे दोष खडार दोषमां गणीने, कतकस्य जे केवली तेनेविषे ते बे दोषनो तें जे अनाव कह्यो: ते वचन ताराज मतानुयायिमां कहेता शोनात्रद बे; परंतु पंमितोनी पर्षदामां शोनाने पामे नही; किंतु मूब्यविना ना कहे वाय. केमके, कुधा अने तृषा ए बन्ने दोषमां त्यारे गणी शकाय, के ज्यारे कोई स्वाजाविकञ्चात्माना गुणूने दूषण लागतुं होय; तेम तो कांई यतुं नथी, केम के, ए जाव वेदनीयकर्मना करेला हे; ते केवलज्ञानने दूषित करी न शके के मके, केवलज्ञानने दूषण करनार ज्ञानावरणीय कर्म हे. तेम केवलदर्शनने दू षित करनारुं दर्शनावरणीय कर्म हे; तेम सम्यक्तचारित्रने दूषित करी शके नहीं केमके, सम्यक्तचारित्रने दूषित करनारुं मोदनीयकर्म हे. तेमज दानादिक पां च लब्धिने पण दूषित करों शके नही : केमके, लब्धिओने दूषित करनारुं अंतरा य कर्म ढे. ए कारण माटे झुधा अने तुवा ए बे दोष कहेवाय नही. अहिं को ई आशंका करशे के जेम कुधा तथा तृपावमे ढद्मस्थने ईर्या समिति श्रुताऱ्यासा दिकनो जंग दीवामां आवेजे; तेम केवलीने पण चारित्रज्ञानमां प्रतिबंधरूप शा सारू न थाय? एनो उत्तर आ हेः यद्यपि क्रुधा तथा तृषा ए बे बहिरिंडिय वृत्तिनी ग्लानि करवाने जीधे एकेंडिय झानादिकना विरोधी आयते. तथापि अतीं डि्य ज्ञाननो घात करी शकतां नथी, कोई एवी आशंका करे के, जीवनो आ व्याबाध गुए हे. एटले निराकुललरूप जे जीव, तेने दूषित करनारी हुधा तथा तृ षा हे. केमके, ते आकुलता परिणामरूप हे. जे आकुलतानी हुधावमे निरुत्ति यायने, तेकुधानी परिणामक ने ने कुधा तेनो परिणाम ने ; अने जे आकुल तानी तृषावडे निवृत्ति यायडे, ते तृषानं। परिणामक डे. ने तृषा तेनो परिणाम वे. तेने एम कहेवुं के, केवलीनो सिदल गुए वे, तेने दूषित करनारुं मनुष्यपणुं पण दोषरूप केम न कहेवाय ? इत्यादिक विचार करी पोतानी कल्पना मूकीने घातिकर्मना करेला अमार दोष जेवी रीते पूर्वाचार्यं कह्याले, तेवी रीतेज मानवा

जोइयेने, यतः " अंतराया दानलाज, वीर्यजोगोपजोगगाः॥ हासोरत्यरती जीति, र्जु गुप्ता ज्ञोक एव च ॥ १ ॥ कामोमिष्यात्वमङ्गानं, निड्रा चाविरतिस्तथा ॥ रागोदो पश्च नो दोषा, केषामष्टादशाप्यमी ॥ २ ॥ " ज्ञानगुणनो घात करनारुं छज्ञान, दर्शनगुणनो घात करनारी निडा, सम्यक्तगुणनो घात करनारुं मिथ्याख, चारि त्रगुणनो घात करनारां हास्य, रति, अरति, जय शोक, डगंगा, काम, अविरति, राग, तथा देष; अने दानादि लच्धिरूपवीर्यग्रणना घात करनारा दानांतराय, लाजांतराय, नोगांतराय, उपनोगांतराय, तथा वीर्यातराय; ए छडारदोष धाति कर्मना कह्याने, परंतु केवलीने घातीकर्मोनो क्तय थई जायने, माटे ते निर्दोष क हेवायते. तेम त्रतां क्तुधा अने तृषाने अडारदोषोमां जे गणेते ते युक्तायुक्त वि चार नकरतां केवल स्वमतनुं पोषण करेने : ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ उप्रह जइ जिएरस खइछं सुकं डकं विरुश्ए तेएं॥ तो सामसाजावे विसेसजुत्ता कहं सत्ता॥ ९४ ॥ व्याण- कोई आशंका करे के, जेंम केवलीने झायिक ज्ञानादिक हे, तेम झा यिक सुख पण हे, तिहां इःखनो जेश पण नथी, तो कुधा तृषा केमलागेहे ? ॥ ७४॥ तो वेयणिजनम्मं उदयपत्तं कहं हवे तरस ॥ एाय सोपदेसवदवं समयम्मि विवाग जणणावं ॥ ७५ ॥ व्याणः- उपली आशंकानुं उत्तर दियेने के, केवलीने जो क्तायक सुख मान ता होतो सिद्धांतनेविषे केवलीने वेदनीयकर्मनो उदय कह्योंडे, ते शासारु न मा नवो ! अर्थात् मानवो जोईहो. जेम ज्ञानावरणीयकर्मनो उदय ढतां झायिक झान चतुं नची, तेम वेदनीयकर्मनो उदय इतां कायिक सुख पण चतुं नची, कोई शंका करेके, केवलीने एवा वेदनीयकर्मनों उदय होयने के, जेना प्रदेश आत्मप्रदेशनी साथे मलेने, ते स्थिति प्रमाणे रहीने झीण धई जायने परंतु के वलीने तेनी आकुलता यती नथी. एतं उत्तर एके, यद्यपि एवो प्रदेशोदय अम ने पए मान्य हे; तो केवलीने झायिक सुख संजवे नही. तेम हतां अज्युचयता थी खमारे कहेवुं जोयेने के, केवलीने वेदनीयकर्मनो प्रदेशोदय नेज नहीं. किं तु सिद्धांतोमां विपाकोदय कह्योंने ॥ ७५ ॥ च्यावस्सयणिजती पयडिपसत्नोद्ववएसेणं ॥ ण जइ ता सुहायाउँ असुहपडिवक्कवयणेणं ॥ ७६ ॥

अध्यात्ममतपरीकाः

व्या०:- आवद्यक निर्युक्तिनेविषे प्रकृतिनो प्रशस्त उदय कह्यो छे, तथा दिगं बरना प्रवचनसारनामक यंथमां पण " पुस्पफला अस्हिंता " इत्यादिक वचनो कह्यांछे, एवी रीते असुखना प्रतिपद्त वचनथी केवलीने सुखनो विपाक छे. ॥७६॥ अ० कोई आशंका करे के, जे कारण माटे सुखविपाक छे, तेथीज इःखवि पाक नथी ? तेनुं समाधान करेछे. ॥ ७६ ॥

तत्तवसुत्तजणिद्या एकारसहा परीसहा य जिणे ॥ तेह

वि बुहतह्नाइ खइइग्रस्स सुहरस पडिकूलं ॥ ७९ ॥

व्याण- अमारा श्रीनगवतीसूत्रनेविषे केवलीने अग्यार परीसह कद्यार्ट. तद्यचा " एकविद्बंधगस्तणं जंते सजोगि जवञ्च केवजिस्स कइ परीसदा पस् ना ? गोयमा, एकारस परीसदा पस्तना, एव पुएवेए तिने ' तथा बेहुने " ए कादरा जिने " एवीरीते श्रीतलार्थसंत्रमां अग्यार परीसह कह्याने ; एऐकरी के वलीने क्रुधा तथातृषा प्राप्त थईग्रतां झायिक सुखनी हानि थती नयी एवुं गरेने अहीं उक्त " एकादशजिने " ए सूत्रनो अर्थ केटलाएक पोतानुं मत पोषण कर वाना हेतुथी एवुं करेने के '' एकेनाधिकानदश " एटले एकअधिक दश न थाय ; अर्थात् अग्यार परीसह नही. ए अपव्याख्यान जाणवुं, केमके, एवो समास सं नवे नही. वली केटलाएक संवर्धिसिदिप्रमुख '' नसंति '' एवुं बाहेरथी वाक्य लियेबे, तेतो जाणे पोतानुं उत्सूत्रनाषणज प्रगट करतो होयनी ! परंतु तेओए आवो विचार करवो जोये के, परीसहनाखामी चिंताना अधिकारनेविषे प्रसिद्ध ढतां तेनो अनाव केम थरो ! जे धनरहित होय ते धननो खामी कहेवाय नही. वली केटलाएक आवीरीते व्याख्यान करेने के, केवलीने वेदनीयकर्म होवाथी कारण कार्योपचारेकरीने अग्यार परीसह कह्याने ए व्याख्यान पण नदीमां बूडतां घास नो आश्रय छेवाजेवुं ते, केमके, स्वामित्वचिंताए उपचार संजवे नही, जो उप चार मानिये तो बता मोहनीयकर्मना होवाथी उपशांत मोहरुएरियानकनेविषे पण बावीस परीसह कह्या जोईझे, ए प्रकारे करी सूत्रनां घणां अपव्याख्यानो नो खाग करीने परमार्थनो विचार करवो जोये. ॥ 99 ॥

छरुसाय वेयणिकं बुहतह्लाईण कारणं जाण ॥ पक तिसतितछदय जलिछंतरजलणदित्ताणं ॥ ७० ॥ व्याण- आहार पर्याप्तिनामकर्म तत्रा छसाता वेदनीयकर्म ए बन्नेना जदय

३९

थी प्रज्वलित थएलो जे जगरामि, तेेषो करीने जीवने कुधा तथा हषा लागेने, ते बधां कारण केवलीनेविषे नतां ने तेने कुधा तथा हषा केम न लागे? तेकहो ॥७०॥ अ० वादी आशंका करेने:--

नणु बुह तह्ला तह्ला मोहुद्व पत्तियारिरंसव ॥

जिस् इ असा तहा आसहुकं तयहृंति ॥ अए॥ व्या०ः – हुधा तथा तथा ए मैथुननी इज्ञानी पर्व टलारूप होवाथी ते मोह नीयकर्मथकी उत्पन्न थायडे. माटे केवलीनेविषे ए संजवे नही. केमके, केवली ए तो मोहनीयकर्मनो प्रथमज नाश कस्रोडे. एनो उत्तर आवीरीते डेः– टला अने इःखमां घणी जिन्नता डे, टलानेज इःख कहेवाय नही. परंतु संसारीने टलाथकी इःखनी उत्पत्ति थायडे. ॥ अए॥

अ० तुक्षा उत्पन्न थवानो प्रकार कहेनेः---

मोहानिणिवेसेणं चउहि वि उमको ठयाइ हेऊहिं॥ पगरिस पत्तातह्ला जायइ छाहारसणति॥ ७०॥

व्याण्न मोहनीय कर्म अनिनिवेशे चार कारणथी आहारसंझा उत्पन्न था यहे. ते उत्कर्भ पाम्याने जीधे तुझा कहेवायहे. ते चार प्रकार श्रीठाणांगमां क ह्याहे; यतः "चर्जहिं ठाऐहिं आहारसमा समुप्पक्षः; उमकोघ्याए, हुहावेहणि कस्सणं कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदघोवडंगेणं, " एनो अर्थः- चार कारणेकरी आहारसंझा उत्पन्न थायहे. कोठोखाली थयाधी, कुधावेदनीयकर्मना उदयथी, आहारादिकनी कथानुं श्रवण कखाथी, तथा वारंवार आहारनो जपयोग कखा थी आहारसंझा उत्पन्न थायहे. अर्थात् ए चार कारण मव्याथी मोहनीय कर्म ना बखे आहारसंझा उत्पन्न थायहे. अर्थात् ए चार कारण मव्याथी मोहनीय कर्म वा बखे आहारसंझा जत्पन्न थायहे. अर्थात् ए चार कारण मव्याथी मोहनीय कर्म वा बखे आहारसंझा जत्पन्न थायहे. अर्थात् ए चार कारण मव्याथी योहनीय कर्म वा बखे आहारसंझा आहारानिजाषरूप कहीहे. ते तुझारूप होवाथी यतिने ए विना अश्रनपानादिकनेविषे प्रवृत्ति हे ते कहेहेः- ॥ ६० ॥

उपसणाइम्मि पवित्ती एतोचिय तं विणा सुसाहूणं॥ णज

हुत्त विहविहाणो अइआरो हंदि णिहिंघो ॥ ७१ ॥

व्या॰ ए हेतुथीज यतिने पण आहारसंज्ञाविना अशनादिकनेविषे प्रवृत्तिने केम के, विधि पालतां यतिने अतिचार कह्या नथी; अने आहारसंज्ञा तो अति चारमां हे. माटे जे एम कहेहे के आहारसंज्ञाविना यतीए आहार करवो नही तेने आचारमां पण अतिचार कह्या हे. ॥ ७१ ॥ एयं विणा णजुत्ती मेहुणसएं विणा जह अवंजं ॥ इ य वयणं पि परेसिं एएण पराकयं ऐछिं ॥ ७२ ॥ व्या० जेम मैथुनसंज्ञाविना अब्रह्मचर्य न थाय, तेम आहारसंज्ञाविना केव लीने चुक्ति थाय नहों. एवा परवादीना वचनतुं छावीरीते निराकरण कख़ं बेः-जेम यतिए आहारसंज्ञाविना आहार करवो उचित हे, तेम केवलीनेविषे पण मानी खेवुं जोईये. ॥ ७१ ॥ णहु साहु चिय पवित्ती ऐविय सुपसंचकाणहेठति ॥ ऱ्या हारोच्च अबंनं असह तुह होंइ णिंदोसं ॥ ७३ ॥ व्याण आहार अवर्जनीय होवाथी उचित छे, तथा छद्मस्य यतीने प्रशस्त थ्याननुं कारण हे. माटे आहारसंज्ञाविना केवलीने आहार खेवो संनवे हे. अने मैथुन वर्जनीय होवाथी छनुचित हे; तथा डर्थ्याननुं कारण हे. माटे मैथुना दिक अनुचितप्रवृत्ति अप्रशस्त राग देषविना केवलीने याय नही. एवा अर्थनो विचार करोने तेनुं ग्रहण करवुं जोये.॥ ण्र ॥ ञ्जाहारचिंतणुप्रव मेयं आहारससमासक H वुहूइ अहशाणं इघा लोनेण मुढाणं ॥ ७४ ॥ व्या० आहारना चिंतनथकी जे आहारसंझा उत्पन्न यायने, तेनेविषे मोहित थयला मूढजीवने जो ते आहाररूपइष्टवस्तुनी प्राप्ति न थाय तो ते वस्तु क्यारे प्राप्त थरो एवा चिंतनरूप छार्त्तथ्यान करेते. परंतु ते छनिलाषा मटती नथी. ७४ तत्तो माणसङ्कं लहइ जिने कंदणाइ कुवंतो ॥ लहुं वि इडविसयं रईइ चिंतेइ अवियोगं ॥ ७५॥ व्याण त्यार पत्नी पूर्वोक्त रीतिए जो तेने आहारादिक इष्टवस्तुनी प्राप्ति न थाय तो ते जीव कु देवनीयना उदयथी प्रज्वलित थएला उदरानलना योगे श रीरडःख पामेने. छने पत्नी कंदन रोदनादिक कखाथी छरतिमोदनीयकर्मना उदयने लोधे गाढ चित्तोपतापरूप मानसङःख पामेने. कदाच पुष्थप्ररुतिना परिपाके इष्टवस्तुनी प्राप्ति याय तो पण रतिमोइनीयकर्मना उदयथी ते वस्तु ना अवियोगनी इज्ञा कखाकरे, तेऐो करी ते वस्तु उपर गाढानुरागेकरी आर्च ध्यानना वज्ञ थयो थको जीव डःखज पामे हे, माटे मोहमूढ जे जीव हे तेने परमार्थथकी कदी पण सुख नथी ॥ ७५ ॥

> तो मोहणिकखयउ तम्रवछकाणुवंधि विलएणं॥ लहई सुहं सबह्र चएणो पुण बुहं चइउं॥ ८६॥

व्याण्- मोहनीयकर्मना क्त्यथी जीवने आहार करवानी रति तथा अरति जत्पन्न थायते, ने मोहनीयकर्मना जदयथी जीवने मानस इःख जत्पन्न थायते. ते इःख केवलीने मटी जायते ; पण असातावेदनीयकर्मना जदयथी केवलीने जे क्तुधा तृषा लागेते ; तेनो ते त्याग करी शके नही. ॥ ए६ ॥

> घाईव वेयणीओं इय जइ मोहं विणा ण डखयरं ॥ पयडं पडिरूवाने ता छासान विपयडीन ॥ ७९ ॥

व्याण- पूर्वपद्वी कहेने के, वेदनीयकर्म घाती कर्मना जेवुंने, माटे मोह्नीय कर्मविना ते डुःखदायक थाय नहीं। उक्तंच. " धादीववेदणीयं ; मोहस्सुदएण घाददे जीवं: " इति कर्मकांमे. तेवुं समाधान आमनेः- जो तमारा कह्या प्रमाणे होय तो असातावेदनीयनी पते केवलीने बीजी प्ररुतिओ पण मोहनीय कमीवि ना पोताना कार्यनी करनारी होवी जोये. अने तमे वेदनीयकर्मनीलाथे घातीकर्मनी तुव्यना केवीरीते करोबो ? घातीञ्चाना रसना जेवो तेनो रस होयबे एम सरखा पणुं करोढो, के स्वकार्य करवानेविषे घातीछानी अपेक्तापणुं कल्पोढो ; के अ थवा दोषतुं हेतुपणुं कहोगे. ? जो कहेशोके घाती आना रसना जेवो रस होवो जोये तो अघातीकर्म प्ररुति घातीना जेवी होवी जोये. केमके, ज्यारे अघातीनी प्रकृति सर्व घातिनी प्रकृतिनी साथे वेईये त्यारे ते सर्व घातिनीप्रकृतिनो विपाक देखाडे, तथा ज्यारे देश घातिनीनो विपाक देखाडे, छने एकली वेईये त्यारे मा त्र ते एकलो पोतानोज विपाक देखाडेढे ; माटे पद्य संजवतो नथी. जो कहेशो के, खकार्य करवानेविषे घातीआनी अपेका होवी जोयेने, तो नामकर्म पण पू र्वे मोइनीयकर्मनी अपेका करतुं इतां जेम केवलीने मोइविना आपणु कार्य करेने : तेम वेदनीय कर्म पण मोहनीयकर्मनी अपेक्ताविना कार्य करेने माटे बीजो पद्द पण संजवे नही. जो कहेशो के वेदनीयकर्मथी दोष लागेने, तो ते

৾ঽ᠐ঢ়

पण मनाय नही, केमके, क्रुधा अने तृषानेविषे दोषपणानुं पूर्वेज खंडन कखुं बे; एवीरीते खबुदिएकरी सारी पते विचार करीने जुवो. ॥ ७७ ॥ उपणुकूलं पडिकूलं च वेयणं लकणं सुहडहाणं ॥ ण हु एसी एगंती अपमत्तजईसु तयनावा ॥ ०० ॥ व्याणः औदयिक सुख बतां अनुकूलल वेदन थायबे, ते रागरूप बे अने औ दयिक इःख बतां प्रतिकूलल वेदन यायबे, ते देषरूप बे: माटे केवलीने औ दयिक सुख तथा ड ख ए बन्ने होतां नथी; किंतु झायिक सुखज होयडे. एम केटलाएक कहेने, ते योग्य नथी. केम के जेम अप्रमत्तयतीने औदयिक सुख तथा छःख ए बन्ने होयने. पण राग तथा देष ए बे होता नथी: तेम केवलीने विषे पण जाणी सेवुं. एमां एकांतपणुं न मानवुं. ॥ ७० ॥ अधुवाण सुहडहाणं जोगो जोगेण कम्मबंधो य ॥ एद एसो एंगंतो अपमत्तजईसु तयनावा ॥ ७ए ॥ व्याणः सुख तथा इःख ए बन्ने पदार्थ शाश्वत नथी, किंतु अशाश्वत हे. ते ञ्चोनो एवो नियम ढे के, अवरय जोगने दियेढे. कह्युंढे के, "नान्जक्तं क्लीयते कर्म" इत्यादि. अने नोगथकी कर्मबंध थायते. ए कारण माटे केवलीनेविषे ते संनवे नही. केमके, सुख तथा इःख ए बन्ने पदार्थों अधुव रे. एम केटलाएक कहेने, ते पए योग्य नथी. केमके, सुख तथा इःख अधुव नतां अप्रमत्तयती ने होयते ; तो पण तेनाथी कर्मबंध थतो नथी ; तेम केवेजीविषे पण जाणवुं जोइये. छंदीं पए एकांत नथी. ॥ ७९ ॥ च्प्रताणजं तु इकं नाणावरणकएण खयमेइ ॥ तत्तो सुहमकलंकिय केवलनाणा पुहन्नूयं ॥ ए० ॥ व्याणः-- ज्यारे हरेक पदार्थनो सूच्चा अर्थ जाएयामां आवतो नथी, त्यारे जी वने महाइःख उत्पन्न यायने. केमके, ययार्थवस्तु जाएवानी इज्ञा प्रमाएो जाएयामां न आवे तो तेथी जीवने आकूलता आयजे. तेज डःख जाणवुं. ए इःख वस्तुनो सूच्य अर्थ न जाएयाथकी थायहे, माटे अज्ञानरूपज हे. अ ज्ञान ज्ञानावरणीयकर्मना क्त्यची नाश चाय हे, ते इःखनोज नाश जाणवो. केवलीने ज्ञानावरणीयकर्मनों क्वय थई जवाथी इःखरूप छज्ञाननो लेश पण

रह्यो नथी अने केवल ज्ञाननो छदय थयोगे ते सर्व सुखरूप गे. ते सुख केव लज्ञानथकी प्रयक्नूत नथी. केमके, केवल ज्ञान जे गे ते स्वनावना प्र तिधातरहित होवाथी अनाकूलतारूप गे; त्यां आकुलता गेज नही, ज्यारे आ कुलता नथी त्यारे तज्जन्य जे छःख ते क्यांथी होय! अने छःख नथी त्यारे परम सुखज गे. एवी रीते "जं केवलित्तिनाणं, तं सोस्कं परण संचलोचेव ॥ खेदो तस्स नणीदो, जम्हाधादीखयं जादा" ए प्रवचनसारनां वचन असंजवित गे. तोपण आटलो विशेष गे:-- केवल ज्ञान क्षायिकसुखप्रक्रिया संजवे नही; केमके. क्लायि क सुख तो वेदनीयकर्मनाक्त्यथकीज उत्पन्न थायगे. ॥ ७० ॥

> णय सुकं डकं वा देहगयं इंदिनुझवं सबं ॥ इप्र न्नाण मोह कजे पमाणसिदेन संकोए ॥ ए१ ॥

व्या० दिगंबर एम कहेनेः-के शरीरगत सुख डःख लर्वइंड्रियथकी उत्पन्न थाय ने केम के, न्झस्थने जे सुंख तथा डःख उत्पन्न थायने ते एवी रीतेज या यते. प्रथम परोक्तज्ञानना कारणथी इंडियोनी उपर मैत्री प्रवर्त्ते ते, इंडियोनी मैत्री थकी विषयोनेविषे तृसा उत्पन्न थायते. जेम अग्निथी तापेलो लोइनो गोलो होयने; तेम विषयोनी तृसाएकरी इंड्यिो तप्त होयने. ते महाव्याधिस्थानीय बे. अने तृसा टालवाने अर्थे विषयनुं सेवन यायबे : ते व्याधीना औषधस्यानीय हे. ते यद्यपि व्यवहार दृष्टिए तो सुख कहेवायहे, तथापि परमार्थताए इःखरूप बे. उक्तंच. "पप्पाइंहे विसए, फासेहि समास देस हावेण; परिणममाणोव्यपा, सयमेव सह एयवदिरेहोति." इति प्रवचनसारे. ए कारए माटे देहगत सुख ऐं डियक हे. तेमज इःखपण ऐंडियक हे. एवा ऐंडियक विषयोनां देषयी इःख ज पजेने. माटे देहगत सुख तथा इःख केवलीनेविषे नथी. तेथीज केवली अतींडि य थया हे. उक्तेंच. "सोरकंवा पुएा इर्ख, केवलनाणिस्स नज्जि देहगयं ; जम्हा अ दिंदिञ्चत्तं, जावं तम्हा इतंऐायंति." इति प्रवचनसारे. एनुं समाधान करेतेः-देहगत सर्व सुख तथा डःख इंडियाधीन नथी केम के, इंडियोनी पराधीनताथी जे छड़ा न तथा मोद्दथकी सुख तथा डःख उत्पन्न थायहे, तेत्रोनेज इंडियोनी छपेक्ताहे, परंतु अप्रमत्तयतीने जे मानस सुख यायंग्रे, तथा सातादिककर्मना उदयथी क्ल धादिक दोष उत्पन्न थायते, तेमां इंड्यिने अपेक्तानो नियम नथी, जो एम न मानिये ने इंडि्याधीनज सुख तथा इःख मानीये तो रतिमोद्दनीयकर्म तथा खरति

मोहनीयकर्मनुं नामांतरज वेदनीयकर्मना उदयथी असाता वेदनीय कर्म थाय वे एम ठरझे. त्यारे वेदनीयकर्म छुड कहेवाझे नही. जो वेदनीयकर्म मोहनीयसाथे मानीये तो सातज कर्म ठरझे. आठ कर्मनो संजव थझे नही. एम करतां सर्व जैन प्ररुतिनो उन्नेद थझे. वली देहगत सुख जो केवलीने न मानीये तो तीर्थकरनाम कर्मनो विपाक केम संजवे ! जो एम कहिये के तीर्थकरनामकर्म जीव विपाकी बे, माटे तेथी जीवगत सुखतो जपजेबे. परंतु देहगत कुधादिक डुःख संजवे नही. तो जेम सुखने पण देहनी अपेक्ता बे, तेम डुःखने पण देहनी अपेक्ता बे, माटे देहग तज मानवा योग्यबे, इत्यादिक सूक्त्वविचार करी मध्यस्यबुद्धिये न्याय करो. ॥ए१॥

एतोचिछ बढु इःख, कएण तेसिं बुढाइवेयणियं ॥

णिंबरस लवुब पए इप्रयंति जणंति समय विक ॥ ए२॥

व्या॰ केवलीने छज्ञानादि जधन्य घणां इःख मटीगयां छे, मात्र एक हुधावे दनीय रह्यं छे, ते पण धातीकर्मनी साथे मलेला जेवो पोतानो विपाक देखाडे छे केम के, केवलीने पुर्खप्ररुतिनो विपाक प्रबल छे. यतः "छस्सायमाइछाछो, जाविछ छसुदा द्वंति पयडीठं; णिंबुरस णिंबुवपणु ण ढुंति ता छसुद यात स्स." ए छावइयकगाथामां तीर्थंकरने छसाता प्रऊति इःखदायिनी थती नथी. जेम दूधना घडामां निंबना रसनो बिंइ नाख्याथी कटुता थाय नदी, एम श्रीनइ बाहु स्वामीए कह्यं छे, जेम तेने प्रबल पुर्खपरात्तव करेछे, परंतु तेथी हुधादिक जप जे नदी एम न जाणवुं, एवो जाव जणायछे. पछी विशेषार्थ तो बहुश्रुत जाणे.॥एश।

एय तं कवलाजोग्गं वेयणियं ज्यगणिमंद्याजावा ॥

णय दृहुरजुकणं वेद्यणिञं हंदि सुञसिष्ठं ॥ ए३ ॥

व्या०:- केवलीनुं वेदनीयकर्म कवलाहार योग्य याय नही एम न कहेतुं. केमके, केवलीने अग्निमंदपणुं नथी. आहारपर्याप्तनामकर्मनो उदय अने व दनीयकर्मनो उदय होवाने लीधे उदराग्नि प्रज्वलित थायते. ए बन्ने कारणो हो वाथी केवलीने वेदनीय कर्म कवलाहारयोग्य थायते. जो कोई कहेन्नो के, वेदनी य कर्म दोरडीना जेतुं ते, तेथी केवलीने व्याबाध करीन्नके नही. तेने आवो ज बाब देवो के, ए वचन प्रधोषतुं ते, शास्त्रतुं नथी. केमके, श्रीसुयगडांगनी टीकामां आम कह्युंते के, " यद्यपि दग्धरज्जुस्थानकत्वसुच्यते वेदनीयस्य तदप्यना

322

युक्तिरपि घा गमिकमयुक्तिसंगतं वागमेह्यत्यंतोदयः सातस्य केवलिन्यनिधीयतेः तिकर्मद्वयाद्जानादयसास्या अनूवन् वेदनीयोजवायाःकुधः किमायातं येनासौन न वति न तपोच्चायातपयोरिव सहानवस्थानलक्त्णो विरोधो नापिनावानावयो परस्परपरिहारेण लक्त्णकचिदिरोधोस्तीति सातासातयोश्चांतर्मुहूर्त्तपरि रिव वर्त्तमानतया यथा सातोदय एवमसातोदयोपीति छनंतवीर्यत्वं सत्यपि शरीरब लापचयकु देवनीयोझवा पीडा च नवत्येव नचाहारग्रहणे किंचित्कीयते के <u>ज्ञेषासयोगिनि</u>. पंचाशीतिर्जर **दस्त्रप्रायाः** मह्रोपुरुषिकामात्रमेवेति वल एवुं जे गुएस्थानककमारोहमां कद्युंग्रे, ते तो थोडी स्थितिनी अपेक्षाए जा एवुं ; पए रसनी अपेकाए न जाएवुं. केमके, सत्तानी प्रकृति तो एवी कहीने, पण जदयनी प्रकृति एवी कही नथी. जलटो तीर्थंकरनामप्रमुखनो प्र बल उदयज कह्योग्रे. एम जाणीने ' अतएव दग्धरक्तुकल्पेन जवोपयाहिकल्पेना पि सता केवलिनोपि न मुक्तिमासादयेयुः " ए आवश्यकबृह इत्तिनुं वचन् बे, ते जोईने पण व्यामोह करवो नही. तेटला माटेज इहां पण स्थितिनी अपेकाएज केवलीने कर्म दोरडीना जेवां कह्यांजे. '' व्यतएव जवोपयाहित्वाल्पयाहित्वविशेषणं'' कह्यांगे. एवं अमने प्रतिनासेगे. वली विशेष गीतार्थनेविषे जेम पूर्वापरविरोध न थाय, तेम विचारवुं. केटला एक प्रमेयकमलमार्त्तमना अनिप्रायने अनुसरीने आवीरीते कहेने के, अपूर्वकरणगुणनाणाए पापप्ररुतिनो रस कस्रोने, मा टे केवजीने तथाविध सातोदय थाय नही. मोइसापेइप्ररुति थाय. तेनो मोइ ना घातथी खवरय घात थायते. खत्यथा पराघातनामकर्मना उदयथी केवली परहननादिक केम न करे ! ए बोलवुं पण छरायहनुं जाणवुं, केमके, जेम रसनो घात यायने, तेम स्थितिनो पण घात यायने. माटे जो रस ओनो यतो होय तो स्थिति पण ओढी थवी जोये. जेम बद्ध्यमानकर्मनी स्थिति घटी जायढे तेम ब द्यमान कर्मनो रस पण घटी जायते, एज समाधानते. तथा पराघातनामकर्म नुं फल केवलीने थायजने, छने परइनन तो मोहविना थाय नही. केटलाएक एम कहेने के वेदनीय कर्म केवलीनेविषे हतवीर्य ने, माटे तेनेविषे हुधादिक परी सह गयारूप हे. एम जे केवलीनेविषे कहेहे तेऐो श्वेतांबरनी प्रक्रिया जाएंगी नथी, ए म जाणवुं. केटलाएक कहेने के, केवलीनेविषे उदीरणाविना प्रचुर एजल आवता नथी, माटे असातावेदनीयोदय बली दोरडीना जेवोज हे. एबोलवुं पण अविचार रूप हे. केमके, एवीरीते तो सातावेदनीयोदय पण मंद होवो जोये. इत्यादिक

मतनो विचार करतां वास्तविक अर्थ सहज देखाई आवरो. माटे सूक्त दृष्टिवडे ते अर्थनुं शोधन करो. ॥ ए३ ॥

एाय केवलनाणाई बुहाईपडिबंधगं जिएांदरस ॥

दाहस्सिव मंताई इय जुत्तं तंतजुत्तीए ॥ ए४ ॥

व्याण्- जेम दाइना प्रतिबंधक मंत्रादिक हे, तेम कुधादिकतुं प्रतिबंधक के वलझान हे. ए वचन पए शास्त्रानुसार नथी. केमके, जेम हाथनेविषे मंत्रेलो अग्नि राख्यो हतां हाथ बलतो नथी एवुं प्रस्वक्त दीहामां आवेहे, तेथीज मंत्रादि क जे हे ते दाइना प्रतिबंधक हे, एवी कल्पना करायहे, तेम जो केवलीनेविषे वे दनीयादिक कर्मीदयरूप कारए हतां कुधादिक छत्तय छत्पन्न थतां नथी एम जो सम्मतशास्त्रमां कह्यं होय तो एवी कल्पना थई शके; तेविना बोलवुं व्यर्थ हे; माटे शास्त्रनी युक्तिए जिमपूर्वे कह्युं हे तेम आदरवुं योग्य हे. ॥ एथ ॥

- खिकइ बलं बुहाए एय तं जुजइ अएंतविरिआएं ॥
- इय जुत्तुं पिण सुत्तुं बलविरियाणं जर्ठ जेर्न ॥ ए५ ॥

व्या०:- केवलीने जो नूख लागती होय तो बलनी हाणी थाय. ते तो तेने विषे संजवे नही. केमके, वीर्यातरायकर्मना क्त्यने लीधे केवली अनंतवीर्यवंत छे. ए वचन पण अयोग्य छे. केमके, बल अने वीर्थमां जेद छे. शरीरनो जे पराक्र म ते बल कहेवायछे, अने अंतरंग जे शक्तिविशेष ते वीर्थ कहेवायछे. तेम छतां कुधाएकरी शरीरनुं बल घटेछे, एविषे अमे ना कहेता नथी ए योगप्रत्यय छे; योग जे छे ते शरीरनामकर्मपरिणतिविशेषरूप छे. अने नामकर्म तो जगवंतनेविषे कीण थयुं नथी. ॥ ७५ ॥ अ० पूर्वपक्ती आशंका करेछे:-

> बंधो परपरिणामा सो पुण नाणा ण वीयमोहाणं ॥ जो गकया पिहु किरिया तो तेसिं होइ णिवीच्या ॥ एइ ॥

व्याण- ग्रहण तथा मोचनादिक परपरिणामधी जीवने कर्मबंध थायते. ते परिणाम वीतरागने ज्ञानना प्रतापे थाय नही. उक्तंच " गेह्लदि ऐव ए मुंचदि, ए परं परिणमदि केवली जगवं ; पेच्चदि समंतदोसो, जाएदि सबं निरवसेसं " इ ति प्रवचनसारे केवलीने तो योगनी किया पए नथी, त्यारे जोजननी शी कथा अर्थात् केवलीनेविषे जोजन पए संजवे नही जो जोजनकिया केवलीनेविषे मा निये तो तेथी योगक्रिया सिद्ध यज्ञो. ते तो केवलीनेविषे संनवे नही. जुवो के, स्थाननिषद्या, विहार, तथा धर्मोपदेशादिकक्रिया पण केवलीने थती नथी, त्यारे नोजनक्रिया ते केम थाय! जो कहेशो के, स्थाननिषद्या, विहार, तथा धर्मोपदेशादिकक्रिया केवलीने प्रत्यद्द विद्यमान ठतां ना केम कहेवाय ? तो ते क्रिया यद्यपि छे, तथापि प्रयत्नपूर्वक नथी. केमके, प्रयत्न रागदेष विना थतुं न थी. तेतो केवलीनेविषे नथी, माटे ए क्रिया स्वजावसिद्ध छे. जेम आकाशनेविषे वादला समयविशेषे स्वजावेज संचार करेछे, रहेछे, गर्जना करेछे, तथा वर्षा करेछे. तेम केवलीने पण स्थाननिषद्या, विहार तथा धर्मोपदेशादिक स्वजावेज थायछे उक्तंच "ठाणणिसेद्ध विहारो, धम्मुवदेसो अणियदिणा तेसिं ; अरिहंताणं का ले, मायाचारोब इह्रीणं" इति प्रवचनसारे. अतएव केवलीने जे औदयिकी क्रि या छे, तेनेविषे मोह नही होवाने लीधे परड्व्य परिणामना विरह्यी द्दायिकीज जाणवी. यत. " पुस्मुफला अरिहंता, तेसिं किरिया पुणोहि औदयिगी; मोहादिहे विरहिया, तम्हा साखाइ गतिमदत्ति "॥ एष् ॥

ञ० एवी पूर्वपद्तीनी छाशंकानुं उत्तर छापेंगेः-

जोगं विणावि किरिच्या ठवजङ कहं ण तस्सोवि ॥

किरिवेचित्तं तह तुद्ध मबुद्धिपुवत्तं ॥ ए७ ॥

व्याण्- केवलीनेविषे स्थाननिषद्यादिक्रिया जो संजावेज थती होय तो प्रय त निरर्थंक थाय. एम तो कांइ दीठामां आवतुं नथी. प्रयत्न सार्थकज होयजे. केमके, प्रयत्नविना चेष्टा थतीज नथी. माटे केवलीनेविषे प्रयत्ननो संजव थायजे, मात्र स्वाजाविकतानोज उपयोग करवो नही. जो कहेशो के, केवलीनेविषे प्रयत्न जन्य चेष्टा नथी किंतु तेथी विलक्ष्ण जे. अर्थात् केवलीनी चेष्टा प्रयत्नविनाज थायजे. तो जेम चेष्टा विलक्ष्ण जे, तेमज प्रयत्न पण शासारू विलक्ष्ण न मानि ये ? अने जेम विलक्ष्ण चेष्टा मोहविना थायजे, तेम विलक्ष्ण प्रयत्न पण मोह विना खवुं जोये. जो कहेशो के, केवलीनी चेष्टा मनःपूर्वक नथी, तो ते प्रमाणे प्रयत्न पण मनःपूर्वक नथी एम शासारू न मानो एवीरीते सर्व ठेकाणे सरखुं स माधान जाणी जेवुं. ॥ ए७ ॥

एवं सहाववाणी कह जुत्ता जेणि तेसि वयजोगो ॥ हेऊ दब सुअरसा वर्डअएं कम्मखवणाय ॥ एठ ॥ व्याणः-पूर्वे कहेला हेतुए करीज दिगंबरो कहेन्ने के, केवलीने राग नथी होतो तेथी तेनेविषे वचनव्यापार संनवे नही. तेम ततां जे वचनव्यापार थायने ते स्वनावेंज मस्तकमांथी ध्वनि नीकले ने एम जाएवो, पए अक्त्ररूप वाणी संनवे नही. ए शंका पए अयुक्त ने. केमके, केवलीने केवलस्थनी पूर्वे जेवीरीते वचन योग हतो, तेमज केवलज्ञान थया पन्नी पए जाएवो. अने केवलीने रागविना पए क्रियानुं सामर्थ्य ततां अक्त्ररूप वाणी केम न संनवे ? कोई आशंका करेके, केवली रुतरुख ने. खारे ते उपदेश शासारू करेने ? तेनुं समाधान ए के तीर्थंक रनामकर्मनो विपाक एवीरीतेज जोगवायने. तेथीज केवली उपदेश करेने. ए केवलीनो खनावज ने. जो कहेशो के, केवली पहेकरी एकांते ठतरुखने ? तो तेम पए न समजवुं. यतः ऐगितेए कयन्तो ; जेपो दिन्नं जिएंदएामंसे, तदवंज फलं तस्स य खवणो वार्च अमवेजन्ज ; इति विशेषावश्यके. जो कहेशो के, परोप कारनी इन्जाविना उपदेश देवो संनवे नही. खने इन्जा तेज राग कहेवायने. खने रागतो वीतरागनेविषे संनवे नही. एवो व्यामोह पण न करवो. केमके एव। इन्जा ते रुपा कहेवाय ने ; पण तेने राग न समजवुं. ॥ ए० ॥

णय वयणपयत्तेणं खेच्ररसोदीरणं जिणंदरस ॥ इह

रा सुहरुस पावइ तं एय वा छास्पयमीएं ॥ एए ॥ व्याण्- जो कहेशो के, वचन बोलवाना प्रयत्नकरी जीवने खेद ययानी उ दीरणा यायते. तो ते संनवे नही. केमके, मनुष्यना छाउखामां साताछसाता वे दनीयकर्मनी उदीरणा प्रमादपरवशेकरीनेज होयते ; प्रमादविना बीजां कारणो त्रतां उदीरणा याय नही. जो एम नकहिये छाने बीजां कारणोथी उदीरणा थाय ते एम कहिये ; तो काययोगनेविषे सातावेदनीयनी उदीरणा, पण तेने केम थाय ? केमके, उदीरणानुं तो छानुं लक्ष्ण कह्युंते:- जे स्थितिना दलिक, उदयावलिका थी बाहेर वर्तेते, तेने कषायसहित योगनामना वीर्येंकरी छाकर्षण करीने ते उदयावलिकानेविषे जे प्रदेवन करनुं, ते उदीरणा कहेवायते. ॥ एए ॥

णय तं विरिज्यविरहियं जायइ उपवत्तणच करणंति ॥

केवलसहावपकं सुगयरस मयमणुमयं जाण॥ १००॥ व्या०:- जो कहेशो के ते उदीरणा वीर्यविना थायते, तो ते संनवे नहीं. के मके, उदीरणा जेते ते खपवर्त्तनानी परीकरण विशेषते. एटले स्थानांतर कराववा

324

नुं कारण हे ; अने कारण जेहे ते प्रयत्नरूप हे, एम नमानतां जो केवल खनाव वाद मानिये तो बोदनुं मत अनुमत याय, माटे प्रयत्न पण अंगीकार करनुंजोये.

खेउ णाईरिजइ केवलजोगेहि तो विणु पमायं ॥ उद्ध दयहेउपजवो दीसइ पुण सो वितत्तुद्धो ॥ १०१ ॥

व्याणः- केवली योग प्रमादविना खेद उदीरतो नथी, परंतु उदयना हेतु ते हां उदीरणासरखा दीठामां आवेजे, तेथी खेद जेजे ते उदीरितना जेवो जणायजे पण परमार्थताए ते उदीरणा कहेवाय नही ॥ १०१॥

जुत्तीइ सुह्रपत्ती तं पुण जोगाइदीरियं हुजा॥ एसा परजुत्तिलया एएण पकंपिछा णेछा ॥ १०२ ॥

व्या०:- छक्ति कहेतां जे कवलाहारने. तेणेकरी केवलीने जे सुख उत्पन्न था यने ; ते योगथी उदीखुं, अने केवलीने तो योगनी उदीरणा संजवे नही. केमके, तेने वेदनीयनी उदीरणा होती नथी माटे केवलीने कवलाहार संजवे नही. ए वी जे परयुक्तिरूप वेली ते आवीरीते कपाई गईने. के प्रमादविना उदीरणा था यज नही. एम निश्चये जाणवुं ॥ १०२॥

> एाय छप्पणिहाएां पिहु, केवलनोगाएा होइ जुतीए ॥ तं रागदोसकयं, ते पुएा तेसिं विलीएति ॥ १०३ ॥ इय सत्तमाइ फासग, कोडिन्नाईएा कवलनोईए ॥ ऐवय

डप्पणिहोणं, सुप्पणिहाणस्स माहप्पा ॥ १०४ ॥ व्याणः आहारेकरी केवलीना योगने डःप्रणिधान चाय नही. केमके, योगडःप्र णिधान ते रागदेषवडे थायठे. ते रागदेष तो केवलीनेविषे नची. छतएव सप्त मादि ग्रणगणे चडेला जे कोडिन्नादिमहार्धि, तेछोने छाहार करतां पण डःप्रणिधा न योग नची वतो. विधिएकरि छाहार करतां तेछोने छात्मलीनताना माहात्म्यची प्रमाद थतो नची. किंतु छप्रमादज रहेठे. सातमा ग्रणगणानेविषे नवा व्यापारनो आरंज थतो नची. फिंतु छप्रमादज रहेठे. सातमा ग्रणगणानेविषे नवा व्यापारनो छारंज थतो नची. पण पूर्वे छारंजेला व्यापारनी निष्ठा होयठे. जेम देवताना छाउखाना बंधनो छारंज यतो नची. पण ठठे ग्रणगणे बांधवा मांडचो जे देव तानो छाउखो, ते बांधता यका पण सातमे ग्रणगणे छवायठे. माटे नवा छारं

नना अनिप्रायेज "इत्येतस्मिन् गुणस्थानानि संत्यावरयानि षट्" एवुं गुणस्थान कमारोइनेविषे कह्युंडे. ते संजवितडे. ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ हेऊ पमत्तयाए आहारकहब ऐव आहारो ॥ होक जइ एइच्छारो छएइती एव तेएावि ॥ १०५॥ व्याणः- आहारनी कथा करतां साधु प्रमत्त थायने. त्यारे आहार करतां के म प्रमत्त न थाय ? एवुं प्रनावे कहेने ते अयुक्त जाणवुं. केमके, आहारकथा प्रमादनुं कारण नथी. तेम बतां जो बन्ने सरखा कहिये तो जेम आहारकथा करतां अतिचार थायते. तेम आहार करतां पण यतीने अतिचार थवो जोये। १०५॥ णिदाविण एण हेठ जुनी सहयारमेन ड्योतीए ॥ जेण सुए णिहिंहा पयडी सा दंसणावरणी ॥ 208 व्या गः - जो केवली आहार करतो होय तो तेने निइा होवी जोइये. एम जे कहेने ते पण अप्रमाण जाणवुं. केमके, निइानुं कारण आहार नथी ञ्चा हार तो मात्र निज्ञानो सहचारी हे. सिद्धांतोनेविषे निज्ञाने दर्शनावरणीयकर्म नी प्ररुति कहीते. केमके, आहार करतां पण केवलीने दुर्शनावरणीयकर्मनो अनाव हे. माटे केवलीने निडा होती नथी. ॥ १०६ ॥ णय तस्स योवयाए जेण अणुसा तर्व तर्व इनो ॥ णिदव इटयाजं णिदाई पसंगर्छ तरुस ॥ १०७ ॥ व्या०:- शास्त्रोमां कयुं ने के थोडो आहार करवो, माटे आहार इष्ट ने, ए म कहेवुं पण अयोग्य हे: केमके, घणो आहार कखाथी दर्शनावरणीयकर्म ना विपाकनो उदय आयते. एटला माटे घणो आहार करवो छष्ट कह्योते. प ए स्वनावे आहार डुए नथी. ॥ १०७ ॥ आहारो ए पमाठ जन्नइ अववाइनेत्तिकाऊएं ॥ 🦷 झववाया) बोलीणा वीयजयाणं जिणाण जुर्व ॥१०८॥ व्या०:- आहार अपवादमार्गने प्रतिबंध करनारो होवाथी प्रमादरूप हे, ए म नकहेवुं. केमके, वीतजय तीर्थंकरने कोई अपवाद नथी. अपवाद तो जे उ त्सर्गमार्ग करी शके नही, अने चारित्रना त्यागथी बीहे, तेने जे. जिनने तो ते नहोय. ए केवल पोतानी कल्पना नथी, केमके, धर्मबिंडनेविषे निरपेक्कयतिध मेना अधिकारे अपवादत्यागसूत्र कह्युंने, ए गीतार्थे यथा सूत्र विचारवो ॥१००॥

पत्तं ममत्तहेऊ जुत्तं वोत्तुं पुणो ए देहुव ॥ इहराणी ममजावो जिएाए कह पाणिपत्ताएं ॥ १०७ ॥

व्याणः - आहार करनारने पात्र राखवां जोइये, ते पात्रतो ममलनुं कारण हे. एम कहेनुं नहीं केमके, पात्र तो शरीरनी पते धर्मसाधन हे. जो एम न मानिये ने ममलवनुं कारण मानिये तो तीर्थंकरप्रमुख जे पाणिपात्री हे तैआनेविषे नि ममलपणुं केम संजवे? जो कहेशो के, बाह्य पात्र ममलनुं कारण हे, तो ते प ण असमीचीन हे. केमके, जेटलुं पुजल इव्य हे ते सर्व आत्माची बाह्य हे, मा टे ग्रुं ते ममलनुं कारण याय ? ॥ १०७ ॥

जाएं तवोवघार्र आहारेएंति ते मई मिन्ना ॥ जाएं सेलेसीए तवो छ एिविसस्स तेसिंति ॥ ११० ॥

व्या०:- जो कहेशो के, आहारेकरी केवलीना ध्यान तथा तपनो व्याघात याय, माटे आहार लेवो अयोग्य छे. तो एवुं जे तारी मतिमां नासे छे ते पण मिथ्या छे. केमके, ध्यान तो शैलेशीयें छे. पण पूर्वे उत्कर्षताथी देशे छणी पू र्वकोडी सुधी नथी. अने विशेषेकरी केवलीने कोई तप पण नथी. ठाणांग नेविषे केवलीने जे अणुत्तर तप कह्युंछे, ते पण शैलेश्यावस्थानाव ध्यानरूप क ह्युं छे. अने सोमिलना प्रश्नना अधिकारे श्रीनगवतीमां "किं नंते जत्ता सोमि ला, जंमे तव णियम संयम सझाय सझाणवस्सयमाईस जोएस जयणा" एवुं कह्यं छे तेहां पण तपनुं फल छे. तेमाटे उपचारें तप कह्युं छे. ॥ ११० ॥

> उरालियदेहरूस य ठिई अवुहीय णो विणाहारं॥ तेणं पिछ केवलिणो कवलाहारित्तणं जुत्तं ॥ १११॥

व्याणः - औदारिकशरीरनी स्थिति, तथा तेनी वृदि आहारविना थती नथी माटे केवलीने कवलाहार युक्त ते. ॥ १११ ॥

परमोरालिइअदेहो केवलिएां नणु हवेज मोहखए ॥

रुहिराइधाठरहिठ तेखमठ खप्रपडलुबो ॥ ११२ ॥

व्याः-पूर्वपद्वी रांका करेने के, मोइनीयकर्मना क्तययी केवलीने परमौदा रिक शरीर थायने. ते रुधिरादिक सप्तधातुरहित परम पवित्र होयने. नोडल ना पडलनी पते केवल तेजमय होयते. एवा शरीरने कवलाहारनीअपेक्ता नची॥ १ १ श अ० उपली आशंकानुं समाधान करेतेः—

संघयणणामपगइउ केवलिदेहरस धाउरहियत्ते ॥

पोग्गलविवागिणी कह च्प्रतारिसे पोग्गले होऊ ॥ ११३ ॥ व्याण्- केवलीवुं शरीर जो सप्तधातुरहित कहिये तो तेने वज्रक्तषननाराच संघयण नामकर्म प्रठतिनो वदय केम चायः केमके, ते प्रठति तो पुजल विपाकनी बे. ते ऋस्थि पुजलने विषेज विपाक देखामे बे. जो दृढ संस्थानमात्र पुजलनेविषे ते विपाकने देखाडती होय तो देवताने पण वज्रक्तषजनाराच संघयण कहेवुं जोये.११३

मोहविलएण नाणं णामुदयाचेव तरस पारम्मं ॥

तो वसाइविसेसो तं होऊण धाउरहियत्तं ॥ ११४ ॥

व्याणः- मोहनीयकर्मना विलयथी केवलीने केवल ज्ञान उपजे हे. पण श रीरनेविषे कांई विशेषपणुं थतुं नथी. शरीरनामकर्मना उदयथीज शरीरनेविषे विशेषता यायहे. माटे केवलीना शरीरनेविषे पुत्धप्रकृतिना माहात्म्यथी वर्णगति सारसत्वादिकनी विशेषता युक्तज हे. परंतु धातुरहितपणुं थाय नही. अतए व शास्त्रोनेविषे कत्तुंहे के, " संघयणरूव संघा, ण वन्नगइ सारसत्त जसासा; ए मा इणुत्तराइं, हवंति णामोदया तस्स." एम हतां जे केवलीना शरीरनेविषे अ स्थ्यादि पुज्जल पलटीने अन्यविषेज पुज्ज उत्पन्न थायहे. एवी कल्पना करवी ते दृष्टिविपरीत होवाथी अयोग्य हे. केमके, पुत्सप्ररुतिनो उदय थयाथी तथा विध लब्धिवडे शरीरवर्णादिकविशेष दृढ होयहे. एम जाणवुं. ॥ ११४ ॥

ञ्गोरालिपत्तणेणं तह परमोरालिछंवि केवलिणो ॥

कवलाहारावेरकं ठिईं च वुहिं च पाउणई ॥ ११५ ॥ व्या०:-- तीर्थंकरनुं शरीर जो परमोदारिक होय तो पण तेने कवलाहार सा पेइज स्थिति तथा वृद्धिनो छनुजव खायः केमके सामान्यपणे औदारिकशरीर नेविषे एवो नियम ग्रह्योने के, छाहारविना शरीरनी स्थिति होयज नही.॥११५

णय मइनाणपसत्ती, कवलाहारेण होइ केवलिणो ॥

पुष्फाई छं विसयं, छास हयाणाइ गिह्लिजा ॥ ११६ ॥ व्याः-- जो केवली आहार करे तो तेना आसादथी रसनानुं मतिज्ञान थाय नही; जो एम मानिये तो समवरणजूमिकानेविषे गृठणप्रमाण फूल पाथरेलां दोवाथी, तेना परिमलयी घाऐंडि्यनुं मतिज्ञान केम न याय? आखाद विना तृप्ति याय नही, एम पण न कहेवुं, केमके, रतिरूप तृप्ति यती न होय तो ते अमारे पण इष्ट बे. परंतु कुधानाशरूप तृप्ति तो आहारविना यायज नही.॥११६॥

इरिआ वहिआ किरिआ, कवलाहारेण जइ ए केवलिणो॥

गमणाइणा विनहवे, सा किं तुह पाण पिहियत्ति ॥ ११७॥ व्या॰ जो कहेशो के, केवलीने कवलाहार करतां इरिआवहिकी किया लागेजे. तो गमनागमनादिक कियाए करी केवलीने इरिआवहिआ किया केम न लागे ? माटे जेम केवलीने गमनादिक किया जे, तेम जोजन किया पण जाणवी, एवुं प्रथमज कह्युं जे. ॥ ११७ ॥

णय परुवयारहाणी तेण सया जोग्गसमयणियएण॥

णय वाहिसमुप्पती हिञ्जमि छाछाहारगहणाउँ॥ ११८॥

व्याणः-- केवली जो कवलाहार करे तो धर्मों परेशमां छंतराय पडे, तेथी परो पकारनी हानि थाय, एम कहेवु न जोइये. केमके, ते तृतीयप्रहरनेविषे मुहूर्त्त मात्र नियतसमयेज आहार करेजे. तेथी बाकीनो सर्व काल उपदेशने अर्थे रहे जे. जो कहेशो के, केवली आहार करेतो झुलादिक व्याधि उत्पन्न यवानो संज व थाय, तो ए कल्पना पए व्यर्थ जे. केमके, ते सारी रीते जाणीने अजिष्वं गपरिणामरहित हित मिताहारज करे जे माटे तेनेविषे झुलादिकनो संजव थाय नही. अने एथी तेनेविषे रागनी कल्पना पए थाय नही. ॥ ११७ ॥

ण पुरीसाइ डगंबिय मेसि णिहरू मोहबीज्याणं॥

आइसय उंय परेसिं विवित्तॅंदेसेविहाणाय॥११ए॥ व्या०ः जो कहेशो के, केवली आहार करे तो तेथी वडिनीत प्रमुख करवुं जो इये, तेतो डगंगाउं कारण ठे; एम पण कहेवुं नही. केमके, डगंगाउं मूल मोहनी प कर्म ठे. तेवुं तो प्रथमज उन्मूलन करेखुं ठे. अने तीर्थंकरनो एवो अतिशय ठे के, तेनां आहार तथा निहारनी विधिने कोई देखी शके नही. ए कारण माटे बीजाने पण डगंगा उत्पन्न थाय नही. वली सामान्य केवली एकांते निहार क रेठे तेथी पण बीजा कोईने डगंगा उत्पन्न थाय नही. पूर्वपद्दी कहेने के, तीर्थ करने पूर्वे पण निहार होय नही तो पठी ते केम संजवे? यतः "तिइय ञ्राध्यात्ममतपरीक्ता.

रा तष्पियरो, इलधर चक्कीय वासुदेवाय ; मणुआण जोगजूमी, आहारो एडि एी हारो. " ए तो कोई अपूर्व मतजे. केमके, शास्त्रोनेविषे एवो कोई अतिशय क ह्यो नथी ; तेम एवी उदराझि पए नथी के जेथी निहारनो अजाव थाय. तेम बतां जो ए वातसाची मानिये तो जस्मकव्याधिनी पते ते दोषरूप थशे. खल रसीकत आहार मात्र जो जस्म थाय तो पूर्वे केम न थाय ? माटे ते केवल आप रुचिमात्र जे ॥ ११९ ॥

जो पुण जुत्तिच्छजावो केवलिणो च्यइसर्वति जंपेई ॥

सो वायामित्तेणं साहेक सुह खर्ड पुष्फं ॥ १२० ॥

व्याणः जो कहेशो के, केवलीने जे चुक्तिनों अजाव हे. ते अतिशय जाण वो. तो एम कह्याची तमे पोते पोताना वचने अहतीवस्तुने हती करो हो त्या रे आकाशना पुष्प पण हे एम कहेशो तो कोण ना कहेनारो हे! पण ए वच नो सप्रमाण न कहेवाय. ॥ १२०॥

एवं कवलाहारो जुत्तीइ समचिउं जिणवराणं ॥

पुवायरिएहि जहा तहेव लेसेण उवइठो ॥ १२१ ॥

व्याणः - एम जे प्रकारे पूर्वाचार्य केवलीने विषे कवलाहारनी समर्थना करी हे ते प्रकारेज आ ढेकाणे अमे लेशमात्र कह्युंहो. ॥ १११ ॥

तेणं केवलनाणी कयकिच्चो चेव कवलजोईणं ॥

नाणाईण गुणाणं पमिघायानावर्व सिद्धो ॥ १२२ ॥

व्याण- माटे केवली कवलाहार करता बतां पण कतकत्यज बे. केमके, ज्ञान दर्शन चारित्र तथा वीर्यग्रणनो खनावपरावृत्ति एटले पाछल हटवारूप प्रतिघात नथी. ज्ञानादिक ग्रण संपूर्ण सिद्धज होयबे. माटे ते सर्वथा कतकत्य तो सिद्धज बे. एम कहेवुं जोइये. तथापि ज्ञानादिग्रणचतुष्टयनी विद्युद्धताने लीधे केवलीने देश कतकत्य कहेतां पण काई विरोध आवे नही. ॥ १ १२ ॥

नाणरस विसुद्वीए छापा एगंतउ ए संसुद्वो ॥

जम्हा नाएं उपपा उपपा नाएं तउपसं वा॥११३॥

व्याणः-- जो कहेशो के, आत्मा ज्ञानरूप ते. तेथी ज्ञाननी एकांत ग्रुधताने लीधे आत्मा पण एकांत ग्रुध याय ते. एम न कहेषुं. केमके, ज्ञान ते आत्म

85

रूपज होयने. केमके, आत्माविना ज्ञाननुं रहेवुं नथी. अने आत्मा जे ने ते ज्ञानस्वरूप पण होयने. ने तदन्यस्वरूप पण होयने ; ए हेतुथी केवली ज्ञानादिग्रणने स्वनावेकरी ग्रुद्ध पण ने. अने अव्याबाधादिग्रणना स्वनावे अ ग्रुद्ध पण ने. एम जाणवुं. ॥ ११३ ॥

एवं परमपत्तं नाणाइडवारगं मुणेड्यवं ॥

सबह परमणतं सिद्धाणं चेव संसिदं॥ १ १४॥ व्याणः-- एवी रीते केवजीने परमात्मापणुं ज्ञानादिकगुणेकरी देशयीज जाण वुं; सर्वथा परमात्मा ते सिद्धज कहेवाय. माटे आठ दोषना विरहथी आठ रुए तेनेज प्रगट थायढे. आत्मा त्रए प्रकारनो होयढे. एक बाह्यात्मा, बीजो अं तरात्मा, अने त्रीजो परमात्मा, आत्मबुदियकी जे कायादिकनुं यहण आयते, ते बाह्यात्मा कहिये. शरीरादिकनो अधिष्ठायक जे चेतन ते अंतरात्मा कहिये; अ ने जे सर्व उपाधिरहित ग्रुद आनंदमय होय ते परमात्मा कहिये. यतः "आ त्मधिया समुपात्तकायादिः कीत्त्र्यते अत्र बहिरात्मा कायादेशमधिष्ठायको नव त्यंतरात्मा तु चिद्रूपानंदमयो निःशेषोपाधिवर्जितः ग्रदः अप्रस्वक्तोनंतगुणः पर मात्माकीर्त्तितसदर्केरिति योगशास्त्रे. " केटलाएक एम कहेने के, जे मिष्याला दि परिणामवान होय ते बाह्यात्मा कहिये: जे सम्यक्तादि परिणामवान होय ते छंतरात्मा कहिये; छने जे केवल ज्ञाननिधान होय ते परमात्मा कहिये. मि च्यात्वादि त्रण गुणगणा सुधी बाह्यात्मा कहेवायने : अविरतिसम्यग्दृष्टिनाम ना चोथा गुएगगाथी लईने झीएमोद्दनामना बारमा गुएगएासुधी छंतरा त्मा कहेवायने: माटे मिष्यादृष्टिने पण निश्चयथी सम्यग्दर्शन तथा केवल ज्ञा न हे. ते शक्तिएकरी अंतरात्मता तथा परमात्मताने पामेहे. केमके, अविरति सम्यग्दृष्ट्यादिकने पण निश्चयची केवल ज्ञान हे. अने बाह्यात्मा ते नृतपूर्वनये करी कहेवायते. केमके. तेने मिथ्यादर्शन पर्याय पूर्वे थयाते. जेम मधुथी ज रेला घटमांची मधु कहाडी लीधा पढी पए मधुघट कहेवायढे. ते न्याय अहिं पण जाणवो. व्यक्तें परमात्माते बाह्यात्मा तथा छंतरात्मा पूर्वजूतनयथी कहेवाय वे. केमके, तेने मिथ्यादर्शन तथा सम्यक्टष्टघादि ए बन्ने पर्याय पूर्वे थयावे.॥१ १४ तस्स य सहावसिदा, किरिच्या गुण करण जोग छहिगिव ॥ कम्मुगुणी आविहवे, जुंजणकरणं तु अहिगिच्च ॥ १२५ ॥

च्प्रध्यात्ममतपरीक्ता.

व्याण- ते केवलीने गुएकरए आश्री खनावसिद किया होयते. तेने केव ली जानादि गुएपर्याय उपजतां आत्माथी अन्यकर्मादिकारएनी अपेक्ता नथी कालस्वनावादिके तेना कारणपणे सर्व आत्मांतरनूत हे. मनोवाकायरूप युंज ना कारण आश्रीने केवलीने कर्मोंपनीतकिया पण यायते. माटे ते अंग्रेकरी के वल खनावसिद्ध क्रियान नथी. ॥ १२५ ॥ ञ्चह सो सेलेसीए, जाणानलदडूसयलकम्ममलो॥ कणगंव सबह चिय, लश्वसहावो हवइ सिदो ॥ १ १ ह॥ व्याणः- हवे केवली जे हे ते, शैलेसी अवस्थानेविषे शुक्कध्यानरूप अभिएक री सर्वकर्मरूपमलने दग्ध करीने अग्निएकरी निर्मल किधेलां सुवर्एनी पर्व स र्वथा लब्धस्वनाव थईने सिद्धत्वपर्यायनों नजनार थायते. ॥ १ १६ ॥ तस्स वर नाण दंसण, वर सुह सम्मत चरण निच्च िई॥ खवगाहणा छणंता, मुत्ताणं यई छविरियं च ॥ १**२**७ ॥ व्याणः- झानावरणीयादिक आठकर्मथी जीवने छझानादिक दोष होयने ते नाज्ञ पाम्यापढी सिदने आ आठ गुए प्राप्त थायनेः-- पहेलो ज्ञानावरणीयकर्म ना क्त्ययी छनंत केवलकान उत्पन्न थायने : बीजो दर्शनावरणीयकर्मना क्त्य थी अनंत केवलदर्शन उत्पन्न थायते; त्रीजों वेदनीयकर्मना क्र्यथी क्रायिक स म्यक उत्पन्न थायने चोथो चारित्रमोइनीयकर्मना क्तयथी कायिक चारित्र उ त्पन्न थायते; पांचमो आयुःकर्मना ऋयथी अक्त्य स्थिति उत्पन्न थायते; त हो नामकर्म तथा गोत्रकर्म ए बन्नेनो क्तय थयाथी एक सिदावगाहक स्थाननेवि षे इरीरशर्करानी पते अनंत सिद्धावगाहना उत्पन्न थायते; अहीं मोहनीयकर्मना क्त्यची बे गुए उत्पन्न थायजे एम कह्युं, तथा नाम अने गोत्र ए बे कर्मना क्र्यथी एक ज गुए उत्पन्न थायने एम कह्युंने; ए तेकाणे स्वपरिनाषाज शरण ने. ॥१२९॥ थिरयावग्गहणाठ, पत्तेत्रं नामगोत्तकम्मखए॥ चरणंविद्य मोहखए, इछ छठ गुणति विंति परे ॥ १२०॥ व्याणः- केटलाएक मोइनीयकर्मना इत्यथी एकज चारित्रगुएमानेते, त था नामकर्मना ऋयची व्यात्मप्रदेशस्थिरतारूप गुए कहेने; तेमज गोत्रकर्मना

क्त्यथी अवगाहना गुएा मानेने ॥ १२७ ॥ अण्जे आचार्य सिद्धने चारित्र गु एा नथी मानता, ते सूत्रनुं अवलंबन करीने पूर्व पक्त करेने:--

नणु सिद्धांते सिद्धो, णो चारित्ती छ णो छचारित्ती ॥ जणिउ ववहारणया, णिइउ होई चारित्ती ॥ १२७॥

व्याणः "सिर्क णो चारिनी णो छाचारिनी" ए सूत्रनेविषे सिदने चारित्री नो छाचारित्री कह्योबे, एवुं वचन तो चारित्र न होय तो संनवे, जेम जव्यत्व न ही होवाधी जव्यत्वने ठेकाणे छाजव्यत्व कहेवायबे, तेम बतां सिद्धना गुणोमां चा रित्रनी गणना केम कीधीबे ? ॥१ १९॥ छा० कोईएक ए सूत्रनुं समाधान करेबेः

> नणु इह देसणिसेहे,णो सद्दो तेण तस्स देसस्स ॥ अबु णिसेहो किरिया,रूवस्स ण सत्तिरूवस्स ॥ १३०॥

व्या०:- " णो चारित्री णो छचारित्री '' ए वाक्यमांना " नो '' शब्दथी देश नो निषेध यायडे. एटले चारित्र बे प्रकारनुं होय डे, एक क्रियारूप ने बीजो परि णामरूप डे. तेओमानां क्रियारूपचारित्रनो सिदनेविषे निषेध डे ; परंतु शकिरूप चारित्रनो निषेध नथी ; एम जाणवुं. ॥ १३० ॥ छ० केवलीनेविषे क्रियारूप चा रित्र डे, परंतु शकिरूप चारित्र नथी एम कहेवुं नही ते कहेडे:-

जइ किरियारूवं चिछ, चारित्तं ऐव णायपरिणामो ॥ तो किरियारूवं चिछ, सम्मत्तं णायपरिणामो ॥ १३१॥

व्याण्- जे प्रेक्तोत्प्रेक्तादिक्रियाढे, ते चारित्र कहिये ; अने तडपयोगरूप चा रित्र ते नावचारित्र कहिये, नावचारित्र ज्ञानरूपज ढे. त्यारे निशंकताद्याचाररू प जे क्रिया ; तेज सम्यक्त कहिये, अने अदानपरिणाम ते ज्ञान कहिये, एम निर्णय करतां ज्ञान तथा दर्शननो जेद थाय नही, ज्यारे आत्मयुणरूप सम्यक्त ढे त्यारे चारित्र पण आत्मयुणरूप केम न कहिये ! अतएव मरुदेवादिकने बाह्याचा रविना पण चारित्र संजवेढे. ॥१३१॥ अण् " इड् जविए जंते, चरित्ते परजविए चरि चे, तडजयजविए चरित्ते गोयमा, इड् जविए चरित्ते; णो परजविए चरित्ते णो तडज यजविए चरित्ते " एवां जगवती सूत्रनां वचनोए करी चारित्र जवाननुगामी कद्युंढे. माटे मोक्टनेविषे चारित्र संजवे नही, एम जे कहेढे, तेवुं समाधान आवीरीते ढे:- च्प्रध्यात्ममतपरीका.

जं पुण तं इह जविछां, तं किरियारूपमेव ऐया ं ॥ छहवा जवो ए मुको, एो तम्मि जवे इछां छहवा ॥ १३२॥ व्याः- जे चारित्र इह जविक कखुंढे, ते कियारूप जाएावुं ; छने बीछं जे मो इनीयकर्मना ह्रयथी उत्पन्न थायढे ते चारित्र मोइन्नेविषे होयढे, तेनी अमे प ए ना कहेता नथी, छथवा मोइना जवमां विवद्दा करी नथी माटे इह जविक चारित्र कखुंढे, छथवा मोइन्नेविषे चारित्र तो ढे, परंतु कर्मनिर्जरारूप प्रयोजन तिहां नथी, तेथीज इह जविक कखुंढे ॥ १३२॥

णय मोकसुहे लंधे, तयणुठाणस्स हंदि वेफल्लं॥

तकारणस्स इंहरा, नाणस्स वि होइ वेफल्लं॥ १३३॥

व्याण चारित्रनुं फल मोक जे, ते पाम्या पढी चारित्र रहेतुं नथी. एम कहेतुं नही. अन्यथा ज्ञाननुं फल विरति जे, ते पाम्या पढी चारित्र रहेतुं नथी; एम कहेतुं न ही; अन्यथा ज्ञाननुं फल विरति जे, ते पाम्या पढी ज्ञानपण संजवे नही. ज्यारे सिदने ज्ञाननुं फल निश्चयथी लोकालोकप्रकाशरूप जे; त्यारे चारित्रनुं फल पण निश्चयथी द्यदात्मस्वजावानुजवलक्षण शासारू न होय. ॥ १३३ ॥

णेव पइसाजंगो, अहियावहि पूरणंमि चरणस्स ॥

सावा किरियारूवे, सुझकरणे जं करेमिति ॥ १३४॥

व्या० सिंदने जो चारित्र मानिये तो यावकीवतानी प्रतिज्ञानो जंग थहो. ए म पए न कहेवुं. केमके, ओढा काखे प्रतिज्ञानो जंग थाय ढे; पए अधिक का खे प्रतिज्ञानो जंग न थाय. अथवा ते प्रतिज्ञा क्रियारूपचारित्रनीयज जाएवी. केमके, " करेमि जंते " एसूत्र श्रुतकरएार्थ कद्युंढे. ते श्रुतकरएा युंजनाकरण रूप चारित्रज अवलंबीने प्रवर्त्ते ढे. गुएरूप चारित्र ते आत्मस्वरूप ढे. मोदवि रहथी तेनो आविर्जीव मात्र थायढे. ॥ १३४ ॥

अह चरण मनुहाणं, तं ए सरीरं विएति जइ बुदी ॥ तेए विएा नाणाई, ता तस्स हेऊछं पत्तं ॥ १३५ ॥

व्या० जो चारित्र छनुष्टानरूपते, ते शरीरविना सिद्धनेविषे संजवे नही. एम जो कहिये तो शरीरविना झानादिक पण सिद्धनेविषे केम संजवे ! पूर्वावस्थामां शरी रथी उत्पन्न थएला झानादिकना नाशना कारणविना सिद्धने घ्रुव कहियेंते. ॥१३५॥

ञ्रध्यात्ममतपरीक्ताः

किरिया फलवेदयिगी, खइछं चरणं वि दोह्र मह जेवे॥ सातेण बश्चचरणं, बश्चंतरियं तु परिणामा ॥ १३६ ॥

व्या० बीज़ूं किया जे ते शरीरनामकर्मना उदयथी छे; शरीरविना किया था य नहीं. शरीरवर्भ चारित्ररूप किया थायजे ते बाह्यचारित्र कहेवायजे. एवा बाह्यचारित्ररूप ग्रुद्ध जनसमाचारीरूप कियानुं सेवन करीने अजव्य जीव पण न वमां मैवयकसुधी जायजे, एवो बाह्य चारित्रनो महिमाजे. अने केवलीने तो का यिक चारित्र कह्युंजे. माटे ते बाह्यचारित्र कहेवाय नही; किंतु ते ग्रुद्ध आत्मप रिणामरूप होवाथी ए अंतरंग चारित्रज कहेवाय ॥ १३६ ॥

ञाया खलु सामाइय, आया सामाइ अस्स अठोति ॥

तेणेव इमं सुत्तं, जासइ तं च्यायपरिणामं ॥ १३७ ॥ व्या० " आया सामाईए आया सामाइयस्स छहे " ए सूत्र पण चारित्रने

खात्मपरिणामरूपज कहेने. परंतु बाह्यक्रियारूप नथी कहेता ॥ १३७ ॥

णय खइझं विचरित्तं, जोगिणिरोहेण तं विलयमेई ॥

ञ्प्रसह विहलं पत्तो, विरहो चारित्तमोहस्स ॥ १३८ ॥

व्या० केवलीने जे कायिक चारित्र उत्पन्न थाय छे, ते ज्यारे योगनो निरोध करी ने मोक्तनेविषे गमन करेछे, तेना प्रथमसमयमां नाश थाय छे. एम कहेवुं नही. केमके, कायिकजावनो नाश यतोज नथी जो एम न मानिये छने कायिकजा वनो नाश मानिये तो चारित्रमोह्नीयकर्मनो नाश कहेवाशे नही. तेम छतां बलेकरी नाश छांगीकार करद्युं तो पण ते निरर्थक थशे. केमके, चारित्रमोह्नी यकर्मना नाशथी क्वायिक जावतो उत्पन्न थयोनही त्यारे ए नाशपणुं द्युं काम तुं? जेम ज्ञानावरणीयकर्मना नाशतुं फल केवल ज्ञान छे; तेम चारित्रमोह्नी कर्मना नाशतुं फल ययाख्यात चारित्र छे ते जो सिद्रनेविषे न होय, तो मोह नीयनो नाश निष्फल कहेवाशे ॥ १३० ॥

तेणं सुहुवउंगे, चरणं नाणाउ दंसणं वन्नं ॥

कारणकजविजागा, संतंतमिय किं न सिद्रेसु॥१३१॥

व्याण ते कारण माटे इद्योपयोगरूप चारित्र यद्यपि उपयोगरूपताझानथी अन्यथा बे, तथापि तेओमां कारणकार्यजावजेद बे. झान चारित्रनुं कारण ते, तेम चारित्र ज्ञाननुं कारण ते; जेम सम्यक्त तथा ज्ञानना विषयोमां जेद न थी, अर्थात् बन्नेनो एकज विषय ते, तथापि तत्वरोचकरूप ते ज्ञान कहेवायते, तथा तत्वरुचिरूप ते सम्यक्त कहेवायते. एवो बन्नेनो जेद ते. तेम ज्ञान अने चारित्रनो पण जेद जाणवो. तेमज ज्ञानावरणीयादिक कर्मोनो जेद पण संजवे ते. एवी रीते ज्ञानथी अन्य चारित्र उपयोगरूपने ज्ञानथी अनन्य अनेकांतस्वरू प सिद्धनेविषे केम न थाय. ॥ १३७ ॥ अ० ए प्रमाणे सिद्धनेविषे चारित्रनी स मर्थना करी, ते उपर सिद्धांतपद्यने आवलंबीने पूर्वपद्वी समाधान करेते.

एड समाहाणविही, जो मूलगुणेसुं हुज थिरजावे ॥

सो परिणामा किरिच्या, जुंजणकरणं पडिइंतो ॥ १४० ॥

व्याण मूलगुणनेविषे जे स्थिर नावरूप ढे, तेज चारित्र क्रियारूप कहेतुं. के मके, ते मनोवाकाययोगरूप युंजनाकरणनी अपेक्ता करेढे. कोई पूढे के, एम कह्याथी वीर्थरूप चारित्र थाय. ते संजवे नही. जेम झानाचारादिकथी झाना दिक अन्य ढे, तेम चारित्राचारथी चारित्र पण अन्यज संजवे. तेने एम कहेतुं के, जो एम कहिये तो वीर्याचारथी वर्षि पण कां अन्य न कहिये! जो कहेशो के, योगरूप चारित्र होय तो ते उपशमिक नावे केम थाय! केमके' योग ते नामकर्मना उदयिकनावे वर्त्तेढे. उपशमिक नाव तो मोहविना अन्य कर्मनो था यज नही. एम पण न कहेतुं, केमके, योगपरिणामविशेष पण चारित्रमोह नीयकर्मना उपशमादिकनी नियमेंकरी अपेक्ता करेढे ते उपशमादिक जावेज कहिये, केमके, प्रधाननी अपेक्ताए व्यवहार होयढे. अतएव इंड्यिपर्याप्ति उ दय जघन्य पण इंड्यिप्रधाननी अपेक्ताए शास्त्रमां क्तायोपशामिक कहेवायढे.॥१४०

उप्रसह वक्तजडाणं, चंमाणं चंमरुद्दपनईणं ॥

वेणसिया चारितं, सुहुवउंगोति काऊणं॥ १४१॥

व्याण जो योगस्थैर्थरूप चारित्र न कहिये, अने ग्रुद्धोपयोगरूप चारित्र क हिये, तो वक्र जमने चारित्र केम संजवे ? केमके, तेने तथाविध माया ते अ ग्रुनोपयोगरूप ते. अने ते तो ? ग्रुद्धोपयोगनो जेद ते, तथा क्रोधमोहनीयक मना परवझे जे चंमरुड्राचार्यादिक सहजे कोपनशील ? ते, तेने पण चारित्र केम संजवे ? केमके, तेने पण अग्रुनोपयोग ते. मूलग्रुणनेविषे योगस्थैर्य ते तेने पण संजवे. जेम वज्र अग्निएकरी ऊल याय, तो पण वज्रपणुं मूके नही. जे

<u>3</u>23

म यथाविध कषायथी अस्थिरता पण कषायपरिणति प्रमादरूप तेने थयो, तो पण योगस्थैर्यनो घात थाय नही. जो योगक्रियारूप चारित्र कहिये तो ते मरुदे बादिकने केम संजवे ? एवो संदेह पण न करवो. केमके, मरुदेवादिकने पण संसारनिवृत्तिरूप मनोयोगपरिणतियुक्त डे. उक्तंच. "जगवदद्यीनानंद, योगस्थै र्यमुपेयुषी;केवलङ्गानमम्लान, माससाद तथैव सा." इति योगशास्त्र वृत्तौ ॥ १४ १॥

चरणं जइ उवर्रगो, जिएाएा ता हुंति तिन्नि उवर्रगो ॥

दोसु छ छंतझावे, तं तिछरस पर्कणणा मोहा ॥१४१॥

व्याण जो ग्रुद्धोपयोगरूप चारित्र कहिये, तो केवलीने आ त्रण उपयोग हो या जोइये. झानोपयोग, दर्शनोपयोग, तथा चारित्रोपयोग. इम सामान्यथी प ए तेर उपयोग थवा जोइये. अने शास्त्रोनेविष तो बार उपयोग कह्यां. का म तथा दर्शनमांज चारित्र जेलिये तो त्रीज्ञं कयुं चारित्र कहीशुं. जे कहिये ते प्रयासमात्र थाय. जो साकारोपयोग चारित्र जेलिए तो साकारोपयोगना आत जेव पए संजवे. उपयोगरूप चारित्र मान्याथी इत्यादिक अनेक दूषएा थाय.॥१४श॥ उण्जो वीर्यरूप चारित्र कहिये तो पएा शैलेशी अवस्थानेविषे ते केम संजवे! केमके, ते समयनेविषे प्रवृत्तिरूप वीर्य नथी. एम जे कहेत्रे, तेतुं समाधान करेत्रे. सेलेसीए जत्तो, एावित्तिरूवो सचेव धिरजावो ॥

एय सो सिद्धाएं पिय, जं तेसिं वीरिड्यं एत्रि ॥ १४३ ॥

व्याण शैलेशी अवस्थाने विषे ययपि रूप यत्न नथी, तथापि योगनिरोधथी नि वृत्तिरूप यत्न जेज, तेज परम स्थिरनावरूप चारित्र जे, ते स्थिरनाव सिदने नथी, केमके तेनो वीर्य नथी, माटे चारित्रने दानादिक पांच लब्धिए क्लायिक ना व सादिसांत कह्याजे, तथा सूत्रमां पण सिद्ध अवीर्य कह्याजे. ॥ १४३ ॥

उ० जो चारित्र कियारूप कहिये, तो अक्रिया मोक्कारण कही केम संजवे? यतः "साणं जंते अकिरिआ किं फला; गोयमा, सिद्धगमणपद्भवसाणफला पन्नना" एदवुं जे कहेने, तेनुं समाधान करेनेः--

अंते अ अंतकिरिआ, सैलेसी अकिरियति एग६ा ॥

नाएकिरिआहि मोको, एतो चिछ जुजए एवं ॥१४४॥ व्या० श्रंतकिया, शैक्षेशी तथा अक्रिया ए सर्व शब्द एकार्थक कह्या डे. अंत किया एटके सकलकर्मध्वंसरूप ढेलुं प्रयोजन; जेथी कोई अन्य किया बाकी रहे नही ते ; शैलेश एटले मेरुपर्वत, तेनी पते जे निश्वल अवस्था ते शैलेशी कहेवाय; अने जे अवस्थानेविषे प्रवृत्तिरूपक्रिया न होय ते अक्रिया कहेवायते अतएव "ज्ञानक्रियाऱ्यां मोद्दः" ए वचन युक्त ते. केमके, सर्व संवररूपक्रिया अक्रिया रूपज ते. ॥ १४४ ॥ उ० कोइ आशंका करेते.

नणु जोग निरोहेणं, चारित्तं सासयं परं होऊ ॥

उप्रसह तेण ण मोको, उप्रव काले उप्रसंतेणं ॥ १४५ ॥

व्या० परमार्थतायी चारित्रनों प्रतिपद्दी यद्यपि चारित्रमोहनीयकर्म छे, तथा पि जेम चोरनी साथे रहेनारो छचोर पण कर्मांकित थायछे, तेम मोहना सहचा रथी योग पण चारित्रना विरोधी छे. माटे योगना निरोधेकरी परम यथाख्यातचा रित्र शैलेशीने चरमसमये ऊपजे ते शाश्वतचारित्र सिद्धने पण होयछे. जो ते चा रित्र ते समयनेविषे उत्पन्न थईने छागल मोद्द थवाना समये नाश पामतुं होय तो ते उत्पन्न थवानुं प्रयोजन छुं? तथा जो कार्यना समये कारण न होय तो कार्यनी उत्पत्तिपण केम थाय? ॥ १४५ ॥

केई बिंति मुणीणं, सहावसमवडिई हवे चरणं॥

तं लदसहावाणं, सिद्धाणं सासयं जुनं ॥ १४६ ॥

व्या० केटलाएक कहेने के, पूर्वोक्त दोषने लीधे ग्रुद्धोपयोगरूप चारित्र थाय नहीं. सनावसमवस्थानरूप चारित्र होयने. ते आत्मस्वनाव अविरत्यादि दशा ए आहादन करी लीधु ने. ज्यारे चारित्रमोहनीयकर्मनो विलय थायने, त्यारे ते आत्मस्वनाव प्रगटेने. ते लब्धस्वनाव सिद्धने शाश्वतरूप चारित्र युक्त ने. ॥रधद॥ उ० ए कहेला परमतनुं समाधान करेने:--

चरणरिठणो ए जोगा, अज्ञसमाएए सबसंवरणं ॥

सिंदे तम्मि सहावे, समवघाणंति सिदंतो ॥ १४९ ॥

व्या० जो एम कहिये के, योगचारित्रना विरोधी हे, तेथी योगनो निरोध कछा थकी परम चारित्र ऊपजे हे. ए कहेवुं योग्य नथी। केमके जो सहचारथी योग चारित्रना विरोधी थाय; तो दर्शनना पण विरोधी थवा जोये तेम तो न कहेवा य. ज्यारे शैलेशी ्वर्यानेविषे सर्व संवर कहेवाय हे, त्यारे तेज समयनेविषे सकल कर्मनिर्जरा कारण चारित्र हे, एवा अजिप्राये स्वजावसमवस्थानरूप चारित्र पणसि इने कहेवुं जोये। के जो योगपरिणामधीजिन्नस्वजाववान चारित्र सिद्धोय आर ४ ॥।

उजुसुएण मएणं, सेलेसीचरमसमय जाविति छंतसमउ चिय जहो, हेऊ हेऊरस कजम्मि ॥ १४७ ॥ व्या० एम जे कह्युंबे के, शैलेसीना बेला समयनेविषे चारित्र उपजेबे, ते क्जु सूत्रनयनामते क्रणपर्याय जंग्ररबे. तथा कारणनो श्रंत्यसमयज कार्यनो देतु बे. ए अनिप्रायेकरी मोहना क्ययीज सादिसांत क्लायिकनावरूप बीजुं चारित्र उ पजे हे. ॥ १४७ ॥ णय चरणमोहबंधो, सिदाणं छ चरणाण संताणं॥ उप्रविरय पत्रइंग सो उप्रइपसंगो हवे इहरा ॥ १४७ ॥ व्या० सिदने चारित्र नही होय तो तेने चारित्रमोहनीयकर्मनो बंध खवो जोये; माटे एम न केहेवुं केमके विरति अने अविरति ए बे स्वतंत्र परिणाम जे.॥१४७॥ जंच जिच्छलरकणं ते उवइं तज्ञ लरकणं लिंगं ॥ तेण विणा सो जुज्जइ धूमेण विणा ढुआ सुव ॥ १५० ॥ व्या० "नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा; वीरिश्चं उवर्जगो य, एयं जीख्रस्स लस्कर्णं " एवीरीते श्रीवत्तराध्ययनसूत्रनी गांथाएकरी जीवनुं लक्त्ए चा रित्र कह्यं हे. माटे ते सिदने पण होवुं जोये. एम कहेवुं नही. केमके चारित्र जे हे ते उपयोगनी पहे यावत् इव्यनावि लक्षण नथी. आंही लक्षणशब्दनो अ र्थ लिंग जाएवो. जेम धूम अग्निनो लिंग हे. तेम चारित्र जीवनो लिंग कहांहे. जेम धूमविना अग्नि तप्त लोइनेविषे होयने, तेम चारित्रविना जीवपण होयने, एमां कोई विरोध नथी, अतएव अंतरंग लक्त्ण कहीने बाह्य लक्ष्ण कहेवाने अ र्थे उपर कहेली गाथा उत्तराध्ययनबूह इत्तिनेविषे अवतरण करेली हे. ॥ १५० ॥ णय णिज्जयरुस नाणे अजेयवित्ती कहं चरणविरहे॥ संतं चिच्र पनिवज्जइ फलेएा जं सोय संतं वि ॥ १७१ ॥ व्या० जो सिक्तनेविषे चारित्र न होय तो झानमां चारित्रनी छनेद वृत्ति केम संनवे ? केमके, सकलादेशे डतांज सर्व धर्म एक धर्मवाचक शब्दे बोले एवी आ शंका पण न करवी, केमके, ते समयमां चारित्र नथी तो पण चारित्रनुं फल के माटे चारित्र ने एम मनायने, ए नयना मते चारित्रना फलविना नतें चारित्र प ण छात्तुं माने. ॥ १५१ ॥

330

www.jainelibrary.org

अध्यालमतपरीकाः

एवि आयाचरणं चिआ आया सामाइयंति वयणेणं ॥ द्वियाया जयणाए चरणाया सवधोकुत्ति ॥ १७२ ॥ व्या॰ "आया समाईए, आया सामाईअस्स अर्हे" ए सूत्रनेविषे आत्मपर्यायरू प जे चारित्रजे, ते इव्यार्थिक नयना आदेशे आत्मरूप कद्युंजे, माटे ते चारित्र यावत् इव्यजावी आत्मस्वजावरूप न जाणवुं केमके, इव्यात्मा, ते जजनाए चा रित्रात्मा कद्युंजे, तथाहि " जस्स दविआया तस्स चरिताया जयणाएत्ति " एवी रीते जगवतीसूत्रमां कद्युंजे, तथा आत्माना जे आठ जेद कह्या जे, तेत्रोमां चा रित्रात्माने सर्वस्तोक कद्युंजे, माटे आत्मा तेज चारित्र एम न कहेवुं ॥ १५२ ॥

एतो चिय सिश्वाणं, खइअम्मि नाणदंसणगाहणं॥

सम्मत्तजाइगहणं, बहूण दोसा ण संकंती॥१५३॥

व्याण् वली सिखनेविषे चारित्र नेथी, ते माटेज सिखने क्लाइकनावमां ज्ञान तथा दर्शन ए बेज कह्यांजे. जो कोई कहेरो के, सम्यक्तसमान चारित्रजे. तेथी सम्यक्तना यह एथी चारित्रनुं पण यहण थायजे. एम कहेवुं नही. केमके, ग्रुद्दोपयोगरूप चारित्रनो पूर्वेज निषेध कस्तोजे. ज्यने योगस्थैर्यरूप तेहनीज व्यवस्थापना करीजे ॥ १५३ ॥

अम्हं णाजिणिवेसा, सिद्धाणं अ चरणस्स पर्काम्म॥

तह वि जणिमो रतीरइ, जं जिणमयमन्न हाकाउं ॥१५४॥

व्या० सिंदने चारित्र नथी, ए पक्तमां यद्यपि अमने अजिनिवेश नथी, तथा पि आटलुं व्यवस्थापन आटलासारू करिये छैये के, श्रीवीतरागनां वचन अन्यथा न थाय॥ १ ५४॥ अ० एवी रीते सिद्दने चारित्र नथी, एवी समर्थना करी, त्यारे सिद्दना गुणोमां चारित्रनी गणना केम करीबे? एवा पूर्वपक्त्वुं समाधान करेबे:-

जइवि जइमो सिदंतो, इहं केसिंवि तहवि सूरीएं ॥

सिदाणं चारित्तं, तेसिमए तं मए मिहिड्यं ॥ १५५ ॥

व्या० यद्यपि सिदने चारित्र नथी; एवो सिदांत छे, तथापि केटलाएक आचा यों चारित्र मानेछे, यतः "अन्येतु दानादिलव्धिपंचकं चारित्रं च सिदस्यापीछंति, तदाचरणस्य तत्राप्यनावात्, आचरणानावेपि च तदऽसत्वे झीणमोहादि ब्वपि तद सत्व प्रसंगात्॥ततत्तन्मते नचारित्रनावनां सिद्धावस्थायामपि सझावेनापर्यवसि तत्वादकस्मिन् दितीयन्तंग एव झायिको नावो न इोषेषु त्रिब्वपि" इति विद्योषावइयक टीकायां '' ए आचार्यना मतेकरी अमे सिदना गुणोमां चारित्रनी गणना करीते. ए मत जे ते पूर्वमतथी बिरुद ते माटे अप्रमाणजते. एम कहेवुं नही. केमके, अविज्ञिन्नपरंपराए आवेलां जे ए बे मत, ते अनतिशय पुरुषयकी निवारण थाय नही. जो कहेशो के, एक एकनी युक्तिनी समर्थना करतां प्रत्येकमां दोष आवशे, एवो विचार पण न करवो. केमके, जिनवचनऊपर अरुचि थयाविना सम्यक्तनो चंश यतो नथी. ॥ १ ५५ ॥

तेसिं सवा किरिज्या, सहावसिदा पणड कम्माणं॥

बह्लंपि कारगाणं, एगठेनं समावेसो ॥ १५६॥

व्या॰ ते सिद्धने सर्व किया खनावसिद्ध ढे, एक पए विनाव कियानथी के मके, कर्मरहित सिद्धने ढ कारक एक अर्थे विश्रांति पामेढे. ते कहेडे:- कथंचित कानथी अन्यथा अत्माइप्तिक्रिया खतंत्रपऐ करेडे. माटे आत्मा जे ढे तेज कत्ती ढे, ए पहेलुं कर्त्तानामा कारक इप्तिक्रिया खतंत्र आत्मानेविषे प्राप्यमाए ढे, मा टे तेज आत्मरूप कर्म ढे; ए बीछुं कर्मनामा कारक जेऐो करीने झानखनावथी तथा इप्तिखनावे आत्मा क्रिया करे ढे, तेज आत्मरूप करए होवाथी आत्माज कत्ती ढे एम जाएवुं. ए त्रीछुं करएनामा कारक जे खानुफलवेचने अर्थे आ तथा इप्तिक्रिया करेढे, तेज आत्मरूप संप्रदान ढे; ए चोधुं संप्रदाननामा कार क जे पूर्वझेयाकारने विश्लेषे उत्तरक्षेयाकारमिश्रित झानखनाव आत्मा जोढे, तेज आत्मखनावरूप अपादान ढे. ए पांचमुं अपादाननामा कारक तथा जे झा नरूपछएवुं नाजन जे आत्मानामे इव्य तेज आधार ढे एम जाएवुं; ए ढघुं आधारनामा कारक कह्युं ए झान आश्री ढ कारक कह्या, एमज सर्व बीजा धर्मो आश्री जाणी लेवुं. ॥ ५५६ ॥

ते पुण पनरस जेञ्जा, तिज्ञातिज्ञाय सिद्रजेएणं॥

तन्न इष्टीणं सिदिं, ए खमइ खवणो च्यनिणिवेसी॥ १५७॥

व्या० ते सिद्धना पंदर जेद कह्याने, यतः तीर्थसिद, अतीर्थसिद, तीर्थंकर सिद्ध, अतीर्थंकरसिद, स्वयंबुद्धिसिद, प्रत्येकबुद्धिसिद, बुद्ध्वोधितसिद, स्वीलिंग सिद्ध, पुरुषलिंगसिद्ध, नपुंसकलिंगसिद्ध, स्वलिंगसिद्ध, अन्यलिंगसिद्ध, गृह्लिंगसि द, एकसिद्ध, तथा अनेकसिद्ध, हवे एनो अर्थ करेने तीर्थ एटले जे चतुर्विध संघ, अथवा प्रथम गएधर जत्पन्न थया पती जे सिद्ध थया ते तीर्थसिद्ध; तीर्थनी जत्प

३३२

त्ति चया पहेला अथवा तीर्थनो विनेद थया पनी जे सिद थया ते अतीर्थसिद, तीर्धकरपदवी जोगवीने जे सिद खया ते तीर्थंकरसिद; सामान्य केवली ढतां जे सिद चया ते अतीर्थकरसिद, बाह्य कारण दीवाविना जे पोतेज जातिस्मरणा दिकथी प्रतिबोध पामीने सिद थया ते खयंबुदिसिद; प्रत्येक बाह्य कारण वृ षनादि देखी प्रतिबोध पामीने जे सिद्ध खयाने ते प्रत्येकबुदिसिद, बुद्धजे गुर्वादिकचकी बोध पामीने सिद चया ते बुद्वोधितसिद, स्त्रीलिंगना त्रण प्रकार हे. वेद, शरीरनिवृत्ति, तथा पथ्य, ए त्रणमां अत्रे शरीरनिवृत्तिनो अधि कार लेवो. वेद तथा पथ्यनो अधिकार नथी. केमके, ए बे प्रकार मोक्तना अंग नथी माटे शरीरेकरी वर्त्तमान ढतां जे सिद्ध थया ते स्त्रीलिंगसिद्ध : पुरुष शरीरे करी वर्त्तमान बतां जे सिद्ध यया ते पुरुषलिंगसिदः नपुंसकलिंगे करी वर्त्तमान वतां जे सिद थया ते नपुंसकलिंगसिद; रजोहरणादिकस्वलिंगनेविषे व्यवस्थि त बतां जे सिद यया ते खलिंगसिद ; परिव्राजकादिक चार अन्यलिंगनेविषे जे सिद यया ते परलिंगसिद ; गृहस्थलिंगनेविषे वर्त्तमान उतां जे सिद थया ते गृ हस्यलिंगसिद ; जे एकला सिद्ध थया ते एकसिद ; अने जे अनेकनी साथे सिद याय ते अनेकसिद कहेवायले. ए पंदर चेदमांना स्वीलिंगसिदने अनिनिवेशने वश थया थका दिगंबरीत्रो मानता नथी. ॥ १५७ ॥

तस्सम्मययीसिदा, जे पुविं चेव खीणयीवेच्या ॥ एवं पुरिस णपुंसा, यी पकाएण णो सिदी ॥१५० ॥ चरणविरहेण हीण, त्रणेण पाव पयडीण बाहुद्वा ॥

मणपगरिसविरहार्ड, संघयणाजावर्ड चेव ॥ १५७॥ व्या॰ ते दिगंबरीओनुं आवुं मत ढे के, स्वीलिंगसिद तो कहिये के जो पूर्वे स्वीवेदनो क्र्य करी आने पढी बन्ने वेदनो क्र्य करी सिद चतां होय; तेमज न पुंसकसिद पण तो मानिये के जो प्रयम नपुंसकवेदनो तथा पढी बन्ने वेदनो क्र्य करी सिद चता होय; शरीरे करितो पुरुषज सिद चायढे; परंतु स्वीना प र्याये करी सिदताने पमातुं नची. केमके स्वीने चारित्र होतुं नची. चारित्र जे ढे ते इ्यदोपयोगरूप आचेलक्यमूलगुणमयढे; अने स्वीतो अचेलक चायज नही. त चा पुरुष चकी स्वीहीन होवाची पण तेने सिदतानो संजव नची. नपुंसकल तथा स्वील महापापे करीने अर्जायढे, एम पापप्रछतिनी बाहुव्यताने जीधे पण स्वीने मुक्ति थाय नही. तथा जेम स्त्रीने सातमी नरक प्रथवीए जवायोग्य तीव्र अग्रुज म नपरिएाम थता नथी; तेम मुक्ति पामवायोग्य तीव्र ग्रुजमनपरिएाम पए स्त्रीने थता नथी. माटे स्त्री सिद्ध थायज नहीं. अने सातमी नरकप्टथ्विए स्त्रीथी जवातुं नथी, माटे तेने वज्ज्ञक्तपजनाराच संघयए नहीं होवाथी पए स्त्रीने मुक्तिनो संजव नथी. ॥ १५० ॥ १५९ ॥

एवी दिगंबरीओनी युक्तिने ग्रंथकर्त्ता दूषण दियेेेंडेः--

तमिन्ना वेयखन, सरीरणिवति णियमणियनति ॥

चरणविरहाइआ पुण, सबे तुह होइओ सिदा॥ १६०॥

व्या० दिगंबरीओ स्वीसिदादिकना प्रसिद्ध अर्थने मूकीने जे अन्य अर्थ करेने ते संनवित नथी. केमके, जेने स्वीवेदादिकनो पूर्वेज इत्य ने, एवा नपुंसकादिक शरीरेकरी वर्त्ततां अणी करे तेनेविषे ने, माटे "वीसणपुंसगवेया " इत्यादिक स्व शास्त्रवचन समर्थवाने अर्थे ए कल्पना केवल कदायदरूप जणायने; जो एम कहिये के, उदीर्णा वेदनोज पूर्वे इत्य करवो तो तेनेविषे पण शास्त्रोक व्यवस्या संनवे नही. शास्त्रोमां तो एम कह्युने के, जो पुरुष श्रेणिनो आरंज करे तो तेणे पूर्वे नपुंसकवेदनो इत्य करवो, पन्नी स्वीवेदनो, पन्नी दास्यादिक न प्ररुत्तिनो, अने पत्नी पुरुषवेदना त्रण खंम करी तेमांना वे खंमनो एकवार इत्य करवो, अ ने त्रीजो खंम संज्वलन क्रोध मान खपाववो. जो स्वीए इत्पकश्रेणिनो आरंज कर वो होय तो तेणे पूर्वे नपुंसक वेदनो इत्य करवो, पत्नी पुरुष वेदनो, पन्नी दास्यादि क त्र प्ररुतिनो अने नेवट स्वीवेदनो इत्य करवो जोये. अने जो नपुंसके इत्पक श्रेणीनो आरंज करवो दोय तो तेणे पूर्वे स्वीवेदनो इत्य करवो, पत्नी पुरुषवेदनो म जी होस्यादिक ज प्ररुत्तिनो, अने सरसेवटे नपुंसकवेदनो इत्य करवो जोये इत्यादिक रीति जाणी खेवी. ॥ १६०॥

ञ० स्वीलिंगे सिद थवातुं नथी, तेमां चारित्रविरहादिक जे हेतु कह्याबे, ते असिदबे, एम कहेबे:--

णेगंति यमिचीणं, इध्तं संजमो चिया लजा ॥

तासिं चरित्तविरहे, चाठवस्रो कहं संघो॥ १६१॥

व्या० स्त्रीने चारित्र न होय तेमां कारण ग्रुं हे ? स्त्रीनेविषे जे डःशीलादिक दोष होयहे ते एकांत नथी ; केमके, परमशीलवान जे सुशीलसादिक श्राविकार्ड थईहे ते च्प्रथ्यालमतपरीहा.

उनी नगवंते पोते प्रशंसा करीडे. वल। स्त्री जेम केटलाएक पुरुष इष्टडे तेम पए महारंन महापरिग्रही देखायडे, माटे स्त्रीनुं इष्टल कांई एकांते नथी. जो कहेशो के, स्त्रीने लझा मटती नथी, माटे चारित्र थाय नही; एम पए न कहेतुं; केमके, नग्नताज चारित्रांग नथी, विधिए करीने धर्मोंपकरएोनुं धारए करतां चारित्रनो जंग यतो नथी. जो कहेशो के, स्त्रीनुं शरीर हिंसायतन डे, माटे तेने हिंसा नथी; एक हेवुं पए असन्यपएानुं डे. केमके, अशक्यपरिहारस्थलनेविषे हिंसा थाय नही. प्रमा दना योगे हिंसा थाय डे, प्रमादनुं जे व्यपरोपए तेज हिंसा कहिये. वली जो स्त्रीने चारित्र न मानिये तो चार प्रकारनो संघ केम संजवे? जो वेषधारिएी श्रा विकाज साध्वी कहिये तो चारित्र जाएयाविना जे वेषधारए करतुं ए तो मोटी विटंबना कहेवाय! जो कहेशो के, चारित्रलेश स्त्रीने थाय डे, तो तेमां अमे प ए ना कहेता नथी, पए जो कहेशो के, स्त्रीने चारित्र मोहनुं कारए थाय नही तो ते कदाग्रह मात्र जाएवुं. केमके, अध्यवसायविशेषेकरी पुरुषनी पठे स्त्रीने पए चारित्रनो उत्कर्ष होयडे; एमां कांई विरोधता नथी. ॥ १६१॥

> हीणत्तं पुण मार्णं, लदिनइहिं बलं च अहिगिच ॥ णो पडिकूलमसिदं, तिरियणसारम्मि संतम्मि ॥ १६२ ॥

व्या॰ स्तीने जे पुरुषयी हीनपणुं कह्युंने, ते जो विशिष्ट पूर्वझाननी अपेक्ता ए कहिये तो ते प्रतिकूज नथी, किंतु अनुकूजज ने केमके, तथाविध झानविना पण गुरुपरतंत्रताए मापनुषादिक चारित्रना पालणार थयाने जो लब्धिनी अपे इगए कहिये तो पण प्रतिकूज नथी, किंतु अनुकूजज ने, केमके, तथाविध लब्धि विना पण मानुष्यादिक रुतरुख थयाने ; जो क्रिनी अपेक्ताए कहिये तो पण प्रतिकूल नथी किंतु अनुकूजज ने. अन्यथा तीर्थकरादिकनी अपेक्ताए अप्रहिंक गणधरादिक ने, तेने मुक्तिनो संनव केम थाय ? स्त्री पुरुषने अवंद्य ने, माटे ते चारित्र क्रिए करी हीन होवी जोये, एवी आहांका पण न करवी, अन्यथा शि ष्यादिक आचार्यादिकने अवंद्य ने, तेपण चारित्रक्त्विए करी हीन होवा जोये, जो बलनी अपेक्ता कहिये तो तेपण प्रतिकूल नथी, किंतु अनुकूलज ने, केमके, स्त्री करतां निर्वल जे पंगुप्रमुख ते पण अध्यवसायविशेषे मुक्ति पामेने, जो कहेशो के, हीनबलने विशिष्टादिरूप चारित्र केम थाय ! एमपण न कहेवुं, केमके, चारि त्र ते यथाशक्ति आचरणारूप ने ; माटे ते स्त्रीने पण संनवे ने, उक्तंच "वादिवि कुर्वणलादिलब्धिविरहे श्रुते कनीयसि च जिनकल्पमनःपर्ययविरहेपि न सिद विरहोस्ती " एणेकरी अनुपस्थाप्यपाराचिंतक प्रायचित्तना अनुपदेशथी स्त्रीने प ण हीनपणुंजे, ए असंबद जाणवुं, केमके, योग्यतानी अपेक्षाए शास्त्रनेविषे वि चित्रतपनो उपदेश जे. उक्तंच " संवरनिर्जरारूपो बहुप्रकारस्तपोविधिशास्त्रे योगचिकित्साविधिरिव कंस्यापि कथंचिडपकारीति " ॥ १६२॥

पावाणं पयडीणं श्रीणिवत्तीइ बंधजणणीणं ॥

सम्मत्तेणेव पए णो तासिं पावबढुलतं ॥ १६३ ॥

व्या० स्त्रीने जे पापनी बाहुव्यता कहीने, ते वचन पण मिथ्याने, केमके, जे वारे स्त्रीपणुं बांध्युं ने, तेवारे यद्यपि बहुल पापप्ररुति मिथ्यात्वादिरूप ते ने, तथापि ते प्ररुति जेवारे तथानव्यत्वने परिपाके सम्यक्त गुण पामीने द्र्य करेने तेवारे स्त्रीने पापनी बाहुव्यता नथी. जहांसुधी स्त्रीशरीर होय, तहांसुधी जो तेनां बंधकारण मिथ्यात्वादिक रहे तो स्त्रीए सम्यक्त पण न पाम्युं जोये. जो कहेशो के, पुरुषथी तीव्र काम पण अध्यवसाय ने, माटे नपुंसकनी पने स्त्री मुक्ति पामे नही, एम पण न कहेवुं. केमके, तीव्र काम पण अध्यवसाय विशेष पामे ने ; माटे ते मुक्तिनेविषे विग्नकारक नही होवाथी ए हेतु अप्रयोजक जाणवो अन्यथा स्त्री मुक्ति पामे. केमके, ते नपुंसकथी हीनकामने, माटे तेने पुरुषनी पने जाण वी. ए हेतु पण अत्रे लागु यायने. ॥ १ ६३ ॥

णय तासिं मण विरिद्यं उप्रसुहं च सुहं विणेव उक्तिद्रं ॥

तारिसणियमाजावा तेण हुई चरमहेऊवि ॥ १६४ ॥

व्या० जो कहेशोके, जेम सातमी नरक एथवीए जवायोग्य स्त्रीने अहोज म नोवीर्य नथी, माटे तेने मुक्तिनेविषे जवानो पए तथाविध मनोवीर्य थाय नही. एम कहेवुं नही. केमके, एवो नियम नथी, के, जेटलो अधोगति जवानो अध्यव साय थाय तेटलोज कर्ध्वगति जवानो अध्यवसाय थाय. केमके, ज्जपरी सर्प बीजी प्रथ्वीसुधी उल्कर्षथी अधोगतिए जायने, पद्दी त्रीजी प्रथवीसुधी जायने. चतुष्पद चोथी प्रथवीसुधी जायने. उरग पांचमी प्रथ्वीसुधी जायने. चतुष्पद चोथी प्रथवीसुधी जायने. उरग पांचमी प्रथ्वीसुधी जायने. स्त्री तथा पुरुषविना बीजा पूर्वोक्त सर्वे प्राणीओ उत्कर्षथी सहश्रार आतमां देवलोकसुधी उर्ध्वगमन करेने. एवी रीते यद्यपि स्त्री सातमी नरक अध्यात्ममतपरीक्ता.

प्रथ्वीसुधी जती नथी, तथापि तेने मोकसुखनी प्राप्ति थायने एमां कोई विरोध नथी केटलाएक कहेने के, अधोगतिने परमोत्कर्ध होयने, ते एकांतताथी संजवे नहीं. केमके, जेवी कारणनी जल्कर्षता होय, तेवीज कार्यनी जल्कर्षता कहेवा यने ; एवो नियमने परंतु एथी अन्य कोइ नियम नथी. स्त्रीनेविषे जो युदादिक महारंजरूप कारणनो संजव होय, तो सातमी नरक प्रथ्वीसुधी जवाय तेवुं कोई कारण नही होवाने जीधे स्त्रीयकी त्यांसुधी जवातुं नथी, किंतु वर्वासुधीज जवायने : अने पुरुष तथा मत्स्यनेविषे तेवां कारण होवाची तेत्रोची सातमीनर क पृथ्वसिधी जवायते. एवी रीते अधोगतिनेविषे जबासारू पुरुष अने स्त्रीना कारणोनी विलक्तणता होवाथी सरखुं गमन यतुं नथी, परंतु ऊर्ध्वगतिनेविषे जवासारू बन्नेनां कारणो सरखां होवाथी सरखुं गमन थवानो अवइय संजव हे. जेम पुरुषनेविषे शीलादिक गुएरूप जर्ध्वगमननां कारण होयने तेम स्त्रीनेविषे पण होयने. ए हेन्रुथीज स्त्रीने वजक्त्वजनाराचसंघयणनो संजव ने एम न मानवामां कोई युक्ति नथी. ए प्रकारे स्त्रीना निर्वाणना निरोधनेविषे दिगंबरीञ्चो ना हेतुनो निषेध कस्रो ; हवे स्त्रीनो निर्वाण यवामां अनुमान कहेनेः-हरेक व सुना अनुमानमां पक्त, साध्य, देतु तथा दृष्टांत ए चार प्रकार होयने. एटले ए चार पदार्थोए करी सिद अएली वस्तुने अनुमित कहेने; अने एचार पदार्थोए करी सिद्ध थवा योग्य वस्तुने अनुमेय कहेने. जेम के, अग्नियुक्त पर्वत सिद्ध कर वो होय, ते अनुमेय कहेवायढे : अने एज पक्व कहेवायढे. अनुमान करती वखते "पर्वतम्पद्वीरुत्य, वन्दिमत्वंसाध्यते, धूमलात् इतिहेतुः, पाकगृद्दवत्, य त्रयत्रधूमः तत्रतत्र वन्दिः" पर्वतनो पद्द करीने तेने अग्नियुक्त सिद करेने; एमां हेतु पर्वत उपर नीकलतुं धूमाडुं हे, जेम रसोई करवाना गृहमां अग्नि होवा थी धूमाडुं नीकलेने, केमके, ज्यां ज्यां धूमाडुं होय त्यां त्यां आग्नि होयने, ए दृष्टां त हे. तेम "कांचित्स्त्रीव्यक्तिं पद्तीकस्य, मोद्दाविकलकारणता साध्यते, दीद्दाधि कारलात्, पुरुषवत्, येये दीक्ताधिकारिणः ते ते मोक्ताविकलकारिणः" कोईए क स्वीनी व्यक्तीने पद्दय करीने तेने मोक्तना अविकलकारणवंत सिक करेने; एमां दीकानो अधिकार हेतु हे : अने पुरुषजातिनी पते ए दृष्टांत हे, केमके जे जे दी क्तानो अधिकारी होय ते ते मोक्तना अविकलकारणवंत होयने ॥ १६४ ॥

कीबरूस कष्पिञ्छरूस व इडीए कष्पिञ्जाइ सिद्धी वि ॥ ए विएा विसिठ चरिञ्जं तासिं तु विसिठकम्मख3 ॥१६८॥ पावं तह इज्जित्तं एय पुस्फ़लाए केवलीए हवे ॥ परमा सुइजूआएं एय परमोरालि3 देहो ॥ १६६ ॥

व्या० कोई आशंका करे के, जेम जातिनपुंसकने मुक्ति याय नही, तेम स्त्रीने पण मुक्ति यती नथी. एम ढतां जो कहेशो के, जेम रुत्रिमनपुंसकने मुक्ति यायढे तेम विद्याप्रयोगादिकेकरी युक्त स्त्रीने मुक्ति थायढे; तो तेम पण न संजवे; के मके, स्त्रीने विशिष्टक्रियानुष्ठान होतुं नथी; विशिष्टक्रियानुष्टानविना विशिष्टकर्म नो क्र्य थाय नहीं अने विशिष्ट कर्मनो क्र्य थयाविना मुक्ति यती नथी. तथा स्त्रीपणुं जे ढे ते पापप्ररुतिरूप नदीनुं जरणुं ढे; ते पुप्परूप सुरतरुना केवलज्ञा नरूपफलने सेवन करनारा केवलीनेविषे केम संजवे! अर्थात् पापप्ररुतिरूपस्त्री ने केवल ज्ञान संजवे नही. तथा स्त्री परम अग्रुचि ढे, तेने परमोदारिक शरीर पण संजवे नही. केवलीनुं शरीर तो परमोदारिक होयढे. तेवुं तो स्त्रीनुं शरीर कहेवाय नही, माटे स्त्रीने केवल ज्ञान केम संजवे ? ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ अ० ए आशंकाने युक्तिवडे दूषित करेढेः--

> एय मयुत्तं जम्हा विचित्तज्ञावा विचित्तकम्मखर्ड ॥ ण य इत्तित्तं प्रावं जिणाण पाए णण ज्लित्ति ॥ १६७ ॥

व्या० स्त्रीने कियाविशिष्टविना विशिष्ट निर्जरा न थाय, एम जे वादिए कहां ते अयुक्त ढे. केमके, जावविशेषे फलविशेषढे. कियाविशेषविना जावविशेष न थाय; एमां एकांतता नथी. केमके, जो शक्तिनो नियद्द करीने किया करिये तो ज जावनी हानि थायढे, अन्यथा नावनी हानि थती नथी. तथासी पणुं पा परूप ढे, एमां पण एकांतता नथी, केमके, सम्यक्तना बलथी मिथ्याखादिक पाप नो क्र्य थायढे. एम प्रूवेंकही आव्या ढेयेः घणुंकरीने तीर्थंकरनेविषे स्त्रीपणुं न यी होतुं, एटले बहुधा स्त्री तीर्थंकर थती दीगमां आवती नथी तेथी स्त्रीपणुं पा रूप ढे एम जो कहिये तो विप्रत्वादिक पण तेवांज कहेवा जोये केमके, बहु धा तीर्थंकरनेविषे विप्रत्वादिकनो पण अजाव होयढे ; अर्थात् घणुंकरीने क्त्रि यादिक तीर्थंकर चएला दीगमां आवेढे. तेथी ह्यं विप्रादिकने मोक्त्नो संजव न थी. अने परमौदारिक शरीरनो तो पूर्वेज निषेध कखोडे, माटे ते होय के न होय तेनी शासारू चर्चा करवी ! ॥ १६७ ॥

इय इज्ञीणं सिद्धी सिद्धा सिद्धंतमूलजुत्तीहिं ॥ ईच्छं

असददंता चिकणकम्मा मुणेअवा ॥ १६० ॥

व्या० एवी रीते सिद्धांतमूलयुक्तिउए करीने स्त्रीने मुक्ति थायढे एवुं सिद्ध कर्खुं तेम ढतां जे इतेकरीने ए अर्थनी सददणा करता नथी, ते चिकणा कर्मवाला जाणवा. एवा प्रकारे स्त्रीनेविषे मुक्तिनी व्यवस्थापन कखाथी सिद्धना पंदर जेदनी व्यवस्था थई तेथी सप्रसंग सर्व सिद्धुं स्वरूप कद्धुं. सिद्धसरूपना वर्णनथी परम जावाध्यात्मनुं निरूपण थयुं अने जावाध्यात्मना निरूपणथी यंथार्थ पूर्ण थयो. १६० अ० हवे यंथार्थनुं परम रहस्य कहेडे:-

इयं परमरहरसं एसो इप्रश्नणकणगकसवद्यो ॥ एसा

य परा च्याणा संयमजोगेसु जो जत्तो ॥ १६७ ॥

व्या० संयमयोगनो जे उद्यम करवो, तेज सर्व शास्त्रना नयविस्तार जाएवानुं फल हे : अने एज परम रहस्यजूत हे. यतः ''सबेसिं पिण याणं, बहुविहवत्तब यंणि सामिताः तं सवणयविसुदं, जं चरणगुणहिउं साहू." इत्यावरयकादौ. तथा आश्रवो नवहेर्तुःस्यात् संवरो मोक्कारणं ; इतीयमाईती मुष्टि, रदनस्याप्रपंचनम् ; एनो अर्थः- प्राणातिपातादिक जे आश्रव के, ते संसारतुं कारणके. प्राणातिपा तादिकयकी विरमवारूप जे संवर ते मोझ्नुं कारण वे : ए परमार्थने विस्तारेकरी जाएावासारूज सर्व शास्त्र हे. माटे जेएो ए अर्थ जाएयो हे ते परमार्थताथी सर्व शास्त्रज्ञ ने एम जाणवुं. अतएव उपशम विवेक संवर ए पदनो अर्थ जाणीने चि लातीपुत्रे निजञ्चर्थ साध्यो. तथा संयमयोगनो जे उद्यम करवो तेज अध्यात्मरूप सोनानी कसोटी बे : जेम कसोटीए करी सोनानी परीक्वा आयबे, तेम क्रियानुष्ठाने करी अध्यात्मनी परीक्ता यायते. ते अध्यात्मेकरी जे विद्युदि यायते, ते बाह्यका रणनुं आलस्य करे नही. यतः "संयमयोगेसु सया, जे पुण संत विरिआ विसी यंति; कहते विसुद्धचरणा, बाहिरकरणालसा हुंति. " इत्यावश्यके. तथा एज श्री वीतरागनी परमञ्जाङ्गा हे के, संयमयोगनेविषे यत्न करवो. जेऐो ए यत्न क खो, तेरो चैख कुल गणादिक सर्वतुं कार्थ कखुं, एम जाणवुं. यतः " चेइछ कुल गए संघे, आयरिआएं च पवयएसुए अ; सबेसु वि तेए कयं, तव संयममुझम्मंतो

छ० कोईक कहेरो के, ज्यां सुधी जीवने जव्यत्वनो संदेह होय त्यांसुधी चारि त्रनेविषे ते केम प्रवृत्ते ? केमके, छजव्य छानेक क्रियाकरें तेथी तेने कष्टमात्र थाय परंतु परमार्थथी तेने कोई फलनी प्राप्ति थती नथी, एनुं समाधान करेंबे:--

ञ्चासन्नसिधिञ्चाणं जीवाणं लक्षणं इमं चेव ॥

तेण ण पवित्तिरोहो जवाजवत्तसंकाए॥ १९० ॥

व्या० जे जीव थोडा नवे मुक्ति पामनार होय तेनुं एज लक्ष्णांग्रे के, ते विष यनेविषे वैराग्य धारण करीने धर्ममां प्रवृत्ते. यतः "आसन्नकालनवसि, िश्चस्स जीवस्स लस्कणं इणमो ; विसयसुदेसु एा रक्तइ, सव्वडामेण उक्त, मई." इत्युपदेशमा लायां. माटे चारित्रनेविषें प्रवृत्ति थाय, त्यारे जीवे पोताने आसन्नसिक्कपणुं जा एयुंकदेवाय, पठी ते जव्यानव्यत्वनी शंकाएकरी ग्रुनप्रवृत्तिनो बाधक केम थाय? किंतु साधकज याय. अने हुं जव्यडुं के अनव्यडुं? एवी जेने शंका उत्पन्न थायते, ते जीव निश्चये करीने नव्यज जाएवो. यतः "अनव्यस्यदि नव्य नव्यत्वशंकाया अन्तवादित्याचारांगटीकायां." ए आशंका तो उलटी चारित्रप्रवृत्तिनो अंग ठे; माटे तेथी कांइ बाधा थती नथी. ॥ १७०॥

अ० केटलाएक परवादी एम कहेने के, मोक्लोपायनेविषे प्रवृत्ति वैराग्यथीज यायने, ते वैराग्य अज्जुक्तजोगनेविषे संजवेने; माटे जोगजोगव्या पत्नी तेनो त्याग करीने जो योगमां प्रवृत्ति करिये तो ते सुखयी थई शकेने; एम कहेनाराने शिक्ला ने अर्थे कहेने:-

जो पुण नोए नोतुं इच्चोइ ततो आ संयमं काठं ॥ ज

लएमिम पजलितां इच्चइ पत्वा सणिचाठं॥ १९१॥

व्या॰ जे पुरुष नोग नागवीने पठी संयम पालवानी इन्ना करेठे, ते इन्ना प्र यम अग्निमां पनी बलीने पठी शीतलता पामवानी पठे ठे. केमके, नोग नोग व्यायी तेनी इन्ना मटती नयी; किंतु अधिक यायठे. यतः "नजातु कामः का माना, मुपनोगेन शाम्यति; इविषा रूझवर्त्में व, पुनरेव प्रवर्द्धते. " जे सुख जी व नोगवेठे, ते सुख यद्यपि अनंतवार नोगवाई गया ठे; तथापि मोह्नीयक मना दोषने लीधे एम नासेठे के, में ए सुख पूर्वे कोई समयनेविषे नोगव्यां नयी यतः "पत्ता य कामनोगा, कालमएांतं इहं स उवनोगो; अपुधं पिव मन्नई, त हविय जीवो मणे सुरकं" इत्युपदेशमालायां. ॥ १७१ ॥ ञ्राध्यात्ममतपरीक्ता.

छ० वली नोगनेविषे प्रवृत्ति करतां एवो संदेह रहेने के रखेने नोगनो नाज्ञ षई जाय; ते योग्य ने, केमके, नोग स्थिर नथी, किंतु अस्थिर ने अथवा नो ग नोगवतां आयुष्यनो अंत आवी जाय तो पए नोग नोगवाता नथी. एवा नोग नोगववानेविषे प्रवृत्ति यतां अविरति जीवने प्रतिक्रुणे कर्मबंध यायने. ए मां रंचमात्र संज्ञय नथी. माटे जे विवेकी पुरुष ने ते स्वन्ननेविषे पए नोगनेविषे प्रवृत्तिनी अनिलाषा करता नथी. इवो उपदेज्ञ करेने. ॥ १७१ ॥

कोवा जिञ्जवीसासो विकुलया चंचलम्मि आठम्मि॥

सजो णिरुजमो जइ जराजिजून कहं होही ॥ १९२ ॥

व्या० हे जीव, तने जीवितव्यनो शो विश्वास हे? केमके, जेम विजलीनी ल ता इटले फात्कार कृणजंगुर हे, एटले कृणमा देखाय हे ने कृणमां नाश थई जायहे, तेम जीवितव्य इककृणमां प्रत्यक देखातो हतां कोई रोगादिकना उद यथी बीजी कृणमां नाश थतां वार लागती नथी। माटे ज्यांसुधी शरीर निरोगी हे त्यांसुधी जो तूं धर्मकार्य करीश तो करी शकीश. ॥ १९२॥

छ० कोई कहेंगे के, जो जीव रोगेकरीने यसेलो होय, खयवा कायबलेकरी हीएा घएलो होय, ते चारित्र मार्गनेविषे केम प्रवृत्ति करी शके, तेने उत्तर दियेजे

देहबलं जइ ए दृहु तहवि मणोधिइबलेए जइछावं ॥

तिसिनं पत्ताजावे करेण किं णो जलं पिबई ॥ १९३ ॥

व्या० जो रोगादिके करी शरीर निर्वल थई गयुं होय तो मनबुद्धादिकना ब जे करीने योग धारण करवो. जेम पुरुषने ज्यारे तृषा लागेने त्यारे तेनीपासे जो पा णी पीवानुं पात्र न होय तो हाथेकरी पाणी पीएने; पण तरस्यो रहेतो नथी. तेम तथाविध कालबल न नतां पण जेने मोइन्नी अजिलापा होय तेणे मनोब जेंकरी योगमार्गनेविषे प्रवृत्ति करवी. ॥ १७३ ॥

अ० जे पुरुष बलना समयनी शोचनाएकरी बलरहितसमयमां नविष्यका ल उपर नरोसो राखी आलस करीने बेशी रहे ते अति डःख पामेळे; एम कहेळे.

बलकालसोञ्जणाए ञजलसा चिंहति जे ज्यकयपुन्ना ॥

ते पांचिता वि लढु सोइंति सुहं उप्रपावंता ॥ रे9४ ॥

जह णाम कोइ पुरिसो ए धन्हू। णिइणो वि उजनई ॥

मोहाइ यचणाए सो पुण सोएइ अपाणं॥ १९५ ॥

व्या० जे पुरुष एवी शोचना करे के, हमणा मारामां बल नथी, माटे आगल धर्माचरण करीश. अथवा हमणा मारो अवसर नथी, माटे आगल जतां धर्माच रण करीश. एम जाणीने आलस करी बेशी रहे ते अरुतपुष्य थका आगल घणी प्रार्थना कखाथी पण पुष्यविना सुखने पामे नही, त्यारे घणो शोच करेडे. जेम कोइ निर्धन पुरुष प्रथम आलस करीने धन अर्जवानो ज्यमन करे ने पडी ठाली इड़ा करीने धनविना इःखने पामेडे त्यारे पोताना आत्मानेविषे घणोज शोच क रेडे. माटे प्राप्त थएलो धर्म मूकीने आगल धर्मप्रार्थना करीये तो ठाली प्रार्थना कहेवाय. यत: "लडिलिअं च बोहिं, अकिरंतो णागयंगपडित्तो; आणंदाइं बोहिं, लघ्नसि कयरेण मुलेण."॥ १९४॥ १९५॥ अ० कोई कहेशे के, पापनी निं दायीज पाप टलेडे, त्यारे विशेष अनुष्ठान करवानुं कारण ग्रुं? एविषे कहेडे:-

जो पावं गरहंतो तं चेव णिसेवए पुणो पावं ॥ तस्स

गरहा वि मिचा उप्रतहकारों हि मिचत्तं ॥ १९६ ॥

व्या॰ जे पाप करी मिछामि इक्कडं दर्इने फरी पाप करे तेनी पापनिंदा मिण्या ते. केमके, जेवुं बोलिए तेवुं जो पालिए नही तो तेज मिण्याल ते. यतः "जो जह वायण कुणई, मिछदिठी तर्ठहुको छन्नो ; वहुँ इ अमिछत्तं, परस्स संकं जरे मा रो." इत्युपदेशमालायां. हवे मिछामि इक्कडं ए शब्दनो अर्थ कहेत्रेः--मि कहेतां कायाथी तथा नावथी मृड थइ, हा कहेता असंयमरूप दोषनुं छाहादन करीने, मि कहेता चारित्रनी मर्यादामां रह्यो थको, इ कहेतां इरुत कार्यनो करनार जे आत्मा तेने हुं निंडंबुं, क कहेता में जे पाप कखांत्रे, तेनुं डं कहेतां उपश्रम पामी ने छहांधन करुंबु- एवो अर्थ जाणीने मिछामि इक्कर्फ दीधा पत्नी फरी पाप न क रवुं, ते पापनी साची निंदा कहेवायत्रे. तेम न करता पत्नी जे पाप करवुं तेथी तो उलटुं माया मृषावादादि पाप लागेत्रे. यतः "जं इक्कडंति मिछा। तं चेव णिसेवए पुणो पावं, पच्चरकमुसावाई, मायानिवडी पसंगोछा" इति ॥ १७६॥

अ० ए कारण माटे चारित्र लईने जो ते सारा जावची पालिए तोज तेथी महाफलनी प्राप्ति थायडे, अन्यथा आजीविकाने अर्थे चारित्र लीधा करतां गृह स्थधमेज सारो डे एम कहेडे.

चुछाधम्माठ मुणिणो सुष्ठुछारं किर सुसावगत्त पि॥ प डिछां पि फलं सेयं तरुपडणार्ठ णचंपि ॥ १९९ ॥ व्या० वेषधारी चारित्ररहित जे सु आवक छे, ते अरिहंतनी पूजा करे, सुसा धुनी सेवा करे, दृढाचारीपणुं पाले, इत्यादिक धर्माचरण करेछे, अने जे चारित्र वेष धारी होय ते गृही धर्म तथा यतिधर्म ए बन्नेथी चष्ट यायछे. उक्तंच "छज्जीव णिकायदया, विवज्जिउंणेव दिस्किंड ण गिही; जइधम्माउं चुक्को, चुक्कइ गिहदाण धम्माउं; इत्युपदेशमालायां. वेषधारी चारित्रियाने मूलगुणविना तपथी पण ते दुं फल यतुं नथी. उक्तंच "मह्वय अणुचयाइ, छ डेउं जो तवं चरइआणं, सो अन्नाणी मूढो, नावावुढ्रो मुणेआवो." माटे केवल वेषधारी करतां गृही धर्म सारो छे. दृष्टांतः- फलनी अजिलापाथी तृद्ध उपर चढी, फल मेलव्यावि ना पडी न जतां ते फल मेलवाई शकाय तो सारुं, पण जो फलनी प्राप्ति न थ तां नीचे पडी जवाय तो उलटुं शरीरने लागे तेथी इःखनी प्राप्ति याय. तेना क रतां शृह्ती नीचे बेसीनेज पडेलुं फल यहण करिये ते सारुं ॥ १९७ ॥ संयमयोगे च्यन्न, डिच्रस्स संचत्तबक्षजोगस्स ॥ ए प रेण किंचि कड्रं आयसहावेण चिघ्रस्स ॥ १९७ ॥

व्या० संयमना योगे जे आनंद यायते ते केवल आत्मखनावनेविषेज अव स्थित ते. तेने परनुं ग्रुं काम ते ! माटे जेने चारित्त परिणम्युं होय, तेणे सर्वे प रप्रतिबंध सूकीने आत्मड्व्यमात्रना प्रतिबंधे प्रवर्ततुं ॥ १९७॥ अ० एक आत्म ड्व्यमात्रनेविषे प्रवर्खायी बीजाने उपदेश केम देवाझे, एविषे कहेते.

संविग्गो गीयचो बोहेठ परंपराइ करुणाए ॥ उपनो

पुण तुसणीउ पुवं बोहेउ उप्रणाणं ॥ १९९ ॥

व्या॰ जे महानुनावी संवेगी गीतार्थ होयढे, ते पोते तो कृतकृख होयढे, प रंतु बीजानी उपर परम करुणाए करीने तेने प्रतिबोध करे तो तेथीते महाफलदाई ढे. परंतु जे एवो न होय तेणे बीजाने उपदेश करवानुं मांमीवालीने प्रथम पोताना आत्मानेज बोध करवो जोयेढे. जे पोते प्रतिबोध पाम्या विना बीजाने प्रतिबोध करेढे ते केवल नाटकीञ्चानी पढे नाटक करी देखामनारोढे एम जाणवुं. ॥ १ ७९॥ अ॰ एवी रीते ज्यारे परप्रतिबंध सारो नथी, किंतु एकाकीपणुंज सारुं ढे, माटे गड पण प्रतिबंधरूपज ढे, एम जे जाणेढे तेनो संदेह मटाडवाने अर्थे कहेढे देवेण जो अपोगो गढे सो जावड हवे एगो ॥ एगागी गीउचिय कयाइ द्वेछ जावेछ ॥ १ ७० ॥ व्या॰ गडमां ढतां इव्यथी जे अनेकता थायढे, तेज नावथी एकता थायढे. अ त्यथा गुर्वाझादिक अंकुशविना चित्तरूप हस्ति संसाररूप वनमां फरतां एकख जाव नारूप वेलीनुं उन्मूलन करी नाखे. अतएव जगवंते "एकस्स अडि धम्मो " इत्या दिक प्रवंधे करी एकाकी विदारनो निषेध कस्तोढे. श्रीदशवैकालिक सूत्रनेविषे प ए आम कद्युंढे "नया लनिक्ता निउर्ण सयायं गुणाहि अं वा गुणउ समंवा; इकोवि पावाइ विवक्तपंतो, विदरेक्त कामेसु असक्तमाणो. आ गाथामां आम कद्युंढे के, ज्यारे पोतायकी अधिक गुणवालो अथवा समान गुणवालो मले नही, त्यारे एकाकी विदार करवो, ते गीतार्थ आश्री जाणवुं. केमके, ते पापने वर्जीने कामनेविषे असंग करेढे माटे तेने एम कद्युंढे. अने अगीतार्थ तो गीतार्थनी निश्राविना पाप वर्जी शके नही. तेम कामासंगपण बाली शके नही. अतएव "गीयज्ञो आ विदारो, बीउ गीयज्ञ मीसिउ जणिउं॥ इत्तो तइय वि हारो, नाणुन्नाउ जिएवरेहिं " ए गाथामां खुलीरीते अगीतार्थने एकाकी वि हारनो निषेध कस्त्रोढे. माटे गज्जमां रही, गुरुकुलवास सेवी, ग्रुनादिकनो अज्या स करी, आने साधुसंग ढतां पण अंतरंग निर्हेप रहीने जो अध्यात्मनावना जाविये तो परमानंदनी प्राप्ति आयढे. ॥ १०० ॥

किं बहुणा इह जह जह रागदोसा लहुं विलर्जनति ॥ त

ह तह पयडिआवं एसा आणा जिएंदाएं ॥ १७१ ॥ व्या० घणु द्यं कहिये, जेजे प्रकारे रागदेष विलय थाय तेवी रीते प्रवर्तवुं. ए ज श्रीवीतरागदेवनी आज्ञा हो. ॥ १७१ ॥

अक्षणमयपरिका एसा जुत्तीहिं पूरिया जुत्ता॥ सोहिं

तु पसायपरा तं गीयच्चा विसेस विऊ ॥ १७७ ॥ व्या० आ अध्यात्ममतपरिक्ता युक्तिएकरी पूरी कीधी. तद्रूप जे आ यंच हे, तेवुं विशेषक्ञ जेगीतार्थ हे ते मजउपर रूपा करीने शोधन करो ए विक्ञापनाहे. १०२ शाईलविक्रीडितं हत्तं ॥ यस्यालन् गुरवोऽत्र जीतवीजयप्राज्ञाः प्ररुष्टाक्रया चार्जते सनयानयादि विजयप्राज्ञाश्व विद्याप्रदाः ॥ केम्स्वा यस्यच सद्म पद्म विज यो जातः सुधीः सोदरः सोयं तत्वमिदं यशोविजयइत्याख्यान्त्वदाख्यातवान् ॥ १ ॥

> इति पंमित यशोविजयजी उपाध्यायकृत श्री अ ध्यात्ममतपरीक्तायंत्रो बालावबोधसहितः समाप्तः